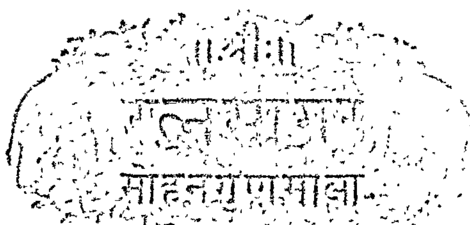


[illegible]

[illegible] श्री १०८ [illegible]

[illegible] गणिः

([illegible])

पंडित [illegible] मुनिना

[illegible]

([illegible])

॥ [illegible] ॥ मुंबई ॥ [illegible] ॥

[illegible]

॥ [illegible] ॥ मुंबई [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

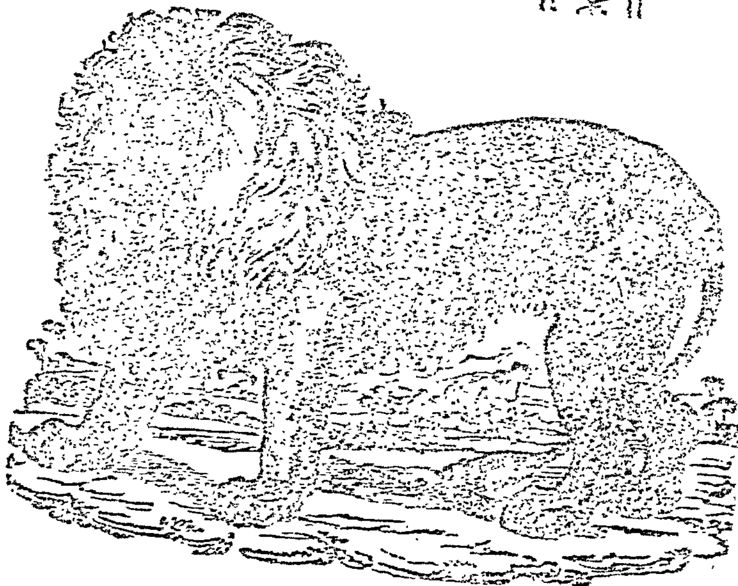
॥ ※ ॥ प्रशस्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री महावीर जिनेंद्र तीर्थतिलकः सद्धर्म नेमि
र्विभुः । तेजस्वी सुगुरुः सुधर्मगणभृत् तस्यान्वये संततः ।
पुण्ये चान्द्रकुलेऽभवत् सुविहिते पक्षे सदाचारवान् । तेभ्यः श्री
मान धीमतां सुमति मानुद्योतनः सूरिराट् ॥ १ ॥ श्राती
तत्पदपंकजैक मधुकृत् श्रीवर्द्धमानाभिधः । सूरिस्तस्य जिने
श्वराख्य गणभृज्जातो विनेयोत्तमः । यः शापत् मत नि
जि पंक्ति शरदि (१०८०) श्री पत्तने वादिनो । जित्वा
लब्धिवदं कृती खरतरे त्याख्यं नृपात् सुखात् ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गच्छे चास्मिन् बृहत्खरतरे श्री चंद्र सूरीश्वराः ।
राजंते मनुजेंद्र सेवितपदाः । श्राचार्य वागीश्वराः । तत्पदा
म्बुज परागपान मधुपा ज्ञर्मीश्वरानाम्बराः । मज्ञोनादि
गुणैर्युता सुगुरवः संतीह सन्नीश्वराः ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन । सम्यक् पुनादि वि
चार शास्त्रं । संकीर्तितेयं खलु बालशिक्षा । सिद्धांतताराशं
विदां मुदेवै ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॥७॥



कलिकत्ता. मुंबई.



जैन विद्या शाला. ॥ प्रथम भाग सूचीपत्र ॥ जैन पाठ शाला.

॥※॥ संख्या ॥※॥	॥※॥ प्रकरण ॥※॥	॥ पत्रांक ॥
॥ १ ॥	ॐकार वर्णन पंच परमेष्टी नमस्कार।	१
॥ २ ॥	गुरु नमस्कार, दीर्घाक्षरै सरस्वती नमस्कार।	२
॥ ३ ॥	स्वर, व्यंजन, युक्तादि वर्ण माला।	३
॥ ५ ॥	शिष्यावाक्य दूहा. (वाक्यमंजरी)	४
॥ ६ ॥	संधिसुत्र, सिद्धोवर्णः समाम्नायः।	५
॥ ७ ॥	हितोपदेश, अर्हतो भगवंत० अर्थसहित	६
॥ ८ ॥	भिन्नं जिन नाम।	८
॥ ९ ॥	श्री नवकार मंत्र, जयत्तसामि० प्रतिक्रमण सर्वपाठ....	९
॥ १० ॥	साधु प्रतिक्रमण, चत्तारि मंगल सुत्र।	२०
॥ ११ ॥	श्रावक प्रतिक्रमण, वंदित्तू सुत्र।	२५
॥ १२ ॥	नवकारस्यादि १० पच्चक्खाण।	२८
॥ १३ ॥	दश पच्चक्खाण आगारार्थः।	३३
॥ १४ ॥	दश पच्चक्खाण आगारसंख्या गाथा	३६
॥ १५ ॥	मुहपत्ती पडिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदहुं।	३६

॥ ※ ॥ पनरै तिथके मोटे छोटे स्तवन सरू ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सिझायमाला ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहो रात्र कृत्य ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री जिन पूजा संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भावहोली खेलन विचार स्तवन संग्रह ३८ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तपश्या विधि स्तवन संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शरस रागरागणी प्राचीन स्तवन संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनदाशादि कृत लावएयां संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवरसो चोढालियादि स्तवन संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥ ※

॥ ॐ ॥ अथ छंद स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

॥※॥ परममंगल श्री दादाजीके काव्य सवईया ॥※॥

॥※॥ दाशानुदाशा इव सर्वदेवाः। यदीय पादाब्ज तले लुठंति । मरु स्थली कल्पतरुः सजीया । ज्जुगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ ॥※॥

॥※॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या । प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरेः । सर्वेपदा हस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥※॥

॥※॥ नोयोगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो वेत्ताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोग शोगौ भयं । नो मारी नच विग्रहः प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः । यस्ते श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥

॥※॥ अथ सवईया लि० ॥※॥

॥※॥ बावन्न वीर कीयै अपणें वस, चौसठ जोगण पाय लगाई । झाइण शाइण व्यन्तर खेचर भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई । बीज तझक कझक भटक्क अटक्क रहैजु खटक्क न काई । कहै ध्रमसीह लंघै कुणलीह दीयै जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ राजै थुंभ ठौर ठौर, ऐसो देवनही और, दादौ दादौ नाम सें, जगत्र जस्स गायो है। आपणेंही भाव आय, पूजै लक्खलोक पाय, प्यासनकुं रांन मांझि, पांणी आंन पायो है । वाट घाट शत्रु दाट, हाट पुरपाटणमें, देह गेह नेहसूं, कुशल वरतायो है । धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे साचो श्री कुशल गुरु नामयुं कहायो है ॥ १ ॥※॥

॥※॥ कुशल अंग उछरंग कुशलविणजै व्यापारे । कुशल देव देहरै ।

कुशल घन राजडुवारे । पुन्य पसायें कुशल कुशल श्रीसंघ भणी जे । वाहण आवै कुशल कुशल घर घर गाई जै । श्री जिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र आरति टलै । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां । नवनिधान लक्ष्मी मिलै ॥१॥

॥ ※ ॥ कुशल वर्मो संसार । कुशल सज्जन घर चाहै । कुशलैं मङ्गल माल । लब्धिवर कुशलैं आवै । कुशलैं घन वरसंत । कुशल धन धन्न रुवन्नो । कुशलैं घोमा थट्ट । कुशल पहिरीय सुवन्नो । ए रसो नाम सदगुरु तणो । कुशलैं जगरलीया मणो । भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी । घरघर होत वधावणो ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन पाठशाला ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग विज्ञापन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ चिंतक, धर्म रागी, गुणग्राही, (सर्व जैनी) सज्जन पुरषोंके, पढनें, पढानेंके निमत्त (बहुत पुस्तकोंसें) बहुत रत्नवस्तुका संग्रह करके (प्रथम) कलकत्ता मध्ये, हमारी जैनविद्या शाला खातै, पुस्तक १००० छपाके प्रशिद्ध करनेंमें आयाथा (तिके) संपूर्ण पुस्तक खपजाणेंसें (और) विद्या शालामें देश देशावरके, संघकी मांगणी बहुत आणें सें (दूसरी आवृत्ती) छ पानेंका इरादा किया (परंतु) संप्रतिकालै, मुंबईका छापा, संघकों अत्यंत प्रिय समझके (तथा) जिनमंदरोंकी अंगीरचना । संघकी भक्ती । संघकी उन्नती। संघको समूह, अन्नो देखकै (सं ।१९४४ मि। माह सुद ५ दिन) मुंबईमें पा इयै रूप पाठशाला स्थापन करी (तदुपरांत) सं । १९४५ मि । दूजा चैत्र सुद ५ दिने । ग्यानका मोटा उच्छव करके । पाठशालाके बंधानका, (जाहर खबर पत्र) संघमें दिया गया(और)देरासरजी स्थापन किया (तिस पीछे) वि गर, फी लिये । संघकों धर्म कृत्य पढानेंका (तथा) नवीन जैन लिपीका, सुं दर छापा हरफ बनवाके (पुस्तक) रत्नसागर छपानेंका काम प्रचलित किया (परंतु) मुंबई मध्ये, नवीन पणासें (प्रथम)संपूर्ण कार्यकी जमावट करनेंमें । सं घकी मदत प्रातीतो कमकुई (और) खरचा बहुत लगा (तिसपरभी) आगे की पुस्तकसें अग्रकै बहुत जाणगा जोग ग्रंथ बधानें में आया है (इससे ती) यह पुस्तक छपनेमें दोवछर आसरै लगगया (और) खरचाभी आगेकी

पुस्तकसें दूणा लगगया (तथापि) पुस्तकका निछरावल, सामान्य गत्तेदारका रुपिया पांच ५) आगै के मुजब रखनेंमें आयाहै (अब) संपूर्ण छपके तैयार हुवा है ॥※॥ (इस पुस्तक में) खरतरा, तपादि, (संपूर्ण) जैन धर्मियोंके बारै माशमें करनें लायक। प्रभावीक, प्रमाणीक, पूर्वाचार्योंके रचित (संपूर्ण) धर्म कृत्य, संग्रह करनें में आया है। एक पुस्तकसें, पचीस पुस्तकका काम ले सक्के है (और) बारमाशी धर्मकृत्य, संपूर्ण करसक्के है ॥ ※ ॥ (इसमें)

(इत्यादिक) बहुत रत्नवस्तुका संग्रह कियाहै (प्रगटपणें) यह पुस्तक धर्म रत्नोंका समुद्र तुल्य है (इसीसें) इसका गुण निष्पन्न ॥ ※ ॥ रत्नसागर, नाम रक्खा है ॥ ※ ॥ (और) जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तू है (सो) आत्मा के मोहन गुण । ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिककों, प्रगट करनेंकी एक श्रेणीवत् है (जिससें) इस पुस्तकका (दूशरा) मोहन गुणमाला,, नाम रक्खाहै ॥ (और) सर्व स्थानक, जैन विद्या शाला, पाठशालायोंमें, जैन पाठक गण कों, (प्रथम) अपना नित्य नेम, अवश्य शीखना, शिखाना चाहियै (इसी सें) सर्व जैन पाठकगणके उपगारार्थ, भाषा, विधि संयुक्त । बारमाशी संपूर्ण, अवश्य धर्मकृत्यका संग्रह किया है (इस्सें) प्रथम भाग नाम रक्खा है ॥ ※ ॥ (और) इसका दूसरा भाग भी अब बहुतसा छपके तैयार होनें आया है (जिशमें) आचार दिनकरादि, आचार ग्रंथोंसें । जैन गृहस्थों का, जन्मसें लेके, मरण पर्यंत, १६ संस्कार, उपदेश, आचार, विधि स्वरूप ज्ञापक, प्रथम प्रकाश (तथा) संक्षिप्त जैन इतिहास, । बावन ५२ बोल गर्भित २४ महाराजका दृष्टांतरूप इतिहास । श्रीमहावीर स्वामीसें आजतक गछ मतादिकका संक्षिप्त स्वरूप (इस उपरांत) सर्वोपयोगी बहुत जैन आचार रत्नोंका संग्रह करनेमें आवेगा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ (अब) इसका तीशरा, चौथा, भाग (जिसमें) सर्वोपयोगी (आत्म प्रबोधादि ग्रंथोंसें)सम्यक्त, श्रावक । साधु । परमात्मादिकका । यथावस्थित स्वरूप, (तथा) चित्तकों आनंदकारी अछी अछी धर्मकथा (तथा) सर्वके धारन करनें योग्य, बोल विचारादिक, बहुत रत्नवस्तु संग्रह करके प्रशिद्ध करनेंका उमेद है (परंतु) जब ग्यानवृद्धीकारक उत्तम जैन सज्जनोंकी मदत मिलेगा (तब) प्रशिद्ध करनेंमें आवैगा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (और) बहुत विनयनम्रतासें (सर्व) जैनसज्जनोंसें प्रार्थना करनेंमे आवै है (कि) इस पुस्तककों बहुत विवेकसें यत्न करके रखना जिसमें ग्यानकी आशातना न होय (क्युंकि) क्या लिखाहुवा, क्या छपाहुवा, आत्म धर्मोपगारी दोनुं पुस्तक समान है । अग्यानी जीव, अनेक तरैसें जिनप्रतिमा (तथा) जिन धर्मपुस्तकका, अनादर, आशातना करै (तथापि) विवेकी ग्यानी पुरुषोंकों । जिन प्रतिमा (तथा) धर्म पुस्तककी कभी आशात

ना न करनी चाहिये (जिके) जिनप्रतिमाकों पाखाणादिककी जाणके (और) पुस्तककों लिखा हुवा, छपा हुवा, जाणके। अनादर करैगा। निंदन करैगा (सो) अपना एकांत हठवादसें। सदाकाल, एकेंद्रियादिक अज्ञान दिशामें परिभ्रमण करता रहैगा ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (और) में मेरीजाणमें दो महिना ज्यादा लगणेंका (तथा) खरच ज्यादा लगनेका विचार छोडके (और) बहुत परिश्रमसें सुद्ध करके छपाया है (तथापि) छद्मस्थ, अल्प बुद्धियाहुं (इससें) निजर, दिलका, भरोसा न देसक्ताहुं (इसकों) पढते, पढाते, जो कोई स्थानक, प्रमादा दिकसें (वा) छपेके दूषणसें। ईकार, ऊकार, अक्षरादिककी भूल मालुम होय (तो) अपना विद्वज्जन गुरूसें जाणके। शुद्ध करके पढणा (और) कोई मेरा कसूर होय सो माफ करना। श्रेणकराजाकेतुल्य गुणग्राही पणा धारन करके। इस पुस्तकका गुणग्रहण करना (इस पुस्तकसें) बहुत काल तक, बहुतजीवोंके सद्धर्म प्राप्ती होगा (इससें) यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पवृक्ष का बीज है ॥ (इसकों) सेवन करनेवालोंकै मनोवांछित फल प्राप्ती होगा ॥ (और) इस पुस्तककों, मुख्य अपनें (तथा) परके, विद्यावृद्धी उपगारके अर्थ (जो) गुणग्राही जैनसज्जन एकेक पुस्तक लेवैगा (तथा) कोई ज्ञान खाते। पांच पचीस पुस्तक, इकठी लेके। मंदर, उपाशरामें (तथा) ज्ञानभंडारोंमें(तथा)साधु, श्रावक, गरीब विद्यार्थियोंको। धर्मोपगारार्थ देवेगा (और) तन, मन, धनसें, ज्ञानवृद्धीके अर्थ पाठशालाकों मदत देवेगा। जिन उत्तम पुरषोंका बहुत धर्म उपगार मानके (पाठशालाकी) पुस्तकमें नाम छपाके। प्रशिद्ध करनेमें आवेगा ॥※॥ (और) दिन प्रमाण साठ घमी होता है (जिसमें) दो चार घमी तो इस पुस्तकको जरूर वाचनो पढनो रखना ॥※॥ (और) सिद्धांत विरुद्ध, कषाय, प्रमादादिक के वस। कोई उंछो, अधको, हरफ, कानो, मात, लिखनेमें आयो होय (तो) सर्व संघके सन्मुष, में, मिछामि डुकडं देता हुं ॥ इत्यलंविस्तरेण ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ जैन सेवक पंडित मोहनलाल जयचंद यती ॥※॥
॥※॥ जैन पाठशाला, रत्नसागर तंत्री ॥※॥

॥ रत्नसागर अंत मंगलाचरण ॥

॥※॥ तीन तत्वकों नमण कर । सेऊं सद्गुरु पाय । देवी भगवती सा निधै । वचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष जोनिमें । जे रुला जीव अनन्त । मोह मिथ्यात वसे पड्या । पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥ परम देव परमातमा । चिदानन्द गुणचंग । भव्य जीवके हित भणी । भेद कह्या सब अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सब । रचिया अंग अनूप त्रिकरण कुं प्रणमुं सदा । ज्ञान आतम गुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उव झाय मुनि । भगवन वचन उपेत । भाष्य टीका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया संकेत ॥ ५ ॥ भगवती सुत्र मांहि कह्या । आगमना पंच अंग । सरधै जे भवि प्राणिया । पामें नित उछरंग ॥ ६ ॥ जैवंता वरतो सदा । सब जग पंभव ज्ञान । पिण उपगारी भव्यकों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्टकर्म संयोगसें । चित वैठे नही ज्ञान । पिण जाणुं सुरतरु समो । ए हीज धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रवल भाग्य संयोगसें । पारश दरसण पाय । पारश फर स्यां लोह सब । गुणकंचन समथाय ॥ ९ ॥ मनमोहन पारश मिल्यो । मो हन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनंद ॥ १० ॥ पारश प्रभुकेनामसें । सब संकट मिटजाय । ईतउपद्रव भयटलै । मोहनगुण प्रगटाय ॥११॥ जिन दर्शण मुज मनवस्यो । जे प्रगटै चित आय । कर्मशत्रु दल जीपकै । शिवरमणी वरुं जाय ॥१२॥ शिवपुर जोवा कारणें । समकित दढकै देत । वाल अरु मोहन भणी । रत्नसागर गुण देत ॥ १३ ॥

॥ ※ ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शासनके नायक, श्रीमहावीर स्वामी (तत्पदे)२। श्रीसुधर्म्मा स्वामी (तत्पदे) ३।श्रीजंबू स्वामी, (तत्पदे)। ४।श्रीप्रभव स्वामी, । ५।श्री सज्यंभव स्वामी,। ६। श्रीयशोभद्र स्वामी। ७। श्रीसंभूतविजय स्वामी। ७। श्रीभद्रवाहू स्वामी,। ए। श्रीथूलभद्रस्वामी ॥ (तत्पदे) १० मा। श्री आर्यमहागिरी (तत्पदे) ११ मा। लघुभ्राता, श्रीआर्य सुहस्ति सूरी हुए (सो) श्रीवीर भगवानसें, २३५ वरशे, संप्रति राजा (तथा) ऐवंती सुकमालनें प्रतिवोधके, धर्मका बहुत उद्योत किया ॥१॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ (तत्पदे)१२श्रीसुस्थित सूरी,१क्रोम्ह सूरी मंत्रका जापकिया, इससें कोटिक गछ प्रशिद्ध हुवा॥ इसी तरै पदानुक्रमें१६में पाटे॥ श्री वज्र स्वामी दश पूर्व धर, बमे प्रभावीक, विद्यागामी हुए (इहांसें) वज्र शाखा प्रवर्त्तन भई ॥ (तथा १७ में पाटे) श्री जिनचंद्र सूरी हुए ॥ (इहांसें) चंद्र कुल प्रशिद्ध हुवा ।(इसीतरै पद परं परायें) भगवानसें(३७ में पाटे) श्रीउद्योतन सूरजी हुए। (सो) एक निज शिष्य (अन्य ७३) साधु शिष्योंकों आचार्य पद देके। चौराशी गछ प्रशिद्ध किये ॥ ※ ॥ यह ७४ गछके आचार्य बडे प्रमाणीक, प्रभावीक, धर्मोद्योतक हुए (श्रीउद्योतनसूरी) पदे। आबूजी तीर्थ प्रगट कारक, विमल मंत्री प्रतिवोधक, वमे प्रभावीक (३ए में पाटे) श्री वर्द्धमान सूरी हुए ॥ ※ ॥ (४० में पाटे) श्रीजिनेश्वर सूरिः हुए (सो) अणहल पुर पट्टणमें। दुर्लभ राजाकी सभामें। चैत्यवासियोंकों, विवाद करके जीते (इस सेती) सं ॥१०७०॥ (खरतर विरुद) पाटणके राजानेंदिया। अतिशयपणें सिद्धांत मार्गसें सच्चाहुवा(इससें) खरतरगछ प्रसिद्ध हुवा(इहांसे)कोटिक गछ। चंद्रकुल। वज्र शाखा (और)खरतर विरुदका। नवाशिष्योंकों भेद कहनें लगा ॥※॥ (४१ में पाटे) दिल्लीके वादशाहकों वरदेनें वाले। जीवहिंसा गेमानें वाले। श्रीमाल, महतियाण गोत्र, प्रतिवोधक। श्रीजिन चंद्र सूरी हुए॥※॥(तथा)इनोंके लघु भ्राता(४२ में पाटे) स्थंभणा तीर्थ, नवांगी वृत्ति, प्रगट कर्त्ता,, श्री अभयदेव सूरी हुए,, (तत्पदे) दशहज्जार, वागमी श्रावक प्रतिवोधक (४३ में पाटे) श्री जिन वल्लभ सूरी हुए ॥ ※ ॥ ४३ (तत्पदे ४४ में) महाप्रभावीक, युगप्रधान,

चीतोमके मंदर स्थंन्नसे । वियाम्नाय पुस्तक प्रगट कारक, । ५२ वीर, ६४ योगणी, आदि देवी देव्यांकों प्रतिवोधक । (सवालाख रजपूत) व्राह्म णादिकको प्रतिवोधके । सावण सुक्खा,गोलन्ना, गजेम्न(आदि)अनेक गोत्र श्रावक कुल स्थापक। सवाक्रोम्न ह्रींकारजीका जाप करनेवाले,, श्रीजिन दत्तसूरजी ऊए (सो) आजतक मोटा दादाजीके नामसें । देशावरोमें प्रशिद्ध हैं ॥ तत्पट्टे ४५मा॥ मणिधारक, दिल्लीके पातसाहकों, अनेक चमत्कार देखा के । धर्म उद्योत करनेंवाले । श्रीजिनचंद्र सूरजी ऊए(जिनोंका)दिल्लीके न्नरव जारमें दाग ऊवा (और) वडा चमत्कार देखके संपूर्ण वादशाहादिक लोक पूजनें माननें लगे ।(यह दूशरा दादाजीऊवा)इहांसें अनुक्रमें (५० में पाटे) महा प्रन्नावीक, श्रीजिन कुशल सूरिजी ऊए (सो) आचार्य पद पायके, व ऊत जिन धर्मका उद्योत करनेंवाले ऊए (अंतमें) सं । १३ए०, फागुणवद अमावश दिन, देव लोक गए (तडपरांत) फागुण सुद १५ सोमवारनें (प्र थम)दरशण संघकों दिया(तिस पीछे)अनेक गांव, नगरोंमें, न्नक्ति धर संघका उपगार करनें लगे(इससेती)संघ अपना,उपगारी आचार्यकों, इष्टदेव समझ के।सर्व देश गांव नगरोंमें चरण,स्तंन्न, मंदर,स्थापन करके(दादाजीके नामसें) अनेक प्रकारसें। पूजन,वंदन,करनें लगे। सर्व स्थानक दादाजीका नाम प्रशि द्ध ऊवा (आजतक) सर्व स्थानक, प्रत्यक्ष परचा देनेंवाले, संघकों मालुम होरहेहै(ऐसे)महा उपगारी (यह) तीशरा दादाजी ऊए ॥*॥ ऐसे महा प्र न्नावीक उतम आचार्योंके पाटानुपाटे(६४ में)महोपगारक, तेजश्वी, श्रीजिन चंद्र सूरजी सूरीश्वर।सं।१७११आचार्य पदधारक ऊए॥ इनोंके दो शिष्य ऊए

॥१ प्रथम आचार्यपदधारक	॥ २ उपाध्यायपदधारक
॥*॥पट्ट श्रेणी महाराजनामः	॥*॥प्रवर पुज्य श्रेणी नामः॥*॥
॥६६॥ श्रीजिन सुक्खसूरिः	॥६६॥ पुज्य श्रीउदयतिलकजी गणिः
॥६७॥ श्रीजिन न्नक्तिसूरिः	॥६७॥ पुज्य श्रीअमरशीजी गणिः
॥६८॥ श्रीजिन लान्नसूरिः	॥६८॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीचंदजी गणिः
॥६ए॥ श्रीजिन चंद्रसूरिः	॥६ए॥ पुज्य श्रीविजमालजी गणिः
॥७०॥ श्रीजिन हर्षसूरिः	॥७०॥ पुज्य श्रीसुगुणप्रमोदजी गणिः
॥७१॥ श्रीजिन सौन्नाग्यसूरिः	॥७१॥ पुज्य श्रीवियाविशालजीगणिः

॥※॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥※॥

॥७२॥ श्रीजिन हंशसूरिःपदे ॥७२॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीप्रधानजी गणिः
॥७३॥ श्रीजिनचंद्रसूरजी वर्त्तमान पुज्यादेशेन
॥※॥ वर्त्तमान विजय राज्ये ॥※॥ ॥※॥ तत्शिष्य मुख्य ॥※॥

॥※॥ जैन सेवक, पंडित मोहनलाल मुनिः(तथा) अपर नाम । पंन्यित मुक्तिकमलमुनिना (अपना शिष्य वर्ग) पं। खेमचंद । पं।जयचंद । पं।रावतमल । कल्याणचंदादि । सर्व जैन पाठकगण हितार्थ। मुंबई, कलकत्ता। जैन पाठशाला स्थापन (तथा) रत्नसागर पुस्तक प्रवर्त्तन किया ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रत्नसागर, प्रथम भागकी दूसरी आवृत्ती प्रशिद्ध करते । (जो) धर्मरागी, जैन सज्जनोंनें । प्रथम पुस्तकों लेके मदत दीवीहै (जिनोंका) ग्यानवृद्धी उपकारार्थ मान्यसें नाम प्रकाश करते हें ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥पुस्तक॥※॥	॥※॥मान्यवर नाम॥※॥	॥※॥मुकाम॥※॥
५१	तत्व दीपक मोहन मंन्डली	कलकत्ता
५१	ग। श्रीअमरचंदजी मूल चंदजी	नाशक
२५	शे। श्रीमांगीलालजी पूनमचंदजी	कलकत्ता
२१	बाबुराय श्रीप्रतापसिंहजी धनपतिसिंहजी बहादुर	मुर्शिदाबाद
२१	बा। से। श्रीजुहारमलजी गेंगमलजी	उदयपुर
१०	पं। प्र। श्रीमोतीचंदजी (शिष्य) पनालालजी मुनिः	बीकानेर
१०	मु। बाबूराय श्रीबदरीदाशजी बहादुर	कलकत्ता
१०	सा। से। श्रीजुहारमलजी समेरमलजी (हस्ते) छगनमलजी	बीकानेर
१०	झा। श्रीकेशरीचंदजी मगनमलजी (हस्ते) सिवलालजी	फलोधी
५	पं। श्रीरामरतनजी मुनिः	बीकानेर
५	बो।श्रीमूलचंदजी डुलीचंदजी(हस्ते)को। श्री जमनालालजी	इंदोर
५	श्रीयुक्त कनइया लालजी भागा	जयपुर

॥ श्रीः ॥

॥ रत्नसागर ॥

(वा)

॥ मोहनगुणमाला ॥

॥ प्रथम भाग ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

॥ ॐकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी, सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपभयो सबही सिरभूप सुधामी, मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-इष्ट वसे परमिष्ट सदा भ्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥

नमो निसदीस नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता, जाकी जगत्तमें कीरति जागत भागतिहे सब ईति असाता इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे भ्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वाभीष्टार्थ दायिने ।
सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक

ग्यान नगीनो, दूरभ्नग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो, ऐसो पसाय कियो गुरुरायतिणें धमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

॥सरस्वती महाभ्नागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी विशालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । वीणापुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । विद्या दान बरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्वाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकीसेवा रागे आए लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी वीणा वावे रागे सारे रागे गावे हावे भावे सोभ्नापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी कैसी चाली चाले पूजीबंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकीबानी जाकुंग्यानी प्राणी जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

(स्वरवर्णः)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

(व्यञ्जनवर्णः)

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ
ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । क्षः ज्ञः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

कृ गृ तृ दृ पृ मृ वृ शृ सृ हृ

क्य ख्य ग्य घ्य च्य ठ्य ज्य ड्य ढ्य ण्य त्य द्य

ध्य न्य प्य त्र्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र ब्र ज्र त्र द्र प्र भ्र म्र व्र श्र स्र ह्र

क्व ग्व ण्व त्व द्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व क्न

ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण क्म ग्म घ्म च्म

ण्म द्म न्म श्म ष्म स्म ह्म क्ष्म ॥ र्क र्ख र्ग र्घ

अङ्क ङ्ख ञ्च ञ्छ ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण न्त न्थ न्द

न्ध न्न म्म ष्क स्क स्ख श्च श्छ ष्ट ष्ठ स्त स्थ स्प

ष्प स्फ क्क क्ख ग्ग च्च च्छ ज्ज ञ्ज ज्झ द्द त्त

त्थ द्द ड्ड प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल ह्न ह्व ग्द न्ध ब्द

ब्ध ल्ग्म क्त प्त त्क त्प त्स ॥

न्त्य न्द्य न्ध्य न्य श्च्य न्ह्य म्व्य ल्क्य ष्ट्य द्व्य

श्व्य स्त्य स्ल्य न्ल्य क्तय त्र्य त्स्य ।

क्क च्छ्र न्त्र न्द्र ष्ट्र स्त्र त्प्र ज्व ष्ट्व स्व स्त्व

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)

॥ स्वस्तिश्री कृष्णब्रह्मस्था, ऐंवद्राका स्युश्च स्वस्करा,

पृथ्वीभृद्वल्गु श्रेष्ठात्म, त्रम्पास्ते ह्यङ्गसिदा ॥ १ ॥

(शिक्षा वाक्य)

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थ

नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्वत्वंच नृपत्वंच । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥ नक्षत्रभूषणं चंन्द्रो । नारीणां भूषणं पतिः । पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्यभूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । वालो येन न पाठितः । न शोभते सभा मध्ये । हंस मध्ये वको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पंच वर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्तेतु षोडशेवर्षे । पुत्रं मित्र वदाचरेत् ॥ ६ ॥ वरमेको गुणी पुत्रो । नच मूर्ख शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । नच तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा । पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्व शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ नच विद्या समो वंधु र्नचव्याधि समो रिपुः । नचापत्य समः स्नेहो । नच दैवात्परं वलं ॥ ९ ॥ किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये । पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारांश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् । आत्मवत् सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिन्यै नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं । परमेश्वरस्य पूजा विधेया (देवः पूज्यः) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्त्तते । धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं सवीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरुसमीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति । तस्मादादौ ज्ञानं सम्पादनीयं ॥ सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति ॥ विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभायश्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामाकरः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां

चिरमेव दुःखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति । सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता जन्मदाताच ह्यवेत्र समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् । क्रोधवशेन पख्यं जायते । ततः प्रहरेत्। क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥ सर्वं परवशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परहिंसायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्य्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्तिपरेषा मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्म्म ॥ अहंकारं परिहरेत् । नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विछेत् । सन्तोषमूलंहि सुखम् ॥

॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धो वर्णः । समाम्नायः । तत्र चतुर्द्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां द्वौ द्वावन्यो । ऽन्यस्य सवर्णौ । पूर्व्वौ ह्रस्वः । परो दीर्घः । स्वरोवर्णः वर्ज्जोनामी । एकारादीनि संध्यक्षराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गा । पंच पंच । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शषसाश्च घोषाः। घोषवंतोऽन्ये । अनुनासिकाः ङञणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । ऊष्माणः शषसहाः । अः इति विसर्ज्जनीयः । कः इति जिव्हा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इत्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रर्थोपलब्धौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् । अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥ इति संधीसूत्रतः प्रथमश्चरणः समाप्तः ॥

॥ हितोपदेसः ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता । आचार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसिद्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः। पंचेते परमेष्टिनः प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

॥ अर्थः ॥

(एते पंचपरमेष्टिन : प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्व्वन्तु) । यद्

पंचपरमेष्ठि निरन्तर श्रीसंघप्रतें मंगलकरो। (कैसे है पंचपरमेष्टि) (अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिता)। प्रथम परमेष्ठि। श्रीअरिहंत देवः। अष्टकर्म शत्रुकुंहणें (सो) अरिहंत कहियै। अरिहंत कैसे है। (भगवंतज्ञानवंत है। केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है। (तथा) भगशब्दके १४ अर्थ है॥ भगोऽर्क (सूर्य) १। ज्ञान २। महात्म ३। यश ४। वैराग्य ५। मुक्ति ६। रूप ७। वीर्य ८। प्रयत्न ९। इच्छा १०। श्रीलक्ष्मी ११। धर्म १२। ऐश्वर्य १३। योनि १४। यह चवदै अर्थोंमेंसें। सूर्य १ योनि २। दो अर्थ वर्जकर। १२ अर्थ भग शब्दका मिलै (जिससे) भगवंत कहियै (पुनः किंविशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इंद्रमहिता) चौसठ इंद्रोंके पूजनीक। द्वादशगुणैं करी विराजमांन है (सो द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप। रोगादि रहित। प्रस्वेद मलादि रहित। सुगंध शरीर होय॥ १॥ सासोस्वासकी कमलजैसी सुगन्ध होय॥ २॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय॥३॥ आहारनीहारकी विधि अदृश्यहोय। प्राणी देख सक्के नहिं॥ ४॥ ए च्यार अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय। (शेषआठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न होणेसें प्रगट होय। (अशोकवृक्षः) भगवन्तके शरीरसें। बारै गुणो उंचो अशोकवृक्ष होय। जिसकी छायांबैठणेंसें रोगसोगादिक दूर होय॥१॥ (सुरपुष्पवृष्टिः) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै। आकाससें पडता सीधापडै। बिंटनींचै रहै। पंषडी ऊपर रहै॥ २॥ (दिव्यध्वनि) योजनपर्यंत। देवता। मनुष्य। तिर्यंच। सब जीव। अपणी २ भाषामें। यथावस्थित समझै (जाणें) भगवंत मेरी भाषामें उपदेस देते है॥ (कहावी है) एगाइं गिराणेगे। संदेह देहिणं समंछित्ता। तिहुअण मणुंसा संता। अरिहंता हुंतिमे सरणं॥ १॥ ३॥ (चामर ४) भगवंतकै दोनुं पासे इंद्रचामर ढालता रहै॥ ४॥ (आसनंच ५) भगवन्तके बैठणेंको। इंद्रादिक रचित। फिटक रत्नमई सिंहासण रहे॥ ५॥ (भामंडलं ६) भगवन्तके पिछाडी भामंडल रहै (जिसमें) भगवंतके च्यार मुख। च्यारुंदिश तरफ मालुम होय। भगवंत तो पूर्वदिशा मुख कर बैठै। और तीन दिशमे। भगवन्तके प्रतिबिंब इंद्रादिक स्थापन

करै। परंतु भगवन्तके अतिशयसें। च्यारुंदिशे। वारेई परपदाकों। अ-पणेसन्मुख उपदेश देता मालुम होय॥ ६ ॥ (डुंडुभी ७) आकाशमें देव डुंडुभी वाजित्र वाजे ॥ ७ ॥ (शतपत्रं) भगवन्तके विहार काले। वा स्थिति काले। हमेसां मस्तकपर। तीन छत्र रहे॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये होय) ऐसे अरिहंत। देवाधिदेव। चौतीस अतिशय विराजमान। पेंतीस वचनगुण शोभित। एक हजार आठ लक्षणालं-कृत। अठारे दूषण रहत। शांत दांत। कृपासागर। त्रैलोक्यनाथ। जग-त्रयके गुरु (वर्तमानकाले) महाविदेह खेत्रे। केवलज्ञान। केवलदर्शनसें। लोकालोकका भाव देखते थके। पृथ्वीमंडलपर भव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके। विचरते है (ऐसे) अनंतगुणें सुसोभित। अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरे पदे) सिद्ध महाराजकों नमस्कार हुवो। (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों। शुक्लध्यान रूप अग्निसें भस्मकर। सिद्धगतिकों प्रा-मनये (ऐसे) अनंत ग्यान। अनंतदर्शन। अनंत चारित्र। अनंत तप। अनंत वीर्यसंयुक्त। जन्म जरा मरण रोग सोक भयादिकसे विप्रमुक्त। चवदे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत भाव। एक समयमें जाणते थके। देखते थके पिण। आत्मगुणां में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महा-राज। श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति कराः) (तीसरा परमेष्टि) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो। (सो कैसे है) (छत्तीस गुण करी विराजमान। मुक्तिमार्गके साधक। कर्म श-त्रूके विराधक। अबुध जीव प्रतिबोधक। क्षमागुण भंडार। समदृष्टी। तरण तारण। धर्मके धोरी। जिन सासनकी उन्नतिके करण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका। श्रीसिद्धांत सुपाठका) चौथा परमेष्टि। श्रीउपाध्याय महा-राजकों नमस्कार हुवो (सोकैसे है) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार। नय निक्षेपा गमां पर्याय युक्त। सिद्धांतको पढाणेंवाले। ज्ञानचक्षु देणेंवाले। (ऐसे) २५ गुण करी विराजमान। श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमे सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः) (पंचम परमेष्टि)

सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन रत्नके आराधक है । पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता । छकायके पीहर कुक्खी संवल । चारित्रपात्र । मोक्षमार्गके साधक । (ऐसे) सव साधु मुनिराज । सत्ताईस गुणें करी सोभित । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥ इति हितोपदेशः उभय श्रेयार्थम् ॥

॥ ॐ जिन नामः ॥

(अतीत चौवीसी.)

१॥ श्री केवलज्ञानीजी ।	९॥ श्री दामोदरजी ।	१७॥ श्री अनिलनाथजी।
२॥ श्री निर्व्वाणीजी ।	१०॥ श्री सुतेजनाथजी ।	१८॥ श्री यशोधरजी ।
३॥ श्री सागरजी ।	११॥ श्री स्वामीजी ।	१९॥ श्री कृतार्थजी ।
४॥ श्री महायशजी ।	१२॥ श्री मुनिसुव्रतजी ।	२०॥ श्री जिनेश्वरजी ।
५॥ श्री विमलदेवजी ।	१३॥ श्री सुमतिनाथजी ।	२१॥ श्री शुद्धमतीजी ।
६॥ श्री सर्व्वानुभूतिजी ।	१४॥ श्री शिवगतिजी ।	२२॥ श्री शिवकरजी ।
७॥ श्री श्रीधरजी ।	१५॥ श्री अस्तागजी ।	२३॥ श्री स्पन्दनजी ।
८॥ श्री दत्तस्वामीजी ।	१६॥ श्री नमीश्वरजी ।	२४॥ श्री संप्रतिजी ।

इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थं करेभ्यो नमः ॥

(वर्त्तमान चौवीशी)

१॥ श्री ऋषभदेवजी।	९॥ श्री सुविधिनाथजी।	१७॥ श्री कुंथुनाथजी ।
२॥ श्री अजितनाथजी।	१०॥ श्री शीतलनाथजी ।	१८॥ श्री अरनाथजी।
३॥ श्री संभवनाथजी ।	११॥ श्री श्रेयांसजी ।	१९॥ श्री मल्लिनाथजी ।
४॥ श्री अभिनन्दनजी।	१२॥ श्री वासुपुज्यजी ।	२०॥ श्री मुनिसुव्रतजी।
५॥ श्री सुमतिनाथजी ।	१३॥ श्री विमलनाथजी।	२१॥ श्री नमिनाथजी ।
६॥ श्री पद्मप्रभुजी ।	१४॥ श्री अनन्तनाथजी।	२२॥ श्री नेमनाथजी ।
७॥ श्री सुपार्श्वनाथजी।	१५॥ श्री धर्मनाथजी ।	२३॥ श्री पार्श्वनाथजी ।
८॥ श्री चंद्राप्रभुजी ।	१६॥ श्री शान्तिनाथजी।	२४॥ श्री महावीरजी ।

(अनागत चोवीसी)

१॥ श्री पद्मनाभजी ।	ए॥ श्री पोहिलप्रभुजी ।	१७॥ श्री समाधिनाथजी
२॥ श्री सूरदेवजी ।	१०॥ श्री शतकीर्त्तिजी ।	१८॥ श्री संवरनाथजी ।
३॥ श्री सुपार्श्वजी ।	११॥ श्री सुव्रतनाथजी ।	१ए॥ श्री यशोधरजी ।
४॥ श्री स्वयंप्रभुजी ।	१२॥ श्री अममनाथजी ।	२०॥ श्री विजयनाथजी।
५॥ श्री सर्वानुभूतिजी	१३॥ श्री निष्कषायजी ।	२१॥ श्री मल्लिप्रभुजी ।
६॥ श्री देवश्रुतजी ।	१४॥ श्री निष्पुलाकजी ।	२२॥ श्री देव प्रभुजी ।
७॥ श्री उदयप्रभुजी ।	१५॥ श्री निर्ममनाथजी ।	२३॥ श्री अनन्तजी ।
८॥ श्री पेढालप्रभुजी ।	१६॥ श्री चित्रगुप्तिजी ।	२४॥ श्री भद्रंकरजी ।

इति भविष्यच्चतुर्विंशति तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥

(वीसविहरमान नामानि)

१॥ श्री सीमन्धरजी ।	८॥ श्री अनन्तवीर्यजी।	१५॥ श्री नेमप्रभुजी ।
२॥ श्री युगमन्धरजी ।	ए॥ श्री सूरप्रभुजी ।	१६॥ श्री ईश्वरजी ।
३॥ श्री वाहुजी ।	१०॥ श्री विमलजी ।	१७॥ श्री वयरसेनजी ।
४॥ श्री सुवाहुजी ।	११॥ श्री वज्रधरजी ।	१८॥ श्री महाभद्रजी ।
५॥ श्री सुजातजी ।	१२॥ श्री चंद्राननजी ।	१ए॥ श्री देवजसजी ।
६॥ श्री स्वयंप्रभुजी ।	१३॥ श्री चंद्रवाहूजी ।	२०॥ श्री अजितवीर्यजी।
७॥ श्री ऋषभाननजी ।	१४॥ श्री भुजंगजी ।	

इति विंशति विहरमान तिर्थंकरेभ्यो नमः ॥

(च्यार सास्वतानामः)

१॥ श्रीऋषभाननजी ।	३॥ श्रीवारिषेणजी ।
२॥ श्रीचंद्राननजी ।	४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवेरभ्यो नमः ॥

॥ प्रतिक्रमणसूत्र ॥

श्रीपंचपरमेष्ठिने नमः॥णमो अरिहंताणं ॥ नमो सिद्धाणं॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्व·

साहूणं ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ सव्वपाव प्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥१॥ पद ए ॥ संपदा ७ ॥ अक्षर ६७ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६३ ॥

॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लि० ॥

॥※॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥※॥ जयउसामिहि ॥ १ ॥ रिसह सेत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरमंमण । भरवच्छहि मुणि सुव्वय । महुरिपास दुह दुरिअ खंमण । अवर ।वदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणाग-यसंपयं । वंउं जिण सव्वेवि ॥२॥ कम्मभूमिहि २॥ पढमसंघयण उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणवराण विहरंतलब्भइ । नवकोडी केवलिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवरवी समुणि । दुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसदुइ । थुणिजइ निच्चविहाण ॥१॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा छप्पन्न अठ्ठकोडीओ । चउसय छयासीआ । तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥२॥ वंदे नवकोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अठ्ठावीससहस्सा । चउसय अठ्ठासिआ पडिमा ॥३॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपायालेमाणुसेलोए । जाइंजिणबिंबाइं । ताइं सव्वाइ वंदामि ※॥४॥ णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थगराणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर पुंमरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं । धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिह-

थवरणाए दंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत मक्खयमवाबाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपत्ताणं णमोजिणाणं जिअभयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ भविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्टमाणा सवेतिविहेणवंदामि ※॥ १ ॥※ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ए ॥ अक्षर ॥२ए७॥ गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४॥※॥ जावंति चेइआइं । उड्ढेअ अहेअतिरिअलोएय । सवाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥१॥ इच्छामिखमा० । इच्छका० भगवन् । जावंति केविसाहू । भरहेरवए महाविदेहेअ । सवेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंड विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ८२ ॥※ नमो र्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ ※ ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठजराजन्ति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो । तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा । पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस । भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । तादेव दिज्ज बोहिं । भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

※॥ जय वीयराय जगगुरु । होउममं तुहपभावओ । भयवं भवनिव्वेओ । मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोग

विरुद्ध च्चाओ । गुरुजण पूआ परत्थकरणंच । सुह गुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ ॥ अरिहंत चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका- वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहे ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणादंडकः ॥ गुरु ३ लघु २५॥ (इच्छाकारेण संदिसह भगवन्) इरिआवहिअं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं । इरिआवहियाए विराहणाए । गमणा गमणे पाण क्कमणे बीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । उसाउ- त्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा विराहिआ । एगिंदिआ बेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पं- चिंदिआ । अभिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्टिआ । परिआविया किलामिआ उद्दविआ ठाणा उठाण संकामिआ जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ ७ ॥ तस्स उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणठाए । ठामिकाउसग्गं ॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ एवं ॥ १९९ ॥ ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भ- गवंताणं णमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणे-

णं अप्पाणंवोसरामि ॥ ४ ॥ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं । चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ्म मजिअं च वंदे । संभव मभिनंदणं च । सुमइञ्च पउम प्पहं सुपासं । जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहंच पुप्फदंतं । सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरंच मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न मि जिणंच । वंदामि रिठनेमिं । पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ । विहुअ रयमला पहीण जर मरणा । चउवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ वंदिअ महिआ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग वोहि लाभं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा । आइचेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंभीरा । सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥ पद २८ संपदा२८ गुरु२८ लघु २२८ [एवंसर्वअक्षर ॥ २५६] सवलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका उस्सग्गं ॥ ॥ १ ॥ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवढ्ढे । धायइ संम्डे जंवुदीवेअ । भरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा- मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पमल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिंद महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोम्डिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंद गणच्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवलब्भकरेपमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभोपयउ णमो- जिणमए नंदीसयासंजमे । देव भाग सुवन्न किन्नर गण स्स- ब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पयठिओ जगमणं तेलोक्क मच्चासुरं । धम्मो वढ्ढउ सासओ विजयउ धम्मोत्तरं वढ्ढओ ॥४॥

णं । सत्तएहंपिंमेसणाणं । अट्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहंबंभचेरगुत्तीणं । दसविहेसमणधम्मे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं जं विराहिअं । तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ ॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । देवसियं आलोएमि इच्छं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विंचितिओ । अणायारो अणिच्छियव्वो । असावगपावग्गो । नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुव्वयाणं । तिएहं गुणव्वयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग धम्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ ॥

॥ ॥ गणेकमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते । हरिअकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे । सव्वस्स वि देवसिअ । दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह । इच्छंतस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ ॥ संथाराउवट्टणकी । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । छप्पइयासंघट्टणकी । अचक्खु विसयकायकी । सव्वस्सविराहिअ । दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेणसंदिसह । इच्छंतस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ ॥ इच्छाकारेणसंदिसह भगवन् अब्भूट्ठिओमि अब्भिंतर । देवसिअंखामेउं । इच्छंखामेमि देवसिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे समासणे । अंतरभासाए उवरिभासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुम्हेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ ॥
॥इति गुरुवंदणा ॥॥

॥ ॥ करेमि भंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदामि । गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि॥॥करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं,देसउ । सवउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सवउ बंभचेर पोसहं । सवउ अवावार पोसहं । सवउ चउविहे पोसहे । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥॥ आयरियउवज्झाए । सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कयाकसाया । सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समणसंघस्स । भगवउ अंजलिं करिय सीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सवस्स अहियंपि ॥२॥ सवस्स जीवरासिस्स । भावउ धम्मनिहियनियचित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदामह्य । मसेपश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी भवनवासिनी । निहत्य दुरितान्येपा । करोतुसुखमक्षतं २ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ॥॥

॥॥ जय महायश २ जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु

गरिम गुरु । जय उहत्तसत्ताणताणय । थंभणयठिय पासजि-
ण ॥ भवियहभीमभवत्थु । भय अवणिताणंतगुण । तुज्झ-
तिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

। अथ सामायक पोसहपारवागाथा ।

॥※॥ भयवं दसन्नभद्दो । सुदंसणो थूलभद्दवयरोय । स-
फलीकयगिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंद-
णेणं । नासइ पावं असंकियाभावा । फासुअदाणे निज्जर ।
अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढ मणो । कित्तिय-
मित्तंपि संभरइजीवो । जंचन संभरामि अहं । मिच्छामेदुक्कडं
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चिंतिय । मसुहं वायाइभासियं किं-
चि । असुहं काएणकयं । मिच्छामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सा-
माइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो
बोधव्वो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥※॥ सामायकविधै ली-
धी विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय
दसमनका दस वचनका बारै कायाका । वत्तीस दूषणां मांह
जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंक
री मिच्छामिदुक्कडं ॥※॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥※॥

॥ ※ ॥ सिरिथंभणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामी
णं । तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस
महंसरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तीए भत्तीए गुणसुठि-
यस्स । संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥※॥ नमोस्तु वर्द्ध
मानाय । स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा । तज्जया व्याप्त मोक्षाय ।
परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्या-
यः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः । सशुक्रमासोद्भव वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टिं मयि बिस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रंबिभ्रती याबिभर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा । सकल-सुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ ※ ॥ परसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरत-रणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध संसारविहारकारि । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निरन्तरं केवलि सत्तमावो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहका-रिकुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसार-सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥ परिमलभरलोभा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार नीहारहासे । अविरलभवकारा गारविच्छित्तिकारं । कुरुकम-लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥※॥

॥ ※ ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ समगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां । विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्वे साधूनां ॥ २ ॥ यस्याःक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिःसाध्यतेक्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं । भूयान्नःसुखदायिनी ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेस्वर्गिरौ । श्री-पूज्याभयदेवसूरिविबुधा धीशैःसमारोपितः । संसक्तःस्तुति भिर्जलैः शिवफलस्फूर्यत्फणापल्लवः । पार्श्वःकल्पतरुःसमे

प्रथयतां नित्यंमनोवांछितं ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरोदेवो । जीरावल्लिसिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथोनृणांश्रिये ॥ २ ॥ ❋ ॥ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ कल्याणकमलागेहं । नीलदेहंमहासहं । नवरवंम्नाविधंपार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥ १ ॥ इति ॥ ❋ ॥ चउ कसाय पडिमल्ल ल्लूरण । दूज्जयमयणमाण मसमूरण । सरसपियंगु वन्नगयगामिय । जयउपास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसतणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ । नंनवजलहरतडिल्लयलंछिय । सोजिणपासपयछउवंछिय ॥ १ ॥ ❋ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्म्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो । मङ्गलं गौतमःप्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनोधर्म्मोस्तु मङ्गलं ॥ २ ॥ ❋ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परिहितनिरता भवंतु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ३ ॥ ❋ ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय पादाब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युगप्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ४ ॥❋॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधु । युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटीकरोतु । सूरीश्वरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ❋ ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ ❋ ॥ चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं । साहूमङ्गलं । केवलिपणत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो-

गुत्तमा । केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणं-पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ पगामसिज्झाए । निगामसिज्झाए । संथारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आउंटणाए । पसारणाए । छप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । छीएजंभाइए । आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए । सोअणवत्तिआए । इत्थी विप्परियासिआए । दिठी विप्परियासिआए । मण विप्परियासिआए । पाण भोयण विप्परियासिआए । जोमे देवसियो अइआरोकउ । तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ पडिक्कमामिगोअरचरिआए । भिख्खायरिआए । उग्घाडकवाड उग्घाडणाए । साणावच्छादारा संघट्टणाए । मंडीपाहुडिआए । बलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । संकिए सहस्सागारे । आणेसणाए । पाणेसणाए । आणभोयणाए । पाणभोयणाए । बीअभोयणाए । हरिअभोयणाए । पच्छाकम्मिआए । पुराकम्मिआए । अदिठहडाए । दगसंसठहडाए । रयसंसठहडाए पारिसाडणिआए पारिठावणिआए उहासणभिक्खाए । जंउग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं । परिभुत्तंवा जंनपरिठवणिअं । तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ ※ ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं । सिज्झायस्स अकरणयाए । उभउ कालं भंडोवगरणस्स । अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए । अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे वइक्कमे । अइयारे अणायारे । जोमेदेवसिउ अइआरोकउ । तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ※ ॥ पडिक्कमामि एगविहेअसंजमे । पडिक्कमामि दोहिंबंधणेहिं । रागबं

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पडिपुन्नं । नेआउयं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सव्वदुक्खपहीणमग्गं । इत्थट्ठिआजीवा । सिज्झंति । बुज्झंति । मुच्चंति । परिनिव्वायंति । सव्वदुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंसद्दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालितो अणुपालिंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुट्ठिउमि आराहणाए । विरउमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसंपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभं उवसंपज्जामि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिच्छत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंभरामि । जंचन संभरामि । जंपडिक्कमामि । जंचन पडिक्कमामि । तस्ससव्वस्स देवसिअस्स । अइआरस्स पडिक्कमामि । समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिट्ठिसंपन्नो । मायामोसविवज्जिउ । अड्ढाइज्जेसु दीव समुद्देसु । पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा । पंचमहव्वयधारा । अठारसहस्स सीलंगधारा । अक्खयायारचरित्ता । तेसव्वे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वेरंमज्झ न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ डुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पमिक्कंतो । वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥ ※ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं॥※॥

॥ ※ ॥ सचित्त १ । दव्व२ । विगई३ ॥ वाहण ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ए । विलेवण १० ॥ बंभ ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ इति चउद निअम गाथा ॥ ※ ॥

॥ अथ वंदित्तू सुत्र ॥

॥ ※ ॥ वंदित्तु सव्वसिद्धे । धम्मायरिएअ सव्वसाहूअ । इच्छामि पडिक्कमिउं । सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआरो । नाणे तहदंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ वायरोवा । तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहेअ आरंभे । कारावणे अंकरणे । पमिक्कमे देसिअंसव्वं ॥ ३ ॥ जंवद्ध मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेणव दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे ठाणेचंकमणे अणाभोगे । अभिउगे अनिउगे । पमिक्कमे॥५॥ संकाकंखविगिंछा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे । पमिक्क०॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे॥ पयणेअ पयावणेअ जेदोसा । अत्तठाय परठा । उभयठाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव्वयाणं । गुणव्वयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खाणंच चउएहं ॥ पमिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी । थूलगपाणाइवायविरईउ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ए ॥ वहबंधछविछेए । अइभारेभत्तपाणवुछेए । पढम वयस्स इआरे । पमिक्कमे० ॥ १० ॥ वीए अणुवयम्मी । परिथूलग अलिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय-

प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे । मोसुवएसेअ कूडलेहे-
अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइएअणुव्वय-
म्मी । थूलगपरदव्वहरणविरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे । तप्पडिरूवे विरुद्ध
गमणेअ । कूडतुल्लकूडमाणे । पडि० ॥ १४ ॥ चउत्थेअणुव्वय
म्मी। निच्चं परदारगमण विरइउ। आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ-
पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव्व-
अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे । पडिक्क० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-
णुव्वए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए ।
इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु । रुप्पसुवण्णेअ कुविअ परि
माणे । दुप्पएचउप्पयम्मी पडि० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-
माणे । दिसासुउड्ढं अहेयतिरिअंच । वुड्ढिस्सइ अंतरद्धा ।
पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-
अफलेअ गंधमल्लेअ । उवभोग परीभोगे । बीअम्मिगुणव्वए
निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिवुद्धे । अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे।
तुच्छोसहिभक्खणया । पडि० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी ।
भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस
केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुजंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंछ-
णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिज्जा
॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकट्ठमंतमूलभेसिज्जे ।
दिण्णेदिवावएवा । पडि० ॥ २४ ॥ एहाणुवट्टण वन्नगविलेवणे
सद्दरूवरसगंधे । वत्थासणआभरणे । पडि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे
कुक्कुइए । मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडंमिअणट्ठाए
तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवट्ठा

णेतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सद्देरूवेअ पुग्गलक्खेवे। देसाविगासिअम्मी। वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-विही । पमायतह चेव भोयणाभोए । पोसहविहिविवरीए। तइ एसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिक्खमणे ॥ पिहणेववएस-मच्छरेचेव । कालायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा। रागेणव-दोसेणव। तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविभागो । नक उतव चरणकरणगुत्तीसु । संतेफासुअदाणे तंनिंदे तंचगरिहा-मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए। जीविअमरणेअ आससपउगे । पंचविहो अइआरो । मामज्झहुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएणका इअस्स । पडिक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसामाणसिअस्स । सव्वस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सण्णा कसायदंडेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरोतंनिंदे ॥ ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिंचि । अप्पो सिहोइबंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥३६॥ तंपिहुसपडिक्कमणं। सप्परिआवंसउत्तरगुणंच । खिप्पंउवसामेई । वाहिवसुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया । वि ज्जाहणंत मंतेहिं । तोलंहवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं । रागदोससमज्जिअं । आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पं हणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणूसो । आलोइअनिंदिअ गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउ । उहरिअभरुव्वभारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण । सावउजइवि बहुरउहोइ । डुक्खाणमंतकि रिअं । काहीअचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा

नयसंभरिआपडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे । तंनिंदेतंच गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपण्णत्तस्स । अब्भुठिउ मिआराहणाए । विरउमिविराहणाए । तिविहेणपडिक्कंतो । वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं । उढ्ढेअअहेअ तिरिअलोएअ । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं ॥ ४४ ॥ (भगवन्) जावंति केविसाहू । भरहेरवए महाविदेहेअ । सव्वे सितेसिपणउ । तिविहेणतिदंडविरिआणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचि यपावपणासणीए । भवसयसहस्स महणीए । चउवीसजिण विणिग्गयकहा । बउलंतुमेदीअहा ॥ ४६ ॥ ममंगलमरिहंता सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ । सम्मद्दिठीदेवा । दिंतुसमाहिंचबो हिंच ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे । किच्चाणमकरणेहि पडि क्कमणं । असद्दहणेअतहा । विवरीअ परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खा मेमिसव्वजीवे । सव्वेजीवाखमंतुमे मित्तीमेसव्वभूएसु । वैरंमज्झ नकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइअनिंदिअ । गरहिअदुगुंछियंस म्मं । तिविहेणपडिक्कंतो । वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ५० ॥✲॥ इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ✲ ॥

॥✲॥ अथ दशपच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥✲॥

॥ ✲ ॥ तहां प्रथम चउदै नियमसंभारै सो विगय देसावगा सीयुक्तइसतरै पच्चक्खाणकरै ॥ ✲ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं (मुंठसी) पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइ मं । साइमं । अणत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारे णं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । विगइउपच्चक्खाइ । अणत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खि त्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिठावणियागारेणं । महत्तरा-

गारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ । अण्णत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरइ ॥ इति नवकारसीपच्चक्खाणं विगय देशावगासीयुक्तं ॥ १ ॥

॥※॥ तथा जो श्रावक नियम संभारै नही । सो विगइका [अर] देसावगासीका आगार नपचखै । निकेवल । नवकारसी आदिक पच्चक्खाण करै ॥ यथा ॥

॥※॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह । वोसरइ । इति नवकारसी पच्चक्खाण ॥ आगार २ ॥

॥※॥ पोरसिं (मूंठसिं) पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्णत्थ० । सहस्सा० । पच्छण्णकालेणं । दिसामोहेणं । साहुवयणेणं । सव्व० । वोसरइ विगइउ पच्चक्खाइ । इत्यादि पुर्व्वकीपरैकहणा ॥ इति पोरसी पच्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ६ ॥

॥※॥ इसीमाफक साढपोरसीका पच्चक्खाण जाणना । इतना विशेष है । पोरसिं पच्चक्खाइ (इहां) साढपोरसिंपच्चक्खाइ कहणो ॥ इति साढपोरसीपच्चक्खाण आगार ६ ॥※॥ सूरे उग्गए । पुरमड्ढं अवड्ढं (वा) पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । पच्छ० । दिसा० । साहु० । मह० । सव्व० । विगइउ पच्चक्खाइ । इत्यादि पूर्व्ववत् । इति पुरमड्ढपच्चक्खाण ॥ ३ ॥ आगार ७ ॥※॥

॥※॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे । चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।

सह०। पच्छ०। दिसा०। साहु०। सव्व०। एकासणं व्यासणं (वा) पच्चक्खाइ । दुविहं । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं । अण्ण०। सह०। सागारि आगारेणं। आउट्टणपसारेणं। गुरुअब्भुट्ठाणेणं । पारि०। मह०। सव्व० । वो० देसावगासियं। इत्यादिपूर्ब्बवत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पच्चक्खाण ॥ आगार ८ ॥

॥※॥ पोरसिं साढपोरसिंवा पच्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण०। सह०। पच्छण्णका०। दिसा०। साहु०। सव्व०। एकासणं एगठाणं पच्चक्खाइ । दुविहं । तिविहं । चउव्विहंपि आहारं। असणं। खाइमं । साइमं । अन्न०। सह०। सागारि आगारेणं। गुरुअब्भुट्ठाणेणं । पारि०। मह० । सव्व० । वोस० । देसाव० । इत्यादि पूर्ब्बवत् ॥ ५ ॥ इति एकठाणा पच्चक्खाण । आगार ७ ॥※॥

॥※॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ। उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण्ण०। सह०। पच्छ०। दिसामो०। साहु०। सव्व०। आयंबिलं पच्चक्खाइ। अणत्थ०। सह०। लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिट्ठेणं । उक्खित्तविवेगेणं। पडुच्चमक्खियेणं पारिट्ठा० । मह० । सव्व० । एकासणं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं। असणं। खाइमं । साइमं । अण्ण०। सह०। सागारिआगारेणं। आउट्टणपसारेणं। गुरुअब्भुट्ठाणेणं । पारिट्ठा० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ※ ॥ इति आंबिल पच्चक्खाण । आगार ॥ ८ ॥

॥※॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ उग्गएसूरे । चउव्विहंपि आहारं। असणं । पाणं । खाइमं। साइमं । अण्ण

त्थ० । सह० । पच्छ०। दिसा० । साहु० । सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चक्खाइ । अन्न० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारि० । मह०। सव्व०॥ एकासणं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं। अन्न । सह।सागा०। आउंट०। गुरु०। पा०। मह०। सव्व०। वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥
इति निवीपच्चक्खाण ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण०। सह० मह०।सव्व०। वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥
इति चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण ८ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं। असणं । खाइमं । साइमं । अण०। सह०। पाणहार पोरसिं । साढपोरसिं । पुरमढ्ढं । अवढ्ढंवा। पच्चक्खाइ । अण०। सह०। पच्छण०। दिसा०। साहु०। सव्व०। वोसरइ । देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ ※ ॥ इति तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥

॥ ※ ॥ पोरसिं- साढपोरसिं पुरमढ्ढ अवढ्ढ वा पच्चक्खाइ। उग्गएसूरे चउविहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०। सह० पच्छ०। दिसा०। साहु०। सव्व०। एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ तिविहं चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं । साइमं । अण०। सह०। सागा० । गुरु० । मह० । सव्व०। वोसरइ । विगइउ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्व्ववत्॥
इति दत्तिपच्चक्खाण ॥ ए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ- चउव्विहंपि आहारं । अस

णं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण०। सह० मह०। सब्व०। वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १०॥*॥

॥*॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं। असणं। खाइमं । अण्ण० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥
इति दिवसचरमदुविहार पच्चक्खाण ॥*॥

॥*॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण्ण०। सह०। मह०। सव्व०। वोसरइ ॥*॥ इति पाणहार पच्चक्खाण ॥*॥

॥*॥ भवचरमं पच्चक्खाइ । तिविहं चउव्विहंपि आहारं। असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण०। सह० । मह० । सव्व। वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ (भवचरम दोआगार का पिण होय) ॥ इति भवचरमपच्चक्खाण ॥*॥

॥*॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार। अण्ण०। सह०। मह० । सब्व० । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके होय ॥*॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥*॥

॥*॥ अहण्णं भंते। तुम्हाणं समीवे । देसावगासियं पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ। दव्वउणं देसावगासियं । खित्तउणं इत्यवा अण्णत्थवा। कालउणं महुत्तधारणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । छलेणं नछलिज्जामि। अणेणकेविरायंकेणवा। एसो परिणामो नपभ्भिवज्जइ । ताअभिग्गह । अणत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरामि ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥*॥

॥*॥ तथा साधु पच्चखाणकरै । तबदेसावगासी नहिं

पच्चखे । अरुतिविहार उपवासमें । आंबिलमें निवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपच्चखे (सो दिखावेहै) पाणस्स लेवाडेणवा । अलेवाडेणवा अत्थेणवा वहलेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसरइ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिक्खते ॥

॥ उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं । (अर्थ) इहां गुरु कहै पच्चक्खाइ शिष्य कहै पच्चक्खामि॥ पच्चक्खाइका अर्थ सर्वठिकाणें अंगीकार वाचक । जाणनो (जैसें) सूरज उदय हुवांवाद। नवकारसी व्रत अंगीकार करुं।यह पच्चक्खाण (महुर्त्त) दोघडी काल उपरांत । जहां तक नवकार गुणकर पारुं नाहिं। तहां तक (चउवि०)। चारुं आहारनो त्यागरूप व्रत अंगीकार करुं ॥ (सो चार प्रकारको आहार लिखते हे)। असणं ॥ पाणं॥ खाइमं ॥ साइमं । (असणं व्याख्या) असण कहतां अन्न । चोपा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधांन । सत्तू गहुं कों आदिलेके सर्व तरेको आटो ॥ सर्व तरेका साग । लाडू प्रमुख सर्वपकवान । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांडादिक । सर्वकवली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सैंधवादिक । इत्यादिक सर्व अशणमांहि जाणना ॥ १ ॥ (पाणं । व्याख्या) आछण जवोदक तुषोदक तंडलोदक उष्णोदक शुद्धोदक सर्वतरेकाजल पाण आगारमें जाणना ॥ २ ॥ (खाइमं । व्याख्या) खादिम । सूंखडी नालेर खजूर द्राख सेक्योधांन आंबा केला काकडी अखरोट खारक विदाम प्रमुख सर्व जातनोमेवो । सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥ (साइमं । व्याख्या) स्वादिम । तंवोल सूंठि मिरच पींपर हरडे वहेडा तुलछी कसेलो काथो जेष्टीमधु तज तमालपत्र इलायची लवंग वायविडंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकवोवा कचूर नागरमोथ पांन सुपारी पुहकरमूल जवासामूल वावची वांवलछालि धवछालि खेजडछाल खयरसार ए सर्वस्वादिम जांणना ॥ ४ ॥ अव अनाहार लिखतेहैं ॥

नीवछालि मूल पांन सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडच सुंक डिराख रोहिणीछाल पीपलामूल वच धमासड रीगणी एलियो चिणोठी कयर वोरिनामूल (इत्यादि) अणाहार पिण इच्छासंयुक्त छोमना (यहजो) इच्छा-विना अनिष्ट पणें लीजै। जवतो अनाहारहै। जो इच्छासंयुक्त भावता ली जै तो आहार को दूषण लगै। (अवपच्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते हैं)। जिस पच्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पच्चक्खाण नियम करै ॥ अन्नत्थणा भोगेणं ॥ १ ॥ (व्याख्या) अनाभोगटाली। अनाभोग कहिये अत्यन्त विस्मृत होणेंसें (किया जो) पच्चक्खाण यादनरहै। भूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेंमें आई होय पिण जाएयां पीछे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खांण भाजै नही। जा-एयां पछै भक्षण करै तो पच्चक्खाण भाजै ॥ १ ॥ पच्छन्न का-लेणं। (व्याख्या) कालकी प्रच्छन्नता। आकाशें गई उडतीहोय। वा आकाशै वद्दलछाया होय। तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे। सूरज न दीसै। तव भरमसुं पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं। (व्याख्या) सहसा-कार कहीयै अत्यन्त उतावलकै जोगे। अथवा। अकस्मात् विलोवतां तोलतां घृत प्रमुखको छांटो मुखमें पडै। तो। व्रतभंग न होय ॥३॥ दि-सा मोहेणं (व्या०) दिशाकों अजाणतो वैसे। जो दिशा भूल मनुष्य। पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जांणें। इस कारणसें। पच्चक्खाण काल पूर्ण-हुवा विनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं (व्याख्या) साधूकै वचनसें उग्घाडा पोरिसी आदिक भरमसंयुक्त सुणके। पच्चक्खाण काल पूरण हुवो जाणि कर भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ सव्व समाहि वत्तिया गारेणं (व्याख्या०) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम-हीज अकस्मात् शूलादिक रोग ऊपजै। तिससें कदास परिणामोंकी थिरता नरहै। आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय। तव उसरोगीकुं रोग मिटावण वावत औषधादिक देवै। वा आपलेवै। तो पच्चक्खाण भंग नही होय ॥ ६ ॥ महत्तरागारेणं (व्या०) पच्चक्खाण पालणेंसें। जितनी कर्मोंकी निर्ज-रा होती है। उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेंका कारण। और कोई

पुरुपसें वन नहीआवे । ऐसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनें सें । पच्चक्खाण काल पूरण हुवा विनां भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु भोजन न करे । ऐसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पच्चक्खाण किया है । भोजन करनेंकुं वैठाहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय वैठे । तव साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर ठिकाणें जायके भोजन करे तो व्रत भंग नहोय ॥ ओर गृहस्थकों यह आगार ऐसें है) कि जिस पुरुपकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर ओर ठिकाणें भोजन करे तो पच्चक्खाण भंग नहोय ॥ ८ ॥ आउंटण पसारेणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकठे करनेंसें । तथा पसारनेंसें । थोडासा आसन चल जाय । तो व्रतभंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अवभुठाणेणं (व्या०) आपका गुरु आणेंसें । तथा । आपसें कोई वडा पुरुप आणेंसें । विनय निमित्ते । एकासणादि व्रतमें । भोजन करतो पिण आसन छोड उठ खडो होय । तोपिण व्रत भंग नहोय ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं (व्या०) (सर्व पच्चक्खाणां में यह आगार साधुका है) जो आहार नाखणेंसें वहुत जीव विराधना होती जांण कर (गुरु कहै) यह सरस आहार है परठोमति ऐसी आज्ञा देवे (तो) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करे । तो पिण व्रतभंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) भोजन करनेंका थाल प्रमुख भाजन । तिसके मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंछगेरा । परंतु किंचित् वेमालुमसा रह गया होय । उस भाजनमें आयंविलादि व्रतधारी भोजन कर लेवे । तो व्रत भंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं (व्याख्या) आयंविलादि पच्चक्खाणमें ॥ नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । (तिसका फरस) खाणें जोग्य द्रव्यसें किंचित् होगया होय । वहखाणें में आजावे । तो व्रत भंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्थ संसिठेणं (व्या०) भोजन पुरुषे जिस सेती । ऐसा कुडछा आदि भाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासणसें भोजन पुरसें

तो व्रत भंग न होय ॥ १४ ॥ पडुच्चमुक्खिएणं (व्या०) सर्वथा लूखी रोटी खाखराप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चोपडनें में आया होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो (नीवी) पच्चक्खाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आजावेतो व्रतभंग न होय ॥ १५ ॥
॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

॥ दोचेव नमुक्कारो । आगाराछच्चहुंति पोरसिए । सत्तेवय पुरमड्ढे । एगासणंमि अठेव ॥१॥ सत्तेग ठाणस्सओ । अठे वय आयंविलंमि आगारा । पंचे वयभत्तठे । छप्पाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचउरो अभिग्गहे । निव्वीए अठ नवय आगारा । अप्पावरणे पंचउ । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥
॥※॥ इति आगार संख्यागाथा ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥※॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥ मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥ (यहच्यार पडिलेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कहीजै) कामराग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं (यहसातेवोल प्रथम कहीजै) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधर्म्म ३ ॥ आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म्म ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥ आदरुं । (यहनवपडिलेहणभावै हाथे करीजै) । ज्ञानविराधना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ३ ॥ परिहरुं ॥ (यह नव पडिलेहण जीमणै हाथे करीजै । यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पडिलेहण अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निलाडै ॥ ऋद्धिगारव १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं ॥ मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिछादंशणशल्य ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मांन २ ॥ (जीमणैकांधै कारवे परि०) ॥ माया १ ॥ लोभ २ ॥ (डावे कांधै वगलै परि०)। हास्य १ ॥ रति २॥ अरति ३॥(डावे हाथेपरिहरुं)॥ भय १ ॥ शोक २ ॥ डुगंछा ३ ॥ (जीमणें हाथे परिहरुं) ॥ पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ (डावे पगे परिहरुं) । वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ त्रसकाय ३॥ (जीमणेंपगे परिहरुं) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ थापनाचार्यनी पडिलेहणकरतां ॥ १३ बोलचिंतवी जै सो लिखिते हैं ॥ सुद्धस्वरूपधारू १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५॥ प्ररूपणासुद्धि६॥ दर्शनासुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालूं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनुमोडुं १०॥ मनोगुप्त ११॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥ एवं १३॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ ※ ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥※॥ आजूणा चार पहर दिवसमें। जोमें जीव विराध्या होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अपकाय । सातलाख तेऊकाय । सातलाख वाऊ काय। दशलाख प्रत्येक वनस्पती काय। चवदैलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख बेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिंद्री । चारलाख देवता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यंच । चवदैलाख मनुष्य । एवं चारगति । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहण्यो होय । हणाथो होय । हणतां प्रतें भलोजा
ण्यो होय । तेसहू मन । वचन । कायाइंकरी । मिच्छामिडुक्कडं ॥
प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ ।
परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग
१० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा
द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ ।
मिथ्यात्वशल्य १८ । एअढारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा
या होय । सेवतांप्रते भलाजाण्यां होय । ते सहू मन वचन
कायाई करी । मिच्छामि डुक्कडं ॥ ※ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र
पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधर्म्म
नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मादाननी आसेवनाकरी होय
राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । भोक्तकथा । करी होय ।
और जो कोई परनिंदा यें करी । पाप किथो होय । करायो होय
करतांप्रते अणुमोद्यु होय । ते सर्व । मन । वचन । कायायें
करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पडिक्कमणा माहें
आलोउं । तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति लघुअतीचार ॥

———:o:———

॥※॥ अथ पाखी चौमासी संवच्छरी वृद्धअतीचार ॥※॥

॥ ※ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि ।
आयरणंआयारो । इह एसो पंचहाभणिउ ॥१॥ अर्थः ॥ ज्ञाना
चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥ वी
र्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार ।
पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जांणतां अजांणतां । हुओ
होय तेसहू मन वचन कायाइंकरी मिच्छामिडुक्कडं ॥ ※ ॥ (तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहा
णे तहयनिन्नवणे । वंजण अत्थतदुभए । अठविहो नाणमायारो
॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिंगुणिउं नही । अकालेपढिउं ।
विनयहीन । बहुमानहीन । उपधानहीन । श्रीउपाध्यायकनें ।
नहीपढिउं । अथवा अनेराकनें पढिउं । अनेरो गुरु कह्यो ।
व्यंजन अर्थ तदुभय कूडोपढयो । देववांदणें । पडिक्कमणें ।
सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअक्षर कानेंमात्रें । अधि
को उगे । आगलपाछलभण्यो । सूत्र अर्थ कूडाभण्या । भणीनें
वीसाऱ्यो । तपोधनतणेंधर्में । काजो अणउधऱ्यें । दांडीअण
पडिलेही । वसती अणसोधी । असिज्झाई अणोझाकालवेला
मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतभण्यो गुण्यो । योगव
ह्यांपखें भण्यो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी ठवणी कवली
सांपडा सांपडी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसात
ना हुई । पगलागो । थूकलागो । उसीसेमूंक्यो कनेंछतां आहार
नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य भक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे वि
णास्यो । विणसतोउवेख्यो । छतीसक्तें सार संभाल नकीधी॥ज्ञान
वंत प्रतें मछरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें भण
तां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान ।
श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच
ज्ञानतणी । असद्दहणाकीधी । कोई तोतलो बोबलोहस्यो वित
र्क्यो । आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥ ※ ॥ अष्टविधज्ञा
नाचारविषय जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मबादर
जाणतां अजाणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाईकरी
मिछामिदुक्कडं ॥ ※ ॥ दर्शनाचारनाआठअतीचार ॥ ※ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठीअ । उववू हथिरीकरणे । वछल्लपभावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषै निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधस्यो नही । सगलाई मत भलाछे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषै। निःसंदेहबुद्धिधरीनही। चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली नगात्रेदेखी । दुगंछाउपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप वृंहणा । अस्थिरीकरणं । अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंत वी। संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिछतें प्रभावनानकी धी । देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । छतीशक्तें सारसं भाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनभवनतणी चौरासी आसातनाकीधी। गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी । अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंगमपारवे देवपूज्या । वासकूं पी कलसतणो छबकोलागो । मुखतणीवाफलागी । छवणारिय हाथ थकी पडिउ। पडिलेहवो वीसास्यो। नवकरवालीनें पगला गो ॥*॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ * ॥

॥*॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो । पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ नायव्वो ॥१॥ इरियासुमती १॥ भाषासुमती २॥ एषणासुमती ३ ॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे लजल्लसंघाणपारिठावणियासुमती ५॥ मनोगुप्ती १॥ वचनगुप्ती २॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूडीपरें पाली नही ॥*॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको अतीचार० ॥ ४ ॥*॥

॥४॥ विसेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारव्रत श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥५॥ संका कंख विगंछा। पसंस तहसंथवो कुलिंगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी। बल अतिसय ज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिकगुण। सास्वतीप्रतिमा। चारित्रियाना चारित्र। जिनवचनतणो संदेहकीधो। (आकांक्षा) ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग। हनुमंत। इत्येवमादिक। ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ। देव देहराना प्रभावदेखी। रोगिं आतंके। इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या। बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी। भरडा। भगत। लिंगिया। योगी। दरवेश। अनेराई दर्शनियानो। कष्टमंत्र चमत्कारदेखी। परमार्थ जाण्यांविन भूल्या। अनुमोद्या। कुशास्त्रसीख्या। सांभल्या। सराध। संवच्छरी। होली। बलेव। माहीपूनिम। अजापडिवा। प्रेतबीज। गोरत्रीज। विनायगचोथ। नागपांचम। झूलणाछठ। शीलसातम। द्रोआठम। नवली नवम। अहवदसम। व्रतइग्यारस। वच्छबारस। धनतेरस। अनंतचौदस। आदित्यवार। उत्तराइण। नवोदक। ज्यागभोगउत्तारणा कीधा। पीपलपाणीवाल्या। घलाव्या। घरबाहिर। कूई तलाव नदी समुद्र कुंडपुन्यहेतु स्नानकीधा। दांनदीधा। ग्रहण शनीश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया। अजाणनाथाप्या। अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या विचिकिछा। धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो। जिणअरिहंत। धर्मनाआगर। विश्वोपकार सागर। मोक्षमार्ग दातार। देवाधिदेवबुद्धे सुभावे नपूज्या नमान्या। महातमाना भातपाणीतणी दुगंछाकीधी। कुचारित्रिया देखी। चारित्रियाऊप

रि अप्रभावहुउ। मिथ्यात्वीतणी प्रभावना देखी। प्रसंसाकीधी। प्रीतिमांडी। दाक्षिणलगै तेहनोधर्म मान्युं ॥※॥ श्रीसमकित विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि छामिदुक्कडं ॥१॥ ※ ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतीचार ॥※॥ वह बंध छविछ्छेए । अइभारेभत्तपाणवुछ्छेए० । द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघाउ प्रहारघाल्यो। गाढै बंध नवांध्या। घणें भारपीडया। निर्लांछन कर्मकीधा। चारपांणी तणी वेला सारसंभालनकीधी। लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा व्युं। तेणें भूखें आपणजीम्या। अणगलपाणी वावस्यो। रूडै गल्यो नही। गलाव्योनही । अणगलपांणीझील्या। लूगडा धोया। ईंधण अणसोध्योजाल्युं। साप कानखजूरा। सुलह ला। माकड। जूंआ। गोगिंभा। साहतां मूआंदूषव्यां। रूडै थान्कनमूंक्या। कीडी। मकोडी। उद्देही। घीवेली। कातरा चूडेलि। पतंगिया। डेडका। अलसिया। ईली। कूति। डांस। मसा। बगतरा। माखीप्रमुख। जेकेईजीव। विणठा चांपिया। दूहव्या। माला हलावतां। पंखी काग चिडकला ना ईंडा फूटा। अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव। विणठा। चांप्या। दूहव्या। हालतां। चालतां। अनेरुं कांइकामकाज करतां विद्धंसपणूं कीधूं। जीवरक्षारूडै नकीधी। संखारोसूक व्यो। सुल्याधान तावडैदीधा। दलाव्या। भरडाव्या। खाट लातावडैझाटक्या। मूंक्या। मूंकाव्या। जीवाकुलभूमिनीपावी। बासीगार राखी। रखावी। दलणें खांडणें नीपणें। रूडी जय णा नकीधी। आठमचउदसना नियमभागा। धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईन्त । अनेरो० ॥१॥॥ बीजो थूल मृपावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ॥ सहस्सारहस्स दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें । अयुक्तोआलदीधो । किणएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी । तुह्मे तो राजविरुद्धचिंतवोछो । इत्यादिक कह्युं । स्वदारमंत्र भेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो । किणहीनें कूडी बुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखभ री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । भूमि । संबंधि या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको कूठ वोल्युं । हाथ पग भणी गालदीधी । करमकामोडया । अधर्म्मवचन बोल्या ॥ ॥ बीजे मृपावादव्रत० ॥ २ ॥ ॥ तीजे अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प ओगे । घरबाहिर खेत्र खलेपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधी दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधी । चोरधामीत प्रतें संबलदीधुं । संकेतकह्युं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कीधा खोटे तोल मान माप वुहस्या । दाणचोरीकीधी । साटे लांच लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ कीधी । किणहीनें लेखेंपलेखे भूलव्युं । पडीवस्तु ओलवीलीधी तीजे अदत्तादान व्रत० ॥३॥॥ चौथे स्वदारसंतोपमैथूनव्रतें पांच अतीचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्वर परिगृहीतागमन । विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषे । दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन वोल्या । आठम चऊदस

तेलअधिकआण्या । हींडोलैहींच्या । राजकथा । देसकथा । भुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रोद्र ध्यान ध्याया । कर्कसवचन बोल्या । करडकामोडया । संभ्रेडालाया भैंसा सांढकूकड मींढा श्वानादिकूझता कलहकरताजोया खा धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीठुं । कण कपासिआ । काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयग । आलेवनस्यतीखुंदी । गठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक तणा भाजनऊघाडा मूंक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ मारवी ऊंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणाठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगै । एकनेंरिद्धि परिवारवांछी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ ※ ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती चार ॥ ※ ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यवोल्युं । कायअणपडिलेह्युंहलाव्युं । छतीवेलाइं सामायकनलीधुं । सामायकलेई ऊघाडैमुखबोल्या । ऊं घआवीकीधी । बीजदीवातणी ऊजोहीलागी । कण कपासी या माटी मीठुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्यं चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यंची आभडी । मुहपत्तीऊसंघ ट्टी । सामायकअणपूरुंपारिउं । पारवुंवीसारिउं ॥ नवमैसामा यकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ ※ ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअ तीचार ॥※॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे । पेसवण प्पउगे । सद्दाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नि यमितभुमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हा थी बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं ठतुं जणाव्युं ॥※॥ दशमें देशावकासिकव्रत०॥१०॥ इग्यारमेंपोषधोपवासव्रतें पांच अतीचार ॥ ※ ॥ संथारुच्चार विही । पमावतहचेव नोअणाभोए० ॥ पोसहलीधे । संथारात णीभूमी बाहिरलाथंमिला । दिवसे सोध्यापडिलेह्या नही । मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं । अणपुंजी भूमिकाइं परठ विउं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन कह्युं । परठयांपूठे बारत्रिणि बोसिरामि २ नकह्युं । पोसहशा लामांहि । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय । वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ । संथारा पोरसितणो । विधि भणउं वीसारिउं । पोरसिमांहिउं घ्या । अविधिसंथारुंपाथर्युं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवावीसारि या । पोसहअसूरोलियो । सवारोपारियो । पर्व्वतिथि आवी पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥११॥※॥ बारमें अतिथि संविभागव्रतें पांच अतीचार ॥ ※ ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे । ऊपरिथके । महातमाप्रतेंअसुऊतूं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धे सूऊतुं फेडी असूऊतुंकीधुं । देवातणीबुद्धे असूऊतुं फेडी । सूऊतुंकीधुं । आ पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा तमातेड्या । मह्वरलगेदांनदीधुं । गुणवंत आव्ये भगति नसाचवी । छतीसक्तिसाधर्म्मिक वात्सल्यनकीधुं । अनेराईधर्म्मक्षेत्रसी दाता । छतीशक्तेंऊधस्यानही ॥※॥ बारमेंअतिथिसंविभागव्र० ॥१२॥※॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०

इहलोकासंसप्पउगे । परलोगासंसप्पउगे । जीविआसंसप्पउगे । मरणासंसप्पउगे । कामभोगासंसप्पउगे । इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पदवांछ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी । सुखआये जीववातणी वांछकीधी । दुखआये मरवातणी वांछ कीधी । काम भोग तणीइछा कीधी ॥ ※ ॥ संलेहणाव्रतवि०॥ ※ ॥ तपाचारबारेभेदें ॥ छअभ्यंतर । छबाहिर । अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पर्व्वेतिथि छतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही । आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसंकोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । सांढसी । मूंठसी । साढपोरसी । पुरमुह । एकासणो । वेआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख पच्चक्खाण पारवावीसार्या । वैसतां नवकारभणयुंनही । ऊठतां दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । काचोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ ※ ॥ बाह्य तपव्रतवि०॥ ※ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ※ ॥ पायच्छित्तंविणउ०। गुरुकनें मनसुध्दे आलोयण लीधीनही । गुरुदत्तप्रायच्छित्ततप लेखासुध्द पुहचाड्युं नही । देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षया धर्म्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झायकीधोनही । धर्म्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कर्म्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गनकीधो ॥ ※ ॥ अभ्यंतरतपविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ ※ ॥ अणगुहियबलविरिउ । परक्कमइजोजहुंतगणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यव्वोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्मकृत्य तणें विषे। मन वचन कायातणो छतुं वलवीर्यगोपव्युं। रूडापंचांग खमा समण नदीधा वेगंपडिक्कमणंकीधुं ॥ ※ ॥ वीर्याचारविष० ॥ ॥ ※ ॥ नाणाइअठ अड्वय। सम संलेहण पण पनरकम्मेसु। वारसतव विरिअ तिगं। चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥※॥

॥※॥ पडिसिद्धाणंकरणे०। जिनप्रतिपिद्ध। वावीसअभक्ष। वत्तीसअनंतकाय। वहुवीजभक्षण। महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधा। नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक। तथा तीर्थ यात्रा दिक नकीधा। जीवाजीवादिविचार सद्दह्यिानही। आपणी कुमतिलगे उतसुत्रपरूपणाकीधी। प्राणा तिपात १। मृषावाद २। अदत्तादान ३। मैथुन ४। परिग्रह ५। क्रोध ६। मान ७। माया ८। लोभ ए। राग १०। द्वेष ११। कलह १२। अभ्याख्यान १३। परपरिवाद १४। पैशुन्य १५। अरतिरति १६। मायामृषावाद १७। मिथ्यात्वशल्य १८। एअढारहपापस्थानकमांहि। जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारे श्रावकधर्मे। श्रीसम्यक्त मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको अतीचार। पक्षदिवसमांहि। सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिच्छामिडुकडं। इति श्री श्रावकूंकेवारहव्रतना अतीचार संपूर्णम् ॥ ※ ॥

※॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीलि ॥※

॥ ※ ॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जयजिणधन्नंतरि। जयतिहुअण कल्लाणकोस डुरिअ करि केसरि। तिहुअण जण

अविलंघियाण भुवणत्तयसामिअ । कुणसु सदाइ जिणेसपास थंभणयपुरठिअ ॥१॥ तइ समरंत लहंतिझत्ति वर पुत्त कलत्तहि ॥ धण्ण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण जण भुंजहिरक्कहि । पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प रुक्ख सुक्खहिकुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्ण नठ्ठ सुकुठिण । चक्खुक्खीण खएणखुण्ण नरसल्लिअ सूलिण । तु हजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुणण्णव । जयधण्णंतरिपास महवि तुहं रोगहरोभव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धि अपयत्तिण । भुवणब्भुअ अठविह सिद्धिसिज्झइतुहनामिण । तुहनामिण अपवित्तठवि जणहोइ पवित्तउ । तंतिहुअण क ल्लाणकोस तुहुंपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ । चरथिरगरल गहुग्गखग्ग रिउवग्गविगंजइ । दुत्थि यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । दुरिअइं हरउ सुपा सदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंभेइभीम दप्पुद्धर सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथल चारि रउद्दखुद्द पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ णजयपास सुसामिअ ॥६॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ भत्ति भ्भरनिब्भर । रोमंचंचिअ चारुकाय किण्णरनर सुरवर । जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोभवणत्तय सामिपास महमद्दउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलभ सल भयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदभवणत्तय दि णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंभणय ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ वहुविहवण्णुअवण्णु सु ण्णुवण्णिउछण्णण्णहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्ध । सोजोइअम णकमलभसल सुहपासपवद्ध ॥ ए ॥ भयविब्भलरणझणिर दसणथरहरिअसरीरय । तरलिअनयण विसुणसुणगग्गर गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर । महविज्झवि सिझसइपास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु लिय । मणहिमणुसत्तणुपुणअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाण महेसुघंट टंका रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लभत्ति सुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ लिअ पवत्तयंति भवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज यपाससुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मलकेवल किरणनियर विहुरिय तमपयहर । दंसिअसयलपयत्थसत्थवित्थरिअपहाभर । क लिकलुसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु हरपासनाह भुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि ससित्त माणवमइमेइणि । अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइ णि । जायइफलभर भरियहरिय उहदाहअणोवम । इयमइ मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क ल्लाणवल्लि उल्लूरिअदुहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग मवारणुं । जयजंतुहजणणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मध म्मसोजयउपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवा सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसु वय । तुहउत्तठसुनठसुठु अविसंठुलचित्तहिं । इयतिहुअण व णसीहपास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय ण कररंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निलुप्पल

सामल । कमठासुरउवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ । जयपच्च क्खजिणेसपास थंभणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलुपमा णुनेय वायाविविसंठलु । नियतणुरविअविणयसहाव आलस विहिलंघलु । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ । इयमइमा अवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणु किंकिंवनजंपिउ । किंवनचिठिउकिठदेव दीणयमविलंबिउ । कासनकियनिप्फललल्ल अह्मेहिंदुहत्तइं । तहविनपत्तउताणकिं पि पइंपहुपरिचत्तइं ॥१९॥ तुह्जं सामिहुतुह्जं मायवप्प तुह्जं मि त्तपियंकरु । तुह्जंगइतुह्जंमइतुंहिजताण तुह्जंगुरुखेमंकरु । हउंदु हभरभारिअवराउराउलनिब्भग्गउ । लीणउतुहकमकमल स रण जिणपालहिचंगउ ॥२०॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा वियसुहसय । किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय । किविगंजिअरिउवग्गकेवि जसधवलिअभूअल । मइंअवहीर हिकेणपाससरणागयवच्छल ॥२१॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पण्ण पउअण । तुह्जंजिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण । सत्तुमित्त समचित्तवित्ति नयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गउवि म इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहतत्तगत्ततुह्जंदुहनासणप रु । हउंसुयणहकरुणिक्कगणतुह्जंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा सअसामिसालतुह्जंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंझखंत इयपासनसोहिय ॥ २३॥ जुग्गाजुग्गविभागनाहनहुजोअणतु हसम । भवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम । समविसमइ किंघणनिएइ भुविदाहसमंतउ । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु णंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअणविकिविजुग्गय । जंजोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइंनाहिणचित्तउ । तोजुग्गउअहमेवपास पालहिमइं चंगउ ॥ ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेस किविमणहिदीणह । जंपा सविउवयारुकरइतुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकल्लाणजेण जिणतुम्हपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किंपुण । हउंदुक्खिउ निरु सत्तचत्त दुक्कउउस्सुयमण । तंमणउ निमि सेणएण एउ विज्जइ लब्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेण किं उंबरुप चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासिउ । किज्जउजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपिउ । अणुणजिणजगतुह समोविदक्खिवणदयासउ । जइअवगिणसितुंहिजअहहकिहहो सुहयासउ ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलविउ तउजाणुंजिणपासतुह्म हउंअंगीकरिअउ । इयमहयच्छिअजंन होइसातुहउंहावण । रक्खंतहनियकित्तिणेयजुज्जइअवहीरण ॥ ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेव इअण्हवणमहूसउ । जंअणलिय गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धउ । इयमइंपसियसु पासना ह थंभणयपुरठिअ । इयमुणिवर सिरिअभयदेव विणवइआणिं दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंभनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ परकीसुत्र लि । ॥ ※ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे यरिसी । महरिसिनाणंचवंदामि ॥१॥ जेयइमंगुणरयणसायर । मविराहिऊणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह णाभिमुहो ॥ २ ॥ ममर्मंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचधम्मो यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामद्दवंचेव ॥ ३ ॥ लोगंमिसंज

जाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा णंवोसरामी। सेमुसावाएचउविहेपन्नत्ते (तंजहा) दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं मुसावाएसवदवेसु खित्तउणंमुसावाए लोए वा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा भावउणंमुसावा ए रागेणवादोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाण स्स अहिरणसुवणियस्स उवसमपभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निविया रस्स निवित्ती लक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमण पज्जवशाणफलस्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउ क्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्ख मणु पालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविउवा भासिज्जंतोवा परेहिंसुमणुन्नाउ तंनिं दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चक्खामि सवंमुसावायं जा वज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतस क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई भिक्खूवाभिक्खूणीवा संजय विरय पडिहयपच्चक्खाय पावकम्मेदियावा राउवा एगउवा परसागउवा सुत्तेवा जागरमाणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु
गामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं
सव्वेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अति
प्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे
तंडुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारु
त्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेभंतेमहव्वए उव
ठिउमिसव्वाउमुसावायाउवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेभंतेमहव्वए
अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वंभंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा
मेवा नगरेवा रणेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ
चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंअदिन्नंगिण्हावि
ज्जा अदिन्नंगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिवि
हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि
अन्नंन समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा
मि अप्पाणंवोसरामि सेअदिन्नादाणेचउव्विहे पन्नत्ते (तंजहा)
दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वउणं अदिन्नादाणे गहण
धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रणेवा
कालउणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा भावउणं अदिन्नादाणे रा
गेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अ
हिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स
अहिरण सुवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्प
यमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स
संपक्खालियस्स चित्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स नि
व्वित्ति लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमणपज्जवसाणफल स्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मं दयाए किड्डयाए तिगारबगरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदिय वसट्टेणं पडिपुन्न भारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा घिप्पं तंवा परेहिंसमणुन्नाउतंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्च क्खामि सवंभंतेअदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवस यंअदिन्नंगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिएहाविज्जा अदिएहंगि एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि(तंजहा)अरिहंतसक्खियं सिद्धस क्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ भिक्खू वा भिक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा मिए सवेसिंपाणाणंसवेसिं भूयाणं सवेसिंजीवाणं सवेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी डणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे म हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्ख क्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणा ए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ तच्चेभंतेमहवए अच्छु ठिउ मिसवाउ अदिन्नादाणाउवेरमणं॥३॥ अहावरेचउत्थेभंतेमहवए मेहुणाउवेरमणं सवंभंतेमेहुणं पच्चक्खामि। सेदिवंवा माणुसं वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंन समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥ सेमेहुणेचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग एसुवा खित्तउणंमेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालउणं मेहुणे दियावा राउवा भावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसाल क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर न्न सुवण्णियस्स उवसम प्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पय माणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि त्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहया ए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचें दियवसट्टेणं पडिपुन्नंभारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से विज्जंतंवा परेहिंसमणुण्णाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिवि हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अ णागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेन समणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साउसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ नि क्खूवा निक्खूणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं नूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागु णे महाणुनावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलानाए संसारु त्तारणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ चउत्थेनंते महव्वए उवट्ठिउमिसव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं ॥४॥ अहावरेपंचमेनंतेमहव्व ए परिग्गहाउवेरमणं सव्वंनंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा ब हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिएहाविज्जा परि ग्गहं गिएहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्सनंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि। सेपरिग्गहेचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खि त्तउ कालउ नावउ दव्वउणंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खि त्तउणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रण्णेसुवा कालउणं परिग्गहे दियावा राउवा नावउणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसाल क्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्न सुवन्नियस्स उवसमपन्नवस्स नवबंन० अप्पयण निक्खावित्तिय

स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस स्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिय स्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवण याए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसप डिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरु आए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नं भारियाए सा यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गहणेसु परि ग्गाहो गहिउवा गहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदा मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदा मि पडुप न्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जी वाए अणिस्सिउहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंप रिग्गहं परिगिएहाविज्जा परिग्गहं परिगिएहंतेवि अन्नेनसमणु जाणामि (तंजहा) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स व्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदु क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड णयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महा णुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्ख याए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणंविहरामि ॥ पंचमेभंतेमहव्वए उवट्ठिउमि

सव्वाउ परिग्गहाउवेरमणं ५ ॥ अहावरे छट्ठेभंतेवए राईभोयणा
उवेरमणं सव्वंभंतेराईभोयणं पच्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराईं भुंजिज्जा नेवन्नेहिंराईं भुंजावि
ज्जा राईभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि
अन्नंनसमणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसरामि । सेराईभोयणेचउव्विहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ
खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइ
मेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे समयखित्ते कालउणं राईभो
यणे दियावा राउवा भावउणं राईभोयणे तिक्खेवा कडुएवा कसा
इलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिय
मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा
हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवण्णियस्स
उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावि
त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स च
त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पं
चमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं
सारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्ना
णयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा
पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि
ड्डयाए तिगारव गरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नंभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा
भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुंजंतंवा परेहिंस
मणुन्नाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्खामि स
व्वं राईभोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिजहिं नेवसयं राईभुंजि
ज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा
मि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे
वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा संज
य विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राजवा एगोवा प
रसागजवा सुत्तेवा जागरमाणेवा. एसखलु राईभोयणस्सवेरमणे
हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणा
णं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि
यावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापु
रिसाणचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरक
याए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंप
ज्जित्ताणं विहरामि॥ छठ्ठेभंतेवए उवठ्ठिजमि सव्वाज राईभोयणाजवे
रमणं ॥६॥ इच्चेइयाइंपंचमहव्वयाइं। राईभोयणवेरमणछठ्ठाइं।अत्त
हियठ्ठाए उवसंपज्जित्ताणंविहरामि॥१॥ अप्पसत्थायजेजोगा।प
रिणामायदारुणा। पाणाइवायस्स वेरमणे। एसवुत्तेअइक्कमे॥२॥
तिव्व रागायजाभासा। तिव्वदोसातहेवय। मुसावायस्सवेरमणे।
एसवुत्ते अइक्कमे॥३॥ उग्गहंचअजाइत्ता। अविदिन्नेवउग्गहे।
अदिन्नादाणस्सवेरमणे। एसवुत्तेअइक्कमे॥४॥ सद्दारूवारसागं
धा। फासाणंपवियारणा। मेहुणस्सवेरमणे। एसवुत्तेअइक्कमे
॥५॥ इच्छामुच्छायगेहीय। कंखालोभेयदारुणे। परिग्गहस्सवे
रमणे। एसवुत्तेअइक्कमे ॥६॥ अयमत्तेआहारे। सूरखित्तेयसं
किए। राईभोयणस्सवेरमणे। एसवुत्तेअइक्कमे ॥६॥ दंसणना

णचरित्ते । अविराहित्ताठिनसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ ॥१॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ता ठिनसमणधम्मे । बीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायाउ ॥२॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताठिनसमणधम्मे । तइयंवयमणु रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणाउ ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ विराहित्ताठिनसमणधम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे हुणाउ ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताठिनसमणधम्मे । पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ दंसणनाणच रित्ते । अविराहित्ताठिनसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विर यामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठि नसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ॥१॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिनसमणधम्मे । बीयंवयमणु रक्खे । विरयामोमुसावायाउ ॥ २ ॥ आलयविहासमिउ । जुत्तोगुत्तोठिनसमणधम्मे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि न्नादाणाउ ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिनसमण धम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणाउ ॥ ४ ॥ आल यविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिनसमणधम्मे । पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तो ठिनसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिनसमणधम्मे । ति विहेणपडिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तंएगमेवअन्नाणं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥१॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंएगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥२॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियझाणाइअट्टरु

ढाइं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥३॥ डुविहंचरित्तध
म्मं । डुन्नियझाणाइधम्मसुक्काइं । ऊवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्व
एपंच ॥४॥ किन्हानीलाकाऊ । तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाऊ । परि
वज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ तेऊपह्मासुक्का । तिन्नि
यलेसाऊसुपसत्थाऊ । ऊवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच
॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविऊ । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिवि.
हेणविसच्चविऊ । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियडुहसि
ज्जा । चऊरोसन्नातहकसायाय । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामि
महव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा । चऊविहंसंवरंसमाहिं
च । ऊवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ए ॥ पंचेवयकामगु
णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व
एपंच ॥ १० ॥ पंचेंदियसंवरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्झायं । ऊव
संपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ ठज्जीवनिकायवहं
ठप्पिय भासाऊ अप्पसत्थाऊ । परिवज्जंतो गुत्तो । रक्खामि मह
व्वएपंच ॥ १२ ॥ ठव्विहमब्भिंतरयं । वज्झंपियठव्विहंतवोकम्मं ।
ऊवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तभयठाणाइं ।
सत्तविहंचेवनाणविब्भंगं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व
एपंच ॥ १४ ॥ पिंमेसणपाणेसण । ऊग्गहसतिकया महझय
णा । ऊवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय
ठाणाइं । अठयकम्माइंतेसिंवंधंच । परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि
महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिठाअठविहनिठि
अठेहिं । ऊवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥१७॥ नवपाव
नियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवज्जंतोगुत्तो ।
रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नवबंभचेरगुत्तो । डुनवविहंवं

भचेरपडिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ उवघायंचदसविहं । असंवरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो॥ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठाणा । दसचेवदसा उसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ आसायणंचसव्वं । तिगुणंइक्कारसंविवज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच॥२२॥एवंतिदंडविरउ। तिगरणसुद्धोतिसल्ल निसल्लो । तिविहेणपडिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच॥२३॥ इच्चेयं महव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंववसाउ साहणठो पाव निवारणं निकायणा भावविसोही पडागगहणं निज्जुहणाराह णागुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तयानाणे परमठो उत्तमठो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसिउपवयणस्ससारो छज्जीवनिकायसंजमं उवसंवसिउ तिल्लुक्कसक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर मणंतमप्पमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू ते अरिहउ नमोत्थूते भगवउ (तिकट्टु) इच्चेसा खलुमहव्वय उच्चा रणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं इमंवाइयं छव्विहमावस्सयंभगवंतं (तंजहा) सामाइयं१ चउवीस त्थउ २ वंदणयं ३ पडिक्कमणं ४ काउसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ सव्वेहंपिएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भग वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपक्खस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्ख

क्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तार
णाए त्तिकट्टू उवसंपज्जत्ताणं विहरामी (अंतोपक्खस्स) जंनवाइ
यं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा
मो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो
अहारिहंतवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिच्छामिदुक्क
डं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का
लियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प
सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवाभिगमो पन्नव
णा महापन्नवणा नंदीअणुउगदाराइं देविंदत्थउ तंडुलवेयालियं
चंदाविज्झयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंडलप्पवेसो गणिवि
ज्जा विज्जाचरणविणिच्छउ झाणविभत्ती आणविभत्ती आयवि
सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरागसुयं विहारकप्पो च
रणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिएयंमि
अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थेसगंथे सनिज्जुत्ती
ए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता
वा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा
लेमो अणुपालेमो ते भावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोइंतेहिं फा
संतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपक्खस्स) जंवाइयं पढियं
परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए
कम्मक्खयाए मोहक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु
उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोपक्खस्स) जंनवाइअं नपढियं
न परियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी
रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदा

अणायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुव्वयाणं सायरिय नवझायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअणाणं भावेमाणाणं वज्ञसुभे णभे दिवसो पक्खो चोमासियो वरकंतो अन्नोयन्नेकल्लाणेणं प ज्ञ वट्ठिन्ने सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुम्हेहिंसम्मं। इतिगुरु वचनं ॥ इच्छामिखमासणो पुव्विंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुम्हेणं पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बज्ञदेवसिया साज्ञणोदिठा सम णावा गामाणुगामंडुइज्ञ माणावा रायणिया संपुच्छंति नमराय णिया वंदंति अज्ञयावंदंति अज्ञयानवंदंति सावयावंदंति सावयानवंदंति अहंपिनिसल्लो निक्कसान तिकट्टु सिरसा मण सा मत्थएणवंदामि॥ इतिशिष्यसाधु वचनं ॥ इहां गुरुवचन अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अब्भुठ्ठिन्नमि तुम्हेणं संतियं अहाकप्पंवा वत्थंवा पडिग्गहंवा कंबलंवा पायपुच्छणंवा रजहर णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठंवा हेनंवा पसि णंवा वागरणंवा तुब्भेवि यत्तेणंदिन्नं मएअविणए अपम्छिन्नियं॥ तस्समिच्छामि डुक्कमं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं २ ॥ इच्छामि खमासमणो अहमविपुव्वाइं कयाइंच मेकियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं तरे सेविन सेवाविन अवग्गहिन सारिन वारिन चोइन पडिचो इन वियत्ता मे पडिचोयणा नवट्ठिन्नहिं तुम्हेणं तवतेयसिरीए इमान चानरंतसंसारकंतारान साहट्टु नित्थरिस्सामि तिकट्टु सिर सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाक्षिकखामणकानि ॥*॥

॥※॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रभाविक ॥※॥

॥ ※ ॥ अजियंजिअसवभयं । संतिंच पसंत सवगयपावं । जयगुरुसं तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलभावे । तेहंविउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे । थोसामिसुदिठसब्भावे ॥२॥ गाहा ॥ सवडुक्खप्पसंतिणं । सवपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो अजियसंतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियंच गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजियस्सय संति महामुणिणोविअ संतिअरं । सययं म मणिव्वुइकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ डु क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च भावउ । अभ यकरे सरणंपवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । मुव रय जरमरणं । सुर असुर गरुड भुयगवइ । पयय पणिवइयं । अजिय महमविय सुनयनयनिउण मभयकरं । सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अजव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं तिमुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुवपत्थिवंचवर हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिछवछं । मयगललीलाय माणव रगंधहत्थिपत्थाणपत्थिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थबाहुं । धंतकणगरुअगनि रुवहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुइसुहमणाभिराम परम रमणिज्जवरदेवडुंडहि । निनायमहुरयरपसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढउ ॥ अजिअंजिआ रिगणं । जिअसवभयंभवोहरिउ । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेभयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउर । नरीसरोपढमं । तउमहा चक्कवट्टिभोए । महप्पभावो । जोबावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमजण वयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि चउसठिसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई । चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी छ

वइगामकोम्हिसामी। आसी जो न्नारहम्मिन्नयवं ॥११॥ वेढन ॥ तंसंतिसंति अरं । संतिएहं सव्वन्नया। संतिंथुणामिजिणं संतिंविहेउमे॥१२॥रासाणंदियअं इख्खागुविदेहनरीसर नरवसहामुणिवसहा। नवसारयससिसकलाणण विग यतमा विहुअरया । अजियउत्तमतेअगुणेहिमहामुणि अमिअबला विउलकु ला । पणमामितेन्नवन्नयमूरण जगसरणाममसरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंदचंदसूर वंदहठतुठजिठपरम । लठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुद्धनिद्धधव ल। दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर । दित्ततेयविंदधेयसव्वलोय न्नाविअप्पन्नावणे। पइअसमेसमाहिं ॥१४॥ नारायउ ॥ विमलससिक लाइरेअ सोमं । वितिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवइगणाइरेअ रूवं । धर णीधरपवराइरेअसारं॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजिअं । सारीरेय बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥ न्नुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससी तेयगुणेहिं पावइ नतं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइनतं तियसगणवई। सारगुणेहिं पावइन तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं । धीरजण थुअच्चिअंचुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयउ । संतिमहंमहामुणिं सरणमुवणामे ॥ १८ ॥ ललियअं ॥ विणाउणाय सिरर इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विवुहाहिव धणवइनरवइ थुअमहि अच्चिअंवहुसो । अइरुग्गय सरयदिवायर समहिअ सप्पन्नंतवसा । गयणं गणविअरण समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोम्हिसयसंथुअं । समण संघपरिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अन्नयंअणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं पयउपणमे ॥२१॥ विज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहतुरय पहकरसइहिंहुलिअं । ससंन्नमोरयणखुन्निअललिअचलकुंम्हलं । गयतिरीड सोहंतमउलिमाला॥२२॥ वेढउ ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा । वेरविउत्तान्नत्तिसुजु त्ता। आयरन्नूसिअसंन्नमपिंम्हिअ। सुठुसुविह्मिअ सव्वबलोघा । उत्तमकंचणर यणपरूविअ। न्नासुरन्नूसणन्नासुरिअंगा। गायसमोणयन्नत्तिवसागय । पंज लिपेसिअसीसपणामा ॥२३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सन्नवणाइ

तोगया ॥२४॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसभयमोहवज्जि अं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अं वरंतर वियारणिआहिं । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्थणसा लणिआहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतर थणभर विणमिअगायलयाहिं । मणिकंचणपसिढिलमेहल सोहियसोणि तडाहिं । वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणिआहिं । रयकर चउर म नोहर सुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआ हिं वंदिआयजस्सतेसुविक्कमाकमा । अप्पणोनिलाडएहिं मंडणोडणप्प गारएहिं केहिंकेहिंवी । अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संग यं गया हिं । भत्तिसन्निविठवंदणागयाहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपण मामि ॥२९॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववहु हिं । पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्तमसासणयस्सा । भत्तिवसागयपिंमियआ हिं । देववरच्छरसावहुआहिं । सुरवररइगुणपंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ भासुरिअं ॥ वंससद्दतंतितालमेलए । तिउक्खराभिराम सद्दमीसएकएअ । सुइसमाणणे असुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं । वलयमेहला कलावनेउरा भिराम सद्द मीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावभावविब्भमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंग हारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्कमाकमा । तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमंजिणं ॥३१॥ नारायउ ॥ छत्तचा मर पडागजुअजव मंडिआ । झयवर मगर तुरग सिरिवच्छसुलंछणा । दीव समुद्द मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थिअ वसहसीह सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ ॥ ३२ ॥ ललियय्यं ॥ सहावलठा समपइठा । अदोसदुठा गुणेहिजिठा पसायसिठा तवेणपुठा सिरीइठा रिसीहिंजुठा ॥३३॥ वाणवासिआ ॥ तेत वेण धुअसव्वपावया । सव्वलोगहिअमूलपावया । संथुआअजिअसंति पा वया । ऊंतुमेसिवसुहाण दावया ॥३४॥ अपरंतिका ॥ एवंतववलविउलं । थुअंमए अजियसंति जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं । गयंगयंसासयंविम लं ॥३५॥ गाहा ॥ तंवहुगुणप्पसायं । मुक्खसुहेणपरमेण अविसायं । नासेउमे

विसायं । कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तंमोएउअनंदिं । पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं । परसाविय सुहनंदिं । ममयदिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासे । संवछर राइएय दिअहेअ । सोअ वोसवेहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ । उभ उकालंपि अजिअ संति थुअं । नऊ ऊति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा विनासंति ॥३९॥ जइइछह परमपयं । अहवाकित्तीसु वित्थमा भवणे । तातिल्लुक्कुद्ध रणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥✻॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥✻ ॥

॥✻॥ उल्लासिक्कम नक्खनिग्गयपहादंमछलेणंगिणं । वंदा रूण दिसंतइववपयमं निव्वाण मग्गावलिं । कुंदिंडुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु । केरेदोवि दुइज्जसोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमज लहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥ तहविअ वज्जमाणु ल्लासिभत्तिब्भरेण । गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव । अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं । फलदइ लज्जसव्वं वंछिअं णिछिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नामिमित्तेणजाणं । बिहडइलज्जउघा । निछदो घट्टघट्टं । नमिरसुरकिरीडू घठपायारविंदे । सययमजिअसंती ते जिणिं दे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढएदेहदित्ती । विल्लसइ भुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइसंसारछित्ती । जिणजुअपयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं । फुडघणरसभावो दारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसणछेअभीया । इवपणमण मंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती तेकयासेससंती । कणयरय पसंगा छज्जएजाणमुत्ती । सरभसपरिरंभा रंभिनिव्वाणलछी । घणथणघुसिणं कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वज्जविहनयभंगं वत्थुणिच्चंअणिच्चं । सदसदण भिलप्पा लप्पमेगंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धंचजेसिं । वयणमवयणि ज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंधयारं । भमइ जय मसण्णं ताव मिछत्तछण्णं । फुरइफुरु फलंता णंतणाणं सुपूरो । पयड मजिअसंती झाणसूरोनजाव ॥ ९॥ अरिकरि हरि तिएज्ज एहंवुचोराहि वा

ही। समरम्मर मारी रुद्दखुद्दोवसग्गा। पलयमजिअसंती कित्तणेऊत्तिजं ती.। निविडतरतमोहा नक्खरा लंखिध्यव ॥१०॥ निचिअउरिअदारु द्दित्त ऊाणग्गिजाला। परिगय मिव गोरं चिंतिअं ऊाण रूवं। कणयनिहसरे हा कंतिचोरं करिज्जा। चरथिर मिह लच्छिं गाढसं थंभिध्यव ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं। जलहिखहरिहीरं ताणगुत्तिणियाणं। जलिअ जलणजाला लिंगिआणंचऊाणं। जणयइ लज्जसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिणं पक्कपाइक्कपुण्णं। सयलपुहवि रज्जं ठड्डिंअणसज्जं। तणमिव पडिलग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं। चरण मणुपवणा ज्जं तुतेमे पसणा ॥ १३ ॥ ठणससिवयणाहिं। फुल्लनित्तुप्पलाहिं। थणन्नरन मिरीहिं मुठिगिज्झोदरीहिं। ललिअन्नुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं। सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किडिन्नकुठ गंठि का साइसार। खयजर वणलूआ साससोसोदराणि। नहमुह दसणच्ठी कुच्छि कणाइरोगे। महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरुडुहतासे प क्खिएचाउमासे। जिणवरडुगथुत्तं वच्छरेवा पवित्तं। पढह सुणह सिज्झा एहऊाएहचित्ते। कुणह मुणह विग्घं जेण घाएहसिग्घं ॥१६॥ इयविजया जियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणेसर। तहअइरा विससेण तणय पंचमच क्कीसर। तित्थंकरसोलसमसंति जिणवल्लहसंतह। कुरुमंगल ममहरसुडुरिअमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नमिऊणपणयसुरगण। चूडामणिकिरणरंजिअंमणिणो। चल णजुअलं महाभय। पणासणंसंथवंवुच्छं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह। निबुड्डनासाविवणलावणा। कुठमहारोगानल। फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ तेतुहचलणाराहण। सलिलंजलिसेअवढ्ढियच्छाया। वणदवदड्ढागिरिपाय पुव्व पत्तापुणोलच्छिं ॥ ३ ॥ डुव्वायखुभिअजलनिहि। उप्रम्भकल्लोलभीस णारावे। संभंतभयविसंठुल। निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अयदलिअजाण वत्ता। खणेणपावंतिइच्छियंकूलं। पासजिणचलणजुअलं। निच्चंचिअजेनमं तिनरा ॥ ५ खरपवणुद्धअवणदव। जालावलिमिलिअसयल डुमगहणे। डझंतमुद्धमयवहु। भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजुअलं।

निव्वावियसयलतिज्ञ्अणान्नोयं । जेसंन्नरंतिमणुआ नकुणइजलणोन्नयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतन्नोगन्नीषण । फुरिआरुणनयणतरलजीहालं । उग्गन्नुअंगंनवजलय । सत्थहंन्नीसणायारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुडसिद्ध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ए ॥ अडवीसुन्निल्लतक्कर । पुलिंदसद्दूलसद्दन्नीमासु । न्नयविहुलवुणकायर । उच्छूरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्घासिग्घं । पत्ताहियइच्छियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघायविअलिय । गयंदकुंन्नत्थलान्नोयं ॥ १२ ॥ पणयससंन्नमपत्थिव । नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स । तुहवयणपहरणधरा । सीहंकुद्धंपि नगिणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरुल्लालवढ्ढि उच्छाहं । महुपिंगनयणजुअलं । ससलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ न्नीमं महागइंदं । अच्चासन्नंपितेनविगिणंति । जेतुह्मचलणजुअलं । मुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्खखग्गा । न्निघायपविद्धउद्धअकबंदे । कुंतविणिन्निन्न करिकलह । मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुद्धररिउनरिंद । निवहान्नडाजसंधवलं । पावंतिपावपसमण । पासजिणतुहप्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणन्नयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसव्वाइं ॥ १८ ॥ एवंमहान्नयहरं । पासजिणिंदस्ससंथवमुआरं । न्नवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १ए ॥ रायन्नयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणउस्सउणरिक्खपीडासु । संझासुदोसुपंथेउवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणोयमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलन्नुवणच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ ※ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंन्नवसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसापसत्थ सुहलेसा । सिरिवद्धमाणतित्थस्स । मंगलंदिंतुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मवीआ । बीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुउत्थाणितित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारं सयापयासंता । आयरिआतहतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगा

य । सिअवायवायगावाए । पवयणपमिणीयकए। वणंतुसव्वस्ससंवस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाङ्गणुज्झअ । साहूणंजणिअसव्वसाहज्झा । तित्थप्पन्नावगाते । इवंतुपरमेठिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनाणं । निव्वाणफलंचचरणमविह वइ । तित्थस्सदंसणंतं । मंगलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निन्नम्मोसुअधम्मो । समग्गन्नव्वंगिवग्गकयसम्मो । गुणसुठिअस्ससंघस्स । मंगलंसम्ममिहदि सउ ॥ ८ ॥ रम्मोचरित्तधम्मो संपाविअन्नव्वसत्तसिवसम्मो । नीसेसकिल्ले सहरो । हवउसयासयलसंवस्स ॥ ८ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुह मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरिवद्धमाणपहुपयमिअस्स । कुसलंसमग्गस्स। ॥ १० ॥ जियपडिवक्खाजक्खा । गोमुहमायंगगयमुहपमुक्खा । सिरिवं भसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदितु ॥११॥ अंबापडिहयमंबा । सिद्धा सिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्टा । संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ । दिंतुसंघस्समंगलंविउलं । अच्चुत्तासहिआउ । विस्सु असुयदेवयाइसमं ॥१३॥ जिणसासणकयरक्खा । जक्खाचउवीस सासण सुरावि । सुहन्नावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणं मिनिरया । विरहाकुपहाउसव्वहासव्वे । वेयावच्चकराविअ । तित्थस्सहवं तुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअन्नवाण जणिअसाह ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज लथल । वणपव्वयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणठिआणं । डहाणिसव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपालया । नवग्गहासनक्खत्ता । जोइणिराहुग्गहकालपास । कुलिअद्धपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविठिवत्थेहिं कालवेलाहिं । सवेसव्वत्थसुहं । दिसंतुसव्वस्ससंघस्स ॥ १९॥ भवणवइवाणमंतर । जोइसवेमाणिआयजेदेवा । धरणिंदसक्कसहिआ । दलं तुउरिआइंतित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गच्छइ पुरउपणासिअतमो हं । तंतित्थस्सभगवउ । नमोनमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणो वीरो । जस्सज्जविसासणंजएजयइ । सिद्धिप्पहसाहणंकुपह । नासणंसव्व भयमहणं ॥२२॥ सिरिउसभसेणपमुहा । हयभय निवहा दिसंतुतित्थस्स । सव्वजिणाणंगणिहारिणो । णहंवंठिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरिवद्धमाणतित्थाहि वेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स । सम्मंसुहम्मसामी । दिसउसुहं सयलसंघस्स

सं । मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेनवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥
॥ ॥ इतिश्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ॥

॥ ॥ अथ लघुशांतिलि ॥ ॥

॥ ॥ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनिमित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोनगवतेर्हतेपूजां । शांति जिनायजयवंते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । नुवनजनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व्वडुरितौघ नाशन कराय । सर्वाशिव प्रशमनाय । डुष्टग्रहनूत पिशाच । शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित । मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्ते नगवति । विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिच संघस्य । नद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टि पुष्टिप्रदेजीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे । निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अनयप्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुन्यं ॥ ९ ॥ नक्तानां जंतुनां । शुनावहे नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपतकीर्तियशो । वर्द्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । डुष्टग्रह राजरोग रणनयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरेतिश्वापदादिन्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिंच कुरु कुरु सदेति । तुष्टिंकुरु२ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह । कुरु २ जनानां । उमिति नमो नमो ह्रॉं ह्रीं ह्रुं ह्रः । यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरुस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित । मंत्रपविदर्निंतः स्तवः शांतेः । सलिलादिनयविनाशी । शांत्यादिकरश्च नक्ति

मतां ॥ १६ ॥ यश्चेनं पठति सदा । श्रृणोति भावयतिवा यथायोगं । सहि शान्तिपदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ※ ॥
इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वृद्धशांति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भो भो भव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भोभोभव्यलोकाइह हि भरतैरावत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थंकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनानन्तरं । सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्माभिषेकः । शान्ति मुद्घोषयति । ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतस्स पंथाः । इति भव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रंविधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशाम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः । त्रैलोक्यनाथा । स्त्रैलोक्यमहिता । स्त्रैलोक्यपूज्या । स्त्रैलोक्येश्वरा । स्त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी ।२। सागर ।३। महायश ।४। विमल ।५। सर्वानुभूति ।६। श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ । सुतेजा । १० । स्वामी ।११ । मुनिसुव्रत । १२ । सुमति । १३ । शिवगति । १४ । अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर । १८ । कृतार्घ । १९ । जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥ ※ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ※ ॥ ॐ श्रीऋषभ ।१। अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ वासुपूज्य ।१२। विमल ।१३। अनन्त । १४ । धर्म ।१५। शान्ति । १६ । कुंथु । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ ।

नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रमुखावर्तमानजिनाः ॥☼॥ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोट्टिल । ९ । शतकीर्त्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशोधर । १९ । विजय । २० मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ । भद्रंकर । २४ ॥☼॥ एते भावितीर्थकराजिनाः ॥☼॥

॥☼॥ शान्ताः शान्तिकराः भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ट । ७ । महसेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ । कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । भानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंभ । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ । ॥☼॥ वर्तमानचतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥☼॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्था । ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रभावती । १९ । पद्मा । २० । वप्रा । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ । ॥☼॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥☼॥ ॐ श्री गोमुख ॥ १ । महायक्ष । २ । त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंवरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय । ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज । १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । भृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ । ब्रह्मशांति । २४ । ॥☼॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥☼॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितवला । २ । दुरितारि । ३ कालौ । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ । शांता । ७ । भृगुटि । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी । ११ । चंमा । १२ । विदिता

। १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ । निर्वाणी । १६ । वला । १७ । धारणी । १८ । धरणप्रिया । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ । ॥ ※ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशति-तीर्थकरशासनदेव्यः ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधृति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतनामानो । जयंति - ते जिनेंद्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृंखला । ३ । वज्रांकुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ । गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वास्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोट्या । १३ । अच्छुप्ता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्या गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते सर्वे प्रीयंतां २ अक्षीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो भवंतु । अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटाभ्यर्चितांघ्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराजसंनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिःप्रतिष्टा यात्राभ्या

न कोलहइ गुणगुरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अमसंपय नवपय सहित इगसठ लघु अक्षर । गुरुअक्षर सत्तेव एहजाणो परमाक्षर । गुरुजिणवल्लहसूरिन्नणै सिवसुक्खहकारण । नरय तिरियगइ रोग सोग वहुडक्ख निवारण । जल थल पव्वय वन गहन समरण ऊवे इकचित्त । पंचपरमेष्ठि मंत्रहतणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम ॥

॥ ॥ अथ तिजय पऊत्त स्तोत्र ॥ ॥

॥ ॥ तिजय पऊत्त पयासं । अठ महा पाडिहेर जुत्ताणं । समय खित्त ठिआणं । सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीया । पन रस पणास जिणवर समूहो । नासेउ सयलडरिअं । नविआणं नत्तिजुत्ताणं ॥ २ वीसा पणयाला विअ । तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा । गह नूअ रक्ख साइणी । घोरुवसग्गं पणासेउ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसाविअ । सठी पंचेव जिणगणोएसो । वाहि जल जलण हरि करि । चोरारि महान्नयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपणाय दसेवअ । पणठी तहयचेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरऊंहः सरसुंसः । हरऊंहः तहयचेव सरसुंसः । आलिहअ नामगप्नं । चक्कं किर सव्वउ नद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पणत्ति वज्रश्रृंखला । तहय वज्रअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता। कालि महा कालि तहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला । माणवि वइरुद तहयअछुत्ता । माणसि महमाणसिआ । विज्जादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मनूमिसु उप्पणं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वणो । वसोहिअं हरउ डरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापामिहेर कयसोहा । तित्थयरा गयमोहा । ऊाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संखविद्रुम । मरगय घणसंनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे केवि डुठदेवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फलहे लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतर गहमुग्गय । साइणिनूअपणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरिसय जंतं । सम्मंमंतं डुवार पमिलिहिअं । डरिआरि विजयंतं । निन्नंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं ॥

॥ ※ ॥ अथ दोसावहार स्तोत्र ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोसावहारदक्खो । नालीयायर वियासिगोपसरो । रयणत्तयस्सज णउ । पासजिणो जयउ जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पडिबोहो । हरिणं कियविग्गहो कलानिलउ । विहियार विंद महणो । दियराओ जयउ पास जिणो ॥ २ ॥ कंतीइनिज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुअम यवक्को । सुमंगलो जयउ पज्ञपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनीलरुई । हरिमंमल संथुओ इलाणंदो । रयणियरदारउ मह । बुहोपसीयज्ञ पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियङ्को । नायरथोणग्यरायकयपूउ । सिरिपासनाहदेवो । देवाय रिउ सुहंदिसउ ॥ ५ ॥ रायावह समुज्जल । तणुप्पह मंम्लोमहाजुई । असुरे हिंनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो डुक्खावहोजयंमिथिरो । वज्जल तमासरिससरी । जयचक्खुसुउ जयउपासो ॥ ७ ॥ कवलीकयदोसायर । मायंम्ररहं अहो तणुविमुक्कं । लोयाभ्भरणीभूयं । पासजिणं सत्तमंसरह ॥ ८ ॥ डरिआइं पासनाहो । सिहावमाली नहो भ वणकेऊ । दूरंतमरासीउ । सत्तमठाणविउ हरउ ॥ ९ ॥ इय नवगह थुइग ब्भं । जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं । तुहपास पढइ जोतं । असुहाविगहा नपीडंति ॥ १० ॥ इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ जगद्गुरु ए ग्रहस्तोत्र ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं । ग्रहशांतिं प्रवि क्ष्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनै र्धूपैः । नैवेद्यै स्तुष्टिहेतवे ॥२॥ पद्मप्रभस्यमार्त्तण्डः चंद्र श्चंद्रप्रभस्यच । वासुपूज्योभूमिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माणां । शांति कुंथु नमि स्तथा । वर्द्धमानो जिनेंद्राणां । पादपद्मे बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा । श्चाभिनंदनशीतलौ । सुमतिःसंभ वःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधे कथितः शुक्रः । सुव्रतश्चश नैश्वरः । नेमिनाथोभवेद्राहुः । केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मलग्नेचरा शौच । यदा पीडंति खेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जि

नान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपै । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृस दानैश्च वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्यसोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्च रोराहुः । केतुःप्रमुखाखेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा । देशनक्षत्रवर्णके । स्तुताश्चपूजिताभक्त्या । ग्रहाः संतुसुखावहा ॥१०॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे । नमस्कारशतंभक्त्या । जपेदष्टोत्तरं नरं ॥ ११ ॥ भद्रबाहु रुवाचेदं । पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद् । ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥१२॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्रं ॥

॥ ※॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥ ※ ॥

॥※॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मेसयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्सपुप्फेसु । भमरो आविअइरसं । नय पुप्फं किलामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणावुत्ता । जेलोए संति साहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाणभत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिलब्भामो । नयकोइउवहम्मई । अहागडे सुरीयंति । पुप्फेसुभमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकारसमाबुद्धा । जे भवंति अणिस्सिआ । णाणापिंमरयादंता । तेणवुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ डुमपुप्फियानामझयणंसम्मत्तं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंउपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंश्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनमस्कारः । सर्वपापक्षयंकरः । मंगलानांचसर्वेषां । प्रथमं भवतिमंगलं ॥२॥ ॐ ह्रींश्रीं जएविजए । अर्हंपरमात्मनेनमः । कमलप्रभसूरिंद्रो । भाषतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन । त्रिकालंय पठेदिदं । मनोभिलषितंसर्वं । फलंसलभतेध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण । क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लभतेफलं ॥ ५ ॥ अर्हंतंस्थापयेन्मुर्द्धनि । सिद्धंचक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपा

ध्यायंतुब्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृंदं मुखस्याग्रे ॥ मनःशुद्धंविधायच । सूर्यचंद्र निरोधेन । सुधीःसर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञ । परमेष्टिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांश्रीजिनोरक्षे । दाग्नेयिंविजितेंद्रियः । दक्षिणाशांपरंब्रह्म । नैरुतिंचत्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो । वायव्यंपरमेश्वरः । उत्तरांतीर्थकृत्सर्वा । मीशानींचनिरंजनः ॥ १० ॥ पातालंभगवानर्हं । नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो । रक्षंतुसकलंकुलं ॥ ११ ॥ ऋषभोमस्तकंरक्षे । दजितोपिविलोचने । संभवःकर्णयुगलं । नाशिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ठष्टौ श्रीसुमती रक्षेत् । दंता न्पद्मप्रभोविभुः । जिव्हां सुपार्श्वदेवोयं । तालु चंद्रप्रभोविभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत् । हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसोबाहुयुगलं । वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली विमलोरक्षे । दनंतोसौस्तनावपि । सुधर्मो प्युदरास्थीनि । श्रीशांतिर्नाभिमंमलं ॥१५॥ श्रीकुंथर्गुह्यकंरक्षे । दरोरोमकटीतटं । मल्लिरुरूपृष्टिवंशं । जंघेचमुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षेत् । श्रीनेमिश्चरणद्वयं । श्रीपार्श्वनाथःसर्वांगं । वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेजस्क । वाय्वाकाशमयंजगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो । वीतरागोनिरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि । भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणप्राप्ते । दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते । महाग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारे ध्ववैषम्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय । यःस्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किंचिद्भयंनास्ति । लभ्यते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजर नामेदं । यःस्मरत्यनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्रः । श्रियंसलभतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थायपठेतकृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं । आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यं । लक्ष्मी मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे । देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणिरेपजैनो । जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इस महाप्रभावीक जिनपंजरस्तोत्रकों सुद्धगुरूकेपास सीखके प्रभातसमें सदागुणे तो कोई शरीरमें उपद्रव न होय ॥ ॥

॥ ॐ ॥ अथ लघु जिनसहस्रनामः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः । निःशरीरो निरातंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारो थनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजःशांतः । निर्भेद्यो निर्ममःशिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः । निरागो निरघोजिनः । निःशब्दःप्रतिमश्लेष्टः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महापूतात्मा । जगत्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपि योगात् शुभंप्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्धः । अचिंतःअक्षयो विभुः । अमूर्त्तः अच्युतोब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोभवः। अप्रमेयो जगन्नाथ । बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अभेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वसल्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः । निष्कषायो भवांतकः । विश्वनाथः स्वयंबुद्धः । वीतरागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंदः । अवाङ्मानसगोचरः । असाध्यःशुद्धश्चैतन्यः कर्म नो कर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । कर्म्माजितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंभुः । विश्ववेदी पितामहः । सर्वभूतहितोदेव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो । भगवां स्त्रिजगद्गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्ताव्यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित । गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः । निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः। सर्वेशः सत्सुखावासः । जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो भगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधीशः । सचित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो

मुक्तिवल्लभः । योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रःत्रिजगत्पूज्यः । कल्याणको ष्टमूर्त्तिकः ॥२२॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जित । सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूत हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धःपापनाशनः । तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मु क्तिस्थोमहतांमहः । मुक्तिकार्यायसंतुष्टो । निरागःपरमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा देवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्र दायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धि को महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो । महा विघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिमअच्युतः ॥२८॥ मुक्ता मुक्तिजसंवोधः । एकानेकविनिश्चलः । सर्ववंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदोधीरो । म हाढ्यो महागुरुः ॥३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामोविपयाच्युतः । भ गवंतो महाशांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः । परमात्मापरानंदोः । परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुता नंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाकृरोवर्णी । व्योमरूपो जिता त्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंवोधः । संसारछेदकारणः । निरवद्योमहा राध्यः । कर्मजिद्धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ वोधसत्त्व जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नर कांतकः । स्वयंभू पापहृत्पूज्यः । पुनीतोविभवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो म हातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेशनायकः ॥३६॥ वरेण्योभवविध्वंसी । योगिनांज्ञानगोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥३७॥ विश्वदृक्भव्यसंवंद्यः । पवित्रोगुणसागरः । प्रसन्नः परमा राध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यःसुरर्चितः । निष्प्रपंचोनिरातंको । निःशेप क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो । लोकालोक विलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदंयांति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इति भद्रवाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ※ ॥

मंदं ॥ ३ ॥ सकलभव्य सरोजविकाशिका । कुमतिसंत मसोच्चयनाशिका । जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । भवतु वाग्जिनलाभ शुभार्थदा ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांभोनिधेः । सद्भावेन परस्वरूपविरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः । सद्भूतप्रतिबिंबतस्तु सुतरां गौमीपुरोभा सिनः । सोल्लासं प्रणिपत्य सत्य मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादां बुज दर्शनोत्सुकधियो भव्या व्रजंतोध्वनि । स्पृश्यंन्ते नहि दुष्टजंतुनिवहै र्वन्यै र्नवा तस्करैः । नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो । सःश्रीपार्श्वविभु र्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्योनकेषांभवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तः करणाद्भुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भाविता । धृत्वा निर्म लभावनांच विधिना यद्भक्तिमातन्विता । लभ्य न्ते नरराज निर्जर वर श्रेणी सुखानिक्रमा । न्मुक्तिश्री रपि सैवसुद्धमनसा संसे व्यतांविश्वपाः ॥ ३ ॥ ※॥ इति श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तोत्रं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आद्यः श्रीऋषभ स्ततोजितजिनः श्रीसंभवस्तीर्थकृत् । सुश्रीमान भिनंदनश्च सुमतिः श्रीसद्मपद्मप्रभः । पृथ्वीकुक्षिभव सुपार्श्वजिनपस्तीर्थेशचं द्रप्रभः । सर्व्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः श्रीशीतलःसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांस प्रभुवासुपुज्य विमला नंतेश धर्म्मेश्वराः । शांतिः कुंथु रर स्ततो जितरिपु र्मल्लि र्जिनःसुव्रतः। अर्हंतौ नमि नेमिशुद्धमुनिपौ विश्वत्रयेविश्रुतौ । श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमानः प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्च तुर्विंशति । र्निश्शेषोत्तम भव्यजंतुहृदयां भोजप्रबोधोद्यताः । वंद्यन्ते सुरवृन्दवं द्यविंशदश्लोकव्रजानिर्भय । श्रीसंपत्तिनिवास विक्रमपुरेसद्भक्तितः प्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥※॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मङ्गलाष्टकं लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योतिरत्नप्रभा । भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनां भोधौ व्यवस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तमम लं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेः स्वर्ग्गापवर्ग्गप्रदः । धर्म्मःसू क्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्र्यालयं । प्रोक्तंतत्त्रिविधं चतुर्विध ममी कुर्वं

तुमे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपा स्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्री मन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो येचक्रिणो द्वादश । ये विष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः समाधिकाविंशती । त्रैलोक्ये भयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी। चंपायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः। सम्मेदशैलेर्हतां । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणा विनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतु मेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति र्व्यंतर भावनामरगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता । जंबू शाल्मलि चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्यादिषु । इक्ष्वाकारगिरौच कुंडलनगे द्वीपेच नंदीश्वरे । शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥५॥ यो गर्भावतरोपिजयत्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे। योजातः परिनिक्रमे यचभवो यःकेवलज्ञानभाक् । यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमासंभावितः स्वर्गिभिः कल्याणानिच तानिपंचसततं कुर्वंतुमे मंगलं ॥६॥ येपंचौषधिऋद्धयः श्रुततपो ऋद्धिंगताः पंचये । येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला येष्टौविधाचारणा । पंचज्ञानधराश्च येपिवलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वरा । सतेते सकलाश्च ते गण भृताः कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्याश्चाष्ट जयादिका द्विगुणिता विद्या दिका देवता ॥ श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंश तत्रिदशा ग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा । दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां । पूर्वाण्हेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजै र्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वंतु मे मङ्गलं॥९॥

॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ परमात्मास्तोत्रः ॥ ॐ ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नवंधु र्नकर्म नकर्त्ता । नअंगं न संगं नइच्छा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥१ ॥ नवंधो नमोक्षो नरा गादिलोकं । नजोगं नभोगं नव्याधि र्नशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं (चि०) ॥२॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिव्हा । नचक्षु र्नकर्णं नवक्त्रं ननि द्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा । (चि०) ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं

नचिंता । नकुलूट् नन्नीतं नकष्यं नतुंदा । नस्वामी नन्नृत्यं नदेवो नमर्त्या । चि० ॥ त्रिदंभे त्रिखंभे हरे विश्वव्यापं । ऋषीकेश विध्वंशकर्म्मारिजालं । नपुण्यं नपापं नअक्ष्या नप्राणं । (चि०) ॥५॥ नबाल्यं नवृद्ध नविद्वि नमूढा । नबेद्यं नन्नेद्यं नमूर्त्ति नमीहा । नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । (चि०) ॥६॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ नन्नव्या । नगुर्वो न शिष्यो नआद्यो नदीनं ॥ (चि०) ॥७॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी । नपूर्णां नशून्यं सचैतन्यरूपं । अन्योन्निन्निणं नपरमार्थमेकं । (चि०) ॥८॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधि श्चैतन्यरत्नाकरं । सर्वेन्नूतगतागते सुखदुख ज्ञातात्वया सर्वगं । त्रैलोक्याधिपत्ति स्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंद्दरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान न्नूदर्च्युतः ॥ ए ॥ ※ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नमस्कारस्तोत्र. ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य । संसारध्वांतनाशनं । बोधनंचित्तपद्मस्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य । सद्धर्म्मामृतवर्षणं । जन्मदाघविनासाय । वृंहणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेन्नक्ति जिनेन्नक्ति । जिनेन्नक्ति दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु न्नवे न्नवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता जगत्रये । वीतरागसमोदेवो । न न्नूतो न न्नविस्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं मम । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्ष जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं मुखंदृष्ट्वा । पद्मरागसमप्रन्नं । नैकजन्म कृतंपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं सिद्धाजगतिमंगलं । मंगलंसाधवोमुख्यं । धर्म्मःसर्वत्रमंगलं ॥ ए ॥ लोकोत्तमाइहार्हतः । सिद्धालोकोत्तमाः सदा । लोकोत्तमोयतीशानां । धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हतः । सिद्धाशरणमंगलां । साधवः शरणं लोके । धर्म्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ऋषिमंमल स्तोत्र ॥※॥

॥※॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंवाप्ययत्स्थितं । अग्निज्वाला समंना द । बिंडरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं देदीप्यमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हं मित्यक्षरंब्रह्म । वाच कंपरमेष्टिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं । सर्वतः प्रणिदधमहे ॥ ३ ॥ ॐ नमो र्हद्भ्य ईशेभ्यः ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐनमःसर्वसूरिभ्यः । उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐ नमः स्तत्त्वदृष्टिभ्य । श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत । द र्हदाद्यष्टकंशुभ्रं । स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥आद्यं पदंशिखांरक्ष । त्परंरक्षेतुमस्तकं । तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे । तुर्यंरक्षेचनासिकां ॥७॥ पंचमंतु मुखंरक्षेत् । षष्टंरक्षेचघंटिकां । नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः । सरेफोद्व्यब्धिपंचषान् । सप्ताष्टदशसूर्यांकान् । श्रितोबिंडस्वरान्पृथक् ॥ ए ॥ पूज्यनामाक्षराआद्याः । पंचातोज्ञानदर्शन । श्चारित्रेभ्यो नमो मध्ये । र्ह्रीं सांतह समलंकृतः ॥ १० ॥ ※ ॥ ॐ । र्ह्रां । र्ह्रीं । र्ह्रुं । र्ह्रूं । र्ह्रें । र्ह्रैं । र्ह्रौं । र्ह्रः । असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥ ※ ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः । क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकेरष्ट । काष्टाधिष्टेरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः । कूटलक्षै रलंकृतः । उच्चै रुच्चैस्तरस्तार । स्तारामंमलमंमितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं । बीजम ध्यास्यसर्वगं । नमामि बिंबमार्हत्यं । ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलंशांतं । बहुलं जाड्यतोज्झितं । निरीहं निरहंकारं । सारं सारतरंघ नं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं । सात्त्विकं राजसंमतं । तामसं चिर संबुद्धं । तैजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निराकारं । सरसं विरसंपरं परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच । त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं । निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु । ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रकाशकं ॥ १ए ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः । सरेफोबिंडमंमितः । तुर्यस्वरस

मायुक्तो । वज्रधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे । वृष भाद्याजिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो । विंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः । स्वर्णाभः सर्व तोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसं लीनं । तीर्थकृन्मंमलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ । नादस्थितिसमा श्रितौ । विंदुमध्यगतौनेमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ । कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ । ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थंकृतःसर्वे । हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राता । श्चतुर्विं शतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्व कालेषु । ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययश्चक्रं । तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित सर्वाङ्गं । मामांहिनस्तु भाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० । मामांहिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देव० । मामांहिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० । मामांहिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहिंसंतुपन्नगाः ॥३५॥ देव० । मामांहिं संतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मामांहिंसंतु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० । मामांहिंसंतुवन्हयः ॥ ३८ ॥ देव० । मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० । मामांहिंसंतु डर्जना. ॥ ४० ॥ देव । मामांहिंसंतु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा । तस्यायाभुविलब्धयः । ताभि रभ्युद्यतज्योति । रर्हसर्व निधीश्वराः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा । देवाभूपीठि वासिनः । स्वर्वा सिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो येतु । परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयोदेवाः । मांसं रक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डु र्जनाभूतवेत्तालाः । पिशाचामुजलास्तथा । ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव प्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृति लक्ष्मी । गौरी चंमी सरस्वती । जयांबा विजयानित्या । क्लिन्ना जिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा कामबा णाच । सानंदानंदमालिनी । माया मायाविनी रौद्री । कला काली कलि प्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो । वर्त्ततेयाजगत्त्रये । मह्यंसर्वाःप्रय छंतु । कांतिंकीर्त्तिंधृतिंमतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सङः प्राप्यः । श्रीऋषि

मंमलस्तवः । नावितस्तीर्थनाथेन । जगत्त्राण कृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणेराज कुलेवन्हौ । जलेडुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे । स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं । पदभ्रष्टा निजं पदं । लक्ष्मी भ्रष्टानिजां लक्ष्मीं । प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ नार्यार्थी लनते नार्यां । पुत्रार्थी लनते सुतं । वित्तार्थी लनते वित्तं । नरःस्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकांस्ये । लिखित्वा यस्तुपूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि । गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रेलिखित्वेदं । गलके मूर्द्धनि वा नुजं । धारितं सर्वदा दिव्यं । सर्वनीति विनाशकं ॥ ५४ ॥ नूतैःप्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः । पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेके । मुच्यते नात्रसंशयः ॥५५॥ नूर्नुवःस्व स्त्रयीपीठः । वर्त्तिनःशाश्वताजिनः । तैःस्तुते वंदिते दृष्टे । यत्फलंतत्फलंश्रुतौ ॥५६॥एतद्गोप्यं महास्तोत्रं । नदेयं यस्यकस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते । वालहत्यापदेपदे ॥ ५७ आचाम्लादितपःकृत्वा । पूजयित्वा जिनावली । अष्टसाहस्रिको जापः । कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रात । र्येपठंति दिनेदिने । तेपांनव्याधयोदेहे । प्रनवंति नचापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिंयावत् । प्रातःप्रातस्तुयःपठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो । जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोविंबे । नवेसतमके ध्रुवं । पदंप्राप्नोति शुद्धात्मा । परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो नवेध्याता । कल्याणानि चसोश्नुते । गत्वास्थानंपरं सोपि । नूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमंपरं । पठना त्स्मरणा ज्जापा । ल्लन्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इतिश्रीऋपिमंमलस्तोत्रं ॥ ※ ॥ क्षेपक श्लोकान्निराकृत्यमूलयं त्रकल्पानुसारेण । लिखितं । गणिः श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः । तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नक्तामरस्तोत्र ॥※॥

॥※॥ नक्तामरप्रणत मौलिमणिप्रनाणा । मुद्द्योतिकं दलितपापत मोवितानं । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा । वालंवनंनवजलेपततांज नानां ॥१॥ यः संस्तुतःसकल वाङ्मयतत्ववोधा । दुद्भूतवुद्धिपटुनिःसुरलोक नाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः । स्तोष्ये किलाहमपितं प्रथमंजिनेंद्रं

॥ २ ॥ युग्मं । बुद्ध्याविनापि विबुधार्च्चितपादपीठ । स्तोतुं समुद्यतमति र्विग तत्रपोहं । बालंविहाय जलसंस्थित मिंदुबिंब । मन्यःक इछति जनः सह सायहीतुं ॥ ३ ॥ वक्तुंगुणानूगुणसमुद्र शशांक कांतान् । कस्तेक्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या । कल्पांतकाल पवनोध्दतनक्रचक्रं । कोवातरीतुमलमंबुनि धिं भुजाभ्यां ॥ ४ ॥ सोहं तथापि तवभक्तिवशान्मुनीश । कर्तुंस्तवं विग तशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्य मविचार्य मृगोमृगेंद्रं । नाभ्येति किं नि जशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतं परिहासधाम । त्वद्भक्ति रेव मुखरीकुरुते बलान्मां । यत्कोकिलःकिलमधौमधुरंविरौति । तच्चारुचाम्र कलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेनभवसंततिसन्निवद्धं । पापंक्षणात्क्ष यमुपैति शरीरभाजां । आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु । सूर्यांशुभिन्न मि व शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेतिनाथतवसंस्तवनंमयेद । मारभ्यते तनुधि यापि तवप्रभावात् । चैतोहरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु । मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तांतवस्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथापि जगतां डुरितानिहंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव । पद्माकरेषु जलजानिवि काशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतैर्गुणै र्भुविभवंत म भिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किंवा । भूत्याश्रितं य इहनात्म समंकरोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभवंत मनिमेषविलोकनीयं । नान्यत्रतोषमुपयाति जगस्यचक्षुः । पीत्वापयः शशिकरद्युतिडुग्धसिंधोः । क्षारंजलंजलनिधे रसि तुंकःइछेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणभिस्त्वं । निर्म्मापितस्त्रिभु वनैक ललामभूत । स्तावंतएवखलुते प्यणवःपृथिव्यां । यत्तेसमानमपरंनहिरूप मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रंक्वतेसुरनरोरगनेत्रहारि । निःश्शेषनिर्ज्जित जगत्त्रितयो पमानं । बिंबं कलंकमलिनं क्वनिशाकरस्य । यद्वासरे भवति पांडुपलाशक ल्पं ॥ १३ ॥ संपूर्णमंमलशशांककलाकलाप । शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तवलंघ यंति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं । कस्तान्निवारयतिं संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदिते त्रिदशांगनाभि । र्नीतं मनागपिमनो नविकार मार्गं । कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन । किंमंदराद्रिशिखरं चलितंकदा चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्ति रपवर्ज्जित तैलपूरः । कृत्स्नंजगत्त्रयमिदं प्रग टी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां । दीपोपरस्त्वमसिना

थ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराहुगम्यः । स्पष्टी क
रोषि सहसायुगपज्जगंति । नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः । सूर्यातिशायिम
हमासि मुनींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं । गम्यं न
राहुवदनस्य नवारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्जं मनल्पकांति । विद्योतय
जगद् पूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वतावा ।
युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सुनाथ । निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके । कार्य
कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानंयथा त्वयि विभाति कृतावकाशं ।
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजःस्फु रन्मनिषु याति यथा महत्वं । नैवंतु
काचसकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्येवरं हरिहरादय एव दृष्टा । दृष्टे
षु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवताभुवियेन नान्यः । कश्चि
न्मनोहरतिनाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानिशतशो जनयंतिपुत्रान्
नान्यासुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वादिशोदधति भानि सहस्ररश्मिं । प्रा
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनन्तिमुनयः परमं पुमांस ।
मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् । त्वामेवसम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु । ना
न्यःशिवः शिवपदस्य मुनींद्रपन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभु मचिंत्य मसंख्य
माद्यं । ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्गकेतु । योगीश्वरं विदितयोग मनेक मेकं ।
ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदन्तिसन्तः॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधा ।
त्वंशंकरोसि भुवनत्रय शंकरत्वात् । धातासिधीर शिवमार्ग विधेर्विधानात् । व्य
क्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नम स्त्रि जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं
नमो जिनभवो दधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्र यदि नामगुणैरशेषै ।
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषैरुपात्त विबुधाश्रयजातगर्वैः । स्वप्नां
तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखा । मा
भाति रूपममलं भवतो नितांन्तं । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं । बिम्बं
रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे । वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातं । बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं । तुङ्गो
दयाद्रिशिरसीव सहस्र रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । वि
भ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छशांक शुचिनिर्झर वारिधार । मुच्चै

स्तटं सुरगिरेरिवशातकौम्नं ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तवविभाति शशांककांत । मुच्चैः स्थितंस्थगितभानुकरप्रतापं । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धिशोभं । प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेम नवपंकज पुंजकांति । पर्युल्लसन्नख मयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्रधत्तः । पद्मानि तत्र वि बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं तथा तव विभूति रभूज्जिनेंद्र । धर्म्मोप देशन विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकारा । तादृ क्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३॥ श्च्योतन्मदा विलविलोल कपोल मूल । मत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभमिभमुद्धत मापतन्तं । दृष्ट्वा भयं भवतिनोभवदाश्रितानां ॥३४ ॥ भिन्नेभकुंभ गलदुज्वल शोणिताक्त । मुक्ताफल प्रकरभूषित भूमिभागः । वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रा मति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं । दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं । त्वं नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल कंठनीलं । क्रोधोद्धतं फणिनमुतफण मापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः । त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित भीमना द । माजौबलं बलवता मपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्धं । त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवा ह । वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्ज्जयजेयपक्षाः । त्व त्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र । पाठीनपीठभयदोल्वणवाम्रवाग्नौ । रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा । स्त्रासं विहायभवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभार भुग्नाः । शौच्यांदशा मुपगताश्च्युतजीविताशाः । त्वत्पादपंकज रजोमृतदिग्धदेहा । म र्त्याभवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥आपादकंठमुरशृंखलवेष्टिताङ्गा । गाढं वृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंन्तः । सद्यः स्वयं बिगत बंध भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेंद्र मृगराज दवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरवन्धनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव । य स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां। भक्त्या मया रुचिरवर्ण विचित्रपुष्पां । धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं ।

तंमानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥ इतिश्रीन्नक्तामरस्तोत्रंम् ॥२॥ ※॥

॥※॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यभेदि । भीता भयप्रदमनिन्दित मंह पद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमन्निनम्यजिनेश्वरस्य॥१॥ यस्यस्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः । स्तोत्रं सुविस्तृतमति र्नविन्नुर्विधातुं । तीर्थेश्व रस्य कमठस्मयधूमकेतो । स्तस्याहमेप किलसंस्तवनं करिष्ये ॥२॥ (युग्मं) सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश न्नवंतधीशाः । धृष्टोपि कोशिकशिशु र्यदिवादिवांधो । रूपं प्ररूपयति किं किलघर्म रश्मेः ॥ ॥३॥ मोहक्षया दनुन्नवन्नपि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवातपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन जलधे र्ननु रत्नराशिः ॥४॥ अन्युद्यतोस्मि तवनाथ जडाशयोपि । कर्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकर स्य । बालोपि किं ननिजबाहु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधि यांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश । वक्तुं कथं न्नवति तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षित कारितेयं । जल्पंति वा निजगि रा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्ताम चिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामा पिपाति न्नवतो न्नवतो जगंति । तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदाघे । प्रीणा ति पद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयिविन्नो शिथलीन्नवंति । जंतो क्षणेन निवडाअपि कर्म्मबंधाः । सद्यन्नुजङ्गमया इवमध्यन्नाग । मन्यागते वनशिखंमिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनेंद्र । रोद्रै रुपद्रवशतै स्त्वयिवीक्षितेपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे । चौरै रिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारको जिनकथं न्नविनां तएव । त्वा मुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वादृति स्तरति यज्जल मेपनून । मंतर्गतस्यम रुतः सकिलानुन्नावः ॥ १० ॥ यस्मिन्हर प्रभृतयोपि हतप्रन्नावा । सोपि त्वया रतिपतिः क्षपितःक्षणेनः । विध्यापिता हुतन्नुजः पयसाथ येन । पीतं न किं तदपिदुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य गरिमाणमपिप्रपन्ना । स्त्वांजंतवः कथमहो हृदयेदधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघवेन । चिं त्यो नहंतमहतां यदिवा प्रन्नाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं

निरस्तो । ध्वस्तास्तदावतकथं किलकर्म्मचौराः । प्रोघरयमुत्र यदिवा शि शिरापिलोके । नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगि नो जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेषयंतिहृदयां बुजकोशदेशे । पूतस्य नि र्मलरुचेर्यदिवा किमन्य । दक्षस्य संन्नविपदं ननुकर्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश न्नवतो न्नविनः क्षणेन । देहंविहाय परमात्मदशां व्रजंति । तीव्रान लाउपलन्नाव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा दिवधातुन्नेदाः ॥ १५ ॥ अन्त सदैव जिन यस्य विन्नाव्यसेत्वं । न्नव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरं । एतत्स्वरूप मथ मध्यविवर्त्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रसमयंति महानुन्नावाः ॥१६॥ आत्मामनीषि निरयं त्वदन्नेदबुध्द्या । ध्यातोजिनेंद्रन्नवतीह न्नवत्प्रन्नावः । पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनंविन्नो हरिहरादि धियाप्रपन्नाः । किंका चकामलिन्निरी शसितोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥१८॥ धर्म्मोंपदेशसमये सविधानुन्नावा । दास्तांजनोन्नवति ते तरुरप्यशोक । अ न्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥१९॥ चित्रंविन्नो कथमवाङ्मुखवृंतमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गो चरे सुमनसां यदिवामुनीश । गच्छंति नून मधएवहि वंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गन्नीरहृदयोदधिसंन्नवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति । पीत्वा यतः परमसंमदसंगन्नाजो । न्नव्याव्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो । मन्ये वदंति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धन्नावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गन्नीरगिर मुज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहन्नव्य शिखण्डिनस्तां । आलोकयन्ति रन्नसेन नदन्तमुच्चै । श्चामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥२३॥ उद्गछता तवशाति द्युतिमंमलेन । लुप्तच्छद छविरशोक तरुर्बन्नूव । सानिध्यतो पि यदिवा तव वीतराग । निरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ न्नो न्नो प्रमादमवधूय न्नजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहं । एतन्नि वेदयति देव जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नन्निनन्नः सुरडुंडुन्निस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो ति तेषु न्नवता न्नुवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताक लापकलितो छ्वसितातपत्र । व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमन्न्युपेतः॥ २६ ॥ स्वेन

प्रपूरित जगत्त्रय पिंमितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हे
म रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्य
स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पा
दौश्रयंति भवतो यदिवा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥
त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव । चित्रंविभो यदसिकर्म विपाकशून्यः ॥२९॥
विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाक्षर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश ।
अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानंत्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः॥३०॥
प्राग्भार संभृतनभांसि रजांसिरोषा । दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
गायापिते स्तवननाथ हता हताशो । ग्रस्तस्त्वमीभि रयमेव परंदुरात्मा ॥३१॥
यद्गर्जदूर्जित घनौघमदभ्रभीम । भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन
मुक्त मथदुस्तरवारिदध्रे । तेनैवतस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्व
केशविकृताकृतिमर्त्यमुंम । प्रालंवभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभ
वंतमपीरितोयः । सोस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव
भुवनाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधतान्यकृत्याः । भक्त्युल्लसत्पु
लकपक्ष्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तवविभो भुविजन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मि
णपार भववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आक
र्णितेतु तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ ज
न्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मीहित दानदक्षं । तेनेह
जन्मनि मुनीश पराभवानां । जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥
नूनं नमोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वविभो सकृदपि प्रविलोकितोसि । मर्मा
विधो विधुरयंति हिमामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥
आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि । नूनं नचेतसि मया विधृतोसिभक्त्या।
जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति नभावशून्याः
॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवरे
ण्य । भक्त्यानते मयि महेश दयांविधाय । दुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि
॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं ।

त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । वध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा ह्रदिमांपुनीहि । सीदंत मद्यभयद व्यसनांवुराशे ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंघ्रि सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किमपिसंतत संचितायाः । तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्यभूयाः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकितांगभागाः । त्वद्बिंवनिर्म्मल मुखांवुजवद्धलक्ष्या । येसंस्तवंतवविभो रचयंतिभव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद्र । प्रभासुराः स्वर्गसंपदोभुक्ता । ते विगलितमलनिचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥※॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥※॥

॥※॥ अथ सेत्रुंजरास ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रलियामणो । सेत्रुंजैनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवतच्यारसतोतरै । हुवाधनेसरसूर । तिण सेत्रुंजमहातमकियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसस्या । सेत्रुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेत्रुंजमाहातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजतीरथ सारिषो । नहीछै तीरथकोय । स्वर्गमृत्यु पातालमैं । तीरथसगलांजोय ॥ ४ ॥ नामैनवनिधिसंपजै । दीठांडरितपुलाय । भेटंतां भवभयटलै । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । दक्षिणभरतमझार । सोरठदेससुहामणो । तिहांछै तीरथसार ॥ ६ ॥ ※ ॥ ढालपहिलीः रामगिरी ॥ ※ ॥

॥ सेत्रुंजोनैंश्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक । विमलाचलनेकरूं परणाम । एसेत्रुंजैना इकवीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्वत इंद्रप्रकास । महातीरथपूरवेसुखकांम ए० ॥ २ ॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्तिनिलो तिणकीजैभक्ति । पुष्फदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम कीजैं गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेत्रुंजजात्रानोफल लहै । महावीरभगवंतइमकहै ॥ ५ ॥※॥ दुहा ॥※॥ सेत्रुंजोपहिलैआरैं । असीजोयणपरमांण । पिहुलो मूल ऊंचपण । छवीसजोयणजांण ॥१॥ सित्तरजोयणजाणवो । वीजे आरैविशाल । वीसजोयणऊंचोकह्यो । मुझवंदणा

त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरे । पिहुलो तीरथराय । सोलजोयण ऊंचोसही । ध्यानधरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण । चोथे अरे मझार । ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरें । मूलतणें विशतार । दोजोयण ऊंचोअछे । सेत्रुंजतीरथ सार ॥ ५ ॥ सातहाथ छठे अरें । पिहुलो परवतएह । ऊंचोहोस्ये सउप नुप । सासतोतीरथएह ॥ ६ ॥॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥॥ केवलन्यानी प्रमुखतीर्थंकर । अनंतसीधाइणठामेरे । अनंतवली सीझसे इणठामें । तिणकरुं नितपरणामेरे ॥१॥ सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा । सीझसीवलीय अनंतरे । जिणसेत्रुंजतीरथ नहीभेट्यो । तेगरभावासकहंतरे ॥ सेत्रुं० ॥२॥ फागुणसुदि आठमनें दिवसे । रिषभदेव सुखकाररे । रायणरूंख समोसर्यास्वामी । पूरवनिनाणूं वाररे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्रचैत्रीपूनमदिन । इणसेत्रुंज गिरिआयरे । पांचकोडिसूं पुंडरीकसीधा । तिण पुंडरीक कहायरे । से०॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । वेवेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी दिनसीधा । तिणप्रणमुंपरभातरे । से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसनेंदिन नमिपुत्री चौसठिरे । अणसणकरि सेत्रुंजेगिर ऊपर । एसझसीधा एकठरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा । द्राविडने वारिखिल्लरे । कातीसुदि पूनमदिनसीधा । दशकोडिसुं मुनिशिल्लरे । से० ॥७॥ पांचे पांडव इणगिरसीधा । नवनारद रिषिरायरे । संव प्रजून गयाइहां मुगतें । आठेकरमखपायरे । से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर । समोसर्या गिरिशृंगरे । अजित शांति तीर्थकरवेऊं । रह्या चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार संघातें । थावच्चा सुकशाधरे । पांचसें साधुसुं सेलगमुनिवर । सेत्रुंजे सिवसुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेत्रुंजेसीधा । भरतेसरनें पाटेरे । राम अनें भरतादिक सीधा । मुक्तितणी एवाटरे ॥ से०॥ ११ ॥ जालिमयालीनें उवयाली । प्रमुख साधुनीकोडिरे । साधुअनंता सेत्रुंजेसीधा । प्रणमुं वेकरजोडिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ॥ ढालचौपईनी ॥ ॥ सेत्रुंजेनाकह्युं सोलउद्धार । तेसुणिज्यो सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय । जनमजनमना पातिकजाय ॥१॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी । समवसर्या स्वामी हितकरी । भरतगयो वंदणनेंकाज । येउपदेसदियोजिनराज॥२॥जगमांहें मोटा

अरिहंतदेव। चौसठ इंद्र करैंजसुसेव। तेहथीमोटो संघकहाय। जेहनें प्रणमै जिनवरराय॥३॥ तेहथीमोटो संघवीकह्यो। भरतसुणीनै मनगहगह्यो। भरत कहैतेकिमपामियै। प्रभु कहै सेत्रुंजै जात्राकियै॥ ४॥ भरतकहै संघवीपद मुझ। थेआपोऊं अंगजतुझ। इंद्रैआएयाअक्षतवास। प्रभु आपै संघवीपदतास॥ ५॥ इंद्रैतिणबेला ततकाल। भरत सुभद्रा विऊंनैमाल। पहिरावी घर संप्रेभिया। सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमावली। रत्नतणीदीधीमनरली। भरतै गणधर घरतेडिया। सांतिक पोष्टिक सऊ तिहां किया॥ ७ ॥ कंकोत्रीमुंकी सऊदेस। भरततेडायोसंघआसेस। आयोसंघ अयोध्यापुरी। प्रथमथकी रथजात्राकरी॥८॥ संघ भगति कीधी अतिघणी। संघचलायो सेत्रुंजाभणी । गणधर बाहूबलकेवली। मुनिवरकोडि साथेलि यावली॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्धि। भरतैं साथे लीधीसिद्धि। हयगयरथ पायक परवार। तेतो कहतां नावैपार॥ १० ॥ भरतेसर संघवीकहवाय। मारगचैत्य उधरतोजाय। संघ आयो सेत्रुंजैपास। सऊनीपूगी मननीआस॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय। मणि मांणक मोत्यांसुं बधाय। तिण ठामैं रही महोछवकियो। भरतैं आणंदपुर वासियो॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजा ऊपर चढ्यो। फरसंता पातिक ऊडपड्यो। केवलन्यानी पगला तिहां। प्रणम्यारायण रूखछै जिहां॥१३॥ केवलन्यानी सनात्रनिमित्त। ईशानेंद्र आणीसुपवित्त। नदीसेत्रुंजै सोहामणी। भरतैंदीठी कौतुकभणी॥ १४॥ गणधर देवतणें उपदेस। इंद्रैबलिदीधो आदेस। श्रीआदिनाथ तणोदेहरो। भरत करायो गिरिसेहरो॥ १५॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग। रतन तणी प्रतिमा मनरंग। भरतै श्रीआदीसरतणी। प्रतिमाथापी सोहामणी॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमाभली। माहीपूनिम थापीरली। ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद। भरतैथाप्या नवलैनाद॥१८॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद। भरतकराया गुरुसुप्रसाद। भरत तणोपहिलो उद्धार। सगलोही जाणै संसार॥ १९॥ ※॥ ढाल सिंधूमो आसाउरी ॥※॥ भरत तणें पाटै आठमै। दंभ वीरज थयो रायोजी। भरत तणीपर संघकीयो। सेत्रुंजसंघवी कहायो जी॥ १॥ सेत्रुंजैउद्धारसांभलो। सोलमोटा श्रीकारोजी। असंख्यात वीजावलि। तेह नकऊं अधिकारोजी से० ॥ २ ॥ चैत्यकरायो रूपातणो। सोनानो बिंबसारोजी। मूलगोबिं

ब्रह्मचारीयो । पश्चिमदिश तिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजेनी जात्राकरी। सफलकियो अवतारोजी । दंमवीरज राजातणो । एवीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिक्रम्या । दंमवीरजथी जिवारोजी। ईशानेंद्रकरावीयो । एतीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी । माहेंद्र नाम उदारोजी । तिणसेत्रुंजेनो करावीयो। ए चोथो उद्धारोजी ।। से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी । ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी । तिणसेत्रुंजेनो करावीयो । ए पांचमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनोकीयो । ए छठो उद्धारोजी । चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो । ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुएथे । सेत्रुंजनो अधिकारो जी । व्यंतरइंद्र करावीयो । ए आठमो उद्धारोजी । से० ॥ ए ॥ चंद्रप्रभुस्वामिनोपोतरो । चंद्रशेखरनाम मल्हारोजी । चंद्रजसराय करावीयो । ए नवमो उद्धारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो। मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी॥ से० ॥ १२ ॥ पांमवकहे अम्हेपापीया । किमछूटां मोरीमायोजी । कहेकुंती सेत्रुंजतणी । यात्रकीयां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचेपांमव संघ करी । सेत्रुंज भेटचो अपारोजी । काष्टचैत्य विंबलेपना । ए वारमो उद्धारोजी । से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसेत्रुंजेनो संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पोरवाडजावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिडोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे मुहते करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरे इकोत्तरे । देसलहर अधिकारोजी । समरे साहकरावीयो । ए पनरमो उद्धारोजी । से० ॥१८॥ संवत पनर सत्यासीये । वैसाखवदि सुभवारोजी । करमेडोसी करावीयो । ए सोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १ए ॥ संप्रतिकाले सोलमो । एवरतेछेउद्धारोजी । नितनित कीजे वंदना । पामीजे भवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ दुहा । वलिसेत्रुंज महातमकहुं । सांभलो जिमछे तेम । सूरिधनेसरइमकहे । महावीरकहो एम॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी। सेत्रुंजे पुजनीक। भगवंतनो वेसवां

गछखरतरतणोए । श्रीजिनचंदसुरीस । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥२०॥ ताससीसजगजाणीयैए । समैसुंदरजवझाय । से० । शासरच्यो तिणरूवडोए । सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ २१ ॥
॥ ※ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीकोरास ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वांदी वीस जिनेसरू । रचस्युं रासरसाल । तीरथ शिखर समेतनी । महिमा वडी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियलै । प्रगट्यो शिखर समेत । कोडाकोडी मुनिवरू । सिद्धि गए इहखेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखर समेतए । फरस्यां पापपुलाय । जविजन जेटो जावसुं । ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा सिखरसमेतनी । कहि नसकै कविकोय । गुण अनंत जगवंतना । तिमए तीरथ होय ॥ ४ ॥ ढाल ॥१॥ चौपईनी ॥ ※ ॥ गिरवर शिखर समो नहीकोय । एहनी महिमा सवजग होय । वीसजिनेसर मुगतैगया । मुनिजन ध्यानधरीनै रह्या ॥१॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली । तिहां जितशत्रु नरेसर वली । विजया राणी नै सुतजाण । अजित कुमर सहुगुणनीषाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवा करै । इंद्राणी अतिजह्रव धरै । तीर्थंकरनी पदवी लही । अंतर अरिजिण साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमजोगवतां जोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सहुजोग । अवसर दै संवछर दांन । संजम लीनो आप सुजान ॥ ४ ॥ कर्मखपावी पाम्यो ग्यान । केवलदर्शन लह्योप्रधान । विचरै पुहवी मंमल मांहि । जव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरजया । पंचाणवै संख्या सहु थया । एकलाख मुनिवर परिवस्या । श्रावक श्रावकणी वहुकस्या ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुविचार । श्रावक सहस अठाणुं सही । दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पांच लाख पैंतालीस हजार । श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरवनो आय । कंचनवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढा च्यारसै धनुष सरीर । मानलह्यो प्रजु गुण गंजीर । गजलांछन प्रजुजीनो जाण । अमृतसम जसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रजुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या

निजहेत । सहस मुनिस्वरनें परिवार । मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनिमनें दिनें । मुक्तिगए प्रभु तीरथइणें । भूचर खेचर किनरसुरी । इंद्रादिक सहु उछव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही । अठाइ महोछव कियोसही । ए तीरथनी जात्राकरै । ते भवियणअक्षयसुख लहै ॥ १२ ॥ दुहा ॥ ※ ॥ श्रीसंभव जिनराजजी । गएइहांनिर्वाण । शिखरसमेत सुहामणो । प्रगट्यौ तीरथ जाण ॥ १ ॥ ※ ॥ सुगुणसनेही साजन श्रीसीमंधरस्वाम, एचाल ॥ सावत्थी नगरी भरी धनसंपद सहुथोक । जैतारीनृप राजकरै सुखियासवलोक । सेनाराणी मीठीवाणी गुणनी खाण । जेहनें सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण सरीरमनोहर प्रभुनोजाण । लंछन अश्वतणो सोहै प्रभुनो परधान । साठलाख पूरवनो प्रभुनो आयुप्रमाण । धनुख च्यारसै उंचपणै प्रभुदेह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्यायें प्रभुनें गणधर होय । दोयलाखमुनि जेहनै गुणवरता जगजोय । तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस । भूमंमल विचरै प्रभु श्रीसंभव जगदीस ॥ ३ ॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावक लोक । षट्लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्याथोक । त्रिमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार । विचरंतां प्रभु सकल संघमें जय जय कार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारै प्रभुजी शिखर समेत । एकमास संलेखणकीनी निज पदहेत । इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण । तीरथमहिमां महियल मोटी थइय सुजाण ॥ ५ ॥ ※ ॥ दुहा ※ ॥ अभिनंदन जिन वंदियें । पायो पद निरवांण । शिखर समेत सुहामणो । भेटो तीर्थसुजांण ॥ १ ॥ सहसश्रमणसुं सुकसंजमधरो एचाल ॥ ※ ॥ नगरी अजोध्या सुरपुरि समभली । संवरराजा सोहैमनरली । सिद्धार्था राणी तसुनंदए । अभिनंदन जिन प्रगट्याचंदए (उल्लालो) चंदए सोवन वरणसोहै धनुप साढीतीनसै । सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकर कपिलंछन तेनित वसै । पूर्वलाख पचास आयु गणधर इकसो सोलए । तीनलाख मुनि छलाख आर्या सहस त्रिंसत्सोलए ॥ १ ॥ (चाल) सहसअट्यासी दोलख श्राद्धनी । संख्या चौलखसत्तावीसनी । श्रावकएयांरी संख्या जाणए । नायक यक्ष कालिकाठाणए (उल्लालो) ठाणए शिखर समेत ऊपर मासएक संलेख

णा। इकसहस साधू परवस्था प्रभु मुक्ति पहुचे पेषणा। इमही अयोध्या मे घनरवर देवी मात सुमंगला। श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदाहोत सुमंगला ॥२॥ (चाल) सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसै। लंछनक्रौंच सोहै सुभगै हसै। पूरव लाख पच्चासी आउए। इकसौं गणधर गुणगण भाउए (उछालो) भाउए मुनि त्रिणलाख सोहै सहसवीस प्रमाणए। पणलक्ष त्रीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्षजाणए। संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आनीयै। पणलाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मांनीये। श्रीशिखर ऊपर सातसंख्या सहस साधुसुरंगए। करमासकी संलेखणा प्रभुमुक्तिपुहता चंगए॥३॥ (चाल) इम कोसंबी नगरीतातए। धरनृपतात सुसीमामातए पदमप्रभुतसु अंगजना थए। लंछनकमल तणो सुभहाथए (उछालो) हाथए धनुषप्रमाणपूराअढा ईसै तनुकहो। तीन लाख पूरव थितकहावै एकसोगणधर लहौ। लखतीन ती सहजार साधू वीससहस लखच्च्यारए। साधवी दोयलख सहस छिंहतर श्राव कसंख्या सारए ॥४॥ (चाल) पांचलाख वलि पांचहजारए। श्रावकणयांरी संख्यासारए। कुसुमदेव स्यामादेवी कही। लालवरण तनुसोहै प्रभुसही। (उछालो) सोहए सिखरसमेत ऊपर आठसै त्रिण मुनिवरा। करमास संले खन प्रभुनी सेव करहै सुरवरा। श्रीपदमप्रभूजी मुक्तिपहुता गिरशिखर महिमाभई। तसु चरणपंकज वालवंदै हृदय आणंद गहगही ॥५॥ दुहा ॥ श्रीसुपास जिणंदना। पदपंकज आराम। भविजन भ्रमर सुसेवतां। पामें वंछितकाम ॥ १ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा, ए चाल ॥ ❀ ॥ नगर वणारसी सोभता। राजा तात प्रतिष्टलालरे। देवी पृथवीमातजी। स्वस्तिकलंछन सिष्टलालरे॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी। वीस पूरवलख आयुलालरे। धनुष दोयसैंदेहनो। कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचाणवै गणधर कह्या। साधू त्रिणलाख होय लालरे। च्यारलाख तीस ऊपरै। सहस साध वियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावन लक्षनी। श्रावकसंख्या थाय लालरे। च्यारलाख वलीत्रेणवै। सहस श्रावकणीभाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष सांतासुरी। पांचसै मुनि परवार लालरे। करिअणसण मुगतैगया। नामलियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुर इण परै। राजातात महेस लालरे। देवी मातालक्ष्मणा। सुत चंद्राप्रभु वेशला

लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्राप्रभु वंदिये । चंद्रवरण तनुदेह लालरे । लंछन चंद्रतणो
भलो । धनुपदोढसें देह लालरे ॥७॥ श्रीचं०॥ भविक कमल प्रतिबोधता।
सेवें सुर नर यक्ष लालरे । दसलाखपूरव आऊखा । तेणवें गणधर दक्षला
लरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलख सहस पचाणवें । मुनिश्रमणी तीनलक्ष ला
लरे। असीसहस संख्याकही । श्रावकवलि दोयलक्षलालरे॥ ए ॥ श्रीचं० ॥
लाखपचास ऊपरवली । श्राविका चउलक्षधार लालरे । सहसइकाणवें ऊ
परे । प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी ।
सहससाधु परिवार लालरे । संलेखन इकमासनी । पुहता मुक्तिमझार लालरे
॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविध जिनेसरू । जगपति दीनदया
ल । समेतसिखर मुगतेगया । भविजनके प्रतिपाल ॥ ढाल ॥ ※ ॥ श्रीविम
लाचलसिरतिलो एचाल ॥ ※ ॥ नयर काकंदी नरपति । एम पितासुग्रीव ।
देवीरामा मातासुत । भए सुविधसुभजीव ॥ १ ॥ रजतवरण समतनुसत । ध
नुप एकपरिमांण । दोय लाख पूरव कह्यो । प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्या
सी संख्याभए । गणधर परम प्रधान । लख दो मुनि विंशति सहस । इकल
खश्रमणीजांण ॥ ३ ॥ दोयलक्ष श्रावक कह्या । अरु गुणतीसहजार । एक
लख चौलख सहस । श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारा सुरअजित ।
श्रीसंघ सानिधकार । सहससाधु परिवारसुं । आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥मासस्‍ं
लेखण कर प्रभु । मुक्तिगए इहठोर । तीरथ महिमा महियलें । प्रगटी च्यारुं
ओर ॥ ६ ॥ इमहीज शीतलनाथनो । हिवसुणज्यो अधिकार । भद्दिलपुर दढ
रथ पिता । मातनंदा सुखकार ॥ ७ ॥ लंछन सुभ श्रीवछनो । श्रीशीतल जिन
चंद । कंचनवरण नेऊधनुप । मानसरीर अमंद ॥ ८ ॥ एकलाख पूरव क
ह्यो । प्रभुनो आयुप्रमाण । इक्यासी गणधर कह्या । मुनि इकलाख सुजाण
॥ए॥ एकलाख चालीससहस । श्रमणी संख्या ओर । सहस तयासी दोय
लख । श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्षचों । श्रावकणी सु
विचार । देवी असोका ब्रह्मयक्ष । सकल संघ सानिधकार ॥ ११ ॥ सिखरस
मेत सहस्रएक । साधूनें परिवार । मुक्तिगए प्रभुमासकी । संलेखन करसार
॥ १२ ॥ ※ ॥ ढाल ॥ धन२ संप्रतिसाचो राजा एहनी ॥ ※ ॥ सिंहपुरी
नगरी तिहांराजा । विष्णुनरेसर तातजी । कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी । उवें

ज्या विष्णु सुमातजी ॥ २ ॥ नमोरे२ श्री त्रिभुवन राजा । खड्ग लंछन प्रभु पायजी । धनुष असी देहमांन चौरासी । लाख वरसनो आयुजी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बङुत्तर सहसचौरासी । मुनि श्रमणी तीन लक्षजी । तीन सहस वलि सहस गुण्यासी । श्रावक पुण दोय लक्खजी ॥ ३ ॥ नमो०॥ अडतालीस सहस वलि चौलख । श्राविका जाणो सारजी । जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो । श्रीसंघ सानिध कारजी॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनें परिवारें । प्रभुजी सिखर समेतजी । मास संलेखन कर प्रभुपुहता । मुक्तिम हिल सुखहेतजी ॥ ५ ॥ न० ॥ हिव कंपिलपुर तातनृपति । श्रीकृतवर्मसुमा तजी। स्यामा देवी अंगजनपना । विमलनाथजगतातजी ॥ ६॥ न० ॥ सूकरलं छन सोवनकाया । साठधनुष देहीमांनजी । साठलाख वछरनो आयु । शिष्य स तावन जानजी॥ ७ ॥न० ॥ साठसहस मुनि अडसय इकलख । श्रमणी श्रावक जांणजी । आठसहस दोयलक्ष श्राविका । चौलक्षसंख्या आंणजी ॥ ८ न०॥ षण्मुख सुरवर विदितादेवी । प्रभुजी शिखरसमेतजी । षटहजार साधुपरिवारें । मुक्तिगए सुखहेतजी ॥९न०॥ नगरी नाम अजोध्या नरवर । सिंहसेन जगसार जी । सुजसामात तिणें सुतजायो । प्रभुजी अनंतकुमारजी ॥ १० न० ॥ लंछन श्येन सोवनसमकाया । धनुषपचास प्रमांणजी । तीसलाख वछरनोआयु । गण धर पचवीस आंणजी ॥ ११ न० ॥ छसठसहस मुनीसरसोहें । वासठश्रमणीह जारजी । छहजार लाख दोय श्रावक । श्रावकणी इमधारजी ॥ १२ न० ॥ च्यारलाख वलि चवदहजारए । अंकुसादेवी होयजी । पातालयक्ष श्रीसंघकें सानिध । कारी नितप्रति जोयजी ॥ १३ न० ॥ आठसैमुनिवरनें परिवारें । शिखरसमेत प्रधानजी । माससंलेखन करगिरऊपर । पुहतापद निरवांणजी॥ १४ न० ॥ ※ ॥ दुहा ॥ ※ ॥ ऐसें धर्मजिणेसरू । पुहता पदनिर्वांण । शिखर समेत गिरंदपर नमो २ जगभांण १ ॥ ※ ॥ जगतगुरु त्रिशलानंदनजी एचाल ॥ ※ ॥ रत्नपुरी नगरीधणीजी । भानुराय सुजांण । राणीसुव्रता मातनेंजी । धर्मनाथ गुणखांण ॥ १ ॥ जगतपति धर्मजिनेसरसार ॥ धनुषपैंतालीस तनुक ह्योजी । वज्रलंछन सुखकार ॥ २ ज० ॥ चोतीसगणधर मुनिकह्याजी । चौ सठसहस प्रमांण । श्रमणी वासठ सहस स्युंजी । श्रावक दोयलक्षमान ॥ ३ ज० ॥ च्यारसहस वलि ऊपरांजी । चौलाख एक हजार । श्रावकणी सं

ख्याकहीजी। दसलक्ष आयुविचार ॥ ४ ज० ॥ किंनरसुर यत्नासुरीजी । एकसहस परिवार । समेत शिखर मुगतैंगयाजी।वांदू वारहजार ॥ ५ ॥ ज० हथणापुर विश्वसेननाजी। अचिरामात उदार। शांतिजिनेसर जनमियाजी। त्रिभुवन जय २ कार ॥ ६ ॥ (जगतपति शांति जिनेसरसार) ॥ मृगलांछन सोवनसमोजी। देही धनुषचालीस। आयुवरषइकलाखनोजी। छत्तीस गणधर सीस ॥ ७ ॥ज० ॥ वासठसहस मुनि छसैजी । इगसठ श्रमणी हजार। दो यलाख श्रावककह्या जी। ऊपरनेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहसत्रयांणूं श्रा विका जी । तीनलाख परिवार। गरुडयक्ष देवीसुरी जी। श्रीसंघ सानिधकार ॥ ९ ॥ ज ॥ नवसैं मुनि परिवारस्युंजी। आया शिखर समेत। मासखमणकर मुक्तिमैं जी । पुहता निजपदहेत ॥१०॥ ज०॥ ऐसैं हथिणा पुर त्रलोज। राजासूर सुतात। कुंथुनाथ जिन जनमीयाजी। कंचनतनु श्रीमात॥ ११ ॥ (जगतपति कुंथुजिनेसर सार) ॥ छागलंछन पैंतालीसनोजी । धनुषदेहनो मान । सहस पंचाणवे वरषनोजी। आयु प्रभुनोजान ॥ १२ ॥ ज०॥ पैंती सगणधर दीपताजी । साठसहस मुनि जान। छसै साठसहस वलीजी । श्र मणी संख्यामान ॥१३॥ ज० ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी। श्रावक सं ख्या होय। सहस इक्यासी तीन लाखनी जी। श्राविका संख्याजोय॥१४॥ ज०॥ सातसै साधू परवस्याजी। देवीवला गंधर्व । कुंथुनाथ मुगतैं गयाजी। माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥ ※ ॥ दुहा ॥ ※ ॥ श्रीअरिनाथ जिनं दनो। कहस्युं अब अधिकार। श्रोता सुणज्यो प्रेमधर। थास्यैलाभअपार ॥ १ ॥ (देसीविछियानी) अरेलाला श्रीजिनकुशल सूरी सरू ए चा० ॥ ॥ अरेलाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू। जिहां नगरी अयोध्या चंदरेलाला । तात सुदर्शन मातजी । नंदादेवी ना नंदरे लाला ॥ १ ॥ श्री अ०॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो । वीसधनुष देहीनो मानरे लाला। कंचनवरण सुहामणो। आयु सहस चोरासी प्रमाणरे लाला ॥ २ ॥ श्री० ॥ इकलाख श्रावक ऊपरें । वली संख्या अधिकी जाणरे लाला। सहसवऊत्तर तीननी। लक्ष श्राविका संख्या आणरे लाला ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी सानिधकरे । इकसहस मुनि परिवाररे लाला। मुक्ति गए इणगिरि प्रभु। कर माससंलेखन साररे ला ला ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रभावती । मात पिता श्री कुंभ

रायरेलाला । लंछनकलस पचीसनो । वपु धनुष सोवनसम कायरे ला ला ॥ ६ (श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू)॥ सहस पचावन वर्षनी । थित ग णधरअठावीसरे लाला । नविककमल प्रतिवोधता । जगनायक श्रीजगदीसरे लाला ॥ ७ ॥ श्रीम०॥ चालीस सहस मुनीसरू । श्रमणी पचावनसहसरे लाला। सहस त्रयासी लक्नी। श्रावकनी संख्या साररे लाला ॥ ८ ॥ श्रीम० ॥ श्राविका सित्तरसहसनी । लक्तीन संख्या सुविचाररे लाला । सहस मुनी परिवारसुं । गए मुक्ति संलेखण धाररे लाला ॥ श्रीम० ॥ राज ग्रही राजा पिता । सुग्रीव पद्मावती मातरे लाला । श्यामवरण तनु शोनतो । जे कपिल लंछन विख्यातरे लाला ॥ ए (श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी) ॥ धनुष वीस देही तणो । आयुवच्छर तीसहजाररे लाला । अष्टादश गणधर थया । तीससहस मुनीसर साररे लाला ॥१०॥ श्रीमु०॥ श्रमणी सहस पचीसनी । संख्यावऊत्तर हजाररे जाला । इक लक्क ऊपरि श्राविका । तीन लक्क प चास हजाररे लाला ॥ ११ ॥ श्री मुनि० ॥ वरुणयक्क देवी नली । नर दत्ता सानिधकाररे लाला । सहस मुनि परिवारसें । गए मुक्ति महल सुख साररे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयपिता विप्रामात जी । सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंछन कह्यो । वपु धनुख पनर आयु साथरे लाला ॥१३॥ (श्रीनमिनाथ जिनेसरू) ॥ दसहजार वरस तणो । गणधर सित्तर परमाण रे लाला । वीस इकतालीस सहस किम । साधु साधवी संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि ॥ इकलख सित्तर सहस नी । तीनलक्क सहस वलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अ नुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता नूमंमलै । आया सिखर समेत मकार रे लाला । नृकुटी यक्क गंधारी सुरी । इक स हस मुनि परिवाररे लाला ॥ १६ ॥ श्री० डुहा ॥ ※ ॥ परमेसर श्री पास नी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफण । जगजी वन जगतात ॥ १ ॥ ※ ॥ ढाल ॥ आदरजीव क्कमागुण आदर एहनी ॥ ॥ ※ ॥ जय जय परमपुरुष पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरिया साहिव जग नायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय २ सिखर समेत सिरोमणि । श्रीसांवरीया पास जी । ध्यावै सेवें जेनरतेहनी । पूरै

वंछित आसजी ॥ २ ॥ जय०१ ॥ कासीदेस वणारसि नगरी । श्रीअश्वसेन नरिंद जी । वामा माता जग विख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥ ॥ ३ ॥ जय० १ ॥ पन्नग लंछन नीलवरण छवि । देही शुभ नवहाथ जी । आयू एक सो वरस प्रमाणें । गणधर दस प्रभु साथजी ॥ ४ ॥ जय० १ ॥ सोल सहस मुनिवर अरुश्रमणी । कही अमतीस हजार जी । भूमंमल विचरे भविजनकुं । बोधवीज दातारजी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक । गुणचालीस हजार जी । तीन लाख श्रावकणी संख्या । पार्श्व यक्ष सुर सारजी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगतै पुहता । महिमा थइयअपार जी । तिणए तीरथ भगट्यो जगमें । मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय०१ ॥ छहरी पालै जेनर भावै । भेटै सिखर गिरिंद जी । ते नर मनवंछित फल पामै । ए सुरतरुनो कंदजी ॥ ८ ॥जय०१ बहुविध संघ तणी करै भक्ति । संघपति नांम धराय जी । सफल करै संपद निज पामी । जेहनो सुजस सवाय जी ॥ १० ॥ जय० ॥ परभव सुरनर संपद पामे । जात्रा करै गहगाटजी । साधर्मी वच्छल मुनि भक्ती । पूजा उछव थाट जी ॥ ११ ॥ जय० ॥ टुंक टुंक पर चरण प्रभूना । पूजो भविजन भाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें । आनंद अधिक उछाव जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्री सिखर गिरीनो । सुणतां नवनिधि थाय जी । तिणए भविजन भाव धरीनें । सुण ज्यो मनथिर लाय जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमा धारी । कीरति जग विख्यात जी । जय श्रीजिन सौभाग्य सुरीसर । अमृतवचन सुगात जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ तासुपसायें रासरच्यो ए । अमृत समुद्रनें सीस जी । बालचंद्र निज मत अनुसारें । सोधो विबुध जगीस जी ॥ १५ ॥ ज० संवत उगणीसे सित मोत्तरे । सुदि वैशाप सुढाल जी । रास अजीमगंज मांहि कीनो । भणतां मंगल माल जी ॥ १६ ॥ ज० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति श्री सिखरजीको रास संपूर्णम् ॥ २०१ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ५ ॥

॥※॥ अथ गोतम रास लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ वीरजिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो । पणमवि पभणिसु

सामि साल गोयम गुरु रासो । मण तणु वयणे कंत करवि निसुणऊ भो भविया । जिम निवसै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिर भरह खित्त खोणी तल मंभण । मगहदेस सेणियनरेस रिउदल वल खंभण । धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा। विप्पवसै वसु भुइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरि इंदभूय भूवलय पसिद्धो । चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर । सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि पंकजजलपाडिय । तेजहि तारा चंद सूरि आकास भमाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय । धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाभिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपै किंचिय एकाकी किल भीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय । अहवा निश्चय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय । रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय वुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो । पंचसयां गुण पात्र छात्र हींडैपर वरियो । करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय । अण चल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥६ ॥ (वस्तु) ॥ ※ ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि । खोणीतल मंभण । मगह देस सेणिय नरेसर । वरगुव्वर गाम तिहां । विप्प वसै वसभूइ । सुंदर तसु पुहवि भज्जा । सयल गुण गण रूव निहांण । ताणपुत्त विज्जानिलो । गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ (भास)॥ चरम जिणेसर केवलनांणी । चोविहसंघ पइठा जांणी। पावापुर सामी संपत्तो । चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहांकीजै । जिणदीठै मिथ्या मत छीजै । त्रिभुवन गुरु सिंहासन वैठा । ततखिण मोह दिगंतपइठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा । जायै नाठा जिम दिन चोरा । देवदुंदुभी आगासे वाजी । धरमनरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा । चउसठ इंद्रज मांगेसेवा । चामरछत्र सिरोवरि सोहै । रूवहि जिणवर जगसहु मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वर संता । जोजनवाणि वखाण करंता । जांणवि वर्द्धमान जिण पाया । सुर नर किन्नर आवइराया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहल कंता । गयण विमाणहि रण रण कंता । पेखवि इंद भूइ मनचिंते । सुरआवे अम जइ

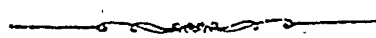
हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिमते वहिता । समवसरण पुहता गह गहिता । तो अभिमानें गोयमजंपै । इण अवसर कोपे तणुकंपै ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोलै । सुर जाणंता इम कांइ मोलै । मो आगल कोइ जाण भणी जै । मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥ १५ ॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न पावापुर सुरमहिय । पत्तनाह संसारतारण । तिहिं देवइ निम्महिय । समवसरण बहु सुक्ख कारण । जिणवर जग उज्जोयकरे । तेजहिकर दिनकार । सिंहासण सांमी ठव्यो । हुउ तो जय जय कार ॥ १६ ॥ (भास) तोचढियो घणमाण गजै । इंद भूइ भूय देवतो ॥ हुंकारो करसंचरिय । कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन भूमि समो सरण । पेखवि प्रथमारंभतो ॥ दहदिस देखे विबुध वधू । आवंती सुररंभतो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज । कोसीसें नवघाटतो ॥ वय रविवर्जित जंतुगण । भाती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर । इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्त चमकिय चिंतवए । सेवंतां प्रभुपायतो ॥१८॥ सहस किरण सांमी वीरजिण । पेखवि रूप विसालतो ॥ एहअचंभव संभव ए । साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु । इंद्रभूय नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे । फेडै वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मदठेल करे । भगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचसयांसुं व्रत लियो ए । गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संजम सुणवि करे । अगनभूइ आवेयतो ॥ नाम लेई आभास करे । ते पिण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण । थाप्या वीर इग्यारतो ॥ तो उपदेशै भुवन गुरू । संयम सुं व्रतवार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए । आपणपै विहरंत तो ॥ गोयम संयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) ॥ ※ ॥ इंद्र भूइ २ चढियो बहुमान । हुंकारो करि कंप तो । समवसरण पहुतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसवे । चरमनाह फेडै फुरंततो ॥ बोधबीजसंजाय मने । गोयम भवहि विरत्त ॥ दिक्खलेई सिख्यासही । गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ (भास) ॥ ※ ॥ आज हुओ सुविहाण । आज पचेलम पुण्यभरो । दीठा गोयमसामि । जो निय नयणे अमियझरो ॥ समवसरण मझार । जे जे संसा ऊपजें ए । ते ते पर उपगार । कारण पूछै

मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीख । तीहां केवल ऊपजै ए । आपकनैं अणऊंत । गोयम दीजै दान इम । गुरु उपरगुरु भक्ति । सामीगोयम उप न्निय । अणचल केवल नाण । रागज राखै रंगभरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल । वंदै चढ चउवीस जिण । आतम लवधि वसेण । चरम सरीरी सो जमुनि । इय देसणा निसुणेह । गोयम गणहर संचरिय । तापस पनरसए ण । जो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग । अह्मां स गतिन ऊपजैए । किमचढस्यै दृढकाय । गज जिम दीसै गाजतोए । गिरु ओ ए अभिमान । तापस जो मन चिंतवै ए । तो मुनि चढियो वेग । आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न । दंम कलस ध्वज वम सहिय । पेषवि परमाणंद । जिणहर भरतेसर महिय । निय २ काय प्रमाण । चिऊं दिसि संठिय जिणह विंव । पण मवि मन उल्लास । गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंभक देवतिहां । प्रतिवोध्या पुंमरीक । कंडरीक अध्ययनभणी । वलता गोयमसाम सवि तापस प्रतिवोध करे । लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांम घृत आण । अमिय वूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र । करावै पारणो सवे । पंचसयां सुभभाव । उज्जल भरियो खीर मिसे साचा गुरु संयोग । कवलत केवल रूप ऊय ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह । समवसरण प्राकारत्रय । पेषवि केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे । जाणें जण त्रिपीयूप । गाजंती घनमेघजिम । जिणवाणी निसुणेवि । नाणीऊआ पंचस यां ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाणसंपन्न । पनरैसै परिवरिय । हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जगगुरु वयण । तिहिंनाण अप्पाण निंदइ । चरमजिनेसर इमभणे । गोयम मकरिस खेव । छेहजाय आपणसही । हो स्यां तुल्लावेव ॥ ३१ ॥ (भास) ॥ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि । वरसबऊत्तर संवसिय । ठवतो ए कणय पउमेण । पायकमल संघै सहिय । आवियो ए नयणा णंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेषियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिवोधकरे आपणोए त्रिसलादेवि । नंदन पुहतो परमपए । वलतोए देव आकास । पेषवि जाणयों जिणसमैए । तो मुनिए मनविषवाद । नादभेद जिमऊपनो

ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेख । आपकनासूं टालियो ए । जाणतोए तिहुअणनाह । लोकं विवहारन पालियो ए । अतिभलोए कीधलो सामि । जाण्यो केवल मांगस्यैए । चिंतव्योए वालक जेम । अहवा केमे लाग स्यैए ॥ ३४ ॥ हूं किमए वीरजिणंद । भगतहिं भोलै भोलव्योए । आपणोए उंचलो नेह । नाह नसंपे साचव्योए । साचोए एवीतराग । नेह न हेजें लालियो ए । तिणसमेंए गोयमचित्त । राग वैरागे वालियोए॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट । रहितो रागें साहियो ए । केवलए नाण उपन्न । गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअणए जय जय कार । केवल महिमा सुर करे ए । गण धरए करय वखांण । भविया भवजिम निस्तरे ए ॥३६॥ (वस्तु)॥ पढम गणहर१ वरपचास । गिहवासें संवसिय । तीसवरस संजम विभूसिय । सिरिकेवल नाणपुण । वारवरस तिहुअण नमंसिय । राजग्रही नयरी ठव्यो । वाणवइ वरसाउ । सामी गोयम गुण निलो । होस्ये सिवपुर ठाउ॥३७॥ (भास) ॥※॥ जिमसहकारे कोयलटहुकै । जिम कुसमावन परमल महकै । जिमचंदन सोगंधनिधि । जिम गंगाजल लहिरयां लहकै । जिमकणया चल तेजें झलकै । तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा । जिम सुरतरुवर कणय वतंसा । जिम महुयरर राजीव वने ॥ जिम रयणायर रयणे विलसै । जिम अंवर तारा गण विकसै । तिम गोयम गुरु केलघने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे । सुरतरु महिमा जिम जगमोहे । पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम गिरवर राजे । नरवइ घर जिम मंगलगाजे ॥ तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा । जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा । जिम वन केतकि मह महे ए । जिम भूमीपति भुयवल चमकै । जिम जिनमंदिर घंटारणकै । गोयम लवधे गहगह्योए ॥ ४१ ॥ चिंताम णि करचढीयो आज । सुरतरु सारे वंछिय काज । कामकुंभ सहु वसिहु आए । कामगवी पूरे मनकामी । अष्ट महासिधि आवे धामी । सामी गोयम अणुसरोए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजे । मायावीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमिति सोभा संभवो ए । देवां धुर अरिहंत नमीजे । वनय पहु उवझायथुणीजे । इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां

कांय करीजै । देस देसांतर कांय भ्रमी जै । कवण काज आयास करो । प्रहऊठी गोयम समरीजे । काज समग्गल ततखिण सीऊे । नवनिधिविलसै तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय वारोत्तर वरसैं । गोयम गणहर केवल दिवसैं । कीयो कवत उपगारपरो । आदहि मंगल ए पभणीजे । परवमहोछव पहिलो दीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धनमाता जिण उयरैं धरियो । धन्य पिता जिण कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवंत विद्याभंमार । तसुगुण पुहवि नलब्भइ पार । वडजिम साखा विस्तरो ए । गोयम स्वामिनो रास भणीजे । चउविहसंघ रलियायत कीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन उडो दिरावो । माणक मोतियां चोक पूरावो । रयण सिंघासण वैसणो ए । तिहांवैठी गुरु देसना देसी । भविक जीवना काज सरेसी । नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति गोतमरास संपूर्णम् ॥ इति षट् रासः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग प्रभाती जेकरै । प्रहउगमते सूर । भूखा भोजन संपजै । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसै । लब्धितणा भंमार । जे गुरु गोतम समरियैं । मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम मुहा । गणधर गुण संपन्न । प्रहऊठीनें प्रणमतां । चवदैसै वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमं गुणकलियं । सुविणियं सव्वलद्धि संपणं । वीरस्स पढमसीसं । गोयमसामी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय । सर्वाभीष्टार्थदायने । सर्वलब्धिनिधानाय । गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



॥ ॥ अथ देववांदणामें (वा) प्रातकाल सिंध्याकाल प्रतिक्रमणमें कहणेंकुं पनरै तिथांकी स्तुति लि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ महीमंमणं पुन्न सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल नाण गेहं । महानद लद्धी वङ बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया । भवस्संति ते सव्व भव्वाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा । सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुव्वारपोयं । कलंकावली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंछियत्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणं भोजलीणा ।

कला रूव लावण्ण सोहग्ग पीणा। वहंतस्स चित्तंमि णिचंपि झाणं। सिरी भारही देहिमे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पंच विदेह विषै विहरंता। वीस जिनेसर जग जयवंता। चरणकमल तसु नामुं सीस। अहनिसि समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंचमेरु पासे झलकंता। सोहे वीस महा गजदंता। तिण ऊपरि छै जिणवर वीस। ते जिणवर पणमुं निसि दीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय दुवालसअंग। थानकवीस भणया तिहां चंग। तिणऊपरि जे आणे रंग। तेनर पामें सुक्ख अनंग ॥ ३ ॥ जिणसासण देवी चउवीस। पूरे मुझमन तणीजगीस। संघतणा जेविघन निवारे। तिहु अण जन मन वंछित सारे ॥ ४ ॥

॥ ॥ इति वीसविहरमाणस्तुतिः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सम दमोत्तम वस्तु महापणं। सकल केवल निर्मल सद्गुणं। नगर जेसलमेर विभूषणं। भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुर नरेश्वर नम्र पदांबुजाः। स्मर महीरुह भंग मतं गजाः। सकल तीर्थकराः सुख कारका। इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिन शासनं। विपुल मंगलकेलि विभासनं। प्रवल पुण्य रमोदय धारिका। फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनासिनी। जिनमताश्रित सौख्य विकासिनी। नर नरेश्वर किण्णर सेविता। जयतु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वर मुत्तियहार सुतारगणं। परचित्त कलत्त सपत्तधणं। पय पंकय छप्पय देवगणं। श्रीअव्बुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोय नमंसिय पायजुआ। घणमोह महीरुह मुत्तिगया। परिपालिअ निचल जीवदया। ममझुंतु जिणागम सुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगि महातम रोर हरं। कल्लाण पयोरुह वुढ्ढिकरं। सुहमग्ग कुमग्ग पयासकरं। पणमामि जिणागम मन्दि करं ॥ ३ ॥ सिरिइंद समुज्जल गायलया। सुहझाण विणम्मिय एगलया। असुरिंद सुरिंद सुरप्पणया। ममवाणि सुहाणि कुणेसु रुपा ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान क्षमं। पंचानुत्तर सीम

दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्वल पंचमी वरतपो व्याहारि तत्कारिणां । श्रीपंचानन लांछनः सतनुतां श्री वर्द्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः । कृत्वा पंचहृषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंचज्ञान विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाभं गुरु पंचमार तिमिरे ष्वेकादशी रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्टिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् । प्रके पंचजने मनोमृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका नायिका ॥ ४ ॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीरं । देवं । नित्यं । वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् । पांतु ॥ २ ॥ जैनं । वाक्यं । भूया । द्भुत्यै ॥ ३ ॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वीस्त्रीछंदसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यदंघ्रि नमना देव । देहिनः संति सुस्थिताः । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण युगान् । नाभेयजि नादि जिनपती न्नौमि । यद्वचन पालनपरा । ज्जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणा ग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः । गणाधिपा स्तीर्थ समर्थन क्षणे । तदंगिना मस्तु मतं नु मुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरा सुरवैर स्सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तुतिः अणोकारी ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विश्वनायक लायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग नितप्रणमै देव अनैदेविंद । भावलहिरी गहिरी सव मनधरीयै अमंद । श्रीसूरतसहिरै वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिसय वलि चौतीस । दिलरंजण देसन तेहना गुण पेंतीस । अगणित रिधधारी आचारीमां ईस । एहगुणना धारक वांडुं जिनचौवीस ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्त नविभ्रांत । पाप कर

दम पाणी सदगतिनी सहिनाणी । सुणिये नितभविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साचीदेवी सानिधकारी । डुख कष्ट निवारण सेवीजे सुखकारी । साचें मनसमरें ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पयंपे हो ज्यो जय जय कारी ॥ ※ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चउवीसे जिनवर प्रणमुंजं नितमेव । आठम दिनकरिये चंद्रा प्रभुनी सेव । मूरति मनमोहे जाणें पूनिमचंद । दीठां डुख जाये पामें परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय । इंद्राणी अपछरा करजोमी गुणगाय । नंदीश्वर दीपें मिल सुरवरनी कोड । अठाही महोछव करतां होम्हा होम ॥ २ ॥ सेत्रुंजा सिखरें जाणी लाभ अपार । चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियणनें तारे देइ धरम उपदेश । दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेस ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियें व्रत पचखाण । आठम तप करतां आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दिन २ कोडि कल्याण । जिन सुखसूरि कहे इम जीवत जनम प्रमाण ॥※॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धारथ नंदन त्रिसला देवि सुमाय । मृगनायक लंछन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक स्वामी श्रीवधमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद । कामित भर पूरण अभिनव सुरतरुकंद । भवियणनें तारे प्रवहण समनिसि दीस । चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथें करि आगम भाष्या श्रीभगवंत । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहिनसके एकन्त । समरूं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघनविशेष । सङ्कसंकट चूरे पूरे आस असेष । अहनिसि करजोडी सेवे सुर नर इंद । जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अश्वसेन नरेसर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नीलवरण सुखकंद । अहिलंछण सेवित पद्मावइ धरणिंद । प्रहऊठी प्रणमुं नितप्रति पासजिणिंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेयड्ढइ कणयाचल अभिराम । मा

नुषोत्तर नंदी रुचिक कुंम्लल सुखठाम । जवणेसर व्यंतर जोइस वेमाणी य धाम । वरतै जेजिनवर पूरो मुझ मनकाम ॥ २ ॥ जिहां अंगइग्यारै बारैउपांग ब्छेद । दसपइन्ना दाख्या मूलसूत्र चउन्नेद । जिन आगम षटद्र व्य सत्तपदारथ जुत्त । सांजलि सरदहतां तूटै करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पउमा वइदेवी पार्श्वयक्ष परतक्ष । सङ्घ संघना संकट दूरकरेवा दक्ष । तेसमरो जिनन्नक्ति सूरि कहै इकचित्त । सुख सुजस समापो पुत्र कलत्र वङ्गवित्त ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपते र्ज्ञानमतुलं । तथा मल्ले र्जन्म व्रत मपमलं केवलमलं । वलक्षै कादश्यां सहसिलस दुद्दाम महसि ॥ क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्र श्रेण्या गमन गमनै र्भूमिवलयं । सदा स्वर्गत्यैवा हमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापु क्षण मति सुखं नारकसदः ॥ (क्षितौ०) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग दुरात्मीय समये । फलं यत्कर्तृणा मितिच विदितं सुद्धसमये । अनिष्टा रिष्टानां क्षिति रनुन्नवेयु र्वङ्गसुदः ॥ (क्षितौ०) ॥ ३ ॥ सुरास्सेंद्रा स्सर्वे सकल जिन चंद्र प्रमुदिताः । तथाच्च ज्योतिष्का खिल जवनना था समुदिताः । तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः (क्षितौ०) ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ इति मोनै कादशीस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढरथ नृपराणी नंदा केरोनंद । जद्दलपुर सामी फेडै जवनाफंद । चित्तचोखै नमियै श्रीशीतल जिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रतिकालै जेक्षेत्रविदेह विचरंत । त्रिहुं जवणे ठवणा सासय असासय संत । त सगला त्रिकरण प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंगपविठ । नय जंग निक्खेपा स्यादवाद मित सिठ । जविजन उपगारी जारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासै कोडिकलेस ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकितधार । चिंता दुखचूरै पूरय मनहजगीस । ध्यान तेहनो धरियै कहै जिनलान सूरीस ॥ ४ ॥ ※ ॥ ※ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥ १२ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मिल चौविहसुरवर विरचै त्रिगडो सार । अढी गाऊ ऊंचो

पिङ्गलो जोयण पार । विच कनक सिंहासण पदमासन सुखकार । श्री तीरथनायक वैसे चौमुखधार ॥ १ ॥ तीनछत्र शिरोवरि चामर ढाले इंद । देव दुंदुभि वाजै भाजै कुमतीफंद । भामंमलपूठे फलके जाण दिणंद । तिङ्गअण जन मन मोहै सयलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य भावसु ठवणा नाम निक्खेपाच्यार । जिण गणहर भाप्या सूत्रसिध्धांत मझार । जिनवरनी पडिमा जिनसारिखी सुखकार । सुभभावे वंदो पूजो जग जय कार ॥३॥ डुखहरणी मंगलकरणी जिनवरवाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमियसमाणी । मनसुध्दे आणी प्रतिबूझो भविप्राणी । सुयदेविपसायें पामें जयति सुनांणी ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीसमवसरण भावगर्भितस्तुतिः ॥ १३ ॥ ॥

॥ ॥ द्रेंद्रेंकि धपमप धुधुमि धोंधों धसकि धर धप धोरवं । दोंदोंकि दोंदों दाग्मिदि दाग्मिदिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं । झझिझेंकि झें झें झणण रण रण निजकि निज जन रंजनं । सुरशेल शिखरे भवति सुखदं पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट पाटवं । गुण गुणण गुण गण रणकिणेंणें गुणण गुण गण गौरवं । झ झि झेंकि झेंझें झणण रण रण निजकि निज जन सज्जना । कलयंति कमला कलित कलमल मुकलमीस महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठें ठें ठङ्कि ठङ्किक ठङ्किपट्टा ताड्यते । तललोंकि लोंलों त्रेंवि त्रेंविनि मेंवि मेंविनि वाद्यते । ठें ठेंकिठें ठें थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे । जिन मत मनंतं महिम तनुता नमति सुर नर मुच्चवे ॥ ३ ॥ पुदांकि पुंदां पुपुडदि पुंदां पुपुडदि दोंदों अंबरे । चाचपट चचपट रणकि णेंणें मणण मेंमें मंवरे । तिहां सरग मपधुनि निधप मगरस सस ससस सुर सेवता । जिन नाट्यरंगें कुशलमुनिसं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥ ॥ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सेत्रुंज गिरि नमिये ऋषभ देव पुंमरीक । शुभतपनी महिमा सुणि गुरु मुख निरभीक । शुधमन उपवासे विधिसुं चैत्यवंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दश बीस । अक्षत गिण तीसे चढता तिम चालीस । पंचासनी पूजा भापइ इम जगदीस । तेहीज नितप्रणमुं स्वामी जिन चउवीस ॥ २ ॥ सुहि

पक्षनी पूनम चैत्रमास शुन्नवार । विधिसेती लहीयै आगमसाख विचार । इम सोलवरस लग धरियै ध्यान उदार । करतां नरनारी पामें न्नवनोपार ॥३॥ सोवन तनचरणे नयणे तिम अरविंद । चक्केसरी देविय सेविय नर सुर वृंद । कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जंपै गणनायक श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिमस्तुतिः ॥ १५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी । करुणासागर निजगुण आगर सुन्न समता रस धामी जी । श्री सिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावै जे मन रंगै जी । ते माणव श्रीपाल तणी परि पामें सुख सुर संगे जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु म हा गुणवंता जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता जी । एहनो ध्यांनधरंता लहीये अविचल पद अविनासी जी । तेसगला जिननायक नमीयै जिनए नीति प्रकासी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनो हर तिमवलि चैत्रकमास जगीसै जी । उजवाली सातमथी करिये नव आंबिल नव दिवसे जी । तेरसहस वलि गुणिये गुणणो नवपदकेरो सारो जी । इण परि निरमल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ बिमल कमलदल लोयण सुंदर श्री चक्केसरि देवी जी । नवपद सेवक न्नविजन केरा विघनहरो सुर सेवीजी । श्रीखरतरगछ नायक सदगुरु श्रीजिनन्नक्ति मुणिंदाजी । तासु पसायें इणपरि पन्नणें श्री जिनलान्न सुरिंदा जी ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ※ ॥ १६ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वलि वलिऊं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण परब पजूसण दाख्या धरमनी सीर । आसाढ चौमासे ऊंती दिनपंचास । पडीक्कमणो संवछरी करियै त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार । करियै न्नलन्नावें न्नरिये पुण्यन्नंमार । वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लान्न अनंत । इम परब पजूसण सऊमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना यें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परन्नावना धूप अगर उक्खेवो । इम न्नवियण प्राणी परब पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ वलि साहमी वछल करियै वारंवार । केइ न्नावना न्नावे केइ तपसी सीलधार । अम्हदीह पजसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलान्न

सूरिंद ॥ ४ ॥※॥ इति श्रीपर्जुषणापर्व्व स्तुतिः ॥※॥ १७ ॥ ※॥

॥※॥ सुर असुर वंदिय पायपंकज मयणमल्ल अक्षोभितं । घन सुघन स्याम सरीर सुंदर शंख लंछन सोभितं । सिवा देवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं । गिरनार गिरिवर सिखर वंडु नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीर जिनपावापुरे । वासुपूज्य चंपापुरियसीधा नेमि रेवय गिरिवरे । सम्मेत्त सिखरें वीस जिनवर मुगति पहुंता मुनिवरू । चउवीस जिनवर तेहवंडु सयल संघं सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यारे अंग उपांगवारे दसपयन्ना जाणियें । छेद ग्रंथ प्रसत्य अत्था च्यार मूल वखाणियें । अनुयोग द्वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइये । इह वृत्ति चूरणि भाष्य पैंतालीस आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ दुऊं दिसें वालक दोय जेहनें सदाभवियण सुखकरू । दुखहरें अंवा लुंव सुंदर दुरिय दोहग अप हरू । गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरण पंकज सेवियें । श्रीसंघ सङ्कनें सदामंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ ※॥ ॥ ※॥ इति गिरनार मंमण श्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ १८ ॥ ※॥ ॥※॥

॥ ※॥ श्रीदेवार्यं । विश्वेवर्यं । पूर्णानंदं । भक्त्यावंदे ॥ १ ॥ तीर्थाधीशाः । शुद्धादेशाः । सर्वेभीष्टं । शं कुर्वं तु ॥ २ ॥ अर्हद्वाचो । वाचो युक्त्या । कृप्ताः सद्भिः । पापं भंतु ॥ ३ ॥ शांता कांता । सिद्धा देवी । शांत्यै दांत्यै । शश्वद्भूयात् ॥ ४ ॥ इति श्रीवीर प्रभु स्तुतिः ॥ १९ ॥ ॥

॥※॥ त्रिभुवन जन नायक दायक वंछित दान । भवि कमल विकासन सासन सूर समान । प्रणमुं वहुभावे नंदाराणी नंद । श्रीसूरत सहिरे शीतलनाथ जिणंद ॥ १ ॥ उज्जल गुण धारी अविकारी अरिहंत । भविजन हितकारी महिमावंत महंत । उपगारी अविचल जयकारी जगदीस । नित निरमल चित्ते वंदो जिन चोवीस ॥ २ ॥ जिहां नैगम संग्रह आदिकनय सुविचार । स्यादस्ति प्रमुख वलि सप्तभंगि विस्तार । पैंतीस गुणेंकरि सोभे अति सुविसाल । तेकंठे ठवियें जिनवाणी वरमाल ॥ ३ ॥ कमलासन सोहे नील वरण तनुकांत । निज च्यार भुजें करि राजे अतिसय वंत । श्रीदेवी अशोका सोक हरण सुखकंद । इम भक्ते पभणे श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ २० ॥

॥ ※ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेंद्रं । काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्रीकारं । गीर्वाणै र्वन्द्यं सानंदं भक्त्या वन्दे श्रीपार्श्वं ॥ १ ॥ जागृद्वीपे जंबूद्वीपे स्वर्ण श्शैले श्रीशैले । चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुंगत्वाढ्ये वैताढ्ये । श्रेयस्कारे वक्रुस्कारे देवावासे सोल्लासे । येवर्त्तन्ते सर्वाधीशा स्तेसौख्यं वो देयासुः ॥ २ ॥ सम्यग् ज्ञानं शुद्धध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं । त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विद्वग्म्यं प्राकाम्यं । अर्हद्वक्रां भोजोद्भूतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं वर्णोपेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ भव्यानां भक्त्यानां कल्याणं कुर्वंती विघ्ना णां । शीर्षे सोम्मीरं कोटीरं तारं हारं वक्षोजे । विख्याता भोगेंद्रोपेता सालंकारा प्रल्हादं । यच्छंती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैडुर्य्यं ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पापायां पुरि चारु षष्टतपसा पर्यंकपर्यासनः । क्ष्मापाल प्रभु हस्तपाल विपुल श्रीशुल्कशालामनु । गोसे कार्त्तिक दर्श नागकरणे तूर्यार कांते शुभे । स्वातौ यः शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीरप्रभु ॥ १ ॥ यज्ञ भोगमनोभव व्रतवर ज्ञानाक्रुराप्ति क्षणे । संभूयाशु सुपर्व संततिरहो चक्रे मह स्तत् क्षणात् । श्रीमन्नाभिभवादि वीरचरमा स्ते श्री जिनाधीश्वराः । संघाया नघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिधः । तत्पश्चा गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः । श्रीमत्तीर्थे समर्थनेक समये सम्यग् दृशां भूस्पृशां । भूयाद्भावुक कारकं प्रवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थ भावनपराः सिद्धायिका देवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपायादसौ । अर्हन् श्रीजिनचंद्रगी स्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो । याचक्रे मम कष्टहस्ति निधने साहूलविक्रीभितं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ १२ ॥ ॥ पुनः ॥

॥ ※ ॥ सिद्धारथ ताता जगत विख्याता त्रिसलादेवी माय । तिहां जगगुरु जनम्या सब डुखविरम्या महावीरजिनराय । प्रभुलेई दिक्षा कर हित शिख्या देईसंवच्छरीदान । बहु करमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुभध्यान ॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकाती शुभदीस । अमावसजातें पिछलीरातें मुगतिगया जगदीस । वलि गौतम गणधर मोटामुनिवर पाम्या

पंचमज्ञान । ययातत्वप्रकासी शीलविलासी पञ्जतामुगति निदान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया रतनजवरिया रातथई तिहां काली । जन दीवा कीधा कार जसीधा निसाथई उजवाली । सज्जलोके हरखी निजरेनिरखी परवकियो दीवाली । वलि जोजन जगतें निज निज सगतें जीमें सेवसुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिकादेवी विघनहरेवी वंछित दे निरधारी । करे संवनेसाता जिमजग माता एहवी शकति अपारी । जिनगुण इमगावे शिवसुखपावे सुणज्यो जविजनप्राणी । जिनचंदजतीसर महामुनीसर जंपे एहवी वाणी ॥ ४ ॥
॥ इति श्री दीपमालिका स्तुति ॥ १३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पनरैतिर्थोंका स्तवन लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक जगगुरु मुज आसा विसराम । पूरवविदेहें विजयजली पुष्कलावई नाम । जिहां विचरें जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणे जे जो जनगामनी वाणि । धनते महीयल चरणधरे जिहां जिनवर जाण । धनते जविजन जे रहे प्रजुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणे उन्नवरंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रजु सुजस तुह्मीणो सांजलकान । मिलवानें उलसे मनमाहरो धरुं इक ध्यान । जगति जुगति करवानी छे मुजसगली जोम । पिण प्रजुलग पुहची जे तेहनही पगदोम ॥ ३ ॥ आमा मुंगर अतिघणा विचवहे नदियांपूरि । किम मुजथी अवराये प्रजुजी एतलीदूर । आंखडली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते विन किमसरे काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न मिले संगूसाथ । कागलियो लिख आपूं कुं जिम तेहनें हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहुं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि वाडे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रजुजी तुमथी एथ अवाय । तो इण जरतनावासी जविजन पावन थाय । साहिबनीनो सुनिजर सगले सरिखी होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोहुं पिणमाहरे तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवे हीयडे खिण २ चीत । हुंतुं सेवक तुंछे माहरो आतमराम । नहिंय विसारू जीहुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुजसुं धरज्यो धर

मस्नेह ।करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अछेह ।दूसमकाल तणो दु खटालो दीनदयाल । पालो विरुद संभालो निज सेवकसुं कृपाल ॥ ७ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण करै अरदास । पिण मोटानी महिरछतां न विश्राय निरास । केईवसैं प्रभु पासे केइ वसैछै दूर । राजमहिरनी रीते स कलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुखदायक नायक लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आतमउमंग । सहिजे एकपलक जोथायै प्रभु तुझसंग । लाभउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अभंग ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ※ ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै । भवना संचित पाप परा सव मेटियै । मनधर भाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंतें इककोमि चतुरविध देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रभुदूरथकी हुं ताहरो ।जल जिमलीनो मीन सदा मनमाहरो । भव २ तुमहीजदेव चरणहूं सिरधरूं । भवसायरथी तार अरज आहीजकरूं॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतम एनविसहै । तप जप संयम भारतणो नविनिरवहै । पिण जिणवरना नामतणी आसतघणी । एहिज छै आधार जगतगुरु अह्मभणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसाम भवो दधि हुं फिर्यो । सहिया दुक्ख अनेक न कारज कोसर्यो । मिलिया हिव प्रभु मुझ सदासुख दीजीयै । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्ण तणी आरति हरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरैकरी । पर चा पूरण पास रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ※ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह्म भगतै भणुं । भेटवापाय कमल भाव हीयमै घणो । करीय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अछै तिसो कर जोमि करि भाखियै । अति सवल मुझ हियै मोह माया घणी । एक मन भगति किमकरूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचटको चढे लोभ वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें राति हि यडै अनेरो धरूं । मूढमन रीझवा वलिय माया करूं । तूंहीज अरिहंत

जाणें जि सो आचरूं । तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्म वसि सुक्खनें डुक्खजेऊंसऊं । मनतणी वात अरिहंत किणनें कऊं । करि दया करि मया देव करुणापरा । डुक्ख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव वीजो नही । एह आधार जग जाणज्यो अह्न सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो वोल्यो रम्यो रंगरातो वहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्न समवम नही अवर वाल्हे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वांणि जाणुं सदा सांनलुं । वार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायत्तलगुं । किम करुं ठाम पुंम्नर गिरि वेगलूं ॥ ८ ॥ नोलडा नगतितूं चित्तहारे किस्यै । पुण्यसंयोग प्रनु दृष्टिगोचर ऊस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन उल्लस्यै । दूरथी ढूकमा जेम हियडे वसै ॥ ए ॥ नल नलो एणि संसार सऊ ए अठे । सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठे । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गह गहे । तेहसुं नेह जे वात तुह्मची कहे । तुह्न पाय नेटवा अति घणुं टलवलुं । पंख जो होयतो सहिय आवीमिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिर लेखणी आनकागल करुं । खीर सागर तणा दूध खडिया नरुं । तुह्न मिलवा तणा सामि संदेसमा । इंद्र पिण लिखिय नसके अठे एवमा ॥ १२ ॥ आपणें रंग नरि वात सुण जेतली । ऊपजै सामि न कहाय मुख तेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा । लाम्नें कोम्नि प्रनुपूरि स वि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व नवि मोह वसि नेह ऊवै जेहनें । समरिये एणि संसार नित तेहनें । मेहनें मोर जिम कमल नमरो रमें । तेम अरिहंततूं चित्त मोरे गमें ॥ १४ ॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमें वस्युं । वापमा पापहि व रहिय करस्यै किसुं । ठामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही । ततखिण सर्पनी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कऊ सावऊ सऊ परिहरी । सामि सीमंधरा तुह्न पाय अणुसरी । सुद्ध चारित्र कहिये प्रनू पालसुं । डुक्ख नंम्नार संसार नय टालसुं ॥ १६ ॥ तुह्न ऊंदास ऊं तुह्न सेवकसही । एहमें वात अरिहंत आगलिकही । एवडी माहरी नगत जाणी करी ।

आप ज्यो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण सङ्करो । उवझाय वर श्री भक्तिलाभै थुण्यो श्रीसीमंधरो । जय जयो जगत गुरु जीव जीवन करो सामि मया घणी । करजोडि वलि वलि वीनवुं प्रभु पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥※॥ इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ मनमोहन महाराज । तीन भुवन सिरताज ॥ आछे लाल ॥ नगर ब्रहान पुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिणंद प्रधान । निरमल सुगुण निधान ॥ आछे लाल ॥ वामा सुत वम्हि भागीया जी ॥ २ ॥ सेवक नी संभाल । करीय खरी ततकाल ॥ आछे लाल ॥ संकट सङ्क प्रभु परि ह स्याजी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर । प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछे लाल ॥ वाट विषमता पिणटली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीनें परसाद । वीता सङ्क विखवाद ॥ आछे लाल ॥ मन वंछित सुझ सङ्क फल्याजी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप । मिलीयाछे प्रभु आप ॥ आछे लाल ॥ देज्यो दरसण वलि सदाजी ॥ ६ ॥ अमृत धर्म सुजाण । सीस क्षमा कल्याण ॥ आछे लाल ॥ वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥ इति श्रीमन मोहन पार्श्वनाथ स्तवनम्॥ ॥ ३ ॥※॥

॥※॥ जय २ श्रीजिन राज । जग जन अन्तर जामी । तारण तरण जिहाज । परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेस । परमानंद प्रधान । परम प्रकास विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पास जिणंद । प्रभु तुह्म हो उप गारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद भूलि । मैं बङकाल गमायो । निजपर भाव विवेक । सुद्ध सुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव । कर्म कलंकित कीनो । ताकारण गुण छेम्हि । पर ओगुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमैं रोस भराउं । अछता निज गुणगान । सुनिवैंकुं ऊमाहूं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुद्ध । दिलसें दूर नजावै । कुमति कदाग्रह जोग । समता सुद्ध न आवै ॥ ७ ॥ अब कबु पुण्य संयोग । प्रभु तुझ मुद्रा पेखी । सुद्ध अध्यातम लीन । भाव असुद्ध उवेखी ॥ ८ ॥ निरखि २ प्रभुविंब । मनमें आनंदपाऊं । गाऊं तुझगुणग्राम । देव अवर

नविचाङ्कं ॥ ए ॥ करुणाकरि प्रजुमुझ । आतम निरमल कीजै । सुध्दसा प्रगटाय । मोह विकलता ठीजे ॥१०॥ नवश् निजपद सेव । प्रजु सेवककुं दीजे । श्री जिन नक्ति पसाय । सुमति विलाश वरीजै ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय । पांचमि तप नणुंए । जन्म सफल गिणुंए ॥ १ ॥ चनवीसमो जिनचंद । केवल न्यान दिणंद । त्रिगमे गहगह्योए । नवियणनें कह्योए ॥ २ ॥ न्यान वमो संसार । न्यान मुगति दातार । न्यान दीवो कह्योए । साचो सरदह्योए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास । लोकालोक प्रकास । न्यान विना पसुए । नर जाणें किसुंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण । नगवती सूत्रप्रमाण । न्यानी सर्वतुए । किरिया देशतुए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास । करम करे जेनास । नारकिनें सहीए । कोडवरस कहीए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार । बोल्या सूत्र मझार । किरिया ठे सही ए । पिण पाठे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान । हुवैतो अति परधान । सोनोनें सुरो ए । संख दूधे नस्यो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मझार । पांचमि अक्षर सार । नगवंत नापीयोए । गणधर साखियो ए ॥ ए ॥ (ढाल १ पहिली काल हरानी)॥ ॥ ※ ॥ पांचमि तप विधि सांनलो । जिम पामो नव पारोरे । श्रीअरिहंत इम उपदिसे । नवियणनें हित कारोरे ॥ पां० ॥ १० ॥ मिगसर माह फागुण नला । जेठ आसाढ वैसाखोरे । इण षटमासे लीजीयै । । शुनदिन सद्गुरु साखोरे ॥ पां० ॥ ११ ॥ देव जुहारी देहरे । गीता रथ गुरु वंदीरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ वेकर जोमी नावसुं । गुरु मुख करो उपवासोरे । पांचमि पडिकमणो करे । पढो पंडित गुरु पासोरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो । तिण दिन आरंन टालोरे । पांचमि तवन थुई कहो । ब्रह्म चारिज पिण पालोरे ॥ पां० ॥ १४ ॥ पांचमास लघुपंचमी । जाव जीव उत्कृष्टीरे । पांच वरस पांच मासनी । पांचमि करो शुन दृष्टीरे ॥ पां० ॥ १५ ॥ (ढाल २ उल्लालानी) ॥ ※ ॥ हिव नवियणरे पांचमि उजमणो सुणो । घर सारूरे वारू धन खरचो घणो । ए अवसररे आवंतां वलि दोहिलो ।

पुण्य जोगेरे धनपामंता सोहिलो । (उल्लालो) सोहिलो वलीय धन पाम तां पिण धर्म काज किहां वली । पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै कावसग रली । त्रिण न्यान दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै । थापना पहिली पूजकेसर सुगुरु सेवा कीजीयै ॥ १६ ॥ सिद्धांतनीरे पांच परत वीटांगणा । पांच पूठारे मुख मल सूत्र प्रमुख तणा । पांच मोरारे लेखण पांच मजी सणा । वासकुंपारे कांबी वारू वरतणा । (उल्लालो) वरतणा वारू वलिय कमली पांच झिल मिल अति नली। थापना चारिज पांच ठवणी मुह पती पम्र पाटली । पट सूत्र पाटी पंचकोथल पंच नव कर वालियां । इण परै श्रावक करै पांचमि उजमणो उजवालियां ॥ १७ ॥ वलि देहरैरे स्नात्र महोत्छव कीजियै । घर सारूरे दानवली तिहां दीजियै । प्रतिमानैरे आगलि ढोवणो ढोइयै । पूजानारे जे जे उपगरण जोइयै । (उल्लालो) जोइयै उप गरण देव पूजा काज कलशान्नृंगार ए । आरती मङ्गल थालदीवो धूप धाणो सारए । घनसार केसर अगर सूकम्र अंगलुहणो दीसए । पंचपंच सगली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमीतारे साहमी सर्व जीमाम्रियै । रात्री जोगेरे गीत रसाल गवाडियै । इण करणीरे करतां न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम मारग साधियै । (उल्लालो) साधियै मारग एह करणी न्यान लहीये निरमलो । सुर लोकनें नरलोक माहें न्यान वंतते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी सासता सुख जेलहै । जे करै पांचमि तप अखंम्रित वीर जिणवर इम कहै ॥ १९ ॥

॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्ध मान जिणेसरो । मेंथुण्यो श्रीअरिहंत न्नगवंत अतुल वल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद सूरिजि सकल चंद नमुंसीयो । वाचना चारिज समय सुंदर न्नगति न्नाव प्रसंसीयो ॥ २० ॥ इति श्रीपंचमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी । निरमल पामो न्यानरे । पहिली न्याननैं पछे किरिया । नही कोई न्यान समानरे ॥ पां० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमें न्यान वखाण्यो । न्यानना पंच प्रकाररे । मति श्रुत अवधि अनें मन पर्यव । केवल न्यान श्रीकाररे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अठावीस श्रुति चवदैवीस । अवधि छ असंख प्रकाररे । दोय न्नेद मन पर्यव दाख्यो । केवल

एक प्रकाररे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेस्युं तेज आ कासरे । केवल न्यान समो नही कोई । लोका लोक प्रकासरे ॥ पां० ॥ ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीनें । महारीपूरो उमेदरे । समय सुंदर कहे इंणिपरे पामुं । न्याननो पंचमों नेदरे ॥ पां० ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नविका श्रीजिनविंब जूहारो ॥ आतम परम आधारोरे । (न विकाश्रीजि०) । जिनप्रतिमा जिनसारपी जाणो । नकरो संकाकाई । आगमवाणीनें अनुसारे । राखो प्रीत सवाईरे ॥ न० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंब स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें । नूला तेह अज्ञानें नरिया । नही तिहां तत्वपिछाणोरे ॥ न० श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा। रावण प्रमुख अनेक । विविध परें जिन नगति करंता । पाम्या धरम विवेकरे ॥ न० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा वहु नगते जोतां । होय निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटै पूरण । जोज्यो आद्र कुमाररे ॥ न० श्री०॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर । छे वहु जलधि मकार । तेदेखी वहुला मह्नादिक । पाम्या विरत प्रकाररे॥ न० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिन प्रतिमानो । प्रगटपणें अधिकार । सूरीयानसुर जिनवर पूज्या। राय पसेणी मकाररे ॥न० श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगे अहिंसादाखी । जिनपूज्यां जिनराज । एहवा आगम अरथमरोमी । करियै केम अकाजरे ॥ न० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रूपदी । जिनपूज्या मनरंगे । जोज्यो एहनो अरथ विचारी । छठे ग्याता अंगेरे ॥ न० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिनवर पूजा । कीधी चितथिर राखी । द्रव्य नाव विहुं नेदे कीनी । जीवा निगम ते साखीरे ॥ न० श्री०॥ ए ॥ इत्यादिक वहु आगम साखें । कोइ संका मति कर ज्यो । जिनप्रतिमा देखी नित नवलो । प्रेम घणो चित धर ज्योरे ॥ न० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रनुपासपसाये । सरधा हो ज्यो सवाई । श्रीजिनलान सुगुरु उपदेसैं । श्रीजिन चंद्र सवाई रे ॥ ११ ॥ न० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ६ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर । महिमा त्रिजग तुमारी । सांनल नें आयो तुमतीरे । जन्ममरण डुखवारो ॥ १ ॥ (सेवक अरज करेंछेहो

राज । अम्हनें सिवसुख आलो) ॥ (आंकणी) सङ्कोनां मनवंछित पूरो । चिंता सङ्कनी चूरो । एह विरुदछे राज तुह्मारो । किम राखो छो दूरो सेव०॥२॥ सेवकनें विल विलतो देखी । मनमें महिरन धरसो । करुणासागर किम कहवासो । ज्यो उपगार नकरसो ॥ सेव ॥ ३ ॥ लटपटनो हिव कामनही छे । परतिख दरसण दीजै । धुंवामें धीजुं नहीसाहिव । पेट पड्यां पतीजै ॥ से० ॥ ४ ॥ श्री संखेसर मंमण साहिव । वीनतम्ही अवधारो । कहे जिनहर्ष मयाकर मुझपर । भवसायरथी तारो ॥ सेवक ० ॥ ५ ॥ ※ ॥ इति श्री पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ※ ॥ ६ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जयकारी जिनराज । पुरसादाणीरे । वामासुत वरदाय । निरमलनाणीरे ॥ १ ॥ पांचकमल प्रभुअंग । निरुपम निरख्यारे । तीनकमल मुझ संग । आतमहरख्यारे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख । चंद लजाणूंरे । गगन भमें निसदीस । इम मन आणूरे ॥३॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयण विराजै रे । हृदय कमल सुविलास । थाल ज्युं छाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक । पंकज हास्यो रे । ततखिण निज संवास । जलमें धास्यो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार । श्रीजिन राया रे । साचै पुण्य संयोग । साहिव पायारे ॥ ६ ॥ प्रभु गुण अनुभव नीर । सांग सुरंगेरे । टाल्यो पातिक पंक । आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चौतीस । वदि वैशाखे रे । मनु हर पांचम दीस । सङ्क संघ साखें रे ॥ ८ ॥ नगर महेवा मांहि । पास जुहास्या रे । श्रीजिन चंद मुणिंद । वंछित सास्या रे ॥ ९ ॥ ※ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजै । गाजै गोम्ही पास । सेवा सारै जेहनी । सुर नर मन धरिय उलास ॥ १ ॥ सोभागी साहिव मेरावे । अरिहां सुग्यानी पास जिणंदावे । (आंकणी) सुंदर सूरति मूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक २ में पेखतां । मानुं नव नवी छवीय देखाय ॥ २ ॥ सोभागी० अ० ॥ भवडुख भंजण जनम निरंजन । खंजन नयन सुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा । माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी ऊं आयो वहनें । दे वहलो दीदार । प्रारथियां पहिडेनही । साहिवा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सोभागी० अ० । प्रभु

मुख चंद विलोकित हरखित। नाचत नयन चकोर। कमल हसै रवि देखनें। जिम जलधर आगम मोर ॥ सो० ॥ ५ ॥ किसकै हरि हर किसकै ब्रह्मा। किसकै दिलमें रांम। मेरै मनमें तूं वसै। साहिव सिव सुखनो गम ॥ सो० अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु। श्रीअश्वसेन नरेश। जनम पुरी वणारसी। धन धन कासीनो देस ॥ सो० अ०. ॥ ७ ॥ संवत सत्तरैसे वावीसै। वदि वैसाख वखाण। आठम दिन नलै नावसुं। मोरी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० अ० ॥ ८ ॥ सानिध कारी विघन निवारी। पर उपगारी पास। श्रीजिनचंद जुहारतां। मोरी सफलफली सहु आस ॥ सो० अ० ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ८ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) पाटो धरजी पाटीयै पधारो ए० ॥ सुणि २ सेत्रुंज गिरस्वामी। जगजीवन अंतरजामी। हुंतो अरजकरुं सिरनामी। कृपानिध वीनती अवधारो ॥ १ ॥ नवसायर पार उतारो। निज सेवक वानवधारो ॥ कृ०॥ प्रभु मूरति मोहन गारी। निरख्यां हरखे नरनारी। जाउं वारी हुं वार हजारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे। मुझ ऊपर महिर धरीजे। दिलरंजन दरसण दीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया। नव नवना पातिक टलिया। प्रभु जो मुझ सेमुख मिलिया ॥कृ०॥ ॥ ४ ॥ समस्यां संकट टलि जायै। नव नव नित मंगल थायै। मुझ आतम पुण्य नरायै। कृ० ५ ॥ कर जोमी वीनति कीजे। केसर चंदन चरचीजै। दिन धन धन तेह गिणी जै ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहितोरो। अति हरखित हुवो चित्त मोरो। जिम दीठां चंद चकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचमे आरे। विसमा नय संकट वारे। सहु सेवक काज सुधारे ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई। कमणा न रहे घर काई। वाधे संपति सोभ सवाई ॥ कृ० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंवर चंदा। नव जन मन नयण आणंदा। ओलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ कृ०॥ ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिणंदा। महसम धर परम आणंदा। वंदे श्रीजिन नक्ति सूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ इति श्री ऋषभ देवजी स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजी। कवण कनक फल खाय।

गयवर वांध्यो वारणेंजी । खर किम आवैदाय ॥ १ ॥ विमल जिन माहरे तुह्मसुं प्रीति । सुर सकलंकित सुं मिल्यां जी । हीयडो हीसे केम ॥ वि० २॥ ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लहीजी । कुणखल खावा जाय । आदर साहिब नो लहीजी । कुणल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाच छते कुण काचनें जी । अलव पसारै हाथ । कुण सुरतरु थी ऊठिनें जी । वांवल घाले वाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी । तो प्रभु तुमची आण । श्री जिनराज नवो नवैजी । तुंहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ ए ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पास जिनेसर जगति लोए । गवडी पुर मंमण गुण निलो ए । तवन करिस प्रभु ताहरो ए । मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नाम वणारसि ए । सुर नयरी जिन रिद्धै वसी ए । तेण पुरीछैं दीपतो ए । अस्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसुघरि नार ए । तसु गुणहि नलखै पार ए । तासु नयर अवतार ए । तसु अतिसय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्याए । अनुक्रम करि तेसहु मन ग्रह्याए । पूछै भूपतिनें कह्याए । करजोमि कह्या जे जिम लह्याए ॥ ४ ॥ (ढाल २) । प्रथम सुपनगज निरख्यो । मायतणोमन हरख्यो । वीजै वृषभ उदार । धरणी जिण धस्यो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान । जसुबल कोयनमान । चउथैं देखी श्री देवी । कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमै पुष्फनी माला । पंचवरण सुविशाला । छठे दीठोएचंद । ग्रहगण केरोएइंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार । दूरकियो अंधकार । आठमें धजलह कंती । वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ । भरियो निरमल अंभ । देखि सरोवर दसमें । मनह थयो अति विशमें ॥ ए ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें । खीर जलधि जसु नामें । वारम देव विमान । वाजित्र ध्वनि गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी राशि । दहदिसि ज्योति प्रकाशि । सुपन चवदमें ए दीठो । पावक धूमथी मीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार । हरख्यो भूपउदार । पुत्ररतन होस्यै ताहरै । थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥ (दुहा) चवदसुपन श्रवणेसुणी । हरषकियो सुविचार । सुंदर सुत तुमे जनमस्यो । कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामाप्रीतम वचन सुणि । आवी मंदर भत्ति । देव सुगु

रुकीरत करी । जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रमि क्रम्यो दिवस कीधा सुपन विचार । ते घरि पजता आपणे । दीधा दान अपार ॥ १५ ॥ (ढाल) ३ ॥※॥ हिवजनम्या जगगुरु जगत्रजत्त जयकार । खिण इकनार कियें पायो सुक्ख अपार । दिशिकमरी मिलकर सूत्रकरम निशिकीध । करि थानक पुहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निशि चौसठ इंद्रमिली तिहां आवें । लेई निज न्नगते सुरगिर स्नात्र करावें । करि जनम महोत्व जननी पासे ठवें । तिहांथी सुर सवमिली दीप नंदीसर जावे ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी क्रमो दिवस उदार । घर२ गाइजे कीजे मङ्गलच्यार । इग्यारम दिवसे मिली सहू परिवार । तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥ १८ ॥ प्रन्नु वाधे दिन २ कलाकरी जिम चंद । त्रिहुं न्यान विराजित रूप जिसो देविंद । गुणकला विचक्षण विद्या तणोय निधान । योवन वय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥ (ढाल ४) ॥ ※ ॥ कुमर पदे प्रन्नु रहितां काल सुखें गमें ए । आयो मन वैराग संयम लेवासमें ए । तव लो गंतिय देव जणावें अवसरू ए । देई संवच्छरी दान याचक जन सुख करू ए ॥ २० ॥ स्वामी संयमलेइ इंद्रादिक सव मिल्या ए । देश विदेश विहार करी क्रम निरदल्या ए । पामीय केवल न्यान सुरें महिमा करी ए । थापिय चउविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥ (ढाल) ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥ इम श्रीगोंडी पास तणा गुण जे नर गावें । ते नर नारी इह पर लोगसु वंछित पावे । संघ करी संघ पत्ति जिके गवमी पुर जावें । चोर धाड संकट टलें विघन बुराई न आवे ॥ २ ॥ धरणराय पउमावइ जास वहे सिर आण । सांवल वरण सुशोन्नित नवकर काय प्रमाण । कल्पवृक्ष चिन्तामणि काम गवी सम तोले । श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण परिवोले ॥ २३) इति श्री पार्श्व जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग सिंधू ॥ पूजानो तूं वे परवाही । ते समता गाढी करि साही । राही जिम तुझ आण आराही । पूरेतो पूरी पति साही ॥ १ ॥ तेसाची सेवा विधि जाणी । न्नूला न्नमें अवर सवि प्राणी । मन सुध आराधे तुझ वाणी । तो संतोपी जे आफाणी ॥ २ ॥ देखेएक वचन उत्थापें । तेतो पिंम न्नरी जे पापें । नाम जपे परमेसर जापे । तुंकिम केहनो

पातक कापै ॥ ३ ॥ भगति जुगतिनो पहिलो पार । मइं लाधउ जिनवर निरधार । जिण तुझ काइन लोपीकार। तिणतो भगति करी सोवार ॥४॥ नाथ अनंत तणो जिनराज । लाधो मान सहीमें आज । आगमनें वचनें जिनराज । चालै तो दै सिवपुर राज ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री अनंत जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समवसरण वैठा भगवंत । धरम प्रकासै श्री अरिहंत । वारे परषदा वैठी जुडी । मिगसर सुदि इग्यारस वम्ही ॥ १ ॥ मल्लिनाथना ती न कल्याण । जनम दिक्षानें केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी रूवम्ही ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर धान । ए तिथिनी महिमा ए वम्ही ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इम हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संख्या परगम्ही ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै तेम । कुण तिथछै एतिथ जे वम्ही ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि गिणो । लाभ अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखम्ही ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम व्रत सा थ । मोनतणी परि व्रत इम पम्ही ॥ मि०॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै। चौविहार विधसुं कीजी यै । पिण परमादन कीजै घम्ही ॥ मि०॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोक्ष त णी पावम्ही ॥ मि० ए ॥ उजमणो कीजै श्रीकार । न्यानना उप गरण इ ग्यार २ ॥ करो काउसग्ग गुरुपाये पम्ही ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै ढूकम्ही ॥ मि० ॥ ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । व्रत पच्चक्खा ण करो आखम्ही ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू मन गमैं । समय सुंदर कहे करो द्याहम्ही ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्णं ॥ ११ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुंमेरे मनमें प्रभु तुंमेरे दिलमें ध्यान धरुं पल २ में । पास जिणेसर अन्तर जामी । सेवकरुं छिन २ में ॥ (तुं० (१ ॥ काहू को मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रभु तुमहीसुं रा

च्यो । ज्युं चातक चितघनमें । (तुं०२) जोगीसर तेरी गति जाणें । अलख निरंजण तिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन न्नवनमें ॥ (तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ मोरा साहिब हो श्री सीतलनाथकि । वीनती सुणो इकमोरमी । डुख न्नांजे हो जग दीन दयाल कि । वात सुणीमें तोरमी ॥ १ ॥ (मो०) तिण तोरैहो ढुं आयो पासकि । मुऊ मन आस्या ठे घणी । कर जोडी हो कहुं मननी वातकि । तुं सुणि जे त्रिन्नुवन धणी ॥ २ ॥ (मो०) ढुं न्नमियोहो न्नव समुद्र मऊार कि । डुक्ख अनंता में सह्या । ते जाणें हो तुं हीज जिन राज कि । में किमजायें ते कह्या ॥ ३ ॥ (मो०) न्नाग जोगें हो तोरो श्री न्नगवंत कि । दरसण नयणे निरखियो । मन मान्यो हो मोरै तुं अरिहंत कि । हियमो हेजें हरखियो ॥ ४ ॥ (मो०) एक निश्चै हो में कीधो आज कि । तुऊ विण देव बीजो नही । चिंतामणि हो जो पायो रतन्न कि । काच ग्रहै कहो कुण सही ॥ ५ ॥ (मो०) पंचामृतहो जिण न्नोजन कीध कि । खल खायवा मनकिम थीयें । कंठ तांइहो जो अमृत पीधतो । खारो जल कहो कुण पीयें ॥ ६ ॥ (मो०) मोतीकोहो जो पहस्यो हारकि । चिरमठि कुण पहिरै हीयें । जसु गांठें हो लाख कोडि गरस्य कि । व्याज काढी दाम कुण लीयें ॥ ७ ॥ (मो०) घर मांहें हो जो प्रगट्यो निधानतो । देस देसांतर कुण न्नमें । सोना नोहो जो पोरसो सीधतो । धातुरवादी कुण धमें ॥ ८ ॥ (मो०) जिण कीधो हो जवहर व्यापार कि । मणि हारी मन किम गमें । जिण कीधो हो सदा हाल ऊकम्म कि । ते तूं कारो किम खमें ॥ ९ ॥ (मो०) तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । ढुं सेवक प्रन्नु ताहरो । मुऊ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । न्नव डुख न्नागो माहरो ॥ १० ॥ (मो०) तुऊ मूरति हो देखंता प्राय कि । समवसरण मुऊ संन्नरे । जिन प्रतिमा हो जिन सरिषी जाण कि । मूरख जे सांसो करे ॥ ११ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुऊ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरमा । तुह्म नामें हो मोरा पाप पुलाय कि । जिम दिन ऊगें चोरमा ॥ २ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुऊ मन त्तरंग कि । मेह आगम जिम मोरमा । तुह्म नामें

हो सुख संपति थाय कि । मन वंछित फल मोरड़ा ॥ १३ ॥ (मो०) हुं मांगुं हो हिव अविहड़ प्रेम कि । नित नित करूं निहोरड़ा । मुझ दे ज्यो हो स्वामी भव भव सेव कि । चरण न छोड़ुं तोरड़ा ॥ १४ ॥ (मो०) कलश ॥ इम अमर सर पुर संघ सुख कर मात नंदा नन्दनो । सकलाप शी तल नाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवच्छ लंछन वरण कंचन रूप सुंदर सोह ए । एतवन कीधो समय सुंदर सुणित जनमन मोहए ॥ १५ ॥ इति श्री शीतल नाथ जिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ☸ ॥ ॥ ☸ ॥

॥ ☸ ॥ अथ ८४ आसातना स्तवन लि० ॥ ☸ ॥

॥ ☸ ॥ (ढाल) विलसै ऋद्धिनी ॥ जय २ जिण पास जगत्र धणी । सोभा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी । करिवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन २ जे न पड़ै जंजालै । उपयोग सुं वैसे जिन आलै । आसातना चउरासी टालै । सास्वता सुख ते हीज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेखम जिन हरमें । कलह करै गाली जूयरमें । धनुषादि कला सीखण ढूकै । कुरलो तंबोल भखै थूकै ॥ ३ ॥ सुरै वायवड़ी लघु नीत तणी । संज्ञा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया । चांदीनी नाखे चांवड़िया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीयै कावो । खावे धांणी फुली खावो । सूवै वेसामण विसरावै । अज गज पसुनें दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखै । नख गाल वपुषना मल नाखै । मिलणो लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो करि धन धरणो ॥ ६ ॥ वेसै पग ऊपरि पग चढियां । थापै छांणा छड़े ढूंढणीयां । सूकवै कप्पड़ पप्पड़ व ड़ियां । नासीय छिपै नृपभय पड़ियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहै । इहां संख्या वेतालीस लहै । हथियार घड़ेनें पशु बांधे । तापे नांणों प रखेरांधै ॥ ८ ॥ भांजी निसही जिन गृह पेसै । धरे छत्रनें मंड़पमें वेसै । पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर वीजैं मनठाम नही ॥ ९ ॥ तनु तेल सचित्त फल फूल लीये । भूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि नधरे । इग साड़ै उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ छोगो सिर पेच मोड़ जो ड़ै । दड़िये रमनें वैसे होड़ै । सयणांसुं जुहार करै मुजरो । करै भंड़ चेष्टा

कहै वचन वुरो ॥ ११ ॥ धरे धरणो ऊगमे उलंठी । सिर गुंथै वांधे पालं ठी । पसारे पग पहरे चाखमीयां । पग ऊटक दिरावे डर वमीयां ॥ १२ ॥ कर दम लूहे मैथुन मंमे । जूआं वलि ऑठ तिहां ठंमे । उयाडे गुझ करे वयदां । काढे व्यापार तणी कयदां ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीरधरे । अंघोले पीवा गाम भरे । दूषण जिन भवनमें एदाख्या । देव वंदण भाष्यमें जे भाष्या ॥ १४ ॥ सुझानी श्रावक सगतिठतां । आसातन टाले वार सतां । परमाद वसे कोई थायै । आलोयां पाप सहूजायै ॥ १५ ॥ तंवोल नें भोजन पान जूआ । मलमूत्र सयन स्त्री भोग कुआ । भूषण पनही ए जघन्य दसे । वरज्या जिन मंदिर मांहिवसे ॥ १६ ॥ द्रव्यतनें भावत दोय पूजा । ए हनाहिज भेदकह्या दूजा । सेवा प्रभुनी मन सुध्द करै । वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ (कलश) ॥ ※ ॥ इम भव्यप्राणी भाव आणी विवेकी शुभ वातना । जिन विंव अरचै परी वरजै चोरासी आसातना । ते गोत्र तीर्थ कर उपार्जे नमें जेहनें केवली । भव झाय श्री धमसीह वंदै जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रीचौरासी आसातना स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ २४ जिनदेहमान स्तवन लिख्यते ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय । धनुष पांचसै ऊंचीकाय । वीजो अजित जिन मुझ मन वसै । मान धनुप साढाच्यारसे ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार । ऊंची काय धनुष सोच्यार । अभिनंदन जिनसुं मनलीन । देह धनुपसो साढा तीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ भगवान । धनुष तीनसो देहीमान । पदम प्रभू पूरे मन आस । देह धनुप दोयसे पंचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय । देह प्रमाण धनुपसो दोय । चंद्रा प्रभु जिन मुझ मन वसै । देह प्रमाण धनुप दोढसे ॥ ४ ॥ सुविध नाथ नमियै सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुपसो एक । शीतल नाथ नमें जगसवे । देह प्रमाण धनुप जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रियांस नमुं ऊलसी । ऊंच प्रमाण धनुप तनु असी । वासपूज्य वारम जिन चंद । मान धनुप सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकरि गंभीर । साठि धनुप जसुमान सरीर ।

अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास । देह प्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम ध रमनाथ जगदीस । मान धनुष जसु पंतालीस । शांति करण सोलम जिन शांति । देह धनुष चालीस सोम्नंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार। मान धनुष पंत्रीस उदार । अर अठारम दीन दयाल । त्रीस धनुष तनु अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि नाथ जिन उगुणीसमो । मान पचीस धनुष पय नमो । बीसम मुनिसुब्रत अरिहंत । वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमि जिन राजान । धनुष पनरै तनु रूप निधान । बावीसम श्रीने मि जिणंद । दस धनु दीपै जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारस नाथ । नील वरण सोहै नव हाथ । चोवीसमा जिनवर श्रीवीर । सात हाथ जगना थ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगी स । तांघर रिद्धि सिद्धि उछरंग । रंगविनें प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ ॥※॥

इति श्रीचोवीस जिन देह मान स्तवनं॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ २४ जिन आयुप्रमाण स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय । लाख चोराशी पूरब आय । बीजो अजित जसु सूत्रै साख । आउ बहुत्तर पूरबलाख॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो । आउलाख पूरब साठिरो । अभिनंदन पूरै मन आस । आउला ख पूरब पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आउ लाख पूरब चालीस । श्रीपदम प्रभूनी ए थितिजाण । लाख तीस पूरब परि माण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्श्व लख पूरब वीस । दस लख पूरब चंद प्रभु ईस । सुविध नाथ लख पूरब दोय । इक लख पूरब शीतल थिति होय ॥ ४ ॥ आउ वरस चोरासी लाख । श्रीश्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर व रसां तणो । वासु पुज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आउ लख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लख तीस । लाखवरस दस धरम दिणंद । ला ख वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवै । श्रीकुंथु ना थ तणीसंभवै । सहस चोरासी अर जिनतणी । मल्लि सहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनिसुब्रत परमाउ उदार । वी स सहस नमिजिन थिति भणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास

वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । ऋषन्न तणा तैरे अवतारं । सात चंद्र संतीसर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत न्नव नव नव नेमीस । पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं न्नव सतरै जगदीस । सगला न्नव एकसो अम्तीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही सहुनें धन धन्न । गणधर चवदे से बावन्न । सहुनें मुनि लख अगवीस । सहस ऊपरें अम्तालीस॥११॥ लाख चमाल ब्यांल हजार । षडधिक सहु साधवी सोच्यार । श्रावक ला ख पचावन धुरै । अम्तालीस सहस ऊपरें ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका सुजगीस । लाख पांच सहस अम्तीस । ए संघ चतुर्विध सहु जिन त णों । रंगविनें प्रणमें हित घणों ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रीचोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ६३ सिलाका पुरुष स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल१) धरम महारथ सारथि सारं । एचाल ॥ ※ ॥ सदगुरु चरणकमल मनधारं । त्रेसठ उत्तम नरअधिकारं । पन्नणसु श्रुत अनुसारं । जेहनें नाम लिये निसतारं । आपण सफलहुवै अवतारं । पामी जै न्नव पारं ॥१॥ ऋषन्न अजित संन्नव अन्निनंदन । सुमति पदम प्रन्नु नयना नंदन सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रन्नुनें सुविध सीतल जिन । श्रेयांस वासपूज्य जिण सुरमणि । विमलगुणें करवास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि । पार्श्व वीरए जिन चोवीस जगवन्नल जगगुरु जगदीस । प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥ (ढाल २) प्रथ म सुपनगज निरख्यो एचाल ॥ ※ ॥ प्रथम न्नरतनर इंद्र । वीजो सगरसु रिंद । मघवा तीजो उदार । चोथो सनत्कुमार ॥४॥ पांचम सांति चक्कीस । बठो कुंथु गणीस । सातमो अर नरनाथ । आठम संन्नूमि सनाथ ॥ ५ ॥ न वमो पदमनरेस । हरपेण दसम कहेस । इग्यारम जय ताम । बारम ब्रह्म दत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार । खेत्रन्नरत सिणगार । मघवा सनत कुमार । पुहता स्वरग मझार ॥ ७ ॥ सुन्नुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय निरत्त । आठ थया सिवगामी । तेप्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥ (ढाल३) ॥※॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥ ※ ॥ पहिलो त्रिपष्ट जाण । द्विप्रष्ट दूसरो

तीजो स्वयं प्रन्नु जाणीयै ए । पुरषोत्तम ए चोथो । पंचम परगमो । पुरुष सिंह प्रमाणीयै ए ॥ ए ॥ बठो पुरुष पुंमरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्म ण नामें आठमोए । नवमो कृष्णनरेस । एनव केसवा । प्रहकठी ए पिण नमुंए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी सातमी । आगला पंच बठी गयाए । सातमो पंचम नेर । चोथी आठमो । नवमो तीजी नारीयाए॥ ११॥ अचल विजयनें न्नद्र । सुप्रन्नु सुदर्सण । आनंद नंदन सुन्नमतीए । रामचंद्र बलन्नद्र । वलदेव एनव । आठ थया तिहां सिवगती ए ॥ १२॥ वलन्नद्र ब्रह्म देवलोक । काल उसप्पणी । जास्यै सिवकृष्ण सासणेंए । अथवा ति पुलाक नाम। तीर्थंकर होस्यै । चवदमो इम वहुश्रुत न्नणेंए ॥ १३ ॥ (ढाल) कुमर पणें प्रन्नु रहतां काल सुखे गमेंए एचाल ॥ ※॥ अस्वग्रीवनें तारक मेरुक वलि मधु तिसा ए । निशुंन्न बलय प्रल्हाद रावण जरासिंधु जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण न्नाव जि णेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफल संसारनी ॥ ※ ॥ सां तिनें कुंथु अरि एहन्नव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही । बीर वासुदेव अरिहंत न्नव जू जूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुण सठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय वलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नवएण ले खे बता । तीन चक्रधर तणा मिलिय बारै टल्या । एम त्रेसठना तात इक वन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र व्रत तणी टाल दीजै जिसै । माय सत्ता‌वनी थई साठ लेखै इसै। एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरै । तेह सुर पद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥ (कलश) इम थुण्या तीर्थंकर चक्कीसर वासु देव वलदेव ए । प्रति वासुदेव सुसेवजेहनी करै सुर नर सेव ए । त्रेसठ सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंता सदा । प्रहसमें तेहना चरण पंकज नमें मुनि वसतो मुदा ॥१८॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरष स्तवनं ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※॥ अथ अजितशांतिजिनस्तवन लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ मंगल कमला कंदए । सुखसागर पूनिमचंदए । जगगुरुं अजि य जिणंदए । शांतीसर नयणानंदए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेवए । बि हुं गुणगाइस संखेवए । पुण्य न्नंमार न्नरेसए । मानवन्नव सफल करेसए

॥ २ ॥ कोमहि लाखपचासए । सागर जिणसासण न्नासए । रिसहजिणे सर वंसए । नवझाय सरोवर हंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए । राजा जितशत्रु जग गाजीयोए । विजया तसुवर नारए । विकं रमयति पासासारए ॥४॥ कूखहि जिन अवतारए । तिणराय मनाव्योहारए । उयरव स्यो दसमासए । प्रन्नु पूरी जणणी आसए ॥ ५ ॥ विक्कं जण मन आणंदी योए । सुतनाम अजिअ जिण तो दीयोए । तिकुअण सयल नन्नाहए । क्रम क्रम वाधै जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारस तणीए । गति सुललित नि जगति निरजणीए । मलपति चालै गैलए । जाणें नयण अमीरस रेलए ॥७॥ अवरन समो संसारए । वलि न्यान विवेक विचारए । गुणदेखी गज गहगह्योए । लंठण मिसि पगलागी रह्योए ॥८॥ जोवनवय जव आवीयोए । तव वररमणी परिणावियोए । पीयसाधै सव काजए । प्रन्नु पालै पुहवीराजए. ॥९॥ हिव हथणाउर गामए । विश्वसेण नरेसर नामए । राणी अचिरा देवए । मनहर सुखमाणै वेवए ॥१०॥ चवदह सुपनें परवस्योए । अचिरा उयरे सुत अवतस्योए । मानवदेव वखांणीयोए । चक्कीसर जिणवर जाणीयोए ॥ ११ ॥ देस नयर कुइ संतए । तिणनाम दीयो सिरि शांतए । जिणगुण कुण जाणें कहीए । तिक्कं नुवणे तसु उपमानहीए ॥१२॥ नयण सलूणो हिरणलोए । वनसिंचे वीहै एकलोए । नयण समाधि निरोधए । इणनयणे नारिविरोधए ॥ १३ ॥ गीतही राग सुरंगए । पिण पन्नणें लोक कुरंगए । तो उलग्यो शशि संकए । तिणपाम्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपर मृग अति खल न्नल्योए । न्नयन्नंजण स्वामी सांनल्योए । आणंदीयो मनआपणोए । पा यसेवें मिस लंठण तणोए ॥१५॥ लीलापति परणें घणीए । नव नवीय कु मरि रायां तणीए । वल उल अरियण जोगवैए । पीयराय न्नलीपर न्नोगवैए ॥१६॥ कुमरतणें मंमल समेंए । पंचाससहस वरसां गमेंए । तौतेजै दिणयर जिसोए । ऊपन्नो चक्करयण तिसोए ॥१७॥ साधी न्नरह उहखंमए । वरतावी आंण अखंमए । चवदरयण नवनिहि सहीए । वसु सोलसहस जक्खै अही ए ॥ १८ ॥ सहसवकुत्तर पुरवराए । वत्तीस मौमवद्ध नरवराए । पायक गामें कोमए । ग्निवें नमें वेकरजोमए ॥१९॥ हय गय रह वर जूजुवाए । लखचौरा सी मंदिर क्कवाए । लाख त्रि वाजित्र घम घमेंए । वत्तीस सहस नाटक रमेंए ।

॥२०॥ रूपजिसी सुरसुंदरीए। लक्षण लावन्य लीला नरीए। जंगम सौहग देहरीए। इसी चौसठसहस अंतेउरीए॥ २१॥ अवरज रिद्धि प्रकारए। मणि कंचण रयण नंमारए। ते कहिवा कुण जाणए। वपु वपुरे पुण्य प्रमाणए॥ २२॥ इम चक्कीसर पंचमोए। चौथो दूसमशूशम समोए। वरस सहस पचवीसए। सवपूरी मनह जगीसए॥ २३॥ इणपरि विङ्क तिर्थंकराए। चिरपाली राज विविहपराए। जाणी अवसर सारए। विङ्क लीधौ संजमनारए॥ २४॥ विङ्क खमदम धीरम धरीए। विङ्क मोह मयण मद परहरीए। विङ्क जिणझाण समाणए। विङ्क पाम्यो केवलनाणए॥ २५॥ विङ्क देवहि कोमहि महिय। बिङ्क चौतीसे अतिसय सहिय। समवसरण बिङ्कंगणए। विङ्क जोयणवांणि वखांणए॥ २६॥ नाचे रणकत नेउरीए। बिङ्क आगलि इंद्र अंतेउरीए। टिग मिग जोवै जग सङ्कए रंगहि गुणगावै सुरवङ्कए॥२७॥ विङ्कसिर छत्र चमर विमल। विङ्क पगतल नव सोवन कमल। विहु जिन तणें विहारए। नविरोग नसोग नमारिए॥ २८॥ विङ्क उवयार भुवणनरीए। विङ्क सिद्धि रमणि सयंवरीए। विङ्क भंजी भवकंदए। बिङ्क उदयो परमाणंदए॥२९॥ इम वीजोनें सोलमोए। जांणे चिंतामणि सुरतरुसमोए। थुणिअ तिसंझ विहाणए। तिहां इह परिभव नवि हाणए॥ ३०॥ विङ्क उछव मंगलकरण। विङ्क संघसयल डुरियहरण। बिङ्क वरकमल वयण नयण। बिङ्क श्री जिनराय भुवण रयण॥ ३१॥ इमभगतै भोलिमतणीए। श्रीअजिय शांति जिण थुइ भणीए। सरण बिङ्क जिणपायए। सिरि मेरुनंदन उवझायए॥ ३२॥ इति श्री अजित शांतिजिन वृद्धस्तवन संपूर्णम्॥ ☼॥

॥☼॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवन॥☼॥

॥☼॥ (ढाल कपूर हुवे अति ऊजलोरे एचाल)॥☼॥ वरधमान जिनवर तणाजी। चरण नमुं चितलाय। ग्यान क्रिया जिण उपदिसै जी। शिव सुखतणो उपाय॥ १॥ (भविक जन धर श्रीजिन उपदेस। बूटे कर्म कलेस भ०)॥ पडिलेहण मुहपति तणीजी। भाषीछै पचवीस। तिहां एभाव विचारीयै जी। इम भाषै जगदीस॥ २॥ (भ०) प्रथम बेपास

विलोकिये जी । सूत्र अरथनी दृष्टि । एपमिलेहण दृष्टिनी जी । करे ध र्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ (ज०) समकित मिथ्या मिश्रनीजी । मोहनी तीन नो त्याग । कामराग स्नेहराग नें जी । तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ (ज०) सीव वधू तक गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाउ । नव अखो मा आदरो जी । नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ (ज०) देव तत्व गुरु तत्व सुं जी । धर्म तत्व गृह सार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तीन तणो परिहार ॥ ६ ॥ (ज०) ग्यान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार । तजो विराधन तीन एजी । एह अरथ अवधार ॥ ७ ॥ (ज०) मन वच कायानी सदाजी । गुपति गृही जे सुद्ध । परिहरीये वलि जाणनें जी । तीने दंम विसुद्ध ॥ ८ ॥ (ज०) पमिलेहण पचवीसए जी । मुह पत्ती नी सार । हिव पमिलेहण अंगनी जी । ते पिण चतुर विचार ॥ ए ॥ (ज०) हास्य अरति रति दोयनें जी । सुद्ध करो वाम वांह । तजि जय शोक डुगंछना जी । दक्षिण पिण करे साह ॥ १० ॥ (ज०) धुरली ले श्या तीन एजी । ते शिर थी करि दूर । रिद्धि रस शाता गारवो जी । करि मुख थी चकचूर ॥ ११ ॥ (ज०) काढ सल्य तीन उर थकी जी । माया नियाण मिथ्यात । च्यार कषाय वे वगलथी जी । क्रोधादिक करिघात ॥१२॥ (ज०) तज खटकाय विराधना जी । चरण विएहे सुद्ध होय । ए पमिले हण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ १३ ॥ (ज०) इम पडिलेहण जे करे जी । धर मन ग्यान विवेक । सकल करम दूरे करे जी । पामें सुक्ख अनेक ॥ १४ ॥ (ज० कलश) इम वीरजिणवर तणा मुख थी अरथ गण धर सांजली । कहे सूत्र वाणी मन सुहाणी सुणो जविराण मन रली । उव झाय वर सिरि लब्धकीरति मुख थकी ए संग्रही । मुंह पती पमिलेहण तणी विधि लब्धि वल्लभ गणि कही ॥ १५ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रीमुह पत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सिद्धगिरी स्तवन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो । आदीसर अरिहंत । जुगला धर म निवारणो । जयजंजण जगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुझ मन कलट अति

घणो (रे) सोदिन सफल गिणेस। स्वामी श्रीरिसहे सरू। जव नयणे निरखेस ॥ २ ॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता। साधु तणें परिवार। आदि जिणंद समोसख्या। पूरव निनांणूंवार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अचरा विजया नंदनें। जग बंधव जगतात। इण गिरि चउमासै रह्या। थिवर कहै ए वात ॥ ४ ॥ श्री० ॥ पामें शिव सुख सासता। गणधर श्री पुंमरीक। पुंमरगिरि तिण कारणें। नगति करो निर नीक ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नमिनें विनमि सहोदरू। विद्याधर वलवंत। सेत्रुंज सिखर समोसख्या। जे गरुवा गुणवंत ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावच्चा मुनिवर सुक। सहस २ परिवार। पंथग वयणे जागीयो। सो सेलग अणगार ॥ ७ ॥ श्री०॥ पांमव पांच महावली। सुणी जादव निरवाण। ते सीधा सिद्धा चलै। सुर नर करै वखांण ॥ ८॥ श्री० ॥ इम सीधा इणडूंगरै। मुनिवर कोडा कोडि। पाज चढंता सांन्रै। ते प्रणमुं कर जोडि ॥ ए ॥ श्री० ॥ जे वाघणि प्रति बूऊवी। ते दरवाजै जोय। गोमुख यक्ष कवड मिली। सानिध कारी होय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जे विधसुं यात्रा करै। सुर नर सेवकतास। राज समुद्र गुण गावतां। अविचल लीलविलास ॥ ११ ॥ श्री० ॥ ॥※॥ ॥※॥

इति सेत्रुंजय स्तवनं ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ श्री रिषन्न जिनेसर स्तवन लि० ॥※॥

॥※॥ ऋषन्न जिनेसर दिनकर साहिव। वीनतडी अवधारोरे ॥ (जगनातारू। मुऊ तारोजी कृपा निधि स्वामी) ॥ जग जसवाद प्रगटछै ताहरो। अविचल सुख दातारोरे ॥ ज०॥ १ मु०॥ निजगुण नोक्ता पर गुण लोता। आतम सगति जगायारे ॥ ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी शिववासी जिन रायारे ॥ ज० ॥ २ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी। ऊं तुम चरणे आयोरे ॥ ज०॥ तुम रीऊावण हेतै ततखिण। नाटक खेलम चायोरे ॥ ज० ॥ ३ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री। तरु साधारण पामीरे ॥ ज०॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री। वेषधख्या डुख धामीरे॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वलि नरक तणीगति। पंचेंद्रीपणो धाख्योरे ज० ॥ चोवीसे दंमक मांहि न्रमियो। अबतो ऊं पिण हाख्योरे ॥ ज०५॥

मु० ॥ नवनाटक नितकरतो नवनव । ऊं तुऊ आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिषो । निरखी तुऊनें जाच्योरे ॥ ज० ॥६॥मु०॥ जो मुऊ नाटक देखी रीऊया । तो मुऊ वंछित दीजेरे ॥ ज० ॥ जो नविरी ऊया तो मुऊ नापो । वलि नाटक नवि कीजेरे ॥ ज०॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हुं सेवा सारुं । तुं डुखडा नविकापैरे ॥ ज० ॥ दातासेती सूंवभलेरो । वहिलो ऊतर आपैरे ॥ ज० ८ मु० ॥ तुऊ सरिखा साहिब पिण महारो । जो नवि कारज सारोरे ॥ ज० ॥ तो मुऊ करम तणी गति अवली । दोस नकोई तुमारोरे ॥ ज० ए मु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजै । सुध समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो । तेहीजगुण मणिखाणीरे ॥ ज० १० मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसै । ज्येष्टसुदी सोमवारेरे ॥ज०॥ लालचंद प्रतिपददिन नेव्या । बीकानेर मऊारोरे ॥ ज०११ मु० ॥ ॥※॥ इति श्री ऋषभ देवजी स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ श्री महावीर वीनती लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ वीर सुणो मोरी वीनती । कर जोमीहो कऊं मननी वात । बालकनी परिवीनवुं । मोरा सामीहो तूं त्रिभुवन तात॥१॥ वी०॥ तुम दरसण विण ऊं नम्यो । नव मांहेहो सामी समुद्र मऊार । डुक्ख अनंता मैं सह्या । ते कहितांहो किमआवे पार ॥ २ वी०॥ पर उपगारी तुंप्रनु । डुखनांजेंहो जग दीनदयाल । तिणतोरे चरणें ऊं आवीयो । सामी मुऊनेंहो निज नयण निहाल ॥ ३ वी० ॥ अपराधी पिण ऊधस्या । तें कीधीहो करुणा मोरासाम । ऊं तो परम नगत ताहरो । तिणतारोहो नहीं ढीलनों काम ॥ ४ वी० ॥ शूलपाणि प्रति बूऊव्या। जिण कीधाहो तुऊनें उपसर्ग । मंक दीयो चंमकोसीये । तें दीधोहो तसु आठमोसर्ग । ५ ॥ वी० ॥ गोशालो गुनही घणुं। जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद। ते वलतो तें राखीयो । सीतलेस्याहो मूंकी सुमसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ ए कुणठे इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आयो तुमतीर । ते गोतमनें तें कीयो । पोतानोहो प्रनुतानो वजीर ॥ ७ ॥ वी० ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा । जे ऊगड्योहो तुऊसाथ जमाल । तेहनें पिण पनरे नवे । सिव गामीहो तें कीधो कृपाल ॥८॥ वी०॥ अैमत्तो रिषि

जेरम्यो । जल मांहेंहो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूंकी काचली । तें तास्यो हो तेहनें ततकाल ॥ ए ॥ वी० ॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो । चितचूकोहो चारि तणी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ १० ॥ वी० ॥ वार वरस वेस्याघरे । रह्यो मुंकीहो संयमनोभार । नंदखेण पिण ऊधस्यो । सुर पदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्र हवासैहो बसिया वरस चौवीस । ते पिण आद्रकुमारनें । तें तास्यो हो तोरी एह जगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा । रूप देखीहो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी । तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ विरत नही नही आखमी । नही पोसोहो नंही आदर दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधोहो सामी आ पसरीख ॥ १४ ॥ वी० ॥ इम अनेक तें ऊधस्या । कहुं तोराहो केता अवदात । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेंहो आणो मोरभी वात ॥ १५ ॥ वी० ॥ सूधो संजम नविपलै । नही तेहवोहो मुझ दरसण नाण । पिण आधारछै एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेह महीतल वरसतो । नविजोवैहो सम विखमी ठाम । गरुआ सहिजे गुण क रै । स्वामी सारो हो मोरा वंछित काम ॥ १७ ॥ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा । तुम नामें हो दुख जायै दूर । तुम नामें वंछित फलै । तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ (कलश) ॥ ※ ॥ इम नगर जेशलमेर मंभ ण तीर्थंकर चौवीसमो । सासना धीसर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समो । जिणचंद त्रिसला मात नंदन सकल चंद कला निलो । वाचना चारज स मय सुंदर संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री महावीर जिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चोवीस दंडक स्तवन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (ढाल आदर जीव क्षमागुण आदर) एचाल ॥ ※ ॥ पूर म नोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारण तरण विरुद तुझ सांभ लि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ (पू०) इण संसार समुद्र अथागै भमियो भवजल मांहि जी । गिल गिचिया जिम आयो गिडतो । साहिब

हाथे साहिजी ॥ २ ॥ (पू०) तुं ग्यानीतो पिण तुऊ आगें । वीतक कहीयै वात जी । चौवीसे दंमक ऊं नमियो । वरणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥(पू०) साते नरक तणो इक दंमक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें तीन विकलेंद्री । जगणीस गिणती आणजी ॥ ४ ॥ (पू० ॥ पंचेंद्री तिर्यंच नें मानव । एह थया इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनें वेमानिक । इम दंमक चोवीस जी ॥ ५ ॥ (पू०) पंचेंद्री तिर्यंच अनें नर । परयाता जे होय जी । एचौविह देवां मे ऊपजे । इम देवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ (पू०) असंख्यात आऊखे नर तिरि । निहचे देवज थायजी । निज आऊखे सम के ऊंछे । पिण अधिकें नवि जायजी ॥ ७ ॥ (पू०) नवनपती के व्यंतर तांई । समूर्छिम तिरयंच जी । सरग आठमा तांई पुहचे। गरनज सुकृत संचजी ॥ ८ ॥ (पू०) आऊ संख्याते जे गरनज । नर तिरयंच विवेक जी । वादर पृथवीनें वलिपाणी । वनस्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ (पू०) परियात्ता इण पांचे ठामें । आवी ऊपजे देवजी । इण पांचामाहें पिण आगें । अधिकाई करुं हेवजी ॥ १० ॥ (पू०) तीजा सरग थकी मांमी सुर । एकेंद्री नवि थाय जी । अठम थी ऊपरिला सगला । मांनव मांहे जायजी ॥ ११ ॥ ※ ॥ (पू०) (ढाल २ आज निहेज्योरे दीसै नाहलोएचाल ।) ॥ ※ ॥ नरक तणी गति आगति इण परें । जीवनमें संसार । दोय गतिनें दोय आगति जाणीयै । वलीय विशेष विचार ॥ १२ ॥(न०) संख्याते आऊ परयापता । पंचेंद्री तिरयंच । तिम हीज मनुष्य एहिज वे नरकमें । जाये पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ (न०) प्रथम नरक लगि जाय असन्नियो । गोह नकुल तिम वीय । गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी लगे । सींह प्रमुख चोथीय ॥ १४ (न०) पंचमी नरकें सीमा सापणी । छठी लगि स्त्री जाय। सातमीये मांणस कें माछलो । ऊपजे गरनज आय ॥ १५ ॥ (न०) नरक थकी आवे विऊं दंमकें । तिरयंच के नर थाय । ते पिण गरनज नें परयापता । संख्या ती जसुआय ॥ १६ ॥ (न०) नारकियांनें नरकथी नीसर्यां । जे फल प्रापत होय । ऊतुकृष्टे नांगें करि तेकरुं । पिण निश्चै नही कोय ॥ १७ ॥ (न०) प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे । वीजी हरि वलदेव । तीजी लगि तीर्थंकर पद लहे । चोथी केवल देव ॥ १८ ॥

(न०) पंचमी नरकनो सरव विरति लहै । छठी देस विरत्त । सातमी नरक नो समकित ह्वीज लहै । न ह्वै अधिक निमित्त ॥ १९ ॥ (न०)
(ढाल ३ ॥ ❋ ॥ (करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे) ए चाल ॥ ❋ ॥
मानव गति विण मुगति ह्वै नहीरे। एहनो इम अधिकार । आऊ संख्या तैं नर सह दंडकैरे । आवी लहै अवतार ॥२०॥ (मा०) तेऊ वाऊ दंडक वेतजीरे । वीजा जे बावीस । तिहांथी आया थायै मानवीरे । सुख दुख कर्मस रीस ॥ २१ ॥ (मा०) नर तिरयंच असंखी आउखैरे । सातमी नरकना तेम । तिहां थी मरनें मनुष्य ह्वै नही रे । अरिहंत भाख्यो एम ॥ २२॥ (मा०) वासुदेव वल देव तथा वलीरे । चक्रवर्त्तिनें अरिहंत । सरग नरगना आया ए ह्वैरे । नर तिरथी न ह्वंत ॥ २३ ॥ (मा०) चौविह देव थकी चवि ऊपजैरे । चक्रवर्त्ति वल देव । वासुदेव तीर्थंकर ए ह्वै रे । वैमानक थकी वेव ॥ २४ ॥ (मा०) (ढाल ४ नाभि अने मरुदेवा) ए चाल ॥ ❋ ॥ हिव तिरयंच तणी गति आगति कहीयै अशेष । जीवभमें इण परभव मांहे करम विशेष । आऊ संख्याती जे नर तिर्यंच विचार । ते सगला तिरयंचा मांहें लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचां मांहे आवै नारक देव । ते कह्या पहिली तिण कारण नकहुं हेव । पंचेंद्री तिरयंच संख्यातैं आऊखैं जेह । ते मरी चिहुं गतिमां जावै इहां नही संदेह ॥२६॥ थावर पांच तीनें विकलेंद्री आठे कहावै । तिहां थी आउसंख्याता नर तिरयंचमें आवे । विकल चवी लहै सरव विरति पिण मुगति न पावै । तेऊ वाऊ थी आयो तेहनें समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार । पृथवी आउ वनस्पती मांहि लहै अवतार । एतीने इहांथी चवि आवै दसे ठामें । थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत्त पामें ॥ २८ ॥ पृथवी काय आदि देई दस दंडके एह । तेऊ वाऊ मांहे आवी उपजै तेह । मनुष्य विना नवमांहे तेऊ वाऊ वे जावै । विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठा ही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत । वनस्पती मांहें तिहां रहीयो काल अनंत । पुढवी पाणी अगनि अनेंचोथो वलि वाय । काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ वेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारै । संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै । सात आठ भव लगि

तां नर तिरयंचमें रहियो । हिव मांनव भव लहिनें साधुनो वेपमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हूवे छूटकवार । पिणछै म्हारे मनसुध ताहरो एक आधार । तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो । हिव संसार घणो भमिवो तो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंछित पूरण आपदाचूरण सामी । ताहरी सेवलहीतो में नवनिध सिध पामी । अवरन कांइ इछं इण भव तुंहीज देव । सूधे मन एक होज्यो भव भव ताहरीसेव ॥ ३३ ॥ (कलश)॥ इम सकल सुखकर नगर जेशल मेर महिमा दिन दिनें । संवत्तसतैरे उगणतीसै दिवस दीवालीतणें । गुण विमलचंद समान वाचक विजैहरष सुसीसए । श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री चौवीस दंडक स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ इरियावही मिछामि डुक्कडसंख्या स्तवन लि० ॥

॥ ※ ॥ प्रभु प्रणमुंरे पास जिणेसर थंभणो एहनी ॥ ※ ॥ पद पंकज रे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरण सुधरे करि मुनिवर पय वंदना । अेम तेरे पडिकमी जिम इरियावही । श्रीवीर नीरे वाणी तहतकरि सरदही । (उ०) सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिछामि डुक्कड तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली । भू दग जलण तिम वाउ वणसइ विगल मण इंद्री तणी । करतां विराहण करम बंध्या दूर ते करिवा भणी ॥ १ ॥ (चाल) पुढवी दगरे वाऊ तेऊ वणस्सई । पण थावरेरे वादर सुहम दसेथई । प्रत्येकजरे वणस्सइ इग्यारह थया । वावीसेरे पज्जत्तग अपज्जत्तया । (उल्लालो) पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया विगलतिय छहभालए । जल थल खचर भुयंग उइपण इंद्रिय तिरि अडआलए । घम्मादि साते नरक पुढवी नारकी तिहां सात जे । ते चवद भेदे करी जाणो पज्जत्तय अपजत्त जे ॥ २ ॥ (चाल) पनरह विधरे सुर गिण परमाहम्मिया । किलविखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया । जंभिय दसरे नव लोगांतिक जाणिये । सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणिये । (उल्लालो) वखाणिये दसविध भुवनपतिना तार रवि शशि रिषि गहा । चर थिर दसेविध जोइसी सुर वखाणया जिणवर जहा । वारह विमानक पण अणुत्तर नवग्रीवेके नव भणया । पज्जत्त

अपजत्तग अठाणुं अधिक सतसंख्यागिएया ॥※॥(ढाल२) मेघ आगम सही ए० ॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए। खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीयै असि कसि मसिहि आजीविकाए । हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरएयवत सहीए । मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि ल वण समुद्रमांहि विस्तरीए । सात २ अंतर दोय पासै दीप छप्पन्न अन्तर धरीए । दोइसै भेद डुइ आगला जांणि मणुय पज्जत्त अपज्जत्तयाए। एक सौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥ (ढाल ३) ॥ (हिव जनम्या जगगुरु०) ए० ॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह । पणसहस छसै वलि त्रीस अ धिकते जाणि । ते रागै दोसै डुगुणा करी वखाण ॥ ६ ॥ ऊइ सहस इ ग्यारह डुइसय साठि प्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हितउर आण। मनवच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक । तेतीस सहस सत सातअसी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किध्द । इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिध्द । अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल । जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय । अरिहंत प्रमुख छह साखै छगुणा भाय। इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस । इकसो वीसोत्तर ऊइ संख्या निसदीस ॥ ए ॥ (ढाल ४) चोपईनी ॥※॥ इण परि मिछामि डुक्कमंदेई। भविक तस्या भवजल निधिकेई । तरै अछै वलि आगलि तरिसी । निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल । न्हाण करै आतमक रि निरमल । सें मुखभाषै वीर जिणेसर । सूत्रकरी गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिकमी मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै । मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥ (कलश) ॥※॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय सामी सिध्दिगामी सुध्द धरम धुरंधरो । उवझाय लक्ष्मी कीर्त्ति सीसै जैनवा णी मन धरी। गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो भावै करी ॥१३॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥※॥ ॥※॥

॥☀॥ अथ पंचसमवाय स्तवन लि० ॥☀॥

॥☀॥ सिद्धारथ सुतवंदियें । जगदीपक जिनराज । वस्तुभाव सब जाणियें । जिन आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथी संपजे । सकल वस्तु विख्यात । सप्तभंगी रचना विना । बंधन बैसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ । आप आपणें ठाम । पूरण वस्तु विचारतां । कोई न आवे काम ॥३॥ अंध प्ररूपे एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहे पूर्णगज । अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकल नयें करी । जुगत २ सुध बोध । धन जिनसासन जगजयो । तिहां नही कोइ विरोध ॥ ५ ॥ (ढाल १ आसाउरी राग ॥) श्रीजिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० कोई कहे एकाल तणें वस । सकल जगत गत होयरे । काले उपजे विणसे काले । अवरन कारन कोयरे॥ ७ ॥ श्री० काले गर्भ धरे जगवनिता । काले जनमें पूतरे । कालें बोले कालें चाले । काले झाले घर सूतरे ॥ ८ श्री०॥ कालें दूध थकी दही थायें । कालै फल परिपाकरे । विविध पदारथ काल उपायें । अंतकरें वेवाकरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बारचक्रवें । वासुदेव बलवंतरे । कालें कवलित कोई नहीसे । जसुकरता सुर सेवरे ॥१०॥ श्री०॥ उतसर्प्पणि अवसर्पणि आरा । छे छे जूजूयें भांतरे । षटरितु काल विशेष विचारो । भिन्नभिन्न दिन रातरे ॥ ११ ॥ श्री०॥ कालें बाल विलास मनो हर । यौवन कालाकेशरे । वृद्धपणें जयवलि २ दुर्बल । सकति नही लवलेसरे ॥१२॥ श्री०॥ (ढाल२ गिरुआ गुण श्रीवीरजी ए चाल) ॥ ॥☀॥ तव सुभाव वादी वदेजी । कालकिसुं करें रंक । वस्तु सुभावें नीपजेजी । विणसें तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ (विवेकी जुओ २ वस्तु सुभाव) ॥ छतें योग जोवनवती जी । बांझणि न जणें बाल । मूंछनही महिला मुखेजी । करतल ऊगें न वाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस भाव नवि संपजें जी । किमह पदारथ कोय । अंब नलागें नींबमेंजी । वागवसंते जोय ॥ १५ ॥ वि०॥ मोर पींछ कुणचीतरें जी । कुण करें संध्या रंग । अंगविविध सविजीवनाजी । सुंदर नयन कुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांटा बोरवंबूलनाजी । कुणं अणियाला कीध । रूप रंग गुण जूजूआजी । तस फल फू

ल प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहर मस्तके नितवसैजी । मणिहरै विस तत काल । परवत थिर चल वायरोजी । उरध अगननी झाल ॥ १८ ॥ वि०॥ मच्छ तुंब जलमां तरैजी । बूडै काग पाहाण । पंख जाति गयणें फिरे जी । इणपरै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ वि० ॥ वाय सूंठ थी उपसमें जी । हरडै करै विरेच । सीझैनहि कणकांगम्हो जी । सकल सुभाव अनेक ॥ २० ॥ वि० ॥ देश विशेषै काठनोजी । भुयमां थायें पाखाण । संख अस्थिनो नी पजै जी । क्षेत्र सभाव प्रमाण ॥ २१ ॥ वि०॥ रवि तातो शशि सीयलो जी। भव्या दिक बहु भाव । छए द्रव्य आपापणा जी । न तजै कोइ सुभाव ॥२२॥ वि० ॥※॥ (ढाल३) कपूर हुवे अति ऊजलो रे एचाल ॥ काल किसुं करै बापमोरे । वस्तु सुभाव अकज्ज । जो नहोइ भवतव्यता जी। तो किम सीझै कज्ज रे ॥ २३ ॥ (प्राणी मकरो मनजंजाल)॥ एतो भा वी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरै जंगल फिरै जी । कोम्हि यतन करै कोय । अणभावी होवै नही जी । भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा०॥ आंबे मोर वसंतमां जी । झालै कोई लाख । खस्या केई खांखटी जी । केइ आंबा केई साख रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ वांउल जिम भवतव्यता जी । जि ण २ दिशे उजाय । परवस मन माणस तणो जी । तृण जिम पूठै धाय रे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियत वसै विण चिंतव्यूं जी । आवी मिलै ततकाल । वरसां सोनुं चिंतव्यो जी । नियम करै विसराल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुभूमि तेजी । समुद्र पड्यो विकराल । ब्रह्मदत्त चक्री तणा जी । नयन हरै गोवाल रे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी । किम रा खीसरे प्राण । आहेमी शर ताकीयो जी । ऊपर भमें सींचाणरे ॥ २९ ॥ प्रा०॥ आहेमी नागें मस्यो जी । बाण लग्या सींचाण । कोकूहो उमी गयो जी । जोउ नियत परमाणरे ॥३०॥प्रा०॥ सस्त्र हण्या संग्राम मांजी । रानपड्यां जीवंत । मंदिर मांहें मानवी जी । राख्याही न रहंतरे ॥३१॥ प्रा०॥ (ढाल४ राग मारुणी मनोहरणी) ॥ ※॥ काल स्वभाव नियत मति कूडी । करम करै ते थाय । करमें नरय तिरय नर सुर गति । जीव भवंतरै जाय ॥३२॥ (चेत न चेतज्योरे करम न छूटै कोय) ॥ करमें राम वस्या वनवासे । सीता पामी आल । कर्मै लंका पति रावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे०॥ कर्मै

कीडी कर्मँ कुंजर । कर्मँ नर गुणवंत । कर्मँ रोग सोग दुख पीमित । जनम जायैं विलसंत ॥ ३४ ॥ (चें०) कर्मँ वरस लगे रिसहेसर । उदक न पामें अन्न । कर्मँ जिननें जोउ गिमारे । खीलारोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्मँ एक सुख पाले वैसे । सेवक सेवे पाय । एक हय गय चढ्या चतुर नर । एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी परि । जगहीमे हाहूतो । कर्म वली तेलहे सकल फल । सुख भर सेजै सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ उंदर एकै कीधो उद्यम । करंमीयो करकोले । मांहे घणा दिवसनो भूखो । नागरह्यो मममोले ॥ ३८ ॥ चे० ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां । दीये आपणुं देह । मार्ग लही वन नाग पधास्या । कर्म मर्म जोवो एह ॥ ३९ ॥ चे० ॥ (ढाल ५ मी) ॥ (तो चोढियो घण मान गजे एचाल) ॥ ॐ ॥ हिव उद्यम वादी भणें ए । ए च्यारे असमत्थतो । सकल पदारथ साधवा ए । उद्यम एक समरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए । स्युं नविसीझै काजतो । रामें रयणायर तणी ए । लीधो लंका राजतो ॥ ४१ ॥ करम नियतिनें अनुसरे ए । जेहमां सत्तन होयतो । देवल वाघ सुख पंखिया ए । पिउ पैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विण उद्यम किम नीकलै ए । तिल माहेंथी तेलतो । उद्यम थी ऊंची चढैए । जोवो एकेंद्रिय वेलतो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इकसमें ए । जेह नसीझै काजतो । ते फिर उद्यमथी हुवैए । जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि कस्यां विनाए । नविरंधायैं अन्नतो । आवी न पडै कोलीयोए । मुखमां सेपै जतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिताए । उद्यम कीधा कर्म्म तो । उद्यम थी दूरे टलै ए । जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दढप्रहार हत्या करीए । कीधा पापअनंततो । उद्यमथी षट मासमां ए । आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे २ सरवर भरें ए । काकरे २ पालतो । गिर जेहवा गढ नीपजै ए । उद्यम सकत निहालतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जल्ल बिंदुओए । करे पाहाणमां गामतो । उद्यम थी विद्या भणें ए । उद्यम जोमे दामतो ॥४९॥ (ढाल ६) एठिंमी किहां राखी एदेशी ॥ ॐ ॥ एपांचेही वाद करंता । श्री जिनचरणे आवै । अमीयरसें जिन वयण सुणीनें । आणंद अंग नमायैरे ॥ ५० ॥ (प्राणी समकित मतिमन आणोरे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत जाणोरे । आंकणी) ॥

एपांचे समुदाय मिल्यां विण । कोई काज न सीझै । आंगुल जोगे कवल तणी पर । जे बूझै ते रीझैरे ॥ ५१ ॥ प्रा० ॥ आग्रह आणी कोई एकनें । एहमां दियै वमाई । पिण सेनामिल सकल रणं गण । जीतै सुभट लमाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणी० । तंतुसभावै पट उपजावै । काल क्रमें वणाई । भवतव्यता होयें ते नीपजे । नही तो विघन घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० । तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक । भाग्य सवल सहकारी । एपांचे मिल सकल प दारथ । उतपत जोवो विचारी रे ॥५४॥ प्राणी०॥ नियति वसें हलुकर्म थइनें निगोद थकी नीकलियो । पुण्यें मनुज भवादिक पामी । सदगुरुनें जई मिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितनो परपाक थयो तव । पंभित वीर्य उलसियो । भव्यस्वभावै शिव गति गामी । शिव पुर जइनें वसियोरे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान जिन इण परि वीनवै । सासन नायक गावो । संघ सकल सुख दाई जेहथी । स्यादवाद रसपावोरे ॥ ५७ प्रा०॥ (कलश) इम धर्म नायक मुगति दायक वीर जिनवर संथुण्यो । सय सतर संवत वन्हिलोचन वर्ष हर्ष धरी घणो । श्रीविजय देव सूरींद पटधर विजय प्रभु मुणिंदए । कीर्त्ति विजय वाचक सीस इण परि विनय कहै आणंदए ॥ ५८॥ इति पंच्च समवाय स्तवनं समाप्तम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १४ गुणठाणास्तवन लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ थंभणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ एचाल ॥ ※ ॥ सुमतिजिणंद सुमतिदातार । वंडुं मनसुध वारंवार । आणीभाव अपार । चवदै गुणथानक सुविचार । कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम भवपार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो । बीजो सास्वादन मन आणो । तीजो मिश्र वखाणुं । चोथो अविरत नाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो । छठो प्रमत्त पिछाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सलहीजै । अठम अपूरब करण कहीजै । अनिवृत्ति नाम नवम्म । सूखमलोभ दसम सुविचार । उपशांत मोह नाम इग्यार । खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधाम । चउदम थयो अयोगी नाम । वरणुं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाण । तेह लक्षण मिथ्या गुणठाण । तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ (ढाल२)

सफल संसारनी ॥ ※ ॥ जेह एकान्त नय पक्ष थापी रहे । प्रथम एकान्त मिथ्यामती ते कहे । ग्रंथ उत्थापि थापे कुमति आपणी । कहे विपरीति मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥ जैन शिव देव गुरु सङ्क नमें सारिखा । तृतीय ते वनय मिथ्यामती पारिखा । सूत्र नवि सरदहे रहे विकलप घणें । सं सयी नाम मिथ्यात चोथो भणें ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंधरातो रहै । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अभव्यनें । कहिय अनादि थिति अंत सुभव्यनें ॥७॥ जेम नर खीर घृत खंम जीमनें वमें । सरस रस पाय वलि स्वाद केहवोगमें । चौथ पंचम छठे ठाण चढिनें पमें । किणहि कषाय वसिआय पहिले अमें ॥ ८ ॥ रहे विच एक समयादि षट आवली । सहीय सासादनें थिति इसी सांभली । हिव इहां मिश्रगुण ठाण त्रीजो कहे । जेह उत्कृष्ट अंतर मझुरतल है ॥ ९॥ (ढाल ३) वेकर जोमीताम ॥ एहनी ॥ ※ ॥ पहिला चार कषाय । शमकरि समकिती । कैतो सादि मिथ्यामती ए । ए वेहिज लहे मिश्र । सत्य असत्य जिहां । सरदहणावेउं ठतीए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि । मरण लहे नही । आ उबंध नपमें नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । कै समकित लहे । मतिसर खी गति पर भवे ए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान । उदय करी लहे । म तिविण किहां समकित पणो ए । ते अविरत गुणठाण । तेतीस सागर । साधिक थिति एहनी भणो ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग । निरवेद आ सता । समकित गुण पांचे धरेए । सङ्क जिन वचन प्रमाण । जिन सास न तणी । अधिक १ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ केईक समकित पाय । पुदग ल अरधतां । उत्कृष्टा भवमें रहे ए । केईक भेदी गंठि । अंतर मझुरतें । चढतें गुण सिवपद लहै ए १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म । त्रिणवलि मोह नी । मिथ्या मिश्र सम्यक्तनीए । साते प्रकृतिजास । परही उपसमें । ते उपसम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध । ते नर क्षायकी । तिणहीज भव सिव अनुसरेंए । आगलि वांध्यो आउ । तातें तिहां थकी । तीजै चोथै भवतरै ए ॥ १६ ॥ (ढाल ४) इणपुर कंवल कोइन लेसी ॥ ए चाल ॥ ※ ॥ पंचम देसविरति गुणठाण । प्रगटै चउकमी प्रत्याख्यान । जेण तजें वावीस अभक्ष । पाम्यो श्रावकपणो प्रतक्ष ॥ १७ ॥ गुण इक

वीस तिके पिण धारै । साचावारै व्रत संभारै । पूजादिक षटकारज साधै । इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आरत रोद्र ध्यान हुवे मंद । आयो मध्य धरम आनंद । आठ वरस ऊणी पुव्वकोम । पंचम गुण ठाणें थिति जोम ॥ १९ ॥ हिव आगै साते गुणथान । इक २ अंतर मऊरत मान । पंच प्रमाद वसै जिण ठाम । तेण प्रमत्त छठो गुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कलप जिन कलप आचार । साधै षट आवस्यक सार । उद्यत चोथा च्यार कषाय । तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखे चित्तसमाधै । धरमध्यान एकांत आराधै । जिहां प्रमाद क्रिया विधनासै । अपरमत्त सत्तम गुण भासै ॥ २२ ॥ (ढाल ५) नदी यमुनाकै तीर उमे दोय पंखीया ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ पहिलै अंसै अठम गुणठाणा तणें । आरंभै दोयश्रेणि संखेपै ते गणें । उपशाम श्रेणि चढै जे नरभवे उपसमी । क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै । अठम नाम अपूरव करण तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो आदरै । निरमल मन परिणाम अमिग ध्यानें धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै । जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न जाणियै । क्रोध माननें माया संजलणा हणें । उदै नही जिहां वेद अवेद पणों तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सूखम लोभ कांइक शिव अभिलखे । ते सूखम संपराय दशम पंमित दखै । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै । मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै किणही परै । तो थाये अह मिंद्र अवर गति नादरै । च्यारवार सम श्रेणि लहै संसारमें । एक भवे दोय श्रेणि अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समी पहिलै पमै । मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुदगल रमै । खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही । दशम थकी वारम्म चढै ध्यानें रही ॥ २८ ॥ (ढाल ६ एक दिन कोई मागध आयो पुरंदर पास) ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ खीण मोह नामें गुण ठाणो वारम जाण । मोह खपायो नैमो आयो केवल नाण । प्रगट पणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिव आगै तेरम गुणठाण तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चौकर्म्म क्षयगई रहीय अघातीय एम । प्रकृति पच्यासी जेहनें जूना कापम जेम । दरसण

ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत । केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरे श्री भगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ठानी परगट वात । महिमावंत अ ढारे दूषण रहित विख्यात । आठेवरसे ऊणी कही इक पूरव कोडि । उत्कृ ष्टी तेरम गुण ठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूध्या मन वच काय । तेण अयोगी अंत समइ सङ्क प्रकृति खपाय । पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनो मान । पंचम गतिपामे सिवपद चवदम गुणथान । ॥ ३२ ॥ त्रीजें वारमें तेरमें मांहे न मरे कोइ । पहिलो वीजो चोथो पर भव साथे होइ । नारक देवनी गतिमांहे लाभे पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरी मांहिमणुंए सर्व्व विचार ॥ ३३ ॥ (कलश) ॥ इम नगर वाहड मेरुमं डण सुमति जिण सुपसाउले । गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आग मनें भले। संवत्त सतेरेसे ठत्तीसे श्रावण वदि एकादसी। वाचक विजय श्री हरष सानिध कहे मुनि इम धर्म्मसी ॥ ३४ ॥※॥ ॥※॥
इति श्री चतुर्दश गुण स्थान विचार स्तवनं ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ अथ नवतत्व भाषा गर्भित स्तवन लि० ॥

॥※॥ डुहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें । सिद्धसूरि उवझाय । साधु सकल प्रणमी करी । प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥१॥ करस्युं हूं नवतत्वनी । गाथा भाषा रूप । मंद बुद्धि गुरु सानिधे । कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥ (सुरती महीनानी देशी) ॥ जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आसव सोय । संवर निज्जर बंध मोक्ष एनवतत्व होय । चवद चवद वायाल बयासी वलि वायाल। सत्ता वन वारे चौ नव क्रम भेद निहाल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह पण विह ठविह जीव कहाय । चेतन त्रस थावर वेदें गई करणें काय । एगिंदी सूखम वादर ए दो जिय ठाण । सन्नि असन्नि पणिंदी विति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सगपज्जत्ता अपज्जत्ता चवदे होय । अनुक्रम जीवठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय । नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उवयोग । ए षडलक्षण लक्षित जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन। सासो सास भाषा मन षमए अनुक्रम लीन । च्यार एगिंदी पंचपज्जत्ती वि गलें जोय । पंच असन्नि सन्निते षम पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास

आऊ बल ए दसप्राण । च्यार ७ सात आठ एगिंदी विगलैं जाण । असन्नि सन्नि पंचिंदीनें नव दस क्रम थाय । प्राणांथी जे विप्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्मा धम्म आगास तीनूंना त्रिण त्रिण भेद । काल दशम इग आगास पुग्गल च्यार विछेद । खंधा देश पएस परमाणु चवद अजीव । धम्मा धम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्मैं थिर संठाण अधम्म । अवगाहैं पूरण गलणैं नभ पुग्गल धम्म । समया वलिय मऊत्त दीह पख मासनें साल । पल्योपम सागर उस्सप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ षम्म इग दो सग सग सग षम्म इग अंक गिणाय । एगमऊत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय । तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण । केवल नाणी भणियो एह मऊत्त प्रमाण ॥ ८ । साता उच्चगोय मणु सुर डुग पंचिंदीजाय । पांचशरीर आदिम तिसरीर उवंग कहाय । आदिसंघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लऊ होय । परघ ऊसास तेम वलि आतपनें उऊोय ॥ ए ॥ सुभखगई निम्माण तसादिदशुं नी माल । सुर नर तिरियआऊ तित्थंकर पुण्य बयाल । तस बादर पऊत्त पत्तेय थिरं सुभसोय । सुभग सुसर आइऊ जसं त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दसक नववीजा नीच असाय । मित्थ थावरदश नारगत्रिक पचवीस कसाय । तिरियंच डुग एकिंद्री विति चौरिंद्री तेय । कूखगई उपघा अपसत्थ वणचौभेय ॥ ११ ॥ पढम संघयण विना संघयण तेमसंठाण । एम बयासी प्रकृति पापतत्वनी ए जाण । थावर सुहम अपऊ साहारण अथिरै गेय । असुभ डुभग दूसर णाइऊ अजस दसलेय ॥ १२ ॥ पणचौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय तिम जोग । बायालीस सेषपच्चीस कृयासंयोग । काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप । प्राणातिपात आरंभकी परिगहियानो लाप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसणवत्ती तेम । अपच्चक्खाण की दिठ पुठि पाभुच्चियजेम । सामंतोपन वणिय नेसत्थि साहत्थै जेह । आझापनकी वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणवकंख, पच्चय ना उवभंगी समुदाय । प्रेम द्वेष इरियावही किरिया एक हि वाय । सुमति गुपति परिसह जइधम्म भावण चारित्त । पण तिग बावीस दस वारै पण संवरतत्त ॥ १५ ॥ इरिया भाषा एषणा सुमती ना भेद होय । आदान भंम उच्चार निक्खेवण पांचे जोय । मनगुत्ती वयगुत्ती काय

गुत्ती त्रिण जाण । हिव आगे बावीस परीसह कहुं हित आण ॥ १६ ॥ नूख पिपासा सीत उसन मांसा निरवत्थ । अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिझासत्त । अक्कोस वह जायण अलान्न रोग त्रिणफास । मल सक्कार पन्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम स च्म । सत्यं सौच अकिंचन बंभचेर जइ धम्म । पढम अनित्य अशरण सं सार एग अनत्त । असुचि आश्रव संवर निज्जर नवि नावो नित्त ॥ १८ ॥ लोकसुनाव वोधड्डलन्न इग्यारम गाव । धरम साधक अरिहंत ए बारे नावन नाव । सामायक ठेदोपस्थापन वीजो सोय । परिहार विसुद्ध सूख मसंपराय चजत्थो जोय ॥ १ए ॥ तिम अहक्खाय चरित्त सरव जियलोग प्र सिद्ध । जेह सुविधि आचरणें के जिय पाम्या सिद्ध । बारेविध निर्ज्जर त त्व, बंधना च्यार प्रकार । प्रकृति ठिई अनुनाग प्रदेश नेदें निरधार ॥२०॥ अणसण ऊणोदर वृत्तिसंखेप रसनो त्याग । कायकलेस सल्लीनता वाहिर तप षम नाग । पायछित विनय वेयावच्च तेम सिझाय । ध्यान काउसग्ग अन्यंतर तप षमविध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृति सुनाव काल अवधारण थि त निरवंच । अनु नागें रस तेम प्रदेसें दलनों संच । पट प्रतिहार धार तर वार मद्य वलि तेम । निगम चित्रकर कुंनकार नंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना नाख्या जेजे नाव । तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सन्नाव । इम संखेपें विवरण कीना आठे तत्त । प्रस्तावें पाम्यो वरणव स्युं हिव मोखतत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूवण द्रव्यनें खेत्र प्रमाण । फ रसन काल पांचमों ठगे अंतर जाण । नाग सातमो नाव आठ तिम अ लप वहुत्त । एनव नेदें नावन करस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक प दथी ठे जे पदे अविनान्नाव । व्योम कुशम तिम ससिक श्रिंग जिम नहीं य अन्नाव । एहवी जे पद मोक्ष तेहनों मग्गण द्वार । विवरण कर वरण वस्युं सुणज्यो सुहम विचार ॥ २५ ॥ गति नर इंदिय पंचेंदी कायें त्रसका य । नाणें जेहनें केवल संयमथी अहखाय । दंशणमें इक केवल दंशण अपर न होय । नव्य अनव्यें नव्यपणो परि पाके जोय ॥ २६ ॥ संमत्ते क्षायक सन्नी असन्नीयें सन्नि । अणहारी आहारी अणहारी उप्पन्न । द्रव्य प्रमाणें सिद्ध जीव द्रव्य होय अनंत । लोग असंखम नाग एगसिद्ध होय

अणंत ॥ २७ ॥ फरसन खेत्र थी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत । सादि अनंती थित जिन आगम थी सुविदीत । प्रतिपाती भावे नहिं सिद्धां अंतर जोय । सरव जीवथी भाग अनंतम सङ्घ सिद्ध होय ॥ २८ ॥ दंशण नाण जेहनें बे ते क्षायक भाव । जीवत जेहनें वलि परणामक भाव समाव । सङ्घथी थोभा वेद नपुंसकथी जेसिद्ध । तेहथी थी नर अनुक्रम संखगणा सुपसिद्ध ॥ २९ ॥ जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्मत्त । अण जाणंतानें ख्य जे सरधानें रत्त । सरव जिणेसर मुखथी भाख्या वयण जहत्थ । ए बुद्धी जेहनें मन संमत निच्चल तत्थ ॥ ३० ॥ अंतर मङ्करत एगमात्र फरस्यो संमत्त । अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमत्त । उस्सप्पणीय अणंत एग पुग्गल परियट्ट । अनन्त अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३१ ॥ इम नव तत्त भेद पभिभेदै विवरण कीध । श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रसपीध । कोटिक गण सुभसदन प्रकास नदी उपमान । श्री जिन लाभ चंदकुल पूनम चंद समान ॥ ३२ ॥ अग्याना दिक करि वर सिंहें वयरी साख । रत्नराज मुनि ते वम्सारवानी पडिसाख । ग्यानसार ते पभिसाखानी सूखम भाल । ए नव पद नव रयण विनाणैं गुंथी माल ॥ ३३ ॥ संबब्लर निश्चय नय विगइ प्रवचन माय । परम सिद्ध पद वामगतें ए अंक गिणाय । माव किसन ससिवार मेरु तिथ पूरनकीध । च्यार कथा तजि तत्वकथा भज नर फल लीध ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥

इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ दंमकनी भाषा गर्भित स्तवन लि० ॥

॥ ॥ ऋषभा दिक चौवीस नमि । तेहनो सूत्र विचार । दंमक रचनायें तवुं । संखेपै निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक पढम । असुरा नाग सुवन्न । विज्जु अगनि दीवो दही । दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आऊ तेउ वलि । वाउ वणस्सइकाय । वि ति चौरिंदी गब्भधर । तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया । ए दंमक चौवीस । एहना द्वार कहुं हिवै । गणनायें तेवीस ॥ ४ ॥ वीर जिणेसरनी देशी ॥ ॥

॥ ॥ सरीर उगाहण संघयणं संठाण । कोहाई लेसिंदिय दोसमुग्घाय

प्रमाण। दिठी दंशण नाण जोग तिम वलि उवयोग। उपपात वलिय चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥१॥ के दिसिनो आहार सन्नि गइ आगइ वेय। दार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संखेव। हिव तेवीसदारनो रहिस समय अनुसार। अलप रुची जं तेहथी कहिस्युं अलपविचार ॥ २ ॥ ॥ ✻ ॥

सूरती महीनानी देशी ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥ चौ गब्भय तिरि वाउ कायें च्यारसरीर। मनुष्यमें पांच दंमग इकवीस रह्या तिसरीर। थावर च्यारनें जहन्य उक्कोसें देहप्रमाण। नाग असंख्यातम इग अंगुलनों परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वनावक अंगुलनाग संक्षात। उक्कोसें पणसै धणु नारगनें विक्षात। सुरनो सातहाथ गब्नय तिरि वणस्सई काय। जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयणवार। एगजोयण चौरिंदी देह ऊंचै आकार। आरंन कालें वेक्रिय देहनो ए परिमाण। नाग एक इकआंगुलनो संख्या तम जाण ॥३॥ सुर नरनें साधक इकलाख जोयण इगलाख। नवसें जोयण तिरजंचनें एसूत्रे साख। सान्नावकथी डुगणो नारक वेक्रिय काय। एकमहूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्खएग उक्कोस विउव्वण काल। विगल संघयणी थावर सुर नारकनीमाल। गब्नयनर तिरनें पम विगलनें ठेवठ एक। सरव जीवनें च्यार दसे सण्णायें लेख ॥ ५ ॥ नर तिरनें पम सुरनें सम चौरंस संगाण। ऊंमग इग नारग विगलें श्री सूत्र प्रमाण। नाणाविह धय सूइ मसूरनी चंद्र आकार। वणस्सइ वाउ तेउ नू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सऊनें च्यार कषाय गब्नय पम नर तिरि दोय। वेमाणिय नारग तेउ वाउ विगल त्रिक होय। जोयसि तेऊलेसा सेस रह्यांने च्यार। दार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुदघात सग नरनें पण गब्नय तिरि देव। नारग वायुनें च्यार सेसनें तीनुंन्नेव। दिठी दोय विगलमें थावरनें मिथ्यात। सेसनें तीनदिठि जिम प्रवचनमें विक्षात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंशण होय। चौरिंदी तेचक्खु अचक्खू दंसण होय। मनुजनें च्यार सेस दंमगमें दंशण तीन। नाण अनाण तीन सुर तिरि नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावरदोय अनाण विगल दोनाण अनाण। गब्नय मणुंनें तीन अनाणनें पांचुं नाण। सुर नारग एकाद

श तिरनें तेरै जोग । मनुजनें पनरै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥ वाऊकायनें पांच तीन थावर संयोग । मनुजनें वार नरग तिरि देवनें नव उपयोग । विगल ऊगै पण षट चौरिंदी थावर तीन । उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एग समें संख्यात असंख्या चवणु पपात । गब्भय तिरि विगलेंदी नारय सुर विख्यात । मणुआ थावर वणस्सइ संख असंख अणंत । मणुज असन्नि असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ । वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊनें जिठ । नर तिरि तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस । व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोईस ॥ १३ ॥ असुरा दिक दशनें इक सागर अधिको आय । देसें ऊणा दोय पल्पनो नवेय निकाय । विगलनें वार वरस गुणचास दिवस छम्मास । अंत मऊत्त जहन्नें पुढवाई दसरास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस बरस हजार । पल्यं तेना अष्टंस वेमाणिय जोइस धार । सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार । विगलनें पंच पऊत्ती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय छए दिसनो आहार । होय न होय पंचादिक दिस ए सुत्र मऊार । दीह काल की चौविह सुर नारग तिरजंच । विगलनें हेउपएशा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गब्भय मणुजनें दीहकालकी सन्नाहोय । केइक आचारज कहै दिठिवाय थीदोय निच्चय पऊत्ता पंचिंदी तिर नर जेह । चौविह देवां मांहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउ पजत्त पंचिंदी तिरि नर तेम । पज्जत्ता भूदग पत्तेयवणस्सई जेम । ए सरवेमैं निच्चै सुरनी आगति ऊंति । पऊत्त संख गब्भय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उदवरत्या नर तिर उपजै नऊवे सेस । भू अप्प वणस्सईमें नारग विण उपजै असेस । पुढवाई दसपयमैं भू आऊ वण जंति । पुढवाई दसपयमैं तेऊ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमै ऊंत । पुढवाई दस पदमें विगल जावंत आवंत । सऊमें तिर गति आगति मणुआ सऊमें जाय । तेउ वाऊथी मरीनें जीव मनुज नविथाय ॥ २० ॥ थी पुरसै चौविह सुर तिरि नर तीनूंवेद । थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद । पऊत्ता मणु वादर अगनि वेमाणिक तेम । भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि एम ॥ २१ ॥ बेइंद्री

तेइंद्री पृथवीनें अप्पकाय । वाउ वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय । हे जिन ए सऊ भाव मैं पाम्या वार अनंत । तेहनो अनुक्रम गणितां किमहीन आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विण सऊ दंडगमैं ते गति संयोग । लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्मप्रयोग । सुरमै विण दंसण लहि विरति न पामी मूल । ते सुरजात सहावै देस विरति प्रतिकूल ॥ २३ ॥ अरज देस आरज कुल सुध सुगुरु उपदेश । तेहथी तुहदंसणनो किंचित पाम्यो लेस । धारक तारक कारक वारक दंशण देव । आतम गुणसंसा सम्मत्त कम्मसयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिन लाभ सुरिंद । रत्नराज मुनि सीस तेहना पद अरविंद । रज मकरंदें लीणो ग्यानसार त सुसीस । तेणतव्या तेवीसदार दंमग चौवीस ॥ २५ ॥ संवत शशि रस वारण तेमचंद निरधार । पोष मास पख ऊजल सातमनें सोमवार । श्रावक आग्रहथी एकीनो अल्प विचार । अठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ ※ ॥ इति चतुर्विंसति दंमक स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ जीवचार भाषा गर्भित स्तवन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) भुवन प्रदीपक वीरनमि । किंचित जीव सरूप । कहिसुं पूर्वाचार्य जिम । वालवोध गुरु रूप ॥ १ ॥ (देशी सूरती महीनानी) ॥ एगमुगति वीजा संसारी जीव दुभेद । सत्ताभिन्नैं सिद्ध अनंतै रूप अभेद । संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार । भू अप वाऊ तेऊ वणस्सई थावर चार ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल । मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीमाल । सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाखाण । भोडल तूरी ओस भूमि पाहण जेखाण ॥ २ ॥ सुरमो लुणजात ए पुढवी काय विछेद । भूमि आकास उस हिम करग आऊना भेद । हरित घास ऊपर जे जलकण धूंहर तेम । होय घणोदधि अप्प काय विण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा ऊाला भोभर तिम उलकापात । अशणि कणग वियुतादिक अगन जीव विख्यात । उब्भामग उक्कलिका मंमल वलि मुहवात । सुध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ज्ञात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सइ जीवदुभेय । एग सरीर अनंत जीव साधारण नेय ।

कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि सेवाल । जुंफोमा अद्दत्तिय सरवे जे फ लवाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथवो थेग पालंको साग । गुपत सिरा सांधा गांठ भाजै समभाग । काठी माल भुंमिमें रोप्या पल्लव थाय । जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एग जीव जे ते प्रत्ये क । फूल गल फल मूल काठ वीजै जिय एक । वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवी काय । सयल लोगमें व्यापक अंत मूहर्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय । लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय । कवम्मी संख गंम्मोला लहिगा लटनी जात । चंदनका अलसी मेहर जोका विख्यात ॥ ८ ॥ मायवाहा कम पौरादिक वेइंद्री होय । गोमी मा कण जूआ कीमा कीमी दोय । दीपक ईली घीवेली गोगीमा जात । चर मजूका गादहिया गोवर कम उतपात ॥ ९ ॥ धान कीमा जिमचोर कीमा गोवाली तेह । ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह । वीछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार । तीमा माखी मांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवम मोला मांकम्मिय पतंग इत्यादिक भेद । नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विछेद वम्मा वंसा सेला अंजण रिठा ख्यात । मघा माववई नारग एनामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिर जंच । मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जलअंच । चौपय उरपरि भुजपरि साप भूचारी तेय । तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रमलेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोमपंखी चमचेड कपोत । मनुज लोक थी वाहिर समुग विगय पंखहोत । सरवे जल थल खचर समुछिम गब्भय दोय । कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मणुजोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ । जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुत्तें दिठ । पनरै भेदै सिद्ध कह्या एजीव प्रकार । तनु मानादिक हिव एह नो कहसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आऊखो एक सरीरें थितनो मांण । प्राण जेहनें जेता तिम वलि योन प्रमाण । अंगुल भाग असंख सहू ए गिंदी काय । जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सइ काय ॥ १५ ॥ विति चौरिंद्री अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास । वारै जोयण तीन गाऊ इग जोयण भास । सत्तमना नेरइया धनु सयपंच प्रमाण । तेहथी अरध अरध ऊ णा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस गब्भधर मछ उरगनो देह ।

गाऊ धणुहपज्जत्त भूचारी पंखी जेह । खेचर नवधणु उरग भुयंग जोयण नव होय । नव गाऊ परिमाण समुच्छिम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खम्म गाऊ ऊंचास चउप्पय गब्भयमांण । तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण। भवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत । सात हाथ उक्कोसैं ऊंचपणै तणु ऊंत ॥ १८ ॥ सनत कुमार माहेंद्रे षम्म ब्रह्म लांतक पांच । शुक्र सहस्रारें उक्कोस च्यार करवांच । आणत प्राणत आरण अच्युत हाथें तीन । नव ग्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगलीन ॥ १९ ॥ वावीस सात तीन दश वरस सहस्सैं आय । भू आऊ वाऊ वण ती दिन तेऊ काय । बार वरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास । अनुक्रम वेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥२०॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय । चौपय तिरिय मनुजनो तीन पल्यो पम थाय । जलचर उरपर भुजपर उक्कोसें पुव्व कोम्म । पंखीनें इगभाग अ संख पल्यनो जोम्म ॥ २१ सरव सूखम साधारण समूच्छिम मणुजेह । जहन्न उक्कोसे अंतमुहत्त नियम थिति तेह । इम उगाहण भाख्यो संखेपैं अधि कार । जेवलि इत्थ विसेस विसेस सुत्रसूं धार ॥ २२ ॥ असंख उसप्पणि सऊ एगिंदी आपणी काय । उपजे चवे अनंत साधारण वणस्सई काय । संख्याता संवच्छर विगल आपणी देह । सात आठ भव पंचिंद्री तिरिमणु आ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरग नविजाय । देव चवीनें ते वलि देवपणें नविथाय । इंद्रीय सासोसास आऊ वल ए दसप्राण । च्यार छ सात आठ इग ड ति चौरिंद्रिय जाण ॥२४॥ सन्नि असन्नि पंचिंदी दश नव अनुक्रम जोय । प्राण थकी जे विप्रयोग जिय मरणें होय । भीमसायर सं सार अपार अनंतीवार । भमियो जीव धरमविण जोणि अशीनें च्यार ॥२५॥ सग सग सग सग दश चवदे दो दो दो लाख । च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रे साख । भू अप तेऊ वाऊ वणपत्तेय साधार । वि ति चौ पण तिर नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात । सादि अनंत भंग जिन आगम थिति विक्खात । रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग । नहीय नपुंसक पुरप तणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दंशण चारित वीरज ए च्यार अनंत । सिद्ध थया तेहथी सि द्धंते सिद्ध कहंत । इम ए जीव विचार गाथाथी भाषा रूप । श्रावक आग्र

हथी में कीनो सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिन लाभ सूरीस । रत्न राज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस । संवत शशि रश वार ण ससिहर धर निरधार । माघ चौथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥२९॥ इति जीव विचार भाषा गर्भित स्तवन संपूर्णम् ॥❋॥ ॥❋॥

॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन लि० ॥

॥❋॥ (दुहा) श्रीजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास जिणंद । प्रण मी जेहना पाय कमल । आवी चौसठ इंद्र ॥ १॥ तीर्थंकर आवै तिहां । त्रिगडो करै तयार । सम कित करणी साचवै । एह कह्युं अधिकार ॥ २॥ करै प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवै मूक । सूर्य देख हरखै सहू । घणें अंधारै घूक ॥ ३ ॥❋॥ ढाल वीर वखाणी० एचाल ॥❋॥ आप अरिहंत भलै आविया जी । गावै अपछरह गंधर्व्व । समवसरण रचै सुरवराजी । सं खेपै ते कह्युं सर्व्व ॥ ४ ॥ आ०॥ भुवन पति वीश इंद्रें मिल्या जी । सोलह व्यंतर सार । जोइश दु दश वेमाणिय जुड्या जी । चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुरपुंज परमार जैजी । भूमि योजन समभाग । मेघ कुमर रचै मेघनें जी । करीय सुगंध छिमकाग ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणाजी । करय श्री अगन कुमार । वांणव्यंतर हिव वेगसुं जी । रचय मणिपीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहुप पंच वरण ऊरध मुखै जी । वरष ए जानु परिमाण । भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी । करय ते सुगुण सुजाण ॥ ८ ॥ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपा तणोजी । सोवन कांगरै सा र । रवि शशि रयण कोसीसको जी । कनक नो वीय प्रकार॥ ९ ॥ आ०॥ रतन गढ रतननें कांगरै जी । रचय वेमाणि सुरराज । भलो त्रीजोगढ भी तरैजी । जीहां विराजै जिनराज॥ १० ॥आ० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी । सवा तेत्रीस विसतार । धनुषसै तेरगढ आंतरोजी । प्रौल पंचास ध णु च्यार ॥ ११ ॥आ० ॥ दश पंच २ त्रिहुं गढतणीजी । पावडी वीश ह जार । थाक श्रम नहीय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ ॥ आ० ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच रहै त्रिगढ आकाश । ते हतल सहु यथा स्थित वसै जी । नगर आराम आवाश ॥ १३ ॥आ०॥

तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी। नील मणि मोर निरमाण। इसय धणु मध्य मणि पीठिका जी। उच्च जिण देह परिमाण ॥१४॥ आ०॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसेंजी। मोतीयें झाक झमाल । सम विचकूण ईसांणमें जी ॥ देव छंदो सुविसाल ॥१५॥ आ०॥ देव दुंदुभि नाद उपदिसें जी । जिन गुण गावसी तेह । अम्ह जिम आइ शिर ऊपरें जी। गाजसी तेह गुण गेह ॥१६॥ आ०॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ॥ पुव्वदिशि आसणें आइ वेसे पहू। सुरकृत चोमुख रूपदेखे सहु। दीपें अशोक तरु बार गुण देह थी। देखि हरषे सहू मोर जिम मेहथी ॥१७॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चामर ढालए। योजन गामनी वांणि श्री जिनतणी । भगवंत उपदिसें बार परषद भणी॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा रूपथी अगनिकूणें करी । गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी। ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्री पणें। नैऋत कूंण जिन वाणि ऊभी सुणें। त्रिहुं तणा पति वाय कूणमें जाणए। सुर वेमाणीय नर नारि ईसाण ए। वारह परषदा मद मछर छोम ए। भूख त्रिष वीसरें सुणें कर जोमए ॥ १९॥ पूठ भामंमल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए। झल हले तेज ध्रुम चक्र गगनें सही । महक सहु वारणें धूप धांणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहुधरीय पहिले गढे। होइ पग चारि नरनारि ऊंचा चढे। जिन तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए । वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरषते परषद वारमें। सुणें जिन वाणि धन गणय अवतार में । चौविह देव जिण देव सेवा रचे। मणिमयी मांहिली प्रोलमांहे वसें ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चो जाणीयें। विदसि चोकूण दोइ २ वखाणियें ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए । स्नान पानें वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया । मध्य कंचण गढे प्रोल वसंतिया । तुंबरु पुरुष खट्वंग अर्चिमाल ए। रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए॥ २४ ॥ पहिल त्रिगडो नक्षत्र जिण पुर याम ए। देव मह्र्धिक रचे तिण ठाम ए। करण वारवार नहीं कारण कोइ ए। आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जीयें । तेह धन धन्य अवतार पायो तियें। पास अरदा

स सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुझ ताहरो सुद्ध दरसण ऊज्यो ॥ १६ ॥ (कलश) इम समवसरणें ऋद्धिवरणें सहू जिनवर सारखी । सरद हैं ते लहैं सुद्ध समकित परम जिन ध्रम पारखी। प्रकरण सिद्धांत गुरू परंपर सुणी सझ अधिकार ए । संस्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ १७ ॥ इति समव सरण विचार भाषा गर्भित स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ अथ आबूजी तीर्थ महिमा स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ जात्रीमा भाई । आबूजीनी जात्र करे ज्यो । जात्र भणी उमहे ज्यो । तुह्ले नरभव लाहो लीज्योरे ॥ जात्री० ॥ पंचतीरथी मांहेछाजें । आबू मारूमें देस विराजेंरे ॥ जा०॥ स्वरगथी वादें लागौ । उंचो अंबरीयें जाइ लागोरे ॥ १ ॥ जा० ॥ एतो देवांनो वास कहावें । निरखंता त्रिपति नथावेंरे ॥ जा० ॥ एतो डूंगरीयानो राजा । एहनीछे वारह पाजारे ॥ २ ॥ जा० ॥ छहरितु वास वणाव्यो । एतो चंपला अंवलां छायोरे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा । जिहां तिहां वनवेल्या आझारे ॥ ३ ॥ जा० ॥ भार अढारे वणराई । एतो इहांहीज निजरे आईरे॥ जा०॥ दह दिस परमल आवै । फूलमानो रंग सुहावेंरे ॥ ४ ॥ जा० ॥ ऊपर भूमि विसाला । देवल दीठा रलीयालारे ॥ जा०॥ विमल मंत्री वरदाई। चक्केसरि देवि सहाईरे ॥ ५ ॥ जा० ॥ पोरवाम वंस वदीतो। जिण दल पतिसाही जीतोरे जा० ॥ देवल तेण करायो । पाहण आरास मंमायोरे ॥६॥ जा०॥ झीणी२ कोरणी झेस्यो। दल मांखण जेम उकेस्योरे ॥ जा०॥ नवी२ भांतिवनाई। जिहां तिहां कोरणीया झिणाईरे ॥ ७ ॥ जा०॥ उत्तरें पाहणजेतो। जोषीजें पाहण ते तोरे ॥ जा०॥ आदिजिणेसर सांमी। प्रतिमा थापी हित कामीरे ॥८॥ जा० उगणीस कोम सोनईया। द्रव्य लागति करि जस लीयारे ॥जा०॥ करजोडीनें आगें। मंत्री जिनवर पाय लागैरे ॥ ए ॥ जा० ॥ पूठै चढीया हाथी। मंमाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल सम वडकोई। भूमंल मांहि न होईरे ॥ जा०॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला । वस्त्तपाल अनैं तेजपालारे ॥ जा० ॥ देवनमी रिद्धिपाई। इहां तियां पिण सफल कराईरे ॥ ११ ॥ जा० ॥ तेहवो जिणहर पासैं। वारकोमनी लागति भासैरे

ज० ॥ देवराणी जेठाणी । आलानी अजब कहांणीरे ॥ १२ ॥ जा० ॥ इहां देवल सोह वधारी । नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारीरे ॥ जा० ॥ कसवट पांहण केरी । मूरति सुरमा रंग हेरीरे ॥ १३ ॥ जा० ॥ देवल सामो दीठो । तेतो लागे नयणे मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केई देवल पासे । लोकजोवे घणो तमासेरे ॥ १४ ॥ जा० ॥ तिणगाउ आगल जाईये । देवल देखी सुख लहीयेरे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा च्यारो । आदिनाथ देव जुहारोरे ॥१५॥ जा० ॥ सोवनमें साते धातो । झिग मिग रही दिननें रातोरे ॥ जा० ॥ मण चवदेंसे चमालो । जिण बिंबनो भाव निहालोरे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली भोम सोभागी । जिणवरथी जसुलय लागीरे ॥ जा० ॥ एहनी करणी वाह वाहो । इहांलीधो लखमी लाहोरे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ए डुंगरीये आवी । जिण जात्रकरे मनभावीरे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावे । नाटकीया नाच करावेरे ॥ १८ ॥ जा० ॥ रातीजोगो दियरावो । जिणवरना जस गुण गावोरे ॥ जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो । जातमलीनो जस लीज्योरे ॥ १९ ॥ जा० आगेथी आवी चाली । वार्ता केई अचरिज वालीरे ॥ जा० ॥ सुणीयेंछे जे कोई । अहिनाणें जो ज्यो तेईरे ॥ २० ॥ जा० ॥ ए तीरथ गुणगावे । जात्रानो फलते पावेरे ॥ जा० ॥ ए तीरथ सम तोले । कुणआवे रूप चंद बोलेरे ॥२१॥ जा० इति आबूजी स्तवनं ॥※॥

॥※॥ अथ श्रीशीतल जिन चैत्य प्रतिष्टा स्तवन ॥※॥

॥ ※ ॥ भवी जिनपूजोरे शीतल जिन पतीरे । नयना नंदन चंद । प्रभुजी विराजेरे सूरति बिंदरेरे । नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जग हितकारीरे जिनजी अवतर्यारे । श्रीदढरथ नृप गेह । श्रीवछ सोहेरे लांछन सूंदरूरे । कनकवर्ण प्रभुदेह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषय निवारीरे संयम संग्रह्योरे । लाधुं केवल नांण । सघन घनाघन जिमधम वरसतारे । विचर्या त्रिभुवन भांण ॥ ३ ॥ भ० ॥ वेदनी प्रमुख जे सेष रह्या उतारे । च्यार अघाती कर्म । दूर निवार्यारे अनुक्रम तेहनेरे । पाम्युं शिव पद सर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रतिकालेरे श्रीजिन राजनोरे । पूजीजे प्रतिबिंब । प्रतिदिन लहीयेरे प्रभु सुप्रसाद थीरे । वांछित फल अविलंब ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब वि

लोकतांरे। डुक्त दूर पुलाय। इंद्रीयनिग्रह सुग्रह संपजैरे। समकित पिण द ढ थाइ ॥ ६ ॥ भ० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्यारे । एहवा वचन वि लास । ते वड्डमानेंरे निज चित्तमें धस्यारे। नेमीसुत भाईदास ॥ ७ ॥ भ० ॥ चैत्य कराव्युंरे सुंदर सोभतोरे । मनधरि अधिक उलास । शी तल प्रभुनेरे बिंब भरावीयेरे। सहस फणा वलि पास ॥ ६ ॥ भ० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमेंरे। माधव मास मझार । उज्जल द्वादसी दिवसै थापीयारे। बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ भ० ॥ एकसो इक्यासी सज्ज। मेलै थयारे। बिंबादिक सुविचार। कीध प्रतिष्टा ते दिन तेहनीरे। विधपू र्वक मन धार ॥ १० ॥ भ० ॥ श्री जिनलाभ सूरीश्वर दीप तारे। श्रीखर तर गछ भाण। तासपसाय में शीतल जिन थुणपारे। विबुध क्षमाकल्पा ण ॥ ११ ॥ भ० ॥ ※ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अढाई दीप २० विहरमान स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वंडुं मनसुध विहरमाण जिणेसर बीस। दीप अढीमें दीपै जै वंता जगदीस। केवल ग्यांननें धारै तारै करि उपगार। किण २ ठामें कु ण २ जिन कहिस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैंतालीस लक्ष जोयण मानुक्ष क्षेत्र प्रमाण। वलियाकारै आवै पुरष्करसीमा जाण। दोय समुद्रे सोहे दीप अढाई सार। तिणमें पनरै करमा भूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समै विच थाल आकार। लांबो पिहुलो इकलख जोयणनें विसतार। मोटो तेहनें मध्य सुदरशण नामें मेर। तिणथी दिसा विदिसांनी गिणती ध्या रे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षणदिसि एहभरत सुभक्षेत्र। पांचसै छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र। उत्तरखंडमें एहवो ऐरवतक्षेत्र कहाय। इण चिहुं करमांभूमी अरा छई फिरता जाइ ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसै चौरा सी जोयण जाण। च्यारकला ए महाविदेह विखंभ वखाण। बावीससै तेरे जोयण एकविजै पहुलाण। एहवी बत्तीस विजय विराजै जेहनें ठाण ॥५॥ मेरु विचै कर पूरव पछिम दोय विभाग। सोलै२ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग। सासते चोथे आरै तारै श्रीअरिहंत। एहवे महाविदेह करम भूमि त्रीजीतंत ॥६॥ पूरवविदेह विजै पुष्कलावति आठमी ठाम। पुंडरीकणीनगरी तिहां श्री

सीमंधर स्वांम । वप्रविजे पचीसमी विजया पुरनो नाम । पच्छिम विदेह बीजो यु गमंधर कीजें प्रणाम ॥७॥ तिमहीज नवमी वच्छविजे वलि पूरवविदेह । नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमुं धरि नेह । नलिनावर्त्त चौवीसमी पच्छिम विदेह वखाण । वीतसोका नगरी तिहां चौथो सुबाहु जांण ॥८॥ ए च्यारेई जिणवर जंबूद्वीप मझार । महाविदेह सुदरशण मेरुतणें परकार । एहवो जंबूद्वीप महागढ जेम गिरंद । खाई रूपै दोइलख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥ (ढाल दीवाली दिन आवीयौ एचाल) ॥ दीपै बीजो दीपए । धन२ धातकीखंम । पिहुलो चिहुं लख जोयणे । मंमल रूपे मंम ॥१०॥ दी०॥ दोइ भरत दोइ ऐरवत । दोइ वलि महाविदेह । करमभूमी पटछे जिहां । तणहीज नामें एह ॥११॥ दी०॥ पूरब पच्छिम धातकी । खंम गिणीजै दोइ । विजयमेरू पूरव दिसैं । पच्छिम अचलमेरु जोइ ॥१२॥ दी०॥ इक२मेरुनें आंतरै । करमभूमि तीन ३। निज२ मेरुथी मांभिनें । लेखो चिहुं दिस लीन ॥१३॥दी०॥ श्रीसुजात जिन पांचमो । छठो स्वयंप्रभू ईस । रिषभानन जिन सातमों । समरीजे निस दीश ॥ ४ ॥ दी०॥ अनंत वीरज जिन आठमो । ए च्यारे जिन राय । पूरव धातकी खंममें । महाविदेह रहाय ॥१५॥दी०॥ पहिली विहुं जिननी परे । विजय नगर दिशिगण । तिणहीज नामें अनुक्रमें । विजय मेरु अहिनाण ॥१६॥ दी०॥ नवमो सूर प्रभु नमुं । दसमो देवविशाल । इम वज्रधर इग्यारमों । त्रिकरण नमुं त्रिहुंकाल ॥१७॥ दी०॥ बारमो चंद्रानन जिन । पच्छिम धातकी मांहि । विचरै च्यारे जिणवरा । अचलमेरु उम्राहि ॥१८॥ दी०॥ एहवो धातकी खंमए । परदक्षणा परकार । अठलख जोयण वींटीयो समुद्र कालोदधि सार ॥१९॥ दी०॥ (ढाल ३ पहिली प्रतिमा एकणमासनी० एचाल) ॥ कालोदधिनें पेलै पारए । वींट्यो भूमी जेम विचालए । सोलह लख जोयण विसतारए । दीप पुष्कर वर अति सुखकारए । (उ०) सुखकार पुष्कर दीप त्रीजो तेहनें आधेपगे । विचपड्यो परवत मानुपोत्तर मनुष्यक्षेत्र तहांलगे । तिण आधिकर अठलाख जोयण अरधपुष्कर एम ए । तिहां करमभूमी छ६ कहीजे धातकी खंम जेमए॥ २० ॥ (ढाल) आधे पुष्करनें पूरव दिसै । मंदरनांमें मेरु तिहांवसै । पच्छिम विद्युमाली मेरुए । इहां किण इतरो नामें फेरए । (उ०) फेरए इतरो इहां नामें अवरठामें को

नही। एक एक मेरे तीन ताने करमभूमी तिहां कही। इम भरत ऐरवत महा विदेहै नांमसरखो हेतए। तिणहीज नामें विजै सगली सासता ध्रमखेतए ॥ २१ ॥ (ढाल) धातकीखंमै तिम पुष्कर सही। इहां खेत्रांनी रचनां वि ध कही। वार२ कहतांए विसतारए। पहिला परलेज्यो सुविचारए। (त्रु०) सुविचार वाकी तेहसगलो नगर तिमहीज मनगमें। पूरवै पछिम जेहनीते तेह तिमहीज अनुक्रमें। श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तिर्थं करा। पूरवै पुष्कर अरधमांहे सरवजीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ (ढाल) वैरसेन वंदुं जिन सतरमो। श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो। देवजसा उगणीसम देव ए। जसोरिद्ध वीसम जिण देवए। (त्रु०) जिणच्यार पुष्कर अरध मां हि कह्या पछिम भागए। तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिशि विचरता वीत रागए। चौरासी पूरवलाख वरसां आउ इक२ जिनतणो। पांचसै धनुष सरीर सोहे सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ (ढाल) कालजघन्यै एजिण वीसए। हिव उतकृष्ट भेदकहीसए। एकसो सत्तरि तिहां जिणवर कहै। पांचे भरते जिमपांचे लहै। (त्रु०) जिणलहै पांचे तेमपांचे ऐरवत मि ल दशहुवा। इक२ विदेहे वत्तीस विजया तिहां पिणछै जू जू आ। एक सो सत्तरि एम जिनवर कोमिनवसय वलि केवली। नव सहस कोमी अवर मुनिवर वंदीयै नित ते वली ॥ २४ ॥ (ढाल) इहां भरतें ऐरवतें आजए पांचमें आरे नही जिनराजए। धन२ पांचे महाविदेहए। विचरै वीसे जिन गुणगेहए। (त्रु०) गुणगेह दोष अढार वरजित अतिसया चौतीसए। चौसठि इंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीसए। तिहां आज तारण तरण विचरै केवली दोय कोमए। दोईसहस कोमि सुसाधु वीजा नमुं वे कर जो मए ॥ २५ ॥ (कलश) इम अढीदीपै पनर करमाभूमि खेत्र प्रमाणए। सि द्धांत प्रकरण मांहभाख्या वीस वेहरमाणए। श्रीनगर जेशलमेर संवत सतर गुणतीसै समै। सुख विजय हरष जिणद सानिध नेहधरि ध्रमसीनमें ॥ ॥ २६ ॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मभूम्यादि विचार गर्भितं विंशति विहरमाण जिनानां वृद्धिस्तवनं ॥ ☼ ॥ १ जंवुद्वीप, २ धातकी खंम, आधो पुष्करद्वीप, एवं २॥ द्वीपमें ५ भरत ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्मभूमीमें विचरता सास्वता २० विहरमानकों मेरा नमस्कार हुवो ॥ ☼ ॥ ॥ ☼ ॥

॥ अथ सकल शास्वताचैत्य नमस्कार स्तवन ॥

॥ ※ ॥ (ढाल वेकर जोमीतांम एचाल) ॥ रिषभानन व्रधमांन। चंद्रानन जिन। वारिषेण नामें जिणाए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद। त्रिभुवन सासता। प्रणमुं बिंब सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोमि। लाख वहुत्तर। चे ईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसें निव्यासी कोमि। साठ लाख सुंदर। भुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ बारे देव लोक प्रासाद। चोरासी लाख। सहस ठिन्नूंनें सातसैए ॥५॥ (ढाल २ आव्यो तिहां नरहर एचाल) ॥※॥ हिवे नव ग्रीवेके पंचानुत्तर सार। चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जांण। अमत्रीस सहस सत साठ अठे गुण खांण ॥ ६ ॥ नंदीसर बांवन कुंमल रुचिक वखांण। चऊ२ चेई हर साठ सवे त्रिऊं ठांण। इकसो चौवीसे गुण प्रतिमा चिऊंनांम। च्यारसें चालीसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसें सोलस कुलगिरि तीस। मेरुवन असरसी दस कुरु गजदंते वीस। मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार। असो अति सुंदर वक्षसकार मझार ॥ ८ ॥ (ढाल३) ॥ दिग्गज गिरचालीस। असीद्रह सुजगीस। कंचन गिर वरुए। एक सहस धरुए ॥ ए ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य। वीस सतरसो आढ्य। सतर महानदीए। पंच चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरुक्ख। इग्यारसें सत्तर सुक्ख। कुंमत्रणसय असीए। वीस जमग वसी ए ॥११॥ (ढाल ४) ॥ त्रिण सहस सो एक निवांणूंरे। जिनवर प्रासाद वखांणूं। वीस'सो ए अंक गुणीयेंरे। तीर्थंकर प्रतिमा थुणीयें ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि ब्यासीरे। प्रतिमा आठ सोंनें असी। सरवालें सव मेली जेरे। जिनवर प्रासाद नमीजें॥१३॥ आठ कोमि सत्तावन लक्खारे। दोयसें निव्यासी कयरुक्खा। हिव प्रतिमा ध्यांन कहीजेरे। जिनवरनी आंण वहीजें ॥ १४ ॥ पनरेंसें बेंतालीस कोमीरे। अमवन लख अधिके जोमी। छत्तीस सहस अधिक कहीयेरे। प्रतिमा सगली सरदहीयें ॥ १५ ॥ (ढाल ५ मी) ॥ जोइस विंतर प्रतिमा सासती। असंख्यात वलि जेहोजी। पाय कमल्ल तेहना नित प्रणमीयें। सोवन वरण सुदेहोजी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदीयें। सुंदर सकल सरूपोजी। पूजें प्रतिमा चोविह देवता। वलिय विद्याधर भूपोजी ॥ २ ॥

वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोक्ष नी दानोजी । भ वियणनें भवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधानोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभि गम प्रमुख मांहि भाषीयो । एसझ अरथ विचारोजी । सांभलितां भण तां सुख संपदा । हियमैं हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० (कलश) ॥ इम सास ता प्रासाद प्रतिमा संथुएपा जिनवर तणा । चिङ्कं नांम जिण चंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणभणें अभिरा मए । त्रिङ्कं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुझ परणांमए ॥※॥ इति शास्वता जिनचैत्य विंबसंख्या स्तवनं ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन बिंब नमस्कार स्तवन ॥

॥ ※ ॥ (देशी सूरती) प्रहऊठी प्रभु ध्यांनधरुं नमुं सिद्ध अनन्त । त्रिभुवन मांहै नमणकरुं जेबिंबरहंत । भुवन पति व्यन्तर योतषि वैमानिक मांह । अ द्भुत सास्वता बिंवनमुं मनधरि उछाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निषध प्रमांण । नीलवंत चित्रसेल कुंमल गजदंत वखांण ॥ रुचक नंदीसर मानु षोत्तर आदि सास्वता जांण । रिषभानन चंद्रानन वारिषेण व्रधमाण ॥२॥ आठकोड अरुछप्पन लाख सताणुं हजार ॥ चवसै छयासी चैत्य सास्वता मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोम्ह मिलाय । तेपन लख चवसै अठ्यासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मतें आठकोम्ह सता वन लाख । दोयसै अठाणुं त्रिभुवनमां सङ्कचैत्यनी साख । अठावन लख पनरैसै वयालीसकोम्ह । अडतीस सहस विंबसङ्क सतअसीकी जोम्ह ॥४॥ मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरुदेस । सोरठ कछ विदेह जां गल कुसावर्त्त कहेस । भंग सोवीर वैराट मलय सांम्हिल सूरसेन । वरण पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससङ्क केकइ अर्द्ध जांण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधांन । दोय कोम्ह अठावन लाख छयासी हजार । नवसै तिङ्कत्तर ग्रांम नगर मांहे विं बअपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्वीप सहू आर्य होय । धातकी खंम्ह सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्द्ध पुष्करमांहें देस गि णाय । ग्रांम नगर मांहै विंब अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धशैल उझिं

त शिखरगिरि मोटाधांम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठांम । तारंगा अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमांण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगजांण ॥ ८ ॥ द्वीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण सङ्घ विंवरहाय । इम त्रिह्नलोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रि करण सुद्धे नित प्रति प्रणमुं सङ्घ गुण लेख ॥ ए ॥ थापना भगवंते कही आगम मांह प्रमांण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखो सुजांण । जे उत्सुत्र वचनके भापक जासी निगोद । अनंत काल भमतां क्षणभर नहिं पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रभुनी देखी भविपांमें वोध । आद्र कु मरकी रीतें देखो आगम सोध । द्रव्यभाव विधिसंयुत सुर नर पूजें जेय । गुण पिंमस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषभादिक चौवीस तिर्थंकर नमुं मन लाय । गणधर सङ्घ संघ मंगलकारी नित प्रति थाय । जन्म मरण सङ्घ डुख दूरें करो दीनदयाल । गछ खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधां न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति त्रिभुवन मंमण सर्व जिन विंव नमस्कार स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांरे ज्ञंतो भरवागईथी घटजमुनाके तीरजो० एचाल०॥ हांरे म्हारे धरमजिणंद सुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवम्हलो ललचाणो जिनजीनी उलगेरेलो । हांरिमुनें थास्पें कोइक समेंप्रभु सुप्रसन्न जो । वातम्हलीतवथास्पे म्हारी सवि वगेरेलो ॥१॥ हांरेकोई डुर्जननो भंभेस्यो माहरो नाथजो । उलव स्ये नहिंक्पारे कीधी चाकरीरेलो । हांरेमोरा स्वामीसरीपो कुणछे डुनियां माहिं जो । जईयेंरे जिम तेहनें घर आस्याकरीरेलो ॥२॥ हांरे जस सेव्यांसेती स्वार थनी नसिद्धजो । गलीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो । हां रेकांइ फूलुंखाईते मि ठाइनें माटेंजो । क्याहीरे परमारथनी नहि मीतडीरेलो ॥३॥ हांरिप्रभु अंतरजा मी जीवतप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाएयो कलियुग वायरोरेलो । हांरे मोरा लायक नायक भगति वछल भगवांनजो । थारूरे गुणकेरा साहिब सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हांरेप्रभु लागी मुझनें ताहरी माया जोरजो । अल गारे रह्याथी होइउ भोगलोरेलो । हांरे कुण जांणे अंतर गतिनी पिण

महाराजजो । हेजेंरे हसी बोलो ठमी आंमलोरेलो ॥ ५ ॥ हांरेताहरे मुखनें मटकें अटक्यूं माहरुं मनजो । आंखमली अणीआली कांमण गारीयुंरेलो । हांरे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुझजो । रातीरे प्रभुरागे नरहे वारीयांरेलो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें हजूरजो । ताहरीरे बलिहारी झंजाउं वारणेरेलो । हांरे कवि रूपविबुधनो मो हन करै अरदासजो । गिरूआ थई मन आंणो कलट अतिघणोरेलो ॥७॥ इतिश्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ※ ॥

॥※॥ समकित द्वारगुंभारे पेसतांजी । पापपडल गयादूररे । मोहन मारुदे वीनो लाभलोजी । दीठो मीठो आनंदपूररे ॥१॥ स०॥ आयूवरजित सातकर्म नीजी । सागर कोमा कोमि हीणरे । स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी । वीरज अपूरवनो घरलीधरे ॥२॥ स०॥ भुंगलभागी आद कषायनीजी । मिथ्यातमो हनी सांकलसाथरे । बार ढवामा सम संवेग नांजी । अनुभव भवनें वेठो नाथरे ॥३॥ स०॥ तोरण बांधुं जीवदया तणुंजी । साथीयो पूरो सरधारूपरे । धूपघ टी प्रभुगुंण अनुमोदनाजी । त्रिगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ स०॥ सं बरपांणी अंगपखालणेंजी । केशर चंदन उत्तम ध्यांनरे । आतम गुण रुची मृग मद मह महेंजी । पंचाचार कुशम परधानरे ॥५॥ स०॥ भाव पूजानें पा वन आतमाजी । पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे । कारणजोगें कारज नीपजेजी खिमा विजय जिन आगम रीतरे ॥६॥ स०॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ※ ॥

॥※॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी । नाम जपुं निसदीसजी । च त्तारी अठ दश दोय वंदियाजी । चिहुंदिस जिन चौवीसजी ॥१॥ म०॥ जो जन जोजन अंतरेंजी । पावम साला आठजी । आठ जोजन ऊंचो देहरोजी दुख दोहग जाये नाठजी ॥२॥ म०॥ भरतें भराव्या भलां देहराजी । सोभै प्यारा थंभजी । आप मूरति करे सेवनाजी । जांणे जोईजै कुम्भजी॥३॥म०॥

गोतमस्वामि तिहां चढ्याजी । आंणी भागीरथ गंगजी । गोत्र तीर्थंकर बांधियोजी। रावण नाटक रंगजी ॥४॥ म०॥ देवे नदीधी मुझनें पांखमीजी । आवुं केम हजूरजी। समय सुंदर कहे वंदनाजी। प्रह ऊगमतें सूरजी ॥५॥ म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अनंत जिन आपज्योरे)॥ एचाल ॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे तुझ अनंत अपार। तेशांभलतां ऊपनीरे। रुचि तिण पारउतार ॥१॥ अजितजिन तारज्योरे। तारज्योदीन दयाल। अजित जि० (आंकणी०) जे जे कारण जेहनोरे । सांमग्री संयोग । मिलतां कार्य नीपजेरे । कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ २ ॥ अ० ता०॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसुरे । लहि कारण संजोग । निज पद कारक प्रभु मिल्यारे । होय निमित्त भभोग ॥ ३ ॥ अ०ता० अ० अज कुल गत केसरी लहेरे। निज पद सिंघ निहाल। तिम प्रभुभक्तें भवि लहेरे । आतिम शक्ति संभाल॥ ४ ॥(अ०ता०)॥ कारण पद कर्त्ता पणेरे करि आरोप अभेद। निज पद अर्थी प्रभुथकीरे। करें अनेक उमेद ॥ ५ ॥ (अ०ता०अ०) अहवा परमातम प्रभूरे। परमानंद स्वरूप। स्यावाद सत्तारसीरे । अमल अखंम अनूंप ॥६॥ (अ० ता०अ०) आरोपित सुख भ्रमटल्योरे। भास्यो अव्यावाध। समस्यो अभि लाखी पणोरे। कर्त्ता साधन साध्य ॥ ७ ॥ अ०ता०अ०॥ ग्राहकता स्वांमित्वतारे । व्यापक भोक्ता भाव। कारणता कारज दशारे । सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ ८ ॥ अ० ता० अ० ॥ श्रद्धा भासन रमणतारे। दांनादिक परिणांम। सकल थया सत्तारसीरे। जिनवर दरशन पांमि॥ ९ ॥ अ०ता०अ०॥ तिणें निर्यामक माहणोरे। वैद्य गोप आधार। देवचंद्र सुख सागरूरे। भाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ०ता० अ० इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सिझायमाला लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढंढण रिषजीनें वंदणा ॥ ऊंवारी ॥ उतकृष्टो अणगाररे ॥ ऊंवारी लाल ॥ अभिग्रहलीधो एहवो ॥ ऊं० ॥ लेस्युं सुद्ध आहाररे ॥ ऊं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी ॥ ऊं० ॥ नमिले शुद्ध आहाररे ॥ ऊं ॥ मूल नले अणसूझतो ॥ ऊं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ ऊं०

॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूछै श्रीनेमिनें ॥ ऊं० ॥ मुनिवर सहस अढाररे ॥ ऊंवा ॥ उतकृष्टो कुण एहमैं ॥ ऊं० ॥ मुऊनें कहो विचाररे ॥ ऊंवा० ॥ ढंढ० ॥ ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ ऊं ॥ श्रीमुख नेमि जिणंदरे ॥ ऊं० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा ॥ ऊं ॥ धन जादव कुल चंदरे ॥ ऊं ॥ ४ ढं० ॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ ऊंवा०॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ ऊं०॥ कीणही मिथ्यात्वी देखनें ॥ ऊं० ॥ आएयो न्नावविसेसरे ॥ ऊं ॥ ५ ॥ ढं ॥ मुऊ घरआवो साधुजी ॥ ऊं ॥ ल्यो मोदक छै सुध्दरे ॥ ऊं० ॥ मुनिवर विहरीनें पांगुख्या ॥ ऊं० ॥ आया प्रन्नुजीनें पासरे ॥ ऊं ॥ ६ ॥ ढं ॥ मुऊलब धै मोदक मिल्या ॥ ऊं ॥ श्रीपति लवधि निधानरे ॥ ऊं ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही ॥ ऊं ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ ऊं ॥ ईटनिवाहै जाइनें ॥ ऊं ॥ चूरें करम समाजरे ॥ ऊं ॥ ८ ॥ ढं ॥ आणी चढती न्नावना ॥ ऊं० ॥ पाम्यो केवलनाणरे ॥ ऊं ॥ ढंढणरिषि मुगतें गया ॥ ऊं ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ ऊं० ॥ ए ॥ ढं ॥ इति ढंढण मुनी सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ धन्नारिषि सिझायलि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीजिन वांणी रे धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मन मैतो मानीरे नंदन ताहरैं ॥ १ ॥ तुं अतिही वैरागीरे धन्ना । धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनमोरे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसि दीसै रे धन्ना । तो विनसूनी (मो०) । अनुमति देतांरे जीन्न वहै नही ॥ ३ ॥ वत्तीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । (मो) । वाणी तो बोलैरे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ वालकतो कामणीरे धन्ना । वय पिण तरुणी । (मो०) । गज गति चालैरे चाल सुहा वणी ॥ ५ ॥ ए घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । (मो०) कोम्हिवत्तीसे धननों तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । (मो०) न्नोगवि लेज्योरे न्नोग सुहा मणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलोरे धन्ना । नहीय सुहेलो । (मो०) । सुगम नही छैरे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर घर न्निक्षा हो धन्ना । गुरुतणी सिख्या । (मो) कहनी तो रहणीरे नही छै सारषी ॥ ए ॥ इक

वारं सुणीये हो धना । आगम नणीये । (मो०) । जिनवर जांणोहो डुक्कर जोगछे ॥ १० ॥ वनवासें रहणा हो धना । परीसह सहनो । (मो) । कोमल केसांरे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें नाप्यो हो अम्मा । कू वन आल्यो (मोरी अम्मा) । डुक्कर मारग जननी दाखीयो ॥१२॥ सुख अभिलापी हे अम्मा । कूवन आखी । (मोरी अम्मा) । कायरमारग जननी दाखीयो ॥१३॥ एजग स्वारथी हे अम्मा । नही परमारथि । (मोरी अम्मा) वीर वखाएयोरे परपदा सऊ सुएयो ॥ १४ ॥ में इम जाएयो हे अम्मा । वीर वखाएयो । (मोरी अम्मा) । एधन जोवन आऊ थिर नही ॥५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा । ढील न कीजे । (मोरी) । जोखिण जाइसु फिर आवे नही ॥१६॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ (मो०) संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥ १७ ॥ छठ २ पारणें हे अम्मा । विग य निवारण ॥ (मो०) ॥ वीरवखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख सं जम पाले हे अम्मा । दूपण टाले ॥ (मो०) ॥ अंग इग्यारह अरथ रू मा नणें ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नव पख वांम ॥ मो० ॥ मास संथारे हो सरवारथ सिद्धि लह्यो ॥ २० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति श्रीधन्नाऋषि सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ कर्म सिझाय लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर सवला । कर्म प्र माणें सुख डुख पाम्यां । सवल ऊवा महा निवलारे प्राणी । कम्र्म समो नही कोई ॥ १ ॥ आदी सरजीनें कम्र्म अटाख्या । वरस दिवस रह्या नूखा । वीरनें वारे वरस डुख दीवा । उपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा० क०॥ साठ सहस सुत माख्या एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सागर ऊवो महापुन्ननो डुखियो । कम्र्म तणा फल ऐसारे ॥ प्रा० ॥ ३ क० ॥ वत्रीस सहस देसांरो साहिव । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें उपना । कर्म कीयो तनु गरे ॥ प्रा० । ४ क० ॥ कम्र्म हवाल कीया हरीचंदनें वेची सुतारा राणी । वार वरस लगमाये आएयो । नीच तणें घर पाणीरे प्रा०॥ ५ क०॥ दधिवाहन राजानी वेटी । चावी चंदनवाला । चोंपदज्यं

चोहटामें बेची । कर्म तणा ए चालारे ॥ प्रा०॥ ६ क०॥ संभूम नामें आठमो चक्री । कर्मे सायर नाख्यो । सोलै सहस जक्ष जुत्ता देखै । पिण किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० ॥ ७ क०॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री । कर्मे कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी थेकांइ । कर्म कोई मति बांधोरे ॥ प्रा०॥ ८ क०॥ छप्पन कोड यादवनो साहिब । कृष्ण महाबल जाणी । अटवी मांहि मूंवो एक लमो । बिल २ करतो पाणीरे ॥ प्रा०॥ ए क० ॥ पांडव पांच महा जूझारा । हारी द्रोपदा नारी । बारै बरस लग बन रड वडिया । भमिया जेम भीख्यारीरे ॥ प्रा०॥ १० क० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता । लखमण रावण मार्‍यो । एक लमै जग सहु नर जीत्यो ते पिण कर्मसुं हार्‍योरे ॥ प्रा० ॥ ११ क० ॥ लखमण राम महा बलवंता । अरु सतवंती शीता । कर्म प्रमाणे सुख डुख पाम्या । वीतक बहु तसबीतारे ॥ प्रा०॥ १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । बेटै बांध्यो मुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकारे ॥ प्रा० ॥ १३ क० ॥ संतीय सिरोमणी द्रौपदा कहीयै । जिन सम अवरन कोई । पांच पुरुषनी हुइ ते नारी । पूरब कर्म कमाईरे ॥ प्रा० ॥ १४ क० ॥ आभानगरी नो जे स्वामी । साचो राजा चंद । मांई कीधो पंखी कूकडो । कर्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० १५ क० ॥ ईशरदेव पारवती नारी करता पुरुष कहावै । अहिनिस महिल मसाणमें बासो । भिख्या भोजन खावैरे ॥ प्रा० १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रातदिवस रहै अटतो । सोलकला ससिधर जगचावो । दिन २ जायें घटतोरे ॥ प्रा० १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । भांज्या ते पिण साजा । ऋद्धि हरष करजोमीनें वीनवै । नमो २ करम महाराजारे ॥ प्रा० १८ क० ॥ इति श्री कर्मसिझाय संपूर्णम् ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ अथ शीता सिझाय लि० ॥

॥ * ॥ जल जलती मिलती घणीरे । झालो झाल अपाररे । सुजाण शीता । जाणें केसू फूलियारे लाल । राता खैर अङ्गाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करै सीतासतीरे लाल । सील तणें परिमाणरे ॥ सु० ॥ लखमण राम

खुशीथयारे लाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलेरे लाल । पावक पासें आयरे ॥ सु० ॥ ऊन्नी जाणें सुरङ्गनारे लाल। अनुपम रूप दिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणारे लाल । ऊन्ना करे हाय हायेर ॥ सु० ॥ नस्म ऊसी इण आगमेरे लाल । राम करे अन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो ऊवेरे लाल । सुपनेंही हीज कोयरे ॥ सु० ॥ तोमुऊ अगनि प्रजालज्योरे लाल । नंही तो पाणी होयरे सु०॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमेरे लाल । तुरत अगनि थयो नीररे ॥सु०॥ जाणें द्रह जलसुं नस्योरे लाल । ऊीलै धरम सुधीररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुशम वरषा कररे लाल । एह सती सिरदाररे ॥ सु० ॥ शीता धीजे ऊतरी रे लाल । साख नरेंसंसाररे ॥ सु०॥ ७ ॥ रलियायत सऊको थयारे लाल। सगले थया ऊरंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसी थयारे लाल । शीता शील सुरंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस जेहनोरे लाल ।.अविचल शील कहायरे ॥ सु० ॥ कहे जिन हरप सती तणारे लाल । नित प्रणमी जै पायरे ॥सु० ॥ ए ॥ इति शीतासती सिज्काय समाप्तम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ अरुप ऩाथी ऋपि सिझाय लि० ॥

॥ ※ ॥ श्रेणिक रय वाम्ही चढ्यो । पेखियो मुनी एकंत । वर रूप कांते मोहियो । राय पुछे कहेरे विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय ऊंरे अनाथीनिग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ (श्रे०) ॥ इण कोसंवी नगरी वसें। मुऊपिता परघल धन्न । परवार पूरें परवस्यो । ऊं हुं तेहनोरे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुऊ वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात पिता सऊ ऊरी रह्या । तोही पिणरे समाधि न थाय ॥ श्रे०॥ ३ ॥ गोरम्नी गुणमन ऊरम्नी । ऊरम्नी अवला नार। कोरम्नी पीमामें सही । नही कीधीरे मोरम्नी सार ॥ श्रे०॥ ४ ॥ वऊ राज वेद्य वुलाइया । कीधला कोमि ऊपाय । वावना चंदन लेइया । पिण तोहीरे दाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ ऊपसमें । तो लेवुं संजम न्नार । इम चिंतवतां वेदन गई। व्रत लीधोरे हरप अपार ॥ श्रे०॥ ६ ॥ जग मांहि को केहनो नही । तेन्नणी ऊंरे अनाथ । वीत रागनो धरम वाहरो । कोइ नहीरे मुगतिनो साथ

श्रे० ॥ ७ ॥ करजोमी राजा गुणस्तवै । धन धनतूं अनगार । श्रेणिक सम कित तिहां लहै । बांदी पुंहचैरे नगरमझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां । कर्म्मनी तूटै कोमि । गणि समय सुंदर तेहना । पाय वांदैरे वे करजोमि ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति अनाथी मुनी सिज्झाय समाप्तम् ॥ ※ ॥

॥ अथ प्रतिक्रमण सिझाय लि० ॥

॥ ※ ॥ करि पमिक्कमणो न्नावसुं । दोयघमी सुन्न झाण ॥ लालरे ॥ परन्नवजातां जीवनें । संबल साचो जाण ॥ लालरे ॥ १ ॥ (करि पमिक्कम णो न्नाव सुं०) ॥ श्रीमुख बीरसमुच्चरे । श्रेणिकराय प्रतिवोध ॥ ला० ॥ लाखखमी सोना तणी । दीयै दिन प्रतिदान ॥ ला० ॥ २ (करि०) ॥ लाख बरस लग तेहने । इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायकनी तु ला । नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ (करि०) ॥ सामायक परसादथी । लहीयै अमरबिमान ॥ ला० ॥ धरमसीह मुनिवर कहे । मुगति तणो ए नि दान ॥ ला० ४ (करि) ॥※॥ इति प्रतिक्रमण सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सप्तव्यसन सिझा[illegible] प्रा[illegible]० ॥※॥

॥※॥ सात बिसननारे संग मतां करो । सुण तेहनों सुबिचार ॥ विवे की ॥ सात नरक नारे न्नाई सातेई । आपै डुक्ख अपार ॥ बिबेकी । १ सा० ॥ प्रथम जुवानैंरे बिसनपड्यां थकां । पांमव पांच प्रसिद्ध ॥ विबेकी ॥ नलराजा पिण इण बिसनें पड्यो । खोइ सहू राज रिद्ध ॥ बि० २ सा० ॥ डुसरै मांस न्नक्षण अवगुण घणां । करै परजीव संहार ॥ बि० ॥ महा स तकनी नारी रेवती । नरक गई निरधार ॥ बि० ३ सा० ॥ तीजै मदरा पा न बिसनतजी । चितधरी बली चाह ॥ बि० ॥ दीपायणरिष डुहव्यो जाद वें । द्वारकानो थयो दाह ॥ बि० ४ सा० ॥ चोथै बिसनें वेश्यावर बसै । लोकमें न रहै लाज ॥ वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो । कुबिसनें रे काज ॥ बि० ५ सा० ॥ पाप आहेमैं कुविसन साचवै । प्राणी हणीयें प्रहार ॥ बि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो । पहिली नरक प्रसिद्ध ॥ बि० ६ सा० ॥ छठै चोरीनें बिसनें करी । जीव लहै डुक्खजोर ॥ बि० ॥

मुंज देवराजायै मारीयो । चावो जंमक चोर ॥ वि० ७ सा० ॥ परस्त्रीय सं गत कुविसनसातमें । हाणि कुजस वज्ज होय ॥ वि० ॥ राणो रावण शीता अपहरी । नास लंकानोरे जोय ॥ वि० ८ सा० ॥ इम जाणी भव्य तुमे आ दरो । सील सुगुरुनीरे सार ॥ वि० ॥ इण भव परभव आणंद अति घणा । कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ए सा० ॥ इति ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ उपदेस सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ दमका नांहि भरोसा साहे । करले चलनेंका सामान ॥ १ ॥ तन पिंजरसें निकश जाइगा । छिनमें पंछी प्राण ॥ द० १ ॥ लख चौरासी जोजन भटक्यो । उपनों गरभा धान । सवानवमास वश्यो अंधकूपमें । मनुष्यरूप सनमान ॥ द० २ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है ॥ सुखमें खाण अ रूयाण । भीरपम्यां तेरे कोइयन साथी । साथी दान अरु ध्यान ॥ द० ॥ ॥ ३ ॥ आशा त्रिशनां विकथा निद्रा । कुमता रूप निधान । दिन २ वधे पापकी संगत । व्यापें क्रोध अरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलते फिरते सोवत जागत । करत खाण अरुपाण । छिन २ आयु घटतहे तेरो । होत देहकी हाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपत में । होय रह्या गलतान । देखत २ विनस जायगा । मतकर मान गुमान ॥ द० ॥ ६ ॥ फुटा सब यह जगत पसारा । नारी विषकी खान । माया ममता आदिके वेरी । इनसें कहा पहचान ॥ द० ॥ ७ ॥ पांचूं चोर मुंसें घर तेरो । इन की खोटी बाणि । अठवेरी तेरे संग फिर तुहे । मोह बमा सुलतान ॥ द० ॥ ॥ ८ ॥ कोइ रहणें पावे नही जगमें । यह तु निहचे जानि । अजज्ञं ठां मि समझि कुटलाई । मूरख तर अज्ञान ॥ द० ॥ ए ॥ भाई बंध अरु स जन संबंधी । राखें तेरा मान । अंतसमें कोइ कामन आवे । किसपे मान गुमान ॥ द० ॥ १० ॥ जप तप शील पालो सुभ संगत । देह सुपात्रे दान । संहित साध चरण चितल्यावो । प्रभु भज तज अभिमान ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ इति उपदेश सिज्झाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥※ जंजं विहिणा लिहिअं । तंतं परिणमइ सयल लोयस्स । इह जा णे विणुधीरा । विज्जरेवि नकायरा हुंति ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ अथ बाहूबलजीनी सिझाय लि० ॥

॥ ※ ॥ ईम्डर आंबा आंबलीरे । एचाल ॥ ※ ॥ बाहूबल चारित लीयोरे । साचो धरिवैराग । भरतेसर इम वीनवैरे । वार २ पाय लाग । हरष भर मुझसुं बोलज्योरे (थानैं बाबाजीरी आण । थानें रूषभ देव जीरी आण । थेतो मकरो खेंचा ताण । थेतो माहरै जीवन प्राण) । हरष० । मुझ सुंबो०। (आंकणी) ॥१॥ ऊंतो भाई ताहरोरे । जेमैं कीधो दोस । तो पिण खमज्यो भाई मारे । गरुवा नकरै रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बांह देई मिलारे । जोवो आंख उघाड । बोलो मीठा बोलमारे । पूरो मननो लाम ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलो नाखुं तोमनेंरे । जिण कुल जाई बेढ । नायो आयुध सालमेंरे । ज्युं बांभण घर ढेढ ॥ ह०॥ ४ ॥ भाभीना उलंभमारे। किमसंभलायै कान । जातां पांव बहै नहीरे । तुझनें मुंकी रान ॥ ह० ॥ ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हूं हारीयोरे । देव भरै छै साख । तुझ सरिखो जगको नहीरे । मुझ सरिषाछैं लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथै सूरज आवीयोरे । प सीनो सारो गात । वैसो भोजन जीमियैरे । खारक दाख निवात ॥ ह०॥ ॥७॥ निभांणूं एकण मतैरे । मुझनें लोभी जाण । ते सङ्क मुझनें परि हस्योरे ज्युं बरसालै छाण ॥ ह०॥८॥ तुंमाहरै जीवन आतमारे । तुंहीज माहरै बांह । दिस सूनी भाई विनारे । आवोनें घरजांह ॥ ह० ॥ ए ॥ बोल घणाई बोलियारे । भरतेसर महाराज । हाथीना दांत जे नीकल्यारे । ते पाछान वीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अभिमानी सिर सेहरोंरे । बाहूबल रिषिराय । सीधा करम खपायनेंरे । विमल कीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ ॥ ※॥ इति बाहूबल सिज्झाय संपूरणम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ चेलणा महासती सिज्झाय लि० ॥

॥ ※ ॥ वीरवांदी वलतां थकांजी । चेलणा दोठेरे निग्रंथ । राति वन मांहि काउसग रह्यो जी । साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी । सतीय सीरोमणि जाण । चेडा राजानी साते सुतां जी । श्रेणिक शीयल परमाण ॥ २ ॥ वी० ॥ शीत ठंगार सवलो पडै जी । चेलणा प्रीतम साथ । चारितीयो चित्तमें वस्यो जी । सोवडि बाहिर

रसो हाथ ॥ ३ ॥ वी० ॥ ऊनक जागी कहै चेलणा जी । किम करतो ऊस्यै तेह । कुसती मन माहिं ए कुणवस्यो जी । श्रेणिक पडचोरे संदेह ॥ ४ ॥ वी० ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी । श्रेणिक दीयोरे आदेस । नगवंत सांसो नांजियो जी । चम कियो चित्तनरेस ॥५॥ वी०॥ वीरवांदी वलतां थकां जी । पेसतां नगर मकार । धुंवानो घोर देखी करीजी । जाजा हरे अनय कुमार ॥ ६ ॥ वी० ॥ तातनो वचन पाली करी जी । व्रतलियो अनय कुमार । समय सुंदर कहै चेलणा जी । पामिया नवतणो पार ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति चेलणा महासती सिज्झाय संपूर्णम् ॥ ॥※॥

॥ अथ वैराग्य सिज्झाय लि० ॥

॥ ※ ॥ भूलो मन नमरा कांइनमें । नमियो दिवसनें रात । माया रोवांध्यो प्राणीयो । नमीयो परमल जात ॥ १ ॥ नू० ॥ कुंन काचो काया कारमी । जेहना करोरे जतन । विणसतां वार लागै नही । निरमल राखोरे मन ॥ २ ॥ नू० ॥ केहना ठेरू केहना वाठरू । केहनां मायनें वाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ नू० ॥ आस्यातो डूंगर जेवमी । मरवो पगलांरे हेठ । धन संची संच कांइ करो । करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ नू० । लख पति ठत्र पति सवगए । गएलाखोंके लाख । गरव करीरे गोखे वैसता । नए जलवल राख ॥ ५ ॥ नू० ॥ नव सायर जल डुख नस्यो । तिर वेठोरे जेह । विचमें वीह सवलो अठै । करमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ नू० ॥ उलट नदी मारग चालवो । जायवो पहिलेरे पार । आगलि नदी हटवाणीयो । संवल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ नू० ॥ मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । लख पति लाकम्न मांय ॥ ८ ॥ नू० ॥ महमंद कहै यस्तु वोरीये । जे कुठ आवेरे साथ । अपणो लान उवारीये । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ नू० ॥इति॥

॥ अथ वाहूवलजी सिज्झाय लि० ॥

॥ ※ ॥ राजतणा अति लोनीया । नरत वाहूवल फूंफेरे । मूंठि उपामी मारिवा । वाहूवल प्रतिवूंफेरे ॥ १ ॥ वीरा मांरा गजथकीऊतरो । व्रा

ह्मी सुंदरी भासैरे । ऋषभ जिणेसर मोकली । बाहूबलनें पासैरे ॥ १॥बी० (गजचढ्यां केवल न होईरे) ॥ २ ॥ बी० ॥ लोचकरी चारितलीयो । व लि आयो अभिमानोरे । लघु बंधव वांडुं नही । काउसग्ग रह्यो सुभ ध्या नोरे ॥ ३ ॥ बी० ॥ वरस दिवस काउसग रह्यो । बेलडियां वींटाणोरे । पंखी माला मांभीया । सीत ताप सूकाणारे ॥ ४ ॥ बी० ॥ साधवी वचन सुणया इसा । चमक्यो चित्तमभारोरे । हय गय रथमें परिहस्या । पिण न विमुंक्यो अहंकारोरे ॥ ५ ॥ बी० ॥ वैरागै मन वालीयो । मूंक्यो निज अभिमानोरे । पांव उपाभी वांदिवा । ऊपनों केवल नाणोरे ॥ ६ ॥ बी० ॥ पहुतो केवलि परषदा । बाहूवल रिषि रायारे । अजर अमर पदवी लहै । समय सुंदर वंदै पायारे ॥ ७ ॥ बी० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति बाहूबल सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अरणकमुनी सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी । तभकै दाभै सीसोजी । पाय उ भरांणारे बेलूपर जलै । तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ १ अ०॥ मुख कमला णोरे मालतीफूलज्युं । ऊभो गोखनें हेठोजी । खरै डुपहरैरे दीठो एकलो । मोही माननी मीठोजी ॥ २ अ० ॥ वयण रंगीलैरे नयणे वेधियो । रिषथं भ्यो तिणवारो जी । दासीनें कहै जाय उंतावली । उरिष तेडी आणो जी ॥ ३ अ०॥ पावन कीजे रिषिघर आंगणो । वहिरो मोदक सारो जी । नव जोवन रस काया कांइदहो । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ अ० ॥ चंद्रा वदनीरे चारित चूकव्यो । सुखविलसै दिन रातोजी । इकदिन गोखैरे रमतो सोगटै । तव दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करती मायफिरै । गलियै गलियै मभारो जी । कहि किण दीठोरे माहरो अरण लो । पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थीरे जननी पाय न म्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग् धिग् पापीरे माहरा जीवनें । एहमें अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुखंतीरे सीला ऊपरै । अरणक अणसण कीधोजी । समय सुंदर कहै धनते मुनिवरू । मनवंछितफल सी धोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥※॥

॥ अथ सचित्त अचित्त सिझाय ॥

॥ ※ ॥ (ढालचौपईनी) ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा । गुरुपद पंकज प्रणमीमुदा । वस्तु तणा कहुं काल प्रमांण । सचित्त अचित्त विधि लहै जिम मांण ॥ १ ॥ विहुं ऋतु मिली चौमासा मांन । षटऋतु मिलीनें वरिस प्रमांण । वर्षा शीत उष्ण त्रिणकाल । त्रिहुं चौमासें वरस रसाल ॥ २ ॥ श्रावण भाद्रव आसू मास । काती इम वरसाला वास । मागसिर पोस माहनें फाग । ए च्यारे सीयाला लाग ॥३॥ चैत्र वैशाखनें ज्येष्ट आसाढ । उष्णकाल एच्यार अगाढ । वर्षा शरद शशिर हेमंत । वशंत ग्रीष्म षट्ऋतु इम तंत॥४॥ राध्युं विदल रहै चउयाम । उदन आठपुहर अभिराम । प्रहरसोल दधि कांजी ठाठ । पछै रहैतो जीवनिवास ॥ ५ ॥ पापड लोइया वटक प्रमांण । च्यारपहर तिम पोलीमांन । पनर दिवस वर्षापकवान । त्रीसदिवस सीयाला मांन॥६॥ वीस दिवस उन्हाले रहै । पछै अभक्ष थायै जिनकहै । मात्र प्रमुख नीवी पकवांन । चलितरसै तसकाल प्रमाण ॥ ७ ॥ धांन धोयण ठवणी परमाण । दायघमी जरवांणी जांण । फल धोयण एक प्रहर प्रमाण । त्रिफला जल ठवणीनुं मांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिउं जेह । सुध्द उष्णजल कहियै तेह । प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण । वर्षा शीत उन्हालै जांण ॥ ९ ॥ श्रावण भाद्रवमैं दिनपंच । मिश्रलोट अणचालित संच । मिगसर पोसै त्रिण दिन जांण । आसू काती चउदिन मांन ॥ १०॥ माह फागुणैं कह्यो पण याम । चैत्र वैशाष चउप्रहर प्रमाण । जेठ आसाढ प्रहर त्रिण जोय । तिण उपरांत सचित्त ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षमधान कपास । जव त्रिणवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तुंवरदाल । पांच वरसै होइ अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचित्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय ॥१३॥ हरमै पीपर मिरच बिदाम । खारक द्राख एला अभिराम । जोयण शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु प्रवहणनी जेह । थाइ अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ वारपहुर रहै ऊगलीराव । सोलपहुर राईतां अजाव । कमाह विगय परिसेक्यो धांन । पहिरचोवीस

गोमूत्रनुंमान ॥१६॥ अति खारुं घृत कालातील । पलटाई वर्णादिक रील । काचो दूधरहै बळुवार । एह अन्नक्ष कहै मुनिसार॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेक्या धांनपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी । विदलपरैं ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंभी गिएयो । काल प्रमाण सवि केहनुं भणयो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु अन्नक्ष कहिवाय ॥१९॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राद्ध विधैं अख्यरां प्रतीत। एकालादिक ठहरां जेथाय। तेह अचित्त थापना न थाय॥ २०॥ गीतारथनें वयणें जोय। आचीरण अनाचीरण होय। आई धांन अंकुर नीकलै । तबते वस्तु अन्नक्षमां मिलै॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवण हरियाल। आवैं जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले वानी नही तसुभाखि ॥२२॥ इम बोल्यों लवलेश विचार । विस्तर प्रवचन सारोद्धार। धीरविमल पंम्दित सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिझाय ॥२३॥ इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिझाय ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ १९दोश काउसग्ग सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी सदोष काउसग्ग तणा । बोलुं श्रुतअनुसारैं सुएया ॥१॥ घोटक दोष कह्यो बलिएह । वांको पगराखै वलिजेह । लत्तादोष बीजो हवैसुणो। मील हलावै जे अति घणो ॥२॥ ठींगण लैई जेरहै। थंभदोष ते तीजो कहै। मालदोष चौथो कह्यौ एह । मस्तक अम्कावी रहैजेह ॥३॥ पग अंगूठा मेलीरहै । उध्दिदोषते पंचमकहै। बेऊं पग भेलाकरै जेह । नउल दोष छठो कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखै निजहाथि। शवरी दोष कह्यो जगनाथ। मुख चालना करै अति घणी। खलित दोष अठम तेसुणी ॥५॥ घूंघट ताणीनें जेरहै । बळुदोष ते नवमो लहै । लम्ब थडतूं पहिरैं पहिरणूं । दशमे दोष लंबोत्तर भणूं ॥६॥ हृदय स्थल आछादितरहै । ते थण दोष इग्यारमो लहै । वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह। संयति दोष बारसमो एह ॥७॥ भांपण चालोकरै अति घणुं। भमुहदोष तेरसमौ भणुं । अंगुली हलावै संख्याकाज । चवदमो दोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करै। वायस दोष

पनरमो धरै । पहिरावस्त्र संकोमी रहै । कपित्थदोष सोलसमो लहै ॥ए॥ मस्तक धूणावै अतिघणुं। ते सिरकंप सतरमो नणुं। महिरानी परि जे वडव मे। वारुणी दोष अठारमो चमें ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो नगणी समो। तेह करी काउसग मतगमो। त्रिणदोष एमाहिला टले। सोल दोष साधवीनें मिलै ॥ ११ ॥ लंबुत्तर१ थणनें२ संयती३ । दोष एह बोल्या जगपती। वहूदोष चौथौ जवमिलै। च्यार दोष श्राविकानें टलें ॥ १२ ॥ काउसगथी समता सुख थाय। कठिन कर्मनी कोमि पुलाय। काउसग करतां सवि सुख होइ। काउस ग सम तप नकह्यो कोय॥१३॥ दोष रहित काउसग कीजीयें । जिम स हिजे शिवफल लीजीयें। पंमित धीर विमलनो सीस। कवि नय विमल कहै निशिदीश ॥ १४ ॥ इति काउसगना १ए दोष सिझाय संपूर्ण ॥ ॥✻॥

॥✻॥ अथ अलोयण स्वरूप सिझाय लि० ॥✻॥

॥✻॥(ढाल सफल संसार एचाल ॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो । जास परसाद नपगार थाये घणो। सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांजली। लहीय समकित अनें विरति लहीयें वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करे। जिण थकी जीव संसार सागर तिरे। दोष लागा जिके गुरु मुख आलोइये। जीव निर्मल हुवें वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागै तिके च्यार प्रकारना। धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा। किणही कारण वसे पापजे कीजीयें। प्रथम ते नांम संकप्प कहीजीयें ॥३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुखे करी। दोष ते बीय परमादसंज्ञा धरी। कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां। दर्प्पइण नांमकरी दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेंगि नरकरे जिको। चौथो आकुट्टियादोष ऊपजे तिको। अनुक्रमें च्यारए अधिक इक एकथी। दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥(ढाल२) अन्यदिवस कोई मागधआयो पुरंदरपास ए चाल ॥✻॥ पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय। ग्याननाउपगरण तणी आशातन कीधी होय। जघन्यथी पुरमढ एकासणो आंबिल उपवास। अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताईतास ॥ ६ ॥ एजो खंमित थाये अथवा किहांइ गमाय। तोवलि नवा करायां दोष सङ्ग मिटजाय। थापना अणपमिलेहां पुरमढनो तपधार। गिरतां एकास

एनें गमतां चौथ विचार ॥७॥ दर्शनना अतीचार तिहां पुरमढ्ढजघन्य । एकासण आंबिल अठम चिऊंभेदे मन्न । आशातन गुरुदेवनी साहमीसुं अप्रीति । जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विनास्यां चौथ प्रसिद्ध । वि ति चउरिंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध। बहु बि ति चौरिंद्रिय हएयां बि ति चउ उपवास । संकल्पादि चिऊंविधि दुगुणा दुगण प्रकाश ॥ ए ॥ उद्देही कुलिया वम्मा कीडी नगरा भंग । बहुत जलोयां मूंक्या दसउपवास प्रसंग । वमन विरेचन कृमिपातन आंबिल इक एक । जीवांणी ढोलंतां दोइउपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होइ । दोइ त्रिण आठ दसै उपवासैं आलोयण जोइ। बहुपंचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दश वीश । चिऊं प्रकारै चढती आलोयण सुणलेसीस ॥११॥ पंचेंद्रीनें लकम्मी प्रमुखैं कीध प्रहार । एकासण आंबिल उपवासनें छठ विचार। साध समक्खें लोकसमक्खें राजसमक्ख । कूम्मा आलदीयां दुइचौथरु छठ प्रतक्ख ॥१२॥ उपवास दश दंम्मायां तेम मरायां वीस । इकलख असीसहस नवकार गुणो तजिरीस । पख चौमाश वरस लग इक त्रिण दश उपवास । अधिको क्रोधकरै तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवम्मना दोषकीयां गुरु ऊपर रोस । जीवविराधन कीधा बहु असतीना पोस । करीय दुवालस बारहजार गुणो नवकार । मिच्छा दुक्कम्म देई आलोवो वारो वार ॥१४॥ (ढाल ३) बेकर जोम्मीतांम ॥एचाल॥ विणकीधां पचखांण । विणदीधा वांदणा। पम्मिकमणा विध पांतरैए। अणोऊानें असिझाय । तिहां अविधे भणयां । इक२ आंबिल आचरैए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र । निवी आंबिल। भांगे आलोयण इमेंए । एक पांच षट आठ। नवकरवालीय । गुण नवकार अनुक्रमेंए ॥ १६ ॥ उपवासभंग उपवास । आंबिल ऊपरां । अधिकोदंम्म वखांणीयेए। पांचम आठम आदि । भंगकीया वली । फिरग्रही पातिक हाणीयैए ॥१७॥ ऊखल मूशल आग । चूलो घरटीये । दीधै अठम तपकरैए । मांगीसूई दीध । कातरणीछुरी । आंबिल चढता आरदरैए ॥१८॥ जीव करावै युद्ध । रात्री भोजन । जल तिरणो खेलण जूओए । पापतणा उपदेश। परद्रोह चीतव्यां । उपवासइक२ जूजूओए ॥ १९ ॥ पनरै करमादांन । नियमकरी भंग । मद्यमांस माखण भण्या

ए । आलोयण उपवास । संकप्पादिक । चिउं भेदें चढता लिख्याए॥२०॥ बोल्यां मिरखावाद । अदत्ता दांनत्युं । जघन्य एकासण जांणीयै ए । अति उत्कृष्टी एण । जांण आलोयण । उपवास दस २ आंणीयै ए ॥२१॥ (ढाल ४) ॥ सुगण सनेही मेरे लाला(एचाल)। चौथें व्रत भागें अतीचार । जघन्य छठ आलोयण धार । मध्यइ दस उपवास विचार । उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥२२॥ परिग्रह विरमणदोष प्रसंग । तीन गुण व्रत मांहे भंग । च्यार । सिक्षा व्रतनें अतीचारे । आंबिल त्रिणप्रत्येकें धारै ॥२३॥ सीलतणी नव वाडि कहाय । तिहां जोलागो दोष जणाय । वीर्यनें फरस हुआं अविवेके । इक आंबिल कीजे प्रत्येकें ॥ २४ ॥ साधु अनें श्रावक पोसीध । एकेंद्रीस चित्त संघट्टे कीध । वीसर भोलैं सचित्त जल पीध । दंड एकासण आंबिल दीध ॥२५॥ विण धोआं विण लूहा पात्रै । एकासण तिम पुरमढ मात्रै । गई मुंह पत्ती आंबिल सारो । तिम उवै अठम अवधारो ॥२६॥ च्यार आगार छंडीमी राखै । व्रत पचखांण करै पट् साखै । दोषे मिछामि डुकड दाखै । आलोयणलेतां अभिलाखे ॥ २७॥ आलोयणनो अति विस्तार । पूरो कहितां नावै पार । तोपिण संक्षेपै तंतसार । निरमल मन करतां विस्तार ॥ २८ ॥ धन श्रीवीर जिनेसर स्वांमी । जसु आगम वचनें विधि पामी । जीतकल्प ठांणअंगै आदि । वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २९॥ (कलश) इम जेह धरमी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें । एकांत पूछै गुरु बतावै शक्तिवय तसु जो इनें । विधएह करसी तेहतिरसी धरमवंत तणें धुरै । ए तवन श्रीध्रमसीह कीधो चौपनें फल वधि पुरै ॥ ३० ॥ इति आलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ ※ ॥ अथ क्रोधनी सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कडुवारे फलछे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जाणिइं । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोडि पूरवतणो । संजम फल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥ साधु घणो तपियो हुंतो । धरतो मन वैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो। चंड कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि उठै जे घर थकी । ते पहलुं घरबालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क०॥४॥

क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवलनांणी । हांणि करे जे हेतनी । जालवजो इमजाणी ॥ क० ५॥ उदय रतन कहै क्रोधनें । काढजो गलें साही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ६ ॥ ※ ॥※॥ इति क्रोधसिझाय सं० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मानकी सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥※॥रेजीव मांन नकीजियै । मानें विनय नआवैरे । विनय विना विद्या नहीं । तोकिम समकित पावैरे ॥१॥ रे०॥ समकितविन चारित्र नहीं । चारित्र विण नहीं मुक्तिरे । मुक्तिना सुखछै सास्वता । तेकिम लहीइं जुक्तिरे॥२॥रे० विनय वमो संसारमां । जगमांहे अधिकारीरे । मानें गुणजाये गली । प्राणी जोज्यो विचारीरे ॥३ ॥ मानकियो जो रावणें । ते तो रामें मास्योरे ॥ डुरजोधन गरवै करी । अंतेवर ते हास्योरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूका लाकडा सारीखो । डुख दाई ए खोटोरे । उदय रतन कहै माननें । देज्यो तुमे देसोटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ ※ ॥ इति मानकी सिझाय संपूर्ण ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ मायाकी सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समकितनूं मूल जाणीये जी । सत्य वचन साख्यात । साचा में समकित वसें जी । मायामां मिथ्यातरे (प्रांणी मकरिस माया लगार ॥ १ ॥ मुख मीठी फूठे मनेंजी । कूम कपटनो कोट । जीभेंतो जी जी करै जी । चितमां ताके चोटरे ॥ प्रां० ॥२॥ आप गरजें आघो पडै जी । पिण न धरे विसवास । मनसुं राखे आंतरोजी । ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेसुं बांधी प्रीतमी जी । तेसुं रहे प्रतिकूल । मयल नछंडे मन तणोजी । ए मायानो मूलरे ॥ प्रां० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी । मित्र सुं राखैरे भेद । मल्लि जिनेसर जाणजो जी । तो पाम्या स्त्री वेदरे प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रतन कहै सांभलोजी । मेलो मायानी वुद्धि । मुगति पुरी जावा तणोजी । ए मारगछै सुद्धरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥※॥ इति मायाकी सिझाय संपूर्ण ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ लोभकी सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे । लोभै जन पामें खोभनारे ।

लोभें माला मन मोहला करैरे । लोभें ऊवट पंथे संचरैरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहना लेउं भामणारे । वलि पाय नमीनें करुं खामणारे । लोभे मरजादा नरहे केहनीरे । तुमे संगत मेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभे घर मेहली रणमां मरैरे । लोभै ऊंचते नीचुं आचरैरे । लोभें पापभणी पगलां भरैरे । लोभे अकारज करतां न ओसरैरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोभै मनडुं नरहे निरमलुंरे । लोभें सगपण नासें वेगलुंरें । लोभें नरहै प्रेतनें पावलुंरे । लोभे धन मेले वड़ एगलुंरे ॥ तु० ॥ ४ लोभें पुत्र प्रतें पिता हणेरे । लोभें हत्या पातिक नविगणेरे । ते तो दाम तणे लोभें करीरे । ऊपर मणिधर थायें ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोभनें थोभ दीसे न हीरे । एहवो सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरो । लोभें चक्री संभूम नामें जुवोरे । ते तो समुद्र मांहे बूडी मुवोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणीनें लोभनें ठंभ ज्योरे । एक धर्म सुं ममता मंभज्योरे । कवि ऊदय रतन भावे मुदारे । वंडुं लोभ तजे तेहनें सदारे ॥ ७ ॥ इति श्री लोभकी सिझाय संपूर्ण ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ भरत चक्रवर्त्ति सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भरतजी मन हीमें वैरागी । मनहीमें वैरागी । भरतजी म० ॥ टेक ॥ सहस बत्तीस मुगट बद्ध राजा । सेवा करें वडभागी । चौसठ सहस अंतेवरि जाके । तोही न ऊवा अनुरागी । (भरतजी मनहीमें वैरागी) ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके । छलुं कोडहे पागी । लाख चोरासी गजरथ सोहियें । सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार कोड मण अन्नज ऊपजे । लुंण दशलाख मण लागे । तीन कोड गोकुल नित दूझे । एक कोडि हलसागी ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस बत्तीस देस बड़ भागी । भए सरवके त्यागी । छलुं कोड गांमके आध पति । तोही न ऊवा अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निध रतन चऊगमा वाजें । मन चिंता सरव भागी । कनक कीरत मुनिवर वंदतहे । दीजो मुगति में मांगी ॥ ५ ॥ भर० ॥ ※ ॥ इति भरतजीकी स्वाध्याय संपूर्ण ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गर्भाधान ऊतपत्ति विचार वैराग्यसि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऊतपति जोय जीव आपणी । मनमांहि विमास । गरभावासे

जीवड़ो । वसीयो नवमास ॥ १ ॥ उ० ॥ नार तणी नाभ्भीतलै । जिन व चनें जोय । फूलतणी जिम नालिका । तिम नाभ्भी है दोय ॥ २ ॥ उ०॥ तसुतल जोनि कहीजियै । वर फूल समान । आंव तणी मांजर जिसो । तिहां मांस प्रधान ॥ ३ ॥ उ० ॥ रुधिर श्रवै तिहां मांसथी । रितुकाल स दीव । रुधिर शुक्र जोगें करी । तिहां उपजै जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अ पावन पवनें करी । वासित डुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो । हिव हून्त अंध मंध ॥ ५ ॥ उ०॥ नाभ्भी वांसतणी घणुं । भरीयै रूघाल । तातीलोह सिलाकतै । जालै ततकाल ॥ ६ ॥ उ०॥ तिम महिलानी जोन में । है नव लख जीव । पुरुष प्रसंगे तेसहू । मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ उ०॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां । पांचेइंद्री जेह । तेह तणी संख्या नही । तजो कारज एह ॥ ८ ॥ उ० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां । उत्कृष्टीवार । जीव जघन्य पणें टिकै । एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ ॥ उ० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै । मऊरत परिमाण । वार बरसनी थिति तिहां । उत्कृष्टी जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभ्भै कोइ जीवड़ो । जंपै जग दीस । फिर नर आवंतो रहै । संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ०॥ महिला वरस पिचावनें । कहीयै नीरबीज । पिचहत्तर वरसां पछै । थायै पुरुष अवीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जी मणी कूखै नर वसे । तिम वामें नारि । बीच नपुंसक जाणीयै । जिन वच न विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आयो गरभ्भावास । सातदिना ऊपरि रहै । नरगत नवमास ॥ १४ ॥ उ० ॥ आठ वरस तिर यंच रहै । उत्कृष्टै काल । गरभ्भा वासै भोगव्यां । इम वऊ जंजाल॥१५॥ उ० ॥ कारमण कायें कर लीयो । पहिलो आहार । शुक्र अनें श्रोणित तणो । नही कूठ लिगार ॥ १६ ॥ उ० ॥ परजापत पूरी नही । तिहां वि सवा वीस । तिण आहारै तूंथयो । ऊदारक मीस ॥ १७ ॥ उ० ॥ पवन अठै उदरै तिको । ऊपजायै अंग । अगनिकरै थिर तेहनें । जल सरस सुरंग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणें प्रथवी रचै । अवगाह आकास । पांच भूत शरीरमें । इम करै प्रकाश ॥ १९ ॥ उ० ॥ वारै मऊरत तां पछै । वि लसै नरनारि । गरभ्भतणी उतपति तिहां । नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलिल ऊवै दिन सातमै । अरबुद दिन सात । अरबुदथी पेसी

वधै । घनमांस कहात ॥ २१ ॥ उ०॥ मांसतणी वोटी हुवै । अमताली स टंक । प्रथम मास जिनवर कहै । मन धरो निस्संक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सुथिर मांसत्रीजै हुवै । द्विवै तीजै मास । करम तणें वसि ऊपजै । माता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथैं मासें मातना । प्रणमै सङ्ग अंग । हाथ अनें पग पांचमें । तिम सुतकोसंग ॥ २४ ॥ उ०॥ पित्त रुधिर छठे पमैं । सातमें इण संच । नव धमणी नस सातसै । पेसी सय पंच ॥२५॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें । साढी तीन कोमि । उपजे हुएँ केतलैं । इम आगम जोड ॥२६॥ उ० ॥ आठमै मासैं नीपनो । इम सकल शरीर । ऊंधें शिर वेदन सहै । जंपै जिनवीर ॥ २७ ॥ उ० ॥ शोणित शुक्र सहे पमा । लघुनें वमनीत । वात पित्त कफ गरन्नथी । थायै नरनीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सुंहटी लगै । वालकनो नाल । रस आहार करै तिहां । आवै तत काल ॥ २९ ॥ उ० ॥ जननी द्यै आहार ते । जाय नाडो नाड । रोम इंद्री नख चख वधै । तिम मींजीने हाम ॥ ३० ॥ उ०॥ सवङ्ग अंगें कलसै । सरवंग आहार । कवल आहार करैं नही । गरभे सुविचार ॥ ३१ ॥ उ० ॥ मास वीजे किण जीवनें । थायै ज्ञान विभंग । अथवा अवधि कही जीयैं । तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥ उ० ॥ कटक करैं वैक्री यपणें । कूकी नरकैं जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण थाय ॥ ३३ ॥ उ० ॥ ऊंधेंमुख गोमा हीयै । सहि तो वङ्ग पीम । दृष्टि आगलि विहुं हाथसुं । रहे मुठीभीम ॥ ३४ ॥ उ० ॥ नरविण वस्त्र जलादिकें । ऊपजै आधान । अथवा विहुं नारी मिल्यां । कह्यो गरभ विधान ॥ ३५ ॥ उ० ॥ कोई उत्तम चिंतवै । देखी डुख वास । पुन्य करी तिम नीकलुं । नाऊं गरभावास ॥ ३६ ॥ उ० ॥ ऊंठकोमि चांपै सुई । कोई समकाल । तिणथी गरभे अठगुणी । सहैं वेदन वाल ॥ ३७॥ उ०॥ माता भूखी भूखीयो । सुखणी सुखथाय । माता सूती ते सूवैं । परवस दिन जाय ॥ ३८ ॥ उ० ॥ गरभ थकी डुख लखगुणो । जामें जिनवार । जन्मथयां डुख वीसरें । धिग् मोह विकार ॥ ३९ ॥ उ० ॥ उपज्या अशुचि पणें जिहां । मल मूत्र कलेस । पिंम अशुचि करि पूरीयो । किहां सुचि लवलेस ॥ ४० ॥ उ० ॥ तुरत रुदन करतो थको । जामें जिणवार ।

मात पयोधर मुख ठवै । पीयै दूध तिवार ॥ ४१ ॥ ज० ॥ दिन दिन दीसै दीपतो । करै रंग अपार । लाम कोम माता पिता । पूरै सुविचार ॥४१॥ ज० ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिनें । नव नरनें जाण । रात दिवस वहिता रहै । चेतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ ज० ॥ सात धातु साते त्वचा । ठे सातसै नाम । नवसै नाडी पिंममैं । तिम तीनसै हाम ॥ ४४ ॥ ज० ॥ संधि एकसो साठठे । सत्तोत्तरसो मरम । तीन दोप पेसी पांचसै । ढांकीठे चरम ॥४५॥ ज०॥ रुधिर सेर दस देहमें । पेसाव सरीष । सेर पांच चरवी तिहां । दोय सेर पुरीष ॥ ४६ ॥ ज० ॥ पित्त टांक चोसठ अठे । वीरज वत्तीस । टांक वत्तीस सलेखमां । जाणें जगदीस ॥ ४७ ॥ ज० ॥ इण परमाण थकी यदा। उठे अधिको थाय । व्यापै रोग शरीर में । नवि चालै काय ॥ ४८ ॥ ज०॥ पोख्यो पहिलै दाहकै । इम वधियो अंग । खान पान भूषण भला । करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ ज० ॥ हिव वीजै दसकै भणयो । विद्या विवध प्रकार । तीजै दसकै तेहनें । जाग्यो काम विकार ॥ ५० ॥ ज० ॥ जिण थानक तुं ऊपनो । तिणमें मन जाय । चोथै दसकै धन तणो । करै कोमि उपाय ॥ ५१ ॥ ज० ॥ पळतो दसकै पांचमैं । मनमें ससनेह । वेटावेटी पोतरा । परणावै तेह ॥ ५२ ॥ ज० ॥ ठहै दसके प्राणीयो । वले परवस थाय । जरा आवी जोवन गयो । तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ ज० ॥ आवै दसकै सातमें । हिव प्राणी तेह । वल भागो वूढो थयो । नारी न धरै सनेह ॥ ५४ ॥ ज० ॥ आठमें दसकै मोसलो । खुलिया सळ दांत । कर कंपावै सिर धुणें । करै फोकट वात ॥ ५५ ॥ ज० ॥ नवमें दसकै प्राणीयो । तन सूकत जाय । सालै वचन वळवां तणां । दिन ऊरतां जाय ॥ ५६ ॥ ज० ॥ खाट पड्यो खूं खूं करै । सळ गाली देह । हाल ऊकम हालै नही । दीयो परजन ठेह ॥ ५७ ॥ ज० ॥ आंख गलै वेपुम मिलै । पमे मुंहमै लाल । वेटा वेटीनें वहू । नकरै सार संभाल ॥ ५८ ॥ ज० ॥ दसमें दसकै आवीयो । तव पूरी आय । पुण्य पाप फल भोगवी । प्राणी परभव जाय ॥ ५९ ॥ ज० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लह्यो नर भव सार । श्री जिन धरम समाचरो । पामो जिम भवपार ॥ ६० ॥ ज० ॥ चरणपणें जे तप तपै । पालै निरमल शील । ते संसार तरी करी । लहै अविच

ल लील ॥ ६१ ॥ उ० ॥ कोडि रतन कवडी सटै । कांई गमैरे गिंवार । धरम पखैं पिण जीवनें । नहीं कोई आधार ॥ ६२ ॥ उ० । काया माया कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । सांचो धरम संभार ॥ ६३ ॥ उ० ॥ चवदे राज प्रमाण ए । ते लोक महंत । जनम मरण करि फरसियो । तेवार अणंत ॥ ६४ ॥ उ० ॥ आप सवारथिया सहू । न ही केहनो कोय । विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण वेरी होय॥६६ उ॥ जरा न आवैं जांलगै । जांलग सवल शरीर । धरम करो जीवतां ल गै । होइ साहस धीर ॥ ६६ ॥ उ० ॥ आरजदेस लह्यो हिवै । लाधो गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ ॥उ० श्रीनमिराय तणी परें । चेतो चित मांहि ।स्वारथना सज्ज को सगा ।को ई किणरो नांहि ॥ ६८ ॥ उ० । भोग संजोग तजीसहू । थया जे अणगार धन धन तसु माता पिता । धन धन अवतार ॥ ६९॥ उ०॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुख संपति वधैं । कीजे तेहिज क र्म ॥ ७० ॥ उ० ॥ तंडुल वेयाली अछे । एहनो अधिकार । तिणथी ऊध रनें कह्यो । नहीं कूड लिगार ॥ ७१ ॥ उ० ॥ (कलश) इह जेनधर्म्म विचार सांभलि लीये संयम भार ए । परि सींह केरा सदा पाले नेम नि रती चार ए । संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भवपार ए । श्रीजि न हरप सुसीस रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ उ० ॥ ॥ ※ ॥ इति उपदेश इकत्तरी संपूर्ण ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अथ विजयसेठ विजयासेठाणीको चोढालियो लि०॥

॥ ※ ॥ प्रह ऊठीरे पंच परमेष्टि सदा नमुं । मनसूधेंरे तेहनें चरणे नित नमुं । धुरि तेहनेंरे अरिहंत सिद्ध वखाणियें । आचारजरे उपाध्याय मन आणियें । (उल्लालो) आणीयें निज मन भाव सुद्धे उपाध्याय नमूं वली । जे पनरह करम भूमि मांहे साधु प्रणमुं ते वली । जिम कृष्ण पक्षनें सुक्लपक्षवलि शील पाल्यो ते सुणो । भरतारनें स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेंसुं भणो ॥१॥ (ढाल) भरत क्षेत्रेंरे समुद्र तीर दक्षण दिसें । कछदेसेरे विजय सेठ श्रावक वसे । शील व्रतरे अंधारा पक्षनो लियो । वाला पणरे

एहवो निश्चो मन कियो । (उल्लालो) मन कीयो एहवो तेण निश्चै पख्य अंधारै पालस्युं । ऊं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय सेवा टालस्युं । इक अछै सुंदर रूप विजया नाम कन्या तेवली । तिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगै मन रली ॥ २ ॥(ढाल) कर्म्म जोगैरे मांहो मांहि ते विऊं तणो । शुभ दिवसैरे ऊओ विवाह सुहामणो । तव विजयारे शोलै शृंगार भला करी । पिउ मंदिर रे पोहती मन उल्लट धरी । (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पऊती पिया पासै सुन्दरी । ते देखि हरषै सेठ वोलै शील निश्चो संभरी । मुझ शील निश्चो पख अंधारै तेहना दिन तीनछै । ते नेम पाली सुकलप ख्य ऊं भोग भोगवस्युं पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इम सांभलरे विजया तव वि लखी थई । पिऊ पूछैरे किम चिंता तुझनें भई । तव विजयारे कहै शुक्ल पक्ष व्रतमें लीयो । व्रत चोथेरे वाला पण निश्चो कीयो । (उल्लालो) वाला प्रणंमैं कीयो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं । तो उभै पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं । तुह्मे अवरनारी परणने हिव सुक्ल पक्ष सुख भोगवो । कृष्ण पक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तव व लतोरे तसु भरतार कहै इसो । विषया रसरे कालकूट विषछै तिसो । ते बे मीरे शील व्रत दोनुं पालस्यां । एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां ॥७०॥ मात पिता जव जाणस्ये तव दिख्य लेसां घरदया । इम अभिग्रह लेइनें ते भाव चारित्रीया थया । एकत्र सज्या सयन करतां खड्ग धारा व्रत धरै । मन वचन काया करी सूधो शील वेऊं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल) ॥ विमल केवली एक । चंपा नयरीयै । ततखिण आवि समोसस्याए । आणी अधिक विवेक । श्रावक जिण दास । कहै विनय गुण परिवस्यो ए॥६॥ सहस चोरासी साधु मुझ घर पारणो । करै मनोरथ तो फलै ए । केवल ज्ञान अगाध । कहै श्रावक सुणो । एह वाततो नवि मिलैए ॥७॥ किहां एतला अणगार । किहां वलि सूझतो । भातपाणी नही एतलोए । तो हिव तेह विचार । करो तुह्मे जिम तिम । फल अह्म ऊवै तेतलोए ॥ ८ ॥ अछै हिवै कच्छदेस । सेठ । विजय वली । विजया भार्या तसु घरैए । भावयती ग्रह वास । तेहनें भोजन दीधां फल ऊवै तेतलोए ॥ ९ ॥ जिणदास कहै भगवंत । तेमांहि एतला कुण गुण कुण व्रतछै घणा ए । केवली कहै अनंत । गुण तसु शीलना ।

कृष्ण शुक्लपक्ष व्रत तणा ए ॥ १० ॥ (ढाल) ३ ॥ दानकहै जगझं वमो एचाल ॥ केवलीनें मुख सांभली । श्रावक तेजिनदासरे । कछदेसें हिव आ वीयो । पूरै निज मन आसरे ॥ ११ ॥ (धन २ शील सुहामणो) ॥ शील समो नही कोईरे । शीलै देव सानिध करै । शीलथी शिव सुख होईरे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजया भणी । भगतसुं भोजन देईरे । सहस चोरासी साधुना । पारणानो फल लेईरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मात पिता पूछै तेहनें । एहनो शील वखाणरे । केवलीनें मुख जिम सुण्यो । तिम कहै ते गुण जाणरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें । पारणो दीये कोई भायरे । कृष्ण शुक्ल पक्ष दंपती । भोजननो फल थायरे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मात पिता जवजाणीयो । प्रगट झुओ संवंधरे । सेठ विजय विजया लीयो । चारित्र अप्रतिबंधोरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ (ढाल) ४ ॥ केवलीनें पासै । चारित्र लेई उदार । मन ममता मूंकी । पालै निरती चार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी । पाम्यो केवल नाण । ते मुगतैं पहुता । दंपती सुगण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै । भावै जे नर नार । ते वंछित सुख लहै । पहुचै भवनें पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम कृष्णपक्षनें शुक्ल पख्यै शील पाल्यो निरमलो । ते दंपतीना भाव सुधै सदा सुभ गुण सांभलो । जिम डुरिय दोहग दूर जावै सुक्ख थावै वहुपरै । वलि सकल मंगल मनह वंछित कुशल नित घर अवतरै ॥ इति कृष्ण शुक्ल पक्ष चौढा० ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ इखुकार राजा भृगुप्रोहित सि० ॥※॥

॥ ※ ॥ महिला में बैठी राणी कमलावती । झीणीतो उमै मारगखेह । जोवै तमासो इखुकार नगरमें । कोतिक उपनो मनमें एह ॥ १ ॥ (सांभल हे दासी आज नगरमें वहदो किम घणो) । कातो परधान सखी मंमीया । काकेई लूंट्या राजा गांव । काकोई गाडयो धन नीसर्यो । गामा रह्या छै ठामो ठाम ॥ २ ॥ सां० ॥ आ० ॥ नातो परधान वाइजी मंमीया । ना कोई राजा लूंट्या गांव । भृगू परोहित धन तज नीसर्यो । राजारैं धन लेवा चाव ॥ ३ ॥ (सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां) ॥ वेटांतो तिणरा संजम लीयो । वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित ले

वा कमला। भगू जशा तिणें मोह लल चात ॥ ४ ॥ (सांभल हे० ऊ क०)॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहै। इहां तो कमी नही काय। सांभलनें राणी माथो धुणीयो। राजारी ममता नही गय ॥ ५ ॥ (सां० दासी राजानें एवातां जुगती नही)। महिलांसुं राणी कमलावती। आईछै राजारे हजूर। वचन कहै राजानें आकरा। जाणें पोरस चढियो बोलै सूर ॥ ६ ॥ (सांभलहो राजा ब्राह्मण छोडी रिद्धक्युं आदरो)। कर जोडी कमला कहै। सांभल कंत सुजाण। ब्राह्मण जेरिद्ध परिहरी। ते तो घर मांहै मत आण। (सां०। राजा०) ॥ ७ ॥ एरिद्धसुं अपणें कांई घणो ऊसी। राजारा मोटा छै भाग। वमियै आहाररी वांछ कुण करै। कै कुतरा कै काग ॥ ८ ॥ सां० ॥ राजा०। ब्रा०। वमियो आ हार पीछे नर भखे। नही परसंसवा जोग। भगू प्रोहित रिद्ध तजनीस र्यो। थे जाण्यो छै आसीह्लारें भोग ॥ ९॥ (सां। राजा ब्रा०) ॥ संकल पियोमो पाछो किमलीयै। सांभलहो महाराज। दान दियो थे पहिलां हाथसुं। ते पूछो लेतांनावै थानें लाज ॥ १० ॥ (सां राजा ब्रा० निहचैतो मरणो राजा इक दिनें। छोडीनें काम विसेष। वीजो तो जगमें सरणो को नही। तारै जिनजीरो धम एक ॥ ११ ॥ (सां० राजा) ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी। थे घालो भंडारां रै मांहि। तो पिण त्रिसना राजा पापणी। त्रिपत न मनमो थाय ॥ १२ ॥ (सां० ब्रा०)। सांभलनें इखुकार राजा वोलीयो। तुं भाषैनी वचन संभाल। कातनें रा णी झोलो वाजीयो। काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां०। राणी राजानें करमा वचन न वोलीयै)। नांतो राजाजी झोलो वाजीयो। नाकोई कीधी मत वाल। ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो। वरजण आईहो भूपाल ॥ (सां० राजा ब्रा०) ॥ १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै। इसमी वैरागण थाय। अजूंतो निजरां आवै नही। तुं वेठी छै घर मांय (सां०। राणी राजानें कर०॥ १५ ॥ उत्तर वालीतो दीसै नही। इसमी आई छै मतवाल। ऊंतो घर छोडीनें नीसरी। थे पिण छोडो हो भूपाल। (सां०। राजा आग्या देवो तो संयम आदरुं) ॥ १६ ॥ रतन जडतरो राजा पींजरो। तिणमें सूवटो पडियो फंद। इण रीतै ऊं थांरै राजमें।

रहिनें पामुं आणंद । (सां० राजा आग्या) ॥ १७॥ सनेह रूपिया तांतण तोमनें । आरंभ धनसुं रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणें रह्या । थे पिण होयज्यो सूर ॥ (सां० राजाआ०) ॥ १८ ॥ दवतोलागी हो राजा वन मझै । हिरण सिसा वले मांय । गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें । मन मांहें हरिषित थाय । (सां० राजा राग द्वेषरा भोगा लग रह्या)॥ १९॥ मांहो मांहे खेधो ईसको । दस प्राण रहित कीधो काल । दुसमणतो म नमें हरष पाम्यो घणो । जाणें ते माहरो मिटियो साल । (सां० हो रा जा रागद्वेष).॥ २० ॥ इण दिष्टांतै लोभी मूरख थका । मुरझरह्या भोग मांहि । पेलानें दुखियो देखी चेतै नही । लागी राग द्वेषरी लाय ॥ (सां० राजा राग०) ॥ २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां । नरपासै पंखी प मियो आय । आमिष सम भोग छेमनें । चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥ (सां० प्राणी संयमथी सुखपांमीयै) ॥ २२ ॥ महल पिलंगादिक अथि रछै । ते पांम्या छै आपणें हाथ । कामभोगमें रकत होय रह्या । ते तज होयसां नाथ ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २३ ॥ पांचे इंद्रयांरा भोग छेमनें । द्रव्य भावै हलकाथाय । सहज वाउ पंखीनीपरै । विचरस्यां अपणी दाय ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २४ ॥ गिरध पंखीज्युं भोग जाणजो । एह काम वधारें संसार । सापज्युं मोर थकी भरतो रहै । ज्यूं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ (सां० । प्राणी सं०)॥ २५ ॥ सोक तजी संतोषसुं । लेस्यां संय मभार । ममता तजी समता ग्रहो । करस्यां उग्र विहार (सां० प्राणी सं०) ॥ २६ ॥ तन धन जोवन कारमो । चंचल वीज समान । खिण २ खूटै आउखो । मूरख करैरे गुमान ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २७ ॥ हस्तीज्युं बंधण तोमनें । आपे वनसुखे जाय । करम बंधण तूटै संयम लियां । सुणो कहुंछुं महाराय ॥ (सां० राजा सं०)॥ २८ ॥ इम सुणनें इखुकार राजा चेतियो । छेमीनें मोटको राज । कायरनें तो ए तजतां दोहिलो । विप्र सहित सारया काज ॥ (सां० राणी सं०) ॥ २९॥ मोह न राख्यो परिग्रह छेमके । पायो जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी । उतकृष्टो पराक्रम आण । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पाले सदा । सु मति गुपति दयाल । भमरानी परें करें गोचरी । रिष टाले दोष बयाल ॥

(सां० प्राणी सं०) ॥ ३२ ॥ तारण तरण जिहाज छै। भव्य जीवनें उ तारै पार। केवल ज्ञान उपायनें । सुख पाम्यां श्रीकार ॥ ३३ ॥ (सां० प्राणी सं०)। मोहनिवारी प्राणी समऊनें। निरमल भावना भाव। छए जणा थोमा कालमें । मुगति विराज्या जाय। (सां०प्राणी सं०) ॥३४॥ राजा सहित राणी कमलावती। भृगु पुरोहित जशा नार। प्रोहित भृगुना दोय दीकरा। शिव सुख पाम्यो सार ॥ ३५ ॥ (सां० प्राणी सं०) इति श्री इखुकार राजा भृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

॥ ※ ॥ जगचूमामणि भूउ। उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ। एगो लोगा इच्चो। एगो चक्खू तिऊअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छर मुसभ जिणो। छ म्मासे वद्धमाण जिणचंदो। इइ विहरिया निरसणा। जएज्जए उव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ बहुआइं असरिस जणस्स। इय जीयंत कराइं। एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ। महइ महा वद्धमाण जिणचंदो। उवसग्ग सहस्सेहिवि। मेरु जहा वाय गुंजा हिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणउ। पढम गणहरो समत्त सुयनाणी। जाणंतो वि तमत्थं। विह्मिय हियउ सुणइ सव्वं ॥५॥ जं आण वेइ राया। पयईउ तं सिरेण इच्छंति। इय गुरुजण मुह भणियं। कयं जलिउ डेहिं सोयव्वं ॥६॥ जह सुर गणाण इंदो। गह गण तारागणाण जहचंदो। जहय पयाण नरींदो। गण स्सवि गुरू तहा णंदो ॥७॥ वालुत्ति मही पालो। न पया परि हवइ एस गुरु उव मा। जंवापुरउ काउं। विहरंति मुणी तहा सोवि ॥८॥ पमिरूवो तेयस्सी। जुग प्पहाणा गमो मऊर वक्को। गंभीरो धिईमंतो। उवएस परोय आयरिउ ॥९॥ अपरिस्सावी सोमो। संगह सीलो अभिग्गह मईय । अविकत्थणो अ चवलो। पसंत हियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिंदा। पत्ता अयरामरं पहं दाउं। आयरिएहिं पवयणं। धारिज्जइ संपयं सयलं ॥११॥ अणुगम्मए भगवई। राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं। तहवि न करेइ माणं। परिगच्छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स। अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा। नेच्छइ आसण गहणं। सो विणउ सव्व अज्जाणं

॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अज्जाए अज्ज दिक्खिउं साहू । अभिगमण वंदण नमंसणेण । विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस प्पभवो । पुरस वर देसिउं पुरसं जिणो । लोएवि पहू पुरसो । किंपुण लोगु त्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना सहस्स महियं । आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ ल्लटंती न ताइया ताहिं । उयरठिएण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाणवि । मज्झाउ इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा व णाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह भरह चक्कवट्टी । पसन्न चंदोय दि ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पएसु वट्टमाणस्स । किं परिय त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण दिक्खिउंमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवउंय ॥ २१ ॥ अ प्पा जाणइ अप्पा । जहठिउ अप्पसक्खिउ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह । जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ ध म्मो मएण हुंतो । तोनवि सी उन्ह वाय विज्झडिउ । संवछर मणसीउ । बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सछं द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थ द्धो निरोवयारी । अविणीउ गविउ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिउ । ज णेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सप्पुरिसा । सणं कुमारुव्व के इबुज्झंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतिज्जंत सेसं । सं सारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स दुक्ख मल्लियए । जंच मरणावसाणे । भव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएस सहस्से हिवि । बोहिज्जं तो न बुझई कोई । जह बंभदत्त राया । उदाइ निव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिचत्ताइ राय लछीए । जी वा सकम्म कलिमल । भरिय भरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोलूणवि जी वाणं । सडुकराइंति पावचरियाइं । भयवं जा सा सा सा । पचाए सो हू इण

मो ते ॥ ३२ ॥ पडि वज्जि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवडियाए । तो
किर मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति पोसह सिझाय समाप्ता उपदेश माला ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ राईसंथारा पोसह सिझाय ॥※॥

॥ ※ ॥ निस्सिही ३ णमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं । (नवकार ३ करेमिभंते ३ कहीयै) । अणुजाणह चिट्ठिज्जा । अणुजाणह परमगुरू । गुण गण रयणे हिं मंडिअ सरीरा । बहु पडिपुन्ना पोरिसी । राई संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संथारं । बाहु वहाणेण वामपासे णं । कुक्कुड पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडा सं । उवट्टंतेय काय पडिलेहा । दव्वाई उवउगं । ऊसास निरुंभणा लोयं ॥ ३ ॥ जइमे हुज्ज पमाउ । इमस्स देहस्सिम माइरयणीए । आहार मुवहि देहं । स व्वं तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण । कलहा भक्खाण पर परीवाउ । अरइ रई पैसुन्नं । माया मोसंच मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इ माइं मुक्खमग्ग । संसग्ग विग्घ भूआइं । डुग्गइ निबंधणाइं । अठारस पाव ठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं अ दीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा । नाणदं सण संजुउ । सेसामे वाहिरा भावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं जोग मूला जीवेणं । पत्ता डुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सवं तिवि हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरि हंता मंगलं । सिद्धामंगलं । साहू मंगलं । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो गुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जा मि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ । अरिहंता मज्झ देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । बोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ । सिद्धाय मज्झ देवया । सिद्धाय कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मझ । आयरिया मज्झदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं । वोसिरामि त्ति पावगं॥ ३ ॥ उव ज्झाया मंगलं मज्झ । उवझाया मझ देवया । उवझाया कित्ति अ त्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ । साहूणो मझ देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुअ । इक्किके सत्त जोणि लक्खाउ ।वण पत्तेय अणंते । दस चउ दस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्व भूएसु । वेरं मझ न केणवि ॥३॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सव्वहजीव निकाय । सिद्धह साख आलोयणह । मझह वैर नभाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु । चउदह राज भमंतु । तेमइं सव्व खमाविआ । मझवि तेह खमंतु इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्त्तव्य । सामायक, पडिक्कमणा अठपुहरी (तथा) चौ पुहरी पोसा, । देववांदणा, पच्चक्खाण पारणा, छ म्मासी तप चिंतना, सबंकी अनुक्रमें शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥※ ॥

॥※॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीशं । सद्‌गुरुं च विशेषतः । श्राद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकभाषया ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※॥ अथ प्रथम प्रभात सामायक विधि लि०॥※॥

॥※॥ श्रावक दोय घडी रात्र रहां, पोशहशालाथें। अथवा गुरुकनें। अथवा घरने एक प्रदेशें (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पडिलेह्या वस्त्र पहिरी। (जो)गुरूरो योग न हुवे (तो) आप प्रमार्जित थानकें । खमासमण पूर्व क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापें (पछे) खमासमण देई कहे । इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन । सामायक मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरुकहै पडि लेह) पछे इछंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहे । हुओ हो

य खमा०कहै । इच्छा० सं० भ० । सामायक संदिस्सावूं (गुरु कहै संदि स्सावेह) पछै इच्छंकही । वलेख०देनें कहै । इच्छाका०सं भ० । सामायि क ठानं (गुरु कहै ठाएह) पछै इच्छं कही । खमासमण देई । अर्द्धावन तकाय ऊभो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इच्छकार भगवन पसाउकरी सामायिकदंम उच्चरावोजी (गुरु कहै उच्चरावेमो) पछै । करेमिभंते सामाइयं (इत्यादि) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुभाषण करतो थको । तीनवार उच री । खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ०। इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरुकहै पमिक्कमह) पछै इच्छं कही । इच्छामि पमिक्कमिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाठकहै) इरियावही पमिक्कमी । एक लोगस्सनो काउसग्गकरी । णमो अ रिहंताणं कही । काउसग्गपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई इच्छा०सं०भ०। वैसणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इच्छं क ही । वले खमासमण देई । इच्छाका०सं० भ०। वैसणो ठाउं (गुरु कहै ठ एह) पछे इच्छं कही। खमासमण देई । इच्छाका०सं०भ० । सिज्झाय सं दिस्साउं (गुरुकहै संदिस्सावेह) पछै इच्छं कही। वलेखमासमण देई । इच्छा का०सं०भ०। सिज्झाय करुं (गुरुकहै करेह) इच्छं कही। वले खमासमण देई । ऊभो थको, आठ नवकार सिज्झाय करै । तथा शीतकालादि हुवै (तो) खमासमण देई । इच्छाका०सं०भ०। पांगरणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इच्छं कही। खमासमण देई । इच्छा० सं० भ०। पांगरणो पमिग्घाउं (गुरु कहै पमिग्घाएह) पछे इच्छं कही। वस्त्रग्रहण करै। तथा सामायकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायकवंत (अथ वा) पोसहीतो श्रावक वांदै (तो) वंदामो एहवुं कहै । जो कोई वीजो वांदै (तो) सिज्झायं करेह । एहवो कहै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति प्रभात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ※ ॥

॥(हिवै) एक खमा समण देई । इच्छाका० सं० भ० । चैत्यवंदन करुं (गुरुकहै करेह) पछै इच्छं कही। जयउ सामी २ (इत्यादि) जय वीय राय सूधी चैत्यवंदन करै । पछैं खमासमण देई। इच्छाका०सं० भ०। कुसुमिण उ

स्समिण राई प्रायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं (गुरु कहै करेह) पछै इच्छंकही । कुसुमिण डुस्समिण राई प्रायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो काउसग्ग । चंदेसु निम्मलयरा ॥ सूधी चिंतवी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी। मुखै लोगस्स कहे (जो) रात्रे मोटको गुण संबंधी दूषण लागो जवै । (तो) काउसग्ग मांहे । सागरवरगंन्नीरा । सूधी चिंतवीयै (इतिसंप्रदायः।

॥ ※ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण डुस्समिण काउसग्ग करी । पछै चैत्यवंदन करवो कह्योछै। पिण परमार्थ एकहीजछै। पछै। पडिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै ॥ ※ ॥ हिवै पडिक्कमण ठाववानो अवसर जवां ॥ १ खमासमण देई (श्री आचार्यजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ २ खमासमण देई (श्री उपाध्यायजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ ३ खमास मणें । जंगम युग प्रधान वर्त्तमान न्नटारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै ॥ ४ खमास मणें । सर्व साधूजीकुं वांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि क्कमणो ठावी । इच्छकार समस्त श्रावको वांदूं (कही) गोडा लीयै वैसी । मस्तक नमावी । दोय हाथे । मुहपत्ती मुखें देई । सव्वस्सवि राइय (इत्यादि कहे) पिण इच्छा कारेण संदिस्सह इच्छं (इसोन कहे) पछै शक्र स्तवकही। उन्नो थई । करेमि न्नंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कही) इच्छामि ठाउं काउसग्गं । जोमे राइउ (इत्यादि पाठ कही) तस्सुत्तरी । अन्नत्थू ससिएणं कही । चारित्र शुद्धि निमत्तें ॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें । लोगस्स कही । सव्व लोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं । वंदण वत्तिआ ए (इत्यादि कही) १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धि निमत्तें । पुक्खर वर दीवड्ढे । (कही) सुयस्स न्नगवउ करेमि काउसग्गं । वंदणवत्तिआए (इत्यादि कही) काउसग्ग करै । काउसग्ग मांहें । आजूणा चौंपुहरी रात्रि मांहें । इत्यादि आलोयण पाठ चिंतवे ॥ ※ ॥ ॥ (अनेंएनावैंतो) आठ नव कार चिंतवीयै । पछै काउसग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) संनासा प्रमार्जन पूर्वक वैसी (मुहपत्ती पडिलेहै) पछैदो वांदणादै (ते इम) अविग्रह वाहिर उन्नो थको । आवो नमी ॥ इच्छामि खमा

स । वंदि० जाव० । नि० । अणुजाणह । मेमितग्गहं (इतरो कही) भू मि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संमा सा प्रमार्जी । ऊकडू वैसी । मावै हाथ मुहपत्ती लेई । मावै कान थी जी मणा कान लगें निलाम पूंजी । मुहपत्ती आगें मेल्ही । तेहनें मध्यभागें गुरुचरण कल्पना करी । अहो कायं (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हिक ऊं चो नमी । मस्तकें अंजली करी । गुरुसांह्मी दृष्टिराखी । खमणिज्जो भे किलामो (इत्यादि पाठ कहै) पछै । फेर जत्ताभे । (इत्यादि आवर्त्तन कर) ऊभो थई । पाछै पगे भूमि पुंजतो । अवग्रह बाहिर स्वस्थानें आ वी । आवस्सियाए (इत्यादि पाठ) सर्व कहै । बीजी वार वले इम हीज करै । (पिण) अवग्रह बाहिर न नीकलै । तिहां ऊभोज सर्व पाठ कहै । आवस्सियाए पद नकहै । (इम सर्वत्र जाणिवूं) पछै अवग्रह मांहि रह्यां कहै । इछाका० सं० भ० । राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह) पछै । इछं आलोएमि जोमेराईउ (इत्यादि पाठ ऊचरतो) काउसग्ग मां हें चिंतव्या । रात्रिसंबंधी अतीचार । गुरु समक्षें आलोवै । पछै । सव्वस्स वि राइय (इत्यादि पाठ कहै) तिहां इछाका० सं० भ० एपद क हिवै करी । आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पडिक्क म ह) पछै । इछंतस्स मिछामि डुक्कडं (कही) संमासा प्रमार्जी । आसणें बैसी । जीमणो गोमो ऊंचोराषी । मावो गोमो नीचो करी (एहवूं कहै) भगवन् सूत्रभणुं (गुरु कहै भणह) पछै इछं कही । ३ नवकार । ३ करे मि भंते (अथवा) १ नवकार । १ करेमि भंते (कही) इछामि पडिक्क मि उं । जोमेराइउ (इत्यादि कही) वंदित्तू सूत्र । तंनिंदे तंच गरिहामि (सूधी कहै) पछै ऊभो थई । अब्भु ठिउमि आराहणाए (इत्यादि सं पूर्ण कही) वे वांदणा देई ॥ अवग्रह मांहि थको हीज कहै । इछाका०॥ सं० । भ० । अब्भुठिउमि अभिंतर । राइयं (कही) संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीयै बैसी । बेबांह पडिलेही । मुहपत्ती वांम हाथसुं मुखें देई । दक्षिण हाथ गुरु सांह्मो करी । नीचो नम्यो थको । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरु पिण मिछामि डुक्कडं कहै) पछै । बे बांदणादेई । भूमि प्रमार्जता । पाछै पगे अवग्रह बाहिर आवी । आयरिय

ज्वझाए । इत्यादि गाथा ३ कहे । पछे । करेमि भंते० । इछामि ठामि काउसग्गं । तस्सुत्तरी (इत्यादि कही) काउसग्ग करै । काउसग्ग मांहे । श्रीवीर कृत छम्मासीतप चिंतवै (जो) छम्मासी तपन जाणे (तो) ६ लोगस्स, अथवा, २४ नवकारनो काउसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तीहै । पछे जे पच्चक्खाण करवो हुवे (ते) हियामांहि धारी । काउसग्ग पारी । लोगस्स कही । ऊकडूवैसी । मुहपत्ती पडिलेही । वे वांदणा देई । सकल तीरथ नामलेई । नमस्कार करी (कहै) इछ कार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावो जी (पछे) गुरु मुखें पच्चक्खांण करै । गुरु अभावे थापना समक्षे (अथवा) साधर्मी मुखे पच्चक्खाण करै (पछे) इछामो अणुसटिं कही, वैसे (तिवारे) गुरु १ थुई कह्यां पछे । मस्तकै अंजली करी । नमो खमासमणाणं । नमो र्हत्सिद्धा कही ॥ संसार दावानल इत्यादि (अथवा) नमोस्तु वर्द्धमानाय । इत्यादि (अथवा) पर समय तिमर (इत्यादि तीन गाथा भणी) शक्रस्तव कहै । पछे ऊभो थई । अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्तिआए (इत्यादि कही) काउसग्ग मांहे १ नवकार चिंतवी । एक श्रावक प्रथम काउसग्ग पारी । नमोर्हत्सिद्धा कही । एक गाथा स्तुति कहै । वीजा सर्व काउसग्ग मांहे रह्या सुणे (पछे) । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारै । इम आगे पिण जाणवो । (पछे) लोगस्स कही । सवलोए अरिहंत चेइआणं । वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । (इत्यादि कही) १ नवकारनो काउसग्ग करी (पारी) वीजी स्तुति कही । सिद्धाणं वुद्धाणं कहै । (पछे) वेयावच्च गराणं० । अन्नत्थू० कही । १ नवकारका० करी । (पारी) नमोर्हत सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । (वैसी) । नमोत्थुणं कहै । पछे तीन खमासमणे । पूर्वोक्त रीतें । आचार्य । उपाध्याय । सर्व साधू वांदै । इति प्रभाती पडिकमण विधि. ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनःइतना विशेष है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इतनी विधि कियां पाछे थिरता हुवै (तो) उत्तर दिशें । सीमंधर स्वामी सांहमां वैसी । कम्म भूमीए (इत्यादि) संपूर्ण चैत्यवंदन करे (अंते) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्ति०अन्नत्थू० कही । १ नवकार चिंतवी (पारी) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै । इम वीज

थिरता ऊवै (तो) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै ॥ पछै पडिलेहण करै (ते इम) खमासमणदेइ। इच्छाका० सं० ऋ०। पडिलेहण संदिस्सा उं (गुरु कहै संदिस्साएह) वीजै खमासमणे। इच्छा० सं० ऋ०। प डिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) पछै। इच्छं कही। मुहपत्ती पडिलेहै। (इ महीज दोइ खमासमणें। अंग पडिलेहण संदिस्साउं। अंग पडिलेहण करुं (कही) धोतियो कणदोरो पडिलेही। खमासमणदेई। इच्छकार ऋगवन पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी (इम कही) थापनाचार्य पडिले ही राखै (अनें) जो गुर्वादिक थापनाचार्य पडिलेहै। तोपिण। खमासम ण देई आग्यामांगै। पछै खमासमण देई। इच्छा० सं० ऋ०। मुहपत्ती पडि लेऊं (गुरुकहै पडिलेहेह) पछै इच्छं कही। मुहपत्ती पडिलेही। दो य खमासमणें इच्छाका० सं० ऋ०। उही पडिलेहण संदिस्साऊं। करुं (क ही) कंवल वस्त्रादि पडिलेहै। पछै। पोसहशाला प्रमार्जी। काजो विधसुं परठी। खमा समण देई। इरियावही पडिक्कमें (एमूलविध जाणवी) ॥※॥ इतरी स्थिरतानऊवै तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी। हिवणां पिण प्रा यें इमहीज करता दीसैछै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥हिवै सामायक पारणेंकी विधि कहैछै॥※॥

॥ ※ ॥ पछै सामायक पारै। १ खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै फेर खमासमण देई इच्छा० सं० ऋ०। सामायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ति कही। वले खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं०ऋ। सामायक पारेमि (गुरु कहै आयारोनमोत्तव्वो) पछै तहत्तिक ही। अर्द्ध नम्र ऊभो थको। तीननवकारगुणी। नीचो गोडालीयै वैसी। मस्तक नमावी। ऋयवंदसऋऋद्दो (इत्यादी गाथा कहै) (अथवा) प हिलां सामायक पारी। पछै पडिलेहण करै (इहां) यथायोग्य अवसरै गुरूनें सुहराई पूछै (ते इम एक खमा समण देई कहै। इच्छकार ऋगव न, सुहराई, सुखतप शरीर, निरावाध, संयम यात्रा, सुखें निरवहैछैजी, छै पूज्यजी साता (इत्यादि पूछी) वीजी खमासमण देवै। श्रीजिन पति सुरि जीनी समाचारीमें इम कह्यो छै ॥※॥ इति सामायक पारणविधिः ॥※॥

॥※॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि०॥ ※॥

॥ ※ ॥ हिवै पाछलै पहुर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पडिलेहै । जो अवेलो आयो हुवै (तो) दृष्टि पडिलेहण करै । पछै । गुरु आगै (अथवा) थापनाचार्यजी आगै आवी । भूमी प्रमार्जी । आसण वांम पास मूकी । खमासमण देई (कहै) इछाका० सं० भ० । सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह) पछै इछं कही । वले खमासमणदेई इछाका० सं० भ० । सामायक संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । सामायक ठाउं (गुरु० ठाएह) पछै इछं कही । फेर खमासमण देई । अर्द्धावनत थई । तीन नवकार गुणी (कहै) इछकार भगवन पसाउ करी सामायिक दंम उचरावो जी (गुरु० उचरावेमो) पछै । करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुभापण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । इरिया वहियं पडिक्कमामि (गुरु कहै पडिक्कमह) पछै इछं कही । इछामि पडिक्कमिउं । इरिया वहियाए (इत्यादि पाठै इरियावही पडिक्कमी । १ लोगस्स नो काउसग्ग करी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती पडिलेही । वांदणा देई (कहै) इछकार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी पछै (गुरु) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै॥ गुरु अभावै । थापनाचार्य समक्षं (अथवा) स्वमुखें (तथा) वमेरा साधर्मी मुखें पचखै (अनें) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै (तो) मुहपत्ती पडिलेही । पच्चक्खाण करै । वांदणा नद्यै (अनें) जो चउविहार उपवास हुवै (तो) पच्चक्खाण करवोछै नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पडिलेहै । एविस्तार विधिछै । पछै १ खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । सिज्झाय संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही । वले खमासमण देई । इछा० । सं० । भ० । सिज्झाय करुं (गुरु० करेह) पछै इछं कही । खमासमण देई । ऊभो थको (मधुरस्वरें) ८ नवकारनी सिज्झाय करै । पछै खमासमण देई । इछा० सं० भ० । वैसणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इछा० सं० भ० । वैसणो ठाउं ।

(गुरु० गएह) पछै इछं कही। जो शीतकालादि हुवै (तो) खमासमण देई। इछा० सं० भ०। पांगरणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई। इछा० सं० भ०। पांगरणो पमिग्घाउं (गुरु० पमिग्घाएह) इछंकही शुभध्यान करै ॥॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥॥ अथ देवसी पमिक्कमण विधि लि० ॥॥

॥॥ ३ खमासमण देई ॥ इछा० सं० भ०। चैत्य वंदन करुं (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही। जयतिहुयण०। जय महायस (प्रमुख) नमस्कार कही। नमोत्थुणं कही। अरिहंत चेइयाणं० (इत्यादि पूर्वोक्त रीतें) च्यारे थुई ए देव वांदै। च्यार खमासमणें आचार्यादिक वांदी। पछै इछकार समस्त श्रावको वांडुं। इम कही गोमालियै वैसी। मस्तक नमावी। सव्वस्सवि देव सिय (इत्यादि) तस्स मिछामि डुक्कडं कहै (पिण) इछा कारेण संदिस्सह इछं (एपद न कहै) पछै ऊभा थई। करेमि भंते सामाइयं०। इछामि ठाउ काउ सग्गं। जोमे देवसिउ०। तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिएणं० ॥ (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्ग माहें। आजूणा चौपहरा दिवसमें० (इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी) णमो अरिहंताणं कही। काउसग्ग पारी। लोगस्स कहै। संमाशा प्रमार्जन पूर्वक वैसी। मुहपत्ती पमिलेही। वे बांदणा देवै। पछै अवग्रह मांहि ऊभो थको कहै ॥ इछा०सं०भ०॥ देवसियं आलोउं। गुरु कहै आलोएह। पछै। इछं आलोए मि० पाठ कहै। आजूणा चौपहर दिवस०। लघु अती चार आलोवै। पछै सव्वस्सवि देवसिय (इत्यादि) इछा कारेण संदिसह। सूधी कहै। तिवारे (गुरु कहै पमिक्कमह) पछै। इछं तस्स मिछामि डुक्कमं (कही) संमाशा प्रमार्जी। प्रमार्जित भूमें आसणें वैसी कहै। भगवन सूत्र भणुं (गुरु कहै भणह) पछै इछं कही। तीन नवकार ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार १ करेमि भंते (कही) इछामि पमिक्कमिउं। जोमेदेवसीउ (इत्यादि कही) एक श्रावक वंदित्तू कहै। वीजा सर्व सुणैं। पछै ऊभो थई। अभ्भुठिउमि आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण पाठ कही) वे वांदणा देवै। अवग्रह मांहिज ऊभो थको। इछा।का०

सं० ञ० । अब्भुठ्ठिमि अभ्भिंतर । देव सियं खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै इछं खामेमि देवसियं (कही) गोमालीयै वैसी । वाम हाथें मुह पत्ती मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी (सर्व पाठ कहै (पछै विधिसुं वे वांदणादेई । आयरिय उवझाए (इत्यादि ३ गाथा कही (करेमिभंते सामाइयं ॥ इछामि ठाउं काउसग्गं (इत्यादि कही) चारित्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही । सव्वलोए अरिहंतचे । वंदण० । अन्नत्थू० कही ॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) ज्ञान शुद्धि निमित्तें । पु क्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स भगवउ० । वंदण व० । अन्नत्थू कही । १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) वेयावच्च गराणं न कहै । पछै । सुयदेवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । ए क नवकारनों काउसग्ग करी । गुरु संयोग नही हुवै (तो) एक श्रावक काउसग्ग पारी । नमोर्हत्सिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । (गु रु हुवै तो गुरु कहै) वीजासर्व स्तुति सुणकै काउसग्ग पारै । पछै । खि त्त देवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्व ली परें (क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै) पछै ऊभो थको । १ नवकार कही । संमाशा प्रमार्जी । ऊकडू वैसी । मुहपत्ती पडिलेही । विधसुं वे वांदणा देई । इछामो अणुसट्ठिं कही । वैसै (पछै गुरु एक स्तुति कह्यां पुठै) श्रा वक समस्त मस्तकें अंजली करी । णमो खमासमणाणं । णमो र्हत्सि द्धा कही । णमोस्तु वर्द्ध मानाय (इत्यादि तीन स्तुति कहै) श्राविका । णमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पछै णमो त्थुणं कही । एक श्रावक खमास मण देई कहै । इछाका० सं० भ० । स्तवन भणुं । वीजा सर्व खमासमण देई कहै । इछा० सं० भ० । स्तवन सांभलुं (गुरु कहै भणह, सांभलह) पछै आसणें वैसी । नमो र्हत्सि द्धा० पूर्वक । वमो स्तवन कहै । पछे तीन खमास मणें । आचार्य उपाध्या य सर्व साधू वांदी । चोथै खमासमणे इछा० सं० भ० । देवसी प्रायछि त्त विशुद्धि निमित्त काउसग्ग करुं (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही । दे वसी प्रायछित्त विसुद्धि निमत्तें । अन्नत्थू कही । च्यार लोगस्सनो काउस

ग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै। पछै खमासमण देई। इच्छा का० सं० भ०। खुद्दो वद्दव उड्डावणत्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू० (इत्यादि कही) च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै॥ वैसी। खमासमण देई। थंभणा पार्श्वनाथ जीनों चैत्य वंदन करै। जय वीयरा य कह्यां पछै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी॥ सिरि थंभणयठिय पास सामिणो (इत्यादि दोय गाथा कहै) ऊभा थई। वंदणव०अन्न० कही ४लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै। (इम हीज) दादाजी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्ग करै (पारी) मुखें लोगस्स कहै। पछै। दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्ग करै।(पारी) मुखे लोगस्स कहै पछे। छोटी शांति कहै (जो) शांति न आवै (तो) १६ नवकारनो काउसग्ग करै। पछै। ३ खमासमण देई। चउकसायनो चैत्यवंदन जय वीयराय सूधी करै। सर्व मंगल कहै॥ चउ कसाय चैत्य वंदन सूती वखत करनेंकाहै (पिण) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहै॥ पछै पूर्वोक्तरीतैं सामायक पारै। इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्ण॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते॥※॥

॥※॥ रात्रीनें पाछलै विघडियै निद्रा दूर करीनें। पंचपरमेष्ठि स्मरण करी। गृहचिंता परिहरी। पर्वदिवस थकी। प्रथम दिवसें। पडिलेही राख्या जे पोसहना उपगरण लेई। पोसह शालायें थापनाचार्य समीपें। अथवा गुरुनों संयोग हुवै (तो) गुरुनें पासें आवी। भूमीप्रमार्जी। एक खमासमण देई। इरियावही पडिक्कमें। पछै खमासमण देई। इच्छाका० सं० भ०। पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं। (गुरु कहै पडिलेहेह) इच्छं कही। खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै। पछै ऊभो थई। खमासमण देई। इच्छाका० सं० भ०। पोसह संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह)। पछै इच्छं कही। खमासमण देई। इच्छाका०सं०भ०। पोसह ठाउं (गुरुकहै। ठाएह) पछै इच्छं कही। खमासमण देई। ऊभो थई। आधो सरीर नमावी। मुखें मुहपत्ती देई। मधुर स्वरे। तीन नवकार गुणी कहै। इच्छकार भगवन पसाउ करी। पोसह दंडक उच्चरावोजी (गुरु०उच्चरावेमो)। पछै करे

भिम्नंते पोसहं । आहा०। जाव अहोरत्तंवा०। अप्पाणंवो०॥ एपाठ तीनवार गुरुवचन अनुन्नापण करतो ऊचरै ॥※॥ पठै एक खमासमणें । इच्छा का०सं०भ०। सामायक मुहपत्ती पडिलेऊं (गुरु कहै पमिलेहेह) बीजी खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । पठै। दोय खमासमणें सामायक सं दिस्साउं । सामायक ठाउं (कही) खमासमण देई । अर्धावनत गात्रऊ भो थको । तीन नवकार । तीन करेमि भंते ऊचरी । दोय खमासमणें। वैसणो संदिस्साउं। वैसणो ठाउं। कही । पठै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्साउं । सिझाय करुं (कही) खमासमण देई । ऊभो थको । आठ नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें। पांगरणुं सं दिस्साउं। पांगरणुं पडिग्घाउं (कहै) ए सर्व सामायक विधि पूर्वें कही है तिमहीज करवी। (पिणइतनो विशेष है)पहिलां इरियावही पडिक्कमीहै। ते माटै । इहां सामायक दंमक ऊचर्यां पठै । इरियावही नही पमिक्कमी जै ॥※॥ पीठै चैत्यवदंन । जय वीयराय सूधी करी । कुसुमिण डुस्समिण काउसग्ग करै। पठै पमिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पठै पूर्वो क्तरीतें पमिक्कमण करै (पिण इतरो विशेषहै) च्यारे थुई ए देव वांद्यां पी ठै । खमा समण देई (कहै) इच्छाका ० सं० भ०। बऊवेलं संदिस्सा उं (गुरु कहै)संदिस्सावेह (पठै इच्छं कही) खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० भ० । बऊवेलं करुं (गुरु कहै करेह) पठै इच्छं कही। तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्री उपाध्यायजी मिश्र २ । तीजै सर्व साधू वांदी । कम्म नूमिहि २। (इत्यादि नमस्कार भणं) जो पमिलेहण वेला नही ऊवै (तो) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी। सिझाय करै । हिवै पमिलेहण वेला पमिलेहण करै)। ते विधिपूर्व्वें लि खीठै । (तोपिण) संक्षेपें फेर लिखेहै ॥※॥ दोय खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । पमिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पमिलेहै । पठै दोय खमा समणें । अंग पमिलेहण संदिस्साउं । अंग पमिलेहण करुं (कहै) पठै (गुरु वचनें) । इच्छं कही । धोतियो कणदोरो पमिलेही । वस्त्र पहिरी । खमासमण देई । इच्छकार भगवन पसाउकरी पमिलेहण करावोजी । (इम कही)। थापनाचार्य पमिलेही थापै । अनें जो (गुर्वादिक) थापनाचा

थं पडिलेहैं । (तो) पिण (खमासमण देई । उक्त रीतें आग्यामांगे । पछै खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह) पछै इछं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमास मणें । इछाका० सं० भ० । उही पडिलेहण संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सा वेह) उही पडिलेहण करुं (गुरु० करेह) पछै इछं कही । कंबल वस्त्रादि पडिलेही । पोसहसाला प्रमाजी । काजो विधिसुं परिठवी । एक खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें (इहां आचार दिन करमें कह्योछै) ॥ ※ ॥ दोयखमासमणें । इछाका० सं० भ० । वसती संदिस्साउं । वसती पडिलेहुं (कही) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जै (इत्यादि) पिण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ※ ॥ हिवै एक खमासमणें । इछाका० सं० भ० । सिझाय संदिस्साउं । (गुरु कहै संदिस्सावेह) वीजै खमासमणें । इछाका० सं० भ० । सिझाय करुं । (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही । नवकार १ कथन पूर्वक (उपदेश माला) प्रमुख सिझाय करी । नवकार एक कही । धर्म ध्यान करै । भणें, गुणें, वखांण सुणें ॥ ※ ॥ इम करतां पूंण पुहुर दिन चढ्यां । उघाडा पोरिसी शागस्या । बहु पडिपुन्ना पोरिसी । कही । खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमी । दोय खमासम णें । इछाका०सं० भ० । पडिलेहण करुं । (गुरु वचनें) । इछं कही । मुहपत्ती पडिलेही । पान भोजन पात्र पडिलेही राखै । पछै सिज्झाय ध्यानकरै ॥

॥ ※ ॥ हिवै काल वेलायें । आवस्सही पूर्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्तवे देववांदे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखियेहैं ॥ ※ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । भूमि प्रमाजी । पुरुष हुवै) तो) प्रभूजी सुं दक्षिणपासे बैसै । स्त्रीहुवै ते वांम पासे बैसै । पछै । इछाका० सं० भ० । चैत्य वंदन करुं । इछं कही । पछै नमोत्थुणं कहै । खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें । एक लोगस्सनो काउसग्ग करे । मुखें लोगस्स कहै । संडाशा प्रमाजी बैसै । तीन (तथा) च्यार (तथा) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिंच नाम तित्थं । (इत्यादि कही) पछै । नमोत्थुणं कहै (कह्नो थई) अरिहंत चेई याणं करेमि का

उसग्गं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पछै लोगस्स०। सब लोए अरि० । वंदण व० । अनत्थू० । कही । १ नव० । (पारी) २ थुई की गाथा कहै । पछै। पुक्खर वरदी० । सुअस्सभग० । वंदण० । अणत्थू० । कही । १ नव० का० (पारी) ३ थुई कीगा० । पछै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयावच्चगराणं० । अनत्थू०। (इत्यादि कथन पूर्वक) चोथी थुईसें देववांदी । नमोत्थुणं कहै । फेर अरिहंतचे०कही । इसीतरै । च्यार थुईए देव वांदी वैसै । नमोत्थुणं कहै । नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो पा० (इत्यादि कही) पछै स्तवन कहै । पछै जयवीयराय कही । (नमोत्थुणं) सव्वे तिविहेण वंदामि। पर्यंत कहे ॥※॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ※ ॥ प्रवचन सारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कहीछै) ॥ ※ ॥ तथा चैत्य वंदन बृहद्भाष्यमें इम कह्योछै ॥ १ ॥ ※ ॥ नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करै । वली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईसें देववांदै । फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाइं गाथा भणी । खमासमण पूर्वक । जा वंतिके० वीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वी य राय कहै ॥ ※ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पछै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही प डिक्कमें । पछै सिझाय ध्यान करै ॥ ※ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै । (तो) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ खमासण देई । इरियावही पडिक्कमें । फेर एक खमा० । इ च्छा० सं० भ० । पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहे पडि०) पछै इछं कही । खमा० देई । मुहपत्ती पडिलेहै । फेर एक खमा० देई । इछा० सं० भ० । पाणहार अमुक पच्चक्खाण पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायवो) पछै यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । पाणहार पारियुं (गुरु कहै आयारो नमोत्तवो) पछैं तहत्ति कही । १ नव कारगुणी । अमुक पचखाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिछामि डुक्कडं (कही) चैत्य वंदन

करै । क्षणमात्र सिझाय करी यथा संभवै। अतिथि संविभाग करी पाणी पीवै ॥ ※ ॥ तथा उपधान वाही हुवै । (तो) पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी । आहार करै । पछै आसण बैठो थको हीज । दिवस चरम पच्चखै । पछै । इरियावही पडिक्कमी । चैत्य वंदन करै । (ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते छै)। ॥ ※ ॥ इति पच्चक्खाण पारणेंकी विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पछै जो वहिर्भूमि जावणो हुवै (तो) आवस्सहीकही । उपयोगीथको । निर्जीव स्थंडिलै जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनें पूठि अणदेई । मल मुत्र परिठवै । प्राशुक जलें शुद्ध थई । वार तीन वोसिरामि ३ । एहवूं कहिवै करी । मल मुत्र वोसरावी । पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक (पैसी) इरियावही पडिक्कमें । खमासमण देई । कहै । इच्छाका० सं० भ० । गमणा गमणं आलोयहं (गुरु कहै आलोएह) पछै इच्छं कही । गमणागमण आलोवै ॥※॥ (तेइम) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संडाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण वोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ इम कही बैसै । पछै पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करै ॥ हिवै । पाछलै पुहर । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण देई कहै । इच्छाका० सं० भ० । पडिलेहण करुं । (गुरु कहैक०) पछै इच्छं कही । दूजै खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । पोसहशाला प्रमाजूं (गुरु कहै) प्रमार्जह पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिस्साउं । अंग पडिलेहण करुं । (कहै) पछै (गुरुवचनें) इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दंडासणो पूंजणी प्रमुख सोंप्रमार्जी । पोसहशाला प्रमार्जै (पछै) काजो शुद्ध करी । उधरी । एकांतें विखरतो परठवी । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण पूर्वक कहै । इच्छकार भगवन पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी । पछै थापनाचार्य पडिलेही । थापै । गुरु समीपै (अथवा) थापनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह पछै । इच्छं कही) खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पछै दोय खमासमणें । इच्छा० सं०भ०

सिज्झाय संदिस्साउं । सिज्झाय करुं (कही) उक्करीतैं क्षणमात्र सिज्झाय करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार पच्चखै ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै (तो) वांदणा दोय देई । पच्च क्खांण करै ॥ ※ ॥ (पछै) एक खमासमण देई । इच्छाका०सं०भ०। उप धि थंडिला पडिलेहण संदिस्साउं । वीजै खमासमणें । इच्छाका०सं०भ० उपधि थंमिला पमिलेडं (गुरुवचनें) इच्छं कही । दोय खमासमणें । इच्छा का०सं०भ । वैसणो संदिस्साउं । वैसणोठाउं । कही (वैसै) वस्त्र कंवला दि पमिलेहै । पुंजणी हुवै (तो) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा सी तोछै । तेमाटें । सर्वपाछे कडिपटो धोतीयो कणदोरो पमिलेहै ॥ ※ ॥ उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवै (तो) कमिपटादि पमिलेह्यां पछै। वस्त्रकंवलादि पमिलेहै । (एविशेष छै) । पछै कालवेला सीम सिज्झाय ध्या न करै ॥ (पीछै) उच्चार प्रश्रवण २४ थंमिला पडिलेहै (जो) चउदस हुवै । (तो) पाखी चउमासी पमिक्कमणो करै । संवछरियें संवछरी पमि क्कमणो करै ॥ ※ ॥ तिहां देवसी पमिक्कमणो पूर्वें लिख्योछै । तिमहीज क रै । (पिण इतरो विशेष छै) । इच्छा०। देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव सी आलोयां पछै । ठाणे कमणे । चंकमणे । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) खुद्दो वद्दव काउसग्ग कियां । पछै । दोय खमासमणें । इच्छाका०सं०भ० सिझाय संदिस्साउं । सिझाय करुं (कही) । वैठो थको । तीन नवकार प्रमुख सिझाय करै । इति ॥ ※ ॥ पाक्षिकादि तीन पमिक्कमणाकी विधि आगे लिखी है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै पमिक्कमणो हुवां पछै । साधुनी वेयावच्च करै । पोरसी सीम सिझाय ध्यान करै । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवै तो आसज्ज कहितो थको । भूमि प्रमार्जै । थंमिल स्थानकें जई । देहसंका निवारै । प्रश्रवण वोसरावी । स्वस्थानकें आवै । (भगवन) वहु पमिपुन्ना पोरसी। (इम कही) खमासमण देई । इरियावही पमिक्कमें । पीछै राई संथारा विधि करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ हिवै राई संथारा विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥खमासमण देई । इच्छा० सं०भ० । राई संथारा मुहपत्ती पमिले

ऊं । (गुरु कहै पमिलेह) पछै इछं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । एक खमासमणें । इछा० सं० न० । राई संथारो संदिस्साउं । बीजै खमासमणें । इछा० सं० न० । राई संथारो ठावूं (पछै) गुरुवचनें । इछं कही । चउक्कसाय पमिम ल्लुग्गूरण । (इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जय वीयराय सूधी चैत्यवंदन करै । नूमि प्रमार्जी । संथारो उत्तर पट्टो पाथरै । पछै शरीर प्रमार्जी । निस्सही ३ इम कही । संथारै वैसी । तीन नवकार । तीन करेमि नंते । ऊचरी । णमो खमासमणाणं । गोयमाइणं महामुणीणं । अणुजाणह चिठिज्जा । अणुजाणह परमगुरु । (इत्यादि) राई संथारा गाथा नणी । वामहाथ सिराणें देई । सोवै । निद्रानावै । जांसीम । मुनिवर चरित्र चिंतवै । पसवामो फेरै (तो) शरीर संथारो प्रमार्जी फेरवै । जो देह शंकायें ऊठै (तो) पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी । इरियावही पडिक्कमें । पछै जघन्यें पिण । तीन गाथानी सिज्झाय करी सोवै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इति राई संथारा विधि कही ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै रात्रीनें पाछिलै पुहर ऊठी । नवकारादि गुणी । इरियावही पडिक्कमें । खमासमण देई । कुसुमिण डुस्सुमिण काउसग्ग करी । पूर्वोक्त विधै सामायिक लेवै । इहां इरियावही न पमिक्कमें । पछै दोय खमासमणें । सिज्झाय संदिस्सावी । आठ नवकारगुणी । पडिक्कमण वेलासीम सिज्झाय करै । पमिक्कमण वेला हुवां । पमिक्कमणो पूर्वली परे करै । (पिण इतरो विशेषछै) । राई आलोयां पछै । संथारा उवट्टणकी (इत्यादि पाठ कहै) इम संपूर्ण पमिक्कमणो करी । पमिलेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधै पमिलेहण करी । धर्म्मशाला पूंजी । काजो ऊधरी । इरियावही पमिक्कमें । दोय खमासमणें । सिज्झाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करै । पछै पोसहपारै ॥

॥ ※ ॥ हिवै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इछा० सं० न० । पोसह पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथा शक्ति कही । खमासमण देई (कहै) । इछा० सं० न० । पोसह पार्यूं । (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो) । पछै तहत्ति कहै । खमासमण

देई । तीन नवकार अर्द्धावनत गात्र ऊन्नो थको गुणी। खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहे । पीछे खमासमण देई कहे । इच्छाका० सं० न्न० । सामायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो । पछे यथा शक्ति कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० न्न० । सामायक पार्युं (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो) (पछे तहत्ति कही) खमासमण देई । अर्द्धावनत गात्र ऊन्नो थको । हाथ जोड्यां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गुणी । शंमासा पमिले हे । गोडालीयै वेसी । मस्तक नमावी । न्नयवं दसन्नद्दो (इत्यादि न्नावनारूप गाथा कहै) पछे पोसहना ऊपगरण संवरी । देहेरे जई । देव जुहारे । घरे आवी । आहार निप्पन्न ऊवो देखी । साधु समीपें आवे । अतिथि संविन्नाग व्रत साचवण निमित्तें । साधु न्नणी निमंत्रणा करी । घरे लेजावे । साधू पिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आवे । तिवार पछे साधूनें जे आहार दीधो । तेहनो हीज। शेष आहार आप करें ॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥ ✻ ॥ ॥✻॥

॥ हिवें दिन ऊगां पछे पोसहले तेहनी विधि लि० ॥

॥ ✻ ॥ घर थकी निश्चिंत थई । धर्मस्थानके आवी । सर्व ऊपगरण पमिलेही । कचरो विधिसुं परिठवी । इरिया वही पमिक्कमें । खमासमण पूर्वक आग्या मांगी । पोसह मुहपत्ती पमिलेहे । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्व लिखी है । तिमहीज जाणवी (पिण) दिवस पोसह हीज करणो ऊवे (तो) (पोसह दंमक ऊचरतां) जावदिवसं पज्जुवासामि । (एहवो पाठ कहै) अनें जो । अठपुहरी करवो ऊवे (तो) जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि । (एहवो कहे) पछे सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण डुस्सुमिण काउसग्ग करी । पमिक्कमणो करी । दोय खमासमणें वक्ष्वेलं संदिस्सावे २ (अनें जो) पूर्व पमिक्कमणो गुरु साथे कस्यो ऊवे (तो) पमिक्कमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वस्त्र । तेपहरी । पोसह सामायक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । वक्ष्वेलं संदिस्सावें । २ (तथा) जो गुरु सें जूदो पडिकमणो कस्यो ऊवें (तो) गुरु पासें आवी । पोसह सामायक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें ।

मुहपत्ती पडिलेही। बे वांदणा देई। इच्छाकाo संo भo। राइयं आलो ऊं। (गुरु कहे आलोएह) पछे राई आलोवे। फेर २ खमासमण देई। इच्छाकाo संo भo। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर। राइयं खामेमि (गुरु कहे खामेह) पीछे सर्व पाठ कहे। राई खामे। पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो। तेमाटे। पछे। गुरु आगे पच्चक्खाण उपवासनो करे। पछे। दोय खमासमणे। बइसणे संदिस्साऊं०३। (ए तीन प्रकारका विकल्प जाणवा)। हिवे पडिलेहणनो पूर्व करीजे। (तो पिण)। आदेश मांगवो। (तेइम) खमासमण देई। इच्छा०सं०भ०। पडिलेहण संदिस्साऊं। बीजे खमासमणे। पडिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पडिलेहे। पछे। इमहीज दोय खमासमणे। अंग पडिलेहण संदिस्साबी। मुहपत्ती पडिलेहे। पछे। वले खमासमण देई। इच्छकार भगवन पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावो जी। (इम कहे) पछे। एक खमासमण देई। इच्छाकाo संo भo। उपधि मुहपत्ती पडिलेऊं (कही) कोई वस्त्र आप पडिलेहणो रह्यो हुवे (तो) पडिलेहे। (नहीतो) वली आसण पडिलेहे। पछे। दोय खमासमणे। सिज्झाय संदिस्साबी। उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे। आगे सर्व किया पूर्व अठपुहरी पोसहमें लिखीजे। तिमहीज जाणवी। पिण इतो। अठ पुहरी पोसहीतो) पाछली राते वली सामायिक न लेवे। जिणे दिवस संबंधी चौपुहरी पोसह लीधो हुवे। (ते) पाछले पुहर। पच्चक्खाण कियां पछै। दोय खमासमणे। बहीपडिलेहण संदिस्साऊं। बही पडिलेहण करुं। (कहै) पिण थंडिला पद नकहे। अने थंडिला नही पडिलेहे। यह निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विसेष विधिही सो बतलाई ॥ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लिo ॥ ॥

॥ ॥ तिहां जिणे प्रथम चौपुहरी। पोसो कचरो है। पछे संध्यानी पडिलेहण करतां। रात्रि पोसहनो भावथयो। (तो) पच्चक्खाण कियां पछै। दोय खमासमणें। पोसह मुहपत्ती पडिलेही। तीन नवकार गुणी। तीनवार पोसह दंडक उचरै। (तिहां) जाव रत्तिं पज्जुवासामि (इम)

पाठ ऊचरै । पछै । सामायक विधि पूर्वं लिखी है । तिम करै (पिण) सामायक ऊचर्यां पछी । दोय खमा समणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार कही । वैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीछै । दोय खमासमणें । इछाका० सं० भ० । छंडी थंम्डिला पम्डि लेहण संदिसाऊं । छंडी थंम्डिला पम्डिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) इछंकही । (ऊपधि पम्डिले है) आगै सर्वक्रिया पूर्वं लिखी तिम जांणवी । (तथा) जे श्रावक ऊपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोसहनों भावथयां । पाछलै पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी ऊवै । (तो सखो) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व ऊपगरण पम्डिलेही । इरियावही पम्डिक्कमें । पीछै चौविहार पच्चक्खाण करी । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पम्डिलेही । दोय खमा समण देई । पोसह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनवेर पोसह दंमक ऊचरै । (तिहां), दिवस सेसं रत्तिं पज्जुवासामि (कहै) संध्या ऊवै । (तो) रत्तिं पज्जुवासामि कहै । पीछै । विऊं खमासमणें सामायक मुहपत्ती पम्डिलेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावै । फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिभंते ऊचरै । दोय खमासमण देई । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमासमण देई । वैसणो संदिस्सावी । शीतादिकै । वे खमासमण देई । पांगरणुं संदिस्सावै । पीछै । वे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पम्डिलेहै । फेर । वे खमा समण देई । छंडी थंम्डिला पम्डिलेहण संदिस्सावी । (जो) अण पडिलेह्यो ऊपगरण ऊवै । (तो) पडिलेहै(जो) सर्व ऊपगरण पम्डिलेह्या ऊवै । (तोपिण) थानक शून्यता टालवा भणी । वले आसण पम्डिलेहै । पम्डिक्कमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै । पीछै । ऊचार प्रश्रवणना (२४) थंम्डिला पम्डिलेही पम्डिक्कमणो करै । (तथा) पाछलीरातें । वली सामायक नलेवै । इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना विकल्प जाणवा) ॥ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ २४ थंम्डिला पम्डिलेहण पाठ लि०॥ ॥

॥ ॥ आगाढे आसन्ने ऊचारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगा

ढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ ※ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ※ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ ※ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंमिला पडिलेहण पाठकहा ॥ ※ ॥

॥ हिवै थंमिला कहां २ करणा सोकहे है ॥

॥ ※ ॥ ६ थंमिला सय्याके दोनु तरफ, दहणें पासे (३) वामपासे (३) पमिले है ॥ ६ थंमिला दरवज्जेके भीतर पासे दहिणें ३ वामें ३ पमिले है ॥ ६ थंमिला दरवज्जे के बाहर दोनु पासे पडिले है ॥ ६ थंमिला (जहां) उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनु तरफ पडिले है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ (तिहां) प्रथम वंदित्तू सूत्र पर्यंत । देवसिक पमिकमी । १ खमासमण देई । देवसी आलोइयं पमिक्कंता । इच्छा० सं० भ०। पक्खी मुहपत्ती पमिलेऊं । (चौमासे) चौमासी० मुह० (संवच्छरीयें) संवच्छरी मुहपत्ती पमिलेऊं । पछै (गुरुकहै पमिलेह) पछै इच्छं कहै । दूजी खमासमणदेई ।

मुहपत्ती पडिलेही। वांदणादेवै। तिहां (पक्खीमें) पक्खो वइक्कंतो। (चौमासी में) चौमासी वइक्कंतो। (संवत्सरीमें) संवत्सरो वइक्कंतो। इम यथा योग कहै। (पछै गुरु कहै) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिकै, पाक्खिक (चउमासिक) संवत्सरिक भणज्यो। ठीक जयणा करज्यो। मधुर स्वरै पडिकमज्यो। खासै सो विवरा सुद्ध खासज्यो। मांडलमें सावचेत रहज्यो पछै सगलाही कहै। तहत्ति। पछै ऊठी। इच्छाका० सं० भ०। संबुद्धा खामणेणं। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर। पक्खियं (३) खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछै मस्तकैं अंजली करतो थको। इच्छं खामेमि पक्खियं (३) कही। गोमालीयें वैसी। मस्तक नमावी। दक्षिण हाथ गुरु साहमू करी मुहपत्ती मुखें देई। (पक्खियें) पनरसन्हं दिवसाणं। पनरसन्हं राईणं। जंकिंचि अप्पत्तियं। (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चउमासे॥ चउण्हं मासाणं। अठण्हं पक्खाणं। वीसोत्तरसो राइं दियाणं। जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहै)। संवत्सरीयें॥ दुवाल सण्हं मासाणं। चौवीसण्हं पक्खाणं। तिन्निसय सठि राइं दियाणं। जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहै) तिवारे (गुरु पिण मिच्छामि दुक्कडं कहै)। तिहां दोय साधु उपरता हुवै (तो) पाखियें (३) चौमासीयें(५) संवत्सरीयें(७) साधुनें खमावै। पछै ऊठी। अवग्रह मांहि रह्यो कहै। इच्छाका० सं० भ०। पक्खियं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह) पछै इच्छं आलोएमि। जोमे पक्खिउ (३) अइयारो कउ (इत्यादि सूत्र भणी) संक्षेपै (अथवा) विस्तारें। पाखी चौमासी। संवत्सरी। अतीचार आलोवै। पछै। सव्वस्सवि पक्खिय (३) इत्यादि। इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै। तिवारैं (गुरु कहै) चउत्थेण पडिक्कमह (चौमासै) छठेण पडिक्कमह (संवत्सरीयें)। अठमेण पडिक्कमह। इच्छं। तस्समिच्छामि दुक्कडं (कही) द्वादशावर्त्त वांदणादेवै। पछै। इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन्। देवसियं आलोइयं पडिक्कंता (१) पत्तेय खामणेणं। अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर। पक्खियं (३) खामेऊं। (गुरु कहै खा०) पछै। इच्छंखामेमि पक्खियं। ३ (इत्यादि पाठ) सर्व पूर्वे कह्यो। तिम कही। मिच्छामि दुक्कडं देई। खमावै। पछै। वे वांदणादेई। भगवन् देवसियं आलोइयं पडिक्कंता। पक्खियं (३) पडिक्कमावेह। (गुरु

कहै सम्मं पडिक्कमह)। पछै इच्छंकही। करेमि भंते सामाइयं। इच्छामि ठामि काउसग्गं। जोमे पक्खिउ (३) (इत्यादि कही) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही। काउसग्ग करै) गुरु पाखी सूत्र कहै। ते सांभलै। अनें गुरु थकी जूदा पडिक्कमता हुवै (तो) एक श्रावक खमासमण देई। कहै। भगवन सूत्र भणुं। (गुरु० भणह)। इसो वचन मनमें धारी। (इछं कही। ऊभो थको। हाथ जोडी। मुहपत्ती मुखें देई। तीन नवकार कही। मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चिंतवता। (वंदित्तु सूत्र गुणें) बीजाश्रावक। करेमि भंते०। इच्छामि ठाउं काउसग्गं। तस्सुत्तरी (अन्नत्थू कही) काउसग्गमें रह्यां सुणें (सूत्रप्रांते) णमो अरिहंताणं कही (काउसग्ग पारी) ऊभा थका तीन नवकार गुणी (वैसै) पछै तीन नवकार (३) करेमि भंते कही। इच्छामि पडिक्कमिउं। जोमे पक्खिउ (३) इत्यादि कही। (वंदित्तु सूत्र गुणें.) पडिक्कमे देवसियं सव्वं। (एहनें ठिकाणें) पडिक्कमे पक्खियं। चौमासीयं। संवच्छरियं (सव्वं कहै) पछै ऊठी। अब्भुट्ठिउमि आराहणाए (इत्यादि परिपूर्ण भणी) खमासमण देई। इच्छा० सं० भ०। मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं। काउसग्ग करूं (गुरु कहै करेह) पछै इछं कही। करेमि भंते सामा०। इच्छामि ठाउं काउसग्गं। तस्सु०। अन्नत्थू। (इत्यादि कही) पाखीयें (१२) लोगस्स। चौमासै (२०) लोगस्स। संवच्छरीयें (४०) लोगस्सनो काउसग्ग करै। एक नवकार ऊपर। काउसग्ग करी। (पारी) लोगस्स कहै। वैसी। मुहपत्ती पडिलेही। बे वांदणा देई। इच्छा० सं० भ०। समाप्ति खामणेणं। अब्भुट्ठिउमि अभ्भिंतर। पक्खियं (३) खामेऊं (गुरु कहै खामेह) पछै। इछं खामेमि पक्खियं। (इत्यादि पाठ) पूर्वें कह्यो। तिम कहै। (पछै) इच्छाका० सं भ०। पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहै)। पुण्यवंतो च्यारवेर खमासमण देई। तीन २ नवकार कही। पाखी (३) समाप्त खामणा खामह। पछै। श्रावक एक खमासमण देई। मस्तक नीचो नमावी तीन नवकार गुणें। इम च्यार वार कहे। पछै। (गुरु कहै नित्थारग पारगाहोह) पछै श्रावक कहै। इछं। इच्छामो अणुसट्ठिं (कही) (गुरु कहै) पुण्यवंतो। पाखीनें लेखै। एक उपवास। (अथवा) दोय आंबिल (अ

थवा) तीन नीवी । (अथवा) च्यार एकासणां । (अथवा) वेहज्जार सिझाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक भणिज्यो ॥ इम चौमासे एसर्व डुगणो कहणो । संवत्सरीयें त्रिगुणो कहणो पछै जिणें तपकीधो हुवै । ते पडछियं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै । तहत्ति । पछै वे वांदणां देई । अब्भुठ्ठिमि अभ्भिंतर । देवसियं खामेमि । इत्यादि कहैं) पछै वे वांदणा देई । आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहै । इम आगै सर्व विधि । देव सिक पडिक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष है । श्रुत देवतानो काउस्सग्ग करी । स्तुति कहै । पीछे भवण देवयाए करेमि काउसग्गं (इत्यादि विधें) भवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही। क्षेत्र देवतानो काउसग्ग करै । (तथा) तीने पर्वें । वडो स्तवन अजित शांति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां । पछै। एक श्रावक गुर्वाज्ञायें । नमोर्हत्सिध्धा कही । शांति स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । वीजा सर्वसुणें । जिणांनें रात्री पोसह न हुवै (ते) पोसह सामायिक पारी सांभलै ॥※॥ ॥ ※ ॥

इति पाक्षिकादि (३)पडिक्कमणविधिः कही॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें छम्मासी तपचिंतन विधिः॥

॥ ※ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो छम्मासी तपहै ॥ रे जीव ते करि सके । नकरिसकुं । इम एक दिन उणो । करि सकै (न करिसकुं) । इम एकेक दिन उणो करतां । उगुण तीस दिन ऊणा छम्मास हुवै । तिहां सूधी पूछियै । पछै। (पंचमासी) करि सकै । न करिसकुं । एक दिन ऊणी पंचमासी करि सकै (न करिसकुं)। इम एकेक दिन उणो करतां । उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगें पूछियें । पछै । (चउमासी) एक दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । डुमासी । यावत् (एक मासकरि सकै) । नकरि सकुं । पछै। एक दिन ऊणो कियां । सोलह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सकै (न करिसकुं) । पछै। वे वे भात घटावतां पूछियें । (इम) वत्रीसम करि सकै (न करिसकुं) । (इम) त्रीसम । अठा वीसम । छवीसम । चोवीसम । बावीसम । वीसम । अढार

थई सूत्र पूर्ण करै। इम अतीचार पडिक्कमी। श्री गुरुनें विषै पोतानो कीधो कोई अपराध खमाइवा निमित्तें। वांदणा देवै। पछै गुरु प्रमुखनें खमावी काउसग्ग निमित्तें। फेर वांदणा देवै। ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन पणो जणाइवा निमित्ते पिण जाणवो। पछै (श्रावक) आयरिय उवझाए (इत्यादी तीन गाथा भणें) हिवे आलोयण पडिक्कमणा थी शुद्ध न थया (जे) चारित्रादिकना मोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवानें अर्थे पांचमो आवश्यक काउसग्ग करै॥ ॥ तिहां। प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र भणी। चारित्राचार सुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै। इहां तीजी वार वले सामायक उच्चारण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें कीधी सफल थाइ। ए अर्थे। पछै ज्ञान थी समकित अधिको है (तेमाटें) दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कही। सव्वलोए (इत्यादि) सूत्र भणी। एक लोगस्सनो काउसग्ग करै। पछै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें। पुक्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स भगवउ (इत्यादि भणी) बीजो एक लोगस्सनो काउसग्ग करै (इहां) प्रथम काउसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो। ते ज्ञानादिक थी चारित्रनो अधिकपणो छे (तेमाटें) वली। ग्यानादिकनी अपेक्षायें, चारित्रनें अतीचार घणा लागै। तेपिण कारण जाणवो। पछै। ज्ञान। दर्शन। चारित्राचार। निरतीचार पणें आचरवाना फलभूत श्रीसिद्ध भगवान, तिणारी स्तवना। सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यादि भणें) पछै। हिवणां उपगारी श्री महावीर स्वामीछै (ते माटे) जो देवा ण विदेवो (इत्यादि तेउंनी स्तवना करै) पछै महा तीर्थपणा भणी। उज्जिंत शेल सिहरे (इत्यादि तीर्थ स्तवना करै) इम। चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार सुद्ध करी। समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणछै (तेमाटें) श्रुत समृद्धि निमित्तें। श्रुत देवतानो काउसग्ग करी स्तुति कहै। पछै जेहना क्षेत्र में रहियै। ते क्षेत्र देवतानों काउसग्ग करी। स्तुती कहै। (सिद्धांत माहें) तीजै व्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप भावना कहीछै। ते साचवणें निमित्तें ए काउसग्ग संभवै है। ए दोनुं काउसग्ग पूर्वधारीये आचस्या छै। (आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, भाष्यादिक मांहे) श्रीहरिभद्र सूरि प्रमुख मोटे आचार्यें कह्याछै (ते माटें) प्रमाण है। पछै काउसग्ग थी। केई अती

चार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । छठो आवश्यक पच्चक्खाण कह्यो ॥※॥ तेपूर्वे कीयो होय(तो) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक कही । मुहपत्ती (अनें) काया पडिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इच्छामो अणुसिट्ठिं कहै । तुह्मारी आज्ञायें में पडिक्कमणो कीधो । एहवुं गुरुनें ज णाविवा निमित्तें । ए वांदणा कह्या । इतरे पडिक्कमणो परिपूर्णथयो ॥※॥ (हिवै) निर्विघ्न पणें पडिक्कमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें करी । गुरु एक स्तुति कह्यां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्द्धमान स्वरे । तीन स्तुति कहै (इहां गुरुना वचननें अंते) शिष्यादिक । नमो खमासमणा णं (एहवो गुरुनें नमस्कार कहै) ते गुरु वचननो बहुमान रूपछै । पछै शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु भक्ति पूर्वक सफल थायै (ते माटें) पडिक्कमणानें प्रारंभे (तथा) अंतें । देव गुरु वंदन कह्यो ॥ ※ ॥ हिवै पडिक्कमणा माहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्वे काउसग्ग कीधा छे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगस्स नो काउसग्ग करी । मंगल निमित्तें लोगस्स कहै । जे साधु श्रावक आ त्मार्थीहुवै । ते ए हेतु समझी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पडिक्कमणो करै । ते लीलायें भवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ※ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः । प्र ति क्रमण हेतवः । निवद्धा भाषयोद्धृत्य । साधु श्राद्धादि हेतवे ॥ १ ॥ वा चकामृत धर्माणां । शिष्येणात्म हितेच्छुना । क्षमाकल्याण गणिना । वीका नेर पुरे मुदा ॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चौतीसे अतिशय जुत्त । वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ (ढाल) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठे तुझ निम्मल नाण । लहीयै परम महोद य ठाण ॥ १ ॥ ※ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कम ल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ※ ॥ इतना कही । कुसुमांजली चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्हत् सि

द्धा० कही । पढै ॥ ※ ॥ (गाथा) जोनिअ गुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ १ (ढाल) जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ ※ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ※ ॥ कुसुमांजली चढाई जै । गोमां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके नमो ऽर्हत्सिद्धा०कही पढै ॥※॥ (गाथा) निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥ (ढाल) लोका लोक प्रकासक नाणी । भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्द तणी नीसाणी। तसुभगतें मुझमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ※ ॥ ३ ॥※॥ कुसु०। दोनुं हाथे टीकी दीजै । मुखै पढै। नमो ऽर्हत्सिद्धा० ॥ ※॥ (गाथा) जे सिझा सिझन्तिजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अरिहन्त ॥१॥(ढाल) शिव सुख कारण जेह त्रिकालै । समपरिणामें जगति निहालै ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखालै । इन्द्रादिक जसु चरण पखालै ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥※॥ कुसु०। दोनुं खांधे टीकी । दीजै । मुखै पढै नमो० ॥ ॥※॥ (गाथा) सम्म दिट्ठी देशजय साहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार॥१॥ (ढाल)॥ चौविह संघें जे मन धास्यो । मोक्ष तणो कारण निरधास्यो ॥ विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ※॥ कुसु० मस्तक टीकी दीजै । नमो ऽर्हत्सिद्धा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥※॥ (वस्तु) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कल्लाण कविह संठविअ । करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इक्कसमय विहरंन्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस । भत्तिह भावें पूजीया । करोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ एकदिन अचिरा हुलरावती। ए चाल ॥※॥ भव तीजय समकित गुण रम्या। जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना।

करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता । मनभाव ना एहवी भावता ॥ सवजीव करूं शासन रसी । ऐसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलुं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ उबंधे विचइ एकभव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल हे नरभव उदार । भरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान । मझखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ (ढाल) पुन्यें सुपनाहे देखै । मनमां हरप विसेषै ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निरभय केसरी सींह । लखमी अतिहि अवीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै । इन्द्रधजा जगजीपै ॥ पूरण कलस पंमूर । पद्मसरोवर पूर ॥ ६ ॥ इग्यारमें रयणायर । देखै मां ताजी गुणसायर ॥ वारमें भुवन विमान । तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अग नि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भासै । राजा अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यै पुत्र मनोहर ॥ इं द्रादिक जसु नमसै । सकल मनोरथ फलसै ॥ ६ ॥ ॥ ※ ॥ (वस्तु) ॥ ※ ॥ पुन्य उदय २ ॥ ऊपना जिननाह । माता तव रयणी समें । देखि सुपन हरखंत जागीअ । सुपन कही निज कंतनें । सुपन अरथ सांभलै सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी । होस्यै पुत्र नि धान । इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसै सिद्धि विधान ॥※॥ ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चंद्रा उल्लालानी ॥※॥ सोहमपति आसन कंपीयो । देई अ वधे मन आणंदीयो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज । भवजल ता रण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अभवी पारग सत्थवाह । केवलनाण ईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तव रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअम पय समुहा आवितत्थ । करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भाषे एकुण आजसार । तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मि थ्याविप चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु

प्रणमी ऊवो सनत्थ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि। तव देव देवी हरखे सुणे वि॥ ६॥ गावै तव रंन्ना गीतगान। सुरलोक ऊवो मंगल निधान। नर खेत्रें आरज वंसठाम। जिनराज वधे सुर हरखे धाम॥ ७॥ पिता माता घरे उच्छव अलेष। जिन शासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हर खसंग। संयम अरथी जननें उमंग॥ ८॥ सुन्नवेला लगनें तीर्थनाथ। जनम्या इंद्रादिक हरखे साथ॥ सुखपाम्यां त्रिन्नुवन सर्वजीव॥ वधाई व धाइ थई अतीव॥ए॥ ※॥ फूल अक्षतसें वधावै। ३ प्रदक्षिणा देवै। (पीछे) शक्रस्तव, ठाणं संपाविउंकामस्स। तक कहै। पीछे। रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करै। धूपखेवै॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहि सुं०॥ ए चाल॥ ※॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार। नर खेत्र मंमण ऊह विहंमण। न्नविक मन आधार॥ तिहां रावराणा हरख उच्छव। थयो जग जयकार॥ दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी। लह्यो हरख अपार॥ १॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी। गावती गुणछंद॥ जिन जननी पासे आय पऊती। गहकती आणंद॥ हेमायतें जिनराज जायो। शचि वधायो रम्म। अमजम्म निम्मल करण कारण। करिस सूई अकम्म॥ २॥ तिहां न्नूमि सोधन दीप दरपण। वायवीऊणधार॥ ति हां करिय कदली गेह जिनवर। जननी मज्जनकार॥ वर राखमी जिनपा णि बांधी। दीयै इम आसीस॥ युगकोमि कोमी चिरंजीवो। धर्मदायक ईस॥३॥ (ढाल) उल्लालानी॥ ※॥ जिनरयणीजी दश दिश उजलता धरै॥ सुन्नलगनेंजी ज्योतिस चक्रते संचरै। जिन जनम्याजी जिण अव सर माता घरे॥ तिण अवसरजी इंद्रा सण पण थर हरे॥ (त्रूटक) थरहरै आसन इंद्रचिंतै कौन अवसर एवन्यो। जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपनो॥ निजसिद्ध संपति हेतु जिनवर जाणि न्नगतें ऊमह्यो। विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो॥ १॥ (ढाल) तव सुरपति जी घंटानाद करावए॥ सुरलोके जी घोषणा एहदि रावए। नरक्षेत्रें जी जिन वर जनम ऊवो अछै। तसुन्नगतें जी सुरपति मंदि र गिर गछै॥ (त्रूटक) गछै मंदिर शिखर ऊपर न्नुवन जीवन जिनत णो। जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सविसुर घणो। तुम

सुद्ध समकित थास्यै निरमल देव देवी निहालतां । आंपणा पातिक सर्व जास्यै नाथ चरणपखालतां ॥ ३ ॥ (ढाल) इम सांभलजी सुरवर कोमि वहू मिली । जिन वंदण जी मंदर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वामि वधा विया । (त्रूटक) वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्यहुं कृतपुन्य ए । त्रैलोक्य नायक देवदीठो मुझ समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुह्मचो मेरु मझन वरकरी । उछंग तुम्हचै वलिय थापिस आतमा पुन्यें भरी ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपे जी अतिसय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल वहै । सुर कोडो जी जिन दरसणनें उमहै (त्रूटक) सुर कोमि कोमी नाचती वलि नाथ शचि गुण गावती । अपछरा कोमी हाथ जोमी हाव भाव दिखावती जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदे आसी सए । अह्मत्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी पांडुक वनमें चिहूं दिसै । गिरसिल परजी सिंहासण सासय वसै । तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या । चौसठ जी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ (त्रूटक) आविया सुर पति सर्व भगतै कलश श्रेणि वणाव ए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थऔषधि सर्व वस्तु अणाव ए । अच्युय पति तिहां हुकमकीनो देव कोमा कोमिनें । जिन मझनारथ नीर ल्यावो सवे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥ ※ ॥ सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेके खडा रहै । मुखसें पढै (ढाल) शांतिनें कारणै इंद्र कलशा भरै । ए चाल ॥ ※ ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी । उल्लसीनें धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह गंग पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणें सुभतरा । उपगरण पुप्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें भासिया तेम आणीठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिय करकलश करि देवता । गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता । धन्य अह्म सगति सुचि भगति इम भावता॥३ सम कित वीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें भक्तिजल सींचता । मेरु सिहरो वरे सर्व आव्या वही । शक्रउछंग जिन देषि मन गह

गही ॥ ४ ॥ ॥ (गाथा) ॥ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदिठ पुव्वो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिछत्तमोह विद्धंसणो । आणाइ तिन्ना विणासणो । देवाहि देवो दिठ्ठो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ॥ (ढाल तेह ज) ॥ ॥ एम पन्नणंति वण भुवण जोईसरा । देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई वररमण वयणेण अइतछगा ॥ ५ ॥ (वस्तु) तत्थु अच्चुय२ इंद्र आदेश । करजोमि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस पामीय । अदभुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुछंत सामीय ॥ इंद्र कहै जगतारणों । पारग अह्मपरमेस । नायक दायक धम्मनिहि । करीयै तसु अभिषेस ॥ १ ॥ (ढाल एमी) तीर्थ कमल वर उदक भरीनें । पुष्कर सागर आवे (एचाल) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगै न्हामें । आतम निरमल भाव करंता वधतें शुभ परिणामें । अच्युता दिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ पू० (गाहा) ॥ तव ईशान सुरिंदो । सक्कं पभणेइ करिउ सुपसावो । तुह्म अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ तासक्किंदो पभणेई । साहमीय वछलंमि बहुलाहो । आणाइवंतेणं गिएहह होउ कयत्थाभो ॥ २ ॥ ॥ इतना कहके । सर्व स्नात्रिया, भगवान ऊपर कलश ढाले । मुखैपढे ॥॥ (ढाल) ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि । न्हवण करै प्रभु अंगै । करिय विलेपण पुप्फ मालठवि । वर आभरण अभंग ॥ सो० ॥ १ ॥ तब सुर वर बहु जय २ रव करै निश्चेधर आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो०॥ २ ॥ कोमिबत्तीस सोवन्न उवारी । वाजंतै वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । जननीनें सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापै एम पयंपै । अह्म निसतरिया आज । पुत्र तुह्मारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥४ सो० ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति सहित नंदीसर । करै जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इछा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिन आणा रंगी । राज सागर उवझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणै सुपसाय ॥ सो० ७ ॥

देवचंद निज नगतें गायो । जनम महोत्व छंद । बोधबीज अंकूरो उल्ह स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ७ ॥ (ढाल) ॥ इम पूजा नगतै क रे । आतमहित काज । तजिय विनाव निजनावना । रमतां शिवराज॥१॥ इ० ॥ काल अनंतें जे नवां । होस्यै जेह जिणंद । संपइ सीमंधर प्रनु । केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोत्व इणि परै । श्रावक रुचि वंत । विरचै जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ देवचंद जिन पूजतां। करतां नवपार । जिन पमिमा जिन सारखी। कही सूत्र मकार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ १ जल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) गंगामागध क्षीरनिधि । उषध मिश्रितसार । कुशुमें वा सित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ (ढाल) मणि कनकादि क अमविध करि नरी कलश सफार । शुन रुचि जे जिनवर नमें तसुनही उरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान । करता वर ता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥ (छंद) हर्ख नरी अप्सरावृंद आवै । स्नात्र करि एम आसीस नावै । जिहां लगें सुरगिरि जंबुदीवो । अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ※ ॥ (श्लोकः) ॥ विमल केवल नासन नास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं । जिनवरं वजमान जलौ घतः । शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेंद्राय । जलं यजाम हे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ※ ॥ जलसें न्हवण करावै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) वावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनें वन सार ॥ जि न तनु लेपै तसुटलै । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ (ढाल) सकल संताप निवारण तारण सङ्ग नवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो नवि नित्त ॥ निज रूपें नपयोगी धारी जिनगुण गेह । नावचंदन सुह नाव थी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरचतां सकल नाकी ।

कहै कुग्रह उष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज छाकी । भ्र
ष्पता अह्म तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलमोह तिमश्र वि
नासनं । परम शीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनैः । सहज
तत्व विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥
जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेंद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥
इति चंदनपूजा ॥ ※ ॥ केसर चंदन चढावे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकी दमणो बोलसिरि । पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥ (ढाल) अमल अखंडि त विकसित सुभ सुमनी घन जाति । लाखीणो टोडरठवी अंगीरचो बहु भांति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंडित करवा भव्य ॥ गुणरागी जडत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविध फूलै । सुरवरा ते गिणें क्षण अमूलै ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजै । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै । विशद चेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः । परमतत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति पुष्पपूजा ॥ पुष्प चढावै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोबान । मेल सुगंध घनसार घन । करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ (ढाल) धूपघटी जिम म हमहै तिम दहै पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावै पावै मन आणंद ॥ जे जिन पूजै धूपैं भव कूपैं फिर तेह ॥ नावै पावै ध्रुवघर आवै सुक्ख अ छेह ॥ २ ॥ (चालि) जिनवरे वासतां धूपपूरै । मिछत्त दुर्गन्धता जाइ दूरै ॥ धूप जिम सहज ऊर्द्ध गत स्वभावै । कारिका उच्चगति भाव पावै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल कर्म्म महेंधन दाहनं । बिमल संवर भावसु धूपनं ॥ असुभ पुद्गल संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्खितः ॥ १ ॥
ॐ ह्रींपरमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥※॥
इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ५ दीपपूजा ॥※॥

(डुहा) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी घृत पूर । वत्ती सूत्र कसुंनी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) मंगलदीप वधावो गावो जिनगुण गीत ॥ दीपतणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुन्नयोती द्योती जिन मुखचंद ॥ निरखी हरखो न्नविजन जिम लहो पूर्णानंद ॥ २ ॥ (चाल) जिन गृहे दीपमाला प्रकासैं । तेहथी तिमर अज्ञान नासैं ॥ निजघटे ज्ञानज्योति विकासै । तेहथी जगतणा न्नावन्नासै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) न्नविक निर्म्मल बोध विकासकं । जिनगृहे सुन्न दीपक दीपनं॥ गुण राग विसुद्ध समन्वितं । दधतुन्नाव विकास कृते जना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति दीपपूजा ॥ ※ ॥ मंगलदीप चढावै ॥※॥ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥※॥

॥※॥ (डुहा) अक्षत२ पूरसुं । जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचतां विस्तरै । निजगुण न्नर विस्तार ॥१॥ (ढाल) उज्जल अमल अखंमित मंमित अक्षतचंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक न्नावै रंग। निज सत्तानें सन्मुख उनमुख न्नावे जेह । ज्ञानादिक गुणठावै न्नावि स्वस्तिक एह ॥२॥ (चाल) स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे । स्वस्ति श्री न्नद्र कल्याण जागै । जन्मजरा मरणादि असुन्न न्नागै । नियत शिव सर्म रहै तासु आगै ॥३॥ (श्लोकः) सकल मंगलकेलि निकेतनं । परम मंगल न्नावमयं जिनं । श्रयति न्नव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोकृत स्वस्तिकं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ अखंम चावल चढावै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा ॥※॥

॥※॥ (डुहा) सरस सुची पकवान बहु । शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलै । क्षुधा दोष तसु दूर ॥१॥ (ढाल) लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर । सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर द्राख सीचोमा न्नक्तिव्यंजन घृतसद्य । करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै सख अनवद्य ॥२॥ (चाल) ढोवतां न्नोज्य पर न्नाव सांगे । न्नविजना निज

गुण न्नोज्यमांगे । अह्मन्नणी अह्मतणो सरूप न्नोज्य । आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥३॥ (श्लोकः) सकल पुद्गलसंग विवर्जनं । सहज चेतनन्नाव विलासकं । सरसन्नोजन नव्य निवेदनात् । परम निर्वृति न्नाव महं स्पृहे॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ※ ॥ नैवद्य मिठाई पकवान चढावै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ८ फलपूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) पक्व बीजोरुं जिन करै । ठवतां सिवपद देइ । सरस मधुर रस फल गिणै । इह जिन न्नेट करेइ ॥ १ ॥ (ढाल) श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार ॥ अंजीर वंजीर दाम्मिम करणा षटवीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक रमणीक वळफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ (चाल) फलन्नर पूजतां जगत स्वामी । मनुजगति बेलहै सफल पामी । सकल मनुध्येय गतिन्नेद रंगै । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) कटुक कर्मविपाक विनासनं । सरस पक्वफल व्रज ढोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रन्नोपुरः । कुरुत सिद्धि फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) इम अम्म विधि जिनपूजना । बिरचै जे थिरचित्त । मानवन्नव सफलो करै । वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥ (ढाल) अगणित गुण मणि आगर नागर बंदित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर उवज्झाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ (चाल) संबत गुणयुग अचल इंदु । हर्ष न्नरिगाइयो श्रीजिनेंदु । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी । लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसानी॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरवृंदं न्नक्तितः पूजयंति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्व मुल्लासयंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूंणे धार दीजै ॥ इति अर्घ पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमित स्नप नावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंध धूपैः । कृत्वा र्चनंतु विदधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एप विधिना लंकार वस्त्रादिकं । पूजा तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्या तिभक्त्यादृतः । नीरागस्य निरंजनस्य विजता राते त्रिलोकीपतेः । स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षया कांक्षया ॥ ॐ ह्रीं ॥ वस्त्रं० ॥ वस्त्र चढावै ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ ※ ॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहपम्मि भग्गापसरं । पया हिणं मुणियवयं करि ऊणं । पड इ सलूण त्तण लज्जियंच । लूणंहू अवहरंती ॥ १ ॥ पिक्खेविणुं मुह जिण वरह । दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छह भरिय । जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तड तड शव्द करंतिये । विज्ञा विज्ञ जलेण ॥ ३ ॥ जंजेण विज्ञव थुई । जलेण तं तहइ अत्थसहस्स । जिणरूवा मच्छरेणवि । फुट्टइ लूणं तड तडस्स ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै ॥ (पीछै) लूण पाणी लेई । मुखें गाथा कहे ॥ ※ ॥ सव्ववि मुणवई जलविजल । तंतह भमभइपास । अह वि कयंतरस निम्मलउ । निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विणु जलणहि पास । भरवि कयज्जल भावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दि निय पास । जिम जिय त्रुट्टै भव डुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले हि लेविणुं । सुरवइ भावहि मुणिवई सेवणुं । पभणइ जिणवर तुहपइ सरणं । भयतुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ ※ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजै ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उभय पयय भत्तस्स । नियठाणे संठियं कुणं तस्स । जिण पासै भमिय जणस्स । पिच्छतुह ऊय वहे पभणं ॥ १ ॥ सव्वो जिण पभावो । सरिसा सरिसेसु जेण रचंती । सव्वभूण अपासे । जडस्स भमणं न संक मणं ॥ २ ॥ अचंत डुःक्खं पिहू । ऊयवह निवडेण जडेण कयं । आणा

सव्वन्नूणं । न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजै ॥

॥※॥ अथ वूटा फूल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवणेव मंगलेवो । जिणाण मुह लालि संवलिया । तित्थ पव त्तण समई । तियसे विमुक्का कुसुम वुठी ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ए कही फूल उगलीजै प्रभु आगै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सतर भेद पूजानी विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम स्नात्र करै । पीछे । अष्ट प्रकारी पूजा करै । उज्ज्वल रूपै प्रमुखनी रकेबीमें । कुंकुम (तथा) केसर प्रमुखनो साथियो करै । पीछे सुंदर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल भरी । रुपियो थापनारो कल शमेंरखी । कलश रकेबीमेंधरै । पीछे । स्नातिया मुख कोस उत्तरासण करी । तीन नवकार गुणें । तीन नमस्कार करी । हाथें धूपदेई । रकेबी हाथे धरै । मनथिर राखै । छींक वर्जै । स्नातिया प्रभुजी सन्मुख खमा रहै । कलश अडिग्ग राखै । मुखै इम पढै । भावभलै भगवंतनी (इत्यादी) ।

॥※॥ अथ सतर भेद पूजा ली० ॥※॥

॥※॥ (दुहा) भावभलै भगवंतनी । पूजा सतर प्रकार । परसिध कीधी द्रौपदी । अंग छठे अधिकार ॥१॥ ॥※॥ (राग सरपदो)॥※॥ (दुहा) ज्यो ति सकल जग जागती ॥ (हां रेअइ०)॥ सरसति समरिसुभिंद ॥ सतर सुवि धि पूजा तणी । पभणिसु परमानन्द ॥१॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण (२) वत्थयुगं (३)। गंधारुहणंच (४) पुप्फरोहणयं (५)। माला रोहण(६) वन्नयं (७)। चुन्न (८) पमागाय (९) आभरणे (१०) ॥ २ ॥ मालकला सुयवंसुघरं (११) पुप्फंपगरंच (१२) अठमंगलयं (१३) धूव उखेवो (१४) गीययं (१५)। नट्टं (१६) वज्जं (१७) तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं । ज्ञाता अंग मझार । द्रुपदसुता द्रोपदि परै । क रियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत धोती धरी उचित मानी । (अइयो०) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदकै । सुभृत मणिक

लश करि विवध वांनी ॥ (अ०) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगवं लोमहस्ते नवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी । (अ०) । भणिय कुशमंजली कलश विधि मनरली । नवति जिनइंद्र जिम तिम अगारी । (अ०) ॥ ※ ॥ दुहा ॥※॥ परमानंद पीयूप रस । न्हवण मुगति सोपान । धरम रूप तरु सींचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवै । श्रावक शुभ परिणाम । शुचि पखाल तनु जिनतणै । करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधि (राग सारंग) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पूजा सतर प्रकारी । सुण जैनकी । (पू०) परमानन्द तिण छ्योरी सुधारस । तपतबुझीय मेरे तनकी ॥ (पू०) ॥१॥ प्रभुकूं विलोकि नमि जतन प्रमारजित । करत पखाल सुचि धार वनकी । (पू०) न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत । पंककुंवरप जिम घनकी । (पू०) ॥२ ॥ तरणि तारणि भवसिंधू तिरणकी । मंजरी संपद फल वरधनकी । शिवपुर पंथ दिखावण दीपी । धूमरी आपदवेल मरदनकी (पू०) ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग । जागी सुदिसा सुभ मेरे दिनकी । कहै साधु कीरति सारंग भरकरतां । आसफली मेरे मनकी (पू०) ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥१॥※॥ एकहो पंचामृतसुं न्हवणकीजै (तथा) मावे पांवकै अंगूठै जलधार दीजै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥※॥

॥※॥ सुंदर अङ्ग लूहणं करी । विंव प्रमार्जी । केसर चंदन मृगमद अगरादिकसें । कचोली भरी । लेकर खमारहै । मुखे० ॥ (रागरामगिरी) गात्र लुहै जिन मन रगङ्गसुंरे । (देवा) सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं(हारे देवा) वा०। गंध कसायसुमेलियै ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलियै रे (देवा) ॥ नं०॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीये ॥ करलीयै (हारे देवा) क० । रयण विंगाणि कचोलीयै ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधै सिरै रे (देवा) भाल कंठ उर उदर न्तरं । दुखहरै (हारे देवा) सुखकरै । तिलक नवेअंग की जीयै ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ श्रावक दू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै । तिमकरै (हारे देवा) ति० । जिणपर जनमन रंजीयै ॥ गा० ४ ॥ राग ललितमें । दुहा ॥※॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द शरीर ।

तिलक नवे अंङ्गपूजतां । लहै भवोदधि तीर ॥१॥ मिटै ताप तसु देहको। परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समर सीरंग ॥२॥

॥ ※ ॥ अथ विधि (राग ललित) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विलेपन कीजै जिनवर अंगै । जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ क्रम जानु कर खंधै शिर भाल कंठ । उर उदरन्तर संगै । विलुंपति अघमेरो करत विलेपन । तपत बुझति जिम अंगै ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही । मिलत नवेनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा । जैसें गंग तरंगै ॥ वि० ३ ॥ ※ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ※ ॥ एकही विलेपन कीजै । नव अंग पूजीयै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनो सांथियो करी । प्रभूजी आगै खमा रहै । मुखें इम पढै ॥ ※ ॥

॥※॥ (दुहा) ॥ वसन युगल उज्जल विमल । आरोपैं जिन अंग । लाभ ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ (राग गौडी)॥ कमल कोमल घन चन्दन चरचित । सुगंध गंधै अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अइयो० ॥ कनक मंम्डित हिय लालपल्लव शुचि । वसन जुग कंति अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अ०॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा । करिय पहिरवाणी ढोइयै ए ॥ (हांरे) अ० ॥ पापलूहण अंगलू हणो देवनें । वस्त्रयुग पुंज मल धोइयै ए ॥ (हांरे) अ० २ ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधिः (राग वैराग्नी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्योहै जगतगुरु । (हे हांए) आगे वन्योहै जगतगुरु । देव दुष्यहर अब इतनो मांगुं । तुंहीज सबहि हितु तुंहीहै मुगतिदाता । तिण नमि २ प्रभु जीकै चरणें लागूं ॥ दे० १ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागूं । श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृतपीतां । सबराग्नी दुख संशय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकही वस्त्र युगल चढावै ॥ ॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अगर, चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोली भरी । आगे ऊभा रहै । मुखे इम पढे ॥ (गोमी रागमें । दूहो) ॥ पूज चतुर्थी इण परे । सुमति वधारे वास । कुमति कुगति दूरे हरे । दहे मोह द लपास ॥१॥ राग सारंग ॥※॥ (हां होरे देवा)॥ बावन चंदन घस कुमकुमा । चूरण विधि विरचे वासुए । (हां होरे देवा) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा । कंकोल तणो अधि वासुए ॥ (हां०) २ ॥ वास दशोदिश वा सतें । पूजे जिनअंग उवंगुए ॥ (हां०)॥ लाहि भवन अधिवासीयो । अनुगामिक रस अभंगूए ॥ २ ॥ इति ॥※॥

॥※॥ अथ विधिः (राग पुर्वी गौमी) ॥※॥

॥ ※ ॥ मेरे प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेले ॥ पू० ॥ वासभवन मोखो सबलोए । संपदा भेले ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताथे ई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण तोरा । चरण सेवे ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासे (पूजीये जिनराजता थेई । चतुरगति डुक्ख गोरी । चतुर्थी धनकि ॥ ॥ ३ पू०॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥※॥ एकही वासचूर्ण प्रभुजीके बिंब उपर छांटे । मंदिर में चूर्ण उछाले ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ गुलाब, केतकी, पांचे तरे का फूल रकेबीमें रक्खी । मुखे इम पढे ॥※॥ (डुहा)॥ मन विकसे तिम विकसतां । पुहप अनेक प्रकार । प्रभु पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥※॥ (राग कामोद) ॥ चंपक केतकी मालती ए । (हरि अ०) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूइका । पउन्न सिरी अरविंद ॥२॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए ॥ (हरि ज०) मुकुलित कुशम अनेक । सिव रमणीसें वर वरे । विध जिन पूज विवेक । वि०। इति ॥

॥ ※ ॥ अथ विधि (राग कानमा)॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सोहेरी माई चरणं । मन मोहेरी माई चरणं । (अहो चरणं) विविध कुशम जिन चरणं । (अ०) । विकसी हसीत जंपे साहिवकुं । रा ग प्रभू हम सरणं ॥ सो०॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी (कु०)

पंच विषै (हां०पं०) डुख हरणें ॥ सो०॥ कहै साधु कीरति न्नगति न्नगवं तकी। न्नविक नरा। (हांरे न्न०)। सुख करणें ॥ १ ॥ सो० ॥ ※ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ठठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ नाग, पुन्नाग, दमणो, गुलाव, पाम्ल, मोगरा, सेवती, चंपेली, मालती (इत्यादि) पंच वरण फुलांनी माला हाथे लेई खमा रहै । मुखै इम पढै) (डुहा) ॥ ठठी पूजा ए ठती। मद्दा सुरन्नि पुष्फमाल । गुण गुंथी थापै गलै । जेमटलै डुख जाल ॥ १ ॥ (राग रामगिरी गुजरी) ॥ ※ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिका सोग पारिध कलीए (न्नलां पा०) ॥ १ ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका । लाल गुलाल पाम्ल न्निलीए । (न्नलां पा०) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा वेठला मालती । पंचवरणै गुंथी मालतीए । (न्नलां गुं०) हेमाल जिनकंठ पीठे ठवी लह लहै । जाणि संताप सब पालतीए । (न्नलां०) ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ विधिः । (राग आसाउरी) ॥※॥

॥※॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदै । चकोरकुं देखि जिम चंदै । (दे०) ॥ १ ॥ पंचविधि वरणरची कुशमांकी ॥ जैसी रयणाहे (जै०) वलि सुद मंदै (देखी०) ॥ २ ॥ ठवीरे तोम्र पूजा तवम्रार धूजै। सब अरियण (हांरे स०) होइ तिम ठंदै । (दे०) ॥ ३ ॥ कहै साधु कीरत सकल आस्या सुख । न्नविक न्नगत (हांरे न्न०) । जे जिन वंदै । (दे०) ॥ ४ ॥ इति ठठी टोम्र फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रन्नुजीके कंठे फूलमाला चढावै ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंचवरणा फूल केसरसें अंगीरचै । सो हाथे लेई । मुखै इम पढै ॥ ※॥ (डुहा) ॥ केतकी चंपक केवम्रा । सोन्नै तेम सुगात । चाढो जिम चढता ऊवै । सातमी यै सुख सात ॥१॥※॥(राग केदारो गौम्री) ॥ ॥※॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंए ॥ (हांरे अ०) कुंद गुलावसुं चंपको दमणको जाससुंए ॥१॥ सातमी पुजामें अंगी अलंकीयै । अंग आलंक मिससमाननी मुगति आलिंगियैए ॥ २ ॥ इति ॥ ※॥

॥※॥ अथ विधि (रागन्नैरवी) ॥※॥

॥※॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती। (पं०)। कुंद मचकुद गुलाव सिरोमणि। कर करणी सोवन जाती। (पं०) ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाम्रल अरविंदो। अंस जुई वेन्नलवाती। पारधि चरण कलार मंदारो। विण पट कूल वनी न्नाती। (पं०) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमण गाती। न्नैरवी कुगति व्रततिदाती। (पं०) ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥ ७ ॥ सुगंध पुष्पै करी अत्यन्त न्नक्तीसें न्नगवंतनें शरीरै अंगी रचै ॥

॥※॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥※॥

॥※॥ घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसें सुगंध वटी करि। जिनेश्वर नें आगै ले खमा रहै ॥ (डहा) ॥ अगर सेल्हारस सार। सुमती पूजा आठमी। गंधवटी घनसार। लावै जिनतनु न्नावसुं ॥१॥ (राग सोरठ) ॥※॥

॥※॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी (देवा)। पावन घस घन सारो जी। सुरन्नि सिखर मृगनान्निनो जी (देवा)। चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी (देवा)। अशुन्न करम चूरी जै जी। अंगण सुरतरु मोरियो जी (देवा)। तव कुमती जन खीजै जी। (तव सुमती जनरीजै जी) ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥※॥

॥※॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै (जिन० पू०)। गंधवटी घनसार उदारै। गोत्ततीर्थंकर वांधै। (न्नलां०२) (पू) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस। लावै जिन तनु रागै। धारकपूर न्नाव घन वरपत। सामेरी मति जागै ॥ (न्नलां २) (पू०) ॥ इति आठमी वरासचूर्ण पुजा ॥ ८

॥※॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥※॥

॥※॥ हिवै सधव स्त्री न्नेली होके ऊजल थाल में। कुंकुमनो साथियो करै। अक्षत थाल मे धरै। श्रीफल रूपानाणो धरै। धजा थालमें धरि सधव स्त्री माथै रक्खी। गीत गान गावतां। सव वाजित्र वाजतां। तीन प्रदक्षिणा देवै। पीछे ध्वजा ऊपरि गुरु पासें वासक्षेप करावै। प्रन्नु सन्मुख गुहली करै ॥ ऊपरि अक्षतासें साथियो करै। सुपारी चढावै। मुखे ऐसा

कहै । (डुहा) । मोहन ध्वज० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (डुहा) मोहनध्वज धर मस्तकै । सुह्व गीत समूल । दीजै तीन प्रदक्षिणा । परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ (राग मेघगौडी) ॥ (वस्तु) सहस जोयण २ हेममय दंभ युतपताक पंचेवरण । घुमघुमंत घुग्घरीय वाजै । मृदुसमीर लहिकै गयण (ल०) । जाण कुमतिदल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजाए (हांएवि०) नवमी पूज सुरंग । (न०) तिणपर श्रावक धजवहन । (ति०) आपै दान अभंग । (आ०) १ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधि ॥ (राग नट्टनरायण) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना । (जि०) । मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसवद ति प्रदक्षिणा । (क०) सधव वधू सिर सोहना ॥ १ ॥ (जि०) भांतिवसन पंच वरण वन्योरी । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु भणति नवमीपूजा नव । पाप नीयांणा षोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोह्यो नट्टनारायण (जि०) ॥२॥ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ※ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

॥ ※ ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ पिरोजा, नीलम, लसणिया, मोती माणकसें जड्या । आभरण लेई मुखे इम पढे) ॥ ॥ (राग केदारैमें)॥ (डुहा) ॥ ॥ दशमी पूजा आभरण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगै रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥१॥ शिर सोहै जिनवर तणें । रयण मुगट झलकंति । तिलक भाल अंगदभुजा । श्रवणकुंडल अति भंति ॥ २ ॥※॥ (राग अधभास गुंडमल्हार । आशावरी) ॥※॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया । मोती माणिक लाल रस णीया । (हीरा सोहैरे) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुभग अंक अंजना (मनमोहैरे) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जड्यो । काने कुंडल (हांरे) अति जुगतै जुड्यो । (उरहारूरे) । (मन वारूरे) ॥ भालतिलक वांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा मुदा । (सुखकारूरे) । (डुखहारूरे) ॥२॥

॥※॥ अथ विधिः ॥ (राग केदारो) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभु सिरसोहै ॥ मुगटमणि रयण जड्यो । (रय०) । अंगद

वाहु तिलक भालस्थल। यज्ञनीको कौन घड्यो ॥ (प्र०) १ ॥ श्रवण कुं म्भल शशि तरुण मंम्भल जीपै । सुरतरुसें अलंकस्यो । डुखकेदार चमर सिंहासन । छत्र शिर भ्रर धस्यो । अलंकृत उचितवस्यो ॥ २ (प्र०) ॥※॥ इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण (तथा) रोकनांणो म्च्चल चढावै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फुलघर हाथे लेई। मुखै इम पढै ॥ ※ ॥ (डुहा) ॥※॥ फूलगरो अतिसोभतो । फूंदै लहकै फूल । महकै परिमल फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग रामगिरी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका । कुंद मचकुंद वर विच कलूए (हांरे अईयो) तिलक दमणक दल मोगरा परमलं। कोमला पारिध पाम्लूए ॥ (हां० अ०) प्रमुख कुशमै रचै त्रिभुवन कुं रुचै । कुशमगेहें विचि तोरणूं ए ॥ (हां०अ०) गुञ्ज चंद्रोदयं फूंवका भ्रयं । जालिका गोख चितचोरणूए । (हां० अ०) ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ विधि ॥ (राग रामगिरी) ॥※॥

॥ ※ ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी । फूलघर आनंद झीलै (फू०) अ सत उसत दाम ववरी मनोहर । देखत तवही सव डुरितखीजै (फू०) ॥ ॥ १ ॥ कुशम मंम्प थंभ गुञ्ज चंद्रोदय। कोरणी चारु विनाण सजै । इ ग्यारमी पूज वणीहै रामगिरी । विवुध विमान जैसें तिपुरिभजै (फू०) ॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥११॥ एकही फूलघर चढाईजै ।

॥ ※ ॥ अथ वारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंचवर्णफूल गुलावजल लेई । मुखै इम पढै ॥ (राग मल्हार) ॥ (डुहा) वरषै वारमी पूजमें । कुशम वादलिया फूल । हरण ताप डुख लोकको । जानुसमा वक्रमूल ॥ १ ॥ (राग भीममल्हार) कम्खानी जाति ॥

॥ ※ ॥ मेघ वरसै भरी पुष्फवादल करी । जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वएयो विकचि अनुक्रम चिएयो । अधोवृंते नही पीडपस रं ॥ १ ॥ मे० २॥ वासमहके मिलें। भमर भमरीमिलें । सरस रस रंग ति

ण दुख निवारी । जिनप आगै करै सुरप जिम सुखवरै । बारमी पूज ति णपर अगारी ॥ मे० १ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधिः (राग भीममल्लार) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुष्फ बादलीया वरसै । सुसमां (अहो०) । योजन असु चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां (पु०) गमन आगमन की पी रनही तसु । इह जिनको अतिसय सुगुणें । गुंजत१ मधुकर इम पभणै ॥ गुं० ॥मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥ १ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै । तसुपीड नही सुम्मणें । (पु०) । समवसरण पंचवरण अधोवंत । बि बुध रचै सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करै । कुशम विकस हस ऊचरै । तसु भीमबंधन अधरा हुवै । जेकर हिं जे जिननमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥ एकही फूलउगलै ॥

॥ ※ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढै ॥ ※ ॥ रागवसंत ॥※ ॥ (दुहा) तेरमीपूजा अवसरै । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमतै स ही । परमानंद निधान ॥ ※ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ※ ॥ अतुल बिमल मि ल्या । अखंड्गुणे भिल्या । शालि रजत तणा तंडुलाए । श्लषण समाजक विध पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ ॥ (अ०)॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल आखे । जिनप आगलि सुथानक धरैए । तेरमीपू जा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करैए ॥ (अ०) ॥ २ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधिः (राग कल्याण) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांहो पुजावणी ते रसमें (हांहो रसमें ३) ॥ ते० ॥ अष्टमं गल लिख कुशल निधान । तेज तरुणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण भ द्रासन नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ । मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें । वर्द्धमान खस्तिक पूज मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ (पू०) ॥ ※ ॥ इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ※ ॥ अष्ट मंगलीक चढावै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ धूप रकेबीमें धर मुखै इम पढै ॥※॥(दुहा) ॥※॥ गंधवटी मृगमद

अगर सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार ॥१॥ (राग वेलाउल) ॥※॥ कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचेपूर । कुंदरुक्क सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥१॥ ※॥ गंधवटी घनसार चंदन मृग मदारस न्नेलि यै । श्रीवास धूप दशांग अंवर सुरन्नि वक्त द्रव्य मेलियै । वेरुलिय दंम्न कनक मंडित धूप धाणो कर धरै । न्नवबृत्ति धूपकंरति न्नोगं रोग सोग अशुन्न हरै ॥ २ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गोम्नी) ॥※॥

॥※॥ सव अरति मथन मुदार धूपं । करति गंध रसालरे । (देवा क०) धाम धूमा वलिय धूसर । कलुप पातिक गालरे (देवा) ॥ १ ॥ उ र्ध्वगति सूचंति न्नविकुं । मघमघै कर नालरे (देवा) चवदमी वामांग पूजा । दीयै रयण विशालरे । आरती मंगल मालरे । मालवी गौम्नी तालरे (देवा० स०) ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रन्नूकै वायें अंग धरी खेईजै ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥※॥

॥※॥ (प्रन्नुजीके मुख आगै मधुर स्वरे गुण ग्राम गावै) ॥※॥ (उहा) कंठ न्नलै आलाप कर । गावो जिन गुण गीत । न्नावो अधिकी न्नावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ (श्रीरागै आर्या) यद्दनंत केवल म नंत फलमस्ति जैन गुण गानं । गुण वर्णतान वाद्यै । मात्रा न्नापा लयै र्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुर चा री चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ विधिः ॥ (श्रीराग) ॥※॥

॥※॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केव ल जिम तिम फल अमृतं (जि०) ॥ १ ॥ विवुध कुमार कुमरी आलापै मुरज उपांग नाद जनितं (जि०) । पाठ प्रबंध धूयो प्रतिमानं । आयति ठंद सुरति सुमतं (जि०) ॥ २ ॥ सवद समान रुच्यो त्रिन्नुवनकुं । सुरनर गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं । पनरमी पूज हरै डरितं रे । (जि०) ॥ ३ ॥※॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ※॥

॥※॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां (वा) कुमरयां भेली होके प्रभूके सन्मुख संका कंखा रहत नाटक करै। स्त्रीयांका जोग नवणें (तो) समान अवस्थावाला पुरष नाटक करै (वा) कुमर कुमरयां मिलकै नाटक करै नाटक करणेंसें केई जीव तीर्थंकर गोत्रबांधाहै। नाटक करतां मुखै इम पढै॥

॥ ※ ॥ (दुहा) ॥ कर जोमी नाटक करै। सजि सुंदर सिणगार। भव नाटक ते नविभ्नमें। सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ (राग सुद्ध नट्ट) (काव्यं) भावादि प्पिमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना। सप्पिम्मा सम रूव वेसवयसो मत्तेभ कुंभत्थणा। लावण्णा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आलावणा। कुम्मारी कुमरा विजै न पुरव नच्चंति सिंगारणा ॥ १ ॥ (गद्यं) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीव। सूरियाभेणं देवेणं संदिठा। रंग मंम्फे पविठा। जिणनमंता। गायंता। वायंता। नच्चंतेत्ति ॥ २ ॥※॥

॥※॥ अथ विधि (राग नट्ट त्रिगुण)॥※॥

॥ ※ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी। द्रागम्दि तत्ता थेईय (अ०) ॥ द्रागम्दि २ कि थौंगि २ न। मुखै तत्ता थेईय (अ० ना०)॥ वेणु वीणा मुरज वाजै। सोलही सिणगार साजै। तनन्नन्नन्नेईय (अइयो) ॥ भ्रणण भ्रणणण घुग्घरु घमकै। रणणणणणेईय। (अ० २ ना०) कसंती कंचूकी तरुणी। मंजरी फूंकार करणी। सोभंती कुमरीय (अइयो) हस्त कंहा वादि भावै। ददन्ती भमरीय (अ० ना०) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक्क तणी। सुरीयाभै रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तात्तेईय (अ०)। जिमप भगतें भविक लीणा। आणंद तत्तात्थेईय (अ० ना०) ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सतरमी बाजित्र पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ सतरमी पूजामें सबजातिना वाजित्र बजावै। मुखै इम पढै ॥ तत घन सुखिरै आनधै। बाजित्र चौविध वाय। भगत भली भगवंतनी। सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ (गाहा) सुरमद्दल कंसालो। मझ्यर मद्दल सुवज्जए पणवो। सुरनारि नंदितूरो। पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥ (रा

ग मधुमाधवी) ॥ तूं नन्दि आनन्दि वोलत नन्दी । चरण कमल जंतु ज गत्रय वन्दी ॥ (तूं०) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन मुखवेदी । तिवलवोलै रंग अति हि आनन्दी । (तूं) ॥१॥ न्नेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन जैणावंती । जैन शाशन जश्वंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय वदंती ॥ (तूं०) ॥२॥ सेवन्नविक मधुमाधन फेरी । न्नवनी फेरी नण्पन्नणंती । कहै साधु स तरमी पूज वाजित्रसव । मंगल मधुर धुनिकर कहंती (तूं०) ॥ ३ ॥ इति सरतमी वाजित्र पूजा ॥ १७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥※॥

॥ ※ ॥ न्नवितूं न्नण गुण जिनके सव दिन । तेजतरण मुखराजै । (ते०) । कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय२ रंगै हमगजै । (न्नवि०१)अ णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुवि ध श्रावक की । न्नणीमें न्नगति हितकाजै (न्न० २) श्रीजिनचंद्रसूरि खर तरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अढार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजै (न्न० ३) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसायै सु विध उइ गाजै ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सव लीला सुख साजै (न्नवि० ४) ॥ ※ ॥ इति सतरन्नेदी पूजा समाप्त ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ आरतीकरण विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ पूजाकियां पीठे । सव कपमा । पाघ प्रमुख पहरकै ॥ उत्तरास ण करै ॥ पीठे प्रन्नू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपकै निलाम्म कुंकूंरो ति लक करै । पीठे पट दूरि करि । रकेवीमें साथियो करी । मांहि रूपाना णो । चावल सुपारी धरे । पीठे आरती दीपकसुं संजोयनें प्रन्नूके सन्मुख दक्षिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सव वाजतां । आरती करै । मुखै पढे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ आरती लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैजै आरती शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं व लिहारी ॥ (जैजै०) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ (जैजै० २)॥ चालीस धनुप सोवनमें काया । मृगलंछण प्रन्नु चरण सुहाया ॥ (जै०) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रन्नु पंचम सोहै । सोलम जिन

वर सुर नर मोहै ॥ (जै०) ४ ॥ मंगल आरती भोरहि कीजै । जन्म जन्म को लाहो लीजै ॥ (जै०) ॥ करजोमी सेवक गुण गावै । सो नर नारी अमरपद पावै॥ (जै०)५॥※॥ इति श्री आरती संपूर्णम्॥※॥

॥※॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बमी पूजा ॥※॥

॥※॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखियै है ॥※॥ (दुहा) ॥※॥ परम मंत्र प्रणमीकरी। तासधरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा करो। निज २ सक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ※ ॥ (काव्य) उप्पन्न सन्नाण महो मयाणं। सप्पाम्हि हेरा सण संठियाणं। सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं । नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं। प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय । थया जेहना ध्यानथी सौख्य भाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म, दुर्मर्म चकचूर जेणें । भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें। करी पूजना भव्यभावै त्रिकालै। सदा वासियो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीनैं । दियै देशना भव्यनैं हितधरीनैं। सदा आठ महा पाम्हिहारे समेता। सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा। भवोपग्रही च्यारठे जे विलग्गा । जगत्पंच कल्याण कै सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थकरा मोक्ष गामें ॥ ५ ॥ ※ ॥ (ढाल०) ॥ ※ ॥ तीरथपति अरिहा नमुं। धरम धुरंधर धीरो जी। देशना अमृत बरसता । निज बीरज वडबीरो जी। (उल्लालो)। वर अखय निरमल ज्ञानभासन सर्वभाव प्रकासता। निजशुद्ध श्रद्धा आत्मभावै चरण थिरता वासता। जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता। जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननैं थोभता ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ श्री सीमंधर साहिब आगै ए देशी॥※॥ त्रीजै भव वर थानक तपकरि। जिनबांध्युं जिन नाम। चउसठ इंद्रै पूजित जेजिन। कीजै तास प्रणामरे। ॥※॥ (भविका) सिद्धचक्र पद वंदो। जिम चिरकालै नंदोरे (भ०) उपशम रसनो कंदो रे (भ०) रत्नत्रयीनो दंदो रे (भ०) सेवै सुर नर इंदोरे (भ० सिद्ध० ७) (आंकणी) जेहनैं होइ कल्याणक दिवसै। नरकै पिण अजुआलुं । सकल अधिक गुण

अतिशय धारी । जेजिन नमी अघ टालुंरे । (न०) जे तिर्जं नाण सम्म ग्ग उप्पन्ना । भोग करम क्षीण जाणी । लेइ दिक्षा शिक्षा दिइं जगनें । ते नमीइं जिननांणीरे (न०सि०) ए ॥ महागोप महामाहण कहीयै । निरयामक सत्थवाह । उपमा एहवी जेहनें छाजै । तेजिन नमीइं उछाहरे (न०सि०) ॥ १० ॥ आठ प्राती हारज जसुछाजै । पैंत्रीस गुणयुत वाणी जेप्रतिबोध करै जगजननें । तेजिन नमिइं प्राणीरे (न०सि०)॥ ११॥ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ अरिहंत पद ध्यातो थको । दव्वह गुण पर्याये रे । भेद छेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थाये रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसें । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । ऋद्धि मिलै सव आईरे । (वी०) ॥ १३ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३। धूपं ४ । दीपं । ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । यथामहे स्वाहा ॥※॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथर श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) (दूजी पुजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ※ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कारगाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १६ ॥ ※ ॥ सकल करम मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आतम संपति भूपो जी । (उल्लालो) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी। मुनिराज मानसर हंस सम वम नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥※॥ समय पए

संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेस । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥१७॥ (भ०सि०) पूरव प्रयोगनें गति परिणामैं। वंधन भेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमें रंगरे ॥ १८ ॥ (भ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ० सि०) जाणें पिण न सकै कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास । उपमा विण नाणी भवमांहें । ते सिद्ध दीउ उल्लास रे ॥२०॥ (भ०सि०) ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम । विरमी सकल उपाधि । आतम रामें रमापति समरो । ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥ २१ ॥ (भ० सि०) ॥ ॥ ढाल ॥ ॥ रूपातीत स्वभाव जे । केवल दंसण नाणीरे । ते ध्याता निज आतमा । होइ सिद्ध गुण खाणीरे (वी०) ॥ ॥ उँ ह्रीं० ॥ ॥ ॥ इति द्वितीय श्री सिद्ध पदस्य कलश पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय आचारज पद पूजा लि०॥ ॥

॥ ॥ (दुहा) हिव आचारज पदतणी । पूजा करो विशेष । मोह तिमर दूरै हरै । सूझै भाव असेस ॥ १ ॥ ॥ सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं । नमो नमो सूरि सम प्पहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्य भाजा । षट्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पालवै सावधाना ॥ २ ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकालै । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आलै । जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा । जगत्ते चिरंजीव ज्यो शुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानंद रस स्वादता । पर भावै निःकामो जी । (उल्लालो निःकाम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधार थी । वरज्ञान दरशण चरण वीरज साधना व्यापार थी । भवि जीव वोधक तत्व शोधक सयल गुण संपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आदरा॥२५॥ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ पांच आचार जे सूधा पालै । मारग भाषै साचो । ते आचारज नमियै तेहसुं । प्रेम करीने जाचोरे ॥ (भ० सि० २६) वर छत्तीस गुणें करि सोभै । युग प्रधान जग वोहै । जग मोहै नरहै खिण को

है। सूरि नमूं ते जोहैरे ॥ (त०सि० २७) नित अप्रमत्त धरम उएसै। नही विकथा न कपाय। जेहनें ते आचारज नमीइं। अकलुस अमल अ मायरे ॥ (त० सि० २८) जेदिइं सारण वारण चोयण। पमिचोयण व लि जननें। पटधारी गत्नथंत्न आचारज। ते मान्या मुनि मननेंरे ॥ (त० सि०२९) अत्थमिइं जिन सूरज केवल। वंदीजै जंगदीवो। त्नुवन पदार थ प्रगट नपटुते। आचारज चिरंजीवोरे (त० सि०) ३० ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ ध्याता आचारज त्नला। महामंत्र सुत्न ध्यानीरे। पंच प्रस्थानें आ तमा। आचारज होइ प्राणीरें (वी०) ३१ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ※ ॥

इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा (३) ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चोथी पाठक पद पूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (उहा) गुण अनेक जगजेहना। सुंदर सोत्नित गात्र। उत्र छाया पद अरचियै। अनुत्नव रसनो पात्र ॥ १ ॥ सुत्तत्थ वित्थारण तप्प राणं। नमो २ वायग कुंजराणं। गणस्स संधारण सायराणं। सवप्पणाव ज्जिय मत्नराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सुरि गुणनें सुहाया। नमुं वाचका सक्त मद मोह माया। वली द्वादशांगादि सुत्रार्थ दानें। जिके सावधानें निरुद्धात्निधानें ॥ २ ॥ धरै पंचनें वर्ग वर्गित गुणौघा। प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा। गुणी गत्न संधारणे स्थंत्न पूता। उपाध्याय ते वंदिइं चित्प्रत्नूता ॥ ३ ॥※॥ (ढाल)※॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ। अज्जव मद्दव जुत्ताजी। सच्चंसोयं अकिंचणा। तव संयम गुण रत्ताजी। (उल्लालो) जेर म्या ब्रह्म सुगुप्त गुता सुमति सुमता शुत्नधरा। स्याद्वादवादइं तत्वसाधक आत्मपर वित्नजनकरा। त्नवत्नीरु साधन धीर शासन वहन धोरी मुनिवरा। सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ द्वादश अंग सिज्झायकरै जे। पारग धारग तास। सूत्र अरथ विस्तार रसिकते। नमो उवज्झाय उल्लासरे ॥ (त०सि०) ॥ ३४ ॥ अर्थ सूत्रनें दान वित्नागै। आचारज उवज्झाय। त्नवत्रिणहे जेलहै सिवसंपद। नमीयैं ते सुपसायरे (त०) ॥३५॥ मूरखशिस्य निपजाये जेप्रत्नु। पाहण पल्लव आणें। ते उवज्झाय सकल जन पूजित। सूत्र अरथ सविजाणेंरे॥ (त०सि०) ॥ ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक। आचारज पदयो

ग । जे उवझाय सदा ते नमतां । नावै नव नय सोगरे ॥ (न० सि०) ३७ ॥ वावना चंदन रस सम वयणें । अहित ताप सवि टालै । ते उवझाय नमी जै जेवलि । जिनशासन अजुवालैरे ॥ (न०सि०) ॥ १८ ॥ ※॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ तपसिझायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगवंधव जगभ्रातारे ॥ (वी०तु०) ॥ १९ ॥ उँ ह्रीं० ॥ इति चोथे पदै श्रीपाठकजीकी कलशपूजा सं० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) मोक्षमारग साधन नणी । सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥ १ ॥ (काव्य) साहूण संसाहिय संयमाणं । नमो२ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पय ठियाणं ॥४०॥ करै सेवना सूरि वायग गणीनी । करुं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुप्ता । त्रिगुते नहीं कांमभोगेपु लिता ॥४१॥ वली वाह्य अभ्यं तरै ग्रंथटाली । हुई मुक्तिनें जोग चारित्र पाली । शुभष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ सकल विषय विष वारिनें । निक्कामी निस्संगी जी । नव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी (उल्लालो) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । काउसग्ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपै कर्म्म जापै नैव छीपै परभणी । मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन वंधु प्रणमो हित भणी ॥४३॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ जिम तरु फूलै भमरो वैसै । पीमा तसुन उपाय । लेई रस आतम संतोषै । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ (न०सि० ॥४४॥ पांच इंद्रीनें जेनित जीपै । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार आराधै । वंदूं दीन दयालरे (न०सि०) ॥ ४५ ॥ अढार सहस शीलांगना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी । कीजै जनम पवित्ररे (न०सि०) ॥ ४६ ॥ नवविध व्रह्मगुपति जेपालै । वारह विह तपसूरा । एहवा मुनि नमीयै जो प्रगटै । पूरव पुन्य अंकूरारे (न० सि०) ॥ ४७ ॥ सोनातणी परै परिक्षा दीसै । दिन२ चढतै वानें । संयम खपकरता मुनि नमिइं । देश काल अनुमानरे ॥ (न०सि०) ॥

४८ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ अप्रमत्त जेनित रहै । नवि हरखै नवि सोचैरे । साधु सूधा ते आतमा । स्युं मुंडै स्युं लोचैरे ॥ (वी०) ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं०। इति पांचमे पदै श्रीसाधुजीकी कलश पूजा ॥ ५० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ६ठी दर्शन पद पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) जिनवर भाषित सुद्धनय । तत्वतणी पर तीत । ते सम्यग दरसन सदा । आदरियै सुभ रीत. ॥ १ ॥ ※ ॥ (काव्य) जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स । नमोऽहं निम्मल दंसणस्स । मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स ॥ विपर्यां सदो वासना रूप मिथ्या । टलै जे अनादी अछे जे कुपथ्या । जिनोक्ते हुइं सहज थी शुद्धध्यानं । कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ५० ॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं । चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं । प्रकृति सातनें उपसमइ क्षय तेह होवै । तिहां आप रूपें सदा आप जोवै ॥ ५१ ॥ ※ ॥ (ढाल) ※ ॥ सम्यग् दरसन गुण नमो । तत्त्व प्रतीत सरूपी जी । जसु निरधार स्वभाव छे । चेतन गुण जे अरूपी जी (चाल) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै । बहुमान परणिति वस्तुतत्वें अहव सुरकारण पणें । निज साध्यदृष्टै सरव करणी तत्वता संपति गिणै ॥ ५२ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म्म परिक्षा । सद्दहणा परिणाम । जेह पामी जै तेह नमी जै । सम्यग् दर्शन नामरे (भ०सि० ५३ । मल उपशम क्षय उपशम जेह थी । जे होइ त्रिविध अभंग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजै । जिन धरमें दृढ रंग रे ॥ (भ०सि०) ५४ ॥ पांचवार उपशम लही जै । क्षय उपशमीय असंख । एकवार क्षायक ते सम्यक् । दर्शन नमीइं असंख रे (भ०सि०) ५५ ॥ जेविण नाण प्रमाण न होवे । चारित्रतरु नवि फलिउ । सुख निरवाण न जे विण लहिइं । समकित दर्शन बली उरे ॥ (भ०सि० ॥ ५६ ॥ सम सठ बोलै जे अलंकरिउ । ज्ञान चारित्रनुं मूल । समकित दर्शन ते नितप्रणमुं । सिवपंथनुं अनुकूलरे ॥ (भ०सि०) ॥ ५७ ॥※॥ सम संवेगादिक गुण खय उपशम जे आवैरे । दर्शन तेहिज आतमा । स्युं होय नाम धरावैरे ॥ (वी०तुमे०) ॥ ५८ ॥ (ॐ ह्रीं०) ॥ ※ ॥ इति ६वै दर्शनपद कलश पूजा ॥ ६ ॥

॥ ※ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) ॥ ※ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधी जै शुभमनैं । दिन २ अधिक उछाह ॥ १ ॥ (काव्य) अन्नाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो २ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ होइं जेहथी ज्ञानशुद्ध प्रबोधै । यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधै । तिणें जाणीइं वस्तु षट्द्रव्य भावा । न होवै विकच्छा निजेच्छा स्वभावा ॥ ५९ ॥ होइं पंचमत्यादि सुग्यान भेदै । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै । लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकाशक भावै जी । परयाय धरम अनंतता । भेदा भेद स्वभावै जी ॥ (चाल) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वाद शंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ भक्ष अभक्षन जे विण लहीयै । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते सकल आधाररे ॥ (भ०) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननें पछे अहिंसा । श्रीसिद्धाते भाख्युं । ज्ञाननें बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥ (भ०सि०) ॥ ६३ ॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा । तेहनुं मूलजे कहीइं । तेह ज्ञान नित नित वंदीजै । ते विण कहो किम रहीइंरे ॥ (भ० ६४)॥ पांच ज्ञान मांहैं जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरैं त्रिभुवन उपगारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ (भ०सि०) ॥ ६५ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यंग जोतिष । वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी । तेज्ञानें मुझ शुद्धीरें ॥ (भ०सि०) ॥ ६६ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्मछै । क्षय उपशम तसु थायैरे । तो होइ ए हीज आतमा । ज्ञान अबोधता जाइंरे ॥ (वी० तु०) ॥ ६७ ॥ (ॐ ह्रीं पर०) ॥ ※ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ७ ।

॥ ※ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अ

नुन्नव रस मिलै । पातिक होय उच्छेद ॥ १ ॥ ※ ॥ आराहिया खंभिअ स
क्रियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्झावणा संग विवड्ढियस्स । नि
व्वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरंगे । निरासंसता
द्वाररोध प्रसंगै । न्नवां बोध संतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त
मूल्यं ॥ ६७ ॥ होई जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी न्नणी
होइ ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनें पार
जायै ॥ ६७ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व
रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी ।
(चाल) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दममयी । सुचि पर
म खंती मुनि दसेपद पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक न्नेद धरमें यथा
ख्यातै पूर्णता । अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूरणता
॥ ७० ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ देशविरतिनें सर्व्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें
अन्निराम । ते चारित्र जगत जयवंतु । कीजे तास प्रणाम रे (न्न०सि०)
७१ ॥ तृणपरै जेपट्खंम सुखठंमी । चक्रवर्त्ति पिण वरिउ । ते चारित्र अख
य सुख कारण । ते में मन मांहि धरिउरे (न्न०सि०) ७२ ॥ हुआ रांक
पणें जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंडुं । वरिउ ज्ञा
न आनंदरे (न्न०सि०) ७३ ॥ वारमास परजाइं जेहनें । अनुत्तर सुख
अतिक्रमिइं । शुक्ल सुकल अन्निजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइं रे
(न्न०सि०) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह ।
चारित्र नाम निरुक्तें न्नाख्युं । तेवंडुं गुण गेहरे (न्न०सि०) ७५ ॥ ※ ॥
(ढाल) ॥ ※ ॥ जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वन्नाव मांहि रमतो रे ।
लेश्या शुद्ध अलंकस्यो । मोहवनें नवि न्नमतो रे । (वी०तुमे०) ७६ ॥
ॐह्रीँ प० ॥ ※ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै एमी तप पद पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते
तप पद पूजो सदा । निरमल धरियै ध्यान ॥ १ ॥ कम्मद्दुमोन्मूलन कुंज
रस्स । नमो २ तिव्व तवोयरस्स । अणेग लद्धीण निबंधणस्स । दुस्सझ अ
त्थाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धं लद्धि विज्ञा समिद्धं । पयडि

य सर वग्गं झ्रीतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं । तिज य विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टाले । निकाचित पणें बांधिया तेहवाले । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर डुभेदे । क्षमा युक्ति निर्हेत डुर्ध्यान छेदे ॥ ७९ ॥ होइं जास महिमाथकी लब्ध सिद्धि । अवांछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह तपजे महानंद हेतें । होइं सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें ॥८०॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै । नव भव शिव जावै देव नर भवज पावै । ज्ञान विमल गुण गावै सिद्ध चक्र प्रभावै । सव डुरति समावे विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ इछा रोधन तप नमो । बाह्य अभ्यंतर भेदै जी । आतम सत्ता एकता । पर परणित उछेदैजी ॥१॥ (उल्लालो) उछेदै कर्म्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुभयोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करै । अंतर मुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी । निज आत्मसत्ता प्रगट भावैं करो तप गुण आदरी ॥८२॥ ॥ ॥ (ढाल) इम नव पद गुणमंम्हलं । चउनिक्षेप प्रमाणें जी । सात नयें जे आदरै । सम्यग् ज्ञानें जाणें जी । (चाल) निरधार सेती गुणें गुणणो करइ जे बहुमानए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सविलब्धि विद्या सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली । उवझाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८४ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ जाणंता त्रिहु ज्ञाने संयुत । ते भव मुगति जिणंद । जेह आदरै करम खपेवा । ते तप सुरतरु कंदरे ॥ (भ०सि०) ॥ ८५ ॥ करम निकाचित पणि क्षय जाइं । क्षमा सहित जेकरतां । ते तप नमीइं तेह दीपावै । जिन शासन उजमंतां रे ॥ (भ सि०) ॥ ८६ ॥ आमो सही पमुहा बहुलब्धी । होवै जास प्रभावै । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटै । नमीयै ते तप भावैरे ॥ (भ०सि०) ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर । संपति जेहनु फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंडु । शम मकरंद अमूलरे ॥ (भ०सि०)॥

॥८८॥ सर्व मंगल माहि पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं । वर सहाय सिवपंथरे ॥ (भ०सि०) ॥ ८९ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । हुओ तनमय श्रीपाल । सुजस विलास है चोथे खंभे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ (भ०सि०) ॥ ९० ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ इच्छा रोधन संवरी । परणित समता योगै रे । तप ते एहिज आतमा । वरतै निज गुण भोगै रे ॥ (वी०) ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो । भाव ते जांणो साचो रे । आतम भावै थिरहुओ । परभावे मत राचोरे ॥ (वी०) ॥९२॥ अष्ट सकल समृद्धिनी । घट मांहि ऋद्धि दाखीरे । तिम नव पद ऋद्धि जाणज्यो । आतमराम है साखीरे ॥ (वी०) ॥ ८३ ॥ योग असंख्य है जिन कह्या । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणें अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणोरे ॥ वी०) ॥ ९४ ॥ ढाल वारमी एहवी । चोथे खंभै पूरीरे । वाणी वाचक जस तणी । कोईयन रहीय अधूरीरे ॥ (वी०) ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं । पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं । यजामहे ॥ ※ ॥ इति श्री सिद्धचक्र महात्म श्री नवपद पूजा संपूर्ण ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि०॥※॥

॥ ※ ॥ (पंचामृत) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केसर । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तुरी । अंबर । रोली । मोली । छूटा फूल । फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख (नव) जातके धान । (नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल । (नव) प्रकारके पक्कवस्तु । मिश्री । पतासा । लच्चा । विदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगलूहणा खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेसमी प्रमुख वस्त्र । वासक्षेप । गुलावजल । अत्तर । इत्यादिक । और (नव) नालीके कलस (९) रकेबी । परात । तसला आरती । मंगलदीप । भगवानके अंगी । समोसरण । इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रक्खे । इससें । पूजामें विघ्न न होय । (इहां) संक्षेपविधि कही । विसेपविधि गुरूके मुखसें जाण लेणा ॥

॥※॥ अथ सबकै जाणनेंकों । नवपदजीके पूजा करणेंकी कलस ढालणेंकी बिधि कहते हैं ॥ ※ ॥

॥※॥ चैत्र सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन । आंबिल (ए) करै । पंचामृत मोटै घर्म प्रमुखमें करे । थापना में श्रीफल रोक नाणो धरै। पीछै गुरुके पास मंत्रायकै । केसरसें तिलक करै । कांकणमोरा हाथमें बांधै । दहणें हाथमें साथियो करिके। विधि संयुक्त स्नात्र पढावे । पीछै श्री अरिहंत पदमें चावल (तथा) चंदन । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य (प्रमुख) अष्टद्रव्य । वासक्षेप । नागरवेल पांन । रकेवीमें धरके । हाथमे रक्खे । नव कलशके मोली बांधै । कुंकुमरा साथिया करै । पंचामृतसें भरिके कलश हाथ में लेके पूजा पढै । संपूर्ण होणें सें कलश ढाले । बमी परातमें प्रतिमा जी पधरावै । ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं । इस माफक कहतो थको । अरिहंत पदकी पूजा करै । अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावै ॥ इति प्रथम पूजा ॥※॥ ॥ १ ॥ (दूसरे) सिद्धपद रक्तवर्ण । गहूं रकेवीमें धरै । श्रीफल (तथा) अष्टद्रव्य लेकर । (ए कलश) पंचामृतसें भरिके पूजा पढे । (पूर्ण होणें सें) ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कही । (कलश ढालै) । अष्ट द्रव्य चढावै ॥ इति द्वितीय पूजा विधि २ ॥※॥ (तीसरै) श्री आचार्यपद । पीलेवर्ण । चिणाकी दालि । अष्टद्रव्य । श्रीफल प्रमुख लेके । कलश (ए) पंचामृत सें भरिके पूजा पढे । पूर्ण होणेसें । ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं (कही) । कलश ढाले । द्रव्य चढावै ॥※॥ इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥ ※ ॥ (चौथे श्री उपाध्याय पद । नीले वर्ण । मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि सें पूजा करै । संपूर्ण होणेंसें ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं (कही) कलश ढालै । अष्ट द्रव्य चढावै ॥ इति चोथी पूजा विधि ॥ ४ ॥ ※ ॥ (पांचमें) श्री साधुपद । स्यामवर्ण उमद प्रमुख लेवै । और पूर्वोक्त विधिः । (पूर्ण होनेंसें) ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इति पंचमी ५ ॥※॥ (छठै) दर्शनपद स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें । ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स ॥ इति छठी पूजा विधि ॥६॥ ※ ॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वो० । ॐ ह्रीं णमो नाणस्स ॥ ※ ॥ इति सातमी० ॥ ७ ॥ ※ ॥ (आठमे)

चारित्रपद । स्वेतवर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः। ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स ॥ इति आठमी पूजा विधि ॥८॥ ※ ॥ (नवमें) तपपद । स्वेत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधसें । ॐ ह्रीं णमो तवस्स (कही) कलश ढाले। अष्टद्रव्य चढावे । पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करे ॥ ※ ॥
इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तीरथपति अरिहानमूं । धरम धुरंधर धीरोजी । देशना अमृत वरसता । निज वीरज वम वीरोजी ॥ १ ॥ (चाल) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता । निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे चरण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता । जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० ॥ वासं यजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ इति अरि० वासक्षेप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ सकल कर्म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मई । आतम संपति भूपोजी । (चाल) जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्वस्वभाव गुण पर्याय परणित सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वम नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ※ ॥
॥ ॐ ह्रीं प० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानन्द रस स्वादता । परभावे निक्कामो जी ॥ ३ ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निर धारथी । वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी । भविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुण संपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ※ ॥
इति आचार्य पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सच्चं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ (चाल) जे रम्या ब्रह्म सुगुति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आ

त्मपर विघ्नजन करा । भव भीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा। सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॐ० ॥
॥ इति उपाध्याय पूजा ॥ ※॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥※॥ सकल विषय विषवारिनें । निकामी निस्संगीजी। भवदव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ (चाल) ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । काउसग्ग मुद्राधारि आसण ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै पर भणी । मुनि राज करुणा सिंधु त्रिभुवन वंधु प्रणमुं हितभणी ॥ ५ ॥ ॐ० ॥ ※ ॥
इति साधुपद पूजाः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी। जसु निरधार सुभाव छे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ (चाल) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै । बहुमान परणित वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणें । निज साध्य दृष्टें सरव करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ० ॥
इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल)॥※॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकासक भावें जी । पर्याय धर्म अनन्तता । भेदाभेद स्वभावें जी ॥ १ ॥ (चाल) जे मोक्ष परणित सकल ग्यायक बोध भाव सलक्षणा । मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ※ ॥
इति ज्ञान पूजाः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ चारित्रगुण वलि वलि नमुं । तत्व रमण जसु मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ १ ॥ प्रतिकूल आश्रव त्यागसंवर तत्व थिरता दममई । सुचि परम खंती मुनि दसे पद पंच संबर उपचई । सामायकादिक भेदधरमें यथाख्याते पूर्णता। अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूर्णता ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ८ ॥
इति चारित्र पूजाः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ इच्छारोधन तप नमुं । वाह्य अभ्यन्तर भेदें

जी। आतमसत्ता एकता । पर परणित उछेदें जी ॥ १ ॥ उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरै । सुन्न जोग संग आहार टाली नाव अक्रियता करै । अन्तर मुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी । निज आत्म सत्ता प्रगट नावें करो तपगुण आदरी ॥ ए ॥※॥ (ढाल) ॥※॥ इम नवपद गुणमंमलं । चौनिक्षेप प्रमाणें जी । सातनयें जे आदरै । सम्यग् ज्ञानें जाणो जी ॥१॥ (चाल) निरधार सेती गुणें गुणनो करै जे बहुमान ए। जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए । इम सुद्धसत्ता नलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरै । अक्षय अनन्त महन्त चिदघन परम आनंदता वरै ॥ १० ॥ (कलश) इम सकल सुखकर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली । सविलद्धि विद्या सिद्धि मंदिर नविक पूजो मनरली । उवझाय वर श्री राजसारह ग्यान धरम सुराजता । गुरु दीपचंद सु चरण सेवक देवचंद्र सुसोनिता ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं० ॥※॥ इति श्रीनवपद वासक्षेप पूजा संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ऋषिमंमल पूजा लिख्यते ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ प्रणमी श्रीपारस विमल । चरणकमल सुखदाय । ऋषिमंमल पूजन रचुं । वर विधियुत चितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरै । शाश्वतजिन महाराज । अरचै अमविध पूजसें । जैसें सक्र सुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी । श्रावक समकित धार । विरचै जिन चौवीसकी । अमविध पूजउदार ॥ ३ ॥※॥ (गाथा) ॥※॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुमन्नरं । दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५ । वरअक्षत ६ नेविज्जयं ७ । सुन्नफल ८ पूजाय अविहा ॥ १ ॥ ए अमविध पूजा करणं । सुणियैं सूत्रमझार । जे नवि विरचै प्रनूतणी । ते पामें नवपार ॥ २ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । जोगीश्वर नरराय । प्रथम नए युग आदिमै । सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥※॥

॥※॥ (राग देशाख) ॥※॥ (पूर्वमुख सावनं करि दशन पावनं । इस चालमें) ॥※॥ विमलगिरि उदयगिरि राज सिखरो परै । तरुण तर ते

ज दीपत दिणंदा । युगल धम वारकरी धरम उद्योत किय । विमल इ क्ष्वाकुकुल जलधि चन्दा ॥ (१) मात मरुदेवी वर उदर दरि हरि वरा । सकलनृप मुगुटमणि नाभिनन्दा । अखिल जगनायका मुगति सुखदायका । विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ (२) वृषभ लांछनधरा सकल भवभ य हरा । अमर वरगीत गुणकुसल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणि शम धरा । नमत शिवचन्द प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥ ※ ॥ (काव्यम्) ॥ ※ ॥ सलिल (१) चन्दन (२) पुष्प (३) फलव्रजैः (४) । सुविमलाक्षत (५) दीप (६) सुधूपकैः (७)। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै (८) । र्जिजन ममीभिरर्हं वसुभिर्य्यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने ऽनंतानंत ज्ञा न शक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् ऋषभ जिनेंद्राय । जलं । चन्दनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ इति श्रीप्रथम जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (२) श्रीअजितजिन पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) जय जिणंद दिणंद सम । लखि भविकज विक सात । परमानंद सुकंदजल । विजया मात सुजात ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग) आयरहो दिलवागमें । प्यारेजिनजी । (इस ख्यालके चालमें) ॥ ※ ॥ एक अरज अवधारियै । (अजितजिन) एक अरज अवधारियै ॥ (आं०) अजित जिनेसर जग अलवेसर । कूरम निजर निहारियै । (अजितजिन एक०) तारण तरण विरुद सुणितेरो । आयो सरण तिहारियै । (अजित जिन एक०) १ ॥ चरमसिंधु भव भय जल निपतित । चरण पतित मोहि तारियै । (अजित० एक०) । परमानन्द घन शिव वनिता नन । कज मधुपा न सुकारियै । (अजित० एक०) ॥ २) चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर । तुम जिनभये तिमिरारियै । (अजित०) कहै शिवचंद्र अजित प्रभु मेरे । एह अरज न विसारियै । (अजित०) ३ ॥ (काव्यं) सलिल चं० ॥ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं० श्री मदजित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ※ ॥ इति श्री अजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (३) श्रीसंभवजिन पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ जय जितारि संभव सदा । श्रीसंभव जिन

राज । सकल लोक जिए जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ॐ ॥ (राग) गंधवटी घनसार केसर मृगमदारस ल्नेलीयैं (ए चाल) ॥ ※ ॥ अपरिमित वर शिखर सागर धार संन्नवकार ए । जिनराज संन्नव पाय वंदो लहो न्नवजल पार ए । वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंन्न न्नंजन जानियें । तसु जनक नाम समान नामा न्नये जिनवर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्या । मिलकरि सुरा सुर खन्नर व्यंतर न्नमर नितचित्त क्रमह्या ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांग्न कनक सुवरण कायए । सज्ञ नुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगवखाणी तीस शर (३५) गुणधारिणी ॥ संसार सागर न्नय न्नराग्नर पतित पारउतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुगार धारा कुमति मद तरु दारिणी । प्रन्नुवाणि नित शिवचंद्र गणिकै ज्ञवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ (काव्यं) ॥※॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्संन्नव जिनेंद्राय वसुद्रव्यंय० ॥ ※ ॥ इति तृतीय श्री संन्नव जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ ३ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (४) श्रीअन्निनंदन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥※॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो न्नवि चितलाय । न्नगति सुगति संकट हरण । करण तीन सुध धाय ॥ १ ॥※॥ (राग सोरठी) । कुंद किरण शशि ऊजलोरे देवा० । (ए चाल) ॥ ※ ॥ संवर नंदन जिनवरू रे (वाल्हा) अन्निनंदन हित कामीरे । जग दन्निनंदन जय करूरे । (वा०) । डुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासता रे (वा०) । करता अविचल धामीरे । अव्याबाध अरूपिता रे । (वा०) । विमल चिदानंद रामीरे ॥ २ ॥ वांबित पूरण सुरमणीरे (वा०) ए प्रन्नु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । (वा०) चंद्र नमें सिर नामीरे ३ । (काव्यं) ४ ॥ ※ ॥ सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमद न्निनंदनजिनं० । वसु० ॥※॥ इति श्रीचतुर्थान्निनंदन जिनेंद्रस्याष्टविध पूजा ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥※॥ (दोधक) ॥※॥ पंचम जिन नायक नमुं । पंचमि गति दातार । पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग कें

रवो) वंसी तेरी वैरिणि वाजै रे । वैरिणि वाजै (ए चाल) ॥※॥ सुध भाव चित थिर धरिकैरे । (चित०) पूजो सुमति जिणंद । (सुधभाव०) जिन भक्ति करण रसीला । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ (सुधभाव०) जिनराज सुमति समंद । करै कुमति निकंद । (सुध०) प्रभुना चरण अरविंदा । वंदै असुर सुरिन्द (सुध०) ॥ २ ॥ कनकाभ तनु ऊतिसोहै । प्रभु सुमंग ला नंद (सुध०) । करुणो पशम रस भरिया । वंदै नित शिवचंद । (सुध) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल०॥ ॐ ह्रीं० श्रीमत्सुमति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (६) श्री पद्मप्रभु पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ हिवे षष्टम जिनवर तणी । पूजन करऊ उदार । भवि चित भक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग सारंग) हांहो०। वावन चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) । (हां होरे वाला) पदमप्रभु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरिसुर असुर चकोरमा । नित निरख रह्या ललचायरे ॥ १ ॥ (हां०) जिन मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करै भविपानए (हां०) । ते अजरा मरता लहै । हरिगण करे जसु गुण गानए (हां) ॥ २ ॥ धर नृप कुल नभ दिन मणि । प्रभु मात सुसीमा नंदए (हां) । प्रभु दरसणतें प्रतिदिनें । ऊइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ० । श्रीपद्म प्रभु जिनें० वसु० ॥ ※ ॥ इति श्री पद्मप्रभु जिन पूजा ॥ ६ ॥

॥※॥ अथ (७) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण काज । भो भवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ (राग कल्याण) मेरा दिल लग्या जिने सरसें (ए चाल) ॥ ※ ॥ मेरी लगी लगन जिन वरसें (मेरी०) जैसें चंद्र चकोर भमरकी । केतकि कमल मधुरसें (मेरी०) । एह सुपारस प्रभु भए पारस । गुण गण समरण फर सै (मेरी०) चेतन लोहपणो परिहरकै । ऊयल्यै कांचन सरिसै ॥ १ ॥ (मेरी०) ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्यै । उर जिम कमल भमरसै (मेरी) जे भवि जिनपद लगन धरै तसु । नही भय मरन असुरसै (मेरी०) ॥२॥

मात पृथवि तनु जात तनु द्युति । सम शुभ्र कांचन सरसै (मेरी०) कहै सिव चंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रभुपद लय भरसै ॥ ३ ॥ (मेरी०) (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीँ० श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ※ ॥ इति श्रीसुपार्श्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (८) श्रीचन्द्रप्रभु पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ अष्टम जिनपद पूजियै । विविध कष्ट हरतार । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग गुंम मिश्रित मल्हार) ॥ मेघ बरसै भरी कुसुम बादल करी । (ए चाल) परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता । चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोभित सदा जिन महन्ता ॥ १ ॥ (परमपद०) । कुमतिमत तिमिर भर हरीय पुन भूरि भवि । कुमुद सुख करीय गुण रयण दरिया । गहिर भविसिंधु तारण तरणि गुण । धारि भव तारि जिनराज तरिया । (परमप०) ॥ २ ॥ राखियै आज मोहि लाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शिव चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर भरीया ॥ ३ ॥ (पर०) (काव्यं) सलि० । ॐ ह्रीँ० श्रीमच्चन्दप्रभु जिनें० वसु० ॥ ※ ॥ इति श्रीचंद्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (९) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ सुविध २ समरण थकी । कामित फल प्रकटाय । अतिह गहन संसार वनि । वज्जल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ※ ॥ (राग) चंपक केतक मालती (एचाल) ॥ ※ ॥ सुविध चरणकज वंदीयै ए । (अइयोवं०) नंदीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । (हांए सफ०) दीठो प्रभुदीदार । तनु मन हग विकसित भये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । (हां० अइ० व०) भवि उर क्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु ऊगीयो । शिवफलनो दातार ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीँ० । श्रीमत्सुविधि जिनें वसु० ॥ ※ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ※ ॥

॥❀॥ अथ (१०) श्रीशीतल जिन पूजा लि० ॥❀॥

॥❀॥ (दोधक) मुझ तनु मन शीतल करो । श्रीशीत ल जिनराय । तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति पुलाय ॥ १ ॥ (राग घाटो । दादा कुसल सुरिंद० इस चालमें) ॥❀॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल । (आं०) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धस्यो प्रभुनो आज । (मेरे दी०) न नमुं सकु स विकारी देव । करिसुं चरणकमलनी सेव । (मेरे०) ॥ १ ॥ जैसें सुरमणि करतल पाय । कुणल्यै काच शकल उलसाय । (मेरे०) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर २ जग निरख्यो जोय (मेरे०) ॥ २ ॥ प्रभु दरसण जलधर घनघोर । लखिय निरतकरे भविजन मोर (मेरे०) । पद शिव चंद्र विमल भरतार । अरज एह उरधरियै सार (मेरे०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० उँ ह्रीं० श्रीमच्छीतल जिनेंद्राय वसु० ॥❀॥ इति श्रीशीतलजिनेंद्र पूजा ॥ ❀॥

॥❀॥ अथ (११) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि० ॥❀॥

॥❀॥ (दोधक) ॥❀॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्रपद । नद द्रुति सलिला धार । जे नेत्रै मज्जन करै । ते सुचि हुइ विधुतार ॥ १ ॥ (राग) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमे) ॥❀॥ श्री श्रेयांस जिणेसर जग गुरु । इंद्रिय सदन सभंदहे । जसु वसु विध पूजनसें अरचो । उर धरि परमानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी भव मनरंग हे । विजयदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाभिगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरीयाभ प्रभुपूजन करियो । राय पसेणी उपांगहे । ग्याता अंगै द्रुपदि श्राविका । पूज्या जिन चितबिंबहे । काल लगै भमसी भव वनमें । मन्दमती भयभ्रांत हे ॥ (श्री०) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिरु वरि प्रभु अवतंस हे इण सुरवरनी परि श्रावक जे । पूजै जिन उमरंग हे । ते शिव चंद्र परमपद लहिस्यै । निश्चय करी भवभंग हे (श्री) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (काव्यं०) सलिल० ॥ १ ॥ उँ ह्रीं० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय ॥❀॥ ॥❀॥

इति श्रीश्रेयांस जिन पूजा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ※ ॥ अथ (१२) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ द्विवारम जिनवर तणी। पूजन करियै सार। ज्ञाव ज्ञक्तियुत ज्ञवि सदा। द्रव्यज्ञक्ति चितधार॥ १ ॥ (राग) सब अरति मथनमुदार धूपं (एचाल) ॥ ※ ॥ सकल जगजन करत वंदन। जया नंदन सामिरे (देवा) डुरित ताप निकंद चंदन। परम शिव पद गामिरे (देवा) ॥ १ ॥ (सकल०) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल। विपिन नंदन जातरे (देवा) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन। नन्द मदकिय घातरे (देवा) ॥ २ ॥ (स०) वासु पूज्य जिणंद्र पूजो। सकल जन महाराज रे। (देवा) करत नुति शिव चंद्र प्रज्ञुए। निखिल सुर सिरताज रे। देवा। (सक०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ० श्रीमद्वासु पूज्य जिनेंद्राय वसु द्रव्यं ॥ ※ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१३) श्री विमल जिन पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ विमल २ जिन कर मुऊै। मलिन करम करि दूर। तेरम प्रज्ञु रमियै सदा। मुऊवर मऊि गुणपूर॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ (राग) सिद्धचक्र पद वंदोरे ज्ञविका। (ए चाल) ॥ ※ ॥ विमल चरण कज वंदोरे। (सूरीजन विम०) वंदनसें आनन्दोरे। (सू० वि०) जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर। सेवत पद अरविंदो। श्यामा उदर सुगति मुगता फल। कृत वरमा नृप वंदोरे (सूरी०) ॥ १ ॥ सऊ जग मंमल विमल करणकूं। निज शासन नज्ञचंदो। उदय ज्ञयो ज्ञवि कमुद विकसिवा। वर गुण रयण समंदोरे (सूरी) ॥ २ ॥ यदि ज्ञव वंदि हरण ज्ञवि चाहो। प्रज्ञुवंदी चिरनंदो। विमल चिदानंद घनमयरूपी। नित वंदत शिवचंदो रे (सूरी०॥ ३ ॥ (काव्यं०) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ०। श्रीमत् विमलजिनें० ॥ ※ ॥ इति विमल जिनपूजा ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ द्विव चवदम जिनपूजतां। हरियै विषय विकार। ज्यों ज्ञवियण सुणियै सदा। ए प्रज्ञु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवरणी अंगीरची० (ए चाल) ॥ ※ ॥ पूजकरणी प्रज्ञुनी डुरित निवारी। (डुरि) (आं०) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर। किरण निकर जीतादे ज्ञारी।

लयलाय । सेवै तसु भवि भमरता । अगणित दुरित विलाय ॥ १ ॥ ॥ (राग) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला । मल्लिजिणंद उपगारी (हांरे होरे वाला) । वारी जाउं वारहजारी रे (वा० । मल्लिजि०) कुंभनरेसर गग नांगणमें । सहसकिरण अवतारी रे (वाला० म०) ॥ १ ॥ पूरव भव षटमित्र नरिंद प्रति । वोधि सिंधु भवतारी । वेदत्रयी चिरही तनु धास्यो सकल संघ सुखकारी रे (वाला मल्लि०) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी । संघ चतुरविध भूरिखचरगण । प्रणत चंद्र मनुहारी रे (वा० मल्लि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमल्लिजिनें० जलं० ॥ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (२०) श्रीमुनिसुव्रतजिन पुजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) पद्मोदर वर पद्मनद । गतपर पद्म समान । विंश तिं तम प्रभु पूजिये । केवल लब्धि निधान ॥ १ ॥ ॥ (राग गरवो) सु णिचतुर सुजाण । परनारीसुं प्रीतडी कवहु न कीजियै (एचाल) ॥ ॥ सुणिसुव्रतजिनेंद्र सुनिजर धरि मुझपर वर दरसण दीजियै । प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता । करियै लहियै शिव साधकता । तव तुरत मिटै सिव वाधकता । ॥ १ ॥ (सुणि०) अमृतमें साध्यपणो विलसैं । प्रभु दरसण साधनता उलसै । तदमुझमें साधकता मिलसै । (सुणि०) ॥ २ ॥ भिन्नादिकरण ता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुझ शिव साधकता प्रग टै । (सुणि०) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियै । भिन्नाधिकरणता परि हरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै (सुणि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । विंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिनें० ॥ ॥ इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (२१) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) अंतरवैरि नमाविया । तव लहियो नमि नाम । भवि यण ए प्रभु पूजसें । सरीयै वंछित काम ॥ १ ॥ (राग) हमआएहै सरण तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० (एचाल) । । श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें । नयन भमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसें चेतन मद मत करियैरे । (वारी) चेतन मद मत करियैरे (श्रीनमि०)

॥ १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसै। पर कज निसि कुमलावै रे। (वारी पर) एन वलै वलि तुहिन अनलसें। अपर कमल वल जावै रे। (वारी० अप०) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत। जीव अमरता पावै रे (वारी०)। अवर कमल रस लोभी मधुकर। कजगत गज गिल जावै रे (वारी०) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लच्छिपात्रहै। पद कज संपद देवै रे। तातै पद शिवचंद्र जिणंदके। अहनिस सुर नर सेवैरे (वारी०)। श्री० ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ० श्री नमिजिनें० ॥ ※ ॥

इति श्री नमिजिन पूजा ॥ २१ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (२२) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) बावीसम जिन जगगुरु। ब्रह्मचारी विख्यात। इण वंदन चंदन रसै। पाप ताप मिट जात ॥१॥ (राग रामगिरी) गात्र लूहै जिनमन रंग सुरे। देवा (ए चाल)। नेमि जिणंद उर धारीयै रे (वाला) विसय कसाय निवारीयै (वाला)। (वारीयै) हांरे वाला वारीयै)। ए जिन नैन विसारीयैरे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे (वाला) देशना अमृत वरसतारे (वाला) (देस०)। वरसता हांरे वाला वरसंता। भविक मोर सुणि उलसतारे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि परि रह्यारे (वाला)। भामंमल चपला वह्यारे (वाला)। चपला वह्या। (हांरे) चपला वह्या सुर नर चातक कमह्या ॥ ३ ॥ बोध बीज उपजावीयोरे (वाला)। भवि उर क्षेत्र वधावीयो हांरे (वाला धा०)। भविक मुगति फल पावीयोरे ॥४॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमन्नेमि जिनें० ॥ ※ ॥

इति नेमि जिन पूजा (२२) ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (२३) श्री मत्पार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ अश्वसेन नंदन सदा। वामोदर खनि हीर। लोक सिखर सोभै प्रभु। विजित करम वमवीर ॥ १ ॥ वाजै तेरा विछुआ (इस कैरवाकी चालमैं) ॥※॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसीया। पास जिणिंदा०। मेरे मन वसीयारे। मेरे दिल वसीया (पास जि०)। शिव कमलानन कमल विमल कल। तर मकरंद पान अतिरसीया (पास जि०)

॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन मन किय वसीया (पास जि०)। परमज्योति मुख चंद विलोकित। सुर नर निकर चकोर ह रसीया (चकोर ह०) (पास जि०) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु डुति जिन जलधर । देशना अमृत धार वरसीया (धारवर०) (पास जि०)। पीय करि जवि चिरकाल तिरसीया। मुगति युवति तनु तुरत फरसीया (पास जि०)। कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणंदनी । वारीजाउं मन मेरो अतिह उल सीया (पास जि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं । त्रयो विंशत्तम श्रीमत्पार्श्वजिनें०॥ इति श्री पार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (२४) श्रीमद्वीरजिन पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥※॥ वर इक्खाकुकुल केतु सम । त्रिशलोदर अवतार । ए प्रजुनी नित कीजीयै । विविध जक्ति सुखकार॥ १ ॥ (राग तेजतरणि मुखराजै । (हांरे मुखराजै)प्रजु जीनो ते०) (एचाल) ॥※॥ चरम बीर जिन राया (हांरे) जिनराया । मेरे प्रजु चरम बीर जिनराया (आं०)। सिद्धारथकुल मंदिर धजसम । त्रिशला जननी जाया । निरु पम सुंदर प्रजु दरसण तें । सकल लोक सुखपाया । (हांरे सुखपाया) (मेरे प्रजुच०) ॥ १ ॥ वामचरण अंगुष्ट फरसतै । सुरगिरि वर कंपाया इंद्रजूति गणधर मुख मुनिजन। सुरपति वंदित पाया ।(हांरे) (मेरे प्र०) ॥ २ ॥ वर्त्तमान शासन सुखदाया । चिदानंद घन काया । चंद्रकिरण गुण विमल रुचिर धर। शिवचंद्रगणि गुण गाया । (हांरे० मेरे प्र०) ॥ ३ ॥ वरस नंद मुनि नाग धरणि मित । द्वितीयाश्विन मनजाया । धवलपक्ष पं चमि तिथि शनियुत । पुरजय नगर सुहाया (मेरे०)॥ ४ ॥ श्रीजिन हरख सूरीसर साहव । वर खरतर गछराया । क्षेमकीर्त्ति शाखा जूषण मणि । रूपचं द्र नवकाया (मेरे०) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु जूरि नरेश्वर । वंदै पद उलसा या । तासु शीसवाचक पुण्यशील गणि । तसु शिष्य नाम धराया (हांरे० मेरे प्र०) ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रही ऋषिमंमल । जिनकी सोज सवाया पूजरची पाठक शिवचंदै । आनंद संघ वधाया (हांरे० मेरे०) ॥ ७ ॥ (काव्यं) ॥ सलिल चंदन० ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशति तम श्रीमद्वीरजिनेंद्राय वसुद्रव्यं ॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजा विधिः ॥ २४ ॥

॥※॥ स्त्रग्धरावृत्तद्वयं ॥※॥

॥※॥ दुर्व्वार स्फार विमोत्कट करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद ।वीर्यंप्राग्नारोत्पाट चंचल् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नतानां । संसारापार सिंधु त्तरण तरतरी नक्तिनाजा मजस्रं । नव्यानां व्रह्मपद्म प्रवण मधुकरी शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका स्खलित विमल सदर्शन ज्ञान नानुः । श्रीमज्जैनैश्वरीयं त्रिनुवन विनुताति श्वतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धा नंत नाथालय विशदलसत् सर्वलोकाग्रनाग । प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति ऋषिमंमल स्तुतिः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नवपद आरती लि० ॥※॥

॥※॥ जय जय जगजन वंछित पूरण । सुरतरु अनिरामी । आतमरूप विमल करतारक । अनुनव परिणामी । (जय२ जगसारा २) । आरती पार उतारा । सिद्धचक्र सुखकारा) ॥ १ ॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा । नज श्रीनगवन्ता । आतमराम रमा सुखनोगी । सिद्धा जयवंता । (जय०२) पंचाचार दीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सुत्र अर्थना पाठक नवतारी (जय०) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मोटा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपनाया (जय०) ॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु नाषै । सिद्धचक्र सुखकारी । ए नव परन व रिद्ध सिद्ध दायक । नव सायर वारी (जय०) ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै । मनवंछित पावै । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला पावै (जय०) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ऋषिमंमल आरती लि० ॥※॥

॥※॥ जय जय जिनराजा । (वारी ज०) आरती करुं शिवकाजा । नव नय दुख नाजा (जय०) ॥ १ ॥ ऋषन अजित संनव जिन राया । अनिनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्राप्रनुतै । दूर हुवै कुमति । (जय२) सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि वारम जिनकी । विमल अनंत धर्म्म प्रनु शांति । हर आरति तनकी । (जय०) ॥ ३ ॥ कुंथुनाथ अरमल्लि मुनिसुव्रत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आतमहि

तकारा। (जय०) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे भवि करसी। भवसायर तरसी। श्रीजिनचंद अखयपद फरसी। शिव कमला वरसी। (जय०) ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषिमंडल आरती ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ऋषिमंडल सुननेंकी (वा) पूजनेंकी विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रथम) ॥ ※ ॥ आद्यन्ताक्षर संलक्ष्य०। यह। ऋषमंडलस्तोत्र। धूप, दीपादि, विधि संयुक्त, आठ महिनेतक प्रभात समय सुणें। ऋषिमंडल में (जो) मूलमंत्र है (सो) शुभदिन शुभघडी। हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेई। गुरूकै पास जावे। भेट धरके। विनयसंयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करै। (उसका) ८००० जाप, आठ महिनामें करै। आंविल करणेंकी शक्ति होय (तो) सदा करै। नहिं तो। आठम। चवदस। दो आंविल जरूर करै। आठ महिनां हुयां वाद ऊजमणो करे। ऊजमणेंके दिन १०८ वेरसुणें। पीछै शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त। ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करे। विशेष शक्ति होय तो (२४) प्रकारी पूजा करावे। पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी बिधके ठिकाणें लिखीहै (सो) सर्व सामग्री इहां (२४) चोंईस लेणी। एक एक महाराजकी पूजा पढायके। प्रथम जल। पीछै चंदन। ऐसें अष्टद्रव्य अनुक्रमसें चढावे। (पीछै) संपूर्ण पूजा हुयां वाद। गुरुभक्ति करै। साहमी वच्छल करै। (इहां) विशेषविधि गुरूके मुखसें समझके करणी॥ (यह) ऋषमंडल सुणनेंवाले पूजणेंवाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनंद उछाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति ऋषिमंडल सुणनें (वा) पूजन करनेंकी विधि॥

॥ ※ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ सुखसंपति दायक सदा। जगनायक जिनचंद। विघनहरण मंगलकरण। नमो नाभि नृप नंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासिका। जिनवाणी चितधार। विंशतिपद पूजनतणो। कहिस्युं विधि विसतार ॥ २ ॥ जिनवर अंगै भाषिया। तप जप बहु परकार। विंशतिपद तप सारिसो। अवरन कोई उदार ॥ ३ ॥ दान शील तप जप क्रिया॥ भाव विना फलहीन। जैसें भोजन लवण विन। नही सरस गुणपीन ॥ ४ ॥

जे भवीयण सेवै सदा । भावै थानक वीश । ते तीर्थंकर पदलहै । वंदे सुर नर ईश ॥ ५ ॥ (ढाल) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो । प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो । स्थविर पंचमपद ५ पुन उवझाया ६ । त पसी ७ नाण ८ दंसण ए मनभाया ९ (उल्लालो) मनभाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै। तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै । हितकर अपूरव नाणसंग्रह १८ धरौ मन सुजगीसए। श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथप्रभावन २० एह थानकवीसए २ ॥ (ढाल) एथानकवीस २० जग जयकारा। जपतां लही यै जिनपद सारा । करम निकंदै विसवावीसै । भाष्या जग तारक जग दीसै ॥ ३ ॥ (उल्लालो) जगदीश प्रथम जिणंद जगगुरु चरम जिनवर जी मुदा । भव तीसरै पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा । बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै। इक दोय त्रिण सङ्घपद जपी नें तीर्थपति पद पाइयै ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । भजीयै तपकरी सुद्ध । अति निरमल सुभयोगता । करिकै तसुगुण लुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तडुपरै । ठवीयै जिनवर वीस २० । पूजन उपग्रण मेलिकरि। अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार । पंच ५ अष्ट ८ विध जानीयै । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि । विमलजलै भरि पूर । पूजो भवीयण पद सहू । होय सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सङ्घ परमेष्टिमें । जिनवर पद अभिराम । वेद ४ निक्षेपै समरीयै । वधतै सुभ परिणाम ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ (राग देसाख) पूर्वमुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ※ ॥ सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलभानं (अईयो वि०) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण । वचन पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ (अइयोम०) ॥ सुखकरण जिनं चरण पद्मसेवित सदा । भमर सुर असुर नर हृदयधारी (अईयो) एह जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरसि धारी (अइ०) ॥२॥ जिनपपद दरस पारस फरसतें हुवै । प्रगट निजरूप परि

णति विन्नासं । तजीय बहिरात्म गिरीसारता नविलहै । अनुपमं आत्मकांचन प्रकासं (अ०) ॥३॥ जवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत वज्र डुरित न्नर तिमिरनासं । घन चिदानंद वरकंद घन नविलहै । तीर्थंकर चरण कमला विलासं (अ०) ॥४॥ वर विबुध मणिलही काच लघु सकलकौं । ग्रहण करिवा कवण कर पसारै । तिमलही जिन चरण सरण शुन्नयोगतें । अवर सुर सरण कुण रिदय धारै ॥ ५ ॥ प्रन्नुतणै पंचकल्याण केरै दिनें । प्रगट त्रिजुं लोकमें हुइ उजेरौ । नविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन मी । बांधीयौ गोत्र जिनराजकेरौ ॥ १६ ॥ जेह त्रिण काल नितनमें जिन हरखसुं । तेह नवजल तिरै जनम तीजै । अधिक नव यदिकरै तदपि नि श्चय करी । सप्त वलि अष्ट नव करीय सीजै (अइयोक०) ॥ ७ ॥ ॥ (काव्यं) ॥ ॥ णमोणंत विन्नाण सद्दंसणाणं । सयाणंदिया सेस जंतूग णाणं । नवां नोज विछे यणे वारणाणं । णमो वोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री अर्हद्भ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति प्रथमपदे श्री जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (२) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ तनु त्रिन्नागके घटनतें । घन अवगाहन जास । विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी आ श्रित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । णमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ॥ (राग सोरठ) कुंदकिरण ससि उजलोरे देवा ॥ ए चाल ॥ ॥ अनुन्नव परमानंद सुरे वाला । परमातम पद वंदोरे । करम निकंदौ वंदिनेंरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे ॥ १ ॥ गगन पए संतर वलीरे वाला । समयांतर अण फरसीरे । द्रव्य सगु ण परजायनारे वाला । एक समय विद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु गति करीरे वाला । नयेय परमपद रामीरे । नांगै सादि अनंत एरे वाला निरुपाधिक सुख धामीरे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरीरे वाला । सिद्ध सकल सुखकारीरे । विमल चिदानंद घन थयारे वाला । वर इगतीस गुण धारीरे ॥ ४ ॥ उतपन्नता १ वलि विगमतारे वाला २ । ध्रुवता ३ त्रि पदी संगैरे । प्रन्नमें अनंत चतुक्तारे वाला । सोहै सम क्रम नंगैरे ॥ ५ ॥

पन्नर भेद ए सिद्धथयारे वाला । सहजानंद स्वरूपीरे । परम ज्योतिमें परिणम्यारे वाला । अव्याबाध अरूपीरे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमें मुदारे वाला । एहनें दीक्षा अवसरैरे । तिण प्रभुपद गुण मालकारे वाला । कंठे धरीयै सुपरै रे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल भवि भगति सूंर वाला । सिद्ध परम पद भजिनैरे । पद श्री जिनहरषै लह्योरे वाला । परगुण परिणति तजिनैरे ॥ ८ ॥ (काव्यं) लोगग्गभागे परिसंठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिंदयाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥९॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः २ ॥ इति द्वितीयपदे श्री सिद्ध पूजा ॥ २ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ पद तृतीय प्रवचननमो । ज्यूंनभमो संसार । गमो कुमति परिणमनता । दमो करण भयकार ॥१॥ जैसें जलधर वृष्टितें । अखिल फलद विकसाय । तैसें प्रवचन भक्तितैं । सुभपरणित उलसाय । २ (श्रीराग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥ ॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं । परिहरिये सङ्ग विषय विकारं । करीयें प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन० १ ॥ सप्त भंगि भूषित ए प्रवचन । स्यादवाद मुद्राभरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमणि आगर । बोधिवीज उतपत्ति करणं ॥ प्रवचन०॥२॥ जैसें अमित पान करणतें । ऊवई सकल विष संहरणं । तैसें प्रवचन अमित पानें । कुमति हलाहल प्रविशरणं ॥३॥ प्र०॥ प्रवचनकौ आधेय कहीयै । सकलसंघ तसु अधिकरणं । तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन । एपद अखिल कलुपहरणं ॥४॥ प्र०॥ यदि भविजन तुमए चाहतुहै । मुगतिरमणि जन वशकरणं । करणतीन इककरि तदकरीयै । प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र०॥ जिनवरजी पिण ए तीरथनैं । प्रणमें मध्य समवसरणं । भवजल तारण तरणि समानं । एतीरथ अशरण शरणं ॥ ६ ॥ प्र०॥ जिम भरतेसर संघ भगतिकरि । लहीयो पुण्य फलाचरणं । चक्रीपद अनुभवि वलि शिवपद । लीधकरीय क्रम निरजरणं ॥प्र० ७॥ नरपति संभव जिनहरषै करि । आराधी प्रवचन चरणं । करम निकंदि थया जगदीसर । जिन परमाक्षर आभरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ (काव्यं) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्स । डक्खंधया रुग्ग दिवाकरस्स । अणंत जीवाण दयागिहस्स । णमो णमो संघ चऊविहस्स ॥९॥ (ॐ ह्रीं श्री

प्रवचनायनमः) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥✻॥

॥ ✻ ॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि० ॥ ✻ ॥

॥✻॥ (दूहा) ॥✻॥ पदचतुर्थ नमीयै सदा । सूरीसर महाराज । सोहम जंबू सारिसा । सकल साधु सिरताज ॥१॥ सारण वारण चोयणा पमि चोयण करतार । प्रवचन कज विकसायवा । सहसकिरण अवतार ॥ २ ॥ (राग रामगिरी) गात्रलूहै जिनमनरंगसुंरेदेवा (ए चाल) ॥✻॥ आचारिज पद ध्याईयैरे वाला । तासविमल गुणगाईयै॥ पाईयै (हांरेवाला) पाईयै ॥ जिनपतिपद जग शिरतिलोरे ॥ १ ॥ आचारिज० ॥ जिनशासन नजुवालतारे वाला । सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता (हांरेवाला) पालता ।। चरण करण मग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज० ॥ सूरि सकल गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता (हांरेवाला)मो०। नवीयणनैं पमिबोहतारे ॥ ३ ॥ आचा० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला। सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता (हांरेवाला) गाजता ।। सूरि सकल शिर गाजतारे ॥ ४ ॥ आ०॥ नपदेशामृत वरसतारे वाला । डुरितताप सऊ निरसिता ।। निरसिता (हांरेवाला) निरसिता ॥ परमातम पद फरसतारे॥५॥ आचा०॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगवांधव जगहितकरा ॥ हितकरा (हांरेवाला) हितकरा ॥ स्व परसमय वित्त गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद श्री जिनहरषै ग्रह्योरे वाला । सूरीशर पद तपवह्यौ । तपवह्यौ (हांरेवाला) तपवह्यौ । पुरुषोत्तम नृप शिव लह्योरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ (काव्यं) कुवादि केली तरु सिंधुराणं । सूरीसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संतज्जिय मंदराणं । णमोसया मंगल मंदिराणं ॥८॥ (ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः)॥ ४ ॥ ✻॥ इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४ ॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥ ✻ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ (दुहा) ॥ ✻ ॥ डुविध थविर जिनवर कह्या । द्रव्य नाव प्रकार । लौकिक लोकोत्तर वली । सुनीयै नेद विचार ॥१॥ जनकादिक लौकिक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानीयै । डुतीय थविर अधिकार ॥२॥✻॥ (सारंगराग) ॥ नितनमीयै थविर मुनीसरा । पंचमहाव्रत धार

क तारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै० ॥ २ ॥ संय मयोगै सीदत वालक । ग्लानादिक सङ्ग मुनिवरा । एहनें उचित सहाय दी यणतें । वारै एहना डुखन्नरा ॥ २ ॥ नित०॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थ विरा । वीसरु साठ समोपरा । वयधर समवायाधिक पाठक । एहथ विर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित० ॥ तीजैअंग कह्या दशथविरा । रत्नत्रयी ना गुणधरा । तेइह निरमलन्नावै ग्रहिवा । न्नविक सरोज दिवाकरा ॥४॥ नित०॥ क्षीर जलधि सम अतिह गंन्नीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शर णागत तारणता धारा । ग्यान विमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित० ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्यातावरा । तेह स्वरूप रमण थवि राकह्या । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित ॥ एह थविर पद सेवी न्नग तैं । पदमोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरषै तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ ७ ॥ नित० ॥ (कलश) सम्मत्त संयम पतित न्नविजन अ तिह थिरकरता न्नला । अवगुण अदूषित गुणविन्नूषित चंद्रकिरण समुङ्क ला । अष्टाधिका दशसहस शीलांगरथ रुचिर धाराधरा । न्नवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीस्थविरायनमः) ॥५॥ ※ ॥ इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ षष्टपदे श्री उपाध्याय पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दुहा) ॥ ※ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिध्रम सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धीरजधार ॥ १ ॥ ※ ॥

(राग न्नैरव) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल) ॥ ※ ॥ न्नावधरी उवझायावंदो विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ १ ॥ न्नाव० ॥ कुमती मदतरु न्नंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी । अंगडुवालस न्नणय न्नणावै । शिष्यन्नणी चित हितधारी ॥ २ ॥ न्नाव० ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणतें । वाचक अति विमलाचारी । न्नव तीजै अग्नित सुखपामें । सुर असुरेंद्र मनोहारी ॥ ३ ॥ न्नाव० ॥ हय ग ज वृष पंचानन सरिखा । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप दिन कर । विधु न्नंन्नारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ न्नाव० ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि रि । चरमजलधि उपमन्नारी । एउपमा बहुश्रुतनी जाणो । उत्तराध्ययन

कहीसारी ॥ ५ ॥ नाव० ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । सकल नुवन जन नुपगारी । शंशय तिमिर हरण वासरमणि । पाप ताप आतपवारी ॥ ६ ॥ नाव० ॥ प्रवर शंख पय नरीयो सोहै । तिमए ग्यान चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहीयो जिनपद विजितारी ॥७॥ नाव०॥ (काव्यं) सब्बोहिवीजं कुरकारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुवोहिदंती हरिणेसराणं । विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥ ७ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेन्योनमः) ॥६॥ इतिषष्टपदे श्रीउपाध्यायपूजा ॥६॥※॥

॥※॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्यादवाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिव पंथनें । साधै साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलफीलता । विशदानंद सुरूप तिण पांम्यो पद सप्तमें । नमोनमो मुनिनूप ॥ २ ॥ ※ ॥

(राग गुंफमिश्रित नीम म०) मेघनरसेनरी पुष्फवादल करी ए चाल॥ नक्तिधरि सातमें पद नजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सत्तावीस नूषणकरी शोनिता । क्रोनिता विकट कम सुनट सारा॥१॥ नक्ति०॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिनें दोष आहारना वरजिता । सप्तचालीस यतिध्रम निधाना ॥२॥ नक्ति०॥ मदनमद नंजता कुमति जन गंजता । नक्तजन रंजता क्रांतिधरीया । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंनीर दरीया ॥ ३ ॥ नक्ति०॥ त्रिण मणी समगिणें चतुरविध धरमना । परम नुपदेश दायक नुदारा । बहिर न्यंतर निदा बारविध अतिकठिन। तपतपै सकलजीव अनयकारा ॥ ४ ॥ नक्ति० ॥ वलि अठावीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें ठठ गुणठाण वसीया । सप्त नयवारका प्रवर जिन आगन्या । धारका स्वगुण परिणामन रसीया ॥ ५ ॥ नक्ति० ॥ पंचपरमाद कल्लोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववाफि युत शीलव्रत के धरा । मधुर निजवाणि रंजित समाजा ॥ ६ ॥ नक्ति०॥ कोफि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरनद्र जिमकरीय साधुसेवा । परमपद जिनहरष सुग्रह्यौ तसुतणा । चरणकज युगनमें सकलदेवा ॥ ७ ॥ नक्ति०॥ (काव्यं) संतक्रिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गि

हाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं । णमोणमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः) ॥७॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दूहा) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश । जीतलई निजतेजसें । जिन अनंत रविन्नास ॥१॥ सज्ञ संशय तम अपहरै । जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विलय होय डुखदंद ॥ २ ॥※॥ (राग घाटो) मेरो मन वसकर लीनो । ए चाल ॥ ※ ॥ न्नावें ग्यान वंदन करीयें । शिवसुख तरुकंद । न्नावें ० ॥ जिनचंद्र पद गुण धरीयै । वरियै परम आनंद ॥ १ ॥ न्नावै० ॥ मतिनाण १ श्रुत २ पुनरवधि ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ न्नावै० ॥ लोकालोक न्नाव प्रकाशी । वर केवल नाण ५ ॥ न्नावै० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन ५१ न्नेदै । कह्यो जिनवर न्नान ॥ न्नावै० ॥ जगजीव जम्ता छेदै । ग्यानामृत रसपान ॥ न्नावै० ॥ ३ ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ न्नावै० ॥ न्नक्षान्नक्ष प्रगट ए करीयै । जिम पय जल हंस ॥ न्नावै ॥ ४ ॥ वरनाण सहितसु किरिया । करी फल दातार ॥ न्नावै० ॥ ज्ञवो ग्यान चरण रसीला । लहो न्नवजल पार ॥ न्नावै० ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीयो । न्नरतेसर महाराय ॥ न्नावै० ॥ तिणसें अमृतपद लीधो । सुरपति गुणगाय ॥ न्नावै० ॥ ॥ ६ ॥ सेवीग्यान जयत नरशै । न्नये जिन महाराज ॥न्नावै० ॥ सोहैंग्यान ए त्रिन्नुवनमें । सज्ञपरि सिरताज ॥ न्नावै० ॥ ७ ॥ (काव्यं) द्रव्व पज्जाय गुणुकरस्स । सयापयासी करणोकुरस्स । मिछत्त अन्नाण तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीज्ञानायनमः)॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥ इति अष्टमपदे श्रीज्ञानपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नवमी दर्शन पदपूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ दर्शण आश्रय धर्मनो । एहना षट् उपमान । दरशण विण नहि चरणविद । उत्तराध्ययने जान ॥ १ ॥ जिणदरशण फरस्यो न्नलो । अंतर मजुरति मान । अरधपुगल परियटरहै । तसु संसारवितान ॥ २ ॥※॥ (राग कामोद) चंपक केतक मालतीए । अइयो मालती ए ॥ (ए चाल) ॥※॥ जिनदरसण मुफ मनवस्यो ए । (अइयो

मनवस्यो ए) । उपजत परम आनंद । जिनदरशन दरशन दीयै। विमलना
ण तरुकंद ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीतीया ए॥(अइयो०)। वर दरशण
उलसंत । दरशण घट परगट हुआ । जवीयण जव जन्नमंत ॥ २ ॥ जिनव
रदेव सुगुरु व्रती ए। केवली कथित जिनधर्म । तीनतत्त्व परिणतिरमें । ते
दरशण करै शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रजु वचनो परि सदा ए ॥(अइयो०)॥ थिर
शरदहण धरंत । इण लक्षणतें जानीयै । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥
इग, डुग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए । (अइयो०) सतसठि ६७ जे
द विचार । वलि पररीति समकित जणयो । द्रव्य जाव परकार ॥५ ॥ द्रव्यें
जिनदरशण कह्योए । जावै समकित सार । द्रव्यत दरशण जावतो । दरशण
कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतबलीये । तदपि उत्तर हितकार ।
शय्यंजव जिनदरशणें । पायो दरशण सार ॥७॥ दरशण विण किरिया हता
ए । अंकविना जिम बिंडु । वलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम
इंडु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद अजिराम । पद श्रीजि
नहरषै धस्योए । वधतै शुन्नपरिणाम ॥ ए ॥ (काव्यं) अणंतविन्नाण सुका
रणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । णमो
णमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ (उँ ह्रीं श्री दर्शनायनमः) ॥ ए ॥ ※॥
इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ ए ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१०) विनयपद पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ विनय जुवन रंजन करै ॥विनयै जस विसतार।
विनय जीउ जूषित करै। विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधर्म्म
नो । विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय
सन्नंद ॥ २ ॥ (राग सामेरी) पूजोरीमाई जिनवर (ए चाल) ॥ ※ ॥
ध्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावै । पंच जेद, दश विध, तेरस वि
ध । वावन जेद गणेशै ॥ ध्या० ॥ वासठ जेद कह्या आगममें । विन
यतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ सं
घा ५ । किरिया ६ धम ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ए आचारिज
१० मुनिथविरा ११ । पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ २ ॥ ध्या० ॥
ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरै जेजावै ॥ ध्या० ते तीर्थंकरपद अ

लुभविनें । अमितपद सुखपावै ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृदुगुण ला मैं । नहीय कालिमा पावै । ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम कल्याण कहावै ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें है मृदुतागुण । कुमति कठिनता नासै ॥ध्या०॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता । जायै विनयगुण भासै ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दोयसहस अरु अधिक चिडुत्तर । देववंदन निरधारो ॥ ध्या० ॥ गुरुवंदन विधि च्यारसैं वाणुं । भेदकरी उरधारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकरादिकनौ मनरंगै । विनय चरण शुभध्यायो । धननामा भवि नमि जिनहरषै । तीर्थंकर पद पायो ॥ ७ ॥ ध्यावो० ॥ (काव्यं) आणंदिया सेस जगज्जणस्स । कुंदिंडु पादा मलता चणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स । णमो णमो श्रीविणयालयस्स ॥८॥ (ॐ ह्रीं श्री विनयायनमः) ॥१०॥ इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (११) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ इग्यारम पद नितनमुं । देश सरव चारित्र । पंक मलिनता दूरकरि । चेतन करै पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करै । रंकथकी सुरराय । तीन जगतपति पद दीयै । जसु सुर नर गुणगाय ॥२॥ (राग सारंग) बावना चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ चरण शरण मुझ मन रह्यो । सुखकरण हरण घन पापए । (ढ़ांढ़ोरे वाला)। एह चरण जलधर हरे । अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ढ़ां०॥ आठ कषाय निवारतां । देशविरति प्रगट भवै वासए॥ ढ़ांढ़ोरे०॥ बार कषाय निवारीया । सम विरतिलहे गुणवासए ॥ २ ॥ ढ़ां० ॥ इगवासर सेव्यो थको । शुध सरवसंवर चारित्रए ॥ ढ़ां० वाला ॥ परमानंद घन पददीये । सुरलोक जनित सुखचित्रए ॥ ढ़ां० वाला ॥ भव भय तरुगण छेदिवा । एसंयम निशित कुठारए ॥ ढ़ां० वाला ॥ ग्यान परंपर करणछै । अम्रितपदनो हितकारए ॥ ४ ॥ ढ़ां० वाला ॥ चरण अनंतर करण छै । निरवाण तणो निरधारए ॥ ढ़ां० वाला ॥ सरवविरति सुधचरणसें । पामें अरिहंत पदसारए ॥५॥ ढ़ां० वाला ॥ वरस चरण परजायमें । अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥६॥ ढ़ां० ॥ वाला ॥ सतरभेद चारित्रना । कहीया जिनआगम जोयए ॥ ढ़ां० वाला ॥ देशथी सम संयम विषै । उज्जलता अनंतगुण थायए ॥७॥ ढ़ां० वाला ॥

अरुणदेव सेवी चरणनें । भये जगगुरु जिन महारायए ॥ हां० ७ ॥ (काव्यं) कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महोदयानंद लयाजलस्स । विन्नाण पंकेरुह काणणस्स । णमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री चारित्रायनमः ११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ११ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (१२) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥※॥

॥※॥ दूहा)॥※॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी । कामकलश अवधार । ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो । कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज निकर । सुरगणमैं सुरराय । तिम सङ्कव्रत शिर सेहरो । ब्रह्मचारज कहिवा य ॥ १ ॥ (राग ख्याल) भला प्रभुगुण वालाहो (ए चालमें)॥※॥ भव भय हरणा, सिवसुख करणा, सदा भजोब्रह्मचारा (मैंवारी जाउं) सदाभजो० हो ॥ भव० ॥ शील विबुध तरु पालन करिवा । कहि जिनवर नववाराहो । दिव्योदारिक करण करावण । अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ भव० ॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीयै । भवीयै भेद अढाराहो ॥ भव० ॥ कनक कोम्मिनो दानदीयै नित । कनकचैत्य करताराहो ॥ भ०॥ २ ॥ एह थी ब्रह्मचारज धारकनो । फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ सहस चौरासी श्रमणदानफल । ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ भ० ३॥ विजयसेठ विजयासेठानी । उभयपक्ष्य ब्रह्मधारा हो ॥ भ० ॥ भये सुदर्शन सेठ शीलसें मुगतिबधू भरतारा हो ॥ भ०४ ॥ सहस अढार शीलांग रथधारा । धारिकैं निसतारा हो ॥ भ० ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन । कुंजर मद मतवारा हो ॥ ४ ॥ भ०॥ कलहकारि नारदरिषि सिरिषे । तस्या भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण विरति नहि एहमें ॥ ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो । भ० ॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर । धरीय भगति हितकारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारज व्रत धर नरवरके । प्रणमें चरण उदारा हो ॥ भ० ६ ॥ दशम अंगि भणियो नरवर्मा । नरपति गुण आधारा हो ॥ भ०॥ ब्रह्मचारिज व्रत पालि लह्योपद । जिनहरषै जयकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ (काव्यं) सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स ।सच्चवयाभूसण भूसणस्स णमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यायनमः) ॥१२॥ इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा १२ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ (१३) किरियापद पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ करम निरजरा हेतुहै । प्रवर क्रिया गुणखाण जिनशासननी स्थिति रही । किरिया रूपै जाण ॥१॥ भुवनमांहि किरियाम ही । सकलशुद्ध विवहार । प्रवरनाण दरशण तणो । शुधकिरिया शिणगार ॥ २ ॥ (राग मालवी गौडी) ॥ सब अरतिमथन मुदारधूपं (ए चालमें) शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें । धम सुकल उर धारेरे । आर्त्त रौद्रनी हेतु किरिया । अशुभ पणवीस वारेरे ॥ १ शु०॥ ग्यानवंत अशस्त्र भटहै । क्रिया शस्त्र वतंसरे । सुभटनाणी क्रियाशस्त्रे । करयकम अरिध्वंसरे ॥ २ ॥ शु०॥ ग्यानसेती वदै शिव यदि । तेरमें गुणठाणरे । एकनाणें तद जिणेसर । कि मुनलहै निरवाणरे ॥ ३ ॥ शु०॥ जिनप शैलेशी करण करि । चवदमें गुण ठाणरे । सरवसंवर चरण करणें । लहै पद निरवाणरे ॥ ४ ॥ शु० ॥ ए अनंतर अमृतकारण । कह्यो जिनवर भांणिरे । सरव संवर चरण किरिया । न शिव इणविनु जाणिरे ॥ ५ ॥ शु०॥ एकनाणें इक क्रियामें । नशिव वितरण शक्तिरे । कहै जिनवर उभययोगै । लहै भविजन मुक्तिरे ॥ ६ ॥ शु० ॥ गरलमिश्रित सरस भोजन । अशुभ परिणत धाररे । अमृतसंयुत तेहभोजन रुचिर परिणति काररे ॥ ७ ॥ शु०॥ ग्यानसहिता तेमकिरिया । करिकै निसताररे । ग्यानविन किरियानदीपै । मनोमत फलसाररे ॥ ८ ॥ शु० ॥ ग्यानपरिणति रमी किरिया । तेह किरिया साररे । भयो हरिवाहन जिनेसर । सुद्ध किरिया धाररे ॥ (काव्यं) विशुद्ध सद्धाण विभूषणस्स । सुलद्धि संपत्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणंत गुणप्पदस्स । णमोणमो सुद्धक्रिया पदस्स । ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्री क्रियायैनमः ॥ १३ ॥ ※ ॥ ॥※॥

इति त्रयोदशपदे श्री क्रिया पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१४) तपपद पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ शमतारस युत तप रुचिर । भणियो जिन जगभांन । शिव सुरसुख चंदन फलद । नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन । करन विमल तपजांन । विपिन धूमकेतन समो । जय तप सुगुण निधान ॥ २॥ (राग कल्याण) तेरी पूजावनी हे रसमें । (ए चाल) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशलए ।

डुरित निकाचित हरणें ॥१॥ मेरी०॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी हिमकर किरणें॥ मेरी०॥जैसें गणधरकी जिनचरणें।चातककी जलधरणें॥२॥ मे० ॥ जिनवर पिण तद्भव शिवजाणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥मे०॥ तदपि सुकोमल करण चरणनें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे० ॥ कपटसहित तप चरण धरणतें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे० ॥ नितए दंभ रहित तपपदके । सुरपति गण गुण वरणें ॥ ४ ॥ मे० ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन । पूरव भव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहीया तदपि कपट नवि छंड्यो । भये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे० ॥ दृढप्रहारि पांमव घन करमी । छंड्या करमा वरणें । तपसें शोभलही त्रिभुवनमें । केवल कमला भरणें ॥६॥ मे० ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शार दिन खिरणें। मासखमण करि नंदन मुनिवर । पांम्यो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे०॥ तपकरीयो गुणरयण संवच्छर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें कह्यो अधिको । धन्नो तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे० ॥ बाहिर भ्यंतर भेदै एतप । बारभेद अधिकरणें । वसिनें कनककेतु पांम्योपद । जिनहरषै भवतरणें ॥ ए॥ (काव्यं) लच्छी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संलग्ग सुपावणस्स । अमंगला नोकुह डुहवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥१०॥ (ॐ ह्रीं श्रीतपसे नमः)॥ १४ ॥ ॥ इति श्रीपतपूजा ॥ १४ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (१५) गौतम गणधर पदपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ ॥ गौतमगणधर पनरमें पदसेवो सुप्रसन्न । वलि सहु जिन गणधर नमो । चवदैसै बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस करै । दानहरै डुरितारि । मन वांछित सहु सुख दीयै । दान धरम हितकारि ॥२॥ (राग सोरठ) ॥ मैंतेरी प्रीति पिछानीहो प्रभुमें (ए चाल) पनरमपद गुनगाना हो भवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं०॥भावधरी करीयै मनरंगै । परम सुपात्रै दानाहोभवी ॥ पनर० ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव डुभेदै । द्रव्य लछन ए जाना हो भवी । पन० ॥ सरवोत्तम उत्तम कवै भाजन । रतन कनक रूपाना हो भवी ॥ २ ॥ पनर०॥ मध्यमपात्र कहीजै एहवा । ताम्रधातु निपजाना होभवी ॥ पनर०॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना । तेह जघन्य कहाना हो भवी ॥ पन० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो

लच्छन कहीवै । सुनीयें सुगुन सयाना हो भवी ॥ पन०॥ पंचम चरण धरै वलिवरतै । क्षीणमोह गुणठाना होभवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम । पात्र कह्या जिनभानाहो भवी ॥ प०॥ प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर । लाभालाभ समाना हो भवी ॥ प०॥ ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहीया । भवजल तारन यांना हो भवी ॥ पन०॥ सुधर्मन द्वादशव्रत दरशनधर । तारपात्र सम जांना हो भवी ॥ पन०॥ ६ ॥ सुध समकित धर श्रेणिक परमुख । रह्या अविरत गुनठाना हो भवी ॥ प०॥ ताम्रपात्र सम एहनें कहीयै । भावी गुण मणि खाना हो भवी ॥ पनर०॥७॥ अपर सकल जन मिथ्यादृष्टी । लोहादिपात्र गिनाना होभवी ॥ पन ॥१०॥ जिनशासन रंगें रंगाना । वाचंयम सुप्रमाता हो भवी ॥ पन०॥ ८ ॥ एहनें दानदीयें शिव लहीयै । एह सुपात्र पहिचाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, निकरमै । अभय सुपात्र महिराना हो भवी ॥ पन०॥ ९ ॥ नरवाहन सुभपात्र दानतें । भये जिनद्रव निधानाहो भवी ॥ पन०॥ सालिभद्र वलि सुरसुख लहीयो । सुरनर करय वखाना हो भवी ॥ पनर०॥ १० ॥ (काव्यं) अणंत विन्नाण विभाकरस्स । दुवालसंगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जरगोयमस्स । णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ (ॐ ह्रीं श्री गौतमाय नमः) ॥१५॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १५ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (१६) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ सोलमपदमें जानीये । वेयावच्चविधान । अखिल विमलगुण मणितणो । सोहै प्रवरनिधान ॥१॥ जिन, सूरी, पाठक, मुनी । वालक, वृद्ध, गिलांन, । तपसि, चैत्य, संघनो, करौ । वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥ (राग) वालोह्मारो कव मिलसी मन मेलू (ए चाल) सेवो भाई सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो । करन वेयावच्च भारी ॥ सेवो० ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर । अवर केवली हारी । मन पर्यव धर अवधिनाण धर । चवद पूरव श्रुतधारी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ दशपूर्वी उतकृष्ट चरणधर । लब्धिवंत अणगारी । एजिन कहीयै इनवंदनतें । भविकुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥ जिनमंदिर विंब करण भरावै । पूजकरै मनुहारी । वेयावच्चकही ए जिनकी । करीयें भवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥

आचारज परमुख नवपदको । वेयावच्च विजितारी । न्नगतिपूर्व वस्त्रौषध अन्नजल । देवै गुण विस्तारी॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय वेयावच्च पूरवन्नव व्रतचारी । न्नरत वाहुवल चक्रीपदन्नुज । वललह्यो वरी शिवनारी ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय वेयावच्च सारी । तिणसें सरगलोकमें डुयकी । न्नईय प्रसंसान्नारी ॥ से० ॥ इत्यादिक सोलमपद उधरै । वहुलन्नव्य क्रमजारी । तिणसें इणवेयावच्च पदकी । वारी जाउं वारहजारी ॥ ७ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीन्नयेडुख वारी । श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ए ॥ (काव्यं) मणुण्णसव्वा तिसयासयाणं । सुरासुराधीशर वंदियाणं । रवींडुविंवा मलसग्गुणाणं । दयाधणाणं हि नमोजिणाणं॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्रीजिनेन्द्र्यो नमः)॥ ॥ १६ ॥ ※ ॥ इति षोमशपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ (१७) समाधिपूजा लि० ॥※॥

॥※॥ (दूहा) ॥※॥ सतरमपदमें सेवीयै । सकु सुखकरण समाधि जिण सेवनतें न्नविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ व्रह्मनगर पथि विचरतां । वर पाथेय समान । ए समाधिपद जानीयै । सुरमणि किय हैरान ॥ २ ॥ वाजै तेराविछुआ (इस कैरवारी चालमें) ॥※॥ मेरोरे समाधि चरण चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुन्नव रंगे अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे०॥ द्रव्यत न्नावत डुविध समाधि । सुरतरु मांनुं नित न्नुवन विलसीयो । मे०। अशन वसन सलिलादिक न्नक्ती । करय संघनी करुणा रसीयो ॥ मे०॥२॥ द्रव्यसमाधि प्रथम एसुनियै । कह्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखै । पतित सुथिरकरै ध्रममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥ न्नावसमाधि डुतीयए कहीयै । जोकरै सो जिनचरण फरसीयो ॥ मे०॥ सकल संघकौं जो उपजावत । डुविध समाधि डुरित तसु नसीयो ॥४॥ मे० ॥ सुमति पंच त्रिण गुपति धरैनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥ जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुन्नव अम्रित धार वरसीयो ॥५॥ सुकल अनिल करमेंधन दाहत । जिणसें परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ए मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे०॥

इणपदमें ऐसे मुनिजनके । समरणतें जय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एप दसेवी नृपतिपुरंदर । भये जगपति जिनहरष उल्लसीयो ॥ ७ ॥ (काव्यं) सव्विंदिया पार विकार दारी । अकारणा सेस जणोवगारी । महाभवातंक ग णापहारी । जयोसदा सुद्ध चरित्त धारी ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्योनमः

॥ॐ॥ अथ (१८) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ॐ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमां हि । इणपद सेवक जनतणा । सङ्क संकट भय जांहि ॥१॥ जैसी कुमति विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय ॥ २ ॥ ※॥ दिलदार यार गबरू । राखुंरे घुंघटदा पटमें (ए चाल)॥※॥ जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीतेरे विकट भवभटनें (आं०) ॥ सदपूर्व ग्यान धरणा । वितरै जिनेंद्र चरणा । करि सर्व कर्म हरणा ॥१॥ जीते०। (जि नचंद्र०)॥ जगमैं महोपकारी । भवसिंधु वारितारी। कुमतांधता विदारी ॥२॥ जी० ॥ जि० ॥ सङ्कभावनो प्रकासी । परमस्वरूप भासी । समकित स भवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि०॥ विणुहेतु विश्ववंधू । गुणरत्न राशिसिंधू । शमता पीयूप अंधू ॥४॥ जीते०॥ जिन०॥ स्याद्वाद पक्षगाजै । नयसत्तसै विराजै । एकांतपक्ष भाजै ॥५॥ जी०॥ जि०॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणसें जिनेंद्रसारा । किया भव्यके उधारा ॥६॥ जी०॥ जि०॥ पद सेविए नरिंदा। भये सागरादि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ (काव्यं) सुद्धक्रिया मंगल मंगनस्स । संदेह संदोह विखंमनस्स । मुत्ती उपादान सु कारणस्स । नमो ही नाणस्स जयो घणस्स ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥१८॥※॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपुजा ॥ १८ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (१९) श्रुतपद पूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार । तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥१॥ इगुनवीस पदमें भजन । जिनवर श्रुतनी भक्ति । इन पद वंदनसें लहे । अमल नाण युत मुक्ति । ॥२॥ (राग) व्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरीरे (अपर) आजआयोरे उछाह । जीवमानाच जिणंद आगै (इस चालमें) ॥ ※ ॥ भविजन श्रुत

भक्ति चरणशरण उर धरीयैरे। ए श्रुत भक्ति सुमंगल माल। विमल केवल कमला वरमाल ॥ भविजन० ॥१॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय। प्रगट करण एश्रुत मनभाय ॥ भवि० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय। धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ भ०॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनें संग। अगणित रमणितणो करैभंग ॥भवि०॥ अरथै भाष्यो श्री जिनराज। सूत्रै गणधर मुनि सिरताज ॥ भवि०॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार। अनंत अमलगुण रयणाधार ॥ भवि०॥ भव भय जलनिधि तरण जिहाज। निसुणि मगनभई सकल समाज ॥ भ०॥ ४ ॥ भवकोटी लगि तपकरि जीव। अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥भवि०॥ करम निरजरा तितनी होय। ज्ञानीकै इकखिणमें जोय ॥भवि०॥५॥ एक सहस कोडि१०००००००००, छसय कोडि ६००००००००। चतुरतीस कोडि ३४०००००००, अरु जोडि ॥भवि०॥ अडसठ लाखरु ६८०००० सात हजार७००० । अडसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ (१६०३४६७७८८०) भवि० ॥ ६ ॥ इतने वरणसें इकपद होय। एक श्लोकका गणितए जोय ॥भवि०॥ इकपदको परिमांण एजाण। इणपदसें आगम परिमाण॥ भवि०॥७॥ तीन कोडि ३००००००० अरु अडसठ लाख ६८.०००० सहस बयालीस ४२००० एपदभाख ॥ भ० ॥ इतने पदसें अंग इग्यार। केरी गणना भवि चितधार ॥ भ० ॥ ८ ॥ बारम दृष्टिवादको मान। असंख्यात पदको पहिचान ॥ भ० ॥ इणको चउदपूरव इकदेश। इसको पारलह्यो है गणेश ॥ भ०॥ ९ ॥ एह डुवालस अंग उदार। एहनी जईयै नित बलीहार ॥भ०॥एहनी द्रव्य भाव बहुभक्ति। करीयै धरीयै जिनपद युक्ति ॥ भवि०॥ १० ॥ रत्नचूड नृप सुखमाधार। जिन श्रुतभक्ति करी हितकार ॥ भ०॥ भये जिनहरष परमपददाय। जिनके सुर नर पति गुनगाय॥ भ०॥ ॥११॥ (काव्यं) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स। सुबोहि बीजांकुर कारणस्स। अणंत संसुध गुणालयस्स। णमो दयामंदिर सञ्जुयस्स ॥ १२ ॥ (ॐ ह्रीं श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १९ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ २० तीर्थप्रभावन पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ प्रावचनी १, अरु धर्मकथी २। वादि ३, निमत्ती

४ जांण । तपसी ५, विद्या ६, सिद्ध ७, वलि । कवी ८, एहमुनिजांण ॥१॥ भावतीर्थ प्रभूकह्या । प्रभावीक एंअष्ट । तीर्थप्रभावन जेकरै । ते फललहै विशिष्ट ॥ २ ॥※॥ (राग धन्यासिरी) तेजतरणि मुखराजै (ए चाल)॥ पर भावन जयकारा । (अहो जयकारा). तीरथ परभावन जयकारा ॥ जिन सेंभवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुनधारा । तीर० ॥१॥ जिनके गणधर तीरथ कहीयै । वलि सङ्घ संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदि लहो भवपारा ॥ तीर० ॥ २ ॥ अमसठ लौकिक तीरथ तजि करि । भज लोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोयभेद लोकोत्तर । थिर जंगम भयहारा तीरथ०॥ ३ ॥ पुंमरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीरथ थावर कहीयै । दीठां डुरित विदारा ॥ तीर० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख वीशजिन । विहरमान भवतारा । दोयकोमि केवलि विचरंतां । जंगम तीर्थ उदारा ॥ तीर० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन उजीयारा । वरअनंत गुण भूपण भूपित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती०॥ ॥ ६ ॥ ए तीरथ परभावना करीयै । शुभभावन आधारा । शिवकज जल विंशति तम पदकी । जाउं प्रतिदिन वलिहारा ॥ तीर ० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परभावना करतो । मेरुप्रभू अविकारा । पद जिनहरप लहीनें तरीया । भवभय जलधि अपारा॥ ८ ॥ तीर० ॥ ॥ (काव्यं) महा महा नंद पद प्रदाय । जगत्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु तीर्थाय शुभंददाय ॥ ए ॥ (ॐ ह्रीं श्री तीर्थायनमः) ॥ ※ ॥ इती ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (गरबो) सुणिचतुर सुजाण परनारीसुं प्रीतमी० (ए चाल) ॥ ※ ॥ चितहरपधरी, अनुभवरंगे, वीस परमपद वंदीयै । शिव रमणि वरी, केवल सखीप सहाय, करी चिरनंदीयैं (आं०) एवीशचरण अशरण शरणा । चिरसंचित डुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धरणा । चि० ॥१॥ एपद समरण जिण चितधरीया । तरीया तरसै तरै भवदरीया । सदनंत भविक सङ्घ भयहरीया ॥ चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर मनुहारा । वरणन तरणीयै वज्रधारा । इंद्रादिक सुरन लह्यो पारा ॥ चि०॥३॥ एपद अतिशय महिमाधारा । आश्रितपद कमला भरतारा । जिनचंद्रा नंद

घनपद कारा ॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदकै शिवकरणा । चंद्रामल गुण विंशति करणा । झइज्यो प्रभुअरजए अवधरणा ॥ चित०॥ ५ ॥※॥ इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ कलश ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एवीशथानक भुवननंदन अघ निकंदन जानीयै । विबुधेंद्र चंद्र नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र वखानीयै । ए वीशपद भव जलधि तारन तरण गुन पहिचानीयै । इमजानि भविजन कुशलकारन वीश पद अ आनीयै ॥ १ ॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हरिमुख विधि नयन छिति मिति धरू । तिह मासभाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । वंगाल जनपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू । सझ नगर सोभित अजीमगंजपुर डुतीय वालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेसर विजित सुरगुरु विमल गुण गिरिमाधरा । गुणभवन भविजन नलिन कानन नित विकासन दिनकरा मुनिचंद्र श्री जिनलाभ सूरिंद सुगुरु महीयल युगवरा । सकलेंद्र वंद्य जिनेंद्र शासन मंमना नित हितधरा ॥३॥ तसुपद उज्जल शिखरि गणवर उदय गिरि वासरकरा । योगींद्र वृंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार पंच छत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा । युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गुरु सकल सूरीसरा ॥४॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशि मधुकरता धरी । वलि सुगुरुपद अरविंद युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार श्री जिनहरषसूरी हरष धरी वन अघहरी । या वीशपदकी विविध पूजन विधितणी रचनाकरी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयः पूजा विधि ॥

॥ ※ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे (एचाल) ॥※॥ पियाविंशतिथान मंगल आरती गायरे (आं०) सुमतिप्रिया कहै चेतन पतिको । निसुण वचन मनभायरे ॥ पि० ॥१॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै तिनको एह उपायरे ।॥ पि०)॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । साधु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । भवभय हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती डुरति वारती । अनुपम सुरसुखदा

परे॥ पि० ॥ ४ ॥ जैसें भगतै करत आरती । सकल सुरा सुर रायरे॥ पि० ॥ तैसें भवितुमे करउ आरती । एपद गुण चितलायरे ॥ पि० ॥५॥ पंच प्रदीप सें करय आरती ; जेनित चित उल्लसायरे ॥ पि० ॥ तेलही पंच चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पंचप्रदीप अखंमित ज्योतै । डुरमती तिमिर विलायरे॥ पि०॥ एहआरती तुरत तारती। भवजल निपतत घायरे ॥ पि० ॥ ७ ॥ पद जिनहरपतणी एकरणी । मनं हरणी कहिवायरे ॥ पिया०॥ चंद्र विमल शिव सिद्धि निधि घरणी । वरणी किणविध जायरे ॥ पि० ॥ ८ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ स्रग्धरा छंद काव्य तीन ॥ ※ ॥

॥※॥ योजीमुतां जनोघां, जन गिरिसदृशां, काम्निकेतु प्रमुक्तो । दुर्वार स्फार पंको त्कट तर समर, व्राततां गम्परूपा । अव्यावाधा व्ययो यत् पर म पद दशां संदृशां योविभर्त्त । योनित्यं क्षायिकाख्या क्षय विमल लसत्तै लपूर्त्ति दधानः ॥ १ ॥ स्याद्वादौ द्दामध्यामो ज्वलद तुलकल प्रज्वल ज्ञात वेदो । ज्वाला माला कुलांगा जनित भव मद्दा रएय जातंक संगाः । यत्रा नेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरंगा । भस्मी भावं स्वकीयं सकल भयद्दरः शंकर प्राणभाजां ॥ २ ॥ प्रध्वस्तां नंतचंच त्किरण गणलस त्सप्त संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका स्खलित विमलतो दग्रजाग्रत्प्रकाशः । त्रैलोक्या नंदन स्सप्रकृत कुशलकृ चंदन श्रामरेंद्रै । श्रीवामानंदनोयं जगति विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥※॥ इति ॥※॥ यह तीन काव्य आरती कियां पीछे, दोनुं हाथ जोडके कहै ॥※॥

॥※॥ अथ नंदीश्वरा ष्टमद्वीपांतर्गत द्वापंचाशज्जिनप्रासाद शाश्वत जिनप्रतिमार्चन विधि लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥※॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन विसतार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ अखिलद्वीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदीश्वर द्वीप गाजै । वलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण म

ण धारी ॥ ३ ॥ (उल्लालो) ॥ मणिधारि बावन विमलगिरवर जैनमंदिर युतसदा। शुभन्नक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमें संपदा । इककोटि शत त्रिण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण द्वीपनो चक्रवाल विष्वंन्न मान जाणो न्नोजना ॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ इणद्वीपै पूरव दक्षिण आसा । पश्चिम उत्तर दिश चउ पासा । चक्र रंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ ५ ॥ (उल्लालो) धरचारि निज डुति न्नर विनिर्जित, सजल जलधर घनघटा । वलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कलशोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ इक इक अंजनगिरि चउपासा । चउपुक्करिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । तासुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ (उल्लालो) इक इक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंम्रिता सङ्क चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दशसहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ (ढाल) ॥ जिनमंदिर युत रतिकर विमला । पूरवदिशि तेरस सङ्क अचला । एहरीतिपर त्रिणदिशि जांणो । इम बावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ ए ॥ (उल्लालो) ॥ इखाण शतयोजन सुदीर्घा बझत्तर योजन प्रमा । अतिउन्नता पंचासयोजन विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पंचशत धनुरुन्नता । इणरीति प्रतिप्रासाद प्रतिमा जाणीयें विंवशाश्वता ॥ १० ॥ ※ ॥

(दोधक) ऋषन्नानन चंद्रानना । वारिषेण व्रधमान । एजांणो शाश्वत सकल । जिनप्रतिमा अन्निधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि शिखरै जिनतणो । जिन न्हवणोत्सव सार । करिकैं नंदीश्वर जई । हरिगण विवुध उदार ॥ १२ ॥ अनुन्नव रसयुत न्नक्तिधर । हृदय सरोज मझार । इणपरि शाश्वत जिनतणी । करइ पूज अतिसार ॥ १३ ॥ पूरवदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जिनराज । अष्ट विध पूजायें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी । विमलजलै न्नरपूर । करियै न्हवण सदान्नवी । होइ सकल डुखदूर ॥ १५ ॥ ॥ ※ ॥ कुंदकिरण किरण शशिऊजलोरे देवा (ए चाल) ॥ ※ ॥ मिलिकरि सकल सुरासुरोरे वाला । निज सेवक सुरपासैरे । क्षीरजलधि मागध थकी

रे वाला । सिंधुनदी गंगासेंरे ॥ १ ॥ वलि वरदाम सुतीर्थसेंरे वाला । वि मल सलिल आणावेंरे । मणि कनकादि कलस भरीरे वाला। औषधि कुसुम मिलावेंरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणारे वाला । शाश्वत जिन न्हवरावै रे । विमल सलिल धाराकरीरे वाला । कुमति तापनें गमावेंरे ॥ ३ ॥ इण परि जेभगतै भवीरे वाला । न्हवणकरै जिनअंगेरे । ते सुरवर सुख अनुभ वीरे वाला । लहै शिवपद मनरंगेरे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे वाला । करइ जिणिंद गुणगानारे । कुशल कुमुद विकसायवारे वाला । प्रभु शिव चंद्र समानारे ॥ ५ ॥ (काव्यं) दुरितदाव घना तप वारणं। सकल भाव वि काशन कारणं । जगति भव्य भवोदधि तारणं । जिनगणं स्नपयाम्य म लैर्जलै ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह परमात्मभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः। प्रणत सकल सुरासुरेंद्र वितंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः। कठिन कर्मशालमालोन्मूलनवा रणेभ्यो । जन्म मृत्यु निवारणकारणेभ्यो । नंदीश्वराष्टमद्वीपगत। पूर्वांजनगिरी शिखरस्थ । सिद्धायतन मंमनाय मानेभ्यः । श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधाना ष्टोत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेभ्यो । जलं ययामहे स्वाहा इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोधक ॥※॥ द्वितीय पूज जिनराजकी । करहु भक्ति भरसार । वर सुगंध द्रव्यें करी । तरहु सिंधु संसार ॥१ (राग भीममल्हार) मेघव रसें भरी पुष्फवादल करी (ए चाल) ॥※॥ भक्तिधरि भवीयजन पूज महा राजकुं । एह वरगंध द्रव्यै सदाई । विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा । कुंकुमें कर विलेपन मुदाई ॥ १ ॥ भक्ति० ॥ जेभवी सुरभितर गंध द्रव्ये करी । सुरभि तनुकरै जिनराजकेरो । तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना सुरभितम करइ सहुजग घणेरो ॥ २ ॥ भक्ति० ॥ एमवर सुरभितर द्रव्य सें सुरवरा । अरचकरि जगतपति बिंबसारा । परम शुभभावनां भावता । गावता । विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ भ०॥ सकल सुरगण मिली एमजंपें मुदा । भोसुरा आज जिनराज अरचो । विरति गुण रहि त निजजन्म सफलो कीयो । सुमति संयोग दुरमति विगूचो ॥४॥ भ०॥ दुतीय इमपूज करतां हरइ भव्यनो । पाप घनताप आपें अपारा । सरग

निरवाण पुरपंथ प्रकटीकरण । विशद शिवचंद्र करगण उदारा ॥ ५ ॥ (काव्यं) मृगमदो ज्ज्वल कुंकुम चंदनैः । श्चिरतनांतर ताप निकंदनैः । जिन वरानघ तामस भास्करान् । स्वहित कृद्धियेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्योऽ नंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः । कठिन कर्मशाल मालोन्मू लनवारणेभ्यो । जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेभ्यो । नंदीश्वरा ष्टमद्वीपगत पूर्वांजनगिरि शिखरस्थ । सिद्धायतन मंम्नाय मानेभ्यः । श्री ऋषभानन चंद्रा नन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो । श्चंदनं ययामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीया गंध पूजा ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ दोधक ॥ ※ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित अतिह रसाल सुरभि कुसुमकरी भवियजन । करीयै भक्ति विशाल । १ (राग भैरवी) पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल)॥ एह जिनकी पंकहरणी भगती सारी । मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर । त्रिकरण इककरि हितकारी॥१॥ (एहजिनकी०) अनुभव रसयुत चित्त भक्तिधरि । पूरव पुण्य उदयभारी ॥ एह० ॥ इण विध कुसुम भक्ति जिनवरकी। करइ हरइ घन दुरतारी ॥एह० ॥ २ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवमा । दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह०॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा । कुसम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर कंठठवे प्रभुआगलि । कुसुम पुंज धरि दुःखवारी ॥ एह०॥ इण विध पुष्प भक्तिकरी भविजन । वरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्या न पावकसें । भस्म विषम सम क्रम वारी ॥ एह० ॥ चिदानंद घन शिव चंद्रोपम। पामें अति गुण विस्तारी ॥ एह०॥ (काव्यं) भव दवानल ताप घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं । विशद शारद चंद्र समाननं । जि नगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो अनंता०॥ प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यःपुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ जगनायक जिनचंदनी । एह चतुर्थी जांण । धूप

पूज करीयँ सदा । हरीयँ कुमती अनाण ॥ १ ॥ (राग मालवी गोमी) ॥ सब अरतिमथन मुदारधूपं (ए चाल) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरणं। धूपपूज उदाररे। धूप अनलै कुगति डुखन्नर। फलद दहत अपाररे ॥१॥ जग० सरस चंदन अगर अंबर। मृगमदा घनसाररे। कुंदरुक वली सेल्हारस। करीयें गंधवटि साररे ॥२॥ जग०॥ रतनमय वर धूप धाणो । धूपभृत कर धाररे सुर पुरंदर पूजकरतां। लहै लाभ अपाररे ॥ ३ ॥ जग०॥ धूप परिमल महमहै जिम । तेम भुवन मझाररे । धूपपूजा ते भविकनो। गुणसुगंध विचाररे ॥ ४ ॥ जग०॥ भवअंध कूप पतंत उधरत । धूप अरचन धाररे। कहत गणि शिवचंद पाठक । पूज चउथी साररे ॥ जग०॥ ५ ॥ (काव्यं) भवसु डुस्तर वारधितारकं । विषयसौख्य विकार निवारकं । निरुपमोत्तर मंगलकारकं । जिनगणं धृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो धूपंयजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (५) दीपकपूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ (दोधक) ॥ ※ ॥ दीपपूज इह पंचमी । करीयै विविध प्रकार । दीपपूज करतो भविक । दीपै जगतमझार ॥ १ ॥ (राग कल्याण) तेरी पूजावणी तेरसमें (ए चाल)॥ मेरी लगीय प्रीति प्रभुचरणें ॥॥ निजगुण परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी० ॥ १ ॥ गहिर सिंधु भव निपतित तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी० ॥ अनंतरूप धर डुरगति भयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी० ॥ करुणाधार विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें । अरचीजै डुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी० ॥ केवल विमल चिदानंद लहीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी०॥ रतनदीपसें करै आरती। हरषित जिन गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी०॥ ए प्रभुचरण सेव भवि जनकुं । अभित पद सुवितरणें ॥ मेरी०॥ कुमति रजनी अग्यान तिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकिरणें ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ (काव्यं) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरुकषाय करेणु समीरणं। मदधरा धरता बल वैरिणं। जिनगणं प्रयजे सुप्रदीपकै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो०। प्रणत०। कठिन०। नंदीश्वर०। श्रीऋषभा

नन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, त्निधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेन्न्यो । दीपं यजामहेस्वाहा ॥ ✻ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ✻ ॥

॥✻॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥✻॥

॥ ✻ ॥ (दूहा) ॥ छठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुन्नन्नाव । वरियै सिद्धिवधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ (राग सारंग) हां होरे देवा वावन्नचंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ हांहोरेवाला ॥ ए जगदीशर हितकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए (हांहोरेवाला) अतिगहिरा न्नव जलधि तें । प्रन्नु तारण तरण जिहाजए ॥ १ ॥ (हांहोरे०) न्नीमकरम कुंजरघटा । न्नंजन मृगराज समानए (हांहोरे०) न्नव्यकमल प्रतिबोधवा । ए प्रन्नु वासर महिरानए ॥ २ ॥ (हांहोरे०) रजतशालि तंडुलमयी । अक्षत पूजन अग्रसारए (हांहोरे०) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए ॥ ३ ॥ (हांहोरे०) छवण जिनंद दरशण अछै । अनुन्नव रस तरुनो कंदए । (हांहोरे०) न्नाव जिणेसर दरशनो । कारण कह्यो सकल जिणंदए ॥४॥ हां०॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां०॥ प्रतिन्नव ऊइज्यो एकही । छठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ (काव्यं) विजित मंदर न्नूधर धीरतं । निहत सागर राज गंन्नीरतं । प्रजित पातक योध सुवीरतं जिनगणं प्रयजे ऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मन्न्योऽनंता० प्रणत०। कठिन०। नंदीश्वरा०। श्री ऋषन्नानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना न्निधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेन्न्यो ऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ✻ ॥ इति छठी अक्षत पूजा ॥ ६ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ (७) नैवद्य पूजा ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ (दूहा) हिव पूजा नैवेद्यनी। सतम अतिहरशाल । करीयें जिनवरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ (राग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं (एचाल)॥✻॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अम्रित फरसै । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसें सुरपति प्रन्नुदरसण वरि । न्नगतें गावै जिनचरितं ॥ २ ॥ जिन० ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनैवेद्य सरस धरितं । हरि गण जग प्रन्नु आगलि ढोवै । मणि मय

कनक थाल भरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जिन पूजन । करइतेह जग मन हरितं । अतिही स्वाद सुर गति शिव पद सुख । तति नितसेवै भ वि तुरितं ॥४॥ जिन०॥ विंशति पदमें एजिन पतिपद । वर शिवचंद्र विम ल अनितं । इण पद सेवक भविजन केरो । संचित भूरि हरइ डरितं ॥५॥ जिन० ॥ (काव्यं) अनंत विज्ञान मयस्वरूपं । समस्त लोक त्रय भूति भूपं । लसद्गुणौघा मृत चारुकूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौघं ॥६॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं परमात्मभ्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्रीऋषभानन, चं द्रानन, वारिखेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (८) फल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार । करीयें सुभभावें सदा । भरीयै पुण्यभंमार ॥ १ ॥ (राग धन्या सिरी) तेज तरणि मुखराजै (एचाल) ॥ सुरनायक जशगावै । जिनजीको सुर० (आंकणी) निरमल मन वच काय करणतें । लुलि २ सीस नमावै । सुर अवतार सफल भयो मेरो । जिनपूजन सुपसावै ॥ १ ॥ जिनजीको सुर० नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित डरित पुलावै । निरखि निरखि मन मोहन मूरति । आनंद अंग न मावै ॥ २ ॥ जिनजीको० ॥ नालिकेर ना रंगी कवला । केला आम्र अणावै । पुंगीफल दाडिम परमुख फल । जि नवर चरण चढावै ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जेभवि फल पूजा जिनवरकी । करै करावै भावै । अनुमोदै तेपरम चिदानंद । घन अन्नित फलपावै ॥ जिन०) ॥ ४ ॥ वरसअढार छिहोत्तर जेठे । प्रतिपद सुकल सुहावै । चंद्र सूनु वासर जयनगरै । खरतरगच्छ जगचावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसू रि सूरीसर । विजयमान वडदावै । रूपचंद्र गणि पाठक पारिंद्र । वादींद्र विरुद धरावै ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य । स मय सुंदर कहिरावै । तासुशीश पाठक शिव चंदें । पूजरची मनुभावै ॥७॥ जिनजी० ॥ जेनंदीश्वर शास्वत जिनकी । वसुविध पूज रचावै । ते जन सकल लोकके ईश्वर । तीर्थंकर पद पावै ॥ ८ ॥ जिन० ॥ (कलश) सुर पति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकज मघहरं । सद्वीप नंदीश्वर जिनालय,

परमतर सुखमाकरं । अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणि सागरं । जिनराज गण मह मर्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ए ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो०। प्रणत०। कठिन०। नंदी०। श्री ऋषभाननन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो फलं यजा महे स्वाहा ॥ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ७ ॥ ॥

॥ ॥ अथ दूहा ॥ ॥

॥ ॥ पूरवदिशि अंजन गिरी । मंदिरगत जिनराज । अमविध पूजायै सदा । अरचीजै हितकाज ॥ १ ॥ पूरव प्रमुख चिऊंदिशै । पुक्करणी अभिराम । दधिमुख चउमंदिर जिना। अरचीजै शुभकाम ॥ २ ॥ ईशानादिक विदिशि गत । वसु रतिकर गिरिराज । मंदिरगत जिनराजकी। रचीयै पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि अंजनगिरी । मंदिरगत महाराज । वसुविध पूजायै सदा। पूजीजै हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलनै। चउदिशि दधिमुख सार। चउमंदिर जिन रायकी। करीयै पूजउदार ॥ ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै । विदिशैं अतिह उदार । अड रतिकर गिरिवर जिना। पूजो बिविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी। मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायें सदा । पूजो भविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधिमुखधार । चउ मंदिर जगनाथकी। पूजकरो सुखकार ॥ ७ ॥ पश्चिम ईशानादिकै। विदिशै जग हितकार । अम रतिकर गिरि जिन प्रतें। अरचुं जगदाधार ॥ ए ॥ उत्तरदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय। अष्टविधार्च्चनसैं भविक । अरचो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनें। चउ दिशि दधिमुख। नाम । चउ मंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशानादिकै। विदिशै रुचिराकार। वसु रतिकर गिर जगप्रभू। पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल । कोठारी चितचंग । इनके आग्रह सें करी। एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरद्वीपकी पूजा सं०॥ ॥

॥ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ॥

॥ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि तीर्थांमि जलैः सुभक्तए। जिनेश्वराणां स्नपयामि मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री

नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो । जलं० ॥ ❋ ॥ स्ववासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूरस चंदन कुंकुमैश्च । समर्च्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥२॥❋॥ स्ववासिवा०। नंदी० । विकास भाक् शुध्दसुगंधि पुष्पैः । समर्च्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३ ॥❋॥ स्ववासिवासे० नंदी०। तुरुक्क कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेभ्यः ॥४॥ ॥❋॥ स्ववासिवा०। नंदी०। सुनिर्मलाज्येन भृतैः प्रदीपैः । कुर्व्वे प्रमोदा ज्जिन राज पूजाम् ॥ ५ ॥❋॥ स्ववासि०। नंदी०। स्वयं पुरस्ता ज्जिन पुंगवानां । सदक्षतौघा नुप ढौकयामि ॥ ६ ॥❋॥ स्ववासि०। नंदी०। स्वयं० पुरस्ता०। नैवेद्य जातान्युप ढौकयामि ॥ ७ ॥❋॥ स्ववासि० । नंदी० । स्वयंपुर० । फलानि चाग्र्याएयुप ढौकयामि ॥ ८ ॥ ❋॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां । सद्रव्यतो भाव विशुध्दिभाजः । भव्यांगिनो नुक्रमतो लभंते । स्वर्गंच मोक्षं विरहाद्भवस्य ॥ ए ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि० ॥❋॥

॥ ❋ ॥ जीया चतुर सुजाण। नवपदके गुण गायरे॥ (ए चाल) ॥❋॥ जीया अष्टपद्वीप। मंगल आरती गायरे । परमानंद पद एहीज जपतां । अजरामर सुख पायरे ॥ जी०॥ १ ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण । व्रधमांन पद भायरे ॥ जी० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै । समरण मंगल थायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर । मनशुध्द कर मन भायरे ॥ जी०॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणतै । कीजै एह उपायरे ॥ जी०॥ ३ ॥ पंच प्रदीपसें आरती कीजि । भावे आवर्त्त कहायरे ॥ जी० ॥ जैन आरती पढै पढावै । तोथायै सुररायरे ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुखकारी लय लायरे ॥ जी० ॥ पंचमगति पांमें एहनांमै । जेगावै चितलायरे ॥ ५ ॥ जी० ॥ एहआरती भविजनमोहै । नांमें नव निध थायरे ॥ जी० ॥ सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरचन्द्र गुणगायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ सहस्त्रकूटजी पूजा ॥❋॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । भावधरी भरपूर । अनु

भव गुण निरमल करी। वंडुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ उवै श्री जिनराजनी। संख्या आगम जेह। गुरुमुख जे इमसांभली। ते सुणजो धर नेह॥ २ ॥ सहसकूटनी थापना। करियै विध विसतार। पूजरचावो नवनवी। अष्ट दिवस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै। सहसकूटनो भाव। ते देखी भवि उरधरो। सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी। तन मन उझलभाव। गीतनृत्य प्रभू आगलै। कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव सुहागण सुंदरी। सझसोलै सिणगार। प्रभु आगे मंगल करै। पावै हरख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा भरी। स्नात्र करै भविसार। सहसकूट जिनराजनी। महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※॥ आज आयोरे उछाह। जीवमा नाच० (ए चाल) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज हरख अपार। जिनवर पूजन करियै रे ॥ आ०॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच। इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज०॥ दक्षिण उत्तर भरते जाण। अतीत अनागतनैं वर्त्तमान ॥ १ ॥ आज०॥ इणपर गिणतां जिनवर थाय। सातसै वीश अधिक कहवाय ॥ आ०॥ तीश चौवीशी वंडुं एह। तारण तरण भविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमेशर जांण। एहनी आणकरो परमांण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो देव। सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ०॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार। सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ०॥ वारिजाउं एहनी वार हजार। मुझ प्रीतम एही अवधार ॥ आ०॥ ४ ॥ करता भूमंडल उपगार। जगनायक जिनवर जयकार ॥ आज०॥ भावधरी वंडुं जगसार। सुमति सदा दीजै किरतार ॥ आ०॥५॥ उँ ह्रीं परमा०। श्री सहसकूट जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ वर्त्तमान जिन वंदियै। तीन चौवीसी मांह। ऋषभादिक जिनपूजतो। दिन २ हरख उछाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदै। अंबर सुगंध विशाल। श्री जिनवर पूजन करो। भावधरी गुणमाल ॥ २॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ अवतो उयास्यो मोहि चहियै जिनंदराय (ए चाल) ॥ ※॥ ॥ वर्त्तमान जिनपूजत करकै। तन मनको सब पाप हरोरे॥ वर्त्त०॥ ऋषभ

अजित शंभव अभिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर० ॥ १ ॥ पदम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रभु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर० ॥२॥ वारमो वाशपूज्य जिन नमनें । मिथ्यातम सव दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां । ऋध्द सिध्दको भंमार भरोरे ॥ वर०॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि जिनेसर । मुनिसुव्रत दिलध्यांन करोरे । नमि नेमी श्रीपास जिनेसर । वीर सदा मुक्त नाथ खरोरे ॥ व०॥ ४ ॥ ए चौवीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज वरोरे । सुमति कहे जिन पूजन करके । लुल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहसकूट जिनेंद्राय चंदनं यजामहे: ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (३) पुष्पमाल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा:) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुमति सुगंधी विसतरे । लाभ अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौवीसी वंदिये । आंणी भाव प्रधान । मनवंछित पूरण सदा । परतिख कलप समांन ॥२॥ (ढाल) ॥※॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहिव । सुणिये० मैंवारि० (ए चाल) ॥

॥ ※ ॥ केवल ज्ञांनीनै निरवांणी । सागर महा जशकारा (मैं वारि जाउं सा०) ॥ के० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुंभूत उदारा ॥ (मैं० स०) के० ॥१॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी । दामोदर अविकारा ॥ मैं० दा०॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । मुनि सुव्रत गुणकारा ॥ २॥ (मैं० मु०) के० ॥२॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी मुनि प्यारा ॥(मैं० अ०)॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारथ मनुहारा ॥ (मैं० कि०) के० ॥ ३ ॥ श्री जिनराज जिनेसर वंदो । शुध्दमती शिवकारा ॥ (मैं० सु०)॥ स्यंदन संप्रति जिन चौवीशे । सुमति सदा गुणकारा ॥ (मैं० सु०)॥ के० ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं परमा० ॥ श्री सहसकूट जिनेंद्राय पुष्पं यजामहे: ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (४) धूप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा)॥ भावी जिनवर वंदियै । द्रव्य भाव सुविचार । पदमनाभ आदिक प्रभू । वंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अं

वर तुरक लोबांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमांन ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ संभव जिन सुखकारीरे । वाला संभ० (एचाल) ॥ ※ ॥

॥※॥ पदमनाभ सुखकारी रे वाला ॥ प०॥ (हांरे हांरे वाला) वारीजाउं वार हजारीरेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंदुं भावे । सुपारस ब्रह्मचारीरे ॥ वा० प०॥ १ ॥ स्वयं प्रभू जिन अंतरजांमी । सर्वानुभूत उदारी। देवश्रुती जिनपर उपगारी । उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ २ ॥ पोट्टल जिन शंत कित्ती कहियै । सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर बारमो कहियै । निक्कषाय गुणधारीरे । वा० ॥ प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो सेवो । महिमा अधिकतुमारी । सोलम निरमम जिनवर भावें । सेवकरो इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीनें । समाधि सेवो सुविचारी । संवर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारीरे । वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमल्लि देवज जिन पूजो । अनंतवीरज शुभचारी भावकरी भद्रंकर सेवो । एहीज निजगुण धारीरे । वा० ॥ प० ॥६॥ भावी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल वलिहारी । सुमति कहै तन मन कर उज्जल। सेवोजिन इकतारीरे । वा०॥ प० ॥ ७ ॥ ॐह्रीं परमा० सहस कूटजिनेंद्राय धूपं० ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहाः) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग भरतार । धातकी पूरब खंममें । भरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ (ए चाल)

॥ ※ ॥ धातकी खंमै पूरब भरतै । अतीत चौवीसी वंदोरे । धा० । रतन प्रभूनें अमल प्रभूजी । असंभव जिन चंदोरे धात० ॥ १ ॥ श्री अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुभंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन सुंदर भावै । नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देव दत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप आनंदोरे ॥ धा० ॥३॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो । श्रीप्रतिबोध सुदेवोरे। श्रीसिद्धारथ जिनवर पूजो । स्यंदन जिणगुण देवोरे । धा० ॥ ४ ॥ अमल नाथ देवेंद्र सुपूज्जो । पवचन नाथ सुचंदोरे । विश्वानन जिनदेव सुवंदो ।

मेघ अधिक गुण चंदोरे ॥ धा०॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो । चौवीसम मुनिचंदोरे । धातकी खंडै पूरवन्नरते । अनागत जिनचंदोरे ॥धा० ॥६ ॥ इमहीज धातकी पूरव न्नरतै । वर्त्तमान सुखकंदोरे । सुमतिसदा जिनराज कृपासैं । लहै सदा आनंदोरे ॥ धा० ॥७॥ ॐ ह्रीं परमा०। सहसकूट जिनेंद्राय दीपं यजामहेः ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ पच्छिम धातकीखंडमैं । न्नरतैं जिनवर सार । अतीत चौवीशी एकठुं । सांन्नलजो सुविचार ॥ १ ॥ उज्जल तंडुल लेयनैं । मंगलकर न्नविसार । निरमलगुण प्रगटैसही । पूजन जग न्नरतार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ पास जिणंदा प्रन्नू मेरे मनवसीआ ॥ पा०॥ (एचाल) ॥ ※॥

॥※॥ अतीत चौवीशी सेवो न्नवि रसिआ ॥ अ० । से० ॥ पच्छिम धातकी न्नरतै सोहै । एजिनराज सकल मन वसिआ ॥ स०। अ० ॥ वृषन्ननाथ महाराज विराजै । श्रीप्रियमित्र अधिकगुण रसिआ । अ०॥ अ०॥१॥ शांति जिनेसर जग उपगारी । समुद्रनाथ सेवो न्नविरसिआ । से० । अजित जिनेसर जग जयकारी । श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिआ । स०॥ अ० ॥२॥ कल्लासित जिनजनके दीपक । सरव जीत जिन अधिक दरसिआ ॥ अ० । प्रवुध जिनेसर नवमो कहियै । दशमो प्रव्रजित अधिक उलसिआ । अ०॥ अ०॥३॥ श्रीसोधरम जिनेसर वंदो । तमोधि दीपए नांम दरसिआ । नां० । वज्रशेन श्रीवुद्ध जिनेसर । प्रवंधनाथ जगके डुख घसिआ । ज०॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित प्रमुख पल्पोपम वंदो । अकोप जिनंद सव पाप तरसिआ । स० निष्टित जिन मृगनान्न सुसेवो । देवेंद्रनाथ मुझमनमैं वसिआ । म०। अ०। ॥ ५ ॥ प्रयच्छित जिन वंडुं उपगारी । चौवीशम शिवनाथहै रसिआ । ना० । पश्चिम न्नरते धातकी खंडै । वर्त्तमान अनागत रसिआ । अ० ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ इण विधजो न्नविपूज करतहै । तसु मन वंछित मेघ वरसिआ । मे० । तीन चौवीशी एनितवंदो । सुमतिसदा ए ग्यांन दरसिआ । ग्यां०। अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस० अक्षतं यजामहेः॥ ६ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ अथ (७) नैवेद्य, फल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहाः) ॥ सातमी पूजा साचवै । फल नैवेद्य सुखकार । उ

त्तम फल पूजा करो। पावो सुक्ख अविकार ॥ १॥ पुस्करद्वीपै वंदियै। अतीत चौवीशी जेह। शास्त्रथकी सुणजो सदा। अनुपम गुणके गेह ॥ २ ॥ (ढाल)॥ जात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि जा० (ए चाल)॥ पुक्खरद्वीप सुवंदोरे। भविजन ॥ पु०॥ पूरवभरते अतीत चौवीशी। सेव तभवि चिरनंदोरे। भ०॥ पु०॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक। सरवा रथ सुख कंदोरे। भ०॥ पु०॥ १॥ रुखीनाथ हरिभद्र सुहंकर। गणा धिप मुनि इंदोरे। भ०॥ पु०॥ पारत्नक जिनकुं भविवंदो। ब्रह्मचारी सुखकंदोरे। भ०। पु०॥ २॥ दीपक जिन वलिराज रुखीसर। विशाख प्रभू जिनचंदोरे। भ०॥ पु०॥ अचितरवि श्रीसोम जिनेसर। जयश्री मो क्ष जिनंदोरे। भ०॥ पु०॥ ३॥ अग्नीभानुं धनुख सुवंदो। सेमांचित चि रनंदोरे। भ०॥ पु०॥ प्रसिद्धनाथ श्रीजिनवरइंदो। वंदी पाप निकंदोरे भ०। पु०॥ ४॥ इम हीज वर्त्तमान जिनपूजी। अनागत जिन वंदोरे। भ०। पु०। सुमतिकहै जो जिनवर पूजै। तेहीज जगमणि चंदोरे। भ०। पु०॥ ५॥ ॐह्रीं परमात्मने। सहस कूट० नैवेद्यं, फलं यजामहे ॥ ७॥

॥ ※ ॥ अथ (८) वस्त्रपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा:)॥ वस्त्रयुगल प्रभू आगलै। ढोवो भविक उदार। जंबू ऐरवत खेत्रमें। पूजो जिनवर सार ॥ १॥ (ढाल)॥ आज अंग ईथी समवसरणमें। (ए चाल)॥ ※ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवरतमें। इमहीज जिनवर गाजैरी (वारीवारी इम०) जं०॥ तीन चौवीशी गिणतां भविज न। बङ्गत्तर जिन पति राजैरी। वा० व०॥ जं० १॥ गुरुमुखथी अ वधारो भविजन। परमातम गुण साजैरी। वा०। प०॥ जं०॥ भाव धरी पूजन भवि करतां। कुमति कुटलता लाजैरी। वा०। कु०॥ जं०॥ २॥ इमहीज धातकी पूरव मांहे। ऐरवतखेत्र सुकाजैरी। तीन चौवीशी नित२ नमियै। बोधलता गुण बाजैरी। वा०। बो०॥ जं०॥ ३॥ इमहीज धा तकी पश्चिमसोहै। ऐरवतखेत्र सुगाजैरी। वा०। ऐ०॥ जं०॥ ४॥ ज गत जंतु करुणानिध स्वामी। अमृत वाणि सुगाजैरी। वा०। अ०। जं०॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो। उपगारी सिरताजैरी। वा०। उ०। जं० ॥ ५॥ ॐह्रीं परमा०। सहस कूट जिनें द्राय। वस्त्रं यजामहे ॥ ८॥

॥ ※ ॥ अथ (ए) ध्वज पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहाः) वीशजिनेसर शास्वता । पंचविदेह मझार । सीमंधर आदे करी । प्रणमुं वारहजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदभुतवणी । पंचवरण विकसंत । नवमीध्वज पूजा करी । लेवो लाभअनंत ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे म्हांराराजिंदा (ए चाल०) ॥ ※ ॥

॥※॥ विहरमान भवि ध्यावो म्हांराराजिंदा । ध्या० ॥ वि० ॥ सीमंधर जुगमंधर स्वामी । वाहु सुवाहु सुहावे । म्हां० ॥ वि०॥श्रीसुजात स्वयंप्रभु सेवो । रुषभानन मनभावे । म्हां०॥वि०॥१॥ अनंत वीरज सिरी सूरप्रभूजी । दशमो विशाल कहावे । म्हां० ॥ वज्रधर जिन भवि सेवो जुगते । वोधवीज उपजावे । म्हां०। वि० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रवाहूजी । भु जंग ईश्वर सुखपावे । म्हां० । नेमप्रभू जिन गुण मणि दरियो । वीरसेन मुनिरावे । म्हां०॥ वि० ॥ ३ ॥ अठारम महाभद्र सुशेवो । देवजश। नित ध्यावो ॥ म्हां०॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो । देख्यां हरख नमावे । म्हां०। वि०॥ ४ ॥ पंचविदेहे एजिनसोहे । सोवन वरण सुहावे ॥ म्हां० ॥ चौरासीलख पूरव आयु । शाशता एहिजपावे । म्हां० । वि०॥ ५ ॥ परमपु रख एवीश जिनेसर । ए जगसार कहावे ॥ म्हां०॥ सुमति कहे ए जिनवर पूजो । निजगुण ज्युं भवि आवे । म्हां०। वि०॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस कूट० ध्वजं यजामहेः ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ पंचविदेहे शासता । एकसो साठ जिनंद । कल्या णक जिनराजना । पुजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आग लै । मंगल आठकरंत । तन मन उज्जल भावसुं । हृदयकमल विकसंत ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ (हांहोरे देवा) बावना चंदन घस० (ए चाल)॥

॥※॥ (हांहोरे देवा) पंचविदेह विराजता । उतकृष्टा सहु जिनराजए। हांहो०॥ एकसो साठ सुहंकरा । जगबंधव जग शिरताजए ॥ हां० ॥ जनमसमें त्रिहुं लोकमें । हरखित थये सहु सुरराजए ॥ हां० ॥ चौसठ सुरपति भावसुं । उछव करे हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां०॥ च्यवन जनम दिख्या सही । केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां०॥ चौवीशे जिनराजना । क

ल्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती करयां । एक सौवीश शुभ्नगाजए ॥ हां०॥ च्यार जिनेसर शासता । ऋषभानन जिनगुण राजए ॥ ४ ॥ हां०॥ चंद्रानन वीजोनमुं । वारखेण तीजो महाराजए ॥ हा०॥ वरधमांन नितवंदियै । ए च्यारे शुभ्नगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य भ्नाव पूजन करो । भ्नव जलनिधि तारण ज्याजए ॥ हां०॥ सुमति सदा जिनरा जना । पदवंदै हित सुख काजए ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहसकूट० अष्ट मंगलं० यजामहे: ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ गीत, नृत्य, पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा:) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां । थायै लाभ्न अनंत । भ्नव्य सदा सेवन करै । हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ अरे थारीगईरे अनादिनीद जरा टुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ (ए चाल) ॥ तनें देवैरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही । सेवोतो सही मेराचेतन सेवो तोसही ॥ त०॥ जिनवरकी वरणी दुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो०॥ रायपसेणी मांहि हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे०। त० ॥१॥ भ्नवदधिकी तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले०॥ तुंरुल्यो रे अनंते काल अग्यांनी बोवोतो सही ॥ वो० मे०॥ तनें० ॥२॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो तो सही ॥ म्हां० से० ॥ परहरमान गुमांन जगत जश लेवो तो सही ॥ ले०। मे०॥ तनें०॥ ३ ॥ भ्नविजनकी करणी जशभ्नरणी वेवोतो सही ॥ मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० । मे० ॥ त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी भ्नावो तोसही ॥ मे० भ्ना०॥ गीत ग्यांन शुभ्न भ्नाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या०। मे० त० ॥ ५ ॥ मुनिवरकी वरणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गुरुग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें०॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा०। सहसकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वाजित्र गुणपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ताल मृदंग सजी करी । प्रभ्नू पूजो धरभ्नाव । भ्नगत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरी रे ॥ जिन० सु० ॥ (ए चाल) ॥ निरत करै

मिल सुरसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई २ तान करै प्रभु आगे । गावत देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लसिया । ठमठम नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल विशाल अनोपम । गावत राग छत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । पावत निजगुण हरख भरीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन । धरम धुंरधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन । अशरण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सव सुख सागर । सेवत आपद दूरटरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तुंही । तुंही जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभुआगल समकित सुद्ध उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहै भविजन जिन पूजो । सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस कूट जिनेंद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ गुलाव जल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ विविध सुगंध लेई करी । पूजन कर जिनराज । सुजश सुगंधी विस्तरै । प्रगटै पुन्यसमाज ॥ (चाल अंगरेजीवाजै की) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदजूं (ए चाल) ॥ पूज पूज जिन राज काजसारतुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुःखकारतुं । अनंत ज्ञांन तुंही भांन हितकारतुं ॥ हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाव फूल चाढ सारतुं । मोगरो अवीरलाल अविकारतुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तुंही जगमात तात भरतारतुं । अत्तर सुगंध गंध भविढारतुं ॥ भ० पू० ॥ ३ ॥ केवमो चंपेल वेल अवधारतुं । परम आनंद चंद जिनसारतुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥ भगत उधार सार किरतारतुं । मैंतोजूं आचारहीन मुनितारतुं ॥ मु० पू० ॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारतुं । एहीहै जिनंद देव भवि धारतुं ॥ भ० पू० ॥ ६ ॥ तुंही है मुनीश ईश गुणकारतुं । सुमति आधारसार जय कारतुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय सुगंध जलं यजामहे ॥ १३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ तेजरण मुखराजैहो प्रभू० ॥ (ए चाल) ॥

तेज अधिक जगगाजैहो । प्रभु थांरो ॥ ते०॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत । पुन्य अनंत सुकाजै । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभू गजै हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत दुख सब भाजै । खरतर गच्छपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु गजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजै । शीश क्षमा कल्यांण सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥३॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीवो। तसुनंदन हितकाजै । सुमति कहै भवि भावधरीनें । पूजो श्री जिनराजैहो ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजै । प्रेमधरी पूजन एकरियै । वंछित हितसुख काजैहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ भगणीसै चालीशै मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधांन मोहन मुनीगावै । निजगुण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥✻॥

॥✻॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥✻॥

॥✻॥ (ढाल) ॥✻॥ सहियांहे नेमीसर वनमैनें गिरना० ॥ (ए चाल) ॥ ✻ ॥ सहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब भावसुंहे माय । वंदो० ॥ सहि०॥ तीस चौवीशी पूजीयै हे माय । स०। विहरमांन भगवांन सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ जिनेसराहे माय । स० । भत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि०। स० ॥ २ ॥ एकसो वीश जिनंदना हे माय ॥ स०॥ कल्यांणक सब होय । सेवो भवि दावसुं हे माय ॥ से०॥ स०॥ ३ ॥ च्यार जिनेसर शाशता हेमाय ॥ स०॥ जयवंता जगदीस अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० । ॥ ४ ॥ घणा दिनांरो भमाहमो हे माय । स०। ते फलियो मुझ आज जिणंद पद सेवतां हे माय ॥ जि०॥ स० ॥५॥ उछव अधिक सुहामणा हे माय । स०। खूबथया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ०॥ स०॥ ६ ॥ भगणीसै चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार भगत कर भावसुं हे माय । भ० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करीहे माय । सं० । पूज रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दीजीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥✻॥

॥ ※ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप, विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पांचभरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्त्तमान, तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौवीशी होय (अंके) ७२० हुवा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसो साठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) (तथा) २४ भगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) को सहसकूट कहते है । सहसकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहरहै। (इसकी) उत्कृष्टभांगे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उत्सव करना होय (तो) आठदिन अठाई महोत्सव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी, बिदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चौवीशश् चढावे । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोत्सव साथ पूजा विधि गुरूके मुखसें जानके करे ॥ ※ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रचुं भवि प्रेमसुं । सांभलजो उमंग ॥ १ ॥ पांचज्ञान जिनवर कह्या । मति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल वमो । दिनकर जोत समान ॥२॥ ज्ञानवमो संसारमें । गुरुविन ज्ञान न होय । ज्ञानसहित गुरु वंदिये । सुचिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीरजिणंद वखाणीयो । नंदीसूत्र मझार । भव्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक भरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । भाव धरी भविसार ॥ ५ ॥

(चाल) ॥ चितदरखधरी अनुभवरंगें वीश परमपदसेविये (ए चाल) ॥ मति अतिह भलो शकल विमल गुण आगर भविजन सेविये । (आंकणि) एमति ज्ञान सदा नमिये । निजपाप सकल दूरे गमिये । मनशुद्धकरी निज गुण रमिये ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजांणो । चउभेदकरी मनमें आंणो । इमभाखे श्रीजिन जगभाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अरथेकरी भेद जिणंद आखे । पणइंद्रिय मनकर प्रभुदाखे । मुनि मांनस ते दिलमें रा

खै ॥ मति० ॥ ३ ॥ वलि षटविध भेद इहा कहियै । षटभेद अपाय करी लहियै । षटविध धारण भवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमभेद अठाईस भविधारो । इमभाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधारो ॥ मति० ॥ ५ ॥ वलिरतन जडित कंचन कलशै । भविपूजन कर तन मन उलसै । चिदरूप अनूप सदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञांन दिवाकर समकहियै । इम सुमति कहै दिलमै गहियै । एज्ञांनथी अनुपम सुख लहियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमतिज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (२) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । भाव धरी मनरंग । उपगारी शिरसेहरो । भावो जिन उछरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पूजैं श्रुतअंग । अनुभव सुध प्रगटै सही । पामें सुरक अभंग ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ नाभजीके नंदाजीसें लग्यामेरा नेहरा । ना० (ए चालमें) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो भवी सेहरा । श्रु०। विनय सहित गुरुवंदन करकै लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत०॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । भगतकैरै भवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरसै । ज्युं पावस रुत वरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशविध विनयकरै श्रुतगुरुको सेवेज्युं अलिफूलनें नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण भर्यो श्रुतसागर । देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत०॥ पूछन बायन वलि २ करियै । सीझै वंछित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत०॥ ३ ॥ गुरुभगती जैसी गणधरकी । वीर कहै सुण गौतम सेहरा ॥ श्रु० ॥ ऐसें गुरुभक्तीसें सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रु०॥ ४ ॥ गुरुविन ओरन को उपगारी । गुरु देव सदा गुण मणि जेवरा ॥ श्रुत०॥ ऐसें गुरुकी कीरत करकै । सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नितनमियै थिवर मुनीसरा नि० (ए चालमें) ॥ ※ ॥ नितनमियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज वखाणें । सुत्रै श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुणकै । हरखै ज्युं केकीवरा ॥ नि०॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । बारै उपांग उजाग

रा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेश्वर । सकल विमल गुण आगरा ॥ नि० ॥ छेद पयन्ना नंदी सेवो । मूलसूत्र जवि गुण करा ॥ नि०॥ ३ ॥ श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरव चउद विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो आचारंग वखांणें । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयग ङग सुणजै । जेद तिहाय तेसठखरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजै । सुणतां पापमिटैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक करीवरा ॥ नि० ॥ पंचमें जगवई महिमा करियें । सहसछत्तीश प्रशन धरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ छठो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥ सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि०॥ ७ ॥ आठ मेंअंगे जिनवरदाखै । अंतगम केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमें अंगे जविज नधारो । अनुत्तरवाई शुजकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्णविचार कह्या जिन द शमें । अंगुष्टादिक शुजतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमें जिनवर दाखें । कर्मवि पाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ वारमोअंग जिणंद वखांणे । अतिशय गु ण विद्याधरा ॥ नि० ॥ अक्षरश्रुत वलिसन्नी कहियै । सम्यकजेद अधि कतरा ॥ नि० ॥ १०॥ सादिजेद सपरजव लहियै । गम्यकजेद सुणोनरा ॥ नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । जेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥११॥ इमजो श्रीश्रुतज्ञांन आराधो । जाव जगत कर वज्रपरा ॥ नि० ॥ सुमति कहै गुरु ज्ञांन आराधो । वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञांनधारकेज्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥२॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (३) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ अगर सेल्हारस धूपसैं । पूजो अवधि उदा र । वोधवीज निरमलहुवै । प्रगटै सुक्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनैं सारि सो । ज्ञांनवमो संसार । सुरनर पूजे जावसुं । महियल ज्ञांनउदार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ निरमल जय जजलै प्रजुप्यारा । सवसंसार० (ए चाल) ॥※॥

॥ अवधिज्ञांनको पूजनकरलै । ज्युं पावै जवपार सलूणा ॥अ०॥ ज्ञांनवमो सुखदैन जगतमें । उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥१॥ जेद असंखकहै जिन वरजी । मूलजेद षट् सार ॥ स० ॥ वद्धमान हीयमान वखांणें । सूत्रें श्री गणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमांणे । देखै द्रव्य

उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहुआवै । थाये जग भरतार ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञांन विना नर मूढ कहावै । ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञानी दीपक सम जगमांहै । पूजै सहु नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञांनतणी महिमा जग मांहै । दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर वाको । एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञांननीपूजा अहनिशि करियै । लीजै वंछित सार ॥ स० ॥ ज्ञांननें वंदी बोध उपावो । करम कलंक निवार ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा भविसुणकै । पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥ सुमतिकहै भवि भाव धरीनें । सेवो ज्ञान अपार । सलूणा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० । श्रीअवधिज्ञांन धारकेभ्यः । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ केतकी दमणो मालती । अवर गुलाव सुगंध । भावधरी पूजन करो । हरै कुमति डुरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाकरो । विवध कुशम मनरंग । महिकै परमल चिहुं दिशै । पामैं शुजश अभंग ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रुंजानोवासीप्यारो लागै० ॥ से० ॥ (एचाल) ॥

॥❀॥ जिनजीरो ज्ञांनसुहावै । म्हांनैराजिंदा । (जिनजीरो ज्ञांन०) जिनजीरो ज्ञांन अनंतो सोहै । कहतां पारन आवै । म्हांराराजिंदा ॥ जि० ॥ ॥१॥ सन्नी नर मनपरजव जांणै । तेमुनि ज्ञांन कहावै ॥ म्हांरा० ॥ जिन० विपुलमतीनें ऋजुमति कहियै । ए डुयभेद लहावै ॥ म्हांरा० जि० ॥ २ ॥ अंगुलअढीए ऊंणो देखै । तेऋजु नांम धरावै ॥ म्हांरा० जि० ॥ ३ ॥ मनगत भाव सकल ए भाखै । ते चोथो मनभावै ॥ म्हां० जि० ॥ एहनी महिमा नित नित कीजै । तिमभवि नांमधरावै । म्हां० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । मुनिजन ए नितध्यावै ॥ म्हां० जि० ॥ दिक्षाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ५ ॥ मनकाशंसा दूर करतहैं । सुणतां आंण मनावै ॥ म्हां० जि० ॥ तन मन शुचिकर पूजन करलै । जनम जनम सुखपावै ॥ म्हां० जि० ॥६॥ विविध कुशमसैं पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हां० जिन० ॥ सुमति कहै भवि ज्ञांन आराधो । श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हां० जि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पंयजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥※॥ अथ (५) केवल ज्ञानपूजा ॥※॥

॥※॥ (दूहा) ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी। पंचम ज्ञांन प्रधांन । सकलभाव दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञांन ॥१॥ फल दीपक अक्षत धरी । नैवेद्य सुरभिउदार । भाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञांन अपार ॥ २ ॥ ॥※॥

॥※॥ (ढाल) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु० ॥ (ए चाल) ॥ ※ ॥

॥※॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर। दरशणकी बलिहारीरे । तुं०। (आं०) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो । लोका लोक विहारीरे। केवलज्ञांन अनंत विराजै । ज्ञायक भाव विचारीरे ॥ तुंचिद०॥१॥ जोत सरूपी जगदानंदी। अनुपम शिवसुख धारीरे । जगत भाव परकाशक भानूं । निजगुण रूप सुधारीरे ॥ तुंचि०॥२॥ सकल विमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारीरे । आतम शुद्ध सरूपी भविजन । गुण मणि रयण भंमारीरे ॥ तुंचिद०॥३॥ केवल केवल ज्ञांन विराजै । दूजो भेदन धारीरे । आतम भावे भवि जनसेवो । जगजीवन हितकारीरे ॥ तुंचि० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञांन सब देश कहावै । केवल सरव विहारीरे । सरव प्रदेशी जिनवर भाखे । साखै श्रीगण धारीरे ॥ तुंचि० ॥ ५ ॥ भए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखकारीरे । अष्ट कर्म दल दूरकरीनें । परमातम पद धारीरे ॥ तुंचि०॥ ६ ॥ ऐसें ज्ञांनवमो जगमांहै। सेवोशुद्ध आचारीरे । सुमति कहै भविजन शुभ भावै । पूजो कर इकतारीरे ॥ तुंचि० ॥ ७ ॥ फल १ अक्षत २ दीपक ३ नेवद्यसें ४ । पूजो ज्ञांन उदारीरे । पूजत अनुभव सत्ताप्रगटै । विलशै सुख ब्रम्हचारीरे ॥ तुंचि० ॥ ८ ॥ ॐह्रीं परमात्मने श्रीकेवलज्ञांन धारकेभ्यः फलं १ अक्षतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कलश पूजा ॥※॥

॥※॥ केशरियानें फाजको लोक तिरायो० ॥ (ए चाल) ॥ ※ ॥ प्रभु थांरो ग्यांन अनंत सुहायो । प्रभु अशरण शरण कहायो ॥ प्रभु० ॥ मति श्रुति अवधि अनें मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । भव्यसकल उपगार करतहै । श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र०॥१ ॥ खरतरगछ पति चंद्र सूरीसर । राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहै । देखत दिल उलसा

यो ॥ २ ॥ प्रभु० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुवाचक । अमृतधर्म सुपायो शीश क्षमाकल्यांण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमैं । ज्ञांन दिवाकर ध्यायो । ज्ञांन क्रियानो मूलजे कहीयै । तत्वरमण मनभायो ॥ प्रभू० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुध्धमती जिन धर्म आराधक । भगतकरैं मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै वरशै । आसूसुद वरदायो । ज्ञांन विजयकारक सव जगमें । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें । ज्ञांन अधिक जशगायो । तत्वदीपक मोहन मुनिभावै । ज्ञांनतणो गुणगायो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥*॥

॥ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ॥

॥*॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं सारी ॥ जय० ॥ अष्टा विंशति भेद करीनें । मति ज्ञान राजे ॥ मति० ॥ ध्यावत पूजत भविजनकेरा । भव संकट भाजे ॥ जय० ॥१॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर । स्वमुखथी भाखे ॥ जय० ॥२॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा । करि अवधी सोहै ॥ क०॥ भेद षटक् संख्याती तीवा । भविजन मनमोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये। भेद युगम लहिये ॥ भेद०॥ ऋजुमति विपुलमती सरदहियें । न्यूनाधिक गहियै ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोका लोकांतगत वस्तु । गुण पर्यव भासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहाय अनंते । भए निर्वृतिवासी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । भवआरती छीजे भ०॥ जिम वरदत्त कुमर गुण मंजरी । तिम भक्ती कीजै ॥ जय ॥६॥ वृहत् भट्टारक खरतर पति जिन । हंससूरि राया ॥ जि० ॥ तत् पद कज मधुकर कंचन निधि ॥ आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥*॥

॥*॥ अथ मंगल दीवो ॥*॥

॥*॥ दीवोरे दीवो मंगलदीवो । भुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रभु तुम मुख केरा । लुंछण करता दै नित्यफेरा ॥ दी० ॥ ॥ २ ॥ जिन तुझ आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये भमरी ।

दी०॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे। तिम तिम नवनां डुरित दफावै दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमंजली चंदन। धूप दीप फल नैवेद्य वंदन। दी ०॥५॥ इणपरे अष्ट प्रकारी कीजे। पूजा स्नात्र महोत्सव पन्नणीजे ॥ दी०।

॥ ✱ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ नविजन मंगल आरती करियै । जनम जनमकी आरति हरियै ॥ न०॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी। दारुण विघन निवारण नीकी ॥ न० ॥ दूजैपद श्रीसिद्ध दिणंदा। आरती करत मिटत नवफंदा न०॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता। मारग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ न०॥ चौथे पद पाठक गुणवंता। आरती करत हरत नव चिंता ॥न०॥ ३ ॥ पंचमी आरती साधुन केरी। कुगति निवारण शुन्नगति शेरी॥ न०॥ शिव सुखकारण श्री जिनवांणी। छठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ न०॥ ४ ॥ सातमी आरती आनंदकारी। समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी। न० यह विध मंगल आरती गावै। शुद्ध क्षमा कल्यांण ते पावै ॥ न०॥ ५ ॥ इ०

॥✱॥ अथ नगवंतके (ए) अंग पूजन दूहा ॥ ॥✱॥

॥ ✱ ॥ जलन्नरी संपुट पत्रनां। युगलक नरपूजंत। रिषन्न चरण अंगूठमे। दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं वलें काउसग रह्या। विचस्या देश विदेश। खमा(२) केवल लह्या। पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी। वरस्या वरशी दान। करकंमे प्रन्नु पूजनां। पूजो नवि वहुमांन ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशथी। देखी वीर्य अनन्त। नुजावलें नवजल तस्या। पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली। सकल सुगुण विशराम। नान्नि कमलनी पूजना। करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम वलें। वाल्यो रागनें रोष। हेम दहै वन खंमनें। हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना। कंठ विवर वर तूल। मधुर धुनी सुर नर सुणें। तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्यथी। त्रिन्नुवन जिन सेवंत। त्रिन्नुवन तिलक समा प्रन्नु। नाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली। लोकांतिक नगवंत। वसियातिण कारण सही। शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना। तिम नव

अंग जिणंद । पूजो बहुविध भाव थी । कहे सहु वीर मुणिंद ॥ १० ॥

॥ ※ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जीवमा जिन वर पूजिइ । पूजाना फल जोय । राजा नमें परजा नमें । आंण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय॥१॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वाणी वेगला । रुरू वमिया संसार ॥ १ ॥ भावे जिनवर पूजियें । भावे दीजै दान । भावे भावना भावियें । भावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नामकी उषधी । शुद्ध चित्तसें खाय । रोग पीमा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोमीनें फूलमे । पाम्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जैजै कार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सहु संकटमिटजाय । ईत उपद्रव भय टलै । मोहन गुण प्रगटाय ॥१॥ इति दूहा ॥

॥※॥अथ लघु नवपद पूजा तत्र प्रथम अरिहंत पदपूजा॥※॥

॥※॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान॥ अरिहंत पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देसणाणं दियसज्जणाणं । णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥१॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रधानं । प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म्म दुर्मर्म्म चकचूर जेणें । भला भव्य नवपद्द ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीनें । दियै देशना भव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहारें समेता । सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म चारे अलग्गा । भवोपग्रही चार बे जे विलग्गा ॥ जगत् पंचकल्याणकै सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ त्रीजे भव विधिसें करी । वीश स्थानक तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं । समकित शुद्ध मन धरिनें रे ॥१॥ अरिहंत पद नित वंदियें । करम कठिन जिम ठंमीये रे ॥ (ए आंकणी) ॥ जनम कल्याण कनें दिनें । नारकी सुखिया थावैरे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मनें । मनःपर्यव आदरियुंरे ॥ तप करि कर्म खपाइनें । ततखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥३॥ चउतीश अतिशय शोभता । वाणी गुण पंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थई, पूरे संघजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने । अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥५॥

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आविर्भूत लसबोधा । नारतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषेंधनधूमकेतु, नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिनानं बुजकर्णि कायाम् ॥ २ ॥ (ॐ ह्रीँ अर्हद्भ्यो नमः) ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ※ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । णमो णमो णंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खय कारयाणं । जम्मं जरा डुक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णादि लेशा ॥ सदानंति सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ सकल करमनो क्षय करी । सिद्ध अवस्था पाईरे ॥ गुण इगतीस विराजता । उपम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध पद वंदियें (ए आंकणी) जनम मरण डुःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरूपी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥७॥ जास ध्यान जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवमे । कठिण करम ते कापें रें ॥ म० ॥८॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागें रे ॥

अविचल पदवी पाईयें। करशुं जिनवर वम्न आगें रे ॥ म० ॥ ए ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान्। सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान्। विदधे भक्ति निर्भरः ॥१॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट, डुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतवोधान्। सिद्धान्यजे शांति करा नराणाम् ॥ २ ॥ (ॐह्रीं सिद्धेभ्योनमः) ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी। पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे। सूझे भाव अशेष ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं। णमो णमो सूरसम प्पहाणं ॥ सद्देशणा दाण समायराणं। अखंम छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा। जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षट्वर्ग व र्गितगुणें शोभमाना। पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकाले। सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा। जग ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ गुणछत्तीशे दीपता। पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे। युगप्रधान जयकारोरे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें। (आंकणी) ॥ सारण वारण चोयणा। पमिचोयण चौ शिक्षा रे ॥ भव्यजी व समझायवा। देवानें ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ म्या। परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे। ज्ञानमयी जसु दे हा रे ॥ आ०॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे। ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमां। आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (श्लोक) ॥ स्थापयामि ततः सूरीन्। दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पंचधाचारं। षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचार रतांश्च सारा। नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैक निवारणार्थं। मह्यर्चया म्य क्षत गंध धूपैः ॥ २ ॥ (ॐह्रीं सूरिभ्योनमः) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना। सुंदर शोभित गात्र ॥ उव झाया पद अरचियें। अनुभव रसनुं पात्र ॥ १ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ छंद ॥ सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं। णमो णमो वायग कुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं । सव्व प्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें व र्ग वर्गित गुणौघाः । प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय ते वंदियें चित्प्रभूता ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ द्वादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारे रे ॥ पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारे रे ॥ १४ ॥ श्रीउवझाया वंदियें (ए आंकणी) ॥ दायक आगम वाचना, भेद भाव युत सारीरे ॥ मूरखकूं पंडित करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥ श्री० शीतलचंद कि रण समी, वाणी जेहनी कहियेंरे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखभा लहीयेंरे ॥१६॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवे शयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशां त्यै । पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मु निवरपद वंदतां । निर्मल थाये देह ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ छंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं । णमो णमो सुद्ध दयादमाणं तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पयट्ठियाणं ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि वायग गणीनी । करूं वर्णना तेहनीशी मुणीनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्तें नही काम भोगेपु लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यं तरें ग्रंथि टाली । क्षये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगें रमे चित्त वाली । नमूं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ सकल विषय विष वारिनें, आतमध्यानें रातारे ॥ उपशम रसमां झीलता । निज गुण ज्ञानें मातारे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनि पद वंदियें (ए आंकणी) रतनत्रयी आराधतां । षट्काया प्रतिपालेरे ॥

पंचेंद्री जीपे सदा। जिन मारग अजुवालेरे ॥ हि०॥ १८ ॥ गुण सत्तावीश अलंकस्या। पंच महाव्रत धारीरे ॥ द्वादशविध तप आदरे। चिदानंद सुखकारीरे ॥ हि०॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे। करम महा भट जीत्यारे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा। ते नर जगत विदीतारे ॥ हि०॥ २० ॥

॥ ※॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्। शुभध्यानैक मानसान् ॥ भदकूपत्रगतान्नित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रशिद्धं सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदकूपत्र गतान् पवित्रान्। साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्योनमः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ षष्टदर्शन पदपूजा ॥※॥

॥ ※॥ दोहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा। आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स । णमो णमो निम्मल दंसणस्स ॥ मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महादुमस्स ॥ १ ॥ विपरियासहो वासनारूप मिथ्या। टले जे अनादी अछे जे कुपथ्या ॥ जिनोक्ते भवे सहजथी सुद्ध्यानं। कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं। चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपशमक्षयें तेह होवे। तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ (ढाल) ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी। सद्दहणा चित्त धरियेंरे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी। क्षायिक समकित वरियेंरे॥ २१ ॥ दरशण पद नित वंदियें (ए आंकणी) इण विण ज्ञान निफल कह्यु। चारित्र निःफल जायेरे ॥ शिव सुख ए विण नां मीले, बहु संसारी थायेरे ॥ द०॥ २ ॥ सतसठि भेदें शोभतुं। अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे भावशुं। ते पामें सुख शातारे। दरशण पद० ॥ २३ ॥ ※ ॥ ॥※ ॥

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा। लक्षणं दर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं। न्यस्तमीशानसद्दले ॥१॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः॥ इति ॥ ६ ॥

॥※॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥※॥

॥※॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननुं। सिद्धचक्रतप मांहि ॥ आराधी

जें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ छंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पया सगस्स ॥ १ ॥ भवे जेहथी ज्ञान शुध्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीयें वस्तु षड्द्रव्य भावा । न होवे वितत्था निजेच्छा स्वभावा ॥ भवे पंच मत्यादि सुज्ञान भेदें । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) भक्ष्य अभक्ष्य विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य अकृत्य ने जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ (ए आंकणी) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म विना शिव सुख नही । ते विण न मिटे भर्मोरे ॥ ज्ञा०॥ २५ ॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल खासोरे ॥ २६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले । पातक होय उच्छेद ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ छंद ॥ आराहियाखंम्यि सक्कियस्स । णमो णमो संयम वीरियस्स ॥ सझावणा संग विवज्जियस्स । निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें । निराशंसता द्वाररोध प्रसंगें ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्रातमूल्यं ॥ १ ॥ भवे जास महिमाथकी रंक राजा । वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि निःपाप थाये । थई सिध्ध ते कर्मने पार जाये ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ (ढाल) सर्व विरति देशविरतिथी । अणागार सागारीरे ॥ जयवंतो थावो सदा । ते चारित्र गुण धारीरे ॥२७॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥ (ए आंकणी) षट्खंड सुख तजि आदरे । संयमशिव सुखदायीरे ॥ सत्तर भेदें जिन कह्यो । ते आदरियें भाईरे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु

आभूषण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, भाई, बंधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम द्रव्य हाथ में लेके । भव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रभाव ना करता हुआ, जिनमंदर जावै। जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि शाचवन करै (सो १० त्रिक लिखतेहे) (पहिला त्रिक) ३ निस्सही) कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै (कहे पीछे) संसार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीछे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेंकी सारसंभाल रक्खीथी सोभीछोमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे, निकेवल भाव पूजा करै। पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ※ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ※ ॥ ॥

॥ ※ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेंकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ※ ॥ (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंबकों पंचांग मिलाके, तीन वेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्रभूकी अंग १ । अग्र २ । भाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अब निस्सही किये पीछे। कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखतेहें ॥ निस्सही किये पीछे, मनोगुप्ती, बचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै। पांचो इंद्रियांको बशमें रक्खै। गमनां गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खे । कुछभी देव कार्यकों छोमके और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा छोमै । जन्म (और) कर्मके, अनुगत बचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिकका किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला (इत्यादि वचन) नबोलै ॥ निस्सही किये पीछे, जिन मंदरमें धर्म्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत बचन बोलना चाहिये ॥ (जिसनें) मन, बचन, कायाके, खोटै व्यापारोंका निखेध अपनी आत्मासें कियाहे (उसके) भावसें निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उक्ष

ल वस्त्रसें मुखकोश बांधे। धूपादिकसें अंग अपना सुध्द करै। नावसें, दूशरी निस्सही कहते, मुलगुंनारैमें प्रवेश करै। जयणा संयुक्त पूजा करै। पूजा करते हुए, शरीरमें खाजन खुणें। खेल खंखार न करै। निकेवल नगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे। प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै। सुकमाल अछा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें नगवानका अंगलूहे। कपूर कस्तूरी मिश्रित सुध्द केशर चंदनका विलेपनकरै॥ सुनवर्ण, सुनगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस। गुलाव, चंपा, चंपेली, केवमा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै। अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवै॥ मंगलदीप करै। अखंम उज्जल अक्षतासें प्रनूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै॥ दर्प्पण १। नद्रासण २। वर्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८। (ऐसा) अष्ट मंगलकी रचना करै। पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै। सुंदर कुंकम मिश्रित चंदनसें हत्थोदेवै। उत्तम नैवेद्य चढावै। अछा खाद्य फल चढावै। (इत्यादि) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवानिगमादि, सिध्दांतोमें लिख्ये मुजव करै (पीछे) अंतरंग नक्तीसें प्रनूके सन्मुख नाटक करै॥ (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी, राणी प्रनावतीनें द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रनूके सन्मुख शंकारहित होके। उत्तम पुरुष नाटक करै॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ (अव) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै (सो) अंगपूजा ॥ १॥ प्रनूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २॥ प्रनूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) नाव पूजा ॥ ३॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्न्नित चोथा त्रिक कहा) ॥ ※॥ (अव पांचमा त्रिक) ॥ ※॥ तीन अवस्था विचारणी॥ पिंमस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन नेद ॥ जन्मावस्था ॥ १॥ राज्यावस्था ॥ २॥ श्रमणावस्था ॥३॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था॥ निरंजनाकार (सो) सिध्दावस्था। तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै॥ ※॥ (अवछठात्रिक)

तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्द्ध १ ॥ अध २ ॥ तिर छी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिछाडी । निजर नही करै ॥※॥ (अव सातमा त्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जकैं । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥※॥ (अव आठमा त्रिक) ॥ ※ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंवन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंवन एक जिन प्रतिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ ※ ॥ (अव नवमात्रिक) ॥ ※ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगु ली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका जोमा तिस आकार हाथ रखना । (सो) मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादि करै (अव दशमात्रिक) ॥ ※ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ जावंति केवि साहू (इत्यादि) तिविहेण तिदंम विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय बीयरायसें (लेकें) आभवम खंमा तक। प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥※॥ (ऐसें दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥※॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं) ॥ ※ ॥ सचित्त द्रव्य कुशमादिक अपनेंपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह, मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पाउका, अचित्त वस्तू छोमना । आभूषण प्रमुख पहस्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३॥ एक पट्ट उत्तरासंग करना ४॥ जिन बिंब देखतेही (नमो भुवण वंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ※ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ※ ॥ (अव तीसरा द्वार दो दिशीका) पुरष दहणी दिशा वैठा । भगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, वांइ दिशा बैठके भगवंत कुं वांदे ॥ ※ ॥ (अव चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥ ※ ॥ अभिग्रह देव वांदणांमें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर वैठके देव वांदे १॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर वैठके

देव वांदै ३॥ (अव पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥※॥ (सो) जघन्य १॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेद है (तिहां) णमो अरिहंताणं (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्य वंदन १) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंमक । नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक स्तुति कहै (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच दंमक सहित । थूई गाथा (४)कहै (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहियै॥ (तथा) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए देव वांदै । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहियै ॥ ※ ॥ (अव छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करै । दो जानु । दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥※॥ (अव सातमा द्वार)॥※॥ जघन्यें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रभू की स्तवना करै ॥※॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ (अव स्तवना करनेके प्रशंगसें प्रथम नव पदके (९) चैत्यवंदन (९) स्तवन (९) थुई लिखते हैं ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ श्री इष्टदेवायनमः ॥※॥ जय २ श्री अरिहंत भानु । भवि कमल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समवस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुद्घात सुभ केवले । क्षय कृत मल राशी । शुक्ल चरम शुचि पादसें । भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरङ्ग रिपु गण हणीए । क्षय अप्पा अरिहंत । तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति अरिहंत पद चैत्यवंदनं ॥ जिंकिंचि० । नमोर्त्थुण० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ प्रथम पद स्तवन लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सुरिंद पू० एदेशी) ॥ श्रीतेरमगुण वसिकै कंत । कर्मकुं भंजे श्री अरिहंत । (मन मानले) । अष्ट समय में समय तीन । सर्व आहार थी होवें हीन ॥ (म०) वादर काये मन वच भोग । तनु २ सें फुन दढ तनु योग ॥ (म०) सुखम कायतें मन

वच्च शेक । निज वीर्यें ताकुं कर फोक (मन०) ॥ ४ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार । वेइंद्रीनें वाक्य प्रचार (म०) । आदि समय रह्यो पणक सुजीव । सुखम लह्यो तिण जोग अतीव (म०) एषां योग थी समयें एक । हीना संख गुणो कर छेक (मनमा०) । समया संखें जोग निरोध । कत्वा जो लह्यो जोगी सोध (मन०) वेद समें ना हारता पाय । कुशल कहै ते श्री जिनराय । (म०) तेरमे गुणमें गुण समें देव । आपोसा जगकुं नितमेव (म०) ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनम् ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ (अथ थूई) ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी । केवल ग्यान की ज्योति प्रकाशक अनंतगुणें करि पूरो जी । तीजै भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरोजी । बारै गुणांकरी एहवा अरिहंत आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सिद्धपद चैत्यबंदन ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ श्री शैलेसी पूर्वप्रांत । तनु हिंनत भागी । पुव्व पत्तयपसंगसें । ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगुण निरागी । चेतन भूपें आतमरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाण थीए । रूपातीत स्वभाव । सिद्ध भये तसु हीर धर्म । वंदे धरि सुभ भाव॥३॥ इति सिद्धपद चैत्यवंदनं ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० २ ॥※॥

॥ ※ ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखै वीजली ॥ (ए चाल) ॥※॥ अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें (म्हारालाल ही०) । नतकष्टो करै वास सयोगी धाममे (म्हा० स०) ॥ अजोगी के अंत तजे भव भव्यता (म्हारा० त०) । शैलेसीलहै कर्म दलै गुणश्रेणिता (म्हा० द०) ॥१॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें । म्हां० र०) तेरस प्रकृतिनो अन्त करीनें अन्तमें (म्हा० क०) गमन करै नगरऊसें । अक्रिय होयनें (म्हा० अ०)पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधनें (म्हा० स्व०) इषु गुण नवपरमाण जोजन लक्ष कही (म्हा० जो०) वर्त्तुल बिसदा भारा निरालंबन सही (म्हा० नि०) मध्ये जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें (म्हा० घ०) मक्षी पक्षथी हीन भणी सिद्धांतमें (म्हा० भ०) ॥२॥ तनुपब्भारा नाम शिलासें जोयनें (म्हा० शि०)

लघु अंगुल वत्तीस प्रमाणऽवगाहना (म्हा०प्र०) ऋद्धिधनु शतपंच गुणासें हीनता (म्हा०) मिलिया एकमें नंत अवाधा नालही (म्हा० अ०) अष्ट प्राणवरि रम्य सिरीही जो सही (म्हा०सि०) वीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें (म्हा०धरो०) कुशलनयें जगजीव मिलोगा तेहमें (म्हारा० मि०) ॥ ५ ॥ ※॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (अथ थुई) ॥ ※ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो सिववाशी जी । अव्या वाध सादि अनादि चिदानंद चिदराशी जी । पर मातम पद पूरण विलाशी अंघ घन दाव विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी न्नाशी जी ॥※॥ ॥ ※ ॥

इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन पदकुल मुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रवल सवल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ कुल्लादिक जिनराज गीत । नयतन विस्तारी । भव कूपै पापें पमत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा चारी जीवके । आचारिज पदसार । तिनकुं वंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्य पद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ अथ आचार्यपद स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (नणदल वींदलीन्हे एचाल) ॥ ※ ॥ खंती खम्गधी जेणें । हण्यो क्रोध सुभट सम देणेंहो । (गणपति गुणपेखी) । मान महागि रि वयरे । अति सोभन मद्दव वयरें (होग०) दंभरूप विश वेली । वर अज्जव कीलें ठेलीहो (ग०) । मुत्ती वेलयी भरियो । लोह सागर मुत्ते तरियोहो (ग०) ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिण दम शम जंत्रे की नो हो (ग०) मोह महामल्ल ताड्यो । पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो (ग०) ॥ ३ ॥ दोश गयंद वस कीनो । धरि उपशम अंकुस लीनो हो (ग०) अं तरंग रिपुजेय्या । सुर वर पिण जिण णिवेयाहो (ग०) रस क्षति गुणधी लीनो । सुत्र अरथें आगम पीनोहो (ग०) आचारिज पद एहवो । धरी जीव कुशलता सेवोहो (ग०) ॥ ५ ॥ इति आचार्य स्त० ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ थुई) ॥ पंचाचारकुं पालै उजवालें दोष रहित गुणधा

री जी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी जी । प्रबल स बल घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी । क्षमा सहत जे संयम पालै आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुति ॥ ३॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्थपद नमस्कारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता घन भंजन। जिनवर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जस्थय सुय मंजण २ । महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहि निश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चैत्य० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शांवलिया अलगा रहोनें । (एचाल) झयनें २ दूरी झयनें । चेतन भाषै सठनें (दूरीहोयनें) तुं मुझपास क्युं आवै (दू०) तुझनें कुण बतलावे । (दू० आंकणी) तो संगै निज पचेंद्रीनो । रचना चरम भुलाणो । नाणावरणी खय उपशमसें । भावेंद्री मंमाणो (दू०) ॥ १ ॥ द्रव्यै ते परजातेंकीना । जाति नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक किण कमैं उपदेश (दू०) इत्यादिक बहु मुझकुं शंका । तेरे संगे लागी । नीलवर्ण की शमतासेती। मैंभयो तोसुं रागी (दू०) ॥ ३ ॥ उप कहींयें हणीयो भवियानो । अधियां लाभत आय । आधीनां मन पीमाना में । मायो येन विलाय (दू०) ॥ ४ ॥ आधिक्यै स्मरीयै वर आगम । सुत्र सें ते उवझाय । ततूसेवातें हणि सठताकुं । चेतन कुशलता पाय (दू०) ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ थुई) ॥ अंग इग्यारै चउदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी । सूत्र अरथधर पाठक कहियै जोग समाधि विचारी जी । तप गुण सूरा आगमपूरा नय निक्षेपै तारी जी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ ※ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी । धर्म शुक्लसु

चि चक्रसें । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततें । नये अंतरजामी । मांनस इंदिय दमनभूत । शम दम अभिरामी ॥२॥ चारुति घन गुण गण भयो ए । पंचम पद मुनिराज । तत्पद पंकज नमतहै । हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनं ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ साधु पद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ मालन मालन मति कहो (एचाल) निकशाया जगजन कहै। धारे चउगति वसनसें रोसहो (मुनिंदजी) राग हीन भय तुं करै । (साहिबा) शिव रमणीसें हेतहो (मुनिंदजी) ॥ १ ॥ सर्वप्रमादतजीरहै (सा० अपूरव कोमहो (मु०) शत सोगम आगम करै (सा०) पामें कर्म निकंद हो (मु०) प्रचला निद्रामें रही (सा०) । बारम गुणनो वास हो (मु०) ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करै (सा०) जो गुण संख्या तीत हो (मु०) तो पिण तिण जगमें लही (सा०) त्रिक वन गुणनी ख्यात हो (मु०) ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिव पथें (सा०) साधन परवर जीत्र हो (मु०) । साधु भवइ तसु धर्ममें (सा०) कुशल भवतु जगती बहो (मु०) ॥ ५ ॥ इति साधु पद स्तवनम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ सुमति गुपतिकर संजम पालै दोप वयालीश टालैजी । पटकाया गोकल रुख वालै नवविध ब्रह्मव्रत पालैजी । पंच महाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवालै जी ॥ क्षपक श्रेणिकरि कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ इति साधू पदस्तुति ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ दर्शनपद नमस्कार लि० ॥ ॥

॥ ॥ भय पुग्गल परियट । अर्द्ध परमित संसार । गंठिभेद तव करिलहे । सव गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख । उवशम पण वार । विनाजेण चारित्र नाण । नही भवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनीए । रुचि लक्षन अभिराम । दरशनकुं गणि हीर धर्म । अहनिश करत प्रणांम ॥ ३ ॥ इति दर्शनपद नमस्कारः ॥ ॥

॥ ॥ अथ दर्शनपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ रामचंद्रके बाग आंबो मोह रह्योरी (ए चाल) ॥ ॥

देव श्रीजिनराज । गुरुते साधु भणयोरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्त । लक्षण बोधि तणोरी ॥ १ ॥ बोधलाभके काज । सप्तम नरक भलोरी । तेण बिना सुर लोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त । बोधही गंहलहेरी। उपशम ख्यायक वेद । ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ भव सायर है अपार । पुण अस्ताघ कह्योरी। जसु लाभै ते होय । गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यदभावें अप्रमाण । नाण चारित्त भलारी । बोध धर्ममें जीव । लाभै कुशल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनं ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ थुई ॥ जिनपन्नत्त तत्व सूधासरधै समकित गुण उज वालै जी । भेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्या ख्यानें समतुल्य भाष्यो गणधर अरिहंत सूराजी । ए दरशण पद नित नित बंदो भवसागरको तीरा जी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ग्यानपद नमस्कार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ क्षिप्रादिक रस राम बन्हि । मित आदम नाण । भाव मिला पसें जिन जनित । सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव उहि दोय । मण लोचन नांण । लोकालोक सुरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥ नानावरणी नासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें हीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ग्यानपद स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ ह्मां रे अति उछरंगे (ए चाल) जिनवर भाषित आगम भणि या । तत्व यथास्थिति गमिया जी (म्हारे जगजनतारू) ते उत्तम वर नाण कहायै । भवि जन अहनिशि चाहै जी (म्हा०) ॥ १ ॥ भ क्ष्या भक्ष कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजी (म्हा०) देव कुदेव अहित हित धारी । जाणें जेण विचारी जी (म्हा०) ॥ २ ॥ श्रुति मति दोयछे इं द्री सारू । तेण परोक्ष विचारूजी । (म्हा०) उही मण केवल है वारू । जीव प्रतक्ष सुधारू जी (म्हा) ॥ ३ ॥ अयवि जस्स बलें जगजाणें । लोकादिक अनुमानें जी । (म्हा०) त्रिभुवन पूजै जासु पसायें । धारी शुभ अध्यवसायें जी (म्हा०) ॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम क्षयथी । चे तन नाणकुं विलशैजी (म्हा०) । सप्तम पदमें भविजन हरषै । निशदिन

कुशलता निरखै जी (म्हा०)। इति नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ॥ ॥(अथ थुई)॥ मतिश्रुत इंद्री जन्नित कहियै लहीये गुण गंन्नीरो जी। आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारोजी। अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी। ए पांच ग्यानकुं वंदो पूजो न्नविजननें सुखकारो जी ॥ ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥ ॥ ॥॥

॥ ॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥ ॥

॥ ॥ जस्स पसायें साक्ष पाय। जुग २ समितेंद। नमन करै सुन्न न्नावलाय। फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय। करि कर्म निकंद। सुमति पंच तीनगुप्तियुत। दै सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इपु कृति मान कषाय थीए। रहित लेस सुचिवंत। जीव चरत्तकुं हीरधर्म। नमन करत नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चारित्र पद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी। चिदान्नास निस्संग (सुग्यानी सां न्नलो) मूर्त्तिहीन चेतन करै। रूपी पुद्गल रंग ॥ (सुग्यानी सां०) ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा ॥ कार्य कारण न्नाव (सु०) कृत्वा जोग सुधामता। लब्धा संवरस्वन्नाव (सु०) ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें। वृद्धि लहे जुगमान (सु०) मध्ये वसु समयें लहै। अंतें वौ तेजाण (सु०) ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा। कारण रम्य वलेण (सु०) प्राप्ताघल्प प्रकारता। सत प्रन्नृतका तेन (सु०) ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी न्नलो। चेतन संयमधाम (सु०) कर घन मिल पद धर्ममें। कुशल न्नवतु अन्निराम (सु०)॥ ५ ॥ इति चारित्रपद० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ करम अपचय दूर खपावैं आतम ध्यान लगावैं जी। वारै न्नावना सूधी न्नवि सागरपार उतारै जी। षटखंम राजकुं दूर तजीनें चक्री संजमधारै जी। एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारै जी ॥ इति चारित्र पद स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्री ऋषन्नादिक तीर्थनाथ। तन्नव शिव जाण। विहिअंतै रवि

वाह्य । मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु कर मिल आमोसही । आदि क लब्धि निदान । भेदै समतायुत खिणें । दग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नव मो श्रीतपपद भवोए । इच्छा रोध सरूप । वंदनसें नित हीरधर्म । दूरभवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥ ए ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ वारश भेद भएया जिनराजैं । वाह्य मध्यतणा जगकाजैरे । (शिवपद श्रेणि) । तिण भव सिद्धितणा वरग्याता । जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ १ ॥ (शि०) शमता सहिते जिनते भारी । भली कर्म चमु पिणहारी रे (शि०) जीव कनकसें कर्म कचोरा । दहै तप पावनका जोरारे (शि०) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुशमहै ऋद्धि । देव नरनी फलते सिद्धी रे (शि०) पाप सकलहै तमनी राशी । तप भानूसें जाये नाशी रे (शि०) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहियै वारू । लब्धां सगली जगहित कारू रे (शि०) अति डुक्कर फुण साध्यता हीना । काम तातें वारू कीनारे । (शि०) ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै । तपपदही चेतन वहियैरे (शि०) ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ इच्छारोधन तपते भाप्यो आगम तेहनो साखी जी । द्रव्य भावसें द्वादश दाखी जोगसमाधि राखी जी । चेतन निजगुण परणित पेखी तेहीज तप गुण दाखी जी । लवधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख भाषी जी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥ ए ॥ ॥

॥ ॥ अथ २४ जिन चैत्यवंदन लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्री म बृषभ सर्वज्ञ । वृषभांक सुवर्णरुक् । जय देवाधिदेवार्द । भाभि राजेन्द्र नन्दन ॥ १ ॥ युगस्पादौ त्वयायेन । ज्ञान त्रय युतेन यत् । जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषभ स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ॥ अर्हता जितनाथेन । गजलांछन शालिना । जित शत्रू महीपाल । पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षि रत्नेन । भगवंस्त्वयका जिनः । जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्य जितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ॥ जितारि नृपतेर्वंश्यात् । शंभवः शंभवाभिधः । शेनायानंदनो हे

म । वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्यप्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयुतः । मुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥६॥ इति शंभव स्तुति.३

॥ ※ ॥ सिद्धार्थानंदनं सार्वं । वीतरागं जगत्पतिं । श्री संवर समुत्पन्नं प्लवगांकं हिरण्यभं ॥ ७ ॥ अभिनन्दन नामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौति परयाभक्त्या । सना लोकेभिनंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यभिनंदन स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ मेघाभिध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच लक्षण भृद्धेम । मरीचि मंङ्गलागजः ॥ ९ ॥ सत्यं सुमति नाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । भविनां पुण्यकर्तृणां । स्वर्ग सौख्यावलिप्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥५॥

॥※॥ सुशीमा पुत्र सत्कोक । नदद्युति धराधर । धरा भिध नृपोद्भूत । पद्म लक्षण धारक ॥११॥ भवाब्धौ भवसंकीर्णे । दुस्तरे पततां नृणां । त्राणाय सततं देव । पद्मप्रभ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रभ स्तुतिः ॥ ६ ॥

॥ ※ ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् । प्रतिष्ट नृप संजात । श्वामीकर करोजिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः । कर्मणां छेदने परः । यः सार्वः परमब्रह्मा । स्तंनौमि सदा विभूं ॥१४॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः७

॥※॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत । चंद्रलक्षण संयुत । स्तमापति छविज्ञान । तमो व्यूह विनासनः ॥१५॥ संसार जलधेर्नाथ । महसेन नृपोभ्दवः । लक्ष्मणा पुत्र मांस्वामि । भव केवल बोधभृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रभ स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ ※ ॥ (अत्राद्यछत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तु तो वो ददत्वाशु । सुरासुर नरेश्वरैः । सुविधिर्वांछित शर्म्म । सुग्रीव नृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा । माननीया दिवौ कसां । मान मुक्तो वदातोयो । मायौ मकरलांछनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ (चामर बंधाविमौ) ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश । नन्दा दृढरथात्मजा । भास्वत्सुवर्ण वद्देह । श्रीवत्सांक्कांक धारकः ॥ १९ ॥ त्वदीय चरणांभोजः । सेवकानां वपुर्भृतां । प्राक् कृतं वृजनव्यूहं । उष्टं शंभोय्यहे विभो ॥२०॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विष्णु वंशार्क वद्देवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यभः । श्रेयो वृद्धि करो जस्रं । खड्गलांछिन भृज्जिनः ॥२१॥ हित्वा कर्म रिपून् सार्व । श्रेयांस श्रेयसैः सह । परज्ञान मयेनत्वं । मदानन्दपदं परं । इति श्रेयांस स्तुतिः ॥११॥

॥※॥ वरी वर्त्ति तरामीहा । भवतां भवतां यदि । झटिति छेदितुं चित्ते । भोभव्याः प्राप्तु मद्धरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्व मेनंहि । वासुपुज्यं जयासुतं । वसुपूज्य कुलोत्तंसं । महिषांकंच रक्तभं ॥२४॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः१२

॥※॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र । कृतवर्म समुद्भव । शूकरांक धर श्यामा । पुत्रकल्याण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवद्विमल ज्ञान । त्वदीय स्मरणं विना । कुर्वन्नप्येतिनो ब्रह्म । प्रक्रियां नातिविस्तरां ॥२६॥ इति विमलस्तुतिः ॥१३॥

॥※॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः। देवस्य श्येनचिन्हस्य । वर्ण्यानन्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं । गुणानां लेभिरे नहि । अनन्तस्य गुणान्तस्य । क्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुति ॥१४॥

॥※॥ सुव्रतापुत्र वज्रांक । भानुवंशार्कसन्निभ । कनकप्रभ सर्वज्ञ । धर्मनाथाभिधेश्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । भूतले यास्यशोकतां । अनुत्तरफलाः संति । सतां संगत योपिहि ॥३०॥ इति धर्म्मनाथ स्तुतिः ॥१५॥

॥※॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णांगं । कलायामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमच्छांति नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा । प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुधा विबुधप्रियां ॥ ३१ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः

॥※॥ श्रीयुतायाः श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्यभ । सूरि भूपति संजात । छागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं पापसंदोहं । भवांतर कृतं घनं ॥३४॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ १७ ॥ ※ ॥

॥※॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्तांक संयुतं । अंभोज वन्निरालेपं । देवीपुत्रं सुवर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्व्वे । धुर्य्यप्रभुतया जिनं । चरीकर्मि नमस्तस्मा । अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥

॥※॥ कुंभ प्रभावती पुत्रौ । नीलवर्णौ घटांकभृत् । जगन्मित्र इव ध्वान्त । नाशना द्विदितः सदा ॥ ३७ ॥ छत्र त्रय युतोभाति । देवयो विष्टपत्रये । तस्य श्रीमल्लिनाथस्य । स्मरणेन मुदा सखे ॥३८॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः

॥※॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म्म लक्षण भूधर्म्म दायक श्यामलच्छवे ॥ ३९॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मारि मंमल । देहि त्वं मेव्ययीभावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥४०॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥२०॥

॥※॥ श्रीमद्विजय भूपाल । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । वप्रासुत नमिना

थ । नीलोत्पल सदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंच जनोदेवः । निन्दाच कुरुतेभ्व यं । सएति परमज्ञानं । कोपि नहत्र संशयः ॥४२॥ इति नमिनाथ स्तुतिः।

॥ ※ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंश हरौ शांनौ । शंखांकें कमल प्रभे ॥ ४३ ॥ स्यक्त राजी मती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे । सिद्धि प्रमदयामाला । प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः२२

॥ ※ ॥ अश्वशेनाख्य नृपाल । सुतेन परमेष्टिना । वामेयेन दितायेन । कमठ स्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं सदा । पन्नासन चिन्हाय । नीलवर्णाय संभवे ॥४६॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तु०

॥ ※ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थ वंशार्क । त्रिशलेय जगन्मणे । महा नाद ध्वजा हंत । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ कृद्वीर । मोहेभहनने मृगात् । स्वद्भक्ति दत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिनः ॥४८॥ इति स्तुः॥२४

॥ ※ ॥ इति श्रीक्षमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम्॥

॥ ※ ॥ अथ त्रुटक्र नमस्कार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यत्र श्रीभरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्क्रमात् । तीर्थेशः किल युग्मवर्णवसुदिक् संख्यान संख्यश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित हृदा दश्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं॥१॥ इत्यष्टापद स्तुतिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ लसद्वि पंचाशदधीश्वरालयै । विराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये । नन्दीश्वरे द्वीपवरे जिनेश्वरान् । वंदे प्रमोदाद्भवभीति शांतये ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ इति नंदीश्वर स्तुतिः ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त्त मेघो । दुरिततिमिर भानुः कल्प वृक्षोपमानुः । भवजल निधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः । स भवतु सततंवः श्रेयसे पार्श्व देवः ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तुतिः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ दर्शनाद्दुरित ध्वंसी । वंदना वांछित प्रदः । पूजना त्पूरकः श्रीणां । जिनसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुवर्ण वर्ण गजराजगामिनं । प्रलंब बाहु सुविशाल लोचनं । नरा मरेंद्रै स्तुतपादपंकजं । नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ ※ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ नमस्कार समोमंत्रः । शत्रुं जय समोगिरिः । वीत राग समो देवो । न नूतो न नविष्यति ॥ १ ॥ दिठे तुह मुहकमले । तिन्निविणठाइ निरवसेसाइं । दारिद्दं दोहग्गं । जम्मंतर संचियं पावं ॥ १ ॥ पाताले यानि विंबानि । यानि विंबानि नूतले । स्वर्गेपि यानि विंबानि । तानि वंदे निरन्तरं ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रशन्नं । वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः । कर युग मपि यत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तदसि जगति देवो वीतराग स्त्वमेव ॥ १॥ ※॥ इति सर्व जिन स्तुतिः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ हत्था जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकण धम्मे वाहिरा । परघर कम्मकरंत ॥ १ ॥ नव वीजांकुर जनना । रागाद्याःक्षय मुपागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नमस्तस्मै ॥१॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ सदाके देववंदनमें (तथा) दशमें दिन । ऊली पारणकी विधिमें कहणेंका (चै०) (स्त०) थुई लि० ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ नवपद चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदढ पीढिपइठ्ठिउ । सिद्धि सूरि उवझाय साहु चिहुंसाहगरिठ्ठिउ । दंसण नाण चरित्त तवहिं पमसाहें सुन्दरू । तत्तक्खर सर वग्ग लद्धि गुरुपय दल म्बरू । दिशिवाल जक्ख जक्खणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियउ । सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अह्म मम वंछियदियउ ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः नवपद चैत्यवंदन लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री अरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अनन्तशांत । आतम गुण नूप ॥१॥ आचारज उवझाय साधु । शमता रस धाम । जिननाषित सिद्धांतशुद्ध । अनुनव अभिराम ॥२॥ बोधवीज गुण संपदाए । नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परनव आनन्द कंद । जगमांहि प्रसिद्धौ । चिंतामणि सम जास जोग । बहु पुण्यै लद्धौ ॥ ४ ॥ तिहु अण सार अपार एह महिमा मनधारो । परिहर परजंजाल जाल । नित एह संनारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि ।

प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नवपद वृद्धस्तवन लि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुरमणी समसकृ मंत्रमां । नवपद अभिरामीरे लोय । (अहो नव०) करुणा सागर गुणनिधी । जग अंतरजामीरे लो०। (अहो जग०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन जनपूजित सदा । लोकालोक प्रकासीरे । लो० (अहो लोका०) । एहवा श्री अरिहंत जी । नमुं चित्त उल्लासीरे लो० । (अ० न०) २ । अष्ट करम दलक्षय करी । थया सिद्ध सरूपीरे लो०। (अ० थ०) सिद्ध नमो भवि भावथी । जे अगम अरूपीरे लो० (अ०जे०) ॥ ३ ॥ गुण छतीसे सोभता । सुंदर सुखकारीरे लो०। (अ० सुं०) आचारज तीजे पदै । वंदु अविकारीरे लो० । (अहोवं०) ॥ ४ ॥ आगम धारी उपशमी । तप दुविध आराधीरे लो०। (अ० त०) चोथै पद पाठक नमो । संवेग समाधीरे लो०। (अ०सं०) ॥ ५ ॥ पंचाचार पालणपरा पंचाश्रव त्यागीरे लो०। (अहोपं०) गुण रागी मुनि पांचमें । प्रणमुं वड़ भागीरे लो० । (अ० प्र०) ॥ ६ ॥ निज परगुणनें उलखै ॥ श्रुत श्रद्धा आवै रे लो०। (अ० श्रु०) छठै गुण दरशण नमो । आतम शुभ भावै रे । (लो० अ० आ०) ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें । जे पंच प्रकारै रे लो० (अ० जे०) ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो । परभाव निवारीरे । (लो० अ० प०) । खंत्यादिक दस धर्मनो । जेह छै अधिकारीरे लो०। (अ० जे०) ॥ ९ ॥ नवमें वलि तपपद नमो । वाह्याभ्यंतर भेदैरे लो०। अ० वा०) वांध्या काल अनंतना । जे कर्म उछेदै रे लो०। (अ० जे०) ॥ १० ॥ ए नवपद वहुमानथी । ध्यावैं शुभ भावै रे लो०। (अ०ध्या०) नृप श्री पालतणी परै । मन वंछित पावैरे लो०। (अ० म०) ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक माशमां । नव आंबिल करियैरे लो०। (अ० न०) नवओली विधियुत करी । शिव कमला वरियैरे लो० । (अ० शि०) ॥ १२ ॥ सिद्ध चकनी वहुपरें । वर महिमा कीजैरे लो०। (अ० व०) श्री जिनलाभ कहै सदा । अनुपम जश लीजैरे लो०। (अ० अ०) ॥ १३ ॥ इति० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनःनवपद स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग मारु) ॥ तीरथनायक जिनवरू जी । अतिसय जास

अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणी जी । परमानंद सरूप । (भविक मन धारज्योरे) ॥१॥ धारज्यो नवपदध्यान (भ०) श्री आचारज गणधरूरे । गुण छत्तीश निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी । श्रुतदायक सुविलाश (भ०) ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोभता जी । साधु शमतावंत । सम्यग् दर्शन सुंदरू जी । ज्ञान प्रकाश अनन्त । (भ०) ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे । तप उत्तम विधि होय । ए नवपदना ध्यान थी रे। निरुपाधिक सुख होय । (भ०) ॥ ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनोरे । मूलए नवपद जाण । अविचल अनुभव कारणें जी । नित प्रति नमत कल्याण (भ०) ॥ ५ ॥ ॥ इति नवपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ (राग प्रभाती) नवपद ध्यान धरोरे (भविका न०) । मन वच काया कर एकंते । विकथा दूर हरोरे (न०) ॥ १ ॥ मंत्रजम्री अरुतंत्र घणेरा । इन सबकुं बिसरोरे । अरिहंतादिक नवपद जपनें । पुण्य भंभार भरोरे ॥ २ ॥ (न०) अम्रसिध नव निध मंगल माला । संपति सहज वरोरे । लालचंद याकी बलिहारी। शिवतरु बीज खरोरे ॥ ३ ॥ (नव०) ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नवपद थुई लि० ॥ ॥

॥ ॥ नित प्रति ऊं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव । हिवकारज सिद्धि नो लाधो एह उपाय । तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय । इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उवझाय । मुनिवर त्रिक करनें दंशण नाण सुहाय । डुगविधि चारित्तें वुध विध तप मन भाय । ये नवपद ध्यावतां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या परवादै जानो ए अधिकार । श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें भाष्यो एह विचार । भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंभार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार । सेवकनें आपै सुख संपति परिवार । हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन भाय । जिनचंद सूरी सर खरतर पति सुपसाय ॥ ॥ इति नवपद स्तुतिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥☒॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपदउली करण विधि लि०॥☒॥

॥☒॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ सें उली स
रू करै। (कदास) तिथि घटी हुवे तो (६) से, वढी होय तो, आठिम
सें सरू करै। (पिण) आंविल (९) पुनिमताई करै। (तिहां) प्रथम भू
मि शुद्ध करके। मांमणादिक सें चित्रत करै। पीछे वाजोट ऊपरि सिद्ध
चक्र थापे त्रिकाल पूजा करैं। (सोलिखते हैं) प्रभात समय राई पडिक
मणो करिके। पीछै वस्त्र पडिलेहै। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना हे (तहां
आयके पांच शक्रस्तवे देव वांदै। पीछे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा
आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास क्षेप पूजा करै। पीछे केसर चंदनसें पू
जा करै। पीछे मध्यान्ह समय, पांचशक्र स्तवे देव वांदै। पीछे गुरु पासें
आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठिमि खमासके आंविलनो पच्चक्खाण करै।
प्रथम अरिहंत पदका वरण सपेद है। (इससें) आंविल में चावल (अनें)
गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। ऐसो आंविल पचखै। (पीछै) अरिहंत
पदके बारे गुण हैं सो चिंतविकें बारै नमस्कार करै। सो लिखते हैं (प्रथम
सर्व ठिकाणें) इच्छामिखमासमणो। वं० इत्यादि कहिके नमस्कार करै॥

॥☒॥ अरिहंतके १२ गुणः ॥☒॥

१॥ अशोक वृक्ष प्राति हार्य संयुताय श्री अरिहंताय नमः॥
२॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
३॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
४॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
५॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
६॥ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
७॥ डुंडुभिप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
८॥ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि०॥
९॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
१०॥ पूजातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
११॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि०॥
१२॥ अपाया पगमातिशय संयुताय श्रीअरि०॥

॥ ※ ॥ इत्यादि नमस्कार करके । अन्नत्थू ससियेणं । (कहिके) १२ वारे लोगस्सनो काउसग्ग करै । एकलोगस्स प्रगट कहै । पीछे स्वस्थान क जाकें । चैत्यवंदन करै । पचक्खाण पारिके । आंबिल करै । पहले जल पीवे (जव) चैत्यवंदन करिके पीवै । पीछे फेर चैत्यवंदन करिके तिविहार पचक्खाण करै । (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) । इस पदको २००० गुणनो करै । श्रीपालजीको चरित्र नवपद महिमा सुणें । पूण पहिर दिन रहणेसें (तीसरीवेर) पांच शक्रस्तवे देव वांदै । सामायिक लेके दिन छते पडिक्कमणो करै । आरतीके समय, दीप, धूप, कुशम, पूजा करै । (अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके । पीछे पडिक्कमणो करै । (सोनेंके समय) इरिया वही पडिक्कमके । चैत्यवंदन करिके । राई संथारा गाथागुणके सोवै । निद्रा न आवे (जहांतक) नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय दिवश विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अव इसीतरे दूशरे दिन प्रभाति करणी सब करिके, सिद्धपदका लाल वर्ण है । (इसीसें) गऊंके रोटीको(आंबिल करै (ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं) इसपदको गुणणो दो हजार करै । सिद्धपदके आठगुण है । सो (८) गुणांको गुरु नमस्कार करावै (सो लिखते हैं) ।

॥ ※ ॥ सिद्ध पदके (८) गुण ॥ ※ ॥

१ ॥ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ ॥ अनन्त दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ ॥ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ ॥ अनन्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ ॥ अक्षय स्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ ॥ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ ॥ अगुरुलघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ ॥ अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

॥ ※ ॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्थूससि० आठ लोगस्सको काउसग्ग करै । एक लोगस्स कहिके पारै । पीछे पूर्वोक्त करणी । अनुक्रमसें करै ॥ ※ ॥ इति द्वितीय दिवश विधिः ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ॥ अथ तृतीय दिवश विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करै। आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै। (ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं) इस पदको गुणनो दोहजार करै। आचार्य पदके (३६) गुण याद कर के, छत्तीस नमस्कार करै (सो लिखते है) ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ आचार्य पदके (३६) गुण ॥ ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
४ ॥ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ ॥ गांभीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ ॥ धैर्य गुण संयुताय श्रीआ० ॥
७ ॥ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ ॥ अपरिश्रावी गुण संयुताय श्रीआचा० ॥
९ ॥ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० ॥ शील गुण संयुताय श्री० ॥
११ ॥ अविग्रह गुण संयुताय श्री० ॥
१२ ॥ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ ॥ अचपल गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ ॥ क्षमा गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ ॥ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ ॥ मृदु गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ ॥ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ ॥ द्वादश विधि तपगुण संयुताय श्रीआ०॥
२० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ०॥
२१ ॥ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ ॥ शौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥

२३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ ॥ अनित्य न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
२६ ॥ अशरण न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
२७ ॥ संसार स्वरूप न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
२८ ॥ एकत्व स्वरूप न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
२९ ॥ अन्यत्व न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३० ॥ अशुचि न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३१ ॥ आश्रव न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३२ ॥ संवर न्नावना न्नाव काय श्रीआ० ॥
३३ ॥ निर्ज्जरा न्नावना न्नाव काय श्रीआ०
३४ ॥ लोक स्वरूप न्नावना न्नाव काय श्रीआ० ॥
३५ ॥ बोधडुर्लन्न न्नावना न्नाव काय श्रीआ० ॥
३६ ॥ धर्म्म डुर्लन्न न्नावना न्नाव काय श्रीआ० ॥

॥※॥ यह ढत्तीस नमस्कार करिके । अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादि) कहिके । ढत्तीस (३६) लोगस्सको काउसग्ग करै । एक लोगस्स ऊंचै स्वरसें कहिके पारै । यथोक्त करणी । अनुक्रमसें करै ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ चतुर्थ दिवश विधि लि० ॥※॥

॥※॥ (ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । हया मूंगाकी दाल प्रमुखका आंबिल करै । उपाध्याय पदके (२५) गुण यादकरि के । नमस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उपाध्यायके (२५) गुण ॥ ※ ॥

१ ॥ आचारांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ ॥ सुयगम्मांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
३ ॥ श्रीठाणांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउ० ॥
४ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
५ ॥ श्रीन्नगवती सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
६ ॥ श्रीज्ञाता सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

७ ॥ श्रीउपाशकदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
८ ॥ श्रीअन्तगमदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाई सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
१० ॥ श्रीप्रश्न व्याकरण सुत्र पठन गुण यु० ॥
११ ॥ श्रीविपाक सुत्र पठन गुण यु० ॥
१२ ॥ उत्पाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१४ ॥ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१५ ॥ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१६ ॥ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ता० ॥
१७ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१८ ॥ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१९ ॥ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२१ ॥ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२२ ॥ अविंध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२३ ॥ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२४ ॥ क्रिया विशाल पूर्व पठन गुण यु० ॥
२५ ॥ लोक विंदुसार पूर्व पठन गुण यु०॥

॥※॥ इस रीतसें पचवीश नमस्कार करै (खमासेके) अन्नत्थूस० (इत्यादि कहिके) पचवीश लोगस्सका काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारे। (पीछे) पुर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवश विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचम दिवश विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उँ ह्रीं णमोलोए सव्वसाहूणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। साधु पद कालै वर्ण है (इससें) उम्दका आंबिल करै। सर्व साधु पदके सत्तावीश गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ साधु पदके (२७) गुण ॥ ※ ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

२ ॥ मृषावाद विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
४ ॥ मैथुन विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ॥
७ ॥ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ ॥ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ ॥ तेऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० ॥ वाऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ ॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ ॥ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ ॥ एकेंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ ॥ वेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ ॥ तेइंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ ॥ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ ॥ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ ॥ लोभ निग्रह काय श्रीसा० ॥
१९ ॥ क्षमा गुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० ॥ शुभ भावना भाव काय श्रीसा० ॥
२१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ ॥ संयम योग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ ॥ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ ॥ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ ॥ काय गुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीशहसहण तत्पराय० ॥
२७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

॥ ※ ॥ इस रीतसें सातवीश नमस्कार करै। (खमा होके) अन्नत्थू स० (इत्यादि कहिके) सातवीश लोगस्सका काउस्सग्ग करै। एक लोग

रस कहके पारे। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करैं। (यह पंच परमेष्टि पदके सर्व गुण मिलाणेंसें (१०८) होय (इसीसें) जैनमें मालाके दाणे (१०८) होते है ॥ इति पंचम दिवश विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ षष्ट दिवश विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स) इस पदको (२) हज़ार गुणनो करै। दर्शन पद सपेद वर्ण (इससें) तंडूलका आंबिल करै। सम्यक्तके सतसठि गुण चिंतवके नमस्कार करैं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सम्यक्तके सतसठि भेद लि० ॥ ※ ॥

१ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
२ ॥ परमार्थ ज्ञातृसेवन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४ ॥ कुदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
५ ॥ शुश्रूषा रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
६ ॥ धर्म राग रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
७ ॥ वैयावृत्त रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
८ ॥ अर्ह विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
९ ॥ सिद्ध विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१० ॥ चैत्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
११ ॥ श्रुत विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१२ ॥ धर्म विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१४ ॥ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१६ ॥ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१७ ॥ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद्द०॥
१९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतनरूपस० ॥
२० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति चिंतनरूप सद्द० ॥

२१ ॥ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२३ ॥ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ॥
२४ ॥ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय० ॥
२५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ॥
२६ ॥ प्रवचन प्रन्नावकरूप स० ॥
२७ ॥ धर्मकथा प्रन्नावकरूप स० ॥
२८ ॥ वादी प्रन्नावकरूप स० ॥
२९ ॥ नैमित्तक प्रन्नावकरूप स० ॥
३० ॥ तपस्वी प्रन्नावकरूप सद० ॥
३१ ॥ प्रज्ञप्तयादि विद्या न्नृत्प्रन्नावकरूप स० ॥
३२ ॥ चूर्णं जनादि सिद्धप्रन्नावकरूप स० ॥
३३ ॥ कविप्रन्नावकरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३४ ॥ जिनशाशने कौशलता न्नूषनरूप स० ॥
३५ ॥ प्रन्नावना न्नूषणरूप स० ॥
३६ ॥ तीर्थसेवा न्नूषणरूप स० ॥
३७ ॥ थैर्यता न्नूषणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३८ ॥ जिनशाशने न्नक्ति न्नूषणरूप० ॥
३९ ॥ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ॥
४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ॥
४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीस० ॥
४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप श्रीस० ॥
४७ ॥ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप ॥
४८ ॥ परतीर्थकादि अशनादि दानवर्जनरूप श्रीस० ॥

४ए ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप श्रीस० ॥
५० ॥ राजाभियोगाकार युक्त श्रीस० ॥
५१ ॥ गणाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५२ ॥ बलाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५३ ॥ सुराभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५४ ॥ कांतार वृत्याकार युक्त श्रीस० ॥
५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ॥
५६ ॥ सम्यक्त चारत्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्री०॥
५७ ॥ चारत्र धर्म पुरस्य द्वार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
५८ ॥ चारत्र धर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतन० श्रीस० ॥
५ए ॥ चारत्र धर्मस्याधार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६० ॥ चारत्र धर्मस्य भाजन मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभ मिति चिं० श्रीस० ॥
६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ॥
६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥
६४ ॥ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान यु० श्री० ॥
६५ ॥ सचजीव कृत कर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान यु० ॥
६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ॥
६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

॥ ※ ॥ इस रीतसें सतसठि नमस्कार करै। (खमासमणेके) अन्नत्थ ससि एणं० (इत्यादि कहिके) (६७) लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्सको काव सग्ग करै । एक लोगस्स कहके पारै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सप्तम दिवश विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। ज्ञान पद उज्वल वर्ण है (इससें)। तंडुलका आंबिल करै । इकावन भेद ग्यान पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेद लि० ॥ ※ ॥

१ ॥ स्पर्शे नेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

२ ॥ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
३ ॥ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
४ ॥ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
६ ॥ रसनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ॥
७ ॥ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
८ ॥ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
९ ॥ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
१० ॥ मनऽर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
११ ॥ स्पर्शनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१२ ॥ रसनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१३ ॥ घ्राणेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१४ ॥ चक्षुरिंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१५ ॥ श्रोत्रेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१६ ॥ मनें करी ईहा मति ज्ञानाय नमः
१७ ॥ स्पर्शनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१८ ॥ रसनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१९ ॥ घ्राणेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२० ॥ चक्षुरिंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२१ ॥ श्रोत्रेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२२ ॥ मन करी अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२३ ॥ स्पर्शनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२४ ॥ रसनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२५ ॥ घ्राणेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२६ ॥ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ॥
२७ ॥ श्रोत्रेंद्री धारणा मति० ॥
२८ ॥ मनो धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२९ ॥ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥

३० ॥ अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥
३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ॥
३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ॥
३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३७ ॥ सपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३८ ॥ अपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३ए ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४१ ॥ अंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४५ ॥ वर्द्धमान अवधि० ॥
४६ ॥ हीयमान अवधि० ॥
४७ ॥ प्रतिपाती अवधि० ॥
४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि० ॥
४ए ॥ ऋजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५१ ॥ लोका लोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ॥

॥ ※ ॥ इस रीतसें (५१) नमस्कार करे। (खमा होके) अन्नत्थ ससिएणं० (इत्यादि कहै) (५१) लोगस्सका काउसग्ग करिके। प्रगट लोगस्स कहै। पीछे सर्व पूर्वोक्त करणी करें। इति सप्तम दिवश विधिः॥७

॥ ※ ॥ अथ अष्टम दिवश विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो

करै। चारित्र पदका उज्वल वर्ण है। (इसीसें) तंडुलका आंविलक रै। सित्तर भेद चारित्र पदके। चिंतवके नमस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चारित्र पदके (७०) भेद लि० ॥ ※ ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
२ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
४ ॥ मैथुन विरमण रूप चारित्राय० ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय० ॥
६ ॥ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
७ ॥ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
८ ॥ मृडुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
९ ॥ मुक्तधर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१० ॥ तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
११ ॥ संयमधर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१२ ॥ सत्य धर्म्म रूप चारि० ॥
१३ ॥ शौच धर्म्म रूप चारि० ॥
१४ ॥ अकिंचन धर्म्म रूप चारि० ॥
१५ ॥ वंभ धर्म्म रूप चारि० ॥
१६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः ॥
१७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ॥
१८ ॥ तेऊ रक्षा संयम चारि० ॥
१९ ॥ वाऊ रक्षा संयम चारि० ॥
२० ॥ वनस्पति रक्षा संयम चारि० ॥
२१ ॥ वेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२२ ॥ तेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२३ ॥ चौरिंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२४ ॥ पंचेन्द्री रक्षा संयम चारि० ॥
२५ ॥ अजीव रक्षा संयम चारि० ॥

२६ ॥ प्रेक्षा संयम चारि० ॥
२७ ॥ उपेक्षा संयम चारि० ॥
२८ ॥ अतिरक्त वस्त्र भक्तादि परठण त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ॥
३० ॥ मनः संयम चारि० ॥
३१ ॥ वाक्संयम चारि० ॥
३२ ॥ काया संयम चारि० ॥
३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ ॥ तपस्वी वैयावत्य रूप चारि० ॥
३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूप चारि० ॥
३७ ॥ गिलाण साधु वैयावृत्यरूप चा० ॥
३८ ॥ साधु वैयावृत्य रूप चारि० ॥
३९ ॥ श्रमणो पाशक वैयावृत्यरूप चा० ॥
४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ॥
४१ ॥ कुल वैयावृत्य रूप चारित्रे० ॥
४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ॥
४३ ॥ पशुपंमगादि रहित वशति वसण ब्रह्म गुप्त चारि० ॥
४४ ॥ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४५ ॥ स्त्री आशन वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४६ ॥ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म०
४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्री हाव भाव सुणन वर्जन ब्रह्म० ॥
४८ ॥ पूर्व स्त्री संभोग चिंतन वर्जन ब्रह्म० ॥
४९ ॥ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म० ॥
५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ॥
५१ ॥ अंग विभूषा वर्जन ब्रह्म० ॥
५२ ॥ अणशण तपोरूप चा० ॥
५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ॥

५४ ॥ वित्ति संखेव तपो रूप चा० ॥
५५ ॥ रस त्याग तपो रूप चा० ॥
५६ ॥ कायकिलेस तपो रूप चा० ॥
५७ ॥ संलेखणा तपो रूप चा० ॥
५८ ॥ प्रायच्छित्त तपो रूप चा० ॥
५९ ॥ विनय तपो रूप चा० ॥
६० ॥ वेयावच्च तपो रूप चा० ॥
६१ ॥ सिज्झाय तपो रूप चा० ॥
६२ ॥ ध्यानतपो रूप चा० ॥
६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ॥
६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ॥
६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ॥
६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ॥
६७ ॥ क्रोध निग्रह करण चा० ॥
६८ ॥ मान निग्रह करण चा० ॥
६९ ॥ माया निग्रह करण चा० ॥
७० ॥ लोभ निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ॥

॥ ※ ॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै। (खमा होके। अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहै (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करै। इति अष्टम दिवश विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवम दिवश विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। तप पदका उज्वल वर्ण है(इसीसें) तंडुलका आंबिल करै। पचास भेद तप पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तप पदके (५०) भेद लि० ॥ ※ ॥

१ ॥ यावत कथक तपसे नमः ॥
२ ॥ इत्वर तप भेद तपसे नमः ॥

३ ॥ वाह्य ऊणोदरी तपन्नेद तपसे नमः ॥
४ ॥ अन्यंतर ऊणोदरी तपन्नेद तपसे नमः ॥
५ ॥ द्रव्यतप वित्ती संखेप तपन्नेद तपसे नमः ॥
६ ॥ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपन्नेद तपसे नमः ॥
७ ॥ कालतप वित्ती संखेप तपन्नेद तपसे नमः ॥
८ ॥ नाव तप वित्ती संखेप तपन्नेद तपसे नमः ॥
९ ॥ काय किलेस तपन्नेद तपसे नमः ॥
१० ॥ रस त्याग तपसे नमः ॥
११ ॥ इंद्री कषाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ ॥ स्त्री पशु पंमकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीण ता० ॥
१३ ॥ आलोयण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१४ ॥ पमिक्कमण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१५ ॥ मिश्र प्रायछित तपसे नमः ॥
१६ ॥ विवेक प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१७ ॥ ऊपसर्ग प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१८ ॥ तप प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१९ ॥ न्नेद प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२० ॥ मूल प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२१ ॥ अणवस्थित प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२२ ॥ पारंचिय प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२३ ॥ त्याग विनय रूप तपसे नमः ॥
२४ ॥ दर्शन विनय रूप तपसे नमः ॥
२५ ॥ चारित्र विनय रूप तपसे नमः ॥
२६ ॥ गुर्वादिक मनविनय रूप तपसे नमः ॥
२७ ॥ वचन विनयरूप तपसे नमः ॥
२८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ॥
२९ ॥ ऊपचारक विनयरूप तपसे नमः ॥
३० ॥ आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ॥

३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः॥
३२ ॥ साधू वेयावच्च तपसे नमः॥
३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः॥
३४ ॥ लघु सिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः॥
३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः॥
३६ ॥ श्रमणो पाशक वेयावच्च तपसे नमः॥
३७ ॥ संघ वेयावच्च तपसे नमः॥
३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः॥
३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः॥
४० ॥ वायणा तपसे नमः॥
४१ ॥ प्रछनातपसे नमः॥
४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः॥
४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः॥
४४ ॥ धर्म्म कथा तपसे नमः॥
४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः॥
४६ ॥ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः॥
४७ ॥ धर्म्म ध्यान चिंतन तपसे नमः॥
४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः॥
४९ ॥ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः॥
५० ॥ अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः॥

॥※॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करै। (खडा होके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सका काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै॥ इति॥ ॥※॥

॥※॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरूकेपास जाणेकी विधि लिख्यते ॥※॥

॥※॥ प्रथम शुभ दिन, शुभ घडी देखके, अछा वस्त्र आभूषण पहरै। लिलाडके तिलक करै॥ दोव। सरसुं। मस्तकमें धारण करै। हाथके मो

ली वांधके । अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नैवेद्य । यथाशक्ति रोकनाणो लेके । नवकार गुणतोथको । गुरूके पास जावै । द्वादशावर्त्त वांदणा करके । ग्यान पूजा करै । पीछे वहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसें उन्नी तप ग्रहण करै (सो) तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगें लिखें गे ॥ इति तपस्याग्रहण करणेंकों पोशाल जाणेकी विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ संक्षेप ऊजमणा विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रकों मंम्न करै । सिद्धचक्रजी के चौं तरफ तीन गढ चूमीके आकार वनावे । पहिलै गढमांहे । अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै । पद १ के वर्ण गुण प्रमाणें । रत्नादिक चढावे । (और) पंचवर्णके फल । पंचवर्णके धान्य । नवना लेरका गोटा रंगके । जिसपदका जैसा वर्ण होइ (तैसे ही) रंग का गोला चढावे । पंच वर्णी (ए) धजा चढावें ॥ दूसरै वलयमें । सोले श्रीफल (अथवा) पूंगी फल चढावे । तीसरै वलयमें (४८) छुहारा चढावें ॥ नव निधानके ठिकाणें (ए) नव वमा फल चढावै॥ दश दिग्पाल । नवग्रहकों । पक्कान्न प्रमुख चढावे ॥ इत्यादिक विधिसंयक्त । सिद्धचक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । (और) जिनमंदिर मांहे । वाह्य मंडपै ५॥७ हाथ प्रमाणें मंम्ल रचना करै । विस्तारसें सव विधि गुरुके वचनसें करके । नवपदजीकी पूजा पढायके कलस ढालै । धवल मंगल गीतगान गावे । वाजित्र वजावे । (इसीतरे) महा महोछव । उदार चित्तसें करै । मंगल दीप आरती प्रमुख करै । दूसरै दिन विसर्ज्जन करै ॥ इति संखेप सिद्धचक्र मंम्ल विधिः ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ सिद्धचक्र संखेपउद्यापन विधिः ॥※॥

॥※॥ अव (१०) में दिन गुरूके पास आके उन्नी तपकों पारें । तव पारण की विधि आगें लिखें गे। (तथा) उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण । ए पूठा । ए वीटांगणा । ए पुस्तक । ए लेखण । ए ठवणी । ए झिल मिल । ए रुमाल । ए मोरा । ए सिंजासणा । ए थापना । ए चंद्रआ । ए पूठिआ । ए आरती । ए कलश । ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए

तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्ती रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवै । गुरु पद को गुरु पदमें देवे । ग्यानपदको ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक यथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करै ॥ इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधिः ॥ ॥

॥ ॥ अथ द्वादशमाश सकल पर्वाधिकार लि० ॥ ॥

॥ ॥ तत्र प्रथम चैत्रमाश चतुपर्वाधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ चेत्रमास में । चैत्र सुद ७ सें लेके, चैत्र सुद १५ पर्यंत ९ दिन अति उत्तम है । (सो) अति उत्तमता का कारण कहते है । वारै मासमें तीन अठाही महोछव आता हे । (जिसमें) । चैत्र आसोज का (२) अठाई महोछव सास्वता है । चैत्र सुद ८ (सें) चैत्र सुद (१५) आसोज सुद ८ (सें) आसोज सुद १५ (यह) दोनुं मासके (८) दिनोंमें । निश्चै सेती । च्यारुंनिकाय के देवता इंद्र सव भेला होके । आ ठमा नंदीसर द्वीप जावै (पुन्याहं २) कहते थके । अष्ट द्रव्यसें पूजन करै । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेकी भक्ति करै । पीछे नवमें दिन । अपणें२ जन्मकुं सफल मानते हुए । अपनें २ । देवलोक जावै । (इसी माफक) तीसरी अठाई आसाढ चौमासैकी (१४) पीछे । (४२) दिन जानेंसें, संवछरी पर्व साचवणें को (८) दिन अठाई महोछव करै । अब यह (ए) दिनोंमें । (४) पर्वसेवन करणे योग्य है ॥ ॥ प्रथम नवपद जीकी उली । इसी नव दिनुमें विधिसंयुक्त करे । (सो) विधिपूर्वे लिखी है । इससें इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंडल (और) नवपदजी की उलीका अधिकार (दशमा विद्या प्रवाद पूर्व्वसें) उद्धरण करके । भव्य जीवोंके अनंत सुखप्राप्तिके कारण । चवदै पूर्वधारक श्री भद्रबाहु स्वामी जीनें प्रशिद्ध किया । (इसीसें) सर्व भव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपको अपणी कुयुक्ति लगायके । जो पुरष खंडन करते है । उस का अनंत संसार । भगवानका बचनसें मालुम होता है (शास्त्रोंमे लिखा है) हे गोतम । अपणी कुटलताईसें (जो) सुत्रको एक हरफ उत्था पण करैगा (सो) अनंत संसार वढावेगा । (सुत्र किसकुं कहते है) स

त्तं गण हर रइयं । तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच । सुय केवलिणा रइयं । अ भिन्न दस पुव्विणा रइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचाहुवा (तेसेंही) प्रत्तेक बुद्धिका रचा हुआ । श्रुतकेवली चवदै पुर्वधारी का रचा हुवा । संपूर्ण दश पूर्वधारीका रचा हुआ । कों । भगवाननें सुत्रकी संज्ञा कही है इसीसें प्रमाण है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टापदउलीकरण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसी चैत्रमासमें सुद (८) सें लेके । पूर्णमासी तक । (केई भव्य जीव) अष्टापदजीकी उली करते है (जिसमें) पडिक्कमणा । देववंदन । देवपूजा । इत्यादिक सर्व विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै (इतना विशेष है) श्रीअष्टापद तीर्थाय नमः । (इसी पदको) २००० गुणनो (वा) वीस जाप करैं । अरिहंत पदके १२ गुणकों नमस्कार करै । आंबिल (वा) एकासणेंको पच्चक्खाण करैं । पीछे पूर्णमाशीके दिन अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके । विधिसंयुक्त (२४) भगवंतकी पूजा करै (एसें) चैत्र । आसोज । (२) उली करणेंसें । (४) वरसमें । एक उली करनेंसें (८) वरसमें संपूर्ण होय । पीछे भक्तिसंयुक्त ऊजमणो करैं (साहमी वछल करै (इत्यादि) विशेष विधि गुरुके मुखसें जानके करै) ॥ ※ ॥ इति द्वितीय अष्टापद उली पर्वाधिकारः कथितः॥

॥ ※ ॥ श्रीवीरजिन जन्म कल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अब तीसरो पर्व) चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्वामी को जन्म कल्याण भयो है (इसीसें) सर्व ठिकाणें । धर्मरागी पुरुष गुरूके मुखसें समझके जलयात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकको महोछव करैं । (एसेंही) ऋद्धीवंत श्रावककों, धर्मका उद्योत के खातर, सर्व भगवंतके कल्याणकके दिन (जो) कल्याणक होय । उसीका महोछव करना चाहियै । औसी शक्ति न होय (तो) शाशनके अधिपति । देवाधिदेव (श्रीमहावीर स्वामी के) च्यवन कल्याणकसें लेके । निर्वाण कल्याणक पर्यन्त । (जिस दिन) जो कल्याणक होय । उसीका महोछव पूजन करणा चहियें (इसीसें) धर्मका उद्योत होय । श्रीसंघमें परम आ

नंद होय ॥ ※ ॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः कथितः॥

॥ ※ ॥ चैत्री पूनम पर्वाधिकारः ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चैत्री पूनम पर्वका अधिकार (समाचारी शतकानुसारे) लिखते है ॥ ※ ॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजय पर्वतकों स्थापन करै (तिसपर) पट्टा रखके । श्रीपुंमरीक गणधर (वा) श्रीरुषभ देव स्वामी का विंबस्थापन करै । अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों वधावै। केशर चंदनसें पर्वतकों पूजे । सब श्रीसंघ इकठे होके । पर्वतके । चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै । पीछे पूजन सरू करै (यथा) ॥ ※ ॥ दश (१०) वीश (२०) तीश (३०) चत्ता (४०) पन्ना (५०) पुप्फदामेण लहई । चउत्थ छठ अठम दसम डुवालसम फलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम (१०) प्रकारसें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ※ ॥ एकाग्रचित्तसें । अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावै । पीछे श्रीसंघ खडा होके । (१०) नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल (तथा) १० फूलमाला चढा के । प्रतिमाके १० तिलक करै । (यथाशक्ति) सुपारी । नालेर (इत्यादि) सर्व चीज उत्कृष्टसें दश २ ॥ जघन्यें नालेर १ सुपारी १० और फलफूल यथासंभव चढावै । धूप खेवै । कपूरकी आरती करै । पीछे सिद्धगिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके । पांचशक्र स्तवे देव वांदै । १० खमा समण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदकों १० वेर नमस्कार करै । पीछे (श्रीसेत्रुंजय पुंमरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) । अन्नत्थू ससि० कहके । १० लोगस्सका कावसग्ग करै । (इहां केई आचार्य कहै) बहुत उच्छव होय । वेला कम रहै । (तव) एक लोगस्स को कावसग्ग करै । १० जैतीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै । पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ ※ ॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥※॥

॥ ※ ॥ (अब इसी तरे) वीश । तीश । चालीश । पच्चास यह च्यारोंपूजाके भेद जान लेना । (इतनाही विसेष है) दूशरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधिकरै ॥ तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें । ३० की विधि करै ॥ चोथी पूजामें १० ठिकाणें, सब विधि ४० की करै ॥ पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै ॥(तथा) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः।

इस पदको २००० गुणनो करै । उत्कृष्टसें पांचू पूजामें । जूदी २ धजा चढावै । जघन्यसें पांच पूजा किये । पीछे १ धजा चढावै । यह तप । गुरूके मुखसें लेके । जघन्यें १ वरस । (वेसी होसकै तो) ७ वरस । उत्कृष्टसें १२ वरस । विधि संयुक्त तपस्या करै । गुरूके मुखसें उपदेश सुणें । संपूर्ण तप ऊजवांपी छै । सिद्ध गिरीकी यात्रा करै । ग्यान पूजा करै । गुरु भक्ती करै । साहमी वच्छल करै । (यह) चैत्रीपूनमके दिन । श्री ऋषभ देव स्वामीके । प्रथम गणधर श्री पुंमरीकजी । पांचकोमि साधु साथ अक्षय सुखकों प्राप्तभये (इसीसें) प्रथम श्रीभरथ चक्रवर्त्ति । चैत्री पूनमको आराधन करके । श्री पुंमरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके । (यह) चैत्री पूनम पर्व्व प्रशिद्ध किया ॥ यह चैत्री पूनम आराधन करनें सें । इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्र्यादिक की वांछा पूरण होय । (और) आधि व्याधि सोग संताप सव दूर होय। परभवमें देवादिक ऋद्धिप्राप्त होय । क्षीण कर्मी होनेंसे अक्षय सुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र माश पर्वाधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) पयप्रणमीरे जिन वरना सुपसाउलै । पुंमरगिररे गाइसऊं सुभ भाउलै । मति सुरगिररे सहस जीभ जो मुख भवै । किम ते नररे विमला चलना गुण तवै । (उल्लालो) किम तवै गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा वऊ । गिररायना गुणछे अनंता कहै जिणवर मुख सऊ । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाखियै । तिरयंच नारक तणी गतिना दुःख दूरे राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिन राजारे पहिलो आदि जिनेसरू । तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू । तसु अंगजरे पुंमरीक गुण गण निलो । शम दम रसरे विनय विवेक गुणे भलो (उल्लालो) गुणभलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम सिवपुरी। पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपतै संचरी । पण कोमि साथे विमल गिरवर सुगति पदवी पाव ए। सुदि चैत्र पूनिम तेण ए गिरि पुंमरीक कहावए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्रीरे पूनिम पर्व सुहामणो । सेत्रुंजैरे आराध्यां फल भवै घणो। मन सुद्धैरे आपणपै थानक रही। आ

राध्यारे यात्र पुन्य पामें सही (उल्लालो) ते पुन्य पामें दान तप जप ध र्म्म ध्यान मने धरै । बहु भाव भत्तैं त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै। भावना भावे तेण दिवशैं पंच कोमि गुणो फलै । अनुक्रमें ते नर मुगति पामी सिद्ध सुंदरनें मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दश वीशारे तीश चालीश पूजा कही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चनथ छठरे अठम दसम डुवा लसै । पूजा फलरे अनुक्रम ए मुऊ मन वसें । (उल्लालो) मनवसै पूज कपूर धूवै मासखमण फले वली । सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करै मननी रली । हिव पूजनी विधि जेम गुरु मुख सुणीअछै परंपरा । ते मोहमाया कप टछमी सुणो भवीयण सादरा ॥ ४ ॥ ॥ (ढाल) तंडुल राशि विमल गिर थापी । तसुऊपरि पट्टादिक आपी । प्रतिमा आदि जिणेसर केरी । पुंमरी कनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंज गिरिनें मन चिंतीजै । करमतणा मल दूर करीजै । मोती तंडुल करीय वधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥६॥ मंग लीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि आठ । प्रतिमा मूल सनात्र करेवा । जिनवरना गुणहीयमै धरेवा ॥ ७ ॥ ऊभाथई नवकार गुणंता । दश दश जैती तिलक करंता । माला पुष्फ पुंगीफल ढोवो । मेरु भरण वर धूप उखेवो ॥ ॥ (ढाल) शक्र स्तव पांचे देववांदै । जघन्यना वंदण पाप छेदै । दशे नमस्कार करंत जैती । राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ए ॥ आराधिवा कीजै काउसग्ग । जिणें कीयै भाजै कर्म्म वग्ग । लोगस्स उ ज्ञोय दसे वखाणुं । वेला प्रमाणें अहि एगआणुं ॥ १० ॥ इणें प्रकारैं धुर पूज एह । इसी परैं वीजी च्यार तेह । दशां तणी वृद्धि तिहां गिणीजै । एक चित्त सूधै सुभ पुन्य कीजैं ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजै । एकेक पुठै अथवा गिणीजै मऊत्तरै आरति मंगलेवो । पछै प्रभु आगलि ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथायोगै संघपूजा आद रो । साहमी वच्छल करो भविका भव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि वऊलहै । श्री अमरमाणिक सीस सुपरैं साधु की रति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिम स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नंदीसर दीप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ नंदीसर वावन्न जिनालै । शाश्वता चौमुखसोहैरे । ऋखभा

नन चंद्रानन वारखेण । वरधमान मन मोहेरे (नं०) ॥ १ ॥ आठमो दीप नंदीसर अदभुत । वलयाकार विराजैरे । तेहनें मध्य चिहुं दिश शोभत, अंजन गिरवरगाजैरे ॥ २ ॥ (नं०) जोयण सहस चउरासी ऊंचा । ऊंच पणें अभिरामारे । मूलै पृथुल सहसदश जोयण । उवरि सहस इक श्यामारे ॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशाद प्रभुना । अति उत्तंग उदारारे । साधूजंघा विद्याचारण । वांदै विविध प्रकारारे ॥४॥ (नं०) चैत्ये चैत्यै एक सो चोवीस । विंब संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो भविजन भक्तें । सुध आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ (नं०) ऊंचपणें सऊ जोयण वऊत्तर । सो जोयण आयामारे । पिऊलपणें पंचास जोयणना । प्रभु प्राशाद सुठामारे ॥ ६ ॥ (नं०) धनुष पांचसैं आयत प्रभुनी । विविध रतनमय कायारे । जिन कल्याणक उत्सव करवा । सुरपति भगतें आयारे ॥ ७ ॥ (नं०) अंजन अंजन चिहुं गिरी उवरे । चौमुख वावि विशालारे । वावि वावि विच इक इक पर्वत । राजतरंग रसालारे ॥८॥ (नं०) चौसठि सहस जोयण उत्तंगै । दश सहस सम पिऊलारे । चिहुंदिशि सोल सोहै दधिमुख गिर । तिहां प्राशाद सुविमलारे ॥ ए ॥ (नं०) वावि वाविनें अंतर विदिशैं । रतिकर पर्वत रूमारे । दोय दोय संख्या ए जगदीसै । कशा नही एकूमारे ॥ १० ॥ (नं०) जोयणसहस मान दश ऊंचा । दश दश सहस विस्तारारे । ऊल्लरि सम संठाण जगदगुरु । निश्चय ए निरधारारे ॥ ११ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशाद सतोरण । अंजनगिरि परि माणेंरे । जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज । श्रीजिनराज वखाणेंरे ॥ १२ ॥ (नं०) इम प्राशाद प्रभूना वावन । नंदीसर वरदीपैरे । द्रव्य भाव विध पूज करंता । मोह महाभड जीपैरे ॥ १३ ॥ (नं०) प्रवचन सार उधार प्रकरणें । जीवाभिगमैं जाणोरे । इम अधिकार ठे ग्रंथ अनेकै । इहां संका मत आणोरे ॥ १४ ॥ (नं०) जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा । ते अनुभव इहां ल्यावोरे । ध्यावो जिम पावो परमातम । जैन चंद्र गुणगावोरे ॥ १४ ॥ (नं०) इति नंदीसर दीप स्तवनम् ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ दिनशुभ घमी गुरूके पास नंदीसर तप ग्रहण करै । नंदीसर दीपके चारूं दिश तरफ(५२) चैत्यकी अपेक्षायें । अमावसके अ

मावस (५२) उपवास करै। जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय। उसी नामको २००० गुणनो करै (सो लिखते हैं)॥ ※ ॥
॥१॥ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः॥※॥२॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः॥※॥
॥ ३ ॥ श्रीवारषेणजी सर्व० ॥ ४ ॥※॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व० ॥ ※ ॥

(यह) च्यार नामकों (४) वेर सुलटा (४) वेर उलटा गिणें। अनुक्रमें (१३) उपवास करनेंसें एक उली होय॥ (४) वार उली करणेंसें, यह तप संपूर्ण होय। पीछे शक्ति माफक ऊजमणो करै। नंदीसर द्वीप को मंम्डल बणावै। पूजा करावै। (इत्यादि महामहोछव करके)। ग्यान पूजा करै। साहमी वछल करै। मंम्डल पूजाकी विसेष विधि गुरूके वचनसें जाणके करै। इति नंदीसर तपस्याधिकारः॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वैशाख माशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वैशाखके महिनेमें (मिती) वैशाख सुद ३ है (सो) अक्षय तृतीया नामसें पर्व प्रसिद्ध है (इस दिन) श्रीऋषभ देव स्वामीके। चारित्र ग्रहण कियां पीछे। वारै माशीका पारणा। सोमयश राजाके पुत्र। श्रीश्रेयांस कुमरजीके हाथसें। इक्षुरस सेती ऊवा (उसी समय) उत्तम दानके प्रभावसें। सर्व देवगण प्रमोदवंत होके। सुगंध जलकी वर्षा॥ १ ॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा॥ २ ॥ (१२॥) कोम्ड सोनइयोंकी वर्षा॥ ३॥ आकाससें अहो दानं २ ऐसें उदघोषणा॥ ४ ॥ देव डुंडुभि वाजित्र॥ ५ ॥ ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये। श्रेयांस कुमरका जश तीन भुवनमें विस्तरण ऊआ। इसी दिनसें) आहार देणेंकी विधि सबकों मालुम ऊई। इस दानके प्रभावसें श्रेयांस कुमर अक्षय सुखकों प्राप्त ऊवा। (इसीसें) अक्षय तृतीया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है। इस पर्वके आणेसें। अछे वस्त्र आभूषण पहरके। भगवंतके मंदर जावै। अष्ट द्रव्यसें पूजन करै। स्नात्र। अष्ट प्रकारी। सत्तरभेदी (इत्यादिक) पूजा करावे॥ पीछे गुरूके मुखसें, एकासणादिकके पच्चक्खाण करके। पर्वकी महमा सुणें। अपनें घरमें मंगलीक भोजन तैयार होनेंसें। गुरूकों वहरायके। सर्व कुटंब इकठे होके जीमें। और (जो) मंगल कार्य करणा होय (सो) इसी दिन

करे। (इस माफक) इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करेंगे। उसीके तप तेज सदा वढते रहेंगे। अलं विस्तरेण। इति अक्षय तीज पर्वाधिकारः

॥ ॥ अथ तृतीय ज्येष्ठमाशाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ ज्येष्ट कृष्ण त्रयोदशी (१३) के दिन। (शोलमा) श्रीशांति नाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणक है। (इसीसें) यह दिन वमा उत्तम है। सर्व ठिकाणें श्रीसंघ इकठे होके।। विधि संयुक्त शांति पूजाका महोत्सव करावै। शांति जल लेजाके। अपनें२ घरमें छींटै। इस शांति पूजाके करानेंसें। मारी हेजा। (इत्यादि समुदाइक रोग) कभी श्री संघमें व्याप्त न होय (अथवा) कोई श्रावकके घरमें रोग चालो रहतो होय (वा) वहुत चिंता रहती होय (तो) इसी दिन शांति पूजाका उछव कराणा चाहिये। (इसीसें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीमा सर्व दूर होय। अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठवद (१३) पर्वाधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ आपाढ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ॥

॥ ॥ आपाढ सुद१४ के दिन। चौमाशी१४ इस नामसें पर्व प्रशिद्ध है (सो) लिखते है॥ (यथा) सामायकावश्यकपोपधानि। देवार्चन स्नात्र विलेपनानि। ब्रह्मक्रिया दान तपो मुखानि। भव्या श्चतुर्मासक मंमनानि ॥ १ ॥ (अर्थ) भोभव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि। चतुर्मांशकस्य मंमनानि अलंकार भूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो (यह) सामायक कों आदलेके (जो) धर्म कृत्यहै (सो) चोमासै के मंमनहै। अलंकार समानहै। (यथा शक्ति) यह चौमासे पर्वमें। केइ जीव। सामायक। पमिकमणा। पोशा। करै। केइ भगवानके मंदरमें। नानाप्रकारकी पूजा करै। केइ शीलव्रत पालै। केइ सुपात्र दान देवै। केइ नाना प्रकारकी तपस्या करै। जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवैं (सो करै) इसमें विरोध नहीं। कोई प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहियै (जिससें) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय। और चौमाशी (१४) के दिन। सर्व मंदर दरशन करनेकों जावै। पांच शक्र स्त

व देव वांदै । पीछे गुरूके पास जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें। सर्व चीजका प्रमाण करके। उपरांत सोगन लेवै। सांझकों चौमाशी पडिक्कमणो करै । (इसी माफक) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैकों पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्माश पर्वाधिकारः कथितः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ श्रावण माश मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ※॥

॥ ※ ॥ श्रावण माशमें कई भव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोमें। नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउछव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्व-का उद्योत करते हैं। (इसी माफक) सर्व ठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चहियै । और बहुत ठिकाणें की श्रावकणयां । इस महिनें में। कई तरैकीतपस्या करै है। (जिसमें) उत्तम फलकी दैनें वाली कई तपस्या (विधि प्रपाक ग्रंथसें)उद्धरण करके। संखेपविधिसें इहां लिखतेहैं॥

॥ ※ ॥ अथ छुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुरिमड्ढ १ । एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । (यह १ उली) इसी तरै पांच उली करै। तपो दिन २५ । ऊजमणें (२५)। लाडू चढावै ॥ ※ ॥इति इंद्रि जय तप ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एकासण १। नीवी १ । आंबिल १। उपवास १ । (इसी तरै) उली च्यार करै। तपो दिन १६ । ऊज मणें १६ लाडू चढावै॥※॥ ॥ ※ ॥ इति कषाय जयतपः २ ॥ ※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । (इसी तरै) उली ३ । करै । तपोदिन ए । ऊजमणें (ए) । लाडू चढावै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ इति योगशुद्धि तपः ॥३॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ ※ ॥ इति नाणतपः॥४॥॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै इति दर्शन तपः ॥५ ॥ ॥※॥

॥※॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ। गोतम स्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्र तप ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥※॥ अठम १। छठ १। उपवास १। एकाशण१। एकल ठाणो १। दत्ति१। नीवी १। आंबिल१। (यह एक ओली) इसी तरै, ओली आठ करै। तपोदिन (८८) ऊजमणें रूपानो वृक्ष। सोनानो कुहाडो करायके। ग्यान खाते देवै॥ इति आठ कर्म सूडण तपः॥ ७॥ ॥※॥

॥※॥ भाद्रवा वदि चउथसें लेके। पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एकाशणा (अथवा) बिआशणा करै। घर देहरासर आगे (अथवा) अन्है ठिकाणें कलश स्थापन करै। एक मुठी चावल सदा कलशमें भरै। संवछरीके दिन कलश ऊपरि नालेर रखके। महोत्सव पूर्वक मंदर लाके, देव आगे रक्खे। स्नात्र पूजा करै। ज्ञान पूजा करै॥※॥ ॥※॥ इति अक्षयनिधि तपः॥ ८॥※॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक। रोहणी नक्षत्र दिने। उपवास। (वा) नीवी। आंबिल। सात वरश, सात माश करै (श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः) इस पदको २००० गुणनो करै। गुरूके पास स्तवन सुणें (सो) स्तवन आगे लिखेंगे॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें। ज्ञान भक्ति। गुरुभक्ति करै॥ इति रोहिणी तपः॥※॥ ॥※॥

॥※॥ सुदपक्षके पांचमके दिन। श्रीनेमि। अंबिका, पूजा पूर्वक। पांच एकाशणादिक तप करै। अंबिका देवीकों वेस चढावै॥※॥ इति अंबिका तपः॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ सुद पक्षमें इग्यारसके दिन। सिद्धांत पुजापूर्वक। मोन संयुक्त उपवास करै॥ इति श्रुत देवता तपः॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ॥ सुद पक्षमें। एकांतर। उपवास ८। पारणें आंबिल ८। एवंदिन (१६) ऊजमणें ग्यानपूजा करै। इति सर्वांग सुन्दरतपः॥ १२॥※॥

॥※॥ चैत्रमाशे। एकांतर उपवास १५॥ एवंदिन (३०) ऊजमणें सोनेको (अथवा) रूपैको वृक्ष। अनेक फल सहित चढावै॥※॥ इति सौभाग्य कल्पवृक्ष तपः॥ १२॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पडिवा। बीज। तीज। अनुक्रमसें, पूनिम पर्यंत (१५) उपवास। जो तिथि भूलै। सोतिथि और करै। ऊजमणें एकसो वीश (१२०) लाडू मंदर चढावै। स्नात्र करावै॥ इति सर्व्व सुखसंपत्ति तपः॥ १२॥※॥

॥※॥ वरशातना च्यार माश (और) पोष। चैत्र। यह षट्माश टाल

के। छोटी पांचम तप सरू करै। अंधारी, अजुआली पांचम, माश ५ लग। एका शणादिक तप करै। ऊजमणें ज्ञान पूजा करै॥ इति छोटी पांचम तपः१५ ॥※॥ सुद पांचमकों, पांच वरश, पांचमाश, उपवास करै। उपवासकै दिन देव वांदनादिक क्रिया करै। ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण। पकवान फल, कलशादिक, पांच ५ चढावै॥ सत्तर भेदी पूजा करावे। साहमी वछल करै। इति ज्ञानपंचमी तपः॥ १६ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ आषाढ सुदि। पडिवा। वीज। तीज। चौथ। पांचमें। एकाशणा दिक तप करै। अशोग वृक्ष पूजा पूर्व्वक, देव आगै नेवेद्य चढावे। (इसी तरै) वरस१। तपकरै। ऊजमणें चावलांसें। अशोग वृक्ष लिखके पूजा करै॥ ॥※॥ इति अशोग वृक्ष तप: ॥ १७ ॥※॥ आषाढ वदि (७) श्रीविम लनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास॥ श्रावण वदि (७) श्रीअनन्तनाथ पूजा पूर्व्व क उपवास॥ काती वदि (७) श्रीआदिनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास॥ पोष वदि (७) श्रीपार्श्वनाथ पूजा पूर्व्वक उपवास करै। स्नात्र करै। ऊजमणें। चावलासें लोकनाल वनाके, साते राज, सात पावडी करिके। तिस ऊपरि सिध्दिक्षेत्र (तिसकों) सोनें रत्नोंको मुकट चढावै॥ इति मुकट सप्तमीतपः१८ ॥※॥ आसोज्ज सुदि ८ तांई एका शणादि तप करै। आठ प्रकारकी पूजा करै। नेवेद्य चढावै। पहिलै वरश अष्टापदकी एक पावडी। इसी तरै आठे वरशे आठ पावडी। अष्टप्रकारी पूजा पूर्व्वक आराधियै। ऊजमणें अष्टापद पूजा करावै। पकवान फल सर्व चउवीश चढावै॥ ※॥ इति अष्टापद पावडीतप;॥ १९॥※॥ ॥※॥

॥※॥ सुदपक्षके ८ आठमके दिन। उपवाश (अथवा) आंविल (८) करै। ऊजमणें दूधका कटोरा भरके। आठ लाडू, देव आगलि चढावै। इति अमृत आठमि तप;॥ २० ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ वदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके दशमके दिन। दश उपवास (अथवा) वीश एकाशणा करै। ऊजमणें अखंडित घी धार पूर्व्वक तीन। प्रदक्षिणा देवै॥ इति अखंड दशमी तपः॥ २१ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ वदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके ११ इग्यारसके दिन। सिध्दांत पूजा पूर्वक। एकाशण। नीवी। आंविल। (वा) उपवास ११ करै।

ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै॥ इति श्री इग्यारअंग तपः॥ २२॥※॥

॥※॥ सुद पक्षके १४ चउदस के दिन। एकास णादि (१४) तप करै। ऊजमणें ग्यानपूजा करै। चवदप्रकारके पकवान प्रमुख चढावै॥ ※॥ इति १४ पूर्वतपः॥ २३॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ पांच अमृत तेला। मास ६ में करै। (प्रथम तेलै) सिखरण पारणो। (दूसरै तेलै) सीरैको पारणो। (तीसरे तेलै) लापशीकोपारणो। (चौथै तेलै) लाडूको पारणो। (पांचमें तेलै) खीरको पारणो। सर्व पारणें प्रथम साधुकों विहराके पारणो करै॥ इति पंचामृत तेला तपः॥ २४॥ अठम १। एकाशणो १॥ अठम १। एकाशणो १॥ अठम१। एकाशणो १॥ ए मोटो रत्नोत्तर तपः॥२५॥※॥ ॥※॥

आंबिल १२ करके। ऊजमणें रूपाको चक्र, मंदर चढावै (तो) सदा जय होय। विणज व्यापारमें लाभ होय। ऊगमै जीत होय॥ ॥※॥ इति धर्म्म चक्रतपः॥ २६॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ उपवास ५ व्याशणां ५। एकांतरै करै। इति पांच महाव्रत तपः२७

॥※॥ उपवाश१ एकाशणो १। नीवी १। आंबिल १। व्याशणो १॥ उपवास १। एकाशणो १। नीवी १। आंबिल १ व्याशणो १। एवं दिन १०। पूनमसें सरू करै। पारणें साधु पडिलाभै। ग्यान पूजा करै॥ ※॥ इति दालिद्र हरण तपः॥ २८॥※॥ ॥※॥

॥※॥ एकेंद्रियें उपवास १। बेंद्रीयें छठ १। तेंद्रीयें अठम १। चौरिंद्रीयें दशम १। पंचेंद्रीयें द्वादशम १। छकायें चतुर्द्दशम १। तप करै। ऊजमणें, सुखमीसिं, स्त्री ६ जीमावै॥※॥ इति छकाय आलोयण तपः॥ २९॥

॥※॥ नीवी (आठ) निरंतर करै। इति सासू सुखतपः॥३०॥※॥

॥※॥ आंबिल (आठ) निरंतर करै॥ इति सुसरसुख तपः॥३१॥※॥

॥※॥ छठ (पांच) करै॥ इति पुत्री सुख तपः॥ ३२॥ ॥※॥

॥※॥ अठम (पांच) करै॥ इति बेटा सुख तपः॥ ३३॥ ॥※॥

॥※॥ उपवास (आठ) एकांतरकरै॥ इति भर्त्तार सुख तपः॥ ३४॥※॥

॥※॥ निवी (पांच) निरंतर करै॥ इति जेठ सुख तपः॥ ३५॥※॥

॥※॥ एकाशणा (पांच) निरंतर करै॥ इतिदेवर सुखतपः॥ ३६॥※॥

ठ० ५। एकाशणा पांच। एकांतर करै॥ इति पिता माता सुख तपः॥३७॥

॥ ※ ॥ इत्यादिक केई तरैकी तपस्या वह्नत ठिकाणेंकी श्राविका करै है। (इसी सें) सर्व श्राविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसें। उद्धरण करके। संखेप विधिसें इहां लिखी है। वेसी शक्ति होय (तो) पूजा। साहमी वछल तीर्थ यात्रा। (इत्यादिक) सातुं शुन्नखेत्रोमें। अपणा धन खरच करै। धर्मका उद्योत करै। इस तपस्या के प्रन्नावसें। (इस न्नवमें) संसार संवंधी डुखदालिद्र दूर होके। सर्व कुटंवमें सुख संपदा होय। (परन्नवमें) दवादिक रुद्धी प्राप्त होय। (किंवह्नना) इति ठुटकर तपस्या विधिः॥ ※॥

॥ ※ ॥ अथ न्नाद्रवमाशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ न्नाद्रवमहिनेंमें। मिती न्नाद्रवासुद ४ (तथा) केइ मतके अपेक्षायें ५ तिथकों। संवछरी नामसें पर्व्वप्रशिद्ध है। (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महमा कहते है) (जेसें) जगत्रमें अनेक मंत्र है। पर नवकार मंत्र समान कोई मंत्र नही (१)। तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोईतीर्थ नही (२) पांच दानमें। अन्नयदान। सुपात्रदान। समान कोई दान नही (३) गुणमांहें विनयगुण (४)। व्रतमांहें ब्रह्मव्रत (५)। नियम मांहें संतोष नियम (६)। तपमांहें उपशम तप (७)। दर्शनमांहें जैन दर्शन (८)। जलमांहें गंगाजल (९)। अलंकारमांहें चूडामणि (१०)। ज्योतिषी मांहें चंद्रमा (११)। तेजवंत मांहें सूर्य (१२)। तुरंग मांहें पंच वल्लन्न किशोर (१३)। नृत्यकलावंत मांहें मोर (१४) गज मांहें ऐरावण (१५) दैत्यमांहें रावण (१६)। वनमांहें नन्दनवन (१७)। काष्ट मांहें चंदन (१८)। साहसीक मांहें विक्रमादित्य (१९)। न्यायवंत मांहें श्रीराम (२०)। रूपवंत मांहें काम (२१)। सती मांहें शीता (२२)। सुगंध मांहें कस्तुरी (२३)। वस्तु मांहें तेजनतूरी (२४)। बाजित्रमांहें न्नंन्ना (२५)। स्त्रीमांहें रंन्ना (२६)। धातुमांहें स्वर्ण (२७)। दातारमांहें कर्ण (२८)। गौ मांहें कामधेनु (२९)। वृक्ष मांहें कल्पवृक्ष (३०)। जलमांहें अमृत (३१)। स्नेहमांहें घृत (३२)। (इत्यादिक) सर्व वस्तूमें एक एक चीज उत्तम होती है। (इसी माफक) सर्व पर्वोंमें उत्कष्ट रा

जाधिराज, श्री संवछरी पर्व (दूशरो नाम) श्रीपर्यूषणा प्रवंकों। भगवंत श्री महावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥ ※ ॥ (अब श्री पर्यूषण पर्व आनेसें) (प्रथम) श्रीसाधुके करवा योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ ※ ॥ संवछरी प्रतिक्रमण करै ॥ १ ॥ लोचकरावै २ ॥ तेलैका तप करै ३ ॥ सर्व मंदरोमें भगवंतकी भाव स्तवना करै ४ । सर्व श्रीसंघसें खमावै ५ । यह पंचकारणके वास्ते, श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें श्रीपर्यूषणा पर्व्व प्रवर्त्तन किया ॥

॥ ※ ॥ अब शुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करनेंकों, आठदिन अ ठाही महोछव करै (सो) कल्पलता शास्त्रसें लिखतेहैं ॥ ※ ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै । कल्पसुत्र जीकों विधि संयुक्त अपनें घर लेजा वै । रात्री जागरण करावै । (प्रभात समय) नगरके सर्व श्रीसंघकों निमंत्र ण करै । यथायोग्य सत्कार सन्मान करै । पीछे पुस्तक ग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै । मुगट, छत्र, चामर (इत्यादिक सहत) सा ख्यात इंद्र महाराजको रूप बनाके, हाथी ऊपर (अथवा) पालखी ऊ पर बेठै । अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके । अपनें दोनुं हाथमें थाल रक्खे । दोनुं तरफ पुरुप अछा वस्त्र आभूषण पहरकै । चमर ढालै । अनेक प्रकारके बाजित्र बाजते हुये । दान देते हुये, नाना प्रकारके श्रुत ज्ञानके गुण वर्णन करते हुये। नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके । गुरूके पास आवै । गुरू पिण खमा होके । विनय संयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आ गै रखै । श्री संघके आज्ञासें वाचना पूर्वक वाचै ॥ १ ॥ नगरमें सब ठिका णौं अमारि पमहो फेरावै । दूशरो अपनें वचनसें (तथा) द्रव्यसें । कसाई धोबी । भड़भुंजा (इत्यादिक) सर्वके आरंभ छोमावै ॥ २ ॥ सुपात्र दा न देवै ॥ ३ ॥ बिदाम, सुपारी, नालेरादिककी, परभावना करै ॥ ४ ॥ श्रीवी तराग देवकी उदार भक्तिसें पूजा करै । चौदसके दिन । संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होके । सर्व मंदर दरशण करनें को जावै ॥ ५ ॥ सचित्तका परिहार करै ॥ ६ ॥ ब्रह्मचर्य पालै ॥ ७ ॥ चउत्थ । छठ ॥ अठ मादिक । तप करै ॥८ ॥ अपनें २ वित्तके अनुसारे, जन्म कल्याणक को महोछव करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी पोशो करै ॥ १० ॥ संवछरी प्रतिक्रम ण करै ॥ ११ ॥ निशल्प होके सर्व श्रीसंघसें खमावै ॥ १२ ॥ पारणेंके

दिन पोशह पमिक्कमणें वाले साधर्मी न्नाइयोंकी न्नक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरू न्नक्ति करै ॥ १४ ॥ संवछरी दान देवै । साहमी वह्लल करै ॥ १५ ॥ इस विधि संयुक्त (यह) कल्पसुत्र एकचित्त सुणनेंसें, आराधन करनेसें, आठ न्नवमें सिद्धि स्थानककों प्राप्त होय । (और) केई उत्तम जीव । अत्यंत शुन्न न्नाव रखके । अठमादिक तप करिके युक्त, कल्प सुत्रजीकों वाचते है । और सुणनें वाले, प्रमाद, निद्रा, विकथा, गेमके । अठमादिक तप करके युक्त । इकचित्तसें शुद्ध न्नाव रखके । इकवीश वेर सुणते है (सो) पुरप देवगतिकों प्रात होके । तीशरै न्नव सिद्धि स्थानकों प्रात होते है ॥ ※ ॥ इस पर्यूषणा पर्वके महोछव (जो) न्नव्यजीव करते है । (सो) धन्य है । धर्मके प्रन्नावीक है । अपणें लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करै है । उसी पुरषां कों नमस्कार है ॥ ※ ॥ (अब कल्प सुत्रजीका महात्म कहते है ॥ ※ ॥ यह कल्पसुत्र, नवमा पूर्वसें उद्धरण किया हुवा । दशाश्रुत स्कंधका आठमा अध्ययन है । सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण । श्रुतकेवली । श्रीन्नद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है । यह कल्पसुत्रके अनंते विपय है । (जेसें) सर्व नदीकी वालूके जितने कण होय (तिससें पिण) एक सुत्रके अनंते विषय हे । इस कल्पसुत्रके महात्म (जो) देवाचार्य । हजार जीन्न करके कहै (तो पिण) महात्मका एक अंश कह सकता नही । ऐसा इस पर्वका महात्म जानके (जो) न्नव्यजीव शुद्ध न्नावसें सेवन करेंगें (सो) अनेक तरैसें, ऋद्धी, वृद्धी, सुख, सौन्नाग्यकों, प्रात होंगे (ओर) परन्नवमें देवादिक ऋद्धी पायके मुक्तिसुखकों प्रात होंगे ॥ इति पर्यूषण पर्वाधिकारः ॥ ६ ॥

॥※॥ अथ आश्विनमाश मध्ये पर्वाधिकार लि ॥※॥

॥ ※ ॥ आशोज महिनें में । मिती आशोज सुद ७ सें लेके । आशोज सुद १५ तांई । नवपद उली (तथा) अष्टा पद उली विधि संयुक्त करै । सो सर्व विधि पूर्वे लिखी है । उसी माफक करै ॥ ※ ॥ इति ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ कार्त्तिक माश मध्ये पर्वाधिकार लिण॥※॥

॥ ※ ॥ कार्त्तिक महिनें में । मिती कार्त्तिकवद अमावस है (सो) दीपमालिका नामसें पर्व प्रशिद्ध है । (यह) दीपमालिका पर्व कवसें प्रशिद्ध

हुआ (सो लिखते है) चोबीशमा तीर्थंकर । श्रीमहावीर स्वामी । समस्त साधु, साध्वी, साथ विचरते थके । अंतकी चोमाशी पावापुरी आयके रहे (उहां) आगामी कालके सर्व भाव । भव्यजीवोंके आगे प्ररूपण किये। फेर आपणा अंतसमय जानके । हस्तिपाल राजाके शुक्लशालमें आयके रहे । (अपनें पर) गौतम स्वामीका बहुत स्नेह देखके । निजीक गाम में, एक देव शर्मा ब्राह्मणकों । प्रतिबोध देनेंके लिये भेजा । (पिछाडी) प आशन धारन करके । सोलै पहर अखंड देशना देते हुये । पूरण बहुत्तर वरशको आऊखो पालके (इसी) अमावसके दिन । पिछली दो घडी रात्र रहनेंसें सिद्धि स्थानककों प्राप्त भए । जिस समय भगवंतका निर्वाण कल्याणक हुआ (उस समय) चौसठ इंद्र देवता गणके आनें जानेंसें बडा उद्योत हुआ । और (जो) सर्व राजा, पोषधमें बैठे हुए थे (सो) भाव उद्योतका अस्तपणा देखके । सर्व ठिकाणें रत्न धरके द्रव्य उद्योत किया । एकमके, प्रातसमें देवतावोंके आते जाते वचन सुणके । श्रीगौतम स्वामी कों केवल ज्ञान उत्पन्न हुवो । (दूजके दिन) सुदर्शना बैन । अपणें भाई नंद वर्द्धन राजाकों, घरमें बुलायके जिमाया । शोक दूर करायो । (जिससें) भाई बीज प्रवर्त्तन हुई ।(इसीसें)यह दीवाली पर्व बडा उत्तम है । इस दीवालीके रात (जो) गुणनो करै (सो लिखते हैं)॥ ॥ ※ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥

२ ॥ श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः ॥

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ ※ ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै । उपवास करै । रात्री जागर्ण करै । निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें थालभरके मंदर जावै । रोशनी करै । निर्वाण कल्याणकका आरती करै । स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणें । गौतम रास सुणें । (इत्यादिक) उदार चित्तस, सर्व ठिकाणें दीवाली पर्वका उत्सव करना चाहियै ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥※॥

॥※॥ जय जगदीशर अति अलवेशर । वीर प्रभूराया ॥ पतित उधारण भव भयभंजण । बोधबीज दाया ॥ (जय २ जिनराया । आरति करुं मन

भाया । होय कंचनकाया) ॥ १ (ज०) ॥ क्षत्रीकुंभ नगर अति सुंदर । सिद्धारथ राया । सुदि आसाढ छठके दिवशैं । त्रिशला कुक्षआया (ज०) ॥ १ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम भाषे । अरथ भेद सहु निश्चै करनें । जिन गुण रस चाखे (ज०) ॥ २ ॥ चैत्र सुदी तेरश दिन उत्तम । सहु ग्रह उच्चपावे । जन्म लेई दिश कुमरी सहुना । आशन कंपावै (३ ॥ (ज०) उत्सव कर जावे निज थानक । इंद्र सहु आवे । मेरु शिखरपर श्नात्र महोत्सव । करि आनंद पावे (ज०) ॥ ४ ॥ वसु धारा वृष्टीकर सहु सुर । निज थानक जावै । सिद्धारथ करै जन्म महोत्सव । अचरज सहु पावै (ज०) ॥ ५ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत । हरिलंछन गजे । कुल इख्वागु अंग सहू लक्षण । शशिज्युं मुख राजै (ज०) ॥ ६ ॥ दान संवत्सर दे प्रभु लेवै । चारित्र सुख दाई । मार्गसीर्ष दशमी बद पक्षे । उत्तम तरु पाई (ज०) ॥ ७ ॥ वार वरश छद्मस्थ प णामें । डक्कर तप पालै । माधव सुद दशमी के दिनकुं । दोख सहु टालै (ज०) ॥ ८ ॥ केवल पाय सवीसुर संगै । पावा पुर आवे । गुणगण लंकृत देशना देकें । संघ सहु पावै ॥ ८ ॥ भ्रमफल विच वहुतजीवकुं अविचल सुख देवै । नर सुर इंद्र सवीमिल पूजे । जगमें जश लेवै (ज०) ॥ ९ ॥ चरम चौमासि पावापुरि करकै । अंत समय जाणी । हस्तिपालकी शुक्ल शालमें । सोलै पहर वाणी (ज०) ॥ ११ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या । इक चित गुणधामी । कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन । शिवकमला पामी (ज०) ॥ १२ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोत्सव । करि प्रभु गण गावै । देवमुखै गणधर गुरु गोतम । सुणनें पछतावै (ज०) ॥ १३ ॥ वीतराग गुण मनमें धारी । अनित्यभाव भावै । केवल ग्यान प्रगट हुय ततखिण । सुर नर गुण गावै (ज०) ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक शाशन पतिकी । आरति ज्यो गावै । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जव । मोहन गुण पावै (ज०) ॥ १५ ॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥❀॥

॥❀॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥❀॥

॥❀॥ मारग देशक मोक्ष नोरे । केवल ग्यान निधान । भावदया सागर प्रभूरे । पर उपगारी प्रधानोरे ॥ १ ॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया) । संघ स

कल आधारोरे । हिव इण भरतमां । कुण करस्यै उपगारोरे ॥ २ ॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया) । नाथ विहूणी सैन्य जूरे । वीर विहूणोरे संघ । साधै कुण आधार थीरे । परमानंद अभंगोरे ॥ ३ ॥ (वीर०) ॥ मात विहूणा बालज्युंरे । अरहो परो अथमाय । वीर विहूणा जीवमारे । आकुल व्याकुल थायैरे ॥ ४ ॥ (वी०) ॥ संसय छेदक वीरनोरे । विरहते केम खमाय । जे दीठें सुख ऊपजैरे । ते विण किम रहिवायोरे ॥ ५ ॥ (वी०) ॥ निर्यामक भव समुद्रनोरे । भव अटवी सत्थवाह । ते परमेसर विन मिल्यरि । किम वाधे उच्छाहोरे ॥ ६ ॥ (वी०) ॥ वीर थकां पिण श्रुततणोरे । हूंतो परम आधार । हिवणा श्रुत आधारछेरे । एह जिन आगम सारोरे ॥७॥ (वी०) ॥ इण कालै सव जीवनेंरे । आगमथी आनंद । ध्यावो सेवो भवि जनारे । जिन पडिमा सुख कंदोरे ॥ ८ ॥ (वी०) ॥ गणधर आचारज मुनीरे । सहुनें इणपरि सिद्ध । भव भव आगम संगथीरे । देवचंद्र पद लीधोरे ॥ ९ ॥ (वी०) ॥ इति निर्व्वाण कल्याणक स्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ग्यान पंचमी पर्व्वाधिकारः २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूसरो कार्त्तिक महिनेमें, कार्त्तिक सुद पंचमी । (सो) ग्यानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है । (इस दिन) सर्व भव्य जीवांकों ज्ञानको विशेष आराधन करनो चहिये । ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईवी नही । सर्व तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नही । मोक्ष मार्ग साधनकों ज्ञान समान कोई उपाय नही । इस ज्ञान पंचमीकों आराधनसें अनेक दुष्ट कर्म विछेद होय । गुंगापणो, मूर्ख पणो, वक्रपणो, (और) कोढादिकके रोग, सर्व दूर होय । (अनुक्रमें) ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होनेंसें पांचों ज्ञान प्रगट होय (जैसें) वरदत्त गुणमंजरीके । रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके । मनोरथ पूर्णभए । उसी माफक (जो) ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा । उसीका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ ※ ॥ ग्यान पंचमी देव वंदन विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम पवित्र स्थानकैं । चौकी पट्ट उपर ग्यानकों स्थापन करै। तिस आगे पांच साथिया करै । फल, फूल, प्रमुख चढावै । पांच वत्तीको दीपक चढावै । अगर कपूरको धूप खेवै । पूजा पढके । वास क्षेप, कपूर

सें, ग्यान पूजा करै । यथा शक्ती । रोकनाणो चढावै । (तथा) पूग, विटां गणादि चढावै । (ज्ञानपूजा लिखते हैं) ॥ ※ ॥ नमंति सामंत मही वनाहं । देवाय पूयं सुविहेय पुव्विं । भत्तीय चित्तं मणिदामएहिं । मंदार पुप्फं पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेव सद्धा मणि मुत्तिएहिं । सुगंधपुप्फेहि वरंसिएहिं । पूयंति वंदंति नमंति नाणं । नाणस्सलाभाय भवक्खयाय ॥२॥ यह पूजा पढके, ज्ञान पूजा करै। (इसी तरै) द्रव्य पूजा करके (पीछै) भावपूजा करै (सो लिखते हैं) । १ खमासमण देके । इरिया वही पडिक्कमें । लोगस्स कहै । (बैठकै) मुहपत्ती पडिलेहै । अणुजाणह । मेमि उग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै । पीछे पांच खमा समण देके । ज्ञानको नमस्कार कहै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सकल वस्तु प्रतिभाश भानु निरमलसुख कारण । सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भव जलनिधि तारण । संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्यादवाद परिणाम धर्मपरणति पडिवोहण । साधु साधुणी संघ सर्व आराधन सोहण । मोह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण । आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपज्जव केवल । भेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायिक निरमल । दोय परोक्ष प्रथम तिहां उगपरतक्ष दीसतः । सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाशै । वाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै । शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपैं । चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥४॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे । नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे । वीरपरंपर जीत अनुभव उपगारी । अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अबाधे । देव चंद्र आणासहित नय भंग अगाधे । ए श्रुतज्ञान सोहामणो। सकल मोक्ष सुखकंद । भगतै सेवो भविकजन । पामो परमानंद ॥ ६ ॥※॥ इति ज्ञानस्तुति ॥※॥ (इत्यादि) नमस्कार कहिके । णमोत्थुणं॰। जावंति चेइयाइं॰। जावंति केवि साहू॰ । नमोर्हत्सि॰

(कहके) प्रणमुं श्रीगुरु पाय० (इत्यादि) ज्ञानके स्तवन बोलै । जय वीयराय० कहै । वंदण० । अनत्थू० कहके । एक नवकारको काउसग्ग करै । थुई कहै ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ थुई लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ देविंद वंदिय पएहि परूवियाणि । नाणाणि केवल मणोहि म ई सुयाणि । पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए । पूया तवो गुणरयाण जि याणदिंतु ॥ १ ॥ ※ ॥ यहस्तुति कहके । (ज्ञान आराधवा निमित्तं करे मि काउसग्गं) तस्सुत्तरी । अन्नत्थू० कहके । १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारके) बोधा गायं० (इत्यादि गाथा पढके) पीछै आभिणि बो हियनाणं । सुयनाणं चेव उहिनाणंच । तह मणपज्जव नाणं । केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामि खमा० । श्रीमति ज्ञानाय नमः ॥ १ ॥ श्रीश्रुतिज्ञानाय नमः ॥ २ ॥ श्रीअवधिज्ञानाय नमः ॥३॥ श्री मनः पर्यव ज्ञानाय नमः ॥ ४ ॥ समस्त लोकालोक भास्कर श्री केवल ज्ञा नाय नमः ॥५॥ (इसी तरै) पांच नमस्कार करै । थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणांकों नमस्कार करै (सो) पूर्वे नवपदजीकै गुणनेंमें लिख्या है। उसी माफक करै। पीछे (ॐ ह्रीं णमो नाणस्स) इस पदको २००० गु णनो करै । कम थिरता होय (तो) ५ जाप करै । ज्ञान पंचमीका व्या ख्यान सुणें । थिरता होय (तो) इग्यारै अंगकी सिझायां पढे (वा) सुणें (सो) इग्यारै अंगकी सिझायों लिखतेहैं ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ प्रथम आचारांग सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल हठीलानी) पहिलो अंग सुहामणोरे। अनुपम आ चारांगरे। (सुगुण नर) वीर जिनंदे भाषियोरे लाल। उववाई जास उवं गरे (सु०) ॥ १ ॥ बलिहारीए अंगनीरे लाल । हुं जाउं वार वाररे (सु०) विनयें गोचरी आदरेंरे लाल। जिहां साधु तणो आचाररे (सु० बलि०) ॥ २ ॥ सुयखंध दोयछै जेहनारे । प्रवर अध्ययन पचवीशरे (सु०) उद्देशा दिक जाणियेंरे लाल । पिच्यासी सुजगीसरे (सु० ब०) ॥ ३ ॥ हेतु जुग तिकर सोभतारे । पद अढार हजाररे (सु०) । अक्षर पदनें जेहमैंरे लाल। संख्याता श्रीकाररे (सु० ब०) ॥ ४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे । वलि अ

नन्त पर्यायरे (सु०) । त्रस परित्ततोछै इहांरे लाल । थावर अनन्त कह्या यरे (सु० व०) ॥ ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासतारे । जिनप्रणीतए नावरे (सु०) सुणतां आतम कलसैरे लाल । प्रगटै सहिज स्वन्नावरे (सु० व०) ॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविकारे । अंगै धरीय उल्लासरे (सु०) विधि पर्वक तुमे सांन्नलोरे लाल । गीतारथ गुरु पासरे (सु० व०) ॥ ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलोरे । कतारै न्नव पाररे (सु०) विनयचंद्र कहै माहरैरे लाल । ए हीज अंग आधाररे (सु० वलि०) ॥८॥ इति आचारांग सिझाय॥१

॥ ॥ अथ सुयगडांग सुत्र सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल रसीयानी) । बीजोरे अंग तुमे सांन्नलो । मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन) । त्रिणसै तेशठ पाखंडी तणो । मत खंड्यो धर रंग (मो०) ॥ १ ॥ (मीठीरे लागै वाणी जिन तणी) जागै जेहथीरे ग्यांन (मोरा सा०) । ए वाणी मन न्नाणी माहरै । मानु सुधारे समान (मोरा०) (मीठी०) ॥ २ ॥ रायपसेणी उवांगछै जेहनो । एतो सुत्र गंन्नीर मो० । बहुश्रुत अरथ जाणें सहु । क्षीर नीर धनुर तीर (मो० मी०) ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंध दोयछै । वलि अध्ययन तेवीश (मो०) ॥ उद्देशा समुद्देशा जिहां न्नला । संख्यायैरे तेत्रीश (मो० मीठी०) ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण न्नख्या । पद छत्तीश हजार (मो०) । संख्याता अक्षर पद मांहे । कुण लहे तेहनोरे पार (मो० मीठी०) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली । न्नेद अनन्त जिण मांहि (मो०) । गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या । थावर अनन्त जेमांहि (मो० मी०) ॥ ६ ॥ निबद्ध निकाचित जेसा सयकम्मा । जिनपन्नत्तारे न्नाव (मो०) । न्नाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा । चरण करण नेरे जाव (मो० मीठी०) ॥७॥ करीयै न्नगत जुगत ए सुत्रनी । निहश्चै लहीयैरे मुक्ति (मो०) । विनयचंद्र कहै प्रगटै एह थी । आतम गुणनीरे शक्ति (मो० मीठी०) ॥ ८ ॥ ॥ इति श्रीसुयगडांग सिझायः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (३) ठाणांग सुत्र सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) आठ टकै कंकणो लीयोरी (ए चाल) ॥ त्रीजो अंग न्नलो कह्योरे । (जिनजी) नामें श्रीठाणांग । (मोरा मन मगन थयो) । हांरे देखी २ न्नाव । हांरे जीवाजीव स्वन्नाव (मो०) ॥ १ ॥ सवल जगत

करी ञजतोरे । जि० । जीवाभिगम ञपांग (मो०) । एह अंग मुफ मन व स्योरे । जि० ॥ जिम कोकिल दलअंब (मो०) ॥ २ ॥ गुहिर भाव कर जागतोरे ॥ जि०॥ आजतो एह आलंव (मो०) कूट शेल सिखरी सिलारे । जि० ॥ काननमें वलिकुंभ (मो०) ॥ ३ ॥ गक्कर आगर द्रह नदीरे ॥ जि० जेहमें अछैरे ञदंभ (मो०) दश ठाणा अतिदीपतारे ॥जि०॥ गुण पर्याय प्र योग ॥ मो० ॥ ४ ॥ परित्त जेहनी वाचनारे ॥ जि० ॥ संख्याता अनु योग (मो०) । वेष्ट शिलोक निजुत्तसुंरे ॥ जि० ॥ संगहणी पभि चि त्त (मो०) ॥ ५ ॥ ए सक्र संख्याता जिहांरे ॥ जि० ॥ सुणतां ञलसै चित्त (मो०) । सुयखंध इक राजतोरे । जि० । दश अध्ययन ञदार (मो०) ॥ ६ ॥ ञद्देशादिक वीशछैरे । (जि०) पद वक्रुत्तर हक्कार (मो०) । रागी जिन शासन तणोरे ॥ जि० ॥ सुणें सिद्धांत वषांण (मो०) । विनय चंद्र कहै ते कवैरे ॥ जि० ॥ परमारथरा जाण (मो०) ॥ ७ ॥ ॥※॥
इति श्रीठाणांग सुत्र सिझायः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ (४) समवायांग सुत्र सिझाय लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (ढाल) थांरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे कोयली (ए चाल) ॥※॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ॥ सुणो० ॥ पन्नवणा ञपांग करी सोभावणी हो लाल ॥ करी सो० ॥ अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी हो लाल ॥ साखासु०॥ समकित भाव कुसुम परमल व्यापी घणो हो लाल ॥ पर०॥ १ ॥ जीव अजीवनें जीवाजीव समास थी हो लाल ॥ जीव० ॥ लहीयै एहथी भाव विरोध कांइ नथी हो लाल ॥ वि० ॥ भांगा तीन स्वसमयादिकना जाणीयै हो लाल ॥ यादि०॥ लोक अलोकनें लो कालोक वखाणीयै हो०॥ लो०॥ एक थकी छे सत समवाय प्ररूपणाहो ला ल ॥ सम० ॥ कोमा कोम प्रमाणक जीव निरूपणा हो०॥ जी०॥ वारस विह गणि पिटक तणी संख्या कही हो०॥ त०॥ सासता अरथ अनंतकि छै एहना सही होलाल ॥ छै० ॥ ३ ॥ सुय खंध अध्ययन ञद्देशादिके भ ला हो लाल ॥ ञ०॥ संख्यायें एक एक प्रत्येकें गुणनिला हो०॥ प्रत्ये०॥ पद एक लाख चौमाल सहसते ञत्तरा हो०॥ स०॥ पदनें अग्र ञदग्र सं ख्याता अक्षरा हो०॥ सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहै सदा हो०

करी०॥ सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा हो० ॥ त्रिप० ॥ जेहनमा वै अंगकि अन्तरगतिहसी हो० ॥ अन्त० ॥ जलवरसंते जोर कुणन अवै खुसी हो० ॥ कुण० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो० । जिणं०॥ तजिया शास्त्र मिथ्यात सुत्र जाणयो खरो हो०॥ सु०॥ जिम मालती लहीभृंग करीनें नविरहै हो०॥ करी०॥ ईश्वर शिर सुरगंग तजी परिनवि वहै हो०॥ तजी०॥ ६ ॥ एप्रवचन निग्रंथ तणो जुगतै वमो हो० ॥ तणो०॥ साकर सेलडी द्राष थकी पिण मीठमो हो०॥ थकी०॥ स्युं कही यै वझवात विनयचंद्र इम कहै हो०॥ वि०॥ एहना सुणनें भाव श्रोता अति गहगहै हो० श्रोता० ॥७॥ इति श्रीसमवायांग सुत्रसिझाय सं०॥४॥

॥※॥ अथ (५) भगवती सुत्र सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ (ढाल पंथीभानी)। पंचम अंग भगवती जाणीयैरे । जिहां जिनवरना वचन अथाहरे । हिमवंत परवत सेती नीकल्यारे । मानुं परतिख गंगप्रवाहरे (पं०) ॥ १ ॥ सूरपन्नत्ती नामें परगडीरे । जेहनी छै उद्दाम उवांगरे । सुत्र तणी रचना दरीया जिसीरे। मांहिला अरथ ते सजल तरंगरे (पं०) ॥ २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलोरे । एक सो एक अध्ययन उदाररे । दश हजार उद्देशा जेहनारे । जिहां किण प्रश्न छत्तीश हजाररे (पं०) ॥ ३ ॥ पद तो दोयलाख अरथे भस्यारे । ऊपरि सहस अठ्यासी जाणरे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे । विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमाणरे (पं०) ॥ ४ ॥ करियै पूजा अनें परभावनारे । धरियै सदगुरु ऊपररागरे । सुणियै सुत्र भगवती रागसुंरे । तो होय भव सागरनो त्यागरे (पं०) गोतम नामें द्रव्य चढाइयैरे । सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमरे । कीजै साधु तथा साहमी तणीरे । भगति युगति मन आणो प्रेमरे (पं०) ॥६॥ इण विधिसुं एह सुत्र आराधतांरे । इण भव सीझै वंछित काजरे । परभव विनय चंद्र कहै तेलहैरे । मोहन मुगति पुरीनो राजरे (पंच०) ॥ ७ ॥ इति श्री भगवती सुत्र सिझाय सं० ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (६) ज्ञातासुत्र सिझाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) कितलख लागा राजाजीरै मालियै । (एदेशी) । छठो अंग ते ज्ञाता सुत्र वखाणियै जी । जेहना छै अरथ अधिक उद्दाम हो

(ह्यांरा सुणजो धरिनेह सिद्धांतनी वातम्हीजी)। श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजै जी। मधुर ता तर्जित जिम मधु खंम हो (ह्यां०)॥ १॥ जंवुद्दीव पन्नत्ती उपांगछै जेहनो जी। इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो (ह्यां०) अर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुभवै जी। चर्चिक सुणि करै सम सोर हो (ह्यां०)॥ २॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंम सोहामणां जी। समवसरण राजाना मातनें तातहो (ह्यां०) धरमाचारज धर्म कथा तिहां दाखवी जी। इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो (ह्यां०)॥ ३॥ भोग परित्याग प्रवज्या पर्यवाजी। सुत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो (ह्यां०) संलेहण पचखाण पादपोप गमनताजी। स्वर्ग गमन शुभकुल उतपत्ति हो) ह्यां०॥ ४॥ वोधिलाभ वलितंतते अंतक्रया कहीजी। धर्मकथाना दोयछै खंध हो (ह्यां०)। पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आजछे जी। वीजाना दशवर्ग महा अनुवंध हो (ह्यां०)॥ ५॥ ऊठ कोम्हि तिहां सवल कथानक भाषिया जी। भाष्यावलि उगणीस उद्देश हो (ह्यां०)। संख्याता हजार भला पद एहना जी। एह थकी जायै कुमति कलेश हो (ह्यां०)॥ ६॥ विनय करै जे गुरुनो वक्र परै जी। तेहनें श्रुत सुणतां वक्र फल होय हो (ह्यां०)। ते रसिया मन वसिया विनय चंद्रनें जी। सो मांहें मिले जोयां एक कै दोय हो (ह्यां०)॥ ७॥ ※॥

इति श्री ज्ञाता धर्म कथाङ्ग सिझायः॥ ६॥ ※॥ ॥ ७॥

॥ ※॥ अथ (७) उपाशकदशा सुत्रसिझाय लि०॥ ९॥

॥※॥ (ढाल विंछियानी)। हिवें सातमो अंग ते सांभलो। उपाशगदशानांमें चंगरे। श्रमणो पाशकनी वर्णना। जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे॥ १॥ मन लागो मोरो सुत्रथी। एतो भव वैराग तरंगरे। रसराता ज्ञाता गुण लहें। परमारथ सुविहित संगरे (म०)॥ २॥ इण अंगें सुयखंध एकछे अध्ययन उद्देश विचाररे। दश२ संख्यायें दाखव्या। पद पिण संख्यात हजाररे (म०)॥ ३॥ आणंदादिक श्रावक तणो। सुणतां अधिकार रसाल रे। रस लागे जागे मोहनी। श्रोता जननें ततकाल रे (म०)॥ ४॥ श्रोता आगलतो वाचतां। गीतारथ पामें रीझरे। जे अर्द्ध दग्ध समझै नहीं। ते दूसुं तो करवी धीज रे। (म०)॥ ५॥ दश श्रावकतो इहां भाषिया।

पिण सुत्र भणयो नही कोयरे । ते माटै शुद्ध श्रावक भणी । एक अरथ नी धारणा होय रे (म०) ॥ ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपीयै । निस्संकपणें सुजगीसरे । कवि विनय चंद्र कहै स्युं थयो । जो कुमती करस्यै रीसरे (म०) ॥ ६ ॥ इति श्रीउपाशक दशांग सिझायः ॥ ७ ॥ ॥

॥ ॥ (८) अंतगड्ढदशांग सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) बीर वखाणी राणी चेलणाजी । इस चालमें ॥ ॥ आठमो अंग अंतगड्ढ दशाजी । सुणी करो कान पवित्र । अंतगड्ढ केवली जे थया जी । तेहनारे इहां चरित्र (आठ०) ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरता जी । पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां भासताजी । सासता अर्थ सुविलास (आ०) ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय भंग थीजी । अंग ना भाव अभंग । सहिज सुखरंगनी तल्पिकाजी । कल्पिका जासु उवंग (आ०) ॥ ३ ॥ एक सुय खंध इण अंगनोजी । वर्ग छै आठ अभिराम आठ उद्देशा छै वलीजी । संख्याता सहस पद ठाम ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ आठमा अंगना पाठमें जी । एहवो अछैरे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजै जी । संपजै पुण्यनीरास (आ०) ॥ ५ ॥ विषय लंपट नर जे हुवै जी । निरविषयी सुणया थाय । जिम महाविष विषधर तणो जी । नागमंत्रे सुणया जाय (आ०) ॥६॥ अमृत वचन मुख वरसती जी । सरस्वती करोरे पसाय । जिम विनय चंद्र इण सुत्रनाजी । तुरतलहै अभिप्राय (आ०) ॥७॥ इति श्रीअंतगड्ढ दशांग सिझायः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (९) अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल नणदल बिंदलीलै ए चाल ॥ ॥ नवमो अंग अणुत्तरो वाई । एहनीरुच मुझनें आईहो (श्रावक सुत्र सुणो) सुत्र सुणो हित आणी । एतो वीतरागनी वाणी हो (श्राव०) ॥ १ ॥ जसु कल्पाव तंसिकानामैं । सोहै उवांग प्रकामें हो (आ०) एतो आगमनें अनुकूला । मानुं मेरु शिखरनी चूला हो । (श्रा०) ॥ १ ॥ एतो सुत्रनो नाम सुणीजै । तिम तिम अंतर गति भीजै हो (श्रा०) । प्रगटै नवलसनेहा । एहथी उलसै मोरी देहा हो (श्रा०) ॥ ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया । तेहना गुण इणमें गाया हो (श्रा०)। नगरादिक भाव वखाणया । तेतो छै अंगे आ

एया हो (श्रा०)॥ ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू। त्रिणवर्ग वली मनोहारू हो (श्रा०)। उद्देशा त्रिणसनूरा। संख्यात सहस पद पूरा हो (श्रा०) ॥ ५ ॥ सुत्र सुणावुं अमे तेहनें। साची श्रद्धा ज्ञय जेहनें हो (श्रा०) श्रोताथी प्रीत लगावुं। निंदकनें मुंह न लगावुं हो (श्रा०)॥ ६ ॥ जे सुणतां करै वकोर। तेतो मांणस नही पिण ढोरहो (श्रा०)। कवि विनयचंद्र कहै साचो। श्रुत रंगै सज्झको राचोहो (श्रा०)॥ ७ ॥ ※ ॥ इति श्री अणुत्तरोवाई सिझायः ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ (१०) प्रण्णव्याकरण सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ (ढाल) आधा आम पधारो पूज (एहनी) ॥※॥ दशमो अंग सुरंग सुहावे। प्रण्णव्याकरण नामें। सुत्र कल्पतरु सेवै ते तो। चिदानंद फल पामें। (आवो २ गुणना जाण। तुमनें सुत्र सुणावुं)। (टेक) ॥ १ ॥ पुप्फकली ज्युं परिमल महकै। गुरु परागनें रागै। तिम उपांग पुप्फिका एहनो। जोर जुगति करि जागै। (आवो०) ॥ २ ॥ अंगुष्टादिक जिहां प्रकास्या। प्रण्णादिक अतिरूमा। तेठै अगोत्तर सत एतो। सुत्र मध्य मणि चूमा (आ०)॥ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्यां। पांचे संवर द्वारा। महा मंत्र वाणीमां लहीयैं। लवधि भेद सुखकारा। (आ०)॥ ४ ॥ सुय खंध एकठै दशमें अंगे। पणयालीस अझयणा। पणयालीस उद्देशवलीपद। सहस संख्यात नीरयणा (आ०)॥ ५ ॥ जे नर सुत्रसुणें नही कानैं। केवल पोपै काया। मायामांहि रहै लपटाणा। ते नर इम हीज आया। (आ०)॥ ६ ॥ सुत्र मांहि तो मारग दोय ठै। निश्चय नय व्यवहारा। विनय चंद्र कहै ते आदरियै। तजि मन मद न विकारा। (आ०)॥ ७ ॥ इति श्री प्रण्णव्याकरण सुत्रसिंझायः ॥१०॥

॥※॥ अथ (११) विपाकसुत्र सिझाय लि० ॥※॥

॥※॥ (ढाल कम्रखानी ॥※॥ सुणोरे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो। तजो विकथा दृथा जे अनेरी। ललित उपांग जसु प्रवर पुप्फ चूलिका। मूलिका पाप आतंक केरी (सु०)॥ १ ॥ असुभ किंपाक सम दुकृतफल भोगवी। नरकमां गरकथया जेह प्राणी। सुकृतफल भोगवी स्वर्गमां जे गया। तास वक्तव्यता इहां आणी (सु०)॥ २ ॥ दोय श्रुत खंधनें वी

श अध्ययन वलि । वीश उद्देश इहां जिन प्रयुंजै । सहस संख्यात पद कुं द मचकुंद जिम । वज्जल परिमल भ्रमर चित्तगुंजै (सु०) ॥ ३ ॥ सरसचं पकलता सुरभि सज्जनें रुचै । अन्य उपगारनी बुद्धि माटै । सुत्र उपगार तेह थी सबल जाणियै । जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै (सु०) ॥ ४ ॥ बंधनें मोक्षना बेउ कारण अछै । दुकृतनें सुकृत जोवो बिचारी । दुकृतनें पर हरी सुकृतनें आदरी । जिन वचन धारियै गुणसंभारी (सु०) ॥ ५ ॥ मकररे मकर निंदा निगुण पारकी । नारकी तणी गति कांई वांधै । नारकी प्रकृत तजि सहज संतोष भज । लाग श्रुत सांभली धरम धंधै (सु०) ॥ ६ ॥ सुक्खनें दुक्ख विपाक फल दाखव्या । अंग इग्यारमें बीत रागै । चिरजयो वीरशासन जिहां सुत्र थी । कवि विनय चंद्र गुण ज्योति जागै (सु०) ॥७॥ इति श्रीविपाकसुत्र सिझायः ॥ ११ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लि० ॥※॥

॥※॥ (ढाल वधावानी) । अंग इग्यारह में थुण्या । (सहेलीए) आज थया रंगरोलकि (स०) नन्दीसुत्र मांहि एहनो (स०) । भाष्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ (सहेलीए आज वधामणा) पसरी अंगइग्यारनी (स०) मुक्त मन मंरूप बेलकि । सींचूते हरखै करी (स०) अनुभव रसनी रेलकि ॥२॥ हेज धरी जे सांभलै (स०) । कुंण वूढा कुण बालकि । तो ते फल लहै फूट रा (स०) स्वादें अतिहि रसाल कि ॥३॥ हरख अपार धरी हीयै (स०) अहम्मदावाद मझारकि । भासकरी ए अंगनी (स०) वरत्या जय जय कार कि ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावनें (स०) । वरषा ऋतु नभ माशकि । दशमी दिन शुदि पक्षमां (सु०) पूरण थई मन आसकि ॥ ५ ॥ श्रीजिन धर्मसूरि पाटवी (स०) । श्रीजिनचंद्र सूरीसकि । खरतर गछना राजीया (स०) त सु राजै सुजगीसकि ॥ ७ ॥ पाठक हरख निधान जी । (सहे०) ज्ञान ति लक सुपसायकि । विनय चंद्र कहै में करी (स०) । अंग इग्यार सिझा यकि । (सहे०) ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझायः ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ज्ञानको स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग ठुमरी ॥※॥ मेरे रे मनमांनी ज्ञानजरी । (मे०) परउप गारी सुगुरु बताई । पांचुं भेदे करी । मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव ।

केवल वोधवरी । (मे)॥ १ ॥ तपकर अग्नि मूंस दंशनकी । करमें धनल करी । सक्रिय संयम करतासुं मिल । सिद्ध रसानधरी । (मे०) ॥ २ ॥ पूरण पुन्य मिली मोय सजनी । सकला नन्ददरी । वालकहै अब विसरत नांही । पल छिन एकघरी । (मे०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥※॥श्रुत अतिहूजलो । संघसकल आधार नमुं त्रिभुवन तिलो । (आं कणी) अरथै श्री वीर जिणंद आख्यो । सुत्रें श्री गणधर गुरु भाख्यो । तउजय थी जे मुनिवर राख्यो ॥ १ ॥(श्रु०) । जेह थी जगभाव सकल जाणें । नय एकांत मुनि जन नवितांणें । निश्चइ व्यवहार ते मन आणें॥२ (श्रु०) जिहां अङ्ग उपाङ्गछै अतिरूडा । छेद पइन्ना नहिं कूडा । मूलसुत्र नन्दी अनुयोग चूडा ॥ ३ ॥ (श्रु० । जिहां निरयुगती सुत्रै संगी वलि भाष्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगे कही पंचाङ्गी ॥ ४ ॥ (श्रु०) जिहां साधु श्रावक मारग लहियै । संवेग पखी वलि सरदहियै । एनिण विन भवमारग कहियै ॥ ५ ॥ (श्रु०) । जेहनी अनुपेहा नित करियै । उपचारै दूषण परिहरियै । आराध्यां निज अनुभव वरियै ॥ ६ ॥ (श्रु०) जिन आगमना जे गुणगावै । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै । ते क्षमा कल्याण सदा पावै ॥ ७ ॥ (श्रु०) ॥ इति आगम स्त० ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कार्त्तिक चौमाशाधिकार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ कार्त्तिक महिनेंमें मिती कार्त्तिक सुद १४ कैदिन । सब मन्दर दर्शन करनेंकों जाना । व्याख्यान सुणना । सामायकादिक धर्मकृत्य करना (इत्यादिक) सर्व अधिकार पूर्व, आसाढ चौमाशे तुल्य जानके, कार्त्तिक चौमाशेका सेवन करै ॥ इति कार्त्तिक चौमाशा सेवनविधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमाशीका अधिकार लि०॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम कार्त्तिक वद १ सें सेत्रुंजरास सुणें । निवी (वा) एकाशणा, व्याशणादिक तप करें । दोनुं टंक पडिक्कमणो करें । देव वंदनादिक करै । (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इसीको एक जाप सदा करें । शक्ति होय (तो) सिद्ध गिरी जात्रा करनेंको जावै । काती

पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै । अठाही महोछव करै । विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै (२१) वेर सेत्रुंजरास सुणें । ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अनन्त सिद्धाय नमः । इसी पदसें (२१) जेती देवै । (कदास) सिद्ध गिरी जाणें की सक्तिन होय (तो) जहां सिद्ध गिरीका पटमंड्या होय । उहां महोछव संयुक्त दर्शन करनेंको जावै। पूजादिक सब विधि करै। छठ भत्त करके (वा) चतुर्थ भत्त करके। इस पर्व को आराधन करै।·गुरुभक्ति करै। साहमी वछल करै। (इत्यादिक) विधिसंयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करनेंसें। सर्व अशुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥※॥ (इस दिन) श्री द्रावड़ वारखिल्ल प्रमुख दशाकोड़ि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए (जिससें) इस दिन (जो) धर्मकृत्य किया हुवा, निस्संदेह दशकोड़ि गुणा फलै। (इस) भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरी के समान, कोई उत्तम तीर्थ नहिं। (मैं पिण सन्) उगणीसै तीशमें। चैत्रीपूनमकों जात्रा करता हुवा। सब भगवंतके विंवोंका दरशण करके गिणती किया (सो) बारै हजार। तीनसै। अठावन १२३५८ विंव हुवा। और बहुत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना है। अनन्ता साधु अणसण लेके परम पदकों प्राप्त भए हैं (इसीसें) जो आसन भव्वी जीव होंगे (सो) सुद्धभावसें इस तीर्थकों सेवन करेंगे। और जो सेवन करते हैं। उसी पुरुषोंकों नमस्कार है। उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सिद्धगिरीके स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (देशी गरवानी। ते दिन क्यारे आवसी हे। (जोरे वहिनी)। जासुं सिद्धाचलनी जात (मोरी सहीयां हे)। पाजै चढतां प्रेम सुंहे। (जोरे वहिनी)। गाइयैं गुण अखियात। (मोरी सहीयांहे। तेदि०) ॥१॥ अदभुत ऊंचो देहरो हे। (जोरे वहिनी) मूल नायक आदिनाथ। (मोरी सहीयां हे)। भोली भगत भली परै हे। (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ। (मोरी० ते०) ॥ २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे। (जोरे०) पहिर खीरोदक चीर। (मोरी०) केसर भरीय कचोलड़ी हे। (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुधीर। (मोरी० ते०)॥ ३ ॥ रूड़ी रायण छांहड़ीहे। (जोरे०) आदि जिणंद उदार। (मोरी०) तिहां जगनाथ समो सखा हे। (जोरे०) पूरव निनांणुं

वार। (मोरी० ते०) ॥४॥ इण गिर वरियै ऊपरा हे। (जोरे०)। सीधा साधु अनंत। (मोरी०) चौमासे रह्या दोय जिनवरा हे। (जोरे०) अजित जिणेसर शांति। (मोरी०ते०) ॥ ५ ॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिला हे। (जोरे०) अद्भुत उलका झोल। (मोरी०) सिद्धवड सेत्रुंजै नदी वहै। जोरे० करियै नित रंगरोल। (मोरी० ते०) ॥ ६ ॥ इण डूंगर दीठां थकां हे। (जोरे०) ऊपजे परमानंद। (मोरी०) गहिरी गिरवर गंदडी हे। (जोरे०) चाहैं नित जिणचंद (मोरी० तेदि०) ॥७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम्॥१॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिरजइयै ॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा। आदिजिनंद इम भाखी। भरथादिक नरपतिनें आगल। इंद्रादिक सहु साखीरे (आज०) ॥ १ ॥ इण गिरवरियै काल अनंते। साधु अनन्ता सीधा। जनम मरणनां दुख छोमीनें। अमल अखय गुण लीधारे (आ०) ॥२॥ इण गिर सनमुख पगला भरतां। आतम सुद्ध सुभावै। कोम भवांरा पातिक कीधा। एक पलकमें जावैरे (आ०) ॥३॥ सासतो तीरथ ए सेत्रुंजो। जोतां लागै मीठो। तीन भुवनमें इण गिर तोलै। वीजो कोइन दीठोरे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीनें। आगे उलग करस्यां। अद्भुत आदि जिनेसर निरखी। प्रेम सुधारस पीस्यांरे (आ०) ॥ ५ ॥ पुहसुगंधा लेइ पचरंगा। हार सुगंधा गूंथी। पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां। शिव मारगनी सूधीरे (आ०)॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां। जात्र निनाणूं करियैं। मन गमती भमती विचभमतां। भव सायर निसतरियैरे (आ०) ॥ ७ ॥ पूरवनिनाणूं वार प्रथम जिन। राय णरूंखे आया। ते तीरथ सुभ भावै फरसी। करियै निरमलकायारे (आज०) ॥ ८ ॥ ज्ञान चंदे ए गिरवर लहियै। कहै इम केवल नाणी। श्रीजिनचंद सदा हित वछल। प्रेम घणुं चित आणीरे (आ०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥ ※ ॥ (श्रीचंद्रा प्रभू प्राहुणोरे ए देशी) ॥ ※ ॥ नमोरे नमो सेत्रुंज गिरीरे। त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे। पाप पमल दूरै टलैरे। तूटै करम जंजालरे। (नमो०) ॥ १ ॥ पूरव निनाणुं समोसर्यारे। प्रथम

जिनंद जगदीशरे । वावीशम जिनवर विनारे । समो सख्या तेवीशरे । (नमो०) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे । सीधा एहीज ठोमरे । काल आगामी वलि सीझस्यैरे । साधु अनन्ती कोमिरे (नमो०) ॥ ३ ॥ अनंत कल्याणक भूमिकारे। महिमावंत महन्तरे । सासतो तीरथ ए सही रे । अतिशय जास अनन्त रे (न०) ॥ ४ ॥ कोमि भवंतर जेकियारे पातिक विविध उपाय रे । सेत्रुंजै सनमुख चालतां रे । पग पग ते सङ्ख जायरे । (नमो०) ॥५॥ धनदिन तेहीज जाणसुंरे । वहिस्युं सेत्रुंज केरी वा टरे । छहरी यथाविध पालस्यूंरे । संघ सहित गहिगाटरे (नमो०) ॥ ६ ॥ पगपग उछव अति घणारे । पग पग जाचक दानरे । प्रेम भगति साहमी तणीरे । जीर्णोद्धार प्रधान रे (नमो०) ॥ ७ ॥ धन ते गिर राय निरखसुंरे । वढती मंगल मालरे । मणि मोतीयडे वधावस्युं रे । रजत सोवन भर थालरे (नमो०) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युंरे । करस्युं पावन मोरी का यरे । भगति जुगति जुहारसुं रे । नाभि नन्दन जिन रायरे (नमो०) ॥९॥ द्रव्य भाव करसुं मुदारे । पूजा विविध प्रकाररे । भावै भावना भावसुं रे । करसुं सफल अवताररे (नमो०) ॥ १०॥ रतनत्रयी भमती भली रे ।देसुं ते धर बुद्धिरे । भव भव भ्रमण निवारसुंरे । लहिसुं आतम सुद्धिरे ॥ (न मो०)॥ ११ ॥ विध फरसण मन माहरोरे । मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य प्रबल थीपामियो रे । उज्जलगिरी केरी जातरे (नमो०) ॥१२॥ नाथ धूलेवा सु पसाय थीरे । कारज सगला सिद्धरे । कहै जिन हरष सूरी सदारे । होय जो मंगल वृद्धरे (नमो०) ॥ १३॥ इति सिद्धा० ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (देशी पंथीडानी) ॥ अंग उमावो मोनें अतिघणो । भेटवा वि मल गिरंदरे । (पंथीमा) । नाभिराया कुल चंदलो । जिहां वसै मरुदेवी नन्द रे । (पंथीमा) । विहिलुं बोलैरे पंथी हारा वहिलुं बोलैरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजो छै कितनीक दूररे (पंथीमा वहि०) । पाली ताणो नगर सुहामणो । रूमी ललिता सरनी पालरे (पंथीमा) । जिहां अंबलारे वमला घणा । झुक रही चंपलारी मालरे (पंथीमा) वहि०) ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा । सेत्रुंज वसिया छै सोररे (पंथीमा) । ऊमाहो करीनें जे घर रहै । मांणस

नहीं ते ढोर रे। (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटैजी चालतां। झीणी झीणीकर्मै खेहरे। (पंथीमा)। मैला थायै संघना कापमा। निरमल थायै देहरे। (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ३ ॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो। आगल चौक विसाल रे (पंथीमा)। जिहां मिलमिल घणा मानवी। गावैं प्रभुगुण मालरे। (पंथीमा वहिलुं०) ॥ ५ ॥ घस केसर भरवाटका। पजे जिनवर अंगरे। (पंथीडा)। फूलाहंदो सौहै प्रभुसिर सेहरो। दिवलानी जोति अभंगरे। (पंथीडा व०) ॥ ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरैं। ऊपजै परम आनन्दरे। (पंथीमा) मोनें भेटणरोजी कोमतै। प्रेम घणें जिनचंदरे। (पंथीमा व०) ॥ ७ ॥ इति सिद्धा चलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमल गिर (जात्रा०) ॥ पूरवनिनाणूं वार सेत्रुंज गिर। ऋषभजिनंद समोसरियै (विम० जा०)। कोडि सहस भव पातिक तूटै। सेत्रुज सामें मग भरियैं। (विमल० जा०) १ ॥ चौथ छठ दोय अठम तपस्या। करि चढियै गिरवरियै। (वि० जा०) पुंमरीक पद जपियै हरखें। अध्यवसाय शुभ धरियै (वि० जा०) ॥ २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै। हिंसक पिण ऊधरियै (वि० जा०)। भूमि संथारीनें नारितणो संग। दूर थकी पर हरियै (वि० जा०) ॥३॥ अेकल आहारीनें सचित्त परि हारी। गुरु साथे पद चरियैं (वि० जा०) पमिकमणा दोय विवसुं कीजे। पाप पमल विप हरियैं (वि० जा०) ॥ ४ ॥ कलि काले ए तीरथमोटो। प्रवहण सम भवदरियैं (वि० जा०)। उत्तम ए गिरवर सेवंतां। पदम कहै भवतरियै। (विम० जात्रा०) ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज वधाई म्हांरै रंग वधाई। मोतीयमे०। ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सिद्धगिरी भेटो भवि भावे। ज्युं सुखसंपति आनंद थावैं। सि० ॥ ए गिरवरकैं भेटणसेती। पूरव संचित अघ सङ्ग जावैं ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ रायणरुंखे रिषभ जिनेसर। पूरव निनाणुं आया स्वभावैं ॥ सि० ॥ पुंमर गिरकी महमा जिननें। भरतादिक सब जनकुं सुणावै ॥ सि० ॥२॥ सासतो तीरथ तीन भुवनमें। शिवपुरि पाज प्रत्यक्ष कहावै ॥ सि० ॥ को

न्नि अनंत साधू इण ऊपर । मुक्तिगये इण गिरके प्रन्नावै ॥ सि० ॥ ३ ॥ एकवार गिरकुं न्नेटणसें । सहस कोमना पातक जावै ॥ सि० ॥ नान्निराय मरुदेवीके नन्दन । आदिजिनंद न्नेट्यां सुखपावै ॥ सि० ॥४॥ अदन्नुतबिंब अनोपमसोन्नित । चौमुख जिनवर अति मनन्नावै ॥ सि० ॥ देशदेशांतरसें वढ्ढ नरगण । आय न्नलीविध पूज रचावै ॥ सि० ॥५॥ कपूर कस्तूरी केसर घोली । मनसुध प्रन्नुके चरणें चढावै ॥ सि० ॥ आज हमारै सुरतरु प्रगट्यो । मनमें हरष आनन्द न्नरावै ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवी कंचनमइ ऊगो । विमलाचल न्नेट्या सुन्नन्नावै ॥ सि० ॥ मकसुदावाद अजीमगंजमें । गोत्र दूधेड्या प्रगट कहावै ॥ सि० ॥ ७ ॥ मोहतिमर अघ दूर करणकुं । बुध सिंह जात्राकरी सुन्नन्नावै ॥ सि० ॥ गगन जोग ग्रह इंड संवद्धर । चैत्रउज्वल तेरस मन न्नावै ॥ सि० ॥ ८ ॥ आग्रहसें श्रीअजयराजकुं । साथ न्नलीबिध जात्रा करावै ॥ सि० ॥ संघ साथ श्री लक्ष्मी प्रधानना। शिष्य मोहन प्रन्नुना गुणगावै ॥ सि० ॥ ए ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनःराग बेलाउल प्रन्नाती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आज सकल मङ्गलमिले । आज परमाणंदा (इस चालमें)॥❋॥

॥ ❋ ॥ आज पुंमरगिरि न्नेटिया । प्रगट्यो परम आनन्दा । मोहतिमिर दूरै न्नये । न्नागा न्नव न्नय फंदा ॥ आ० ॥१॥ मरुदेवाजीके लामला । नान्निरायके नंदा । रिषन्नजिनेसर सुख करू । दिनमणिज्युं दीपंदा ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ पूरवनिनांणुं रायणतलै । आया प्रथम जिणंदा । नेम विनां सङ्गजिनवरै । इन गिरकुं सेवंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥ कलुकालै इण न्नरतमें । तारण ऊाऊ समंदा । अनन्त जीव मुगतै गया । बीतराग न्नाबिंदा ॥ आ० ॥ ॥ ४ ॥ चौमुख जिननें आदले । नववसि विंब सोहंदा । आतमागुण निरमल करी । मोहन सुःख पावंदा ॥ आ० ॥५॥ इति सिद्धगिरि स्तवनं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ लघुसेत्रुंजरास लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उहा ॥ आदिजिनंद दिनंदसम । ज्योति रूप जगतेय । आतम गुण परकास कर । न्नवियणकुं सुख देय ॥ १ ॥ वाग्देवी प्रणमी करी । सद्गुरु सीस नमाय । सिद्ध क्षेत्रनां गुण कहुं । सुमतानें सुपसाय॥ २॥ सुमता वचने चालतां । सदा सुरंगी देह । सुरपति नरपति सङ्गनमें ।

पामेंशिवसुख तेह ॥३॥ सुमता जिम चेतन भणी । समझावे चित आय । प्रथम वात एही कहुं । सुणो भवी चितलाय ॥ ४ ॥ ॥ ढाल १ मारू जीकी ॥ ॥ सुमता कहे चेतन भणी । साहिबजी । ऐमो मिथ्या जालहो । इक चित्ते एगिरि सेविये ॥ सा० ॥ ज्यो निज गुण नी चाहहो ॥ इक० ॥ १ ॥ काल अनादीसें रह्यो ॥ सा० ॥ कुमति कथन वस होयहो । भवमांहे भमतां दुखसह्या ॥ सा० ॥ २ ॥ जन्म मरणकरि नव नवा ॥ सा० ॥ नटज्युं वेश व नां वहो । चउगतिमें नाटक तुम कियो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें तुम रह्या ॥ सा० ॥ क्षण नहिं पाम्यो सुःख हो । किम भूलो दुख देखी जिसा ॥ सा० ॥ ४ ॥ देव मनुष्य अवतार में ॥ सा० ॥ मोह विटंबणादुःख हो । चित्तधरने दुर्जन गंभिये ॥ सा० ॥ ५ ॥ वल अपणो फोरयां वि नां ॥ सा० ॥ दुर्जन नपमे पायहो । जराखीजे दुर्जन क्षय करी ॥ सा० ॥ ६ ॥ मुझकुं कदेय न संभरी ॥ सा० ॥ तोपिण अवसर देखहो । तुमआगे वात सहु कही ॥ सा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर जिणनें कह्यो ॥ सा० ॥ होय गुण अवगुण जांणहो । वलि जांणें मित्र कुमित्रनें ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुझसें प्रेम धरी करी ॥ सा० ॥ कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मारग उत्तम आदरो ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारित्र धर्मनी आगन्या ॥ सा० ॥ धारो शिर पर आजहो । जिम पामो रंग वधामणा ॥ सा० ॥ १० ॥ सुध सरधा जलकुं ग्रही ॥ सा० ॥ वोवो समकित वीज हो । नवपल्लव धर्म तरू हुये ॥ सा० ११ ॥ उत्तम नर सुरपति पणो ॥ सा० ॥ पुष्प सुगंधी जाण हो । फलइणका शिव सुख पांमस्यो ॥ सा० ॥ १२ ॥ उत्तम ग्यांन प्रकाशसें ॥ सा० ॥ सहु देखे निजरूप हो । परमातम पदकुं पिछांणिये ॥ सा० ॥ १३ ॥ तुं मुझ वल्लभहे सदा ॥ सा० ॥ ॥ तुम गुण अपरं पारहो । परमातम पद तुंही अछे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पिण निश्चे व्यवहार में ॥ सा० ॥ निश्चे नयकुं जांणहो । व्यवहारे शुध्द क्रिया करी ॥ सा० ॥ १५ ॥ निज निज शक्ति अनुसरे ॥ सा० ॥ पालै व्रत मन शुध्दहो । नव पदनो ध्यान हिये धरी । सा० ॥ १६ ॥ सिध्द गिरी प्रवहण चढी ॥ सा० ॥ वेगै शिवपुर जायहो । भव सायर पार पामो सुखे ॥ सा० ॥ १७ ॥ इण परि सुमता आयके ॥ सा० ॥ समझावे भवि चित्तहो । सुखपांमे समझे भविजिके ॥ सा० ॥

॥※॥(दुहाः) ॥ इणपर सुमता वयणसुण। आसन नवी जीव। हरख धरी व्रत आदरे। धर्म अमृत रस पीव ॥१॥ सिद्ध गिरी इक अवसरे। आयावीर जिणंद। इन्द्रादिकसह्ु आयनें। वांद्या धर आणंद ॥२॥ सिद्ध गिरीना गुणसहू। सुणवा नवि चितधार। प्रभुपद पंकज नमण कर । बैठा करि इकतार ॥ ३ ॥ नगवन् दीनी देशना। सिद्धगिरी सम आज । जगमें कोइ तीरथ नहीं। परतिख शिवपुर पाज ॥४॥ काल अनादीसें रह्यो। नाम ठाम पर सिद्ध साधु अनंता इण गिरे। अणसण लही सिव लिद्ध ॥५॥ नामलियां सहु नयटले। दुख दालिद्र जाये दूर। दिनदिन अधकीसंपदा। पांमे सुख नरपूर॥६॥
॥※॥ (ढाल२) ॥ जंबूद्वीप मांहे कह्योरे लाल । दक्षिण नरत प्रमाणरे। (नविकनर) सहु देशां मांहे सिरैरे लाल। सोरठ देश वखांणरे ॥ न० ॥ इण गिरनी महमा वमीरे लाल। कहे न सके कोई पाररे ॥ न० ॥ (वीर जिनंदै नाषियोरे लाल) ॥ २ ॥ विमलाचल प्रणमुं सदारे लाल। श्राद्ध गुणां समनांमरे ॥ न० ॥ घर बैठां शुन्न नावथीरे लाल । ध्यान कीयां सुख पांमरे ॥ न० ॥ वी० ॥ ३ ॥ प्रथम अनादी कालसैंरे लाल । अनंत सीधा इहां आयरे ॥ न० ॥ अनंत साधु वलि सीधसीरेलाल। प्रणमुं ए गिरिरायरे ॥ न० ॥ वी० ॥ ४ ॥ फागुण सुदि दशमी दिनैंरे लाल। पुरब निनांणुं वाररे ॥ न०॥ आदि जिणंद समोसर्यारे लाल। चरण नमुं सुखकाररे ॥ न० ॥ वी० ॥ ५ ॥ पुंमरीक गणधर नमुंरे लाल। पंचकोमि मुनिसाथरे ॥ न० ॥ चैत्री पूनम दिन आयनैंरे लाल। फाली शिवपुर वाथरे ॥ न० वी०॥ ६ ॥ नमि विनमि दोदो कोमसैंरे लाल। इणगिर कीनो वासरे ॥ न०॥ फागुण सुद दसमी दिनैंरे लाल। अविचल ज्योति प्रकाशरे ॥ न० ॥ ७ ॥ नमि पुत्री चौसठ कहीरे लाल। अणशण लही शिव पायरे ॥ न०॥ द्रावड संग काती पूनमैंरे लाल। दसकोडि सीधा इहां आयरे ॥ न०॥ वी० ॥ ८ ॥ राम नरत पांमव कह्यारे लाल। वलि नारद नव आयरे ॥ न०॥ थावच्चा सेलग मुनीरे लाल। जालि मयाली शिव पायरे। न० ॥ वी०॥ ए ॥ अजित शांति चौमासौ रह्यारे लाल। नविजीवां हित काजरे ॥ न० ॥ नेम विना सब आवियारे लाल। एशिव पुरनी पाजरे । न० ॥ वी०॥१०॥ साधु अनंता प्रतिकंकरेरे लाल। सीधा ध्यान लगायरे

भ०॥ मनमोहन गिरि सेवतां रे लाल । पातिक दूर पुलायरे ॥ भ०॥ वी० ॥ ११ ॥ (दुहाः) ॥ करजोमी नितप्रतिनमुं । सहू साधु मनभाय । सेत्रुंज महातम ग्रन्थसें । भेद सुणो चितलाय ॥ १ ॥ भरता दिकसें आजलग सोले उद्धार कहाय । ग्रंथान्तर में जेहना । भेद कह्या समजाय ॥२॥ संप्रतिकाले एरह्यो । षोडसमो उद्धार । करमचंद मोसी तणो । जशरह्यो जग विस्तार ॥३॥ देव भुवन जिम सोभता । नववसि चैत्यना भाव । सुरपति नरपति सहुनमें । प्रगट्यां आतमदाव ॥४॥ सहु विंबनी संख्या कहुं । जेनववसिमें होय । मूलनायक वसिनांममें । प्रगट कहुं हुं जोय ॥५॥ (ढाल३) ॥ ※ ॥ नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी रे । (ए चाल) ॥ ※ ॥ प्रणमुं ए गिरिरायनें रे । धन्य दिवस थयो आजरे । सुमतानें सुपसायथी रे । मनवंछित फल्या काजरे ॥ १ ॥ प्र०॥ प्रथम विमल वसि आयनें रे । पूज्या जिनप्रति विंबरे । सहु चैत्यामें सोभतारे । छप्पनसै छप्पन विंबरे ॥ २ ॥ प्र० ॥ नाभिराय सुत जाणियै रे । मूल नायक छवि शांतिरे । मोतीवसीमें विंबरह्यारे । पचवीशसै बयालीस क्रांतिरे ॥३॥ प्र० ॥ वालावसिमें सोभतारे । च्यारसै पट् विंबजाणरे । मूलनायक दोनुं वसीतणारे । आदिनाथ गुणखांणरे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अद्भुत विंब मनोहरूरे । इग्यारै कर ऊंचो जाणरे । विस्तारमांन नवहाथनोरे । मुझव ल्लभ जिम प्राणरे ॥५॥ प्र० ॥ चौथी प्रेमावसि ऊं नमुंरे । आदिनाथ जगनाथरे । पांचसै अप्टतीश जिहां रह्यारे । विंब मिल्यां सहु साथरे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अजितनाथ स्वामी तणी रे । पांचमी हेमावसि थायरे । अप्टसठ ऊपर तीनसै रे । विंबनमुं गुण गायरे ॥ प्र० ॥७॥ उजमवसी छठी जांणियै रे । पद्मप्रभू जगभांणरे । रिखभानन चंद्राननेंरे । वारिखेण व्रधमांनरे ॥ ८ ॥ प्र०॥ वावन जिनांला सास्वतारे । चौमुख नंदीसर भावरे । च्यारसै गुणतीश सोभतारे । विंब अनोपम रावरे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ मूलनायक पार्श्व प्रभुतणीरे । प्रतिमा साकरवसि मांयरे । और तयांसी विंवछैरे । नयणेदीठां सुख पायरे ॥ १० ॥ प्र० ॥ आदिनाथ छीपावसीरे । वीशविंब सुविसालरे । नवमी खरतरवसि विंबनीरे । ओपमा रविजिम भालरे ॥ ११ ॥ प्र०॥ आदीशार चौमुख तणी रे । प्रतिमा च्यार सुख दायरे । और विंब ते वीशसैरे । पंचदश देप्यां मनभायरे ॥१२॥ प्र० ॥ वारै सहस त्रिणसै ऊपरैरे । अगाव

न वलि होयरे । इम नववसि सङ्घ विंबनीरे । संख्या कहीमें जोयरे॥१३ प्र०॥ पांम्डव मंदर जाणियेंरे । मरुदेवी टुंक सुखकाररे । शाशनदेवीनी मंदरी रे । नेमचवरी धर्मद्वाररे ॥ १४ ॥ प्र०॥ रायण तल पगलानमुंरे । गणधर मंदर जायरे । चवदैसे बावन तणारे । नित नित प्रणमुं पायरे ॥ १५ ॥ पुंम्डरीक ळविमोहनीरे । देष्यां मनवस थायरे । न्नीमकुंम्ड सुचिजल न्नस्योरे । सर्यंकुंम्ड जलनायरे ॥ १६ ॥ प्र०॥ त्रिण षट् वारै गाउनीरे । न्नमती देउं तीनरे । ळलका झोल दरशण करीरे । सिद्धसिला सिद्धचीणरे ॥१७॥प्र०॥ चेलणा तलाई सोन्नतीरे । अजित शांति थुंन्न आतरे । न्नाडवाडूंगर हस्तगिरीरे । कदमगिरी कीनीजातरे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ इत्यादिक दरशण करीरे। सिद्धवड सेत्रुं आयरे । अगिणत चरण प्रन्नुतणारे । नमणकरुं मन लायरे ॥ १९ ॥ प्र०॥ देवपुरी जिम सोन्नतोरे । डूंगर अतिहि विसालरे । सङ्घजनपदना जात्रवीरे । पूजै सहस मिल न्नालरे ॥ २० ॥ प्र०॥ इम सिद्धगिरि मन लायनेंरे । त्रिकरण नमुं त्रिळुं कालरे । ओर नमुं सङ्घ न्नव्यनेंरे । जे शुध आग्या पालरे ॥ २१ ॥ प्र०॥ प्रतिदिन एगिरवर चढीरे । अष्टद्रव्य लेई हाथरे । द्रव्य न्नाव पूजा करैरे । मोहन सङ्घ जगनाथरे ॥२२॥ प्र०॥ ॥※॥ (दुहा) ॥ इण परि संख्या विंवनी । करि आतम सुखदाय। अधिक विंव कोइ थापसी । नमसुं चित्त लगाय॥१॥ मंदबुद्धि संयोगसें । रही होय कछु न्नूल । तोपिण ओगुण ढांम्डके । संघ ळुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रवल पुन्य संयोगसें। मुझ सरिया सवकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजगजश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप न्नावना । न्नेद धरमना च्यार । न्नावविनां सङ्घ ळारसम । न्नाव सङ्घ मुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । न्नगवन वचन प्रमाण । न्नाव धरी प्रन्नु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥ शिव सुखसें वेमुखजिके। मिथ्या दृष्टी जीव। जिन प्रतिमा उत्थापकर बांधे न्नवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे जगमें। मुझ आवे शुन्न न्नाव । मन वंछित सुख जव मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥७॥ चिंतामणि सुरतरुसमो। एतीरथ सुखकार। दिनप्रति गुणकुंसमरके। पामुं न्नवजल पार॥८॥ (ढाल) सेत्रुंजसाधु अनंतासीधा (इस चालमे) एतीरथनी अद्भुत महमा । धारो चित्तमझाररे । पंचप्रमाद विषय सुखळंम्डी । न्नेटो गिरि सुखकाररे ।एती०॥१॥

मनुषा जन्म पायके जेभवि । भेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरभावासै कहिये पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए ०॥२॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उथापे निज बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो भमसी । डुर्लभ पामें सिद्धरे॥ए०॥३॥ इम जां णी मन भावधरीनें । भवि मिल आवेधायरे । ग्हरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ मन भायरे ॥ ए०॥४॥ इह भव परभव मांहेकीधा । जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सऊ चोररे ॥ ए० ॥५॥ रोग सोग स ऊनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । डुष्ट देव देवी कामण सऊ । भागे तीरथ जो ररे ॥ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रभु साखे । पापमेल सऊ धोयरे । क्षिणमें निजगुण उज्वलपामें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए०॥७॥ समकित धारी जे सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्यै । पूजा करे स ऊ कोयरे ॥ ए०॥८॥ देव सहाये सऊ संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत उपद्रव भय नहिंव्यापे । डुख दालिद्र सऊ खोयरे ॥ए० ॥९॥ तीरथ जात्रा कर तीरथनी । भगति करो मन शुद्धरे । तिर्थकर पिण तीर्थनमीनें । देउपदेश सुबु द्धिरे ॥ए०॥१०॥ निज निज शक्ति प्रमाणे जेभवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । ख रचे निज मन भाव धरीनें । पामें सऊ जगकित्तरे ॥ ए० ॥११॥ जिम ती रथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पाम्या आजरे । इण विध विंबचरण स ऊ वंदी । सास्या आतम काजरे ॥ ए० ॥१२॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशै सन् उगणीसे तीशरे । धन्यघमी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिभुवन ईशरे ॥ए० ॥१३॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिषभदेव जिनरायरे । एहीजदेवरक्षा त्रिभुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए०॥१४॥(डुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं सुणोगरीवनिवाज । कर्म सघन दूरेकरी । दीजे त्रिभुवन राज ॥ १ ॥ मोसे अधम संसारमें । कर्म सघन वस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांमुं पद तोय ॥२॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रभु अचरज नहि अचरज मुऊनें काज ॥३॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सऊ अपराध । तु मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥४॥ तीन तत्व चोलरंगसें । रंगाणी मुऊदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढें नहिरेह ॥ ५ ॥ तुम सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन व चन लगाय ॥६॥ इम वीनति प्रभुनी करी । समकित निरमल काज । ऊ

व्य क्षेत्र काल भाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥७॥ रत्न जडित सिंहासणें। रयण आभूषण सार। अद्भुत रथ बैठे प्रभु । उच्छव करे नर नार॥८॥ (ढाल)॥ आज महोच्छव रंगरलीरी (इस चालमे) । आज उच्छवदिन मुझमन भायो ॥आ०॥संघसकु मिल गावे वधाई। रथ बैठा सोहे जिन रायो ॥आ०॥ ॥१॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी अंवर रहिगयो ॥ आ०॥२॥ मकसुदावाद पूरब दिश छाजे। अजीमगंज गंगापार वसायो ॥आ०॥३॥ वुधसिंह विसनचंद मिलभाई । गोत्र दुधेड्या मांय कहायो ॥आ०॥४॥ गिरि महमासुण भाव धरीनें । विधसें जात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक संघ सवायो ॥आ०॥६॥ आज अंगणमोय सुरतरु फलियो । दुखदालिद्र सकु दूरगमायो ॥आ० ॥ ७ ॥ आजमनोरेथ सकु मुझ फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥आ०॥८॥ गुरु खरतर जिन आग्या पालक । सोहे हंससूरि महारायो ॥आ० ॥९॥ पाठक पद लायक गुणसोभित । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥आ०॥१०॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक। पंडित लक्ष्मी प्रधांन पसायो॥आ०॥११॥ तासुशीश मोहन हित जांणी। उत्तम ए तीरथ गुणगायो ॥आ० ॥ १२ ॥

॥॥ पुनः ॥॥

॥ ॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यारे । धन्य भाग हमारा । सिद्धा० ॥(टेर) ए गिरवरनी महमा मोटी । कहतां नावै पारा । रायण रूख समो सर्या स्वामी । पूरव निनाणूं वारारे ॥ ध०॥ सि० ॥ १ ॥ मूल नायक श्री आदि जिनेसर । चौमुख प्रतिमा चार । अष्टद्रव्य सुं पूजा भावै । समकित मूल आधारारे ॥ ध०॥सि०॥२॥ भाव भगतिसुं प्रभुगुण गावै । अपणा जनम सुधारा । यात्राकरी भविजन शुभ भावै । निरय तिर्यंच गति वारारे ॥ ध० सि०॥३॥ दूर देशांतरथी हुं आयो । श्रवण सुणी गुण ताहरा । पतित उधारण विरुध तुमारो । ए तीरथ जग सारारे ॥ धन्य०॥ सि०॥ ४ ॥ संवत अढार बयांसी आषाढै । वदि आठम भोमवारा । प्रभुजीके चरण प्रतापसंघमें । कुमारतन प्रभु प्यारारे ॥ ध० ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥॥ भावधर धन्य दिन आज सफलो गिण्यो । आजमें सजनि आ

नद पायो ॥ भा० ॥ हर्ख धरि निजरि भरि विमलगिर निरखकर । रजत मणि कनक मोतिय वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पगै उमगधर पंथनित पूछतां । धन्य दोय चरण जिहां तलक आयो । आज धनदीह जागी सु कृतकी दिशा । आज धनदीह दिन सुजश गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर डर गत टलिय यात्र विधसुं करी । पुन्य भंभार पोते भरायो । वदत जिनराज मनरंग सुरगिरि सिखर । रिषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥
॥ इति सिद्धगिरी स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति कार्त्तिक माश चतु पर्वाधिकारः ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मार्गशीर्ष माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मिगसर महिनेमें मिती मिगसर सुद ११ (सो) मोन इग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिन दैढसै कल्याणक हुये (सो लिखते हें) जन्म । दिक्षा । केवलज्ञान । यह । तीन कल्याणक । श्रीमल्लिनाथ स्वामीके हुये । श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी ॥ श्रीनमिनाथ स्वामीनें केवल ग्यान उतपन्न भयो । (ऐसें) इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चौवीशीके पांच कल्याणक हुए (इसी माफक) पांच भरत । पांच ऐरवतमें । चौवीशीके पांच२ कल्याणकमिलानेंसें । पचास कल्याणक हुये अतीत । अनागत । वर्त्तमान । कालके अपेक्षायें । दैढसै कल्याणक हुये । इसीसें यह दिन वमा उत्तम है (इस दिन) मोन संयुक्त उपवास करै । अठ पहरी पोसो करके । मोन इग्यारसको गुणनो करै । पोशहकी शक्ति न होय (तो) देशावगासी लेके गुणनो करै । (एसें) इग्यारै वरशमें, इग्यारे उपवास करै । और (जो) इग्यारस करनेंकी इछा हो (तो) माशमें वद सुदकी । दोनुं एकादशी । इग्यारै वरश, इग्यारै महिनां करै । यह तपस्या करतां, इग्यारै अंग शुद्धभावसें सुणें । इग्यारै अंग लिखायकै देवै । पढनें वालूं का सहाय्य करै । तपस्या ग्रहण करनेंको (पारनेंको) गुरूके मुखसें विधि करै । (समवसरण वैठा भगवंत०) इत्यादि इग्यारसको स्तवन पूर्व लिख्यो है । सो पढै (वा) सुणें । पीछे उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी पूजा करै । यथाशक्ति सादमीवछल करै ॥ ※ ॥ इति विधि ॥ ※ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मोन एकादशीको गुणनो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत २४ जिनपंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १ ॥

॥❀॥ प्रथम ॥❀॥

४ ॥ श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

॥❀॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥❀॥२॥

२१ ॥ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ४ ॥

॥❀॥ द्वितीय ॥❀॥

४ ॥ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकरनाथाय नमः
६ ॥ श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

॥❀॥ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान२४ जिनपंच कल्याणक नामः ॥❀॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकी खंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥❀॥ ६ ॥

४ श्री सांप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुष्करार्द्धपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥७॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपंच कल्याणक०॥※॥८॥

२१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥९॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ।
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥१०॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥११॥

२१ ॥ श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ नाथाय नम ॥
१९ ॥ श्रीअक्षोभ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्रीमल्लिसिंह नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥ १२ ॥

४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री पौपनाथाय नमः

॥ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॥१२॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्री प्रलंबसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रशमजित नाथाय नमः ॥

॥ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॥१४॥

२१ ॥ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री प्रसाद नाथाय नमः ॥

॥ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॥ १५ ॥

४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेंद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीभ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीरिषभचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॥१६॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री दयांतसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नमः ॥

॥ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ॥ १७॥

२१ ॥ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ॥१८॥

४ ॥ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीव्रतधर नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्रतधर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीनिर्वाण नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अतीत २४ जिन पञ्च कल्याणक नामः ॥※॥१८॥

॥ प्रथमः ॥

४ ॥ श्री सौंदय सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥※॥२०॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोपित अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोपित नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोपित सर्वज्ञाय नमः ॥
२० ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२१॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः॥
७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नमः॥

॥※॥ पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥※॥२२॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री अष्टाह्निकसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२३॥

२१ ॥ श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः
१९ ॥ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः॥
१९ ॥ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः॥
१९ ॥ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः
१९ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुषकरार्द्ध पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥२४॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥२३॥

॥※॥ प्रथम ॥※॥

४ ॥ श्रीपुरूरव सर्वज्ञाय नमः ॥
३ ॥ श्रीअवबोध अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीअवबोध नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः॥
७ ॥ श्रीविक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः॥※॥२६॥

२१ ॥ श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः॥
१० ॥ श्रीहर अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर सर्वज्ञाय नमः॥
१८ ॥ श्रीनन्दकेश नाथाय नमः॥

॥※॥ धातकीखंडे पश्चिमऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥२७॥

४ ॥ श्रीमहामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअसौचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः ॥

॥※॥ पुष्कराર્द्ध पश्चिमऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः॥※॥२५॥

॥※॥ द्वितीय ॥※॥

४ ॥ श्रीअश्ववृन्द सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीवर्द्धमान नाथाय नमः ॥

॥※॥पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक०॥※॥२८॥

२१ ॥ श्रीनन्दिक् वर्द्धमानाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीविवेक नाथाय नमः ॥

॥ ※ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥※॥३०॥

४ ॥ श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीआरण नाथाय नमः ॥

॥ ※ ॥ इति श्रीमौन एकादशी गुणनो संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनेंसें दैढसै माला होय (जो) भव्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे (सो) अल्प भवमें अनंत सुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष माश पर्वाधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ पोष महिनेंमें, मिती पोषवद १० (सो) पोष दसमी नामसें पर्व प्रशिद्ध है। इस दिन श्री पार्श्व नाथ स्वामीका जन्म कल्याणक है। इसीसें यह दिन श्री संघमें परम आनंदकारी है। इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको अधिकार सुणें। एकाशणादिकको पच्चक्खाण करै। जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रशिद्ध होय। उहां यात्रा करणें को जावै। कदास यात्रा करनें कों न जाय सकै (तो) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी स्थापना होय। उहां महोछव संयुक्त दर्शण करनेंकों जावै। जलजात्रादिक महोछव करकै अष्टोत्तरी स्नात्र करावै (अथवा) पंचकल्याणकजीकी (वा) सतर भेदी पूजा करावै। रात्री जागरण करावै। तोरण बांधै। गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरै के उछव करै (और) जन्म कल्याणकादिक ॥ पाश जिनेसर जगति लोए० ॥ वाणी ब्रह्मा वादनी० ॥ इत्यादिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गर्भित स्तवन पढै। (वा) सुणें। इसी तरै इस पर्वको सेवन करनेंसें। आधि व्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे। अनेक तरैसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ※ ॥ ॥

॥ ※ ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साहब सुणियो० (इस चालमें)। पोश दसम दिन पारश प्रभुको। जन्म भयो सुखदाई। (मैं वारीजावुं०)। काशी देश वणारसी नगरी। अस्वसेन कुल आई। (मैं०) वांमाउर अवतार लियो है ॥ सकल जीवन गुण दाई ॥ (मैं १) ॥ एक सहस अठोत्तर लक्षण। अनुपम रूप सुहाई। (मैं०)। नील वरण छवि तीन ग्यानयुत। पार्श्व प्रभू वरदाई। (मैं वा०। २। पो०)। नरक जीव पि

ण क्षिण सुख पावत । दिश कुमरी मिलआई । (मैं०) सूतिका कर्म करी निजथांनक । गई सङ्ग हरष भराई (मैंवा० । ३ । पो०) ॥ आशन कंपित सङ्ग सुरवरना । देख ग्यांन भेद पाई । कोमा कोम देव देवांगना मिल सङ्ग आगल धाई । (मैं वा० पोश०) ४ ॥ सुरपति सक्र पंचरूपै कर । मेरु सिखर ले जाई । (मैं०) । स्नात्र महोछव अधिक आनंदसें । वसुविध पूज रचाई । (मैंवा० । ५ । पो०) । वत्तीसवद्ध नाटक प्रभु आगल । तत्ताथेई तान सुणाई । (मैं०) सात तीन इकवीश भेद कर । मिष्ट वचन गुण गाई । (मैंवा० । ६ । पो०) । इम उछवकर प्रभुकों लेई । माता पास वैठाई । (मैं०) । रत्नकुक्षि धारक तूं जगमें । तूंसङ्ग सुर नर माई । (मैंवा० पो०) । ७ । हरखधरी धनधान्य वहूविध । राजरिद्धि फैलाई । (मैं०) नंदीश्वर अठाई महोछव । करि सङ्ग थानक जाई । (मैंवा० ॥ ८ ॥ पोश०) । अश्वसेन कुलक्रम आचारै । जन्मउछव अधकाई । ध्वजतोरण वाजित्र वहू विध । मंगलध्वनि वरताई । (मैंवा० पोश०) ॥ ९ ॥ इम प्रभु जन्म कल्याणक दिवसै । सङ्ग संघ हरख वधाई । (मैं०) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रभुसेवै । अहनिशि ध्यान लगाई । (मैंवा० पो०) । १० ॥ ※ ॥ इति जन्म कल्याणक स्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीगौमीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी । जागै जग विख्यात । पाशतणा गुणगावतां । मुझ मुख वसज्योमात ॥ १. नारंगै अणहलपुरै । अहमदावादै पाश । गौमीनो धणी जागतो । सङ्गनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभदिन घमी । मङ्गरत एकमंमाण । प्रतिमा ते इह पाशनी । थई प्रतिष्टा जाण ॥ ३ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला । वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणकदे । गौमीनो धणी जाचोजी ॥ ४ ॥ (गु०) अणहलपुर पाटण मांहे प्रतिमा । तुरक तणें घर हूंतीजी । अश्वनीभूमि अश्वनीपीडा । अश्वनी वालि विगूती जी ॥ ५ ॥ (गु०) जागंतो जक्षजेहनें कहियै । सुहणो तुरकनें आपैजी । पाश जिनेसर केरी प्रतिमा । सेवक तुझ संतापैजी ॥ ६ ॥ (गु०) प्रह ऊठीनें परगट करजे । मेघा गोठीनें देजे जी । अधिको म लेजे ठगे मलेजे । टका पांचसैं लेजेजी

॥ ७ ॥ (गु०) नहिं आपिस तो मारीस मुरम्मीस । मोर वंध वंधास्यैजी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ । लाठ घणी घर जास्यै जी॥८॥(गु०)मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै । साहथवाह जे गोठीजी। निलवट टीलो चोखा चे ढ्या । वस्तु वहै तसुपोठी जी॥९॥(गु)॥※॥(दूहा)॥※॥मनसुं वीहनो तुरक मो । मांनें वचन प्रमाण । वीवीनें सुहणा तणो । संभलावै सहिनाण॥१०॥ वीवी वोलै तुरकनें । वमा देव हैं कोइ । अवसताव परगटकरो । नही तर मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोमीयै । पहली वंधे पाज । सुहणा माहें से ठनें । संभलावै यक्ष राज ॥१२॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ एम कही यक्ष आयो राते । सारथ वाहनें सुहणें जी । पाशतणी प्रतिमा तुंलेजे । लेतो शिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ (एम०) पांचशैटक्का तेहनें आपे । अधिको म आपिस वारोजी। जतन करी पुहचाम्हे थानकि । प्रतिमा गुण संभारो जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुझनें होसी वक्ष फलदायक । भाई गोठीनें सुण जे जी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । प्रहउठीनें थुणजे जी ॥१५॥(एम०) सुहणो देईनें सुरचाल्यो । अपने थांनक पहुतो जी । पाटण मांहें सारथवाह। हींडै तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी । चो खा तिलक लिलाम्है जी । संकेत पहुतो साचोजाणी । वोलावै वहुलाम्है जी ॥ १७ ॥ (ए०) मुज घरि प्रतिमा तुझनें आपुं । पाश जिणेसर केरी जी। पांचसै टक्का जो मुझ आपे । मोलन मांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नांणो देई प्रतिमा लेई । थानक पहुतो रंगैजी । केशर चंदन मृगमद घोली विधसुं पूजा रंगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूम्मी रूनी कीधी । ते मांहि प्रतिमा राखैजी । अनुक्रम आव्या परिकरमांहे । श्री संघनें सुरसाखै जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिन २ अधिकायावै । सत्तर भेद सनात्रोजी । ठाम २ ना दरशण करवा । आवै लोक मनातोजी ॥ २१ ॥ (ए०) ॥※॥ (दूहा) ॥ इकदिन देखै अवधिसुं । परिकर पुरनो भंग । जतनकरुं प्रतिमा तणो । तीरथ अछै अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें । थल अटवी उजाम्ह । महिमा थास्यै अति घणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुश ल खेम तिहां अछै । तुझनें मुझनें जाणि । संका ठेम्ही काम करि । कर तो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ ※ ॥ (ढाल)॥※॥ पाश मनोरथ पूरा करै ।

वाहण एक वृषभ्न जो तरै । परिकरथी परियाणो करै । इक थल चढ वीजै ऊतरै ॥ २५ ॥ वारै कोस आव्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै । गोठी मनह विमासण थई । पास भुवन मंभावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किमकरुं प्रयाण । कुटको कोइ नदीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो मंभावुं किम गरथै विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंघरहस्यै किहां । सिह्मा वटो किम आवै इहां । चिंतातुर थयो निद्रालहै । यक्षराज आवीनें कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां । गरथघणो जाणी जे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि । पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जओ । अमृत जल नीसरसी कूओ । खाराकुआ तणो इह सैनांण । भूमि पड्यो छै नीलो छाण ॥३०॥ सिह्मावटो सीरोही वसै । कोढपराभवियो किसमिसै । तिहां थकी तूं इहां आण जे । सत्यवचन मा हरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो । सिह्मावटैनें सुहणो दियो । रोगगमीनें पूरुं आस । पाश तणो मंभे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो तेवैण । हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ ऊवा । सिह्मावटैने गया तेभवा ॥ ३३ ॥ सिह्मा वटो आवै सूरमो । जीमें खीरखांभ घृत चूरमो । घभै घाट करै कोरणी । लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली । नाटक कौतिक करती रली । रंग मंभप रलियामणो रसै । जोतां मानवनों मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद । स्वर्गसमो मंभे आवास । दिवश विचारी इंभो घड्यो । ततखिण देवल ऊपर चड्यो ॥३६॥ शुभ्न लगन शुभ्न वेलावास । पवासण वैठा श्रीपास । महिमा मोटी मेरुसमान । एकल मिल वगमे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली । तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरीया अछै । यात्र करीनें परनें पछै ॥ ३८ ॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ विघन विभारण यक्ष जगि । तेहनो अकल सरूप । प्रीत करै श्रीसंघनें । देखामै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौभी पाशजिन । आपै अरथभंभार । सानिध करे श्रीसंघनें । आस्या पूरण हार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । नीलो थइ असवार । मारग चूका मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै भोग । विघन निवारै टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । टालै

सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ घरि धननो सूत । आपै अपुत्री यानें पुत्र । कायरनें सूरापण धरै । पार उतारै लक्षी वरै ॥ ४३ ॥ दो न्ना गीनें दे सोन्नाग । पग विहूणानें आपै पग । गाम नहीं तेहनें येगाम । मन वंछित पूरे अन्निराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानि ये आधार । न्नवसायर ऊतारै पार । आरतीयानी आरत न्नंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्त्या साद दीयें थक्र राज । तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धि हीणनें बुद्धि प्र कास । गूंगानें द्यै वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियानें सुखनो दातार । न्नय न्नंजण रंजण अवतार । वंधन तूटै वेमी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर सम रणा ॥४७॥※॥ (दूहा) ॥※॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपै । विश्वानर विक राल । हस्त यूथ दूरेटलें ॥ डुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा न्नयचूक वै । विष अमृत उनकार । विषधरनो विष ऊतरे । संग्रामें जय जय कार॥४९॥ रोग सोग दालिद्र डुख । दोहग दूर पुलाय । परमेशर श्री पाशनो । महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ※ ॥ (कमलानी चाल) २ ॥ ※ ॥ उंजितुं उंजितुं उंज उपशम धरी । उं र्‍हींश्री श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ न्नूतनें प्रेत जोटिंग व्यंतर सुरा उपसमै । वार इकवीश गुणंते ॥ ५१ ॥ (उं०) डु ष्ट्रा रोग सोगा जरा जंतनें । ताव एकांतरा उत्तपंते । गर्न्नवंधन व्रणं सर्प विछु विषं । चालिका वालमेवा ऊखंते ॥५२॥ (उं०) साइणी माइणी रोहणी रंकणी । फोटका मोटका दोपडुंतें । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी । स्वा न सीयाल विकरालदंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेंद्र पदमावती समरसोन्नावती । वाट आघाट अटवी अटंते । लखमी लोड मिलै सुजश वेलावलै । सयल आस्या फलै मन हसंते ॥ ५४ ॥ (उं०) अष्ट महान्नय हरै कान पीमाट ले । ऊतरै सूल सीसगन्नणंते । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रन्नु । श्रीपार्श्व जिन नाम अन्निराम मंते ॥ ५५ ॥ (उंजितुं) ॥ ※ ॥ इति श्रीगोमी पार्श्व नाथजी वृद्धस्तवन सं० ॥ ※ ॥ इति पोषमाश पर्वाधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ माघ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ माघ महिनेंमें, मिती माघ वदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम सें पर्व प्रसिद्ध है । (इस दिन) श्रीऋषन्न देव स्वामीको निर्वाण कल्या

णक है। (इसीसें) भगवंत महाराज इसदिनकों उत्तम कहा है। (इस दिन) चौविहार उपवास करै। रत्नामई, पांचमेरू भगवानके आगे चढावै। बीचमें १ बमो मेरू। च्यारुं दिश छोटामेरू। (ऐसें) पांच मेरू चढावै। ऐसी शक्ति न होय (तो) सोनेंके। चांदीके (वा) घृतके। मेरू करके चढावै। आगै चारुं दिश तरफ चार चार नंद्यावर्त्त करै। अष्टप्रकारी। सत्तर भेदी। पूजा पढायके। अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ※ ॥ पीछे ॥ १ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी पारंगताय नमः) ॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै। और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै (तो) पूजादिक सव विधि पारणेंके दिन करै। अतिथि संविभाग करके पारणो करै। इसी विध संयुक्त १३ तेरै वरश (अथवा) १३ तेरै माश तपस्या करै। पीछे शक्ति माफक वहुत उच्छवसें उद्यापन करै। तीर्थोंकी यात्रा करै। साहमी वछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहें ॥ (जैसें) अयोध्या नगरीमें। अनन्तवीर्य राजाको पुत्र। पिंगल राय कुमर। गांगिल मुनीके पास। इस पर्वका अधिकार सुनके। तपस्या करी। तपस्याके करनेंसे। सर्व रोग दूर हुये। तपस्या पूर्ण होनेसें। तेरै १३ मंदर वनवाया। १३ तेरै रत्नां मई। सुवर्ण मई। रूपै मई। प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ वेर, संघ सहत तीर्थों की यात्रा करी। तेरै वेर साहमी वछल किया। बहुत प्रकारसें ज्ञान भक्ति करी। अंतमें महसेन कुमरकों राज्य देकै। श्रीसुव्रताचार्य समीपै दिक्षाग्रहण करी। अनुक्रमें चवदै पूर्वकों पढके। सर्व कर्मकों क्षय करके। अनंत सुखकों प्राप्त हुवा। इसी का विस्तार संवन्ध। मेरु तेरशका वखाण सुणनेंसें मालुम होगा। जो भव्य जीव इस पर्वकों विधि संयुक्त सेवन करैगा। (सो) इस भवमें परभवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा ॥ ※ ॥ इति माघ माश पर्वाधिकारः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ फाल्गुन माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ फाल्गुन महिनेंमें, मिती फाल्गुन सुद १४ (सो) तीसरै चौमाशै की चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिनको सर्व कर्त्तव्य) आ

षाढ चौमासे तुल्य करै। सो पूर्वे लिख्यो है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इहां विशेष होलीको अधिकार लिखते हैं ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी। बारै मासमें, ६ छमोटका पर्व कहा। ३ तीन चौमासा। २ दो ओली। १ पर्युषणा। एवं ६। (जिसमें) २ ओली। १ पर्युषणा। यह ३ पर्वका अठाई महोछवतो सर्व ठिकाणें भव्य जीव करतेहें। और कार्त्तिक चौमासैका उछव भायें बहुत ठिकाणें होता है। (परंतु) कलकत्ते जैसा महोछव कोई ठिकाणें देखा नहीं। (और) फाल्गुन चौमासैका उछव मुर्शिदाबादमें अछा होता है। पर कोई महोछव में आज्ञा विरुद्ध जो काम होय (सो) प्रशंसनीक नहीं। एकतो भगवंतके समोसरणके साथ। आज कालके। अमीर लोक। धूपके भरसें, खेहके भरसें। आपतो जाते नहीं (निकेवल) असमझ पुरुषाकों भेज देतेहें। पीछे वे पुरुष मदोन्मत्त हुए थके। कूदतां, नाचतां, भागतां, । समवसरणकों उगला देते लेजाते हैं। (उसमें) जितनी आशातना होतीहै। जितना कर्मबंधता हैं। उसका भागी हम नहीं॥ भगवंत को धर्म, विनय मूल १। दया मूल २। चारित्र मूल ३ हैं। (इस सें) धन्य है जिसके माता, पिता, (सो) विनय विवेक संयुक्त शुद्धभावसें। सर्व धर्मकार्य करके धर्मको उद्योग करैहै। उसी पुरुषांकों नमस्कार है। उसी महोछवकी प्रशंसना है। (इसीसें) आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष है (सोतो) शेषका चौमासा पर्व जानके। सर्व ठिकाणें। भगवंतकै धर्मको उद्योत करते थके। शुभ ध्यानरूप अग्नीसें (अष्टकर्म रूपी काष्टकों जलाके होली करते हैं। (पीछे) सुबोध जलसें स्नानकरके अत्यन्त सुन्दरता कों प्राप्त होते हैं॥ अब द्रव्यै, भावै, दो प्रकारसें, होलीका अधिकार कहणें की इछायें (प्रथम) द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हैं॥ ※॥ ॥ ※ ॥

इस फाल्गुण मासमें, चौदश पूर्णमासी के दिन (कई) अज्ञानी जीव, विवेकसें, श्री जिनधर्मसें, विकल हुए थके। नीच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके। लक्कड छाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है। महा उत्तम चौमासे पर्वका विराधन करै है। (दूसरे दिन) मलमुत्रादिकसें क्रीडा करै हैं। खोटा वचन बोलै है। रासभ माथे चढै है। अनेक

जीवांकों डुःख उत्पादन करै है।(ऐसे जीव) शुद्ध वीतराग देवकी आग्याछो
मके। भांम भरमा के कुल परंपराकों प्राप्त होते है। मिष्टान्न भोजनका खा
णा छोमके। विष्टाको भोजन करते हैं। दूधका पीणा छोमके। जानते थके
पिसाव पीते हें। (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्मांके वंध सघन करके। नीच ग
तिकों उपार्जन करते हें। अनर्थदंमसें अनन्त भव संसारकी स्थिति वां
धते हें। (इस वास्ते) आत्मार्थी भव्यजीवांकों। इस माफक। द्रव्य हो
ली करनी उचित नहिं। (निकेवल) भाव होली करनी उचित है॥ वसं
तके स्तवन वोलै। रात्री जागर्ण करावै। भगवानके मंदरमें पूजा करावै।
महोछ्व निकालै। नाना प्रकारके नाटक करै। साहमी वछल करै। सा
धर्मी भाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीमा करै। (आगै) राजा लोक
भी, वसंत ऋतु आनेंसें सज्जन संवंधी साथ। नाना प्रकारके। जल। चं
दन। केशर। अवीर। गुलाल। इत्यादिकसें क्रीडाकरी (सोतो) फेरभी
शास्त्रोंमें देखते हें। (परंतु) यह मल मुत्रादिकसें खेलना। होली जलानी।
पादत्राण खाणा। भंम चेष्टा करनी। अपनें धर्मकी मर्यादा। अपनें कु
लकी मर्यादा। सर्व छोमके। भांड भरमाके गोदी वैठना। भांम भरमा
के कुलकी मर्यादा करनी। ऐसी क्रीमा उत्तम पुरुषांकै (और) जिनधर्म वा
ले भव्य जीवांके। कोई ठिकाणें करनी कही नहीं। यह क्रीमा निकेव
ल महामिथ्यात्वी नीच पुरषोंने चलाई ही। उसी पुरुषांके देखादेख प्रायें
अज्ञानी जीव, सवकोई करनेंकों लग गए। (देखो वडा आश्चर्य है)।
जब मंदरजीमें पूजादिक महोछ्वका काम होता है। उस वखत वहूत
कों फुरसत न होती है। (और जो केइ आते है)। उनोंकों स्नात्रि
या होनेंमें। अगामी नाटक करनें में। वमी लज्जा मालुम होती है।
(और होलीके दिन) माता, पिता, भाई, वैन, सर्वकी लज्जा छोमके। वहू
त दिलमें खुसी होके। पागलके माफक। उपानत खाते फिरते है। मन
आवै ज्युं वोलतेहें। कोई वेश्यादिक का नाटक करायकै हज्जारुं वगशीस
कर देते हैं। मनमें जानें, हमनें वडा नांम किया। पर अहो भाइयो।
इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है। निकेवल महा अशुभ कर्म पैदा होता
है। तुमारा कल्याण जवई होगा। ऐसी उमंगसें सर्व की लज्जा छोडके।

भगवानका उत्सव करो। रात्री जागर्ण करो। नाटक करो। धर्मका उद्यो त करो। (इसी तरै) होली खेलो (सो) तुमारा इह भव वी सुधरेंगे। परभववी सुधरेंगे। (यह) द्रव्यै, भावै, दोंनु होलीका, यथावस्थित स्वरूप लिखा है। इसकों आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरष तो देख करकै प्रसन्न होंगे। यह खोटे मारग कों वंध करनें की प्ररूपणा रक्खेंगे। (और जो) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे (सो) अपनें खेलनेंके वास्ते। सची वातकोंभी कुयु क्ती लगायके झूठ ठहरावेंगे। महारोस धारण करेंगे। (जैसें) कोइके पिताकों गाली देनेंसें रोस उत्पन्न होय (इसी तरै) यह भंम चेष्टा की निंदना देखकै महारोस धारण करेंगे। (और जो) मध्यस्थ जीव होंगे (सो) ऐसा वोलेंगे। यह वात सच है। किसका पर्वहै। किसका खेलना है। निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता है। (परंतु) हम इकेला क्या करें। सर्व भाइ वंधकों खेलते देखकै। हमसें रहा जाता नही। इससें खेलते हें। (पर) यह पृथा वंध होयतो अच्छीहै। (इसीसें) अहो देवानुप्रियो सर्व ठिकाणें यह नीच खेलकों छोडके। उत्तम खेल खेलनेंकी प्रवर्त्तना क रो। जिससें तुमारा तप तेज सदा वढता रहै। सदा आनन्द रहै। यह वारै माश के सर्व कर्त्तव्य। मेंनें अपनी वुद्धिसें न लिखा है। (किंतु) प्रा चीन आचार्योंके व्याख्यानकी पद्धति देखके। सर्व वालजनके उपगारार्थे संक्षिप्तसें शुद्ध भाषामें प्रगट किये हें (इसमें) आगम विरुद्ध छंगे अधको क हनेंमें आयो होय (तो) त्रिकरण सुद्धै मिच्छामि डुक्कड देताऊं। (और) नी च कर्मके वंध छोडानेंकों। कठोर वचनभी वोला है (सो) वाचकें। गु णकों ग्रहण करना। परंतु रोस धारण न करना। मेरै तो शुद्ध नवकार मंत्र गुणनें वाले हैं (सो सर्व परम मित्र है। सर्वके तप तेज वढते देख कै, मेरा चित्तमें परम आनंद होता है। (और) त्रिकरण शुद्धै सर्व जीवा जोनिसें वेर वेर खमाता ऊं॥ ※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※॥ खमिय खमाविय में खमिय। सवह जीव निकाय। सिद्धह साख आलोयण। मझह वैर नभाय॥१॥ सवे जीवा कम्मवसु। चवदय राज भमंत। तेमें सव खमाविआ। मझवितेह खमंतु॥※॥ ॥※॥ इति फाल्गुन माश पर्वाधिकारः ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ भाव होली खेलनके स्तवन लि० ॥ ※॥

॥ ※ ॥ (रागधमाल) ॥ होरी खेलियै नरवभ्भरन ऐसोदाव। (हो०) दयामिठाई अति भलीरे। तप मेवा परधांन। सील अथाणो अति भलौ (वारी)। संयम नागर पांन। (हो०) ॥ १ ॥ लेस्या मादल भाव भफरे क्रोध मान दोय ताल। पांच सुमतिको अरगजो (वारी)। नवतत्व लेज्ञ गुलाल। (हो०) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयैरे। दमवाको छिरकाव। ग्यांन पिचरको पकरकै (वारी)। मुगति वधू चितलाय। (हो०) ॥ ३ ॥ ऐसा साज वनायकैरे। ऋषभदेव गुण गाय। श्री जिनचंद इम खेलतां (वारी) भव भव पातिक जाय। (हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥※॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥※॥

॥ ※ ॥ जय बोलोरे पाश जिनेशरकी ॥ (ज०) ॥ मस्तक मुगटसोहै मनमोहन। अंगीया सोहै केशरकी। (जै० ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखं भित तनकी। स्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ (ज०) ॥ २ ॥ बालपणेंमै अदभुत ग्यानसुं। करुणा कीधी विषधरकी ॥ (ज०) ॥ ३ ॥ कमठ उभा य वायज्युं वादल। जीतकरी अपनें घरकी ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ मात वामा उयरे जिनजायो। राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ अष्ट कर म दल सवल खपाए। श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ (जै०) ॥ ६ ॥ कहै जिनचंद मेरे प्रभुपारस। जैसी छाया सुरतरु की ॥ (जे०) ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ※ ॥

॥※॥ मधुवनमें जाय मची होरी ॥ (म०) ॥ ग्यान गुलाल अवीर उ भावो। सुमता केशार रंगघोली ॥ (म०) ॥ १ ॥ अमृत रूप धरम जिन वरको। सुधक्षमा कहै करजोमी ॥ (म०) ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः वसंत होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यादव मनमेरो हरलीयोरे ॥ (या०) ॥ संजम दूती कान लगी जव। शिवनारीपर चित्त दीयोरे ॥ (या०) ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चले हो। नवभव नेह अलग कीयो रे ॥ (या०) ॥ २ ॥ मोह छोम गिरनार सिधाए। नेमि जिणंदनें कहा कीयोरे ॥ (या०) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन भु

वनके साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे ॥ (या०) ॥ ४ ॥ वारवार मेरी वंदना भयज्यो । चंद कहै मन हरखीयोरे ॥ (या०) ॥ ५ ॥ इतिपदं

॥ ※ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इक सुणलै नाथ अरज मेरी (इ०) ॥ १ ॥ इह संसार गहर तर सिंधु । भमर पमत जिहां भवफेरी (इ०) ॥ २ ॥ क्रोधादिक वक्र मगर मछ है । ग्रहत जंतु नकरत देरी ॥ (इ०) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधिसें पा रकरो तो । तारण तरण विरुदतेरी ॥ (इ०) ॥ ४ ॥ धरम जिनेसर जग परमेशर । दूरकरो दुखकी वेरी ॥ (इ०) ॥ ५ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक । अनुपम कीरति जगतेरी ॥ (इ०) ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सांवरो सुखदाई । जाकी छवि वरणि न जाई । (आंकणी) । श्री अश्वसेन वामानन्दनकी । कीरति त्रिभुवन छाई । समेत सिखर गिर मंमन प्रभुको । देख दरश हरखाई । हृदय मेरो अति उलसाई (सांव०) ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द वधाई । तीन भुवन को नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुण्याई । सफल मेरो जनम कहाई ॥ (सांव०) ॥ २ ॥ प्रभुके सरस दरश विन पाये । भव भव भटक्योमें भाई अव तेरो चरण शरण चित चाहत । वाल कहै गुण गाई । प्रभुजीसें लगन लगाई (सां०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः रागिणी वसन्त ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नैंना हरखाइ । आज तेरी मूरत निरखी ॥ (नैं०) ॥ भवभव संचित पाप करम सव । देखत दूर पुलाई । सुमति वधारण कुमति विमा रण । ज्ञान विमल उलसाइ ॥ (आज०) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिछवि सुन्दर । महिमा वरणी नजाई । दीन दयाल दया कर दीजै । आनन्दहरख सवाइ ॥ आ० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चली गिरनार कामिनी ॥ (म०) (आंकणी) ॥ सुंदर रूप वनाय सखी सव । सिखरसेल जेसें

चमके दामनी ॥ (म०)॥ १ ॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो। मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ (म०)॥ तोरण आय चले मोह गेम्मी । कौन चूक मोंपे काढी भामनी ॥ (म०)॥ २ ॥ मेंन तजूंगी नव भव केरी । प्रीत बनी जैसी इंडु दामनी ॥ (म०)॥ ३ ॥ राजुल पहली प्रीतम सेती। वा ल कहै भइ मुगति गामनी ॥ (म०)॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै । (रंग०) शील सुरंगी चीरमंगाये । पहिरे आप सुजान ॥ (हो०)॥ पर मन्दिर तज अविचल लीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥ (हो०)॥ दिल मिल आप परमरस चाखे सुमत सखी पहिचान ॥ (हो०)॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे । सोभै अदभुत वान ॥ (हो०)॥ सुमति अवीर उडाय जगतमें । वैठे शिव पुर थान (हो०) अनुभव राग मगन गुण गावै । तप जप सुन्दर तान (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । वंछित पावै दान (हो०) इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी (ताल यत्) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ॥ मन मृदङ्ग वजे त न मांहि । गावत आगम राग (हो०)॥ ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे खेलत सुमत सुहाग (हो०) समकित केशर चीर रङ्गाउं । पहिरो मन वेराग (हो०)॥ लाख चौराशी रामत छंम्मी । च्यारूं गतिसें भाग (हो०) अविचल सुख पंचम गति पावै । योग यतन कर जाग ॥ (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारै । पावै भव दधि पार (हो०)। चेतनता शुध होय जगत में । समकित के रङ्गलाग (हो०)॥ ※ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (पुनः होरी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ होरी आई, मेरो मन भयो, प्रसन्न प्रसन्न भयो, प्रसन न न नहे (हो०) व्रज वनिता मिल नेम कुमर सङ्ग । फाग रमत हियै हसन हसन हसननन ननहे (हो०)॥ १ ॥ बाजे तेताल मृदंग झांझ ड्फ । वी णा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन नन नहे (हो० ॥ २ ॥ उम्मत गुलाल लाल भए बादल । हरि हलधर हीयै हरखन हरखन हरखन

ननहे (हो०) ॥ ३ ॥ सवल आधार चरण जिनजीको । सेवक कों नित दीजीयै दरशन दरशन दरशन न न नहे (हो०) ॥४॥ इति पदम् ॥※॥

॥ ※ ॥ (पुनः होरी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ होरी खेलो नेमसें धाय धाय । डुरजनकी लाज मेरी करै वलाय (हो०) ज्ञान गुलाल अवीर जमावो । क्षमा करो रङ्ग लाय लाय (डु० हो०) ॥ १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरूङ्गीमें गाय गाय (डु० हो०) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह जमावो । ज्ञान हियेमें लाय लाय (डु० हो०) ॥ ३ ॥ जगत चन्द की अरज वीनती । शरण गहीमें तेरी नाय २ (डु० हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मेरै घटकी गगरया रङ्गसें नरी । शिव पुरकी वात पूछुं फवकी खरी । (मे०) परम जोत प्रभु सिद्ध सिला पर । परमातम निज ध्यान धरी । (शि०) ॥ ११ ॥ मोहन रङ्गनरो रंग शिवपुर । अजर अमर पद सुक्खकरी (शि० मे०)॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ में नें देखी अनोखी होरी रे (में०) सहसा वनकी कुंजगलिन में । अनुपम सोर मच्यो री (अ०) ॥ १ ॥ यादवपति श्रीनेमकुमरजी । सुमतासखी मिल गौरी (अ०) ॥ २ ॥ सुमता केशर नर पिचकारी । मारत हैं वर जोरी ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ ज्ञानगुलाल जमै अतिनारी । अवीर जमै नरजोरी । (अ०) ॥ ४ ॥ कपूर कहै प्रभु मोकुं खेलावो । अरज सुणो इक मोरी (अ०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ पुनः होरी ॥※॥

॥ ※ ॥ इकसुणले नाथ अरज मेरी इस चालमें ॥ ※ ॥

॥※॥ तुमे ध्यावोरे अंतरीक पारसकुं ॥ तु०॥ अंतरीक प्रभुके ध्यावणसें दूरकरे डुख दालिद्रकुं ॥ तु०॥ अस्वसेन कुलमें चिंतामणि । जिमरवि ऊगो सरदऋतुकुं ॥ तु० ॥ १ ॥ वांमाउर अवतार लियोहै । नव्यजीवनें तारणकुं ॥ तु० ॥ नील वरण तनज्योति अखंमित । लंछन अहि सुखकारणकुं ॥ तु०

॥ २ ॥ दक्षिणदिशमें सिरपुर नगरे । जिहां भेव्या जिनराजनकुं ॥ तु० ॥ पार्श्वप्रभुको दरशण पायो । दूर हुआ भव भटकणसुं ॥ तु०॥ ३ ॥ प्रगट प्रभूको अतिशय पेख्यो । अधर रहत भूमि ऊपरकुं ॥तु०॥ कपूर कस्तूरी केशर चंदन । अष्टद्रव्य लेके पूजनकुं ॥तु०॥४॥ अष्टकरम शत्रूकुं जीपके । प्रभु चढ्या राजशिवपुरकुं ॥ तु० ॥ दूधेड्या गोत्र उत्तम बुधसिंहपति । विशनचंद हितकारणकुं तु०॥५॥ उगणीसै गुणतीसै फागुण । जात्राकरी सुद तेरशकुं ॥ तु० ॥ श्री अजेराज ग्यांनकुं चाहे । मुक्ति कमल इच्छा पूरणकं ॥ तु०॥ ६ ॥ इति श्रीअंतरीक पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी राग काफी ॥ ॥

॥ ॥ वावो ऋषभ वेठे अलवेले । मारो गुलाल मुठी भरके । वावो० ॥ मुठी भरके पसली भरके ॥ वावो० ॥ चुआ चुआ चंदन और अरगजा । केशरकी मटकी भरके ॥ वावो० ॥ १ ॥ रतन जडित शिर छत्र विराजे । अंगी जमाव जमी जरके ॥ वावो० ॥ २ ॥ वाहें वाजूवंध वहिरखा विराजे । फूलनके गजरे सरके ॥ वावो०॥ ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन । रमियें भवि आदेशरसें ॥ वावो० ॥ आदिखान है दास तुमारो । तार लीओ अपनो करकें ॥ वावो० ४ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ नेमन जाणें मोरी पीर । पीर पर रर रर रर । नेमन जाणें० ॥ तोरणथ्री रथ फेरवी चाल्या। दाऊचो हैयडा केरो हीर । हीर। अर रर रर रर॥ नेम० ॥ १ ॥ चंदवदनी मृग लोयणीरे । प्रेमनो मार्यो मुनें तीर । तीर तर ररररररर ॥ नेम० ॥ २ ॥ आंशुमां ऊरती धरणी ढलीरे । जाणे आशाढो नीर । नीर झररररररर ॥ नेम० ॥ ३ ॥ शिवराज कहे नेम राजुलेंरे । कर्म रूपीआं फाड्या चीर । चीर चरररररररर ॥ नेम० ॥४॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ ॥

॥ ॥ गिरिराज कूं हमारी वंदनारे । जिनराजकूं हमारी वंदनारे ॥ भव दुःख वारण शिवसुख कारण । देखत भव नहीं फंदनारे ॥ गिरि० ॥ ॥ १ ॥ नाभिराया मरु देवीको नंदन । प्रणमुं ऋषभ जिनंदनारे ॥ गिरि०

॥ २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो । जिम चातक दिल चंदनारे ॥ ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ चतुर कुशल कहे शरण तुमारो । सिद्धगिरि कर्मनिकंदनारे ॥ गिरि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः राग होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दरशन कीयो आज सिखरगिरिको ॥ दर० ॥ देख्यो माधो वन शीत नालो । ताको नीर वहेछे अति नीको ॥ द० ॥ १ ॥ वीश को शयी दरशन दीठे । भागो भरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीशे टुंकें वीश गोमटजी । तामें चरण जिनेसरको ॥ द० ॥ ३ ॥ अब जिनवरके शरणें आयो । रसतो पायो मुगति पदको ॥ द० ॥ ४ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सिद्ध गिरि जीको दरशन करले ॥ संघ यात्रा । संघयात्रा करनेंसें पाप कटत है । सिद्ध० ॥ (आंकणी) कोटि अनंता इन गिरि सिद्धा । ताकुं शीश नमय ले ॥ संघ० ॥ ॥ १ ॥ रिखभ जिनेश्वरजीको दरशन । शुद्ध आतम पावन करले ॥ संघ० ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । भव भवका दुःखहरले ॥संघ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मेरो चेतन खेले होरीरे । ऐसी होरी । आज बरजोर रही ॥ मेरो० ॥ मन कर मोज प्रेमकर पाणी । करुणा केशर घोरी ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ दया मिठाइ तप बहु मेवा । समरस विमल कटोरी ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ गुरुके वचन वारी मृदंग बजतहे । दे मफ ज्ञान कटोरी ॥ ऐसी०॥ ३ ॥ दान कहे सुमता सखीयनसें । चरण रहो जुग जुग जोरी॥ ऐसी० ॥ ४ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अनंतानंत प्रभुजीनी वाणी । आशातना तजरे प्राणी ॥ अनंता० ॥ श्री शीतल जिन शीतल वचनें । भाव दया चित्त आणी अनंता० ॥ १ ॥ जे जीव देव द्रव्यनें खावे । थई लोभ वशे अप्राणी ॥ अनंता० ॥ २ ॥ सागर शेठ परं दुःख पामी । [illegible]

अनंता० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य जे विधि ए वधारे । ते जिन थइ वरे शिवराणी ॥ अनंता०॥४॥ धर्मचंदकर जोडी रागें । तारजो केवल नाणी॥ अनंता० ॥५॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे ॥ मेरे साहेब । मेरे साहेब । आदि जिणंद चंद ॥ मोहे० ॥ (आंकणी) ॥ रंग तुंही रंग रेज तुंही हे । संजम रंग मोहे रंगदे ॥ मोहे० ॥ १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादि को । सो अब इनकुं खिनदे ॥ मो० ॥ २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरीमें देखी । सो अब मुजकुं सऊदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे । वाबिच केवल धरदे ॥ मोहे० ॥ ५ ॥ कहत भूधरदास समकित पावे । आप समाना करदे ॥ मोहे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मेरे पाश प्रभुजीके रंग मंरूप मांहे । खेलत संत वशंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा । विनय अबीर विलसंत ॥ मेरे० ॥ १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी बूटत । समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फूलवाडी । मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अंग आभूषण पंचेंद्रिय वश । गुरु सेवा सलहंत ॥ वार भावना गहेर कसुंवा । पीवत मन हरखंत ॥ मेरे०॥ ३ ॥ अद्भुत पंचमहाव्रत वागा । पहिरै तन शोहंत ॥ कहे जिन चंद्र प्रभुकी कृपासें । निरखे नवल वशंत ॥ मेरे०॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रंग मच्यो जिन द्वार ॥ चालो खेली ए होरी ॥ पाशजीके दरवाररे ॥ चालो०॥ फागुनके दिनचार ॥ चालो०॥ रंग०॥ (आंकणी) ॥ कनक कचोली केशर घोली । पूजो विविध प्रकाररे ॥ चालो० ॥ १ ॥ कृष्णागरुको धूप घटत हे । परिमल महके अपाररे ॥ चालो० ॥ २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत । पाशजीके दरवाररे ॥ चा० ॥ ३ ॥ भर पिचकारी गुलालकी भिरको । वामा देवी कुमाररे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग वीण रूफ वाजे । भेरी भुंगल रण काररे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ सव सखीयन मिल नाटक करके । गावत मंगल साररे ॥ चालो० ॥ ५ ॥

रत्नसागर प्रभु भावना भावे। मुख बोले जयकाररे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेमजीसें कहीयो मोरी । शामरेसें कहीयो मोरी ॥ तोरण आए कीनें नर माए। गेम चले अभिमानी ॥ अरे लाला ॥ गेम चले० ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो । तोमी प्रीत पुरानी ॥ दयादीलमें नही आनी ॥ (शामरेसें०) ॥ १ ॥ चूक पमी सो मुहसें कहीयो ऐसी ना करि ए शोधानी ॥ अरे० ॥ आठ भवोंकी प्रीत बंधाणी । नवमे चले क्युं जानी ॥ शाम तेरी सुरत पिछानी (शामरेसें०) ॥ २ ॥ या जोरी जुगमें पूर नेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ अरि०॥ वीनति सुन अमर पद दीजे। रंग विजय सुखदानी॥ आवा गमन छिदानी (शामरेसें० ३)

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥※॥ महाराज तोरे मंदिरमे वरसे रंग। हांरे हो। श्री चिंतामणि पाश प्रभुजी (तोरे मंदिरमें०) टेक ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा । सुमता नीर सुचंग (हांरे हो०) ॥ १ ॥ अनुभव लहर फूली फूलवामी । दिन दिन चढते रंग (हांरे हो०) ॥ २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम। शुक्ल ध्यानके संग (हारि हो०) ॥ ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्त धर । तुजशुं अविहम रंग (हांरे हो०)॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥※॥ तोरी अंगीयां बनी है सुरंग। (हां रे हो) श्री चिंतामणिपाश ॥ प्रभुजी तोरी०॥ सुविवेकी श्रावक मिल आछे । आणी भाव अभंग ॥ हांरे हो श्री०॥ मह वंधीकी भांत भली है। बुंटीया नव नव रंग ॥ हांरे हो श्री चिं० ॥ १ ॥ जरकस जामो खूव वन्यो है। कोर केवमा संग ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ मस्तक मुकुट काने दोय कुंमल । वाजूबंध सुचंग ॥ हां रे हो श्री चिं०॥२॥ फूलनकी गलमाल सोभत है। सौरंग वास सुगंध ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ त्रिभुवन साहव लखत बिराजे। महिरवान मन रंग ॥ हां रे हो श्रीचिं० ॥ ३ ॥ सुर नर याकी सेवा करत है। रात दिवश धर रंग ॥ हांरे हो श्री चिं०॥ सुनिजर है साहेबकी सवपर। संघ है सकल सुरंग ॥

हांरे हो श्री चिं०॥ भावना भावो जिन गुण गावो। अमर घणें उमंग ॥ हांरे हो ॥ श्री चिं० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (पुनः होरी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चिंतामणि चित्त ध्यावो रे। वंछित फल पावो ॥ सकल भविक जन मिलकर आवो। राग फाग गुण गावोरे ॥ वंछित०॥१॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो। भर भर मुठीया उमावो रे ॥ वं०॥ कुंकुम केशरकुं छिरकावो। भाव शुक्ल भल भावो रे ॥ वं० ॥ २ ॥ अंगी चंगी पुहप वनावो, दीपक ज्योति दीपावोरे ॥ वं०॥ दरस सरस करकें सुख पावो। पुण्य भंमार भरावेरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो। नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वं०॥ अमर सिंधुर आनंद वधावो। जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० ४॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मत मारो पिचकारी रे। मैंतो सगरी भीज गई ॥म०॥ ताल मृदंग बजत मन मांहि। गावत आगम राग ॥ लाल। मैंतो सगरी भीज गई ॥ मत०॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे। खेलत सुमति सोहाग ॥ पीया मैंतो सगरी भीज गई ॥२॥ समकित केशर चीर रंगाऊं। पहिरुं मन वैराग ॥ लाल मैंतो० ॥ ३ ॥ लख चौराशी रामत छेडुं। चारों गति सो हाग ॥ पिया मैंतो० ॥ ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी। शिव सुंदरी ब रमांग। लाल मतो०॥५॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारें। इण विध खेले फाग ॥ लाल मैंतो०॥ ६ ॥ ※ ॥ इति ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांरे तुंतो जिन भज विलंब न कर हो। होरीके खेलइया ॥ हां० ॥ (आंकणी) ॥ समता लहेर संयममां झीली। ममता लहेर परिहर हो ॥ हो०॥१॥ विनय संभारीमें भरि पिचकारी। हांरे तुंतो, शिवरमणीकुं वरहो ॥ हो०॥ ज्ञान गुलाल भरी तिहां जोरी। हांरे तुंतो, खेल वशंत घर घर हो ॥ हो० ॥२॥ शील सुगंध आभूषण अंगे। हांरे तुंतो, आतम अ नुभव वर हो ॥ हो०॥ ज्ञान विज्ञान फूली फूल वारी। हांरे तुंतो, गुंजत मनमधुकर हो ॥ हो०॥ ३ ॥ वामानंदन पाश जिनेसर। हांरे तुंतो, जगना

यक जग गुरहो ॥ हो० ॥ श्रीजिनलाभ कहे प्रभु संगे । हांरे तुंतो, समै तारस अनुसर हो ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेम मिलेतो वातां कीजीये ॥ होप्यारे ॥ नेम मि० ॥ टेक ॥ मैंऊं तुमारी खिजमतगारी । प्रेमका प्याला पीजीए ॥ हो० ॥ ने० ॥ १ ॥ हम है केतकी तुम हो भमरा । फिर फिर वासना लीजीयें ॥ हो० ॥ ने२॥ मैंऊं धरती तुम हो मेऊला । कवऊं तो मिलना कीजीयै ॥हो०॥ने०॥३॥ नेम राजुल मिल मुक्ति सिधाए । रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ॥ ने०॥४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥※॥ आतमतत्व विचारो ज्ञानसें । करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० (आंकणी)॥ पुद्गल जीव सरूप पिछान्यो । ममता मिट गइ सारी जानसें॥ कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ०॥ १ ॥ क्रोधादिक अरी अंधकार सम, नाश भयो सब ज्ञान भानसें ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम पद पावत सोई । विनय भजत पद अचल थानसें ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी ॥ एतो उपशम रसकी कयारी ॥ लाल० ॥ (आंकणी ॥) कामक्रोधादिक दोप रहित हे । नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिंयामें । दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥१ ॥ औरनयनमें काम क्रोध हे । बऊत भरी हे खुमारी ॥ परधन देख हरनकी इछा । यामें हें ऊशियारी ॥ लाल० ॥ २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोमें । क्युं पामे भव पारी ॥ ओही विचार करो दिल अपनें । होत कर्मसें भारी ॥ लाल०॥ ३ ॥ धर्म विना कोई सरनां नहिं हे । एसो निश्चे धारी॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित । ओही तारन हारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दर्शन विन जीव संसार भम्यो ॥ दर्शन० ॥ चोराशी लख योनी भटकत । लहि मानव भव युंहि गम्यो ॥ द० ॥ १ ॥ पुन्यउदय श्रावक कुल पायो । घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द० ॥ २ ॥ माया ममता में

निशदिन तुं । विषय विकारशुं नहिं विरम्यो ॥ द० ॥३॥ सार विवेक तुं धार रे चेतन । नटकत भ्रममें क्युं भटक्यो ॥ द० ॥४॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर । भज भगवंत तेरो पापशम्यो ॥ द० ॥ ६ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥※॥मत छेड़ो म्हानें युंही रे । कोई चूक बतावो ॥मत०॥ अबीर गुलाल भाव सब रमतां । हमशुं कदेय न खेलो रे ॥ को०॥१॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये । चढिया छे गिरनारी रे ॥ को० ॥ २ ॥ बहुत हगाशुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० ॥ ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे । एक वार फिर जोवो रे ॥ को० ॥ ४ ॥ नेमि राजुल मिल मुक्ति सिधाए । पहेली राजुल नारी रे ॥ को० ॥ ५ ॥ ※ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः होरी ॥ ※ ॥

॥※॥ अटक्यो चित्त हमारो री । जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब । जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० ॥ १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० ॥ २ ॥ श्रीवच्छ लंछन जनम भद्दिलपुर । कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० ॥ ३ ॥ नेवुं धनुष शरीर सुशोभित । कनक वरण अतुकारो री ॥ जि० ॥४॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये । नाम लीआं निस्तारो री ॥ जि० ॥ ५ ॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक । अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० ॥ ६ ॥ हरखचंद का साहेब सच्चे । हुंतो दास तुमारो री ॥ जि० ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मंगल स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मंगल राजै गिरनार । नेम पद मंगल है (देवा०) मंगल राजिमती पद मंगल । मंगल रह नेमि राज (ने०) मंगल गणपति मंगल पाठक । सब तपसी विचसार (ने०) मंगल धन धन्ना मुनि नायक । मंगल सब अनगार (ने०) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द घन अवतार (ने०) । इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इम माश द्वादश मध्य जे सहु पर्व्व सेवन कारनें । सहु बालजन उपगार कारन शुद्ध भाषा सारनें ॥ संवत् रसानलनंदवसुधा भाद्र

शित एकादशी । गुरु गह्न खरतर कलिकता पुर मोहन न्नाषा उपदिशी ॥ १ ॥ ※ ॥ इति द्वादशमाश पर्व्वाधिकारः ॥ १२ ॥ सं१९३६ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वादश माश मध्ये प्रसिद्ध पर्वाधिकार कथनानंतर । सांप्रति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिस माशमें जितने दिन न्नगवंतके कल्याणकके है । सो सर्व न्नव्यजीवोंके सेवन करनें योग्य है । परंतुकोण तिथकों क्या कल्याण कहै । सो जाण्या विना सेवन कर सकते नही । (और विशेप में) पंच कल्याणक तपस्या करनेंवाले न्नव्यजीवोंके अवस्य पंच कल्याणक टीप गुणनें विना काम चलता नहीं । इसीसें गुणनो करनें माफक विधि प्रपाकसें पंच कल्याणक टीप लिखते हैं ॥

॥ ※ ॥ अथ पंच कल्याणक टीप लि० ॥ ※ ॥

(कार्त्तिक कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

५ ॥ श्रीसंन्नवनाथजी सर्वज्ञाय नमः

१२ ॥ श्रीपद्मप्रन्नुजी अर्हते नमः ॥

१२ ॥ श्रीनेमिनाथजी परमेष्टि० ॥

१३ ॥ श्रीपद्मप्रन्नुजी नाथाय० ॥

३० ॥ श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय० ॥

(मार्गशीर्ष कृष्णपक्षे) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी अर्हते० ॥

६ ॥ श्रीसुविधिनाथजी नाथाय० ॥

१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी नाथाय नमः ॥

११ ॥ श्रीपद्मप्रन्नुजी पारंगताय० ॥

(पोष कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

१० ॥ श्रीपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥

११ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥

१२ ॥ श्रीचंद्राप्रन्नुजी अर्हते नमः ॥

(कार्त्तिक शुक्लपक्षे) ॥ २ ॥

३ ॥ श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

१२ ॥ श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

(मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे) ॥ ९ ॥

१० ॥ श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ॥

१० ॥ श्रीअरनाथजीपारंगताय० ॥

११ ॥ श्रीअरनाथजी नाथाय० ॥

११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी अर्हते० ॥

११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी नाथाय० ॥

११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी सर्वज्ञा० ॥

११ ॥ श्रीनमिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

१४ ॥ श्रीसंन्नवनाथजी अर्हते० ॥

१५ ॥ श्रीसंन्नवनाथजी नाथाय० ॥

(पोप शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥

६ ॥ श्रीविमलनाथजी सर्व० ॥

१३ ॥ श्रीचंद्रप्रभुजी नाथाय० ॥
१४ ॥ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञा० ॥

(माघ कृष्णपक्षे) ॥५॥

६ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी परमेष्टिने० ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी अर्हं० ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी नाथाय० ॥
१३ ॥ श्रीरुषभदेवजी पारंगता० ॥
३० ॥ श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ॥

(फाल्गुन कृष्णपक्षे) ॥१०॥

६ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय०
७ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी पारं० ॥
७ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ॥
११ ॥ श्रीरुषभदेवजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ॥
१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञा० ॥
१३ ॥ श्रीश्रेयांसजी नाथाय० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपुज्यजी अर्हते नमः ॥
३० ॥ श्रीवासुपुज्यजी नाथाय० ॥

(चैत्र कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

४ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी परमेष्टि ०
४ ॥ श्री पार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय० ॥
५ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी अर्हते० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी नाथा० ॥

(वैशाख कृष्णपक्षे) ॥९॥

१ ॥ कुंथुनाथजी पारंगताय० ॥

९ ॥ श्रीशांतिनाथजी सर्व० ॥
११ ॥ श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञा० ॥
१४ ॥ श्रीअभिनंदनजी सर्वज्ञा० ॥
१५ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी सर्वज्ञा० ॥

(माघ शुक्लपक्षे) ॥९॥

२ ॥ श्रीअभिनंदनजी अर्हते० ॥
२ ॥ श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय० ॥
३ ॥ श्रीविमलनाथजी अर्हते० ॥
३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी अर्हते० ॥
४ ॥ श्रीविमलनाथजी नाथाय० ॥
८ ॥ श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ॥
९ ॥ श्रीअजितनाथजी नाथाय० ॥
१२ ॥ श्रीअभिनंदनजी नाथाय० ॥
१३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी नाथाय० ॥

(फाल्गुन शुक्लपक्षे) ॥५॥

२ ॥ श्रीअरनाथजी परमेष्टिने० ॥
४ ॥ श्रीमल्लिनाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीसंभवनाथजी परमेष्टि० ॥
१२ ॥ श्रीमल्लिनाथजी पारंगता० ॥
१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय० ॥

(चैत्र शुक्लपक्षे) ॥८॥

३ ॥ श्रीकुंथुनाथजी सर्व ज्ञाय० ॥
५ ॥ श्रीअजितनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीसंभवनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीअनंतनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीसुमतिनाथजी पारंग० ॥
११ ॥ श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञा० ॥

२ ॥ श्रीशीतलनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीकुंथुनाथजी नाथाय० ॥
६ ॥ श्रीशीतलनाथजी परमेष्टिने० ॥
१० ॥ श्रीनमिनाथजी पारंग० ॥
१३ ॥ श्रीअनंतनाथजी अर्हते० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी नाथा० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी सर्व० ॥
१४ ॥ श्रीकुंथुनाथजी अर्हते० ॥

(ज्येष्ट कृष्णपक्षे)॥८॥

८ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते० ॥
९ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी पारं० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी पारंग०॥
१४ ॥ श्रीशांतिनाथजी नाथाय० ॥

(आषाढ कृष्णपक्षे) ॥३॥

४ ॥ श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० ॥
७ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीनमिनाथजी नाथाय० ॥

(श्रावण कृष्णपक्षे)॥४॥

३ ॥ श्रीश्रेयांसजी पारंगताय० ॥
७ ॥ श्रीअनंत नाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ॥
९ ॥ श्रीकुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः ॥

(भाद्रवा कृष्णपक्षे) ॥२॥

७ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी पारंगता०॥
७ ॥ श्रीशांतिनाथजी परमे० ॥
८ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० ॥

१३ ॥ श्रीवर्द्धमानजी अर्हते० ॥
१५ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥

(वैशाख शुक्लपक्षे)॥८॥

४ ॥ श्रीअभिनंदनजी परमे० ॥
७ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीअभिनंदनजी पारंग० ॥
८ ॥ श्रीसुमतिनाथजी अर्हते० ॥
१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीविमलनाथजी पारं०॥

(ज्येष्ट शुक्लपक्षे) ॥४॥

५ ॥ श्रीधर्म्मनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ॥
१२ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी अर्हते०॥
१३ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजीनाथाय० ॥

(आषाढ शुक्लपक्षे) ॥३॥

६ ॥ श्रीवर्द्धमानजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीनेमनाथजी पारंग० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ॥

(श्रावण शुक्लपक्षे) ॥५॥

२ ॥ श्रीसुमतिनाथजी परमेष्टि०॥
५ ॥ श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः॥
६ ॥ श्रीनेमिनाथजी नाथाय० ॥
८ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी पारंग० ॥
१५ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी परमे० ॥

(भाद्रवा शुक्लपक्षे) ॥१ ॥

९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ॥

(आश्विन शुक्लपक्षे) ॥१॥

। आश्विन कृष्णपक्षे । ॥२॥ १५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्ठि०॥
१३ ॥ श्रीमहावीरजी गर्भापं० ॥ ॥※॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥
३० ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः ॥※॥ गर्भापहार षष्टमप्यस्तिः ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचकल्याणक विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शुभदिन शुभ वक्ती गुरूके पास । पंचकल्याणक तप ग्रहण करै । उपवास(वा)आंबिल एकासणा दिकको पच्चख्खाण करै । तीन टंक देव वंदन करै । पडिक्कमणो करै । (जिस दिन) जो माहाराजको कल्याणक होय । उसीको२००० गुणनो करै । और (पाश जिनेसर जगति लोए० इत्यादि पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै (वा) सुणै। जहां भगवंत के कल्याणक भूमि होय । (उहां) वडे महोछवसें संघ सहत यात्रा करनें कों जावै । विधिसंयुक्त यात्रा करै । और सर्व भगवंतों कै पंच कल्याणकको उछव करै । (जो) शक्ति न हो (तो) शाशनके अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के षट् कल्याणकका उछव जरूर करै ॥ ※ ॥ अव २३ भगवंत की अपेक्षायें पांच, श्रीवीर प्रभूकीअपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लि० ॥ ※ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक कों (परमेष्टिनेनमः) कहियै (इस दिन) चवद स्वप्नादिक की पूजा करायकै । चवन कल्याणकको उछव करै । हीरा चढावै ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों (अर्हते नमः) कहीयै (इस दिन) जलयात्रादिक महोछव करकै । अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावै । वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ ※ ॥ ३ ॥ दिक्षा कल्याणक कों (नाथाय नमः) कहीयै (इस दिन) समोसरण निकालै । अशोकवृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै । दिक्षाको उछव करै । घृत गुड वस्त्रादिक चढावै । शक्तिमाफक दान देवै ॥ ३ ॥ ※ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणककों (सर्वज्ञाय नमः) कहीयै । (इस दिन) समोसरणमें भगवंतकों स्थापन करकै । आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उछव करै । वस्त्र आभूषण चढावै। सपेदगोला चढावै ॥ ४ ॥ ※ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगताय नमः) कहीयै । (इस दिन ।) निर्वाण कल्याणक के भावगर्भित

उत्व करै लाभूचढावै ॥ ५ ॥ (और ठगा गर्भापहार कल्याणकका उत्व करणा होय तो चवण कल्याणकके उत्व समान करै ॥६॥ (इसी तरै) सर्व कल्याणकके उत्व करै । तपस्या पूर्ण होनें सें । पंचकल्याण णक जीकी पूजा करावै । गुरुभक्ति करै । साहमी वछल करै । (इत्या दिक) विधि संयुक्त यह तपस्या (जो) भव्य जीव करेंगे (सो) अन न्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्या धिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पख वासैको स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सीमंधर करजो मया (एदेशी) जंबुद्वीप सोहामणो । दक्षिण भरत उदार । राजग्रही नगरी भली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ (श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी । समरंता सुख थाय । मनवंछित फल पामी यै । दोहग दूरपुलाय ॥ २ ॥ (श्री०) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र नरेसर नांम । पटराणी पद्मावती । शीलगुणें अभिराम ॥ ३ ॥ (श्री०) श्रावण ऊजल पूनमैं । श्रीजिनवर हरिवंश । माताकुक्षि सरोवरै । अवतरी यो रायहंस । (श्री०) ॥ ४ ॥ जेठपढम पक्ष अष्टमी । जायो श्री जिनराय ॥ जनम महोत्व सुरकरै । त्रिभुवन हरख नमाय (श्री०) ॥ ५ ॥ शामल वरण सोहामणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंछन काछवो । वीशधनुष तनुमान (श्री०) ॥ ६ ॥ परणी नार प्रभावती । भोगपुरंदर साम । राजलीला सुखभोगवै । पूरै वंछित काम (श्री०) ॥ ७ ॥ तव लोगांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रभु फागुणवदि वारसै । लीधो संजम भार (श्री०) ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदि वारसै । मनधर निरमल ध्यान । च्यारकरम प्रभुचूरिया । पाम्यो केवलग्यान (श्री०) ॥ ९ ॥ (ढाल२) सुखकारण भवियण (एहनी) ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि । प्रभुना पदपंकज प्रणवै वेकरजोडी । वेकरजोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्र त्रय ऊजलकंत । सिंहासन वैठा तिहां स्वामी चोविह धर्मप्रकासै । वारै परखदा वैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ २४ ॥ तपनें अधिकारै पखवासो तपसार । पडिवा थी कीजै पनरह तिथ ऊदार । पनरह तिथि कीजै गुरु मुख लीजै जिस

दिन हुवै उपवास । श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास । तप कुजमणें रजत पालणो सोवन पूतलीचंग । मोदक थाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरन्तर अक्षरव दर्शनी जेम । मनवंछित केरा सुखपामी जै तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार । जस कीरत सोभाग वधाई महियल महिमा जांण । परभव मुगति फल लहीयै एतपनें प्रमांण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघ तणो अधिकार । भरुवच्छ प्रमुख नगरादिक करिया विहार । विहार करी प्रतिबोधै खंदक पंचसयां परिवार । कार्त्तिकसेठ जितसत्रु तुरंगम सुव्रतनाम कुमार । तीश सहस वरस आऊखो पालै जग दया सार । श्रीसम्मेत सिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय । मुनिसुव्रत स्वामी वीशमो जिनवरराय । वीशमो जिनवर राय जगत गुरु भयभंजण भगवंत । निराकार निरंजन निरुपम अजरामर अरिहंत । श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकल चंद गणिसीस । वाचक समय सुन्दर इम पभणै पूरो मनह जगीस ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ १ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ४४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ परववासा तप विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरूके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पडिवासैं । पूर्णमासी तक । इकसार पनरै उपवास करै । जो शक्ति न हो (तो) प्रथम सुद पक्षकी पडवा१। द्वितीय सुद पक्षकी दूज२ (ऐसें) अनुक्रमसें पनरै सुदपक्षमें तपस्या पूर्ण करै । श्री मुनिसुव्रत स्वामीके पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै । गुरूको संयोग होय (तो) गुरूके पास सुणें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसीको (२०००) दो हजार गुणनो करै । और तपस्या ग्रहण करनेंकी (तथा) देववंदनादिककी विधि । पूर्वै खुलासा लिख दीनी है । उसी मुजब विवेकी जीव सव तपस्या की विधि करै । विधि संयुक्त करनें सें उत्तम फल मिलता है ॥ ※ ॥ इति पखवासा विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दश पच्चक्खाण स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहाः) ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं । महावीर भगवंत । त्रिगडै बैठा जिनवरू । परषदबार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समें । पूछै श्रीजिनराय । दश पचखाण किसा कह्या । कीयां कवण फल थाय ॥ २॥ (ढाल) ॥ १ ॥ सीमंधर करज्योमया (एदेशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिशै । सांभल गोयम स्वाम । दश पचखाण कियां थकां । लहीयें अविचल ठाम ॥ श्री० ॥ ३)॥ नवकारसी १ । बीजी पोरसी २ ॥ साढ पोरसी ३ । पुरमड्ढ ४ ॥ एकासण ५ ॥ नीवी ६ ॥ कही ॥ एकलठाण ७ ॥ देव छि ॥(श्री ४)॥ दात ८ । आंबिल ९ । उपवास १० । ही ॥ एहीज दश पच्चख्खाण । एहना फल सुण गोयमा । जू जूवा करूं वखाण ॥ (श्री०५)॥ रतन प्रभा १ । शर्कर प्रभा २ ॥ वालुक ३ । तीजी जांण ॥ पंक प्रभा ४ । तिम धूम प्रभा ५ ॥ तम प्रभा ६ । तम तम ७ । ठाम । (श्री० ६)॥ नरक सात कही एसही । करम कठिन करजोर । जीव करम वस ते सही । उपजै तिण हीज ठोर (श्री०७॥) छेदन भेदन ताडना । भूख त्रिपा वलित्रास । रोम रोम पीडा करै । परमाहम्मी तास (श्री०८) ॥ रात दिवश खेत्रवेदना । तिलभर नहीं जिहां सुक्ख । किया करम जे भोग वै । पामें जीव बहुदुक्ख (श्री०९)॥ इकदिनरी नवकारसी । जे करै भाव विशुद्ध । सो वरस नरकनो आऊखो । दूर करै ज्ञानबुद्धि(श्री०१०)॥ नित्य करै नवकारसी । ते नर नरक न जाय । नरहै पाप वलि पातला । निरमल होवै जी काय (श्री०)॥११॥ ढाल २॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो (ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां । महामोटो फलहोय । भावसुं जे पोरसी करै। दुरगति छेदै सोय (सु०१२) । नरक मांहे जे नारकी । वरशें एक हजा र । करम खपावै नरकमें । करता बहुत पुकार (सु०१३ ॥) एक दिवश नी पोरसी । जीव करै इकतार । करमहणें सहस एकना । निहचैसुं गण धार (सु०) १४ ॥ दुरगति मांहे नारकी । दसहजार प्रमाण । नरक आयु खिण एकमें । साढपोरसी करै हांण (सु०) १५ पुरमड्ढ करै नित जीवजे । नरकै ते नविजाय । लाख वरश करमनें दहै । पुरमड्ढ करम खपा य (सु०) १६ ॥ लाख वरश दश नारकी । पामें दुःख अनंत । इतरा

करम एकासणें । दूर करै मनखंत (सु०) १७॥ एककोमि वरसांलगे । करम खपावै जीव । नीवीय करतां न्नावसुं । डुरगति हणें सदीव (सु०)१८॥दश कोमी जीव नरकमें । जितरो करै कर्म दूर। तितरो एकलठांणही । करैसही चकचूर (सु०)१९ ॥ दात करंतां प्राणीयो। सो कोमी परमांण। इतरा वरश डुरगति तणा । छेदै चतुर सुजांण (सु०) २०॥ आंबिलनो फल वज्ञ कह्यो । कोमी एक हजार । करम खपावै इणपरै। न्नाव आंबिल अधिकार (सु०) २१॥ कोमि सहस दशवरशही । सहे डुःख नरक मफार। जपवास करै इक न्नावसुं। तो पामें मुगति मफार (सु०) २२ ॥ ढाल ३ ॥ केकेइ वरलाधो (एदेशी)॥ लाख कोमी वरसां लगें। नरके करतां रीवरे। (गोतम गणधारी) । छठम तप करतां थकां । सही नरक निवारै जीवरे (गो०२३)॥ नरकेवरश कोम लाखही । जीव लहें तिहां डुःखरे । ते डुख अठम तप ऊंती। दूरकरी पामें सुक्खरे (गो०) २४ ॥ छेदन न्नेदन नारकी । कोमा कोमि वरसोइरे। कुगति कुमतिनें परहरो । दशमें एतो फल होइरे (गो० २५) नितफासू जल पीवतां। कोमा कोमी वरशनो पापरे। दूरकरै खिण एकमें । निश्चेहोय निः पापरे (गो०२६)॥ वलिय विशेषै फल कह्यो । पांचम करै जपवासरे। पामेंग्यान पांचेन्नला। करता त्रिन्नुवन परकासरे (गो०) २७॥ चवदश तप विधसुं करै। चवदह पूरव होय धाररे। इम अनेक फल तपतणा। कहितां वलि नावै पाररे (गो०२८)॥ मन वचने काया करी । तप करै जेनर नाररे । इग्यारै वरश एकादशी । करतां लहै न्नवपाररे (गो०२९)॥ आठम तप आराधतां । जीव न फिरै संसाररे । अनंत न्नवांना पापथी । बूटै जीव निरधाररे (गो०३०)॥ तप ऊंती पापी तस्या। निसतरीयो अरजुन मालरे (गो० ३१)॥ तपना फल सुत्रे कया । पच्चक्खाण तणा दश न्नेदरे । अवर न्नेद पिणछै घणा । करतां छेदै न्नय वेदरे (गो० ३२)॥ कलशः॥ ※ ॥ पच्चक्खाण दशविध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए। जे करै न्नवियण तप अखंमित तासु सुरपय सेवए । संवत्त निधिगुण अश्व शशि वलि पोशसुद दशमी दिनें । पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि न्नणें (गो० ३३)॥ इति दश पच्चक्खाण फल स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १० पच्चक्खाण तपविधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यह दश १० पच्चक्खाणके स्तवनमें । खुलासा दश पच्चक्खाणके नेद (और) वेला । तेला । पांचम । आठम । चौदश । (इत्यादिक) तपस्या करनेंके फल । नगवंत श्री महावीर स्वामीके । वचन माफक । उत्तम पुरुषोनें रचना करी है । (इसीसें) धर्मरागी पुरुष । इसी स्तवनकों पढके । तपश्चया करनेंमें आदरवंत होताहै । और कोईके दश पच्चख्खाण तप करनेंकी इच्छा हो (तो) पहलै दिन । नवकारसी, दूशरे दिन पोरसी (इसी तरै) स्तवन मुजब १० पच्चक्खाण तप । दश दिवशे सेवन करै । सदा स्तवन सुणें । गुरूको संयोग न हो (तो) आपपढै । अंतमें पूजाकरावै । शक्ति माफक नयापन करै (इसी तपस्याके प्रसाद) खोटी गतिकों दूर करकै । अच्छी गतिके वंध वांधै । महा ऐश्वर्यवंत होय । नाग्यवंत होय ॥ ※ ॥ इति दश पच्चक्खाण तप विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वीश स्थांनक स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीसिद्धाचल नेटियै (एदेशी) ॥ वीश थांनक तपसेवीयै । धर करि सुन परिणांम लाल रे । तीजै नव सेव्योथको । वांधै तीर्थ कर नाम लालरे । (वी० ॥ १ ॥ तप रचना अधकी कही । ग्याता अंग मकार लालरे । सुणजो नवि तुमे नावसुं । चितसें करियै उचार लालरे (वी०) ॥ २ ॥ सुविहत गुरु पासै ग्रहै । वीश थांनक तप एह लाल रे । निरदूपण सुनमझरते । नचरीजै ससनेह लालरे (वी०) ॥ ३ ॥ अरिहंत १ । सिद्ध २ । प्रवचननमुं ३ ॥ सूरि ४ । थिवर ५ । उवझाय ६। लालरे ॥ साधु ७ । नाण ८ । दंसण ९ । अरु ॥ विनय १० । नमुं उब्रसाय लालरे (वी०) ॥ ४ ॥ चारित्र ११ । वंन्न १२ । क्रियापदे १३॥ तप १४ । गोयम १५ । जिण १६ । ईस लालरे ॥ चारित्र १७ । ग्यानें १८। श्रुत १९। नणी ॥ नमुं तीर्थ २० । पदवीश लालरे (वी०) ॥ ५ ॥ वीश दिवशमें एकही । पद गुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन वीशांलगे । वीशे पद गुणमेव लालरे (वी०) ॥ ६ ॥ एकउली पट्माशमें । पूरीजो नविहोय लाल रे । फेरनवी करणी पमै । पिछली निष्फल जोय लाल रे (वी०) ॥ ७ ॥ ठ० अठम उपवाससुं । अथवा देखी शक्ति

लालरे । पोसहकर आराधियै । देववांदै निज भक्तिलाल रे (वी०) ॥ ॥ ८ ॥ संपूरण पद सेवतां । पोसहरो नही जोग लालरे । तोही सात पदैसही । पोसह करिये संजोग लालरे (वी०) ॥ ए ॥ सूरि, थिवर, पाठक, पदै । साधु, चारित्र, सुजांण लालरे । गौतम, तीर्थपदे, सही । सात थांनक मनमान लालरे (वी०) ॥ १० ॥ पद पद दीठ करै सदा दोय दोय जाप हजार लालरे । पडिकमणो दोय टंकही । करियै पूजा सार लालरे (वी०) ॥ ११ ॥ शक्ति मुजव तप कीजीयै । एक उली करो वीश लालरे । वीशा वीशी च्यारसै । तप संख्या कही एम लालरे (वी०) ॥ १२ ॥ जिसदिन जो पद तप करै । तिसके गुण चितधार लालरे । काउसग्ग पर दक्षणा । मुख भणियै नवकार लालरे (वी०) ॥ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणें । कीजै जिन पद भक्ति लालरे (वी०) १४ ॥ मृतक जनम रितु कालमें । कविधारयो उपवास लालरे । सोलेखै नहिं लेखवो । निकेवल तपजास लालरे । (वी०) ॥ १५ ॥ सावद्य त्याग पणो करै । सोकन धारै चित्त लालरे । शील आभूषण आदरै । मुखसुं बोलै सत्य लालरे (वी) ॥ १६ ॥ जेठ आशाढ वैशाखमें । मिगसर फागुण मांह लालरे । एषट् माशे मांहिनें । व्रत ग्रहीयै वर भाग लालरे (वी) ॥ १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां । उजमणो निरधार लालरे । कीजै शक्ति विचारनें । उछव विवध प्रकार लालरे (वी०) ॥१८॥ वीश वीश गिणती तणा । पुस्तक पूठा आदि लालरे । ग्यान तणी पूजा करै । मुंकीजे हठ वाद लालरे (वी०) ॥ १ए॥ फलवधी नगरनी श्राविका । कीधी विध चित्त लाय लालरे । जनम सफल करवा भणी । ओहीज मोक्ष उपाय लालरे (वी०)॥२०॥ (कलश) ॥ ※ ॥ इम वीर जिनवर तणी आग्या धार चित्त मझारए । सङ्कदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारए । वसुनंद सिद्धि चंद्र वरसे चेत्र मास सुहंकरू । मुनि केसरी शशि गच्छ खरतर भणी स्तवना मन हरू ॥ २१ ॥ इति वीश स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ※॥

॥※॥ अथ वीश स्थानक तपकरण विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ तिहां प्रथम शुभ महूर्त्तके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । वीश स्थानक तप । विधिपूर्वक उच्चरै । एक उली दो

माशसें लेकै (यावत्) ठम्माशें पूरी करै। (कदाचित्) ठम्माश मध्ये पूरी नकर सकै (तो) वा उली गिणती में नहीं। और नवी करणी पमै। एक उलीके वीश पद हैं (तिहां) कोई वीश दिनमें। वीशों पद जूदा २ गिणें कोई वीशों दिनमें एकजपद गिणें। दूसरे वीशों दिनमें दूसरो पद। (ऐसें) वीशों पदकी वीश उली करै। तिहां पदाराधनके दिन प्रवल शक्तिवंत। अठम तप करिकै आराधै। वीश अठमें एकउली होय (ऐसें) वीश उली (४००) अठमें आराधै। और तिससें हीनशक्ति ठठ तप करकै आराधै। तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करकै आराधै। तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करकै आराधै। तिससें हीन शक्ति आंविल (तथा) तिविहार एकाशणा करकै आराधै। तिहां शक्तिवान प्राणी। सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै। (हीन शक्ति) दिन पोसह करै। वीशों पद पोसह सेती आराधै (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य पदै १ उपाध्याय पदै २ थिवर पदै ३ साधू पदै ४ चारित्र पदै ५ गौतम पदै ६ तीर्थ पदै ७ यह सात थानकै तो पोसहज करकै आराधै। तथापि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देशावगासिककरै। सावद्य व्यापार त्यजै। सो पिण नहोइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधै। अपणी ही नताजावै (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणें, न जावै। स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह सहित करै (तो) वहोत श्रेयकारी है। सो न होसकै (तो) तपके दिन उनय टंक पमिक्कमण करै। तीन टंक देव वंदन करै। दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करै। ब्रह्मचर्य पालै। नूमि शयन करै। तपकै दिन अतिसावद्य आरंन व्यापार न करै। असत्य न बोलै। सर्व दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै। (तथा) तपके दिन पोसह करै (तो) पारणेंके दिन जिन नक्ति करके पारणो करै। (जो) तपके दिन पोसह नहो (तो) उसी दिन श्रीजिन नक्ति करै। करावै। नावना नावै। (तथा) तपकै दिन पदके गुण नेद प्रमाण संख्याइ काउसग्ग करै। (तावन्मात्र) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करै। उस पदका गुण यादकरके उदात्त स्वरें स्तवना करै। हर्षित रहै॥ ॥ ॐ ॥ ॥ॐ॥

॥※॥ अथ वीश स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते हें ॥※॥

॥※॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउस्सग्ग ॥ ※ ॥ १ ॥ ※ ॥ (णमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स१५ काउसग्ग ॥ ※ ॥ २ ॥ ※ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ※ ॥ ३ ॥ ※ ॥ (णमो आयरियाणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ※ ॥ ४ ॥※॥ (नमो थेराणं) (२०००) दो हज्जार गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥※॥ ५ ॥※॥ (णमो उवायझाणं) दो हज्जार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥※॥ ६ ॥※॥ (णमो लोए सव्वसाहूणं) २००० गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥※॥ ७ ॥※॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥※॥ ८ ॥※॥ (णमो दंसणस्स (२०००) गुणनो । लोगस्स १७ काउसग्ग ॥※॥ ए ॥※॥ (णमो विनयसंपण्णाणं) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥※॥ १० ॥※॥ (णमो चारित्तस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥※॥ ११ ॥※॥ (णमो बंभव्वय धारीणं) २००० गुणनो । लोगस्स ए काउसग्ग ॥※॥ १२ ॥※॥ (णमो किरिआणं) २००० गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ※ ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ (णमो तवस्सीणं) २००० गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥※॥ १४ ॥※॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो । लोगस्स १७ काउसग्ग ॥※॥ १५ ॥※॥ (णमो जिणाणं) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥※॥ १६ ॥※॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥※॥ १७ ॥※॥ (णमो नांणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥※॥ १८ ॥※॥ (णमो सुअनाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥※॥ १ए ॥※॥ (णमो तित्थस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग करै॥※॥ २० ॥※॥ ॥※॥

इति वीश स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उछव महोछव प्रभावना वना ऊजमणा पूर्वक करै । जिन शाशन के उन्नतिके कारण करै । इतनी

शक्ति न हो (तो) एक उली तो विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है (जो) गुरुको संयोग हुय । तवतो विस्तारसें वीशों पदकी जूदी जूदी विधि । गुरुके मुखसें समझकै करै (जो) गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीश स्थानक तप सेवन करै । वीश स्थानक तवन पढै (वा) सुणें । वीश स्थानकजीकी पूजा करावै । अपनी शक्ति माफक वीश वीश ग्यानोपगरण करावै । देव पदको देव खाते लगावै । ग्यान पदको ग्यान खाते लगावै । गुरु पदको गुरु खाते लगावै । सर्व तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी वछल करै (इत्यादिक) द्रव्यै, भावै, विधिसंयुक्त सुध भावसें (जो) भव्य जीव यह वीश स्थानक पदकों सेवन करेंगे (सो) जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै । तीशरै भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे। इत्यलंविस्तरेण ॥※॥ इति वीशस्थानक तपउली विधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ रोहणी तप स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शाशण देवत सांमणीए । मुझ सानिध कीजै ॥ भूलो अक्षर भगति भणी । समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणोए । जिणरा गुण गावुं ॥ जिम सुख सोहग संपदाए । वंछित फल पावुं ॥१॥ दक्षिण भरते अङ्गदेस छे चंपानयरी । मघवा राजा राज करै तिण जीता वैरी । पाट तणी राणी रूक्मीए लखमी इण नामें । आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामें ॥ २ ॥ रोहणी नामें पुत्रिकाए सवकुं सुखकारी । आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागै प्यारी । वाधै चंद्र तणी कलाए जिम पख उजवाले । तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरीरूपै रूक्मीए घर अङ्गण वैठी । दीठी राजा खेलतीए तिण चिंता पैठी । तीन भुवन विच एहवी ए नहीं दूजी नारी । रंभा पदमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीसै कोइ इसो जिणनें परणावुं । आव्यां आगल साल वधै तिण चयन न पावुं । देश२ ना राजवीए ततखिण तेडाया । सवल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजा तणोए छै कुमर सोभागी । कन्या कैरी आंखमीए तिण सेती लागी । कन्या देखै स

कल लोक चढीया केई पाला । चित्रसेन रै कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६॥ देव अनें देवांगनाए जपै जयश् कार । रलियायत थयो देखनें ए सारो संसार । करजोमी कहै लोक वखत कन्यारो जामो । वीत शोकनो कुमर थयो शिर ऊपर लामो ॥ ७ ॥ इम वीवाह थयो न्नलो ए दीया दान अपी र । घर आया परणी करीए हरख्यो परिवार । वीतशोक निज पुत्रन्नणा अपणो पाट दीधो । आपण संयम आदरी ए जगमें जश लीधो ॥ ८ ॥ ढाल ॥ॐ॥ प्रन्नु प्रणमुंरे पाशजिनेसर थंन्नणो (एदेशी)॥ॐ॥ तिण नयरी रे चित्रसेन राजा थयो । सुख मांहै रे केतलो काल वही गयो । इण अवसररे आठ पुत्र ऊवा न्नला । चढतै पखरे चंद जिसी चढती कला (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी । सातमी न्नूमें कंत सेती करै क्रीमा अति घणी । आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं राणी लियो । पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कांमणरे गोख चढी द्रष्टे पडी । शिर पीटैरे दीनस्वरे रोवै खमी । वूढा पणरे मनगमतो बालक मुंओ । ऊं एकजेरे तिण अधिकेरो उखऊवो(ऊ०) उखऊवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम न्नणी । एनार नाचै अनें कूदै कहो किम मोटा धणी । एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही । मुऊनें तमासो अनें हाशो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल ॥ इण वचनेंरे री सांणो राजा कहै ॥ तूंपापणीरे परतणी पीमा नवि लहै । ए उखणीरे पुत्र मुंए तम फम करै । जव बीतैरे वेदना जाणी जै तरै । (ऊ०) जाणें तरै तुं बात उखनी गरब गहली कामनी । इम कही राजा हाथ ऊाल्यो तेह ना बालक न्नणी । सातमी न्नुंयथी तलै नाख्यो तिसे हाहारवथयो । रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजारे पुत्र तणें शोकै करी । थयो मुरछितरे रोवै अति आंख्यां न्नरी । पमतो सु तरे सासणदेवत जांणियो । कंचन मइरे सिंहासण वैसांणियो । (उल्लालो) वैसांणियो करजोम आगै करै नाटक देवता । गोदीखिलावै के हसावै पा य पंकज सेवता । ऊपनो न्नूपतिनें अचंन्नो देखी ए कारण किसो । जो कोई ग्यानी गुरुपधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १३ ॥ (चाल) चिंतवतांरे चा रितिया आया तिसै । राजा पिणरे पुहतो वांदणनें तिसै । सुण देशनारे

पूछै प्रश्न सुहामणो । कहो स्वामीरे पूरव भव बालक तणो ॥ (उल्लालो) बालक तणो भवभूप पूछै कहै इण पर केवली । रोहणी राणीरो भवांतर अनें राजानो वली । श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणी तप आदस्यो । तप तणें सगते साधु भगते तुम्म भवसायर तस्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे किम रोहणितप कीजीयै । विधि भाषोरे जिम तुम पासे लीजीयै । तव मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी । इम जंपैरे चित्रसेन राजा भणी ॥ (चाल) राजा भणी विधएह जंपै चंद्र रोहण तप आवियै । उपवास कीजे लाभ लीजै भली भावना भावियै । वारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै म नरङ्गसुं । इम सात वरसां लगे कीजै तजी आलस अङ्गसुं ॥ १४ ॥ ॥卐॥(ढाल) ३॥卐॥ वीरसुणो मोरी वीनती (एचाल) ॥卐॥ तप करियै रोहणि तणो। वली करियैहो ऊजमणो एम । तप करतां पातिक टलै । तिण कीजै होतपसेती प्रेम ॥ १५ (त०) ॥ देव जुहारी देहरै । तिण आगै हो कीजै वृक्ष अशोक । गुणनो वारम जिन तणो । भला नेवज हो धरीयै सज थो क ॥ १६ त०॥ केशर चन्दन चरचीयै । कीजै आगै हो आठे मङ्गलीक। विधसुं पुस्तक पूजीयै । ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥ १७ (त० ॥ सेवा कीजै साधूनी । वलि दीजै हो मुंह मांग्यादान । संतोषी जै साहमी । मन रङ्गे हो कर २ पकवान ॥ १८ (त०) पाटी पोथी पुंछणा । मिस लेखण हो झिल मिल सुजगीस । नवकरवाली वीटणा । गुरु आगै हो धरो सत्ता वीस ॥ १९ (त०) ॥ चोथो व्रत पिण तिणदीनें । इम पालै हो मन आण विवेक । इण विध रोहणि आदरै । तेपांमें हो आनन्द अनेक ॥ २० ॥ ॥卐॥ (ढाल ४ धरम करो जिनवर तणो) ॥卐॥ इम महिमा रोहण तणी। श्रीग्यांनी गुरु परकासैरे । चित्रसेननें रोहणी । वाशपूज्य तिर्थंकर पासै रे ॥ २१ (इ०) ॥ इणपरि रोहणि आदरी । ऊपर ऊजमणो कीधोरे । चित्रसेननें रोहणी । मनसूधै संजम लीधोरे ॥ २२ (इ०) ॥ आठे पुत्रे आदरी दि स्या वारम जिन आगैरे । वलि नानाविध तप तपे । धरम तणी मति जागैरे ॥ २३ (इ०) ॥ करि अणसण आराधना । लहि केवल शिवपद पायारे । जि नवाणी आणी दीयैं । प्रभु चरणां चितलाया रे ॥ २४ (इ०) ॥ मनमोहन महिमानिलो । मेंतवियो शिवपुर गामीरे । मनमान्या साहिब तणी । हित

पुन्यें सेवा पामी रे ॥ २५ (३०) ॥ ॥ कलश ॥ ॥ इम गगन डुग मुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुद भली । में कही रोहण तणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली । वाश पूज्य अमनें थया सुप्रशान चित्तनी चिंता टली । श्रीसारजिन गुण गावतां हिव सकल मन आश्या फली ॥ २७ ॥ इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ॥

॥ ॥ शुभ दिन गुरूके पास रोहणी तप ग्रहण करै । रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै । वारमा श्री वाश पूज्य स्वामीका पूजन करै । आगै अष्ट मंगलीक रचना करे । अष्ट द्रव्य चढावै । देव वंदनादिक करकै धर्मोपदेश शुणें ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ ॥ ॥ श्रीवाश पुज्यस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॥

॥ ॥ इसी को (२०००) गुणनो करे । ऐसें सात वरश (यह) तप करनेंसें । सुख शौभाग्य वधैगा । विशेष अधिकार । यह रोहणी तप का स्तवन सुणनेंसें मालुम होगा (अलं विस्तरेण) इति रोहणीतप विधिः॥

॥ ॥ अथ छम्माशी तप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय । महावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं विचार (वलि २ वांडु वीरजी सुहामणा) ॥ १ ॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै । गातां नवनिधि थाय । बारैं वरसां वीरजी तपकीयो । दूरकरै सहु पाप (व०) ॥ २ ॥ वे करजोमी एहुं वीनवुं । श्रीजिन शाशन राय । नाम लियांथी नव निधि संपजै । दरशण डुरित पुलाय (व०) ॥ ३ ॥ नव चौमाशा जिन जीरा जांणियै । एक कियो छम्माश । पांचे ऊणा छ वलि जाणीयै । बार के को जी माश (व०) ॥ ४ ॥ बहुत्तर माश खमण जग जीपता । छ दो माशीरे जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशी वखाण (व०) ॥ ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणीयै । उत्तम एहना प्रकार । विचमें पारणो स्वामी नवि कीयो । नवि कीयो चौथो आहार ॥ ४ ॥ (व०) तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी । कीधा बारै जी माश । दोयसै बेला जिनजीरा

जाणीयै । इम गुणतीस विलास (व०) ॥ ६ ॥ तीनसै पारणा जिनजीरा जाणीयैं । तीन गुणतीश पचाश । एहमें स्वामी केवल पामिया । पांम्या मुगति आवास (व०) ॥ ६ ॥ (कलशः) इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतही दुक्कर तप करी । संयम सुपाली कर्म टाली स्वामी शिवरमणी वरी। सेवक पत्रणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा । संसार कूप पर्मत राखो आपो स्वामी सुखघणा ॥ ७ ॥ ॥※॥ इति छम्माशीतप स्तवनं ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ छम्माशी तप विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शाशनके अधिपति श्री महावीर स्वामी । सर्वसें उत्कृष्ट छम्माशी तप कियो । (इसीसें) इस कालमें संघयण वल पराक्रमके हीनपणासें इकसार छम्माशी तप न कर शकै (तोपिण) छम्माशीके (१८०) उपवास करनेंसें । जघन्य छम्माशी तपकै फलकों प्राप्तहोय । और देववंदनादि सर्व क्रिया करै । छम्माशी तपका स्तवन शुणें । इस छम्माशी तपकै स्तवनमें । सर्व तपस्या की संख्या कही है ॥ ※ ॥ ॥ ※॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः ॥※॥

इसी को (२०००) गुणनो करै । भगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करनेंकों जावै । अनेकतरेंसे शुद्धना वना जावै । शक्ति माफक उद्यापन करै । इस तपस्याके प्रशाद लघुकर्मी होके अनन्त सुखकों प्राप्त होय ॥※॥ इति छम्मासी तप विधिः ॥ ※॥

॥ ※ ॥ अथ बारे माशी तप स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दांन उलट धरी दीजीयै । (एदेशी) ॥※॥ त्रिभुवन नायक तुं धणी । आदि जिणेसर देवरे । चौसठइंद्र करै सदा । तुझपद पंकज सेवरे (त्रिभु०) ॥ १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तुंथयो । इण अवसरपणी कालरे । तुझ सम अवरन को प्रभु । तुं प्रभु दीन दयालरे (त्रि०) ॥ २ ॥ प्रथम तीर्थ कर तुं सही । केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं । तुंही है प्रथम जिनंदरे । (त्रि०) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आतम तणा । काल अनादि थितिजेहरे । ते तप शक्तिये तैंहण्या । आतम वीरज गुण गेहरे (त्रि०) ४ ॥ तादृशी शक्ति कुण कह शकै । जेहनो अंत न

पाररे । द्वादश माशनो तप कर्यो । तेह अपानक साररे (त्रि०) ॥ ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो । आगममें जिन राजरे । ते करवुं अति आकरुं तप विना किम सरै काजरे (त्रि०) ॥ ६) तीनशै साठ उपवास ते । जे इण पंचम कालरे । अवसर आदरै क्रम विना । ते पिण भवि सुविलासरे (त्रि०) ॥ ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै । शास्त्र तणें अनुसाररे । पडिक्कम णादिक भावथी । सुद्ध क्रिया मन धाररे (त्रि०) ॥८॥ चित्तसमाधि सुभ भाव थी । धरै ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल लहै । वलिलहै उत्तम ग्यानरे (त्रि०) ॥ ए ॥ काल अनादि संसारमें । जन्म मरण तणा दु क्खरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवै सुक्खरे (त्रि०) ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर भव पुन्यथी । वलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनी रुचिथईहे मुझे । हिव मिट्यो मन तणो भर्मरे (त्रि०)॥ ११ ॥ भव २ एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख काररे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । मैं कियो हिवै परिहाररे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष मारग सुविसालरे । भव २ जे मुझ संपजै । तो फलै मंगल मालरे(त्रि०) ॥१३॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन२ जेनर आ दरै । काटै ते करमनो फंदरे (त्रि०) ॥ १४ ॥ (कलशः) इम नाभि नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मैंथुणयो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीवालूचरै श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥❀॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥अथ बारै माशी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथमतिर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तपस्या करी (इसीसें) भव्य जीव बारै माशी तपस्याका भाव लायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करै । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया करै । बारै माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्री ऋषभदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥ ॥

इसीको (२०००) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनेंसें सिद्धगिरी यात्रा करनेंको जावै । शक्तिमाफक उद्यापन उच्छव करै । इस तपस्याके प्रशाद

भन्य जीवोंके कभी दुख दौ भाग्य प्राती न होय। सदा तप तेज वढतो रहे। इति वारे माशी तपस्याविधिः॥ ※॥ ॥ ※॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दुहा) प्रणमुं प्रथम जिनेसरु। शुद्धमनें सुखकार। लवधि अठावीस जिन कही। आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्ण व्याकरणें प्रगट भगवती सुत्रमझार। पन्नवणा आवस्यके। वारू लवधि विचार ॥ २ ॥ आंविल तप कर ऊपजै। लवधां अठावीस। एहिव परगट अरथसुं। सां भलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ सफल संसारनी ॥ ※ ॥ अनुक्रमें हेव अधिकार गाथा तणें। लवधिना नाम परिणाम सरिषा भणें। रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही। प्रथम ते लवधि छै नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मुत्र उंषध समा जाणीयै। वीय वप्पोसही लवधि वखाणीयै। श्लेषम उंषध सारिखो जेहनो। तीजी खेलोसही नांम छै तेह नो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरै हुवै। चोथी जल्लोसही नाम तेह नो ठवै। केश नख रोम सहु अंग फरसै सही। रहै नही रोग सव्वोसही ते कही ॥६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा। भेद जाणें तिका नाम संभिन्नश्रणा। वस्तु रूपी सहु जांणियै जिण करी। सातमी लवधि ते अ वधि ग्यांनें करी ॥ ७ ॥※॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (ए चाल) ॥ ॥ ※ ॥ हिव आंगुल अढीयै ऊणो मांनुष क्षेत्र। संग्या पंचेंद्री तिहां जे वसय विचित्र। तसु मननो चिंतित जांणें थूल प्रकार। ते ऋजुमति नांमें अठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत। पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत। सूखम परजायें जाणें सहु परिणाम। ए नवमी कहीयै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रभावे भमी जाय आकाश। ते जंघा विद्याचारण लवधि प्रकाश। जसु वचन सरापें खि णमें खेरुथाय। ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम वादरदेखै लोकालोक। ते केवल लवधी वारमियै सहु थोक। गणधर पद लहीयै तेरम लवधि प्रमाण। चवदम लवधे करी चव दै पुरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पांमें पनरमी लवधि। सोलम सु

खदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि । बलदेव तणो पद लहियै सतरमी सार । अ
ढारमि आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह
सवाद । एहवी लहै वाणी उगणीसम परसाद । नणीयो नविन्नूलै सुत्र
अरथ सुविचार । ते कुष्टिक बुद्धी वीशम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एकै प
द नणीयै आवै पद लख कोम । इक वीशमी लवधी पायाणु सारणी
जोम । एकै अरथै करी उपजै अरथ अनेक । बावीसम कहीयै वीज
बुद्धि सुविबेक ॥ १४ ॥ ❊ ॥ (ढाल) ॥ ❊ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो
रे (एचाल) ॥ ❊ ॥ सोलह देश तणी सही रे । दाहक सगति वखाण ।
तेह लवधि तेवीसमीरे । तेजोलेश्या जाण ॥१५॥ (चतुरनर सुण ज्यो ए
सुविचार) । आगममें अधिकार । वारू लवधि विचार (च०) ॥ चवदह
पूरव धर मुनिवरूरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवो रचि मोकलै रे । लवधि
आहारक एह (च०) ॥१६॥ तेजो लेश्या अगनिनें रे । उपशम वा जल
धार । मोटी लवधि पचवीश मीरे । शीतो लेश्या जांण (च०) ॥ १७ ॥
जेण सगति सुं विकुरवैं रे । विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै छवीसमीरे ।
वेक्रिय लवधि अनूप (च०) ॥ १८ ॥ एकणपात्रे आंदमीरे । जीमावै केई
लाख । तेह अक्षीण महाणसी रे । सत्तावीसमी साख (च०) ॥ १९ ॥
चूरै सेन चक्कीसनी रे । संघादिकनें काम । तेह पुलाक लवधि कही रे ।
अठावीशमी नाम (च०) ॥ २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुंरे । तेम पुलाक
विचार । नगवती सुत्रमें नाषियो रे । ए त्रिहुंनो अधिकार (च०) ॥
२१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे । कलपसुत्र गणधार । तीन तीन इक२ मिली
रे । वारू आठ विचार (च०) ॥२२॥ प्रश्न व्याकरणें कही रे । बाकी
लवधां वीश । सांनलतां सुख ऊपजै रे । दोलत हुवै निशि दीश (च०)
२४ ॥ ❊ ॥ (कलशः) ॥ ❊ ॥ संवत्त सतरैसै छवीशै मेरु तेरस दिन
नलै । श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावलै । वाच
ना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए । श्रीधर्म वर्द्धन स्तवन न
णतां प्रगट ग्यान प्रकाश ए ॥ २५ ॥ इति (२८) लब्धि स्तवनं ॥

॥ ❊ ॥ अथ अठाईस लब्धि तप विधिः ॥ ❊ ॥

॥ ❊ ॥ (शुन्नदिन) गुरुके पास । २८ लब्धि तप ग्रहण करै । अ

नुक्रमसें २७ उपवास करै । स्तवन सुणें । (जिस दिन) जो लब्धी को उपवास होय । उसी लब्धी कै नामको गुणनो करै । तप पूर्ण होनेंसें । शक्ति माफ़क उद्यापन करै । यह तपस्या करनेंसें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय । सदा आनंद रहे ॥ ※ इति २७ लब्धि तप विधिः ॥ ※

॥ ※ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ वेकर जोमी तांम (एचाल) । जिनवर श्री व्रधमान । चरम तीर्थंकर । मह ऊगी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्रीगणधार । सूरि शिरोमणी । नमतां नवनिधि संपदाए ॥ १ ॥ चवदै पूरव नाम । सुन्नें जूजूवा । वीरजिणंदे न्नाषीयाए ॥ तेहिव सुगुरुपसाय । वरणवस्युं इहां । आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद१ । दूजो अग्रायणी२ । वीर्यवाद३ तीजो नमुंए ॥ अस्ति नास्ति प्रवाद४ । सत्ता जाणो यै । नारगरयण ५ पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ बठो सत्यप्रवाद ६ । सत्तम आतम ७ । कर्म प्रवाद अठम गिणोए ८ ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९ । नामें नवम । विद्या प्रवाद दशमो कह्योए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११ । प्राणायु बारमो १२ । क्रिया विलास तेरम न्नणोए १३ ॥ बिंदुसार इण नाम १४ । चवदै एकठा । सास्त्र थकी में संग्रह्याए ॥ ५ ॥ (ढाल२) श्रीविमलाचल सिरतिलो (एदेशी) ॥ उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटी पद परिमांण । पटन्नाव प्रगटै ते जिहां । त्रिपदी न्नावविनांण ॥ १ ॥ सर्वद्रव्य पर्यय तणो । जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अग्रायणी । छिन्नू लख पद जांण ॥ २ ॥ पदलख सत्तर जेहनी । संख्या परगट एह । वीर्य प्रवलता जीवनी । न्नाषी तीजै तेह ॥ ३ ॥ चौथे पूर्वे जे कयो । अस्ति नास्ति प्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सत्त न्नंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यानप्रवाद पद पंचमो । सुन्ने आण्यो जोम । मत्पादिक पण न्नेदसुं । पद संख्या इक कोमि ॥५॥ सत्य प्रवाद बठोकडुं । न्नापुं सत्य स्वरूप । संख्यापद इग कोमनी । न्नाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणे इहां । आतमद्रव्य सुन्नाव । छवीस पद कोम जेहना । सुन्नेआण्यां न्नाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवाद तणो हिवै । प्रगट पणें अधिकार । लाख असी पद जेहना । कोडी इग

निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कह्यं हिवै। नामैं प्रत्याख्यान । लाख चौराशी जेहवा । पद संख्याचित्त आन ॥ ९ ॥ अतिसय गुणसंयुत भणी । साधन साध्य निदांन । विद्या अनुपम सातशै । कोमी दस लख जांन ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो । छवीस कोम प्रमांण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा चौवीह देवकल्यांण ॥११॥ प्राणायु पद बारमो । छप्पन्न लख इग कोम। प्राण निरोधन जे क्रिया । शास्त्रै आएयो जोम ॥१२॥ ख्यायिक्यादिक जे क्रीया । छंद क्रिया सुविसाल । पद संख्या नव कोमनी । तेरमी किरिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार बिंदु चवदमो । नामैं अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनी । लाख पचवीश संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी । संख्या गज परिमाण । सोलसहस अरु तीनशै । उर तयांसी जांण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या एकही । गुणमालाथी देख । आगै बुधजन सोध ज्यो । बाकी देशविशेष ॥ (ढाल३) वीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल) ॥ सुत्रे गुंथै गणधरा। अरथे अरिहंत भाषै रे। ते श्रुत ग्यान नमुं सदा। पाप तिमर जिमनासैरे ॥ १ ॥ (वाणी रे जिनंदनी) सुणज्यो चित हित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै । संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषय कषाय तजी करी। ग्यान भगत उरधारी रे । विधि संयुत जिन मंदिरै । प्रभुमुखपाश जुहारीरे (वा०)॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी । श्रीश्रुत ग्यान निधानोरे । सदगुरु चरण नमी करी । संवर जोग प्रधानोरे (वा०)॥ ४ ॥ अक्षत लेई ऊजला । गुंहली सुंदर कीजैरे । नांण दंसण चारित्रनी । ढिगली तीन धरीजैरे (वा०) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै । सुगुरु संजोगैं लेईरे। विधिसुं पुस्तक पूजीयै। चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ (वां०) इम तप संपूरण थयां । ऊजमणो हिव कीजैरे । घरसारू धनखरचनैं । नर भव लाहो लीजैरे (वा०) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरव नाम प्रमाणोरे । नवकरवाली कोथली। लेखण ठवणी जाणोरे ॥८॥ देहरै देवजुहारनें। आरती मंगल कीजैरे । सनात्र पूजा वलि साचवी । तत्वसुधारस पीजैरे ॥ ९ ॥ (वा०) इण पर तप आराधतां । डुरगति कारण छेदै रे । चवदह रज्जु सिरोमणि । जीव अक्षय गतिवेदैरे ॥ १० ॥ (वा०) तप आराधन विध भणी। आगम वचने जोईरे। भवियण प्रिणतुमे आदरो । ज्युं भव भ्रम

ण न होईरे ॥११॥ (वा०) (कलश:) इमसयल सुख कर गच्छ खरतर तपै रविजिम क्रांतए । सौभाग्य सूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए । संवत अगरै बरश छिन्नू नयर श्री वालूचरै । ए स्तवन भणतां श्रवणसुणता सयल मन वंछित फलै॥१२॥※॥ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१४) पूरब तपविधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करै । (जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसें (२०००) गुणनो करै। स्तवन सुणें । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है। उसी मुजब विवेकी जीव गुरुसें समझके करै । यह तपस्याके करनेंसें ज्ञाना वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥※॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ ※ ॥ सासण देवी सारदा । वांणी सुधारस वेल । बालक हितभणी वगसियै । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १॥ नवम अंग जिनपूजतां । मनलहि सुभपरिणाम । तप तिलके फल पामियें । दवदंती गुणधाम ॥ २ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै (एदेशी)॥ कमला जिम कुंभण पुरै । भुज बल नरपतिभीमो रे । पदमनी पदम सुवासना । श्वेतगज स्वमेंनीमोरे (पदम०) ॥ १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना । प्रसवीसुता पूरै मासैरे । दववंती नाम दीपतो । गुणमणि बुद्धि प्रकाशैरे (प०) ॥ २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा । रूप गुणें करी रंभारे । देव गुरु धर्म्म दीपावती । व्रतधारी दृढ वंभारे (प०) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजै श्रीसांतीनी। देवे दीधी त्रिकालो रे। मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर मालोरे । (पदमनी०) ॥ ४ ॥ उवझाया धिपश्री निपदनो । नल लिखीयो निलामैरे । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरव पुन्य उवामै रे । (प०) ॥५॥ मझमरयणी तमभरी । मधु रव कुंत इहां वनमेंरे । मणि झाले तेज दिनमणी। जाग्रत देखी अहो मनमेंरे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यांनधारी गुरु कोइ मिलै । पूछीयै एह प्रसन्नोरे । कर्मवलैं मुनि आवीया । परीसह जीत मदन्नोरे (प०)॥ ७ ॥

पंच जीत पंच पालता । टालता डुस्सह सवलारे । संजम शुध सं भालता । उयम शिव सुख कमलारे (५०) ॥ ८ ॥ (दूहा) मणि तेजें मुनि तरुठये । रथथकी स्त्री भरतार । देवै तीन प्रदक्षिणा । विधसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया । ग्यान सुधारस पाय । को तप परभव तिल कहै । कहियै श्रीमुनिराय ॥१०॥※॥ (ढाल) भरथनृपभावसुं ए (एचाल ॥ मधुर स्वरैं मुनिवर कहैए । नाणी गुरु सुपसाय । दीपक सङ्क लोकनाए ॥ कर्म सुभासुभ परभवै ए । इह भव फल निपजाय । करम गति वांकमीए ॥ ११ ॥ उहि नांण भव प्रागनो ए । नृप सुणें निरमल भाव । समकित सा हीयो ए ॥ धर्मवतीको नृप वधु ए । जांण्योहे तत्व प्रस्ताव । साची जिन वा चनाए ॥ १२ ॥ चौथ प्रमुख नृप चूंपसुं ए । किरिया शुद्ध करी एह । भलै चित्त भावसुं ए ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए । चाढै जिन चौवीश । रयण कंचण जड्या ए ॥ १३ ॥ तिलक २ सें पांमियो ए । समकित एह सती स । जनम सफलो गिणें ए ॥ भगवन तपविधि भाषीयै ए । नल कहै वोध वरीस । पीहर षटकायनाए ॥१४॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । षट् उपवास क हीस । त्री चौ वीहारस्युं ए ॥ चौथ दोय जिन वीरनाए । अजिता दिक वा वीस । आणा गुरु शिर वहीए ॥१५॥ पोषध तीश त्रीनें थयाए । पूजन ति लक चढाय । तारक जगदीसनें ए । उद्यापन संघ भक्तिसुं ए । जन्म सफ ल नल राय । सूधैमन साधीयैं ए ॥ १६ ॥ सुण वांणी सम कित ग्रहैए । पयप्रणमी गुरु वीर । चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए । थायै चरम शरीर । मूल सुख शाशतो ए ॥ १७ ॥ कलशः ॥ श्रीशांतिदाता त्रिज गत्राता भविक ध्याता सुखकरा । इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजश वांध्यो शिव वरां । आगमे आखै सुरीय साखै सुगुरु भाषै सुण यथा । सुध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ ॥※॥

इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ तिलक तपस्या विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ दिन गुरुके पास । तिलक तपस्या ग्रहण करकै । तीश (३०) उपवास करै । (प्रथम) श्रीऋषभदेव स्वामीके (६) छ उप वास करै (जव) ॥※॥ श्रीऋषभदेव स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥※॥

॥卐॥ १ ॥ श्रीऋषभ देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥卐॥
इस पदको (२०००) गुणनो करें। फेर श्रीमहावीर स्वामी के (२) दो उपवास करें। (जब)॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥
१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥卐॥
इस पदको (२०००) गुणनो करें। और श्रीअजितनाथ स्वामीकों आदलेकें (२२) बाईस भगवंतके (२२) उपवास करें जब
१ ॥ श्रीअजितनाथ स्वामी सर्वज्ञाय नमः
इसी अनुक्रमसें बाईस भगवंतको गुणनो करें। (जिस दिन) जो महाराजकें नाम को उपवास होय। उसी नामको २०००) गुणनो करें। और सर्व विधि स्तवनमें लिखी है। उसी मुजब करें ॥ 卐 ॥
इति तिलक तपस्या विधिः ॥ ॥卐॥ ॥卐॥

॥ 卐 ॥ अथ ओलीयेको स्तवन लि० ॥ 卐 ॥

॥ 卐 ॥ वीर जिनेसर भाषीयोरे लाल। सहु व्रतमें सिर ताज (भवि प्राणीरे)। कषाय गंजन तप आदरो रेलाल। इणथी पातिक जाय (भ०वी० ॥१॥ कोध वरष तप आदरेरे लाल। कोध गमावें फलतास(भ०)। मान करें जे प्राणियारे लाल। ते जगमें न सुहाय (भ०) ॥ २ ॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल। नी पणो पायो मल्लिनाथ (भ०) रूप परावन कीया घणारेलाल। आषाढ भूति गणिका साथ (भ० ३ वी०) च्यार कषाय है मूलगारे लाल। उत्तम सोलें भेद (भ०) इम भव२ भ मनो थकोर लाल। जीव पामें बहु खेद (भ०४ वी०) एकाशण व्रत जे करेंर लाल। लाख वरस दुःख हांणरे (भ०) नीवी व्रत दूजो कमेरि लाल। एपारो जिन वर वांण (भ०५) आंबिलनो फल बहु कहोरे ला ल। उपजें लबधि अपार (भ०) उपवास करतां भायसुं रे लाल। पामें भवनो पार (भ०वी०६) इम दिन शोलें तप करेंरे लाल। पूरण एमन थाय (भ०) देव गुरु पूजा करेंरे लाल। तिणथी पातिक जाय (भ०७) ए तप भ्रादरथी करें रे लाल। मन वंछित फल थाय (भ ०) नर सुर रिद्धि पिण भोगवेंरें लाल। निश्चे सुगति जाय (भ० वी०) ॥८॥
इति १६ कषाय गंजन स्तवन संपूर्णम्॥卐॥ ॥卐॥ ॥卐॥

॥ ॥ अथ शोलियै तपकी विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । (यह ४ कषाय में) । अनंतान बंधियो १ । अप्रत्याख्यानियो २ । प्रत्याख्यानियो ३ । संजलणो ४ । (इस माफक) एकेक कषायके च्यार च्यार भेद करनेंसें १६ भेद हुय (यह) १६ भेद कषायके दूर करनें कों । प्रथम एकाशणो १ । निवी २ । आंबिल ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसें १६ दिन तप करै । स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसें । यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ ॥ इति शोलिया तपविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (४५) पैंतालीस आगम तप विधिः ॥ ॥

॥ ॥ शुभ दिन गुरूके पास पैंतालीश आगम तप ग्रहण करै । २ दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । (इत्यादि) ग्यान तिथिकै दिन । अनुक्रम सें उपवाश (वा) एकाशणा करै ।(जिस दिन) जो आगमको तप होय । उसी आगमको गुणनो करै । सिद्धांत लिखावै । सिद्धांत सुणें । पढनें वालुंकों सहाज्य करै । अपनें शक्तिमाफक । सर्व ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करे । (प्रणमुं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसें (४५) दिन तपस्या पूर्ण होनेंसें । पैंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै । मंदर पोशालमें ग्यानका उपगरण चढावै । (इत्यादि) अत्यन्त खुशी होके (४५) आगमका आराधन करै । यह तपश्या के करनेंसें । मूरखपणा दूर होके । शुद्ध आतम ज्ञानकी प्राप्ति होय ॥ ॥ ॥ ॥

अब (४५) आगमके नामलिखते हैं) ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम इग्यारै अंगको गुणनो ॥ ॥

१ ॥ श्रीआचाराङ्गजी सुत्राय नमः ॥ १ ॥

२ ॥ श्रीसुयगडांग जी सुत्राय नमः ॥ २ ॥

३ ॥ श्रीठाणांग जी सुत्राय नमः ॥ ३ ॥

४ ॥ श्रीसमवायांगजी सुत्राय नमः ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीभगवतीजी सुत्राय नमः ॥ ५ ॥

६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सुत्राय नमः ॥ ६ ॥

७ ॥ श्रीउपाशग दसाजी सुत्राय नमः ॥ ७ ॥
८ ॥ श्रीअन्तगम दसाजी सुत्राय नमः ॥ ८ ॥
९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाईजी सुत्राय नमः ॥ ९ ॥
१० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणजी सुत्राय नमः ॥ १० ॥
११ ॥ श्रीविपाकजी सुत्राय नमः ॥ ११ ॥

॥※॥ अथ बारे उपांग नामः ॥※॥

१ ॥ श्रीउववाइजी सुत्राय नमः ॥ १२ ॥
२ ॥ श्रीरायपसेणीजी सुत्राय नमः ॥ १३ ॥
३ ॥ श्रीजीवाभिगमजी सुत्राय नमः ॥ १४ ॥
४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सुत्राय नमः ॥ १५ ॥
५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नत्तीजी सुत्राय नमः ॥ १६ ॥
६ ॥ श्रीचंदपन्नत्तीजी सुत्राय नमः ॥ १७ ॥
७ ॥ श्रीसूरपन्नत्तीजी सुत्राय नमः ॥१८॥
८ ॥ श्रीकप्पियाजी सुत्राय नम. ॥ १९ ॥
९ ॥ श्रीकप्पवर्मंसियाजी सुत्राय नमः ॥ २० ॥
१० ॥ श्रीपुष्फियाजी सुत्राय नमः ॥ २१ ॥
११ ॥ श्रीपुष्फचूलियाजी सुत्राय नमः ॥ २२ ॥
१२ ॥ श्रीवन्हीदसाजी सुत्राय नमः ॥ २३ ॥

॥ ※ ॥ अथ ६ छेदको गुणनो ॥ ※ ॥

१ ॥ श्रीव्यवहार छेद सुत्राय नमः ॥ २४॥
२ ॥ श्रीबृहत्कल्पजी सुत्राय नमः ॥ २५ ॥
३ ॥ श्रीदसाश्रुतस्कंधजी सुत्राय नमः ॥ २६ ॥
४ ॥ श्रीनिशीथजी सुत्राय नमः ॥ २७ ॥
५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सुत्राय नमः ॥२८॥
६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सुत्राय नमः ॥ २९ ॥

॥ ※ ॥ अथ दश पयन्ना नामः ॥ ※ ॥

१ ॥ श्रीचोशरण पयन्नाजी सुत्राय नमः ॥

२ ॥ श्रीसंथारपयन्नाजी सुत्राय नमः ॥ ३१ ॥
३ ॥ श्रीतंडुलपयन्नाजी सुत्राय नमः ॥ ३२ ॥
४ ॥ श्रीचंदाविज्झिया सुत्राय नमः ॥ ३३ ॥
५ ॥ श्रीगणविज्झिया सुत्राय नमः ॥ ३४ ॥
६ ॥ श्रीदेवविज्झिया सुत्राय नमः ॥ ३५ ॥
७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सुत्राय नमः ॥ ३६ ॥
८ ॥ श्रीगच्छाचारजी सुत्राय नमः ॥ ३७ ॥
९ ॥ श्रीजोतिष्करंडजी सुत्राय नमः ॥ ३८ ॥
१० ॥ श्रीमहापच्चक्खाणजी सुत्राय नमः ॥ ३९ ॥

॥ ※ ॥ मूलसुत्रजी का नामको गुणनो ॥ ※ ॥

१ ॥ श्रीआवस्यकजी सुत्राय नमः ॥ ४० ॥
२ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सुत्राय नमः ॥ ४१ ॥
३ ॥ श्रीउघनिर्युक्तिजी सुत्राय नमः ॥ ४२ ॥
४ ॥ श्रीदशमीकालकजी सुत्राय नमः ॥ ४३ ॥
१ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सुत्राय नमः ॥ ४४ ॥
२ ॥ श्रीनंदीसुत्रजी सुत्राय नमः ॥ ४५ ॥

॥ ※ ॥ अथ ११ गणधर तपश्या विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ दिन गुरूके पाश (११) गणधर तप ग्रहण करै।(११) दिन उपवाश (वा) एकाशणा करै। (जिस दिन) जोगणधर महाराज को तप होय। उसी नामको (२०००) गुणनो करै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (११) गणधरोंका नाम लिखते हें ॥ ※ ॥

१ ॥ श्रीइंद्रभूती गणधराय नमः ॥
२॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ॥
३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ॥
४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ॥
५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ॥
६ ॥ श्रीमंम्डित स्वामी गणधराय नमः ॥

७ ॥ श्रीमोर्यपुत्रजी गणधराय नमः ॥
८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ॥
९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ॥
१० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ॥
११ ॥ श्रीप्रभवजी गणधराय नमः ।

॥ यह (११) गणधर । भगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पास अर्थ शुणके । सर्व सुत्रके रचना करनें वाले भए । (इसी सें) सर्व भव्यजीव । परम मङ्गल जानकै । यह तपस्या करै । शुद्ध भावसें गणधरपद आराधन करै । गोतमरास सुणें । पूर्ण होनेंसें । गणधर महाराजकी पूजा करै । आचार्यादिककी भक्ति करै । (यथाशक्ति) परमान्न भोजनसें साहमी वच्छल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नवकार तपविधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ दिन गुरूके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय । इतनाई उपवास करै । उसी पदको (२०००) गुणनो करै । (सो लिखते हैं) ॥

१ ॥ णमो अरिहंताणं । उपवास ॥७ ॥
२ ॥ णमो सिद्धाणं । उपवास ॥ ५ ॥
३ ॥ णमो आयरियाणं । उपवास ॥ ७ ॥
४ ॥ णमो उवझायाणं । उपवास ॥ ७ ॥
५ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं । उपवास ॥ ९ ॥
६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो । उपवास ॥ ८॥
७ ॥ सव्वपावप्पणासणो । उपवास ॥ ८ ॥
८ ॥ मङ्गलाणंच सव्वेसिं । उपवास ॥ ८ ॥
९ ॥ पढमंहवइ मङ्गलं । उपवास ॥ ९ ॥

॥ ※ ॥ ऐसें नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै । (किंकप्पतरु रे अयाण०) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणें (सो) पूर्वे लिख्यो है । तप पूर्ण होनेंसें । यथाशक्ति नवपदको उच्छव करै । (यह) नवकार मंत्र१४ पूर्वको सार भूत है । जो भव्यजीव शुद्धभावसें सेवन

करेंगे (सो) अनेक सुखकों प्राप्त होंगे । इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ ※ ॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै(सो) विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रथम) ५ साथिया करैं । (नमंत सामंत०) यह गाथा पढकै । शक्ति माफक ग्यान पूजा करै । इरियावही पमिक्कमैं । एकलोगस्स को काउसग्ग करै । (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै । नीचा वैठकै । मुहपत्ती पमिलेहै । दो वांदणा देवै । स्थापनाजीकों खमासमण देई (नगवन्)अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह । (इसो कहकै) चैत्य वंदन करै । णमोत्थुणं (इत्यादि) । अरिहंत चेइयाणं० (अन्नत्थु०) कहकै (४) थुइ कहै । चोथीगाथा कहकै । नीचावैठै । णमोत्थुणं कहै । (उना होकै) (श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) । अनत्थु कहकै १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) नमोऽर्हत् सिद्धा । कहकै ॥ श्रीमते शांतिनाथाय । नमः शांति विधायिने । त्रैलोक्य स्यामरा धीस । मुकुटाभ्यर्च्चितां घ्रये ॥ १ ॥ यह थुई कहै (शांतिदेवता आराधना र्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थु० कहै ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान् । शांतिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ यह थुई कहै । पीछे श्रुतदेवता । क्षेत्र देवता । नुवन देवताको काउसग्ग अनुक्रम सें करै । एक एक नवकारको काउसग्ग करकै । अपणी२ थुई कहै । पीछे (शासन देवताको काउसग्ग १ नवकारको करै ॥ या पाति शासनं जैनं । सद्य प्रत्यूह नाशनी । साभिप्रेत समृध्यर्थं । नूयाच्छासनदेवता ॥१॥ यह थुई कहकै (समस्त वेयावृत्तिकर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थू० एक नवकारको काउसग्ग करै । (पारकै) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः जिनशासन संस्थिताः । देवान् देव्य स्तदन्येपि । संघरक्षंत्वपायत· ॥१॥ यह थुई कहकै । नीचावैसै । नमोत्थुणं कहकै । जयवीयराय तांइ । चैत्यवंदन करै । खमासमण देकै । नगवन् (अमुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) लोगस्स कहै । खमासमण देकै । ३ नवकार गुणें । फेर खमासमण देकै (इच्छकार नगवन् (अमुक तप गहण दंमक उच्चरावो जी) गुरु कहै उच्चरावेमो (। ऐसा कहै ॥ अहएहं

भंते । तुह्माणं समीवे । अमुकतवं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । (तंजहा)दव्व उ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं अमुकतवं । खित्तउणं इत्थवाअन्नत्थ वा । कालउणं जावपरिमाणं । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जामि । सन्निवाएणं नभविज्जामि । जाव अणेणंवा । केणइ रोगायंकादि परिणामवसेण । एसो मे परिणमोनपरिवज्जइ । तावमे एसतवो । (अन्नत्थ) रायाभियोगेणं ।गणाभियो गेणं । वलाभियोगेणं देवाभियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वित्तीकंतारेणं । अन्नत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं बोसरामि ॥ जोतप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके । गुरुके पास३ वेर यह पाठ सुणें ॥ गुरु न हो (तो) थापनाचार्यजी समक्षै । तीन वर यह पाठ पढै ॥ (पीछे गुरु कहै) हत्थेणं । सुत्तेणं । अत्थेणं । तदुभएणं । सम्मं धारिणीयं । गुरुगुणेहिं वुह्वाहि नित्थारगपारगाहोहि । (ऐसो गुरु कहै) पीछै खमासमण देके (गुरु मुखै) पञ्चख्खाण करै । (अथवा) गुरु न हो (तो) आपमुखै करै । इति सर्व तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥ ❋ ॥ अथ सर्व तप पारण विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ प्रथम ग्यान पूजा करके । इरियावही पडिकमें । (अमुक तप पारिवा० मुहपत्ती पडिलेहैं । २ वांदणा देवै । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तुम्हेअह्मं अमुक तप पारावेह (गुरु कहै पारावेमो) इच्छामि खमासमणो० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । अमुक तप निख्खवणत्थं काउसग्गं करावेह । (गुरुकहै करावेमो) पीछै देववंदन करके । अमुकतप पारणार्थ करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कहकै ।१ नवकारको कावसग्ग करै । स्तुति गाथा कहै । पीछै णमोत्थुणं कहै । (वैठकै) भगवन् अमुक तप करतां । अविधि आसातनायें करी । जो दूषण लागो होय । सोमन वचन कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं । (और) ग्यान । भक्ति, द्रव्यसे, भावसें, किया होय (सो) प्रमाण फलदायक होजो । (गुरु कहै नित्थारगपारगाहोह) । पीछै । पञ्चख्खाण करै (अमुक तप आलोयण निमित्तं करेमि काउसग्गं) अन्नत्थु कहै । ४ लोगस्सको काउसग्ग करै । प्रगट लोगस्स कहै । पीछे उपगरण पात्र भत्तपानादिकसें साधु भक्ति करै । अपनै शक्ति माफक । जैन वियाभ्यास कराणें वाले । वियागुरुकी भक्ति करै ।

साहमी वच्छल करै। पहरावणी करै। पीछे जाचकांकों दान सन्मान करै॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि संपूरणम्॥ ॥❋॥

॥ॐ॥ अथ सूतक विचार लि० ॥ॐ॥

॥❋॥ पुत्र जन्म होणेंसें १० दिन सूतक। पुत्री जन्म्यां दिन ११ सूतक। (और) जो स्त्रीकै पुत्र होय। उस स्त्रीकै एक माशाको सूतक। पुत्र होते मरण पामें (तो) दिन १ सूतक॥ परदेशे मृत्यु होइ (तो) दिन १ सूतक॥ गाय। भैंश। घोडी। सांढ। घर मांह व्यावै (तो) दिन १ सूतक। मरण हुवां कलेवर घर बाहर लेजाय। जहांतक सूतक। दाश दाशी अपनी नेष्टायें रहते। पुत्र पुत्रादिकका जन्म मरण हो (तो) दिन ३ सूतक) और) जितना महिनाको गर्भ गिरै। तितना दिन सूतक। (अब) कोईकै जन्म मरणका सूतक होनेंसें ११ दिन देवपूजा न करै। (जिसमें) मृतककै सूतकमें। घरका मूलकांधिया १० दिन देवपूजा न करै। उंर घरका तीन दिन देव पूजा न करै। (और) मृतकनें छूवा हो (तो) २४ पहर पडिक्कमण न करै (जो) सदाका अखंड नियम हो। (तो) समता भाव रखके संवर पणामें रहै। पर मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करै नहीं। स्थापना जी कै हाथ लगावै नहीं। और जो मृतक कों छूवा न हो (तो) आठ पहर पडिक्कमण न करै॥ भैंसकै जब बच्चा होय। तब १५ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै। गायकै वच्चो होय (तो) १० दिन पीछै दूध पीणो कल्पै। बकरीको दूध दिन ८ पीछै पीणो कल्पै॥❋॥

॥ १ ॥ ऋतुवंती स्त्री चारदिन भांमादिकनें न छूवै॥

॥ २ ॥ चार दिन प्रतिक्रमण न करै॥

॥ ३ ॥ पांचदिन देवपूजा न करै॥

॥ ४ ॥ रोगादिकारणें तीन दिवश उपरांत कोईस्त्रीके

रक्त चलतादीसै जिसका विशेष दोष नहीं। सुद्ध विवेकसें पवित्र होकर दिन ५ पीछे थापना पुस्तक छूवै। जिन दर्शन करै। अग्रपूजा करै। परंतु। अंग पूजा न करै। साधुकों पडिलाभै। ऋतुवंती तपस्या करै सो तो सफल होय (परंतु) ऋतुदिनमें जिनपूजा, प्रतिक्रमणादिक, किया सफल न होय॥ ऐसाचर्चरी ग्रंथमें कहाहै॥❋॥ ॥❋॥

॥ ※ ॥ जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होय । उहां १२ दिन साधु आहार पाणी नवहरै ॥ सूतकवाले घरका जल अग्निसें १२ दिन देव पूजा न करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ निशीथ सुत्रके १६ शोलमाउद्देशामें जन्म मरण सूतक घर डुर्गंछनीक कहाहै ॥※॥ गायके मुत्रमें २४ पहरपीछे । भैंशके मुत्रमें १६ पहर पीछे । गाडर, गधेडी, घोडीके, मुत्रमें ८ पहरपीछे । नरनारीकै मुत्रमें चार पहर पीछे । समुर्छिम जीव उपजै ॥ ※ ॥ ॥※॥

(इत्यादि) संक्षेप सतकका विचार इहां लिखा है । विशेष विचार शास्त्रांतरसें जाणनां ॥ इति सतक विचार संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दिनप्रतिश्रावक चवदे नियमका प्रमाण करै (सो) विचार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ सचित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ पाणहि ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ वाहण ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ बंभ ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । भत्ते सु १४ । (अर्थः) ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभालै । दिनमें जो वस्तु अपनें अंग खाते लगै । उसीका प्रमाण रक्खै । उपरांत त्याग करै । तहां प्रथम (सचित्त वस्तुको परिमाण करै) मट्टी सर्व जाति । पाणी सर्व जाति । जल, अग्नि, वायु । वनस्पतीका छेदन भेदन । तरकारी सर्वजाति । फल सर्वजाति । परवल । तोरी । केला । इत्यादि सचित्तका परमाण करै ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (दूसरा द्रव्य परिमाण) ॥ तहां धातु वस्तु की शली । (तथा) अपणी आंगुली विनां । जो वस्तु मुखमै दीजै । सो सर्व द्रव्यकी गिणती में आवै । नामांतर । स्वादांतर । स्वरूपांतर । परिणामांतर । द्रव्यांतर होणेंसें द्रव्यांतर होइ । (यथा) गऊं एक द्रव्य । तिसकी पतली रोटी । फीणां रोटी । वेढवा रोटी । वाटी । यह सर्व द्रव्य जूदा कहियै । (इस प्रकारै) सर्व द्रव्य खांणैमें आवै । भात दालि । रोटी । मांभियो । पलेव । तरकारी सर्व जाति । पापड । खीचीया । लडू सर्व जाति । फिणी घेवर । हेसमी । खाजा । (इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै) इहां उत्कृष्ट द्रव्यको नाम ले रक्खे (तो) एकही द्रव्य कहीयै । (जैसें) मेवैकी खीचडीका नाम

लेके रक्खे (सो) अनेक द्रव्य निष्पन्न है (परंतु) एक द्रव्य कहियै । इति द्रव्य प्रमाण डुसरा नियमः ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (तीसरा विगय परिमाण नियमः) ॥ ※ ॥ (तहां) दश विगयमें च्यार महाविगयका तो त्याग होताहै । (और ६ विगय) घृत १ । तेल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही ५ । कमाह विगय ६ । धारणा प्रमाण रखै ।

॥ ※ ॥ (अथ चौथा पादत्राणनियमः ।) ॥ ※ ॥ तहां । जूती । खमाऊ । मोजा । अपणा । इतना विराणा । ऐसें दिन प्रतें धारणाप्रमाण मोकलारख्खै ॥ इति पाणहि नियमः ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (पांचमा तंबोल नियम मध्ये) ॥ ※ ॥ पांन (तथा) बीमा, सुपारी । लवंग । इलायची । ठेटी, वमी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सब स्वादिम वस्तु । किरयाणा प्रमुख सर्वजात धारणा प्रमाण रख्खै ॥ इति तंबोल नियमः ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (छठा वस्त्र नियम मध्ये) ॥ ※ ॥ पोसाक १ । तथा ४ । छूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रख्खै । पोसाक १ मध्ये । पघडी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोती १ । इकपट्टो उत्तरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाक कहीयै । औसें नही कर सकै (तो) ४० तथा ५० कपमा दिन मध्ये मोकला । पराया वस्त्र भूल चूकमें आवै (तो) जयणा ॥ ※ ॥ इति वस्त्र नियमः ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ सातमा फूल नियमः) ॥ ※ ॥ तिहां गुलाब । चंपेली । वेला । केवमा । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजारा । कमल (इत्यादि) सर्व फूलका धारणा प्रमाणें परिमाण करै ॥ ※ ॥ इति फूल नियमः ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आठमा वाहन नियमः) ॥ ※ ॥ तिहां रथ । गामी । घुम्बहिल । खमसल । कोच । पालकी । घोमा । हाथी । चोपाला स्याना । (इत्यादिक) सर्व थल वाहन जाती ॥ मोर पंखी । बतक । घुमदोम । लचकार । मगर । पनसोई । पलवार । बजरा । (इत्यादि) सर्व नावजाति । सर्व तिरता । फिरता । चरता । यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाणें राखै ॥ ※ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ शय्या नियमः) ॥ ※ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तखत । चौकी । पट्टा गद्दी । खुरसी । वनात । पट्टसुजनी । सेत्रुंजी । डलीचा । चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई सर्वजाति । दरखतकी ढालका । चममैका । कांवला । मुखमल । कारचोपी (इत्यादि) धारणा प्रमाणें शय्या प्रमाण करै ॥ ※ ॥ इति शय्यानियमः ए ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ दशमा विलेपननियमः) ॥ ※ ॥ तिहां । सरसोंका । राईका । आटेका । तेल । फुलेल । सर्व जातिका । केशर । चंदन । कपूर । कस्तूरी । रोली (इत्यादि) शरीर सुख वास्ते । (तथा) रोगादिकारणें ज्रंषधादिकका विलेपन फोमां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन (इत्यादि) अंगोपांगमें लगाणा (सो विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करै इति विलेपन नियमः १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ब्रह्मचर्यनियमः) ॥ ※ ॥ तिहां रात्रिकों (तथा) दिनकों । सूईमोरैके दृष्टांत ज्ञोगादिकका प्रमाण करै । स्वप्नकी, मन, वचनकी, जयणा ॥ ※ ॥ इति ब्रह्मचर्य नियमः ॥ ११ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ दिशि नियमः) ॥ ※ ॥ तिहां । पूरव १ । पश्चिम२ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैकृतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशानकूण ८ । अधोदिशि ए । उर्द्धदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनें जानेका प्रमाण करै । चिठी लिखणी । आदमी न्नेजणा । देशांतरकी चीठी वाचणी । तिसकी जयणा ॥ ※ ॥ इति दिशि नियमः) १२ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ तेरमा स्नान नियमः) ॥ ※ ॥ तिहां । आजदिन मध्ये स्नान२ । तथा ४ । वेर मोकला । परंतु पाणीका तोल रखै (तथा) घमा प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अधिक नहीं ढोलुं ॥ ※ ॥ इति स्नान नियमः १३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ चौदमा न्नात नियमः) ॥ ※ ॥ दिनमध्ये न्नात सेर२ तथा ४ । दो वेर (तथा) च्यारवेर खाउं । उपरांत डुविहार । (तथा) चौविहार धारणा प्रमाणै रक्खै (तथा) दिनमध्ये जल पीणें में आवै । तिसका प्रमाण रक्खै । तोलसें तथा मापसें ॥ ※ ॥ ॥
इति चौदह नियम न्नापा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ ※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम जिनजुवन (अथवा) जिन प्रतिमा आगे शुद्ध सपेद वस्त्र पहिरकै। चंदन केशरको तिलक करै। चावल चाढै। पीछे। अखंम तंडुल मुठी ३ थाल मध्ये रक्खै । तिन ऊपर नालेर रोकनाणो धरै । तीन प्रदक्षिणा देकै । इरियावही पमिक्कमे । (इच्छकार०) सम्यक्त सामाइ आरोहणार्थ चेइयाइं वंदावेह (गुरु कहै वंदावेमो) चैत्यवंदण करै । बाम पासै चावलांको साथियो करै । श्रीफल धरै । पीछे गुरु वर्द्धमान विद्या अभिमंत्रित श्रावक मस्तकै वास क्षेप करै । वर्द्धमान स्तुतीसें देववंदन करावै। पीछे सतरै थूईमें नवकार १ एकको काउसग्ग करै। पीछे शासन देवी निमत्तै लोगस्स ४ काउसग्ग करै। (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। पीछे नमस्कार ३ गुणकै। शक्रस्तव कहै। नमोर्हत् सिद्धा० कहकै। वमो स्तवन कहै। पीछे जयवीयराय कहै ॥ इति नंदी विधिः ॥ पीछे खमासमण देई। श्रुतसामायक । आरोहणार्थ काउसग्गं करावेह (गुरु कहै करावेमो) पीछे सम्यक्त सामाइ आरोपणार्थं करेमि काउसग्गं। च्यार ४ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। पीछे३ वेर नवकार गुणकै। गुरुकै पास ३ वेर सम्यक्त दंमक उच्चरै ॥ (गुरू) पाठ बोलै। उसीकी मनमें धारणा रखै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (सुत्रं) (अहन्नं जंते) तुह्माणं समीवे मिछत्ताउ पमिक्कमामि। सम्मत्तं उवसंपज्जामि। नोमेकप्पइ। अज्जप्पभिइ अन्नतीत्थिएवा। अन्नतीत्थि देवयाणिवा। अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा। वंदित्तएवा। नमंसित्तएवा। पुव्विं अणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा। पाणंवा। खाइमंवा। साइमंवा दाउंवा। अणप्पाउंवा। तेसिं गंधमल्लाइं पेसिउंवा। (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं। गणाभियोगेणं। बलाभियोगेणं। देवाभियोगेणं। गुरुनिग्गहेणं। वित्ती कंतारेणं। तंचउव्विहं (तंजहा) दवउ। खित्तउ। कालउ। जावउ। तत्थ (दव्वउ) दंसणदव्वाइं अहिगिच्च। (खित्तउ) जाव जरह मज्झिमखंमे (कालउ) जावज्जीवाए। (जावउ) जाव गहेणं न गलिज्जामि। जाव सन्निवाएणं नन्नविज्जामि। जाव केणइ उम्माइ वसेणं। एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवमइ। तावमे एसो दंसणाभिग्गहो।

अन्नत्थणा न्नोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तिआ गारेणं । वोसिरइ ॥ (पीछे) ॐ ह्रीं श्रीअर्हं नमः ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकै पाश हाथमें लिखाकै । जिनप्रतिमाकों वाशक्षेप चढावै । नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरु प्रतें वांदै) पीछे श्रुत सामायिक थिरी करणार्थे । सत्तावीश उत्साशप्रमाणे । एक लोगस्सको काउसग्ग करै । एक लोगस्स कहकै पारै । पीछे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै । अति आनंद सें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै ॥ अरिहंतो महदेवो । जावज्जीवं सुसाऊणो गुरुणो । जिन पन्नत्तंतत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ पीछे गुरू धर्म्म देशना देवै । मिथ्यात्व वरजै । नित्य चैत्यवंदन इतनी वेर करुंगा । इतना नवकार नित्य गुणुंगा । केशरादि द्रव्य वर्षप्रतें इतना चढावुंगा । ग्यान, दर्शन चारित्रके, न्नक्ति अर्थें इतनो द्रव्य खरचूंगा । शील व्रत, इतनी पर्वतिथि पा लुंगा । नित्य पच्चक्खांण इस माफक करुंगा (दिनकों) नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रीकों चउविहार । त्रिविहार । डुविहार । प्रमुख । और । बा वीश अन्नक्ष । वत्तीश अनंत काय । विदल प्रमुख सर्व छोडुंगा । (इत्या दि) अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण । गुरुके सन्मुख करै । १२ व्रत ग्रहण करै वारैव्रतकी टीप सुणें । जिसमें लिया हुवा व्रतकों अतीचार नलगै । ऐसा उपयोग सदारक्खै॥ इति सम्यक्तारोपण विधिः॥※॥

॥ ※ ॥ प्राणातिपातव्रत दंमक लि० (१) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं न्नंते । तुह्माणं समीवे । थूलग पाणाइ वायं संकप्पि उ निरवराहं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए । एग विहं । एगविहेणं (अथवा) डुविहं । तिविहेणं । मणेणं । वायाए । काएणं । न करेमि । न कारवेमि । तस्स न्नंते । पडिक्कमामि । निंदामि ॥ गरिहामि । अप्पाणं वोसरामि ॥ यह पहला व्रतका दंमक वार३ उचरावै ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं न्नंते । तुह्माणं समीवे । थूलगं मुसावायं । जीहा छेयाइहेउअं । कन्नालीयं । गोवालीयं । न्नूमालीयं । थापणमोसा । कूटसा खीयं । पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसए । दव्वउ । खितउ । काल उ । न्नावउ ॥ दव्वउणं मुसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । न्नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जा

मि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवम्फइ । ताव अभि ग्गह । डविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा जोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्त रागारेणं । सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसरइ)॥ २ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे । अदिन्नादाणं । खत्तखणणाइयं । चोरं काकरं । रायनिग्गह कारयं । सच्चित्ता चित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि । द व्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं । अदिन्नादाणं । खितउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जामि । अणेण केणवि रोगाईयं । एसो परिणामो न परि वम्फइ । ताव अभिग्गह । डविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ० सहस्सा० मह त्त० सव्व० वोसिरइ ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । उदारिय वैक्रियभेयं । थूलमेहु णं पच्चक्खामि । अहागहियभंगएणं । दिव्वं । तिरित्थं । माणसियं । एगवि हं । एगविहेणं । पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्व उणं मेहुणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भाव उणं । जावगहेणं न गहिज्जामि० । छलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व०। वोसरइ ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे परिग्गहंपडुच्च । अपरिमियपरि ग्गहं पचक्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं । इच्छापरिमाणं उवसंप ज्जामि । अहागहियभंगएणं । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भा वउ । दव्वउणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तउणं । इत्थवा अणत्थवा । कालउ णं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं । नगहिज्जामी० । छले० । अन्न० । सह ०। मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चक्खामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं । दिशिपरिमाणं । खित्तउणं धारणा परिमाणं । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं । जावगहेणं न गहिज्जामि । जाव छले०। तावअभिग्गह । अन्न० । सह० । मह० । स व्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे । भोगोवभोगवयं (भोयणउ) अ

नंतकाय बहुबीया राईनोयणाइं परिहरामि । (कम्मओणं) पन्नरस क
म्मादाणाइं । इंगालकम्माइयाइं । बहु सावज्जाइं खरकम्माइयं । रायानियो
गंच परिहरामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । नावउ ॥ दव्वउणं
नोगोवनोगवयं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए ।
नावउण जावगहेणं नगहिज्जामि० । छलेणं० । अन्न० । सह० । मह० ।
सव्व० । वोसिरइ ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंमं पच्चक्खामि । अव
ज्झाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदान । प्रमाद चरितं । चउव्विहं अन्नत्थ
दंमं । जहा सत्तीए परिहरामि (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । ना
वउ ॥ दव्वउणं अन्नत्थदंमं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जा
वज्जीवाए । नावउणं जावगहेणं नगहि० । छलेणं० । अन्न० । सह० । मह० ।
सव्व० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं ।
देसावगासियं । अतिथिसंविन्नागवयं । जहा सत्तीए पमिवज्जामि । इच्चयं
सम्मत्तमूलं । पंचाणुव्वयं । सत्तसिक्खावयं । डुवालसविहं सावगधम्मं उवसं
पज्जत्ताणं विहरामि (तंजहा) । दव्वउ० अन्नत्थणानोगेणं । सहस्सागारेणं ।
महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ पटूलाख । ठ ठंडी ।
च्यार आगार सहित पालूं ए । १० । ११ । १२ ॥ ※ ॥
इति श्रावककों संक्षेप बारैव्रत उच्चरावण विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मुनिमालका लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऋषन्न प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । शिवसुख दायक मन उ
ल्लास । पुंमरीक श्री गोतम आदिक । गणधरगुरु मन कमल विकास ॥
॥ १ ॥ (प्रहसम सूधा साधु नमुंनित । नावै श्रमण सुगुरु नगवंत । नाम
ग्रहण कर पाप पखालुं । परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ (प्र०) नरथ
महामुनि प्रथम चक्कीसर । बाहुबल उपशम नंमार । सूरयसा दिक आठ
मुनीसर । पाम्यो विमलाचल नव पार ॥ ३ ॥ (प्र०) रिखन्न वंस जे अनु
क्रम हुवा । मुनिवर कोमी लाख असंख । श्रीसेत्रुंजै शिवपुर सीधा । क

ल मल कालक मुंकी कंख ॥ ४ ॥ (प्र०) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रव
र्त्ति। साधु महाबल संयम सीह। अचलादिक बलदेव अष्टमुनि। राम रिषी
सर नवम अबीह ॥ ५ ॥ (प्र०) श्रीप्रतिबुद्धि प्रमुह ब्रह सुंदर। श्रीमल्लि
नाथ पूरबभव मित्र। पञ्जता परम यतीसर शिवपुर। पाली श्रीजिन आण प
वित्र॥६॥(प्र०) बंदुं विश्नु कुमार लबधि निधि। खंदग सूरना सीस सै पंच।
कार्त्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्त धर। श्रमण सुकोसल व्रत निरबंच ॥ ७ ॥
(प्र०) श्रीयडुवंस अक्षोभ सुसागर। प्रमुख आठ अणगार प्रधान। श्री
रहनेमि नेमि जिन बंधव। निरमल गुण गण रयण निधान ॥८॥ (प्र०)जा
ली मयालीनें उवयाली। पुरस सेण बारसेण प्रद्युम्न। संब अनें अनिरुद्ध
रिषीसर। सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न ॥ ९ ॥ (प्र०) कुमर अनीकज सा
दिक षट्मुनि। गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल। ढंढण रिष श्रीथावच्चा सुत।
सहस साधु संजम सुकपाल ॥ १० ॥ (प्र०) (राग धन्याश्री) ॥ॐ॥
सहस श्रमणसुं सुक संयम धरो। पंचसयांसुं सेलग मुनिवरो। सिद्ध थया
श्री पुंम्नर गिरवरो। करुणाकर प्रणमुं संपद करो। (उल्ला०) संपदकरो शम
दम रिषीसर साधु सारण सोहए। अंतर प्रकासै तिमर नासै भविक जन
मन मोहए। प्रत्येक वुद्ध प्रवुद्ध नारद मुनि प्रमुख पैंतालए। दमदंत महा
रिष कुंजवारै साधु नमुं त्रिकुं कालए॥ ११ ॥ (चाल) रंग रिषभदत्त र
तन त्रय मुणी। समरुं देवानंदा साकुणी। पांचे पांम्व प्रणमुं मुनिपती।
केशि पएशी बोधक जिनमती। (उल्लालो) जिनमती कालक पुत्र मेहल
थिवर आणंद रक्खियो। अणगारका सब धर्म भाष्यो सोधि शिवपुर स
क्खिओ। कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ। श्रीपुंम्नरीक
महामुनीसर प्रणमीयै सुभ संयमी॥ १२ ॥ (चाल) बंदुंबलकल चीरी
केवली। श्रीअैमत्तो मुनिवर मनरली। श्रीकरकंडू डुमह नमि निग्ग
या। निज २ देसे नरवर श्रीजुवा। (उल्लालो) श्रीजुवा एरिषभादि देखी
थया वम्न वइरागीया। संजम सिरी भजि मोह निद्रा तजीय जोगै जागी
या। प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समैं। सुप्रसन्न चंद मु
निंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रहसमैं॥ १३ ॥ (चाल) खंतै खुल्ल कुमार सु
ध्याईयै। लोहच्चामुनि चरणे लयलाइयै। कालउदाई प्रमुख महामुणी। सं

जम सुद्ध जयंती साजणी (उल्लालो) साजणी जाणी जग वखाणी प
रम पद सुख पामीया। श्री श्रमण नद्र सुनद्र सुंदर अचल आतम रामीया।
श्री सुप्रतिष्ट यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो। चारित्र रिष गुणवंत गोनद्र
गरुआ गरिमा सागरो ॥१४॥ (चाल) सिरीसिव राय रिषीसर वंदीयै। दशा
रण नद्र नमुं डुख ठंदीयै। अर्जुन माली सुख संजम धरो। सुदढ प्रहारी
शिवरमणी वरो। (उ०) शिवरमणीवरो श्रीकुरगडू क्षमावंत प्रसिद्धउ। वलि
च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविहत सिद्धउ। कोडिन्न दिन्न अनें सेवाली
पनर शतक तिडोत्तरा। गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा
॥१५॥ (चाल) गरुआ श्रीगुणसागर गाईयै। प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईयै।
खंद कुमार सदा अभिनंदीयै। नमिद अरहमित्र मन आणंदीयै। (उ०)
आणंदीयै मेतार्य मुनिवर नगतिसुं समरी करी। क्षष इलापुत्र चिलापुत्र
मृगापुत्र हीयै धरी। श्रीइंद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो। तेतली
पुत्र सुबुद्धि वोधित सु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ (चाल) उदय २ कर
जगि २ जस तणो। श्रमणसुदंशण शील सुहावणो। श्रीअनयसुत आद्रकु
मारए। चित्त चतुरनर चित चमकारए। (उ०) चमकार सार सुजात रिषव
रदेव सांनिध जश धणी। गांगेय गिरुवो गुणेगाजै सु जिनपालत हित ध
णी। श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए। श्रीकपिलरिपि ह
रिकेश वलिमुनि नित नमुं निरलेवए ॥ १७ ॥ (चाल) जति जयघोप वि
जयघोपै जुई। सेवुं श्रुतधर श्री देवलसुई। श्रीइखुकार नृपति कमलाव
ती। राणी भृगुसुत प्रोहित सुभमती। (उ०) सुभमती जेहनी जशा भा
र्या पुत्र दोय वखाणीयै। ए छऊं लेई चारु चारित्र मुगति पुहता जाणीयैं।
क्षत्रिय मुनीसर साधु संजम धर्मरुचि सुमहाव्रती। निग्रंथ नाथ अनाथ वंडुं
समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ (चाल) कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्यौ। विध
सुं शीतल शिवकमला मिल्यौ। धन २ धन्नो सुरगिर धीरए। वीरप्रशंश्यौ
तपगुण वीरए। (उ०) श्रीवीर दिख्खित श्रीसुवाऊ भद्रनंद कुमारए। आ
दिक दसेरिद चरिय जेहना सुख विपाक उदारए। श्रीचंमरुद्र सुशीस खंद
ग खिमानिधि कहीयै इण कलै। कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आ
स्याफलै ॥ १९ ॥ (चाल०) अंगप्रमुख रिषच्यारे आदरी। विधिसुं संजम

सिद्धि वधू वरी । अन्नै कुमार मुनि अन्नयं करो । दक्ष विदक्ष सु आतम हितकरो । (उ०) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदिषेण आराधीयै । सुनक्ष त्रनें सर्वानुभूती शमर शिवसुख साधीयै । श्रीसीह साधु अनें उदायन चरम राज रिषीसरो । श्रीशालभद्र सुधन्न मुनिवर समरतां मंगल करो ॥ १० ॥ (राग धन्यासरी) ॥ वम्र वैरागी वरनमुं । जुगवर जंबूसामि । प्रभव सि ध्यं भव परगमौ । सुजश यशो भद्र स्वामि ॥ ११ ॥ (महामुनीसर नित नमुं जी । नामें घर नवनिध । वाधै रिद्ध समृध) ॥ १२ ॥ (म०) ॥ जग संभूति विजै जयो । भद्रबाहु कृतभद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनिवर श्रीथूलभद्र ॥१३॥ (म०) ॥ भद्रबाहु स्वामी तणा । च्यारि शिष्य मुनिराय शीत परीसह जिण सह्या । सास्या २ आतम काज ॥१४॥ (म०) ॥ अज्ज महागिरि जांणीयै । अज्जसुहत्थि विशाल । संप्रति नृप पडि बोहीयो । श्री अैवंती सुकमाल ॥१५॥ (म०) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अज्जसुभद्दमु नीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सीहगिरीस मुणीस ॥ १६ ॥ (म०) ॥ धन गिरि थिवर महामुनी । श्रीवयरस्वामि मुनिराय । अरहदिण मुनि अपह स्यो । भद्रगुप्त निरमाय ॥ १७ ॥ (म०) ॥ वयरसेन विद्यावरू । श्रीरक्षत गुरु दक्ष । पूसमित्र गुण गह गहै । प्रभु डरवलका पक्ष ॥१८॥ (म०)॥ विंऊसाधु सुविधइ भस्यो । श्री थंभिल सुमहिक्ष । सुत्र अरथ रतनें भस्यो । क्षमाश्रमण देवद्धि ॥१९॥ (म०) ॥ पंचमकाल चरमामुनी । श्रीडपसै शूर दयाल । सुध्धक्रिया खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥२०॥ (म०)॥ इम पनर कर्मभूमी जिके । हुआ हुस्यै अनंत । वर्त्तमान श्रीसाधुजी । रतनत्रई गुणवंत ॥२१॥ (म०)॥ ब्राह्मी सुंदरी राय मै । साहुणी चंदन बाल । आदिक शीलवती सती । त्रिकरण सुध्ध त्रिकाल ॥२२॥ (म०) ॥ संवत सोल बत्तीसए । श्रीविमलनाथ सुरसाल । दिक्षा कल्याणक दिनें । गुंथी श्रीमुनि माल ॥ २३ ॥ (म०) ॥ रिणीपुरै रलीया मणो । श्रीशीतल जिण चंद । सूरविजैराजे सदा । संघ अधिक आणंद ॥२४॥(म०) श्रीमति भद्र सुगुरु तणें । सुपसायै सुखकार । चारित संघ वखाणीयै । सदा २ जय कार ॥२५॥ (म०) मनहर श्रीमुनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठठ वइ उत्तम जिके । पामैं सुखभरपूर ॥२६॥ (क०) ॥ महामुनीसर गावतां

सुरतरु सफल समान । अष्ट महा सिद्धि घरफलै । सदा२ कल्याण ॥३८॥ (मं०) ॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वरतमान चोवीसीवंदुं । मन सूधै नितमेवरी माई । ऋषभ अ. जित संभव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभुसेवरी माई ॥ १ ॥ (वर०) श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभु प्रणमुं । सुविध शीतल श्रेयांसरी माई । वाशपूज्य विमल अनंत धरम जिन । शांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ (व०) अरजिनं मल्लि अनें मुनि सुव्रत । नमि नेमि पाश जिणंदरी माई । चो वीशमा श्रीवीर जिणेसर । प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥ (व०) ॥ ढाल२ ॥ प्रहशम सूधा साधु नमुं नित (एहनी) । नित नित अतीत चोवीशी नमीयै । जेहना नाम प्रगट ए जाण । केवलन्यानीनें निरवाणी । सागर महाजश विमल वखाण ॥ ४ ॥ नि०) ॥ सर्व्वानुभूति श्रीधर दत्त जिनवर । दामोदर सुतजा श्री स्वामिं । मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन । श्री अस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ (नि०) ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ । श्री जिनेसर सुधमति सुजगीस । शिवकर स्यंदन संप्रतिनामें । वंदीजै जिनवरचौवीश ॥ ६ ॥ (नि०) (ढाल३) सफल संसारनी) ॥ जे भविस्संति अनागए कालए । तेह चौवीश प्रणमीस त्रिऊं कालए । प्रथम महाराज श्रेणक तणो जीवए । श्रीपदमनाभ प्रणमीस सदीवए ॥ १ ॥ वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । ऊसी जिन वीय सुरदेव सुप्रकासए कोणिक सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साधए । चोथो स्वयंप्रभु नामआराधए । दढायुप जीव सिद्धांतमें जाणीयै । पंचम सर्वानुभूति प्रमाणीयै ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजीयै । देवश्रुत तेहनो स्वामि स लहीजीयै । शंपश्रावक ऊस्ये उदयजिण सातमो । आणंदनो जीव पेढाल जिण आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं । शतक श्रावक शतकीर्त्ति दशमो भणं । देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो । सत्यकी जीव ते अमम जिण बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेव जीव निकषाय जिन तेरमो । वलदेव जीव निपुलाक चवदम नमो । पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाधि जिन सतरमो श्रावका रेवती । अढारमो शादा

ल जीव संवर जिनपती। दीपायन जीव यशोधर उगणीसमो। कृष्ण कोई जीव ते विजय जिनवीशमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीशमो जीवनारद तणो। देव बावीशमो अंबम श्रावक जणो। तेवीशमो अमर जीव अनंत वीरज नमो। स्वाति बुध जीव ते जद्र चौवीशमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चौवीश जिण जांणीया। प्रवचन सार उद्धारथी आणीया। केई पर सिद्धनें केई अप्रसिद्ध कह्या । शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ए ॥ ✻ ॥ (ढाल२) ॥ ✻ ॥ आज नहेजोरे दीसै नाहलो० ॥ ✻ ॥ विहर मान जिण वीशे वंदीयै। महा विदेह विख्यात। सीमंधर युगमंधर बाहुजी। श्रीसु बाहु सुजात ॥ ६ ॥ (वि०) स्वयंप्रजु रिषजानन अनंतवीरजी। सूर प्रजु तेमविशाल। वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी। जुजंग ईसर नेम जाल ॥७॥ (वि०) वैरसेन महाजद्र नमुं वली। देवयशा यसो रिद्ध। अढी द्वी पमें विचरै आजए। नाम लीयै नव निद्ध ॥ ८ ॥ (वि० ढाल४) ॥ ✻ ॥ रे जीव जिन धम कीजीयै० ॥ ✻ ॥ च्यार तीर्थंकर शाश्वता। इणहीज अजिधान। ऋषजानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमान ॥ ए ॥ (च्या०) अठकोमि उप्पन लाखसुं। सत्ताणुं हजार। चउसै उयासी देहरा। त्रिहुं लोक मझार ॥ १० ॥ (च्या०) नवसै पणवीश कोमीया। बिंब त्रैपन लाख। सहस अठावीश च्यारसै। अठ्यासी जाख ॥ ११ ॥ (च्या०) ठिन्नूं जिणवर नामए। समर्यां सुखदाय। प्रणम्यां पाप मिटै परा। सम कित सुद्ध थाय ॥ १२ ॥ (च्या०) ॥ कलशः ॥ इम त्रिण चौवीशी वीश विहरमांन चौजिण शाशता। संथुण्यां सतरैसै त्रयांलै अधिक आंणी आसता। जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्रबल वंछित पूरए। प्रहसमै त्रिकरण सुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूरए ॥ १३ ॥ ✻ ॥ इति श्रीत्रिण चौवीशी, वीस विहर मान, चौजिण शाश्वता, एवं ठिन्नूं जगवंत नाम स्तवनं ॥✻॥

॥ ✻ ॥ अथ उपधान तप स्तवन लि० ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासै। बैठी परषदबारजी। अमृत वचन सुणी अति मीठा। पामें हरष अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधान वह्यां विन। किम सूझै नवकारजी। उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययनें। एह जणयो अधिकार जी ॥ २ (सुणो०) ॥ महा निशीथ सिद्धांत मांहे पि

ण। उपधांन तप विस्तार जी। अनुक्रम सुध्दपरंपर दीसइ। सुविहित ग
च्छ आचार जी ॥ २ (सु०)॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया। तुच्छ
अलप फल जाण जी। जे उपधान वह्या नर नारी। तेहनो जनम प्रमाणजी
॥ ४ (सु०) ॥ तप उपधान कह्यो सिध्दांते। जो नवि मानैं जेहजी। अरिहं
त देवनी आण विराधै। भमस्यै भव२ तेह जी ॥ ५ (सु०) ॥ अघड्या
घाटसमां नर नारी। विण उपधाने होय जी। किरिया करतां आदेश निरदे
श। काम सरैं नहीं कोइ जी ॥ ६ (सु०) इक घेवरनें खांमै भरियो। अति
घणो मीठो थाय जी। एक श्रावक उपधान वहैतो। धन २ ते कहवायजी।
॥७॥ (सु०)॥ (ढाल) ॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसम्म जाण। इरिया
वहीनो तप वीजो वीसम्म आण। इण विहुं उपधाने निश्चइ नांण मंमाण।
वारै उपवासै गुरु मुख वेवे वांणि ॥ ८ ॥ पैंत्रीसम्म त्रीजो णमोत्थुणं उप
धांन। त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान। अरिहंत चेई तप चो
थो चोकम्म एह। उपवास अढाई वाणएक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो लोग
स्स तप अगवीसम्म नाम। साढापनरह उपवास वायण त्रिणठाम। पुख्खर
वरदी तप छठो छक्कड सार। साढात्रण उपवासे वांण एक सुविचार ॥ १० ॥
सिध्दाणं बुध्दाणं सातमो उपधान माल। उपवास करै इक चौविहार ततका
ल। एक वाणिकरै वलि गुरुमुख सरससाल। गच्छनायक पाशै पहरै
माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवशर आणी मनउछरंग। घर सारू
वारू खरचै धन बहु भंग। अति उच्छव कीजै राती जोगो दिल खोल।
गीतगान गवावै पावै अति रंग रोल ॥ १२ ॥ (ढाल) ।। ए साते उपधा
न। विधसों जे वहै। ते सूधी किरिया करै ए। खिण न करै परमाद। जीव
जतन करइ। पुंजि २ पगला भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय।
हम्म २ हसै नहीं। मरम केहनो नवि कहै ए। नाणैं घरनोमोह। उत्कृष्टी
करै। साधु तणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पञ्जरसीम सिज्झाय। करपोरशि भ
णी। ऊंचै स्वर वोलै नहीं ए। मनमांहें भावै एम। धन २ ए दिन। नरभव
मांहि सफल सही ए ।। १५ ॥ जेसाते उपधान। विधसेती वहै। पहिरै
माल सोहावणीए। तेहनी किरिया शुध्द। बहु फलदायक। करम निर्ज
रा अति घणी ए ॥१६॥ परभव पामै रिध्द। देव तणा सुख। बत्रीस बध्द

नाटक पडै ए । लाम्नै लील विलास । अनुक्रम शिव सुख । चढती पदवी जे चढै ए ॥१७॥ (कलशः) ॥ इम वीरजिणवर नुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो । नपधानना फल कहै नत्तम नवियजण आणंदणो । जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकल चंद मुनीसरो । तसुशीश वाचक समय सुंदर नणें वंछित सुख करो ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति सात नपधांन गर्व्भित श्रीमहावीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ॥

॥ ॥ (इस) स्तवनमें नपधान तप करनेंकी सर्व विधि है । इसी मुजब विवेकी जीव करै । और नपधान तप ग्रहण (तथा) माला पहरण विधि इहां न लिखी है (सो) सुद्ध गुरुकै पास । विधि प्रपाक ग्रंथसें जाणकै करै ॥ ॥ इति तत्वं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ राग रागणी स्तवन लि॰ ॥ ॥

॥ ॥ (राग कल्याण) ॥

॥ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु॰ ॥ मेंकुं अधम पापकी मूरत । मेरा दोस न धरणा हो ॥ (टु॰) ॥ १ ॥ अष्ट नवनकी प्रीत हमारी । नवमें नव निरवाहना हो ॥ (टु॰ ॥ २ ॥ रूपचंद नगतनकी वीनती । आवागमण निवारणा हो ॥ (टु॰) ३ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ लोक चवदके पार किनारे । पूरण ब्रह्मका वासा है । (लो॰) पेंतालीस लाख जोजनकी सिल्ला । फिटक रतन नजासा है । निरमल जोत विराजै साहिब । ग्यान ध्यान परकासा है ॥ (लो॰) १ ॥ पंच वरण की धजा फरूकै । क्याकहुं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो । औरनकी क्या आसा है ॥ (लो॰) २ ॥ चोशठ इन्द्र खमे वाके वारे । खिजमत बंदा खासा है ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन । चरण कमलका दासा है ॥ (लो॰) ॥ ३ ॥ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ सखी सखि वन ठन (सखी॰) ठाढे । नामि नृपत जुके द्वारे आगै । (स॰) रिषन्न कुमरको जनम नयो है । मंगल मुख्य नचारैरी ॥ (स॰) १ ॥ ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि । वीणा वाजै सुरतारे । नाचत हाव नाव करी राजत । तानलेत सुरतारैरी (स॰) ॥ २ ॥ सुरवनिता मिल

गाइ वधाई । मोतीयन चोक सवारे । जगबंधव जगपतिकुं निरखत । आ नंद हर्ष अपारेरी ॥ (स०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हो जिनतैंने दरस परवारीयां (हो०) तुम विन भव२ में भट कंदा । अव मेंनी ओर निहारीयां ॥ (हो०) ॥ १ ॥ अष्ट करम मेंने लार लगे है । उनकुं वेग विमारीयां । चरण सरण गहे आण तुसाढे । रुपचंद गुणगारीयां ॥ (हो०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांरे ह्मारा रिषभा जिणंदनें गजरो चढाऊंरे (ह्मां०) चंवेली चंपा गुलाव ल्याऊंरे । जाइ जुई मोगरो मालती । विध गुंथाऊंरे (ह्मां०) १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेय लाऊंरे । धूप दीप फलसुगंध पुण्य पावुंरे (ह्मां०) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ भाव भावुंरे । रिषभ दास पूरो आस गुण गावुंरे ॥ (ह्मां०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणारे । पोत जलधि भव तरणारे ॥ (म० टेर) ॥ आदि पुरश जगतारण नि शुण्यो । कर्म विकट घन हरना रे ॥ (म०) १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता ॥ नंद ऋषभ सुख करनारे ॥ (म०) २ ॥ सत्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटरनारे ॥ (म०) ३ ॥ सारंग दग शशिवदन मनोहर । अंग कनक सम वरनारे (म०)४ ॥ श्रीजिन हंस सुरीसर जंपै । जिन शमरण दिल धरनारे ॥(म०) ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभ देव स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग झिंझोटी) (२) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अजित अजित जिन ध्यान । (ह्मारै मनरे) (अ०) (टेरः) जितशत्रु विजयाको नंदनरे । वंदन त्रय युत ग्यान । (ह्मा०) १ ॥ त्रिऊं जग तारन टारन अव कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ (ह्मा० अ०) २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजैरे । केवल निरमल ग्यान ॥ (ह्मा०) ३ ॥ श्री जिन हंस सूरि प्रभु पाएरे । निवृति पुरिंदरग्यान ॥ (ह्मा० अ०) ॥ ४ ॥

इति श्रीअजित नाथ स्तवनम् ॥५॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारलो गह वहियां । (य०) मैं नांहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण तरण सुण्यो है । मैं यातैं शरणो गहीयां । इनतैं नवार लहियां ॥ (मो० य०) ॥ १ ॥ इन करमनकै वस होयकै । मैं नटक्यो चिहुं गति महियां । मैं नांहि जानुं सहियां ॥ (य०) २ ॥ हित करकै दास निहारै । कर जोडि पन्जिं पइयां । शिव देति क्युं न सहियां । (मो० य०) ॥३॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग काफी) (५) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मुजरो मानी लीजै हो गोमीराय अरज सुणीनें म्हारो (मु०) ॥१॥ किरपा काज करी सेवगनें । दिलन्नर दरशण दीजै हो (गो०) २ ॥ गुणनिधि गवडी दरशण दीजै । सकल करम दलहीजै हो (गो०)॥ ४ ॥ रूप विवुध कहै मो मन पन्नणें । प्रह ऊठी प्रणमी जै हो (गो)५॥ इति

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुमेंमा प्रन्नु इण दिल वसणावे । तेंमा तो गुण सुर गावं दाहो ॥ (प्र०)॥ १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही ध्यावै सो पावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता । नविजन ताप मिटावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहैं जिनचंद एसे प्रन्नुमेरे । चरणकमल चित लावंदाहो (प्र०)॥ ३ ॥ इति पदम् ॥※॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हम जानतहै तुम तारोगे । (हम०) नान्निराय मरुदेवी को नंदन । मेरी ओर निहारोगे ॥ (हम०) ॥ १ ॥ आदि जिनेसर अन्तर जामी । खामी कबुन विचारोगे ॥ (ह०) ॥ २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरुद संन्नारोगे ॥ (ह०) ॥ ३ ॥ श्रीजिन सौन्नाग्य सुरिंद कुं साहिव । नवजल पार उतारोगे ॥ (ह०)॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंथीमा पंथ चलैगो । प्रन्नु नजलै दिन च्यार ॥ (पं०) ऊठी

काया कूठी माया । कूठो सब परवार ॥ (पं०) ॥ १ ॥ बालपणेंमें खेल गमायो । जोबन माया जाल ॥ (पं०) ॥ २ ॥ बूढापण आयो धरम न पायो । पीछे करत पुकार ॥ (पं०) ॥ ३ ॥ क्याले आयो क्याले जासी । पापपुएय दोय लार ॥ (पं०) ॥ ४ ॥ दया मया कर पाश ऐवंती । अब तेरोही आधार ॥ (पं०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेवीशमा जिनराज । जोमै थांहरे कौन जुमै गो (ते०) । अस्वसेन तात वामादेवी माता । तूं तारण संसार ॥ (जो०) ॥ १ ॥ कमठ विमारण नागकुं तारण । संजलाव्यो नवकार ॥ जो० ॥ २ ॥ विबुध कुशल कर जोमीनैं वीनवै ॥ जव २ देज्यो दीदार ॥ (जो०) ३ ॥

॥ ※ ॥ (राग खंजायची) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कैसें काज सरै महाराजा विन (कैसें०) जमत २ लख चौरासीमें । सुख डुखसें जीया रुलत फिरै (म०कै०) । ए रिपु कर्मवैरी जटकावै । जाहीसें मेरो प्राण मरै ॥ (म० कै०) ॥ २ ॥ जो जीव सुखकी वंग चाहे । प्रजु सेव्यां सें सब काज सरै ॥ (म० कै०) ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राजरी वधाई वाजे है (महा०)। सरणाई सिरै नोवत वाजै । घनज्युं गाजैहे ॥ (महा०) १ ॥ इंद्राणी मिलमङ्गल गावै । मोतीयन्द चोक पुरावैहे ॥ (महा०) ॥ २ ॥ सेवग प्रजुजीसें अरज करैहे । चरणारी सेवा प्यारी लागैहे ॥ (महा०) ॥३॥इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग अजाणो) (१) ॥ ※ ॥

॥※॥ मोतिनकी माला जिनगलसोहै । (मोति०) मस्तक मुगट सोहै मनमोहन । कुंमल लागत वाला ॥ (जि० १)॥ जजोरी जजो तुम लोक सहिरके । नहीय जजै सो काला । माणकपर प्रजु महिर करो तो । अपणा विरुद संजाला (जि०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग सोरठ) (१) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय ॥ (रहे०) ॥ जीय जीवन

सखीयनमें प्यारी । हारी हाहा खाय ॥ (र०) ॥ १ ॥ अविरत घुंघट पट उघारी । अनुभव मुख निरखाय । एते परत्नी मान न मेलै । मूलै व्याज वढाय ॥ (रहे०) ॥ २ ॥ भव परणित परिपाक इतै पर । आई धाई मा य । अति आग्रह सव ग्यान सारकुं । लीनें कंठ लगाय ॥ (रहे०) ॥ ३॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हेमाय वांकमी करमगति जायनां कही । चिंतत और वनत कछु औरे । हौनहार सो होय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ १ ॥ सकल साज सझीयौ व्याहनकुं । राजुलकों तव चाह भई । सुनी नेम गिरनार सिधाए । वदन विलख मुरझाय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ २ ॥ शीता स तीयोंही पति भगता । जांनत सकल मही । कूगे दोश दियो जव रघ पति । पावक कुंभमें धीज दही ॥ (हे० वां०) ॥ ३ ॥ क्षायक सुदृष्टी श्रे णक राजा । निज सुत कोणक वंधठई । सुध वुध विसरगई नरपतकी आपणकी अपघात लही ॥ (हे०वां०) ॥४॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा । अकल कथा किम जांण कही । उलट पलट वाजी नटसीकी । नवल सरव में व्याप रही ॥ (हे माय वां०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ह्मांनु प्यारो लागै छै जी । थांरो उपदेस । (ह्मांनु०) ॥ ग्यांन जगावण औगुण मेटण । संशय रहै न लेस ॥ (ह्मां०) ॥ १ ॥ मोहतिमिर दुख दूर करनकुं । भगत वढावत हेत । चंद फतै नित एही चा है । समकित सुखको खेत ॥ (ह्मां०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मेरो पीया परसंग रमत है । में केसें मनावूंरी (मे०) । सो तन संग रैन दिन रमतां । मांहि न वुलावैरी (मे०) ॥ १ ॥ हाहा कर त सषी पईयां परतऊं । कोई पीया मिलावैरी । विरहानल अति दुसह पी या विन । कोन वुझावैरी (मे०) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुभव आ यो । सव परठ सुनावैरी । ग्यान सार प्यारी दोउ हिलमिल । सोरठ गावैरी (मे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग सोरठ मलार ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वरषित वचन झरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्रीश्रुत ग्यांन गगन ते ऊमटी । ग्यांन घटा गहरी हो (सुगुरु मेरे व०) ॥ स्याद वाद नय विजुरी चमकित । देखत कुमति डरी । अरथ विचार गुहर धुनि गरजित । रहत न एक घरी हो ॥ (सुगुरु मे०) ॥ २ ॥ श्रद्धानदी चढी अति जोरै । सुद्ध सुभावधरी । सुभर भयो सुमता रससागर । समकित भूमि हरीहो ॥ (सुगुरु मेरे) ॥ ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकूरे चिहुं दिस । पाप जवास जरी । चातक मोर पपइया भविजन । वोलत भक्तिभरी हो ॥ (सुगुरु मेरे व०) ॥ ४ ॥ दया दान व्रत संयम खेती । भविक कसांन करी । हरपचंद सुर नर शिव सुखकी । सहज सुभाव फली हो ॥ (सु० व०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ या घरी में रंग वन्यो है हांरे । (या०) तत्वारथकी चरचा पाई । साधर्मीको संग (व० या०) ॥ १ ॥ श्री जिनराज दयानिधि भेटे । हरप भयो अंग अंग । असी विध भव२ मांहे मिलीयो । धर्मप्रसाद अभंग (व० या०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग मलार ॥ ※ ॥ (२)

॥ ※ ॥ चिहुं ओर वदरिया वरसे (आलीरी) । अव घरर घरर घन गरजे ॥ (चि०) ॥ नेम प्रभु गिरनार सिधाए । देखणकुं जीया तरसै ॥ (चि०) ॥ १ ॥ दादुर मोर सोर सुन श्रवणें । नयनभए घन जरसैं ॥ (चि०) ॥ २ ॥ ढुंढत ढुंढ सकल वन वनमें । कवहु पीयानां दरसै ॥ (चि० ॥ ३ ॥ सोइ सफल जाणेंगे सजनी । दिवस घरी जिन फरसै ॥ (चि०) ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मोरवा पपइया वोले पीउ२ घनमें । नेम पीया रहे सहसायनमें ॥ (मो०) ॥ निशि अंधीयारी कारी वीजुरी भरावें । दूजी विरह आकुल भइ तनमें ॥ (मो०) ॥ १ ॥ झिरमिर वरषत गरजत दादुर ॥ सोरकरत रहे नदीयां रनमें । (मो०) ॥ २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहें ॥

राजुल जइ है वैरागण छिनमें ॥ (मो०) ॥ ३ ॥ इतिपदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग विहाग ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समऊ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो । (स०) ॥ पल२ आयु घटत छिन ही । गलत जात जैसें डरो ॥ (स०) ॥ १ ॥ या तनको तोहो न जरोसो । छिन मासो छिन तोरो । जो कछु करै सो अवही करलै । पुन परहो जिम मोरो ॥ (स०) ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री गरज २ वनघोरो । रूपचंद त्रिसनाको वांध्यो । जान वूऊ जयो जोरो ॥ (स०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मत कर मान गुमान । योवन धन ठगहै । (म०) वेलूकी जीत उसको मोती । कोई घमी कोई पलहै ॥ (यो० म०) ॥ १ ॥ नदियां गहिरी नाव पुराणी । तारण हारा जिन है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन आखर जंगल घर है ॥ (यो० म०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग मारु ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ निसदिन जोउं थांरी वाटमी घर आवोनी ढोला । (नि०) मुऊ सरिखा तुऊ लाख है । मेरे तूंही अमोला । (नि०) ॥ १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका । मेरा लाल अमोला । जिसके पटंतर को नहीं । उसका क्या मोला ॥ (नि०) ॥ २ ॥ कोन सुनें किसपैं कहुं । किसपे मांडुं खोला । तेरे मुखदीठे टलै । मेरे मनका ऊोला ॥ (नि०) ॥ ३ ॥ मीत विवेक कहै हितकरतुं । सुमता सुन वोला । आणंदघन प्रजु आवसी । सेऊमी रंगरोला ॥ (नि०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग जैवंती (१) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज तो हमारे जाग वीर प्रजु आए है । (आ०) चंदना खमी डुवार चित्तसें करै विचार । देखत दीदार हीये हरष जराये है ॥ (आ०) ॥ १ ॥ आज मेरी आशफली । अली मेरे रंगरली । विकशी आतमकली । प्रजूपात्र पाएहै ॥ (आ०) ॥ २ ॥ धनदिन आजमेरो गयो सब कर्म फेरो । सुकृत वऊतेरो । जगवान दिल जाए है ॥ (आ०)

॥ ३ ॥ सिद्धारथ राय नंद सोहत सरद चंद । कहै जिनचंद चित आनंद वधाए है ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग परज ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वावरोरे आज मनवो मारो ॥ (वा०) ॥ आपरंगीला वाकी सेज रंगीली । ओर रंगीलो वाको सांवरोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ आपन आवैं वारी न लिख भेजै । प्रीतकरनकुं ऊतावरोरे ॥ २ ॥ आनंद घन पीया निजघर आवै । मिटगयो मोद संतावरोरे ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ राग जंगलो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऋषभविहारी थांरी तो छवि न्यारी ॥ (रि०) ॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर । प्रथम यती व्रत धारी हो ॥ (रि०) ॥ १ ॥ धनुष पांचसै मान मनोहर । काया कंचन वानी हो ॥ (रि० ॥ २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन । वापरजीया कुरवानी हो ॥ (रि०) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण स्वामी । प्रभुछो पर उपगारी हो ॥ (रि०) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुक्ति सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ॥ ५ ॥ आनंद घन प्रभु एती वीनती । तुमपर जाउं बलिहारी हो ॥ (रि०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुण मन हो न हार नटैरे ॥ (सु०) ॥ चित कछु डर विचारत है नर । डरही डरवर्नरे ॥ (सु०) ॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नीचै । चिड़ियां कैसैं वचैरे ॥ (सु०) ॥ २ ॥ होनहार वस मरयोहै पारधी । शर सींचाण मरैरे । (सु०) ॥ ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया । क्युं जगचाह धरैरे ॥ (सु०) ॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न भजैरे॥(सु०)॥५

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०) ॥ समवशरन विच आप विराजै । वीरनाथ महाराज ॥ (स०) ॥ १ ॥ श्रेणक भूप चेलणा राणी । भक्ति करत है आज ॥ (स०) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य लीयै पुरके जन । उमंग उमंग सुभ साज ॥ (स०) ॥ ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग केहरवो) (२) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजीके दरस सरस तें । दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मांनले । आतमसुं लय लायरे ॥ (म०) ॥ २ ॥ भव २ में तो कुं सुखदाई । आनंद वंछित पायरे ॥ (म०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव (चा०) वामानंदन पाशजिनेसर । शिरपररे वाके चवर ढोलाय ॥ (चा०) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके । भेटै सऊ भवि चित सुख पाय ॥ (चा०) ॥ २ ॥ गंगा दरश उमाहोलागो । कवफरसुं वाके मन वच काय ॥ (चा०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ (राग घाटो) (२) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रभुपाश (मे०) ॥ १ ॥ अखीयां कमल पांखमीयां । मुख सुंदर जास । (मे०) ॥ १ ॥ काने कुंडल दोय झलकै । शशि सूरज सम भास (मे०) ॥ नीलवरण तनु सोहै । त्रिभुवन परकास ॥ (मे०) ॥ ३ ॥ प्रभु तुम शरण रहीनें । समरुं सासोसास ॥ (मे०) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनें । पूरो वंछित आश ॥ (मे०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राखुंरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ (रा०) ॥ जागै प्रभाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । भागा भया उजेरा ॥ (रा०) ॥ १ ॥ सूरति तेरी रागै । देख्यां विभाव त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ (रा०) ॥ २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी । ऋषभेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही । हम है अनाथ गुन ही । करियै सनाथ हम ही ॥ (रा०) ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै । जिन हर्ष सूरि भाखै । दिलमां झया ही राखै ॥ (रा०) ॥ ५ ॥ ※ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हांरे में खमी पुकारुं नेम तूंही तूंही ।

(सु०)॥ अरज करत ऊं मैं पइयां परतऊं । इतनी अरज मेरी मांनो सुजाण (नेमजी हां.०) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब महिर निजर मोपै आणो सुजाण (नेमजी) ॥ २ ॥ हरख चंद (नेमी राजेसर । ऊं नव २ की चेरी सुजांण (नेमजी०) ॥ ३ ॥ इति पदम ॥

॥※॥ पुनः ॥※॥

॥※॥ तेरे दरसको चाह लग्यो । सखी स्याम वरण वत लाजारे (ते०) । वनमें जाय प्रनु दिक्षा लीनी । हमकूं लार लगा जारे (ते०)॥१॥ जाय चढे प्रनु गिरनार ऊपर । अव कैसें विसराजारे (ते०) ॥ २ ॥ चैन विजै कहै धन २ राजुल । प्रनु चरणां चित लायजारे (ते०) ॥ ३ ॥ इति

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ थांरे मुखमारीहो वारी राज । प्यारीछवि वरणी न जाय(थां०) सीस मुगट सौहै सिरटीको । कांने थांरे कुंडल सोनाय (थां०) ॥ १ ॥ मोहन गारी सूरत सारी । देख्यां ह्मांरो मनमो लोनाय (थां०) उलसित नैंन नए निरखत ही । थांसुं प्रनु प्रीतमली लगाय (थां०) ॥ २ ॥ नव २ पाश जिणंदजीकी सेवा । ऐसी ह्मांरे दिलमैंमै चाव (थां०) । वालक है तुमही प्रनु मेरे । ह्मांरे प्रनु तुमही सहाय । (थां०) ॥ ३ ॥ इति पदम ॥

॥ ※ ॥(राग काफी कानमो) ॥ ※ ॥

ऐसी विधतैनैं पाईरे । कछु करणी करजा (ऐ०) उत्तम नर नव जैन धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे । जसु पातक ऊरजा (ऐ०) ॥ १ ॥ हिंसा जूआ कूट परत्रिया । परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा (ऐ०) ॥ २ ॥ तप जप संयम शीलदान कर । आनंद सुमति सुहाईरे । नव जलनिधि तरजा (ऐ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (राग कालिंगमो) ॥ ※ ॥

॥※॥ मोहि अपनो कर जांणो प्रनुजी ॥ (मो०)॥ मैं मतिहीण महा हठवादी । सो तुमसें नहीं ठानो । राग द्वेष अरु मोह महामद । वाधो खोट खजानो ॥ (प्र० मो०) ॥ १ ॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुऊ के मैं । किसविध टूटै पानो । कुमति कदा ग्रह मांहि ऊलूऊयो । ज्युं मदपा

न वयानो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ ॐ भववाशी तूं शिववाशी । जानें सकल
जिहांनो । विरुद लाखीणो सांम संभारो । तो हिव किम चित तांणो ॥
(प्र०) ॥ ३ ॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता । संभवनाथ कहानो । श्रीजि
न सौभाग्य सूरिनै निजवर । दीजै सुखप्रधानो ॥ (प्र०) ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ (राग भैरवी) (१) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेम जिणंद जी सें आखमली । मोरी रैंन दिवस नित लग र
हीरे ॥ (मो० ने०) ॥ पहली आय भन दोस्ती कीनी । ले पीछे छिटका
य दईरे ॥ (ने०) ॥ २ ॥ पशुवन पर प्रभु दया करीनें । शिवरमणीनें वर
लेईरे ॥ (ने०) ॥ २ ॥ केइ भविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद
पाय लईरे ॥ (ने०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ आज प्रभु तोरै चरण लाग । मिथ्यात नींद में खोईरे ॥ (आ०)॥
दरशण कर परसण भयोमेरे । आनंद चित अब पोईरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥
तुम विन ओर न कोइ मेरै । देख्यो त्रिभुवन जोईरे ॥ आ०) ॥ २ ॥ दास
तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु भव भव होईरे ॥ (आ०) ॥ इति पदम्॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रात गई अब प्रात होन भयो । क्या सोवे जिया जागरे
(रा०) दोय घडी तमको अब रहीयो । कछ धरम में लागरे ॥ (रा०) ॥
॥ १ ॥ जिनवाणी उर वीच धारलै । उर भरम सर्व त्यागरे ॥ (रा०)॥२॥
आणंद सुगुरु वचन हित मानो । ए सूधो शिव मागरे ॥ (रा०) ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबरलै मेरी । (तु०) भ्रम
त फिरयो संसार जगतमें । मेटो भवनी फेरी । (तु०) ॥ २ ॥ भव २ के
प्रभु तुम जगनायक । राखो शरणें तेरी । उदय आसरो पकड्यो तेरो ।
शरन ग्रहीमें तेरी ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग विभास) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भोरभयो अब जाग बावरे ॥ (भो०) कोउ पुन्यतें नर भव

पायो । क्युं सूतो अब पाय दावरे ॥ (जो०) ॥ १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों । मोहमगन एह विकल भावरे । को इन तेरो तूं नहीं काको । इह संजोग अनाद सु भावरे ॥ १ ॥ (जो०) ॥ २ ॥ आरज देश उत्तम गुरु संगत । पाई तें वड पुन्य प्रभावरे । ग्यांनसार जिनमारग लाधो । क्युं डूबे अब पाय नावरे ॥ (जो०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥※॥

॥※॥ (राग खट्) ॥※॥

॥ ※ ॥ जागरे सब रेन विहानी (जा०) उदयो उदयाचल रवि मंमल पुन्यकाल क्युं सोवै प्रानी ॥ (जा०) ॥ १ ॥ कमल खंम वन वन विकसानी । अजुबन तेरी द्रग उघरानी । चेतन धर्म अनादि तुमारो । जम संग तसें सुध विसरानी । (जा०) ॥ २ ॥ तुम कुल दोय अवस्ता पइयै । नींद सुपन एजम नीसानी । आतम रूप संभार आपणो । कब तुमारे घर कुमती घरानी ॥ (जा०) ॥ ३ ॥ सुध बुध भूली निरुपम रूपकी । तातें घट वध होत कहांनी । निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो । ग्यांनसार पद निज रजधांनी ॥ (जा०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग वेलाउल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो । रूप देखाय मेरो मन ललचावनो ॥ (सां०) ॥ १ ॥ तोरणसुं रथफेर चले पीया । ना जानुं ए काहिको रुसावनो ॥ (सां०) ॥ २ ॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम । याहीतें कहा वदन डुरावणो । आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी । भयो पीया मुगत सखीको पावनो ॥ (सां०) ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग ललित ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज ऋषभ घर आवै (देखो माई आ०) ॥ रूप मनोहर जगदानंदन । सवहीके मन भावै (दे०) ॥१॥ केई मुगताफल थाल विशाला । केईमणि माणक ल्यावै । हयगय रथ पायक केई कन्या । लेप्रभु वेग वधावै ॥ (दे०) ॥ २ ॥ श्रीश्रेयांस कुमर दानेसर । इक्षुरस दान वहिरावै ॥ उत्तम दांन अधिक अमृत फल । साधुकीरत गुण गावै ॥ (दे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग रामकली ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अंगण कलप फल्योरी । हमारे माई (अं०) । ऋद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशांतिनाथ मिल्योरी (ह०) ॥ १ ॥ केशर चंदन मृग मद घोली । मांहि वरास मिल्योरी । पूजित श्री शांतिनाथजी की प्रतिमा । अलग उदेग टल्योरी ॥ (ह० अं०) ॥ २ ॥ शरणें राख कृपाकर साहिब । ज्यूंपारेवो पल्योरी । समय सुंदर कहै तुह्मारी कृपासें । ऊंरहिसुं सोहिलोरी (ह० अं०) ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऊठोनें मोरा आतमराम । जिन मुख जोवा जइयेरे ॥ जिनजी नो दरसण छै अति दोहिलो । ते किम सोहिलो जाणोरे । वार २ मानव भव एहवो । जुम्हवो मुसकल टाणोरे ॥ (ऊ०) ॥ १ ॥ च्यार दिवशनो चंटको मटको । देखीनें मतराचोरे । विनसी जातां वार न लागे । काया घटछै काचोरे ॥ (ऊ०) ॥ २ ॥ अनन्तगुणे भरियो है जिनवर । पूरब पुण्यैं पायोरे । एहनें देखी दिलमें आनन्द । करतूं सदा सवायोरे ॥ (ऊ०) ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो । मूढ हिवे मति गमजोरे । सहिज सलूणा पास जिणंद जीसुं । राजी ऊय चित रमज्योरे ॥ (ऊ०) ॥ ४ ॥ मन मांनीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे । लाभ उदय जिनचंद्र लहीनें । वरतूं सिद्ध वधाईरे । (ऊ०) ॥ ५ ॥ इति पदम ॥

॥ ※ ॥ राग केदारो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भज मन नाभि नन्दन देव (भ०) ॥ ध्यांन मुनीजन अभिग धारै । सुर नर करत है सेव ॥ (भ०) ॥ १ ॥ चक्री भूपति वमे सुर पति । वासुदेव बलदेव । नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥ (भ०) अशरन शरनहै विरुद जाको । भक्तिवछल भेव । राजसिंह प्रभु ऋषभ शिरपर । नाथ है नित मेव ॥ (भ०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ताल ठुमरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कोंन संतावोरे (आ०) ब्याहन आए सऊके सजन । पसुवनको सुन देख रुदन । गिरनारी चले

निज ग्राम्हि वतन । तकसीर वतावोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ पूनम जैसे चंद्रवदन । मनमोहन मूरत स्याम वरन । मेरे जीकी लगी नव भवकी लगन मती छेह दिखावोरे ॥ (आ०) ॥ २ ॥ संयम दूती लागी श्रवण । प्रभुकुं सिखाये जीके भ्रमन । सव छूठे परमेंगे कोल वचन । रथ फेरी न जावोरे ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण । राजुल मन वैराग धरन । लेऊं दोड नेम जिनजीके शरण । शिवपुर तो वतावोरे ॥ (आ०) ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अधम जगकाम भये आगीवान । हे ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नहीं देखा समो सरणा । किया भवदधिमें उदर भरणा । दोमजो लेते प्रभुसरणा । दूर दुख होते जनम मरणा । वैठ भव वरमें लगाया नहीं ध्यान । राज शिवपुरमें हुवा अपमान । मरो अव देखके काल खगवान ॥ हे० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आठुं मद तुमसें दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो शपी सुमताकों तुमें देते । रहे तम्र जपमें सदा जोसूर । वरे वो भव भव अगम सुख भूर । करै कपूर करम चकचूर । देखा जिन नूर हुवे दुख दूर । करो भव पार सुनो मेहरवान ॥ नाति० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग पीलु) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आयो सही अव जाउं कहां शरणागतकों शरणागत तेरी । (आ०) तोहू समान मिल्यो नहीं कोई । ढूंढ फिरयो धरती सव हेरी । (आ०) होय दयाल महा प्रभुजी अव । आन भई तुम सें भट भेरी ॥ (आ०) ॥ १ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुन । पारशनाथ सुपारस मेरी ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग खाम्बाज) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ घमी २ पल २ छिन २ निश दिन । प्रभूको समरण करलैरे । (घ०) प्रभु समरण सव पाप कटतहे । अशुभ करम सव हरलैरे ॥ (घ०) ॥ १ ॥ मन वच काय लगी चरण न नित । ज्ञान हियेमें धर लैरे ॥ (घ०) ॥ २ ॥ दोलत राम प्रभु गुणगावै । मनवंछित फल वरलैरे ॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ अथ शिखरगिरी स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुमतो भले विराजो जी । शांवलिया महाराज शिखरपर भले विराजो जी ॥ तेरे घाटै चौकी लागै । श्रावक जाण न पावै । ऊकम कियो श्रीपाशजिनेसर । वांह पकड़ लेजावै ॥ (तु०)॥ १ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहै । तलै भिलनका वासा । पैंड़ पैंड़ पर सिंह धमूकै । जिहां लिया तुह्म वासा ॥ (तु०) ॥ २ ॥ टूंक टूंकपर धजा विराजै । झालरकै झणकारै । झालरके झणकारै सेती । वाजै अविचल वाजा ॥ (तु०) ॥ दूर देशथी यात्री आवै । पूजा आण रचावै । अष्टद्रव्य पूजामें लावै । मनवंछित फलपावै ॥ (तु०) ॥ ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवै । महा परम सुख पावै । चंदखुस्याल चरणको सेवक । हरष हरष गुण गावै ॥ (तु०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शिखर गिरेंद्र जुहारो । निज पातिक दूर निवारोरे ॥ (भवियां शि०)॥ इण सम तीर्थ न कोई । में देखा सऊ जग जोईरे ॥(भ०सि०) ॥१॥ वीश जिनेसर आया । इहां मुक्ति पुरी सुख पायारे ॥ (भ०)॥ कोड़ा कोड़ी मुनि सीधा । जिहां अजर अमरपद लीधारे । (भ०) वीश चरण जिन सोहै । भविजन चात्रक मनमोहैरे ॥ (भ०) ॥ २ ॥ ध्रुव मठ मंदिर छाजै । जिहां पास प्रभु महाराजरे ॥ (भ०) ॥ ३ ॥ पावन तीरथ एहवो । इहां संसय धरवो न केहोरे (भ०) तीर्थ आसातन टालो । भविजन ब्रह्मीव्रत पालोरे ॥ (भ०) ॥ ४ ॥ नर भव लाहो लीजै । इण तीरथ महिमा कीजैरे ॥ (भ०) सय उगणीस ते तीसै । अगहन सुदि पंचमी दीसैरे ॥ (भ०) ॥ ५ ॥ दूगड़ गोत्र सुहावै । भवि चंद गोविंद गुण गावैरे (भ०) । जात्रा करी मनरंगै । चंदशिखर भणें अति चंगैरे ॥ (भ०)॥६॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शांवरिया जैसें वणें तैसें तारो० ॥ (इस चालमें) ॥ शांवरियामें दीठे दरस तिहारो । मेरी भव भय वाधा टारो (शां०) अश्वसेन नंदन जगवंदन । जगवंधव जगप्यारो । नीलवरण द्युति श्रीजिनवरकी । वामा

न्दर अवतारो ॥ (शां०) ॥ १ ॥ कमठ विमारण शिव सुखकारण । तारण तरण निहारो । अलख अगोचर अगम अरूपी । निर्यामक सत्थवारो ॥ (शां०) ॥ २ ॥ शिखर गिरी मंमन जिनवरजी । अदभुत महिमा वारो । करजोमी दोउं वीनती करत है । वुधसिंह अरजी धारो ॥ (शां०) ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ पावापुरी स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चरम प्रभु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो (च०) (आंकमी) सिध्धारथ कुल जनम लियोहै । त्रिसला नन्दर अवतारो । सुरगण कोम मिली सुरगिर पर । स्नात्र महोच्छव सारो ॥ (च० १ ॥ व सुविध पूज रचत जिनवरकी । सफल करत अवतारो । जय जय शब्द करत सुर नरवर । जय २ जगदाधारो ॥ (च०) २ ॥ वाल अवस्था अतुल वली प्रभु । सहजा अतिसय चारो । दिक्षा ले प्रभु केवलपायो । श्री संघ आनंदकारो ॥ (च०) ३ ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत । नाथ निरंजन प्यारो । सीस मुगट सोहै अति सुंदर । गल मोतियनको हारो ॥ (च०) ४ ॥ समवसरणकी अदभुत महिमा । देखत नयना ठारो । भविजन चात्रक अति हरषावै । स्वामी नाथ निहारो ॥ (च०) ५ ॥ चरम चौमाशी पावापुरिमें । कीधी जग हितकारो । शोलै पहर लग अमग देसना । पदनिरवाण पधारो ॥ (च०) ६ ॥ काल अनन्त भम्यो भव वनमें । कहत न आवै पारो । अव तो प्रभुको सरण ग्रहीमें । कवहु न छोडुं लारो ॥ च०) ७ ॥ दूगम गौत्रे इन्द्र चन्द्र सुत । चंद्र गोविंद धमकारो । जात्रा करी प्रभुकी उमंगे । जनम कृतारथ म्हांरो (च०) ८ ॥ सय उगणीस ते तीस मनोहर । अगहन दशमी उजारो । सिपरचंद प्रभु शिवसुख दायक । पूरब पुन्य जुहारो ॥ (च०) ९ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥राग केरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ में मुख देख्यो गोमी पारसको मेरो जनम सफल भयो आज ॥ आजरे में मुख देख्यो गोमी पारसको ॥ मेरो० ॥ (टेक) अन्यदेवनकूं वहुत में ध्यायो । तोए न सख्योजी मेरो काज ॥ आजरे० ॥ १ ॥ भव भव भटकत शरणे हुं आयो । अव तो रखोजी मोरी लाज ॥ आजरे० ॥ २ ॥ कमठ हरावन नागकूं तारन । संभलाव्यो नव

कार ॥ आजरे० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । तारण तरण जहा ज ॥ (जलां०) तारण तरण महाराज ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ किरपा करोरे गोमीपाश जिनेसर । तुम स्वामी अंतरजामी ॥ टेक ॥ उंचे उंचे गढपर पासजी विराजे । चारे तरफ ज्ञानी ध्यानी किरपा० ॥ १ ॥ नील वरण तोरो अंग विराजे । वदनोंकी जाऊं बलिहारी ॥ किर० ॥ २ ॥ वांहे वाजुबंध वहेरखा विराजे । कुंमलकी छवि हे न्यारी ॥ किर० ॥ ३ ॥ ढूंढत ढूंढत में प्रज्ञु पायो । पूरण पदवी अव पाई॥ किर०॥४॥ नाथ निरंजन नाम तुमारुं । रूपचंद पदवी पाई ॥ किर०॥५॥

॥ ※ ॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब । साहेव मुजरा मेरारे ॥ टेक ॥ साहेब सुविधि जिनेसर स्वामी । चरण पखालुं तेरारे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे । फूल चढावुं सेरारे । घंट बजावुं अगर उखेवुं । करुं प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजित्र बजावुं । नृत्य करुं अधिकेरारे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखत । दास निरंजन तेरारे । मुजरा० ॥ ※ ॥ इति० ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ घंट बाजे घननननन । इंद्रलोक हरख जयो । जनमे वर्द्धमान कुंवर । वीतराग तननननन ॥ घंट०॥ १ ॥ मृदंग ताल गुण विशाल । फल्लरी नाद फननननन । घंट० ॥ २ ॥ रूपचंद रागरंग । होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ निरंजन सांइआं रे । सांइ मेरा टुकसा मुजरालेत ॥ टेक ॥ तुम हो तीरथका देवतारे । हम गिरिवरका मोर ॥ रुम फुम रुम फुम मे जला बरसे । कांइ ठम ठम नाचे मोर ॥ निरंजन० ॥ १ ॥ हम गुण काली कोयलीरे । प्रज्ञु गुण आंवा मोहोर । मांजरके परसादसें कांइ । करने लागी सोर ॥ निरंजन० ॥ २ ॥ तुमहो अमर देवतारे । हम केशरका छोड ॥ कनक कचोली हाथमां । कांइ पूजा करुं रंगरोल ॥ निरंजन० ॥ ॥ ३ ॥ तुमहो मोतिनकी लरीरे । हमगुण उंमा जोर । रूपचंदकी येही अरज हे । दिलजर दरिशनदोर ॥ नि०॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग कल्याण ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऐसे सहेर विच कौनसा दीवानहै ॥ टेक ॥ पानीके कोट

पवनके कांगरे । दश दरवाजे मंम्मान हे ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ पांच इंद्रीके त्रेवीश तस्कर । नगरकूं करत हैरान हे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजा पुकार सुनी तब जाग्यो । चेतन राय सुजाए हे ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ ज्ञानको बान वचन रस भेदे । हाथमें लाल कमान हे ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेनें वारो । डुशमन मान गुमान है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आय रहो दिल बागमें । सुन प्यारे जिनजी ॥ (आंकणी) चुन चुन कलीयां तोरे चरणे चढावुं । गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सुन० ॥ ॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आदि जिनेश्वर । खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सुन०॥ ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । जाउं विकसित बन फागमें (सुन०३)

॥ ※ ॥ रहो रहोरे यादव दोय घमियां । दोय घमीयांरे अब चार घमीयां ॥ र० ॥ ए आंकणी ॥ प्रेमका प्याला वोहोत मसाला । पीवत मधुरी सेलमीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ हाथशुं हाथ मिलाइ दीयो सांइ । फुलमा बिछवुं सेजमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ राजुल गेडी चले गिरनारे । दीपत मोहन वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । मुक्ति वधू गुण वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विराजो बंगलामें । विराजो मंदिरमें । प्रभु गोमीचा पारश नाथ ॥ वि० ॥ ए टेक ॥ चुवा चुवा चंदन और अरगजा । केशर में गरकाव ॥ वि० ॥ १ ॥ शिरसोनेंको छत्र विराजे । मोतियडां तपे रे लिलाड ॥ वि० ॥ २ ॥ भव सागरमें आइ पड्यो हुं । बांहे पकड मुऊ तार ॥ वि० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । आवागमन निवार ॥ वि० ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ कीनें देखा हमारा स्वामी । स्वामी अंतर जामीरे ॥ कीनें० ॥ टेक ॥ आठ भवनकी प्रीति प्रकाशी । नवमें गया शिवगामीरे ॥ कीनें० ॥ १ ॥ सहसावनके कुंज गलिनमें । मिल्या मुने अंतरजामीरे ॥ कीनें० ॥ २ ॥ आप चले गिरनारकी ऊपर । नारी तारी केवल पामीरे ॥ कीनें० ॥ ३ ॥ कहे नथू प्रभू नेम नगीनो । कहुं छुं आज शिर नामीरे ॥ कीनें० ॥ ४ ॥ ※ ॥ इति० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग आशावरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा । इस पदका करेरे निवेडा ॥

अवधू० ॥ टेक० ॥ तरुवर एक मूल बिन ठाया । बिन फूले फल लागा । शाखा पत्र नही कर उनकुं । अमृत गगनें लागा ॥ अ० ॥ १ ॥ तरुवर एक पंछी दोउ बेठे । एक गुरु एक चेला ॥ चेलेनें जुग चुण चुण खाया । गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥ गगन मंम्मलमें अधबिच कूवा । उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होवे सो भर भर पीवे । नगुरा जावे प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥ गगनमंम्मलमें गउआं विहानी । धरती दूध जमाया ॥ माखन था सो विरला पाया । बठ जगत भरमाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड बिन पत्र पत्र विन तुंबा । बिन जिभ्या गुण गाया ॥ गावन वालेका रूप न रेखा । सुगुरु सोही वताया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आतम अनुभव बिन नही जानें । अंतर ज्योति जगावे । घट अंतर परखे सोही मूरत । आनंदघन पद पावे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अवधू ऐसो ज्ञान विचारी । वार्मे कोण पुरुष कोण नारी ॥ अवधू० (टेक) बम्मनके घर न्हाती धोती । जोगीके घर चेली । कलमा पढ पढ भईरे तुरकनी । आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ १ ॥ सुसरो हमारो बालो भोलो । सासू बाल कुंवारी । पिउजी हमारो प्होढे पालणीये । में ऊं झुलावन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नही ऊं परणी नहि ऊं कुंवारी । पुत्र जणावन हारी । काली दाढीको में कोइ नही छोड्यो । हजुए ऊं बाल कुंवारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ अढी द्वीपमें खाट खटूली । गगन उशीकुं तलाइ । धरतीको छेडो आभकी पिछोमी । तोए न सोड भराणी ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ गगन मंम्मलमें गाय वीआणी । वसुधा दूध जमाई । सउरे सुनो भाइ विलोणां विलोवें । कोइ एक अमृत पाईरे ॥ अवधू ॥ ५ ॥ नही जाउं सासरीए नही जाउं पीयरीये । पीयुजीकी सेज बिछाइ ॥ आनंदघन कहे सुनो भाइ साधो । ज्योतसें ज्योत मिलाइरे ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बेर बेर नही आवे । अवशार । बेर बेर नही आवे (ए टेक) ज्युं जाणे त्युं करले भलाई । जनम जनम सुख पावे ॥ अवशार० ॥ १ ॥ तन धन जोवन सबही जूठो । प्राण पलकमें जावे ॥ अवशार० ॥ २ ॥

तन छूटें धन कोण कामको । कायकूं कृपण कहावे ॥ अव० ॥ ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे । ताकूं कूड न आवे ॥ अव० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रजु चलत पंथमें । समरि समरि गुण गावे ॥ अव० ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग केरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ए जिनके पाये लागरे । तुनें कहीयें केतो ॥ ए जिनकेपा० ॥ (ए टेक)॥ आठोंइ जाम फिरे मद मातो । मोह निंदरीयाशुं जागरे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रजुजी प्रीतम विन नही कोइ प्रीतम । प्रजुजीनी पूजा घणी मागरे ॥ तुनें०॥ २ ॥ जवका फेरा वारी करो जिन चंदा । आनंदघन पाये लागरे ॥ तुनें० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांरे चित्तमें धरोरे प्यारे चित्तमें धरो । एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो । (ए आंकणी) थोमासा जीवनकाज अरे नर । कायेकूं ठग परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ कूड कपट परद्रोह करो तुम । अरे नर परजवथी न मरो ॥ एती० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो । जनम मरणके दुःखमें परो ॥ एती०॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग गोमी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोइ । देख्या जग सब जोइ ॥ अवधू० ॥ टेक ॥ समरस जाव जला चित्त जाके । थाप उथाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वातां । जाणेंगे नर सोइ ॥ अवधू० ॥ १ ॥ राव रंकमें जेद न जाणे । कनक उपल सम लेखे ॥ नारी नागणिको नही परिचय । तो शिव मंदिर देखे ॥ अवधू० ॥ २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणीनें । हर्ष शोक नवि आणें ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा । नित चढते गुणठाणें ॥ अवधू०॥ ३ ॥ चंद्रसमान सौम्यता जाकी । सायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्त जारंम परें नित्या । सुर गिरि सम शुचि धीरा ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकशुं । रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद ऐसा जिन उत्तम । सो साहेबका प्यारा ॥ अवधु०॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग प्रभाती ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चालणां जरूर जाकुं ताकुं कैसा सोवणां (ए आंकणी) भया जब प्रातकाल । माता धवरावे बाल । जगजन करत सकल मुख धोवणां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरभिके बंध छूटे घूवरू भये अपूठे ॥ ग्वाल बाल मिलके । विलोवत विलोवणां ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग तूंभि तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय । वृथा नही खोवणा ॥ चा०॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ राग केरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समक परी । मोहे समक परी । जग माया अब कूठी मोहे॥ समज० ॥ ए आंकणी ॥ काल काल तुं क्या करे मूरख । नहीं भरोसा पल एक घरी ॥ जग० ॥ १ ॥ गाफिल छिनभर नांही रहो तुम । शिरपर घुमे तेरे काल अरी ॥ जग० ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे । जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ जग० ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग गजल ॥ ※ ॥

॥※॥ राजुल पुकारे नेम पिया । ऐसी क्या करी॥ मुझे छोडके चले हो चूक हमसें क्यापरी ॥ राजु०॥१॥ हुइ आशकी निराश । उदाशीनता धरी॥ प्यारा बस नहीं हमेरा । प्रीतम पीरमें परी ॥ राजु० ॥ २ ॥ हमसें रह्यो न जाये । प्रीतम तुम विना घरी ॥ संयम लीजीयें दयाल । दया धर्म आदरी॥ राजु० ॥ ३ ॥ निशदिन तुमेरा नाम । देते ज्ञानकी झरी ॥ मुनिचंद विजय चरण कमल । चित्तमें धरी ॥ राजु० ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॥ राग धन्याश्री ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कौन किसीको मित्त । जगतमें कौन किसीको मित्त ॥ ए आंकणी ॥ मात तात उरजात सजनसें । कांइ रहेत निचिंत ॥ ज० ॥ १ ॥ सवही अपने स्वारथके है। परमारथ नहिं प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी । मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० ॥ २ ॥ उठ चलैगो आप इकेलो । तुंही सुं सुविदीत ॥ कोनहिं तेरो तुं नहीं किसको । एह अनादी रीत ॥ ज० ॥ ३ ॥ तातें एक भगवान भजनकी । राखो मनमें नीत ॥ ग्यानसार कहे येह धन्याश्री । गायो आतम गीत ॥ ज० ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वधाई ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वाजत रंग वधाई नगरमें ॥ वा० ॥ जय जयकार भयो जिनशासन । वीर जिणंदकी ढहाइ ॥ न० ॥ वा०॥ १ ॥ सव सखियन मिल मंगल गावै । मोतीअन चौक पुराइ ॥ न० ॥ वा० ॥ २ ॥ केशर चंदन भरीय कचोली । साहिव ज्योति सवाइ ॥ न० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु दरशन देखत । आवत नैन भराइ ॥ न० वा० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग केरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार । एकेली जानसैं ॥ मेरो०॥ राजुल कन्नी अरज करे छे। (भलांजी मेरी) अरज सुनो महाराज ॥ एकेली० ॥ १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी । (भलांजी उवांतो) पशुवनकी सुनी छे पोकार ॥ एकेली० ॥ २ ॥ सहसावनकी कुंजगलिनमें । (भलांजी उवांतो) पंच महाव्रत धार ॥ एकेली०॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवे । (भलांजी मेरो) होजो मुक्तिमें वास ॥ एके० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीसुपाश जिनराज ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आदीसर जिनराज । त्रिभुवनके महाराज ॥ आजहो आयो रे में शरणें प्रभुजी तुम तणें जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ग्यान अंकूर । प्रगट्यो पुण्य पडूर । आजहो जागी रे मुझ मनमें तुमनी सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लागी भरपूर । दोष गये सव दूर । आजहो छोडुं रे नंही तुम पद सेवा सुखकरूजी ॥ ३ ॥ नाभिराय कुल चंद । मरुदेवीके नंद । आजहो राखो रे प्रभु मुझकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥ अमृत धर्म सुजाण । शीश क्षमा कल्याण । आज हो रागें रे प्रभु आगें आ विनती करेजी ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग केरवो ॥ ※ ॥

॥※॥ रसना सफल भई । में तो गुन गाये महाराज ॥ रसना०॥ (ए आकणी) ॥ परम आनंद प्रगट भयो मेरे । जव देखे जिनराज ॥ रसना० ॥ १ ॥ अति उज्वल जश सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत समाज ॥ नाक नमन करतां प्रभुजीकूं । साध्या आतम काज ॥ रसना० ॥ २ ॥

पदपंकज प्रभुके फरसतही । दूर गई दुःख दाझ । कहत क्षमाकल्याण सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना० ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॥ राग केदारो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गोमी गाइयें मन रंग ॥ गो०। एक ध्यानें एक तानें॥ कर केदारो संग ॥ गोमी०॥१॥ जात्रा कीजें अमृत पीजें । नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासे । आलस नावे अंग ॥ गो० ॥ २ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजै । आणी मन उछरंग ॥ अभय तेहने कंथ मांहे । कदिय न होवे चित्त भंग ॥ गो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हांरे हुं तो मोह्योरे लाल । जिनमुखमानें मटके ॥ टेक ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला । चित्तमुं लीधुं चटके ॥ प्रभुजी केरी भक्ति करतां । करम तणी कस तटके ॥ हांरे० ॥ १ ॥ मुझ मन लोभी भमरतणी परें । जिनगुण कमलें अटके । रत्न चिंतामणि मुंकी राचे । कहो कोण काच तणे कटके ॥ हांरे० ॥ २ ॥ ए जिन थुणतां क्रोधादिक सहु । आस पासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुखदाणी । कुमति कुगतिने पटके ॥ हांरे० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे । तेतो भूल्या भटके ॥ भाव भक्तिशुं उलग करतां । वंछित सुखमे सटके ॥ हांरे०॥ ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केरी । जोतां हइडुं हटके । नित्य लाभ कहे प्रभु ए मोहोटो । गुण गाऊं हुं लटके ॥ हांरे० ॥ ५ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ राग काफी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभुजीसें लागो ह्मारो नेह सखीरी । अब कैसें कर छूटेरी ॥ प्र० ॥ टेक ॥ धिग धिग जगमें वाको जीयो । आपणा प्रभुजीसें रूसेरी ॥ प्र० ॥ १ ॥ जो कोइ प्रभुजीसें नेह करेगो । शिव पुरनां सुख लेहसेरी ॥ प्र० ॥२॥ सेवा राम प्रभु गांठ रेशमकी । लगी प्रीत नही तूटेरी ॥प्र०॥३॥

॥ ※ ॥ राग रामग्री ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीयें । धर्मनाचार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना । जगमां एतंत सार ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ वरश दिवसनें

पारणुं । आदीश्वर अणगार ॥ इक्षुरस दान वहरावीयो । श्री श्रेयांस कुमार ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघामीयां । चालणीयें काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा यश थयो । शीयल मेरु गंभीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी । अरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणीयों । धन धन्नो अणगार ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावतो । धरतो निश्चल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो । जेनी शीतल छांय ॥ समय सुंदर कहे सेवतां । मन वंछित फल पाय ॥ रेजी० ॥ ६ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । वेरन निद्रा तुं कहांसें आई ॥ सोइ० ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा कहे मेंतो बालीरे भोली । बमे बमे मुनिजनकूं नाखुंरे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी । एक हाथमें मुकी उर डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ वनीयां । आप डुबे सारी डुब गइ डुनियां ॥ सो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चंद्रा प्रभुजीसें ध्यानरे । मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागील गनवा छोमी न छूटे । जबलग घटमें प्राणरे ॥ मोरी० ॥ चं० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो । जैन धर्म प्रतिपालरे ॥ मो० ॥ चं० ॥ २ ॥ हाथ जोम कर अरज करत हैं । वंदत शेठखुशालरे ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ते मुक्त पुर गये रहेरे । वारी सकल करम दल खय कर ते ॥ मु० ॥ ए टेक ॥ अविनाशी अविकार हे । परमातम शिवधामरे ॥ समाधान सरवंगे रूपी । मेंरे मन वसे वसेरे ॥ वारी० ॥ १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे । वहे अनादि अनंतरे ॥ वीर प्रभुके आगें गौतम । अमृत पद लहे लहे रे ॥ वारी० ३

॥ ※ ॥ राग काफी ॥ ※ ॥

॥※॥ खतरा दूर करनां । दूर करनां । एक ध्यान प्रभूका धरनां ॥ खतरा दूर करनां ॥ दू० ॥ टेक ॥ जबलग पांचो निर्मल करनां । तब लग जिन अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरनां । सुमति गुप्ति चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ २ ॥ संवर भाव सदा मन धरनां । आतम दुरगति हरनां ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ धन कण कंचन कुं क्या करनां । आखर एक

दिन मरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु पाए परनां । शिव सुंदरी सुख वरनां ॥ खतरा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पानीमें मीन पियासी रे । सुन सुन आवत हांसीरे ॥ टेक ॥ सुखसागर सब ठेर भरयो हे । तुं कां भयो उदासीरे ॥ पानी० ॥ १ आत्मज्ञान विन नर भटकत हे । क्या मथुरा क्या काशीरे ॥ पानी० ॥ २ ॥ मान मुनि कहे ए गुरु साचो । सहजे मिले अविनाशी रे ॥ पानी०॥३॥ इति

॥ ※ ॥ गरबा चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धन धन रे दीवाली व्हारे आजुनीरे । मेंतो छवी निरखी जिनराजनीरे ॥ धन धनरे दीवाली व्हारे आजनीरे ॥ टेक ॥ पहेरी अंगी अलोकिक जातनीरे । मांही बुट्टी दीसे भांत भांतनीरे ॥ धन० ॥ १ ॥ मणी हीरा मुकुटमां जड्या बहुरे । कानें कुंमलनी शोभा शी कहुंरे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुने किरपा करी ते हुं कहुं कशीरे । मारे वाहाले मुझ सामुं जोयुं हसीरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ प्रभु शांति जिणंद हृदये वस्यारे । थई सूरशशीनी चढती दशारे ॥ धन० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धन धन आजुनो दिन रलियामणोरे । सूरज सोनानो उग्यो सोहामणोरे ॥ धन० ॥ टेक०॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्योरे । जिन राज ते माहरे मन गम्योरे ॥ धन० ॥ १ ॥ नव ग्रह समा थया व्हारे आजथीरे । वली दशा ते श्री जिनराजथीरे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुंरे । वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युंरे ॥ धन०॥ ३ ॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथीखरीरे । सूर शशी ऊपरें करुणा करीरे ॥ धन०॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ व्हारे आज आनंद वधामणांरे । हुं तो लेंउंरे वाहलाजीना भामणारे ॥ व्हा०॥ टेक ॥ मुनें दास पोतानो जाणीयोरे । आथमतां ठेकाणें आणियोरे ॥ व्हारे०॥ १ ॥ आप्युं दरशन जें दुर्लभ देवनेंरे । मुने कीधुं तुं रहेजे मारी सेवमेंरे ॥ व्हारे० ॥ २ ॥ एवो दीधो भरोसो साचा गुरूरे । प्र

नु विना जगत् मिथ्या सहूरे ॥ ह्मारे० ॥ ३ ॥ लहेर करीने महारा मन रम्यारे । सूर शशीने जिनराजजी गम्यारे ॥ मारे० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी ॥ स० ॥ ए संसार जैसा सांभेलां । घडपण आया घोडे चडी ॥ मांगी तुंगीने छत्र धरायो । केनो कंदोरो केनी कडी ॥ सवा० ॥ १ ॥ साधो भाई जिनने संभारो । जन्म दशा जेम आवी चडी । कहे लींवो भजतुं भगवंतनें । मोक्षजवानी ए वात खरी ॥ सवा० ॥ २ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ लावण्यां संग्रह ॥ ※ ॥

॥※॥ अगडडं अगमडं वाजे चौघडा । सवाइमंका साहेवका । छननं छ ननं अवाज होता । महेल वनाया गगनोंका ॥ कल्याण पारशनाथ नामका । नित नित वाजै चोघमा । तीन लोकमें सच्चा साहेव । पार्श्वनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारशी नगरीमें तेरा जनमहे । माता वामाके नंदा ॥ अश्वसेनके कुलमें शोभे । जैसा सरदपूनम चंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा । इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीश क्रोम देवता मिलकर । उछव करनेकूं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवतां कोइ गावतां । कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंदर अरज करंता । चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेवके आगे । अरज करंता खमा खमा ॥ जिनके सरूपको पारन पावे । जिनका गुण हे सवसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देशसें आया जोगी । वमे जोर तपश्या करता ॥ नीचें लगाता ज्वाला जोगी । वमे वमे झोकें खाता ॥ वार वरसकी उमर प्रभुकी । छोटे पनमें वहोत कला ॥ वरोवरीके लीये सोवती । तपशीकूं देखन्न चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके वोले जोगीसें । ऐसी तपस्या क्युं करता ॥ ओ जोगी तेरे वमे लकमेंमें । वमा नाग इक अध जलता ॥ पारसनाथ जोगीशुं कहेता । तोवी जोगी नही सुनता ॥ लकडे दीये फेंक जंगलमें । लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमनें । वमा नाग कों जला दीया ॥ दिया सार नवकार नागकूं । धरणीधर पदवीपाया ॥ वडी उमेदसें आया साहेव । संवत्सरीका दान दीया ॥ मात पिताकी आज्ञा लेकर । महाराजनें योग लीया ॥ ६ ॥ राज छोमके चले जंगलमें । जुगतीसें

काउसग्ग कीया ॥ खडे धीर गंभीर प्रभुने । तीन लोकमें नाम किया ॥ उण्ण कालकी बडी धूपमें । नीरंजन निरंकार खडा । कमठासुरने कीया कडाका । नभमंडल वादल चडा ॥ ७ ॥ उहि दिनको कमठासुरनें । पीछला दावा जगवाया ॥ मेघमालिकी सेना लेकर । जलकूं जलदी बुलवाया ॥ बडा कीया घमघोर जोरसें । पवन चलाया मतवाला ॥ कडछ कडड कर हुआ कडाका । चमक वीजका अजुवाला ॥ ८ ॥ मूशल धारा मेघ वरसता । गगन गाजता चौताला । सात खूडकी बडी ऊडीमें । प्रभु खडा हे मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी । नाथ निरंजन धीर बडा । पराजय नहि होय जिनूंका । ऐसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासन डोल्यो । हूवा घंटका अवाजा । अवधि ज्ञानसें इंद्रें देख्या । धाउ धाउ धरणी राजा । धरणीधर जलदीसें आया । पदमावतीकूं संग लीया । पदमावतीने लीये शीशपर । शेषनागनें छत्र कीया ॥ १० ॥ कोड उपाय कीये कमठनें । कुछ इलाज नही चलता । तरने वाला साहेब उनकूं । छलने वाला क्या करता । जीते श्री जिनराज हारके । कमठ हाथ दो जोड खडा । धरणीधर साहेवके आगे । अरजी करता खडा खडा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव पुरकूं पहोंचे । पार्श्वनाथ शुभ मत वाला । लगी ज्योतमें ज्योत दीपकी । तपे तेजका अजुवाला । वीशनगर में पार्श्वनाथका । देवल बनाया तेताला । बडे देवलमें इंदर सोहे । घंट वाजता चौताला ॥ १२ ॥ बडी जुगतसें सिंघासन कर । कोट बनाया देवलका । जगो जगोपर शिखर चढाया । दरवाजा शुभ केवलका । भामंडलके आगें सोभता । मूल गंभारा आरसका । पीछें पचीश देरीयां सोभित । सिरे काम सिंघासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके ऊपर सोहे । सहस फणा प्रभु पारशका । चौमुखकी चतुराइ बनी हे । बहु काम हे सारसका । अढारसै पेंसठ सवाई । मुहूर्त्त फागुणमाश भला । सुदि त्रीजकूं तखतें बेठे । जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरे दर्शनकुं आया । जगत गुरू जिनराज जगतमें । बडी तेरी अकल माया । धर्म चंद जोडता सवाइने । बडा सामी वात्सल्य कीया । सकल संघकी आज्ञा लेकर । बडा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदनें देवचं

दने । खेम चंदने खूब कीया । पारसनाथकुं तखत बेठाके । जगो जगो पर नाम कीया । कीर्त्ति विजय गुरु राजकुं प्रणमुं । पायगुरुका राज वमा । गुलाबचंद साहेबके आगे । जिनशासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गा वत चंग रंगसें । ग्यान ध्यानसें खमा खमा ॥ हाथ जोड कर अरजी करता । पारसनाथजी तुंही वमा ॥ वमा काम तेरे हे साहेब । मुखसें नहिं कहणें आता॥ शिव रमणीकुं वरी हे जिनजी। न्नविजनकूं सुखके दाता॥१७॥

॥ ※ ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजै । मैं ऊं दाशी चरनोकी । तोरन आइ फेर मत जाउ। तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ तुम ब्याहन आए । लारे सेना माधवकी ॥ ढप्पन कोम यादव मिल आये। ए अवसर नही फिरनेंकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रथ फेरी गिरिवरकुं सिधाये। हमकुं ढांमी नव न्नवकी । मेरे सामरे श्याम सलूने । मैं इहां नही अव रेनेंकी ॥ नेम०॥ ३ ॥ सुण जिनजी मैं तोकुं कहुं ऊं। देखुं सोन्ना गिरिवरकी । मात पिता बंधव सव ढोडी । जाशुं संगें यादवकी ॥ नेम०॥ ॥ ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल । वात सुनो पियु मुऊ घरकी । हमकुं ढोड चले निरधारी । अब हे प्रीतम सरणेकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम कहे तुम सुनो हो राजुल । विषया रस है विष सरिखी। ये संसार असार निरंतर । कर करनी ए तरनेंकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ पियुजी पासें संयम लीनो । जिनसें कारज शरनेंकी ॥ तपश्या करीनें उत्तम कीनी । ए न्नव पार ऊतरनेंकी नेम० ॥ ७ ॥ पीयुजी पहेलां राजुल नारी । पोहोतां सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए । येही शोन्नाहे जिनकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ चतुर कुशल ये कही लावनी । जिनसें काया ऊध्दरनेंकी । अरिहंत ध्यान धरे दिलमांहे । फिर फेरा नहिं फिरनेंकी ॥ नेम०॥ ए ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनदाशजी कृत १० घन लावण्यां ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार । सफल करले अपनों अवतार । ध्यान तुम मनमें धरो नर नार । खाण डःखकी ए हे संसार । करो प्रन्नु ख्याल अन्नी जिनदाश । रखो प्रन्नु मुऊ चरणोंके पाश ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २ सरक जा कुमति नार काली । तेरी संगतसें गई लाली ॥

सोवत समताकी में टाली । आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत भव वीत गया खाली । वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदाश मांगे । सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३ शीश नित नमुं नाभिनंदन । चरण पर चढे केशर चंदन । करत सब इंद्रादिक वंदन । कटत हे कर्मोंका फंदन । साध्यो तें शिवपुर को साधन । सर्व जीवनकुं सुख कंदन । जिनंद गुण जिनदाश गावे । सीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बोलत हैया मेरा हसकर । चढावुं चंदन चूवा घसकर । पैठा में धर्मोमें धसकर । पाप दल दूर गया खसकर । चेतन भवा खमा कमर कसकर । हटाया कर्मोंका लसकर । श्री जिनराज जहाज खासा । शर ण जिनदाश लीया वासा ॥ ४ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समझ मन मेरा मतवाला । तुझें नहिं कोइ हटकणवाला । वस्या तेरे हइये कुगुरु काला । दिया तें सुरगतिकुं ताला । फेरतो ममता की माला । वालतो भगवंत पर भाला । दयासें दे दिया ताला । देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती । मुझे वरदायक हे सरसती । करी निर्मल निर्ग्रंथ मती । पूठ पर खमे जागता जती । मुझे बलवंत भई सो ल सती । मिटी मेरी डुर्गतकी सब गती । ऐसा घन जिनदाश गावे । अ चल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ विकट घट डुरगतका भारी । नीर ज्यां भरती कुमति नारी । बरछी उन नैनोंकी महारी । मुव्या केइ कामी संसारी । इनोंकी हो रही खूआरी । जीत्या कोइ सत्य धरमधारी । प्रभु तुम परमारथ पाया । शरण अब जिनदाश आया ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चेत नर निगोदका वासी । कराई जगमें तें हांसी । कुमतिकी पमी गले फांसी । सुमतिसुं रखी हे उदासी । कुमतिकी वसी सेज खासी । मान रखो ममताकुं मासी । हियो खोल अरिहंतकों परखो । करो जिनदा श आप सरखो ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ ए अफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सुगुरुओंकी नहिं मानी ॥

कीया नहिं गुरु निग्रंथ ग्यानी । कानसें लगी कुमति रानी । जगतमें उतर गया पानी । गति तेरी डुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश बाजे । सुधारोगे तुमही काजें ॥ ए ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १० सफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सूत्रोंकी तें मानी । कि या निज गुरु निग्रंथग्यानी । कानसें लगी सुमति रानी । जगतमें अधिक चढ्यो पानी । गति तेरी सुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश बाजे । सुधारोगे तुमही काजें १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चल चेतन अब उठ कर अपनें । जिनमंदिर जइये । कीसी की नूंमी ना कहीयेंरे । कीसीकी नुंमी ना कहीयें ॥ चल० ॥ (ए आंक णी) । चरन जिनवरजी का नेटो । चर० ॥ नवनव संचित पाप करम स ब । तन मनका मेटो । सुकृत कीजें । महाराज । सुकृत० ॥ जिनवरका गु ण नज लीजै । समकित अमृत रस पीजै । लान जिननक्तीको लहीयें रे ॥ लान० ॥ चल० ॥ १ ॥ करो मत मुखसें वमाई ॥ करो० ॥ तजतामस तन म नकी सुमतिसें घर रेनां नाई । रीतसें बोलो । मेरी जान । रीत० । आतम स मतामें तोलो । मत नरम पारका खोलो । मौन कर तन मनसें रहियें रे ॥ मौन० । चल० ॥ २ ॥ जोवन दिन चार तणो संगीरे ॥ जोवन० ॥ अं त समय चेनन उठ चाले । काया पडी नंगी । प्रीत सब तूटी । मेरी जा न ॥ प्रीत० ॥ आकुखाकी खरची खूटी । चेतनसें काया रूठी । सुख डुः ख आप किया सहियें रे । सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहता उदा सी रे । जग० । परख्या में जिनराज हरो । मेरी डुरगतकी फासी । तजो सब धंदा । मेरी जान । तजो० । जिनवर मुख पूनम चंदा । जिनदास तुमा रा बंदा । मेरे एक जिन दर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुम नजो जिनेश्वर देव । मुगति पद पाईरे ॥ मुगति० ॥ अब अचल अखंडित ज्योत । सदा सुखदाईरे (ए आंकणी). में रुल्यो चोराशी मांहे । नूल्योमें नरम । नूल्यो० ॥ महारे उदये अनंतां डुःख । बांध्यां जब कर्म ॥ में कदियक हूवो रंक । फिरयो तजि शरम ॥ फिरयो० ॥ अरु कदियक

करे जिनदाश अलप गुण गाया । अब बुरा कुगुरु उपदेश । सुणो मत भाया ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्री नेमिनाथ लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दे गया दगा दिलदार । सुनो मेरी माई । सु० । लग रही नेम दरशनकी । सरस असनाई (ए आंकणी)। अब अजब अलीजो नेम । मेरे शिर गाजे ॥ मेरे० ॥ जादवकी देखी जान । जगत सब लाजे । एसो नेम नवल एकवींद । अनोखो गाजे । अनो० । सुर नर सब गावे गीत । गगनमें गाजे । अब दोम दोम सब डुनीयां । देखन आई । दे०। ल०दे०॥ १ ॥ अब चढ्या नेम तोरनकुं आनंद दिल धर कर । आनं० । सज आये सुरंगो साज । कीलोला कर कर । में पायो परमानंद हरख हियो भर कर । हरख० ॥ ले गयो पति नेमनाथ । मेरो चित्त हर कर । सखि सुख संपत आंगनमें । आज चल आई ॥ आ० ल०॥ दे०॥२॥ अब इण अवसरमें सुरत । श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ पशुअनकी सुनी पोकार । दया दिल जागी । जिन लही परवतकी वाट । तृष्णाकुं त्यागी ॥ तृष्णा० ॥ शिवरमणीके शिरविंद । बन्यो वैरागी । अब महेल चढी राजलकुं । खमी बट काई ॥ खमी० ॥ दे० ॥ ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें । टिके नहीं पानी ॥ टिके० ॥ जिन गुण गाया नहीं जाय । अलप जिंदगानी । अब कठण जीव डुरगतिको । बन्यो में दानी ॥ ब०॥ जिनदाश करो भव पार । दया दिल आनी । अब शरण सतीके बेठ । लावनी गाई । ला० ल०॥ दे० ॥४॥

॥ ※ ॥ श्री मगशी पार्श्वनाथकी लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मुलक बिच मगशी पारशका । बाज रह्या मंका । मुगतिगढ जीत लीया बंका रे । मुग० । मुलक० (ए आंकणी) करम दल बलकूं क्षय कीया रे । कर० । मुगति महेलमें केलि करे । अनुभव अमृत पीया । शाशता जीया । महाराज । शा० । कल्याणक कारज कीया । अमरा पुर पदवी लीया । कमठ जशका कर गये फंका रे । क०। मुल०॥ १ ॥ प्रभु पारश भजले भाईरे । प्रभु० । भाव भरमका मेट जोत । तेरी जगमें सवाई । टेककूं टालो । महाराज ॥ टेक० ॥ चंचल चित्तसें मत वालो । गुमान गरवकुं गालो । गरवसें धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ मुलक० ॥

॥ २ ॥ मेरे शुभ भाग्य उदय आया रे ॥ मेरे० ॥ इण पंचम आरामां हे प्रभु । मगशी पारश पाया । पापसें भरता । महाराज ॥ पाप०॥ भवि जीव ध्यान दिल धरता । श्रावक नित समरण करता । मरण दुःख मिट्या मेरे अंगका रे ॥ मरण० ॥ मुलक० ॥ ३ ॥ महीमा मगशीकी अब जानी रे मही ० ॥ लही उपम मेरी आंख विलोया । परब विना पानी । में जिनवर जाच्या । महाराज ॥ में जिन० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या । मगशी पारश हे साचा । करो मत मनमें कोइ शंका रे ॥ करो० मुलक० ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ केशरीयानाथ लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुणजो वातां राव सदा शिव । मत चढ जानां धूलेवा ॥ गढपति उनका बडा अटंका । मत छेडो तुम उन देवा । (ए आंकणी) सकतावत चंडावत बोले । हमही नोकर उनहीका । दीडुपति वाकूं हाथ जोडे । तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सवेही । सुर नर वांकू ध्यावत हे । इंद्र चंद्र सुनि दर्शन आवे । मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ॥ २ ॥ गया राज उनहीसें आवे । निर्धनियाकूं धन देवे । वांझ खिलावे सुंदर लडका । सदा सुखी जेप्रभु सेवे ॥ सु० ॥ ३ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जइनें । रोग निवारे भव भवका । भूप भुजंगम दूरि करी नदीयां । चोरन बंधन अरि दवका ॥ सु० ॥ ४ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा वाजे । दशो दिशामें हे डंका । भाउ तांतीया नही भलाइ । मत वतलावो गढ वंका ॥ सु० ॥ ५ ॥ रानाजीके कुमरावकी । मानत नांही ये वातां । थांरा किया थेहीज पावो । में नही आवुं थां सांथां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मूंछ मरोडे चढे अभिमानें । जहेर भऱ्या हे निजरूमे । ऋषभदेव हे साहेब सचा । देख तमासा फजरूमें ॥ सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद । वडे सितांबर तुम देवा । फोज विखरगइ घर घर घोडा । लजारखो तुम देवा सु० ॥ ८ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती । काया मंगलकी । सासो स्वास समरलें साहिब । आउ घटे दिलकी ॥ १ ॥ (खवर नही है जुगमें पलकी । सुकृत करणा हो सोकरलै । कुण जाणें कलकी) (ख०) तारा

मंगल रवि चंद्रमा । सबही चलाचलकी । दिवस च्यारका चमत्कार है । वीजलियां झलकी ॥ (ख०) ॥ २ ॥ यो जग है सुपनैं की माया । उस बूंद जलकी । विनस जावतां वेरन लागै । डुनियां जाय खलकी ॥ (ख०) ॥ ३ ॥ हंसाया देहीमें जब लग । खुसीहै मङ्गल की । हंसा गंम चल्या जब देही । मिटिया जंगलकी ॥(ख०)॥४॥ मन मावत तन चंचल हस्ती मस्ती है बलकी । सदगुरु अंकुश दीया आनकै । वातां झई सलकी॥(ख०) ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई। सब जन मुतलबकी । काया माया स बे कारमी । ए तेरै कब की ॥ (ख०) ॥ ६ ॥ कूड़ कपट कर माया जो मी । कर वातां बलकी । बोझकी गांठ बंधी शिर तेरै । कैसें होय हलकी (ख०) ॥ ७ ॥ देवधरम साहिवको समरण । ए वातां थलकी । राग द्वेष ऊपजै नही जिनकुं । वीनती अखैमलकी ॥ (ख०) ॥ ८ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन भांति तिरणां । हम दुखी फिरत संसार चतुर गति । सो तुमसैं निरना ॥ (अ०) ॥ १ ॥ घोरा घोर नरक के भीतर । नाना दुख भरना । मारन ताडन छेदन भेदन । और देह धरनां ॥ (अ०) ॥ २ ॥ कबहूक तिरयंच योनि पायकै । गलै पास परना । क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता । मार मारकरना ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ देव विभूति पायकै सुंदर । देख देख झुरना । जब माला मुर झावण लागी। सोच किये मरना ॥ (अ०) ॥ ४ ॥ मनुषा जनम पायकै भटक्यो । कहूं नांही थिरनां । साहिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥(अ०) ॥ ५ ॥ इति लावणी सं० ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मुक्ति जाणेंकी झिगरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) तीर्थंकर महावीरनैं । कौशल गणधर साज । कानून प्ररूप्या है दया । सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । अशल खुलासा सार । जिणपुरषां धारण किया । पोहचा मुगति मझार ॥ २ चवदै सहस साधु हुवा । आर्या छत्तीस हजार । लाखां श्रावक श्रावका । पाया भव जल पार ॥ ३ ॥ (चाल हीर रंझैका ख्यालकी) ॥※॥ मेरी अदालतप्रभुजी कीजियै । जिन सासन नायक मुगती जाणेंकी झिगरी

दीजियै (जि०टेर) खुद चेतन मुदई वना है। आठुं करम मुदाला। दावा र स्ता मुगति मारगका। धोखा देजाय टालाजी (जि०)॥१॥तप कागद इष्टांम। लिया। तलवाणां खिमा विचारी। सिझाय ध्यान मजमुंन वनाकर। अर जी आन गुजारी जी (जि०) ॥ २ ॥ में जाता था मुगति मारगमें। क रमुंनें आघेरा। धोखा दे कर राह भुलाया। लुंट लिया सव मेराजी (जि०) ॥ ३ ॥ वोहत खराव किया करमुंनें। चौरासीकै मांही। दुक्ख अनंता पा या मेंनें। अंत पार कछु नांही जी (जि०) ॥ ४ ॥ सच्चे मिले वकील कानूनी। पंच महाव्रत धारी। सुत्र देख मसोदा कीना। तवमें अरजी म्हा री जी (जि०) ॥ ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्तीए। आठुं गवा वुलावो। शील असेसर वम्मा चौधरी। उसकुं पूछ मंगावोजी (जि०) ॥ ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी। हुवा सफीना जारी। हाजर आवो जुवाव लिखा वो। लावो सावूती सारीजी (जि०) ॥ ७ ॥ आठुं मुदाले हाजर आए। मोह मुगत्यार वुलाये। च्यार कषायरु आठे मदकुं। साथ गवाई में लाए जी (जि०) ॥ ८ ॥ (टेर मुदालैकी) ॥ जिनसासन नायक। कूठा दा वा है चेतनजीवका। (जि०) हमनें नहीं भखाया इसकूं। ए हमरै घर आया। करजा लेकर हमसें खाया। ऐसा फरेव मचायाजी (जि०) ॥ ९ ॥ विश्रयभोग में रमिया चेतन। घाटा नफा न जाना। करजदार जव लारै लागा। तव लागा पिस्तानाजी (जि० कू०) ॥१०॥ हाजर खम्मे गवाह हमारै। पूछियै हालजु सारा। विनां लियां करजा चेतनसें। कैसें करें किनाराजी (जि० कू०) ॥ ११ ॥ (टेर) ॥ चेतन कहै सतावी मांही। सुन शाशन सिरदार। इमानदार है गवा हमारै। जांणें सव संसार जी। (जि० मे०) ॥ १२ ॥ में चेतन अनाथ प्रभूजी। करम फरेवी भारी। जीव अनंते राह चलतकुं। लूंट चौरासीमें मारा जी (जि०) ॥ १३ ॥ वम्मे २ पम्मित इणलुंटे। ऐसा दम वतलाया। धरम कहा उर पाप कराया। ऐसा करज चढायाजी (जि० मे०) हिंसा मांही धरम वताया। तपस्या सेती डिगाया। इंद्रिय सुखमें मगन करीनें। कूठा जाल फैलाया जी (जि० मे०) ॥ १५ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रभूजी। अपील होन न पावै। हक्क रसी चेतनकी होवै। जनम मरण मिट जावैजी (जि०)। ग्यांन दर्शन

करी मुनसफी । दोनुंकुं समझाया । चेतनकी डिगरी करदीनी । करमुंका करज वताया जी (जि०) ॥ १७ ॥ असल करज जोथा कर्मोंका । चेत नसेती दिखाया । सुध संजम जद करी जमानत । आगैका सूध मिटाया जी (जि०) ॥ १८ ॥ आश्रव छोड संवरकों धारो । तपस्यासें चितलावो । जलदी करज अदाकर चेतन । सीधा मुगतिकों जावो जी (जि० मे०) ॥ १९ ॥ सुध संजम जदकरी जमानत । चेतन डिगरी पाई । फागुणसुद दशमी दिन मंगल । सन् उगणीसै अठाई जी (जि० मे०) ॥२०॥ इति ॥

॥ ☀ ॥ अथ अनुन्नव पद मिगरी लि० ॥ ☀ ॥

॥ ☀ ॥ साहव अदालतपर बैठ । श्रीपारश प्रवीण अैन उत्तम चला ए है । शील है सिरदार और दान है दरोगा जाकै दयारूपी वारण सत्त श्रावगण पर आए है । ग्यान है चपरासी ताको लग्योहै मोहोसल ताकी मालजामनीमें श्री जिनवरजी लिखाये है । रेसकी रसुम और कमीसन लगे कर्मनकुं मोहकों म्याद इस तार लटकाए है ॥१॥ बैठके लिखेगा जव जी वकी जुबानबंदी तवके कुछ स्वाल जवाब सत्तगुरनें वताए है । छेम्म का रसाजी पायो पकम्यो अरिहंतजीको अनुन्नवपद पायवैकी मिगरी करा य लाए है । अव तो दरकास मैनें करी है तुमारे पास साहव जिनराज अरज मेरी सुणलीजीयै ॥ अष्टकर्म आठुं जाम करत है कारसाजी साह व वुलाय इसकुं पिसे मान कीजीयै ॥ २ ॥ में तो हुं गरीव मेरी करैगा उकीली कोन । पारश प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै । हारुं तो हाजर हजूर हीमें रह्यां करुं । जीतूं तो लगाय जुगल चरनमें लीजीयै । अवतो फरीयाद नाथ करीहै तुमारेपास मेरी दाद दीजीयै तो रावरी वम्हाई है । मुनसबकी बात और मामलत अदालतकी अबतोमें अफिलमान अरजी लगाई है । झूठ मूठ कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जा की अैन अधिकाई है । मेरे ही पांच लोक मोहीकों कुछावत है ॥ जातेमें ग्वाही श्री जिनराजकी लिखाई है । छेम्म कारसाजी पायो पकड्यो अ रिहंत जीको अनुन्नव पद पायवैकी मिगरी कराय लाए है ॥ ☀ ॥ इति अनुन्नवपद पाणेंकी मिगरी संपूर्णम् ॥ ☀ ॥ ॥ ☀ ॥

॥ ※ ॥ उपदेशरूप लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुकृतको बात तेरे हाथ । रतीनां रहीरे ॥ रतीनां० ॥ पुदगलमें मान्यो सुख । कलपना कहीरे ॥ सुकृत० ॥ जुग मांहे जैन निज सार । संघातें आवे ॥ संघा० ॥ इसकुं तज कर कयुं वेठो । विषय गुण गावे । अमृतकुं अलगो ढोल । विसन विषखावे ॥ विसन० ॥ सुगतिको मारग मेट । उत्टमें जावे । थारी तुच्छ जिंदगानी माहे । विकल बुध्धि भईरे ॥ विकल० ॥ पुदगल० ॥ १ ॥ थारे धन दोलत भंमार भरया है मोती ॥ भरया० ॥ शत्रु सज्जन सब बने । जगत होय गोती । कोई मसले तेल फुलेल । धोवे कोइ धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ आवे अबला । तेरो मुख जोती । ऐसी संपत एक छिनमांहि । सरब क्षय भईरे ॥ सरब० ॥ पुदगल० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब खजाना खोया ॥ ख० ॥ निशिदिन सुखभर सुंदरिकी । सेजमें सोया । सजिया सोल सणगार । नारिसें मोया ॥ नार० ॥ तें अंतर घटका मेल । रती नहीं धोया । या नरक निगोदकी वाट । पकम कर लहीरे ॥ पकम० ॥ पुदग० ॥ ३ ॥ मन मातो आठ मदमांहि । गरवसें बोले ॥ गर० ॥ मैं सुख संपतको नाथ । मेरी कुण तोले । डर्बल करता पोकार । पलक नहीं खोले ॥ पल० ॥ आकर होय रहा हजूर । चमर शिर ढोलै । अब अवसर आयो हाथ । चेत तुं सहीरे ॥ चेत० ॥ पुदगल० ॥ ४ ॥ कायासें कीयो लाम । वनाई चंगी ॥ वना० ॥ पल भर पर वास्यो पुन्य । तणो तिहां भंगी । पकमी पर भवकी वाट होय कुण संगी ॥ होय० ॥ तेरो हंस गयो आकाश । काया पमी नंगी । जिनदास कहे करमोसुं । जोर तेरो नहीरे ॥ जोर० ॥ पुदगल में मान्यो० ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुम तजकर राजुलनार तज्या सब घररे ॥ तज्या० ॥ में नमुं नेमके पाय । गया गिरिवररे । में प्रीत पीयाकी कर कर पछे लागी॥ पछे०॥ तुम त्याग चले वन खंम । हुवे वैरागी । अब राजुल सरखी सती । भावसें त्यागी ॥ भाव०॥ थारे अंतर घटमें ज्योत । ग्यानकी जागी । यु रोती राजुल नार नयण भर भररे ॥ नय० ॥ में नमुं ॥ १ ॥ में अरज करूं कर जोम ।

करो मन परसन ॥ करो० ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार । देजो मोहे दरशन । अवसुख सखीयनका देख लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो० ॥ मेरे आयो नयणमें नीर । लग्यो नित्य वरसन । मेरे नेम मिलनकी आश । मिलुं किम कररे ॥ मिलुं० ॥ मैं० ॥ २ ॥ में नहिं कीनी तकसीर । चले क्युं रूठे ॥ चले० ॥ मेरे घरमे कुटुंब परिवार । चार दिश चूटे । मैं जो रहुं घरके मांहे । जोवन सब लूंटे ॥ जो० ॥ मैं चलुं पियाके साथ । प्रीत क्युं तूटे । मेरे नेम विना नहिं ओर । जगतमें वररे ॥ जग० ॥ मैं०॥३॥ तुम तारी राजुल नार । मुगतिमें मेली ॥ मुग० ॥ पीछे नेम गये निरवाण करम सब ठेली । मे नित ऊगे परभात । नमुं पद पहली ॥ न० ॥ मेरे नेम विना नहि और । जगतमें वेली । युं अरज करे जिनदाश । सुणो जिनवररे ॥ सुणो० ॥ मैं० ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥卐॥

॥ 卐 ॥ पुनः ॥ 卐 ॥

॥ 卐 ॥ आप समझका घर नहीं पाया । दूजैकुं क्या समझावे । वंका फिरे जिनदाश जगतमें । हीयो हाथमें नहीं आवे (ए आंकणी) दरस सवाद चाहनकी चित्तमें । चानक अधिकी आय लगे । इंद्रीका परवसमे पडियो । ग्यानकला कहो कैसें जगे । तृष्णानें जग लूंट लीयो हे । कपट करी परधनकुं ठगे । खाय खाय लोही मांस वधास्यो । प्राणी किस विध चले पगे । विषय विपतकी करे चूंथणी । चरचासुं चित्त नहीं लावे॥ वं० आ०॥१॥ अपने अवगुनकुं नहीं देखे । दूजाका अवगुण भाखे । हिंसाही में हूओ हजूरी । दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन । अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रागधरा मैं । सरणें जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्याई । धन मीसें इनकुं ध्यावे ॥वं०आ०॥२॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा । अजान होयसो मोहेपूजे । नहीं गाममें रुंख अंबको । एरंड अंब सरिखो सूजे । पारख नहीं हे हीये ग्यानकी । गुण अवगुनकुं कुण बुझै । गाडर देख कहे मुज घरमें । कामधेनु इतनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा । अवगुन किम गाया जावै ॥ आप० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो । लोभ मांहें लपट्यो रहतो । गरथ गुमानी गमको गरजी । पीड पारकी नहीं सैतो । भगति नहीं गुरु देव धर

मकी । कठण वचन मुखसें केतो । अंतर आंट न खुले हीयाकी । पूठ परम पदकुं देतो । स्वांग सजी जिनदाश जैनको । माल मुलकको ठग खावे ॥ वंको०॥ आप० ॥ ४ ॥ ३९ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ सुगुरूकी लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नमुं नमुं में गुरु निग्रंथकुं । वेजिन मुद्राधारी हे । पुद्गल उपर प्रेम न करता । मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गरव गालकर गुपति गोपवे । गत निग्रंथकी न्यारी हे । कनक कामिनीके नहिंजोगी । वेपूरा ब्रह्मचारीहे ॥ न० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी । उनके वे हित कारी हे । करम काटकर केवल पावे । ज्ञान गरथ गुण भारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासें सुमति सेवी । निज आतमकुं तारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वीनवे । उनके चरण वलिहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ कुगुरुकी लावणी ॥※॥

॥ ※ ॥ तजुं तजुं में उन कुगुरुकुं । कनक कामिनी धारी हे । ज्ञान ध्यानकी वात न जानें । अष्ट करमसें भारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपालें वभूत लपेटी । शिरपर जटा वधारी हे । कान फाडकर मुद्रा पहेरता उसके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग लेई कर जीव विणासे । वे मद्य मांश आहारी हे । कूडा पंथी जगतकुं करता । मुखसें कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कहुं ओगुण कुगुरूका कव लग । साध नही संसारी हे । आप डुवे औरनकुं डुवावे । दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ त० ॥ ४ ॥ समकित श्रद्धा जैन धर्मकी । नहिं कुगुरुकों प्यारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वीनवे । कुगुरु संग खुवारी हे ॥ त०॥ ५ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री नवपद लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जगतमें नव पद जयकारी । पूजतां रोग टले भारी (ए आंकणी) प्रथम पद तीर्थ पती राजे । दोष अष्टादशकुं त्याजे । आठ प्रातीहारज छाजे । जगत प्रभु गुण वारे साजे ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल जीतके । सकल सिद्ध ते थाय । सिद्ध अनंत भजो बीजे पद । एक समय शिव जाय । प्रगट भयो निज स्वरुप भारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ सूरि प

दमें गौतम केशी । उपमा चंद्र सूरज जैशी । उगास्यो राजा परदेशी । एक भवमांहें शिव लेशी ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक नमुं । श्रुत धारी उवझाय । सब साधु पंचम पदें । धन धन्नो मुनिराय । वखाण्यो वीर प्रभु भारी ॥ जगत० ॥ ३॥ ॥ द्रव्य खटकी श्रद्धा आवे । सम संवेगादिक पावे । बिना ए ज्ञान नहिं किरिया । जैन दरशनसें सब तरिया ॥ दोहा ॥ ज्ञान पदारथ सातमें । पदमें आतमराम । रमतां रम्य अध्यातमें । निज पद साधे काम । देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी । चक्रधर छेमी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे । मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ दोहा ॥ करम निकाचित कापवा । तपकुठार करध्याय । क्षमायुत नवमुं पद धरे । कर्म मूल कट जाय । भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ पू० ज० ॥ ४ ॥ श्री सिद्धचक्र भजो भाई । अ चामल तप बिधिसें थाई । पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो । भाव श्रीपाल परें करजो ॥ दोहा ॥ संवत उगणीस सत्तरा समें । जेपुर श्री जिन पाश । चईत्र धवल पूनम दिनें । सकल फली मुझ आश । बाल कहे नव पद छबी प्यारी ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ॥६१ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ श्री केशरीयानाथ लावणी ॥ ❋ ॥

॥❋॥ (दूहा) आदिकरन आदिम जगत । आदि जिणंद जिनराज ॥
धूलेवनाथ जाचो धणी । वरनुं श्री महाराज ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ कास्यप गोत ईखाग वंशमें । मरुदेवा जननी जायो । नाभि नरेसर वंश उजालन । आदि धर्म जश प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल । मंदिर गिरपै न्हवरायो । इसो ऋषभ निधि प्रगट कल्प तरू । सुरनर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ खम्ग देशमें नगर धुलेवें । जास ददामा घुरता हें । जाकी महिमा अपरंपारा । कविजन कीर्त्ति करता हे ॥ ३ ॥ आदौ मूरत काल असंख्यकी । पूजी सुरगण असुरिंदा । सुरपति नरपति वंदित पद जुग । वलि पूजित सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख अग्यार हजार पंचाशी । वरश पांचशे पंचासा । इतनें बरश पर लंका गढमें । पूजित रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन । ओ मूरत पूजन ल्याए । नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयर उजेणी छह

राए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया । सुंदरि मयणां धरमनकी । बाप करम अरु आप करमकी । भई लडाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आप करमके ऊपर नृपनें । कुष्टी वरपें परणाई । मयणां चिंतें कांई नवाई । करम लखी सो बनि आई ॥ ८ ॥ इकदिन जिन पूजन गुरुवंदन । आई श्री जिन मंदिरपें । वंदन पूजन करके इकचित । ध्यान धरे मन कंदरपें ॥९॥ इति॥

॥ ※ ॥ मोतिदाम छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तुंहि अरिहंत तुंहि भगवंत । तुंहि जिनराज तुंहि जगसंत । तुंहि जगनाथ तुंहि प्रतिपाल । तुंहि मनमोहन तुंहि दयाल ॥ १ ॥ तुंहि भवभंजन भाव सरूप । तुंहि अरि गंजन रंजन भूप । तुंहि अविनासी तुंहि वीतराग । तुंहि महाराज तुंहि वमभाग ॥२॥ तुंहि गुणधाम तुंहि विसराम । तुंहि नवनिधि तुंहि वडनाम । तुंहि अघनाश तुंहि अविनाश । तुंहि मतिवंत तुंहि मतिवास ॥ ३ ॥ तुंहि गुन केवल रुप अनंत । तुंहि जगतारन तारन संत । तुंहि जगध्येय तुंहि जगध्यान । तुंहि चिद्रूप तुंहि जग भान ॥ ४ ॥ तुंहि मम तात तुंहि मम मात । तुंहि मम भ्रात तुंहि मम गात तुंहि सरणागत राखण हार । तुंहि डुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति । कंत कुष्टसें नहीं मरते ॥ पूरव करमके लिखित लेख जे । किसके टारे नहीं टरते ॥१॥ पण तुऊ शासन जगत देलना । जगत ढंढेरा वाजत हे । आप कर्म अरु जैन धर्मके । फल पाईये लाजत हे ॥२॥ यो डुख मोसें सह्यो जात नहीं । आदिनाथ जग रखपाला । करुना करके रोग निवारन । गुन कीजें जग प्रतिपाला ॥३॥ यक्ष प्रसन्न होय फल बीजोरो । हाथ तणो फल तव दीनो । मयणा तव उल्लास भई मन । चिंते सव कारज सीनो ॥ ४ ॥ तोदिन नमण नीर तनु फरसे कुष्ट रोग सव नासत हे । कामदेव अरु अमर समोवम । नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल । प्रगट प्रवल हे जश तेरो । आसू चैत्र मासमें महिमा । देश देशमें प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागम देश वडोद नगरमें । जगपर प्रभु करुना कीनी । कितने वरश लग महीमां महिमा । अविचल भूतल रिद्ध दीनी ॥७॥ दिल्लीपर तुरकान भयो तव ।

पादशाह लडवा आयो । कूत नूत पथ्थरकी मूरत । जड मुल्लांसें उखरायो ॥ ८ ॥ बहुत दिनां लग कीवी लराइ । थाको यों वाचा बोले । देव हिंदको बमो जागतो । युं बोलत फिर फिर मोले ॥ ए ॥ सुनो बात काजी मुल्लां तुम । एक बातसें नासेंगा । गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई । गोवधसें ये नासैगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब निजरें । देख शके क्यों प्रतिपाला । करन जुद्धजव नये महाबल । शस्त्र ऊमो ऊम विकराला ॥ ११ ॥

॥※॥ (दूहा) महा युद्ध करनें लगे । घाव चोराशी अंग ॥

॥ करी मलोखा गामली । आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ ※ ॥ लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गाम धुलेवे वंश जालमें । गुप्त रहे हें प्रनु धरती । गाय एक कोमी बनीयनकी । आई वांहां चरती चरती ॥ १ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिरपर । सांऊ समें फिर नहीं दूऊे । रीस करी तव गोपालन पर । गौपाल थरथर धूजे । डुजे दिन गौ लारें आयो । लह्यो नेद कह्यो वनीयनपें । शेठ आय जब नजरें देख्यो । चकित नयो हें तन मन पें ॥ ३ ॥ मध्य रातमें सुपनो दीनो । कृषन्न नाथकी मूरत है । बहिर निकासो करो लापशी । नीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी । मत काढे तुं नव दिनमें । कियो शेठनें हुकुम प्रमाणें । आये संघ बहुव दिनमे ॥ ५ ॥ कै उपवासी कै व्रतधारी । कै आलुआणे पाउंचले । कई लोक कुं डुःकर बाधा । कव प्रनुको दरसन मिले ॥ ६ ॥ युं सब लोकां दरस तरसकी । कहे लोक मूरत काढो । लाओ लाओ महाराजकी मूरत । संघ सबे लीनो आमो ॥ ७ ॥ जबर दस्तसें दिवस सातमें । लापशी बाहिर तवकीने । अंस अंसन्नर व्रण रहा ए । संघ लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो । संघे मिल देवल कीनो । मध्य विराजे कृषन्न तखतपर । कलियुगमें यौं जश लीनो ॥ ए ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) संवत अढार त्रेसठमें । नाउ सदा शिवराय ॥

॥ कियो धंगानो डुष्टनें । नाखुं बरन बनाय ॥ १ ॥

॥ ※ ॥ मोतिदाम छंद॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदाशिवराय चिंते मन एह । लुंटे बहुधाम जमीपर जेह । नि

ह्लां पति नाथ धुलेव कहाय । लखो लग द्रव्य भंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां अव लूंटण गाम धुलेव । ग्रह्रं सव माल जई तत खेव । आयो निज फोज लेइ दलगाज । तोपां दोयसाथ लीया वक्र साज ॥२॥ कंपु दोय लार ली ए फीरंगाण । छंगां भर साथ लीये कोकवाण । तवां वक्र लोक कहे महा राज । नही इह कारन रुत्य अकाज ॥३॥ ए तोवह जाजल देव कहाय । रहे नहीं लाज तिहांरिय कांय । तवां फिर वोले सदाशिव भूप । ग्रह्रं सव मा ल अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट करूर । कीयो नजराण ह नाथ हजूर । रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण । भयो मन चकित मान गि लाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत भंमारी बुलाय । मीठे वच वोल सवे ललचाय लई संग आय मुकाम मऊार । कियो तव कूच लई सव लार ॥ ६ ॥ करे तव गाम पुकार पुकार । भंमारि सवेय पुकार पुकार । करो अव वा हर नाथ दयाल । गयो किहां आज गरीव निवाज । चढो अव वाहर रा खण लाज ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उण समें कोक शेठको । वहाण तारण काज । गये अधि ष्ठायक नाथजी । भेरुं गए वहां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज प्रथ्वीनाथजी । सहेर धूलेव मऊार । किओ अकारज डुष्टनें । शीघ्र चलो जन तार ॥२॥ आए तुरत महाराजजी । करवा जन संभाल । दो घोमे दोनुं चढे । भेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ भिन्न कोप आपें कियो । दश दिशि फोज हजार मार मार चो तरफतें । भई लडाई त्यार ॥ ४ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कुकू कुकू कुकू वहे कोक वाणं । सणणं सणणं तीर तरकस्स वाणं । धुवाके धमाकें वहे नाल गोला । जिसा कर्कसा जम्मरा नयण फोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्रा घाव लागे । किते मारथें कंपते दूर भागे । किते दंतपें तिरण लेवें वराका । किते थरथरे त्रास होवें निराका ॥ २ ॥ किते रसुल्ला इलल्ला पुकारे । किते दीन होके खुदापें संभारे । किते नाथपें केशरां खुन माने । किते नायकुं जागती जोत जाने ॥ ३ ॥ सदाशीवने घाव लग्गो अटारे । पुनी भाउ जशवंत दोनुं संहारे । वमो को

प जानी सबे फोज भाजी। हुइ केशरी नाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥ सदाशीवने आखडी अटक लीनो। सवापांचशैं रुकमरो खुंन दीनो। इसो नाथ धूलेवरो मर्द गाजी। सदा केशरा नाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥ ॥※॥

॥※॥(दूहा) या विध कलियुग जगजना। तास्या कै जिनराज ॥
दीप विजय कविराजकुं। महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥※॥ तुंहि नवनिद्ध तुंहि अष्टसिद्ध। तुंहि मन वंछित वंछित रिद्ध तुंहि सिरदार तुंहि किरतार। तुंहि सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंहि कामकुंभ तुंहि कामधेन। तुंहि सुरवृक्ष तुंहि ममसेन। तुंहि दक्षणावर्त्त दायक देव। तुंहि विसराम तुंहि वम्हसेव ॥२॥ तुंहि मम प्राण आधार जरूर। तुंहि मम इच्छित दायक नूर। तुंहि मम भूप तुंहि पतशाह। तुंहि मम रिद्ध भंडार अगाह ॥३॥ तुंहि मम मंत्र तुंहि मम यंत्र। तुंहि मम सत्य तुंहि मन तंत्र। तुंहि गछनायक तुंहि श्री पूज्य। तुंहि मम पुज्य तुंहि जग पूज्य ॥४॥

॥※॥ लावणी चाल ॥※॥

॥※॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके। देश देश नृप आवत हे। केशरमें गरकाव रहेंतें। केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशावर फिरे दुहाई नाथनकी। हिंदु मुसल वड राणा हाजर। पूरै इच्छित सव मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमैं। रण रावल दुःख दूर हरे। एकचित्त ध्यानें जे नित समरे। अखय खजाना अन्नर भरे ॥३॥ धिधि मप धिधिमप धमपधमप मप। ताल पखावज राजतहें। गम्फगड दौ गम्फगड दौ गडगड। धोंधों नोवत वाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर। भीमसिंहके राजनमें। एह लावणी खूव वनाई। सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वर्षे। फागुण सुदि तेरस दिवशै। मंगलकेदिन दीप विजयकुं। दरशन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥ ॥※॥

॥※॥ कलश छप्पय छंद ॥※॥

॥※॥ समवसरन जग शरन। तीन लोक कलिमल हरन। धुनि वरसत जल धरन। भरन पोष पावन करन। जुगल धर्म नीती हरन। सव करम ओघ घन जरन। मोह मल्ल अरि दरन। सुकनु वरन शुद्ध चरन इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन। जगत बिरुद तारन तरन। दीप विजय कविरा

ज वहाडुर । ऋषभ नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
॥ ※ ॥ ऋषभ नाथ महाराज। सवे डुःखदालिद्र भंजन । ऋषभ नाथ महाराज । सवे भूप मनरंजन। ऋषभ नाथ प्रथ्विनाथ । समस्यों वाहर धायें ऋषभनाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें। दीप विजय कविराज वहाडुर खलक मुलक हाजर रहे । कलि जुग जयो देवतुं। सुरनर सवकीरत कहे॥२॥

॥ ※ ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेमकी जान वनी भारी । देखनकुं आये नर नारी (ए आंकणी) अनंता घोडा ओर हाथी । मनखरी गिनती नही आती । ऊंठ पर धजा जो फररातीं । धमकसें धिरती थररातीं ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका लाम्ला । नेम उनुंका नाम। राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर गाम । प्रसन भई नगरी सव सारी । नेमकी जान वनी भारी ॥ १ ॥ कसुंवल वाघा अति भारी । काने कुंम्ल छविहे न्यारी । किलंगी तुररा सुख कारी । माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंम्ल ऊग मगे । शीश मुगट ऊलकार । कोमि भानुंकी करुं उपमा । शोभा अधिक अपार वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ छूट रही उनकी छराई । व्याहमें आये वडे भाई। ऊरोखे राजुलदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखकें। मनमें करे विचार । वहोत जीव करि एकठा । वामो भरयो अपार । करी सव भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये । पशु जीव सवही कुरलाए । नेमजी वचन फरमाये । पशु जीव कायेकूं लाये ॥ दोहा ॥ याको भोजन होवसी । जान वासते एह । एह वचन सुनी नेमजी। थर थर कांपे देह । भावसें चढगये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आई । हाथ जव पकड्यो छिनमांही । कहां तुं जावे मेरी जाई । और वर हेरुं मुकताई ॥ दोहा ॥ मैरे तोवर अकही । होगया नेम कुमार । ओर भुवनमें वर नही । कोटी करो विचार । दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम०॥५॥ साहेल्यां सवही समऊावे। हिये राजुलके नही आवे । जगत सव ऊूठो दरसावे । मेरेमननेम कुमर भावे। दोहा ॥ तोड्या कंकण दोरमा । तोड्या नवसर हार। काजल टीकी पान सोपारी। त्याग्यो सव सणगार। सहेल्यां सवही विलखाणी॥ नेम० ॥ ६ ॥

तज्या सब सोले सिणगारा । आभूषण रत्नजडित सारा । लगे मोहे सबही सुख खारा । छेम कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकुं । तज तां न लागी वार । विजोग कर चली आपशुं । जाय चढी गिरनार । फू रती छेडी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकी आई । त्याग जब कीनो छिनमांई । नेमि जिन गिरनारे जाई । पशुके वंधन छुडवाई ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें । लीनो संजम दान । नवलराम करी ला वनी । उपन्यो केवल ज्ञान । जिनौंकी किरिया वुध्दि सारी ॥ नेम० ॥ ८ ॥

॥ ※ ॥ श्री पार्श्वजिन आरती, लावणी चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी । जन्म वनारशी है जिनका । घननं घननं वाजे घंट घण । ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तव । स्याम घटा विजुरी चमका । गिरुओ गाजजल मूशलधारा । धरम्म धरडका जन शंका ॥ आ०॥२॥ थररर आ सन कंपे सुरको । तव धरणीधर चित्त चमका । फण विस्तार हजार किये तव । ऊमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ०॥ ३ ॥ जव पदमावति सव सि णगारे । ताथेइ नाचतले फिरका । धमक धमक धौं मादल वाजत । घननं घुग्घुरके घरका ॥ आ०॥ ४ ॥ धीधीधी कट नोवत वाजै । धौंधौं कट डुंद भि धौंका । याविधगीत संगीत वजन सव । गांधर्व गान करे जिनका॥आ० ॥ ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सव । मफ मोंमों करते मंका । भेरण फेर णके ऊणकारे । ऊागम्दी ऊालरके ऊंका ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुरनरइंद्र सव जे जे करते । जीवत सफल भया जिनका । अमृत उदय तिणवेर भयो सुख । को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आदि जिनेशर पारणो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ (टेक) घम्मा एकसो आठ शेलडी । रस भरियाछे नीका । उलट भाव श्रेयांस वहिरावै । मांम्दिवी आ बूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंदुभी वाज रहीहे । सोनइयांरी वरखा । वारे मासशुं कियो पारणो । गइ भूख सव तिरखारे ॥ आ० ॥ २ ॥ ऋध्दि सिध्दि कारज मनो कामना । घर घर मंग लाचार । डुनियां हरख वधामणा सिरै । आखात्रीज तिवाररे ॥ आ० ॥

॥ ३ ॥ संकट काटो विघन निवारो । राखो हमारी लाज । वे कर जोरी नान्हू कहिता । क्रषभ देव महाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ श्री नेमिनाथ चौमासो ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ गई घटा गगनमें कारी । राजुलकुं विरह दुःख जारी ॥ रा० ॥ टेक ॥ चौमासा लग्या रस जीना । अलि आषाढ रंग महीनां । चारुं तरफसें बादल पीना । वीजुलीनें चमकनां कीना । दिल होत धमकता सीना । मैं अबला सखी पति हीना (उमाना) सररररर चलत समीर । थर रररर करत सरीर । मररररर मरत समीर । अलि कैसी करुं तदबीर बुरी तकदीर । पीया विन प्यारी । राजुलकुं विरह दुःख जारी ॥ रा० ॥ १ ॥ श्रावनमें श्याम घनघोर । जरजोर बोलते मोर । दादुर मिल करते दोर । पिक पिक पपैया सोर । झम लग्यो बुंद झकजोर । विच्च चमके दामिनी कोर । (उमावणी) खडमममम रव घन माला । तडममडड ज ल परनाला । अडडडमम नाला खाला । मैं दुःखी हुइ वेहाल हीयेमें । साल हुई जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना । बादलमैं धनु ष रंगीना । जंगलमें नदी स्वरझीणा । ज्युं वाजे मनोहर वीणा । अवए सें कहो क्या जीना । प्रीतमनें मुझे दुःखदीना । (उडाना) युं विलपत मुख मुरझाई । सखीयन मिल दोड जगाई । युं विलखत वचन सुनाई । सखी देखो पीयाकी रीत । तोमके प्रीत गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर । याडु चंद जये वे पीर । उठ चली नेमके तीर । काटनकुं कर्म जं जीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर । व्रत संजम समकित हीर । (उडाना) शिव राजुल नेम सिधाये । इंद्रादिक जश गुण गाये । जविजन मिल शीश नमा ये । मुनि कहे कपूराचंद प्रेमसें छंद । जाऊं वलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥

॥ ✻ ॥ श्री अजितनाथ महाराजकी लावणी ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ श्री अजितनाथ महाराज । गरीबनिवाज । जरूर जिनवरजी । सेवक शिरनामें तनें उचारे अरजी । कर माफी मारावांक । रमलीयो रांक । अनंता जवमें ॥१॥ आव्यो हुं ताराशरण । वली दुःख दवमें । क्रोधादिक धुकता चार । खरेखर खार । लग्या मुजकेमे ॥१॥ वली पापी ह्वारो नाथ । ठेक ठेमे । आ मुजरो मुज जगवान । करुं गुणगान । ध्यानमां धरजी

॥ २ ॥ सेवक०॥ १ ॥ में पूरण कर्या छे पाप । सुणजो आप । कह्युं कर जोडी ॥ २ ॥ मुज भुंभामां भगवान । भूल नहीं थोमी । जीवहिंसा अ परंपार । करी किरतार । हवेशुं करवुं ॥ २ ॥ फूठू वङ्क वोली । साधनेंशुं हरवूं । तुज खोलामां मुज शीश । जाण जगदीश । गमें ते करजी ॥२॥ सेवक० ॥२॥ में किया वङ्कत कुकर्म । धरी नहीं धर्म पूर्ण हुं पापी ॥२॥ अवलो थई तारी आण । मेंज उत्थापी । में मूरख निंदा घणी । मुनि पर तणी । करी हरखायो ॥ २ ॥ परदारा देखी लवाम । हुं ललचायो । किंकर कहे केशवलाल । आणीने व्हाल । दुःख तुं हरजी ॥ २ ॥ सेवक०॥३॥

॥ ॥ श्रीऋषभ जिनस्तवन ॥ ॥

॥ ॥ पोढो पोढोजी ऋषभ विहारे । निद्रावश नयण तिहारे ॥पो०॥ प्रभुआलस अंग झलशाई । पूछे मरुदेवा माई ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रभु नंदा सुमंगलाराणी । उन रुच रुच सेज संभारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रभु नवलसुं नेह सनेहा । मनवंछित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हित कर गावे । मनवंछित फल पावे ॥ पो० ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे । कर जोडी शीश नमावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ दीवालीको स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ धन धन मंगल एरे सकल दिन । पूजी प्रभातें चालीरे ॥ ॥ आज ह्मारे दीवाली अजुवाली ॥१॥ गावो गीत वधावो गुरुने । मोतीडे थाल पूरावो । चार चार आगे चतुर सुहागण । चरण कमल चित्त सारीरे ॥ आज०॥ २ ॥ धन धुङ धन तेरश दिवशै । काले काली चउदश । पाप हणीजे पोसो कीजै । कर्म मेलो सर्व टालीरे ॥ आज ह्मारे० ॥३॥ अमावस की परव दीवाली । फरती फाक झमाली । घर घर तो दीवडीया झलके रात दीसे अजुवालीरे ॥ आज ह्मारे० ॥ ४ ॥ अमावसकी पिछली राते । आठ करम सङ्क टाली । श्री महावीर निरवाणे पोहोता । अजरामर सुखकारीरे ॥ आजह्मारे० ५ ॥ पडिवा नें वली जुहार पटोलां । ए रत रूडी सारी ॥ गुरु गौतमनां चरण पखाली । रीझ पामी रढीयालीरे ॥ आज ह्मारे० ॥ ६ ॥ बीजें तो वली भावड बीज । बेनरडी अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होय रे पनोता । एवे एवे हरखे गाई रे ॥ आज ह्मारे० ७॥

हरखविजय पंमित इम बोले । करोसङ्ग सेव सुंहाली ॥ रूपविजय पंमित गुणगावै । जय जय वाजे ताली रे ॥ आज ह्मारे० ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः दीपमाला स्तवन ॥ ※ ॥

॥※॥ ह्मारे दीवाली रे थई आज । प्रज्नु मुख जोवाने ॥ सखा सखारे से वकनां काज । नवङुख खोवाने ॥ टेक ॥ महावीर स्वामी मुगतें पहोता ने । गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धनदीवाली ह्मारे । वीर प्रज्नु निरवाण ॥ जिनमुख० ॥ ह्मारे दीवाली० ॥ १ ॥ चारित्र पाल्या नि र्मलांने । टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एवा प्रज्नुनें वांदिये तो । नतारे नव पार ॥ जिन० ॥ मा० ॥ २ ॥ वाकुला वोहोराा वीरजी ने । तारी चंदन वाला रे ॥ केवल लई प्रज्नु मुकतें पोहोता । पाम्या नवनो पार ॥ जि न०॥ मा० ३ ॥ एवा मुनिनें वांदीयेंजे । पंचमज्ञानने धरतारे । समवसरण देई देशना रे । प्रज्नु तारया नरने नार ॥ जिन० मा०॥ ४ ॥ चौवीशमा जि नेसरु ने । मुकति तणा दातार रे ॥ कर जोमी कवियण एमनणे । मारो न वनो फेरो टाल ॥ जिनमुख० ॥ मा० ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आत्मलघुता स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यो जिनदास कूठो रे कूठो ॥ येने लेइ लाकडी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहिं नरतो । ग्यान हीयाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे न हिंवडतां । जैसो लकडको ठुंठो ॥ यो० ॥ १ ॥ नणवा गुणवाका गुण नहिं आया । कोरोही पकडयो पूठो ॥ गपोडा सुण कर लोक पूजता । ए अलग मालको ठूठो ॥ यो०॥ २ ॥ पंडित गुरुकी सोवत पाई । चेत्यो नहिं हीयाको फूटो । साचा नरको संग न करतो । कूड कपट नहिं छूटो । यो० ॥ ३ ॥ कूठोहि बोले कूठोहि चाले । कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके । जिनदाश सबसूं रूठो ॥ यो० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मंगल स्तवन राग सामेरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कीजे मंगल चार । आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजे० ॥ (आंकणी)॥ पहेलुं मंगल प्रज्नुजीकुं पूजूं । घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ १ ॥ बीजुं मंगल अगर नखेवुं । कंठे ठवुं फुल हार ॥ आज० ॥ २ ॥

त्रीजुं मंगल आरती उतारुं । घंट बजावुं रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथुं मंगल प्रभु गुण गावुं । नाचूं ते थैथैकार ॥ आज० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । चरण कमल जाउं वार ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीनेमनाथजीको नवरसो प्रारंभः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ढाल पहली, गर्वाकी देशीमें॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो । शामलियाजी । शिवादेवी मात मलार । वर पातलियाजी । एक दिन रमवा नीसर्या ॥ शा० ॥ आव्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावियुं ॥ शा० ॥ तेणे मोल्या आकाशें इंद्र ॥ व० ॥ चक्र उपामीनें फेरव्युं ॥ शा० ॥ गदा लीधी करमांहे ॥ व० ॥ २ ॥ नेमें शंख वजामीयो ॥ शा० ॥ तेणें मोल्या महिना मेर ॥ व० ॥ शेष नाग तिहां सल सल्या ॥ शा० ॥ खल भलीया सायर सर्वे ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर टूंक तूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर कंपे लोक ॥ व० ॥ कोइक वैरी ऊपनो ॥ शा० ॥ इम करता कृष्ण विचार ॥ व० ॥ ४ ॥ आव्या तिहां उंतावला ॥ शा० ॥ जिहां छे नेम कुमार ॥ व० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शा० ॥ ताहरुं वल जोवानी खंत ॥ व० ५ ॥

॥ ※ ॥ ढाल बीजी ॥ ※ ॥

॥ ※ कृष्णें कर लंवावीयो ॥ हसी बोलोजी । तुमें वालो नेम कुमार । अंतर खोलोजी । कमलनाल परें वालीयो ॥ हसी० ॥ कृण नवि लागी वार ॥ अंत० ॥ १ ॥ नेमें कर लंवावीयो ॥ हसी० ॥ कृष्णें नवि वाल्यो जाय ॥ अंत० ॥ हाथें कृष्ण हिंचोलिया ॥ हसी० ॥ तिहां हरि मन ऊखो थाय ॥ अं० ॥ २ ॥ नारी जो परणावीयें ॥ ह० ॥ तो वल ओछेहं थाय ॥ अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समझाय ॥ अं० ॥ ३ ॥ नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउ सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें मिल्या ॥ ह० ॥ ताहरुं अतुली वलअरिहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरधारी । सत्यभामा जांबुवती नार । मुकुटपर ऊं वारी । चंद्रावती शिणगारियें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली

-बत्तीश हजार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी । मने करवाना वङ्क कोड । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर० ॥ जेम अलूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर० ॥ तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण०॥ नारी विना नर हाली जिसा ॥ देवर०. वली वांढा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ ठेकरवाद न कीजीयें ॥ देव०. ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर०॥. हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल चोथी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेम कहे तमे सांभलो ॥ मोरी भाभी जी । ए किशो काम विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रमवभिया गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो रालव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गयो शीता नार ॥ में० ॥ नारी विषनी कूंपली ॥ मो०॥ मायानी मोहन वेल ॥ में० ॥ २ ॥ छपन्न कोमि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते वारो वार ॥ में०॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी०॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में०॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ ढाल पांचमी ॥ ※

॥ ※ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कुमार । मकरो दवाजाजी । एकवीश तीर्थंकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्वे परण्या नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥ तेनुं मूल्य केणें नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमांहेथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम सरिखा श्रीभगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर० ॥ मांड्यो वीवाह मंमाण ॥ मकरो० ॥ उग्रसेन घर बेटमी ॥ वर० ॥ ते नामें राजुल नार ॥ म करो० ॥ ३ ॥ लीधुं लगन उतावलुं ॥ वर० ॥ आव्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाडू लापशी ॥ वर० ॥ वली सेवइयो कंसार ॥ म करो० ॥ ४ ॥ आठी जलेबी पातली ॥ वर० ॥ वली मांहे घेवरनो भाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ वली खाजाने मगदल ॥ म करो० ॥ ५ ॥ लाखण साई रेशमी ॥ वर० ॥ मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ म करो० ॥ कूर रांध्यो कमोदनो ॥ वर० ॥ मांहे मसूरनी दाल । सवल दीवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजुर नें टोपरा ॥

वर० ॥ वली चारोली ने द्राख ॥ सबल०॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर०॥ वली पानना बीमा चार ॥ सबल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥ वर० ॥ वज्ज कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥ वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सबल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥ वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सबल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥ इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ ए ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते नें निरखे राजुल नार ॥ सबल० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ वर० ॥ ए जोवा सरखी जान ॥ सबल० ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल छठी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार ॥ हइडुं हींसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ मलार ॥ हइडुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखडी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूल केणे नवि थाय ॥ हइडुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला कृष्णागरु केश ॥ हइडुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ ए दीसे जी ॥ सखि शामलीयो भरतार ॥ हइडुं० ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल सातमी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुध लीधी जी । विचारे श्रीवीतराग । तेणें दया कीधीजी । जो परणुं तो पशु मरें ॥ शु०॥ मूकी अनुकंपा जाल ॥ तेणें०॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाल ॥ तेणें०॥ पशुबंधन सर्व तोमीया ॥ शु० ॥ ते सर्व गया वनमांहे ॥ तेणें० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शु० ॥ प्रजु दीधुं वरसीदान ॥ तेणें० ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ ढाल आठमी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राजिमती धरणी ढल्या ॥ मोरा वहालाजी ॥ अवगुण विण दीनानाथ ॥ हाथ नझाल्यो जी ॥ आंगण आवी पाठ वल्या ॥ मोरा० क्षत्री कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमें पशु तणी करुणा करी ॥ मोरा० ॥ तमने माणसनी नहिं मेर ॥ हाथ० ॥ आठ जव थया एकठा ॥ मोरा० ॥ कीधा तुमशुं रंग रोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे जवें

तमें नेमजी ॥ मोरा० मुफने कां मेली जाउ ॥ हाथ० ॥ मारी आशा अं वर जेवमी ॥ मोरा० ॥ तमें केम उपामी कंत ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूमा कलंक चढाविया ॥ मोरा० ॥ भारव्या अण दीठां आल ॥ हाथ० ॥ में पंखी घाल्या पांजरे ॥ मोरा० ॥ वली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ० ॥ ॥ ४ ॥ में साधुने संतापीया । मोरा० । में माय विछोडया वाल ॥ हाथ०॥ में कीमी दर उवाम्रियां ॥ मोरा० ॥ मरमना वोल्या वोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥ अणगल पाणी में भस्या ॥ मोरा० ॥ में गुरुनें दीधी गाल ॥ हाथ० ॥ में कठिण करम कीधा हशे ॥ मोरा० ॥ ते आवी लागा पाप ॥ हाथ० ॥ ॥६॥ इम करतां राजुल आविया ॥ मोरा०॥ श्रीनेमीशरनी पास ॥ हाथ० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरा० ॥ राजुल लियो संयम भार ॥ हाथ०॥✱॥

॥ ✱ ॥ ढाल नवमी ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ श्रीनेम राजीमती एकठा ॥ साहेलम्रीयां॥ जइ चढिया श्रीगिर नार । जिनगुण वेलम्रियां । पूठेथी राजुल आवियां ॥ सा० ॥ संजम वती राजकुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आज्ञा लेइ राजुल एकली ॥ सा० ॥ गिरनार उपर गुफामांहे ॥ जिन० ॥ वाटें जातां वर्षा थई ॥ सा० ॥ भीजाणां रा जुलनांचीर ॥ जि० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जइ शूकव्या ॥ सा० ॥ लागुं ते काचुं नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोहामणुं ॥ सा० ॥ राणी राजीम तीनुं शरीर ॥ जिन० ॥३॥ रहनेमि तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखि राजिमती निचोवे चीर ॥ जिन० ॥ प्रगट थई ते वोलीयो ॥ सा० ॥ भाभी म करो मन उदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो भलुं थयुं ॥ सा० ॥ आप णे करशुं भोग विलास ॥ जि०॥ उत्तम कुलनो ऊपनो ॥ सा०॥ तुं वोल वि चारी वोल ॥ जिन० ॥ ५ ॥ संयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ वली कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमी तव वोलियो ॥ सा० ॥ माता रा जीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमीसर कनें मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी ली धो संयम भार ॥ जि० ॥ नेम राजुल केवल लई ॥ सा० ॥ पोहोता मु क्ति मफार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयु पहेली मुगतें गयी ॥ सा० ॥ राजीम ती तेणि वार ॥ जि०॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ सा०॥ प्रभु उतारो भवपार ॥ जिन० ॥ ८ ॥ ✱ ॥ इति नवरसो सं० ॥ ✱ ॥ ॥ ✱ ॥

॥ ※ ॥ अथ दान शील तप भाव चौ ढालियो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी । पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शील तप भावना । बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसस्या । राजगृही उद्यान । समवसरण देवें रच्युं । बेठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ बेठीबारे परखदा । सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रभु हुं वडो । मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहुको तुमे । कुंण छे मुझ समान अरिहंत दीक्षा अवसरें । आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं । लीये सहु कोई नाम । दीधांरी देउल चढे । सीझे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणें । कुण करशे मुझ होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी । साढी बारह कोड ॥ ६ ॥ हुं जग सगलुं वश करुं । मुझ मोहोटी छे वात ॥ कुण कुण दानथकी तस्या । ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल पहेली, ललना कीदेशी ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धन सारथवाह साधुने । दीधुं घृतनुं दान । ललना । तीर्थंकर पद में दीयुं । तिणे मुझने अभिमान । ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो । मुझ सरिखुं नहिं कोय ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा । दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामें गाथापति । पडिलाभ्यो अणगार ॥ ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लह्युं । तेतो मुझ उपगार ॥ ललना ॥ दा०॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं । देतो वोहोरी आण ॥ ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो । ते पण मुझ फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ माश खमणने पारणें । पडिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे । दान तणे सुपसाय ॥ ललना ॥ दा०॥ ४ ॥ आप्या उडदना बाकुला । उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो । दानतणां फल देख । ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणें । श्री श्रेयांस कुमार । ललना । सेलडीरस वहरावीयो । पाम्यो भवनो पार । ललना ॥ दा० ७ ॥ चंदनबाला बाकुला । पडिलाभ्या महावीर । ललना । पंचदिव्य परगट थया । सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडुं । शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति पणें । प्रगट्यो पुण्यपडूर । ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजभवें शशलो राखियो । करुणा

कीधी सार ॥ ललना ॥ श्रेणिकनें घर अवतर्यो । अंगज मेघ कुमार ॥दा० ॥ १०॥ एम अनेक में उद्धर्या । कहतां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी । मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ दोहा ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ शील कहे सुण दान तुं । किस्यो करे अहंकार । आडंबर आठे पहोर । याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय चलि ताहरे । भोग करम संसार । जिनवर कर नीचा करे । तुझने पडो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व मकर रे दान तुं । मुझ पुठे सहु कोय । चाकर चाले आगले । तो शुं राजा होय ॥३॥ जिन मंदिर सोना तणुं । नवुं निपावे कोय । सोवन कोडी दान दिये । शीयल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलें संकट सवि टलें । शीलें जश सोभाग ॥ शीलें सुर सानिध करे । शीयल वमो वैराग ॥ ५ ॥ शीलें सर्प न आभडे । शीलें शीतल आग । शीलें अरि करी केशरी । भय जाये सवि भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भयथकी । में उगे माव्या अनेक । नाम कहुं हवे तेहना । सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारियें ए देशी ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ शील कहे जग हुं वमो । मुझ वात सुणो अति मीठीरे ॥ लालच लावे लोकनें । में दान तणी वात दीठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें । वली विरति नही पण कांइरे । ते नारद में सीझव्या । मुझ जुवो ए अधिकाइरे ॥ शी० ॥ २ ॥ बांहे पहेर्या वेरखा । शंखराजायें दूषण दीधोरे । काप्यो हाथ कलावती । ते में नवपल्लव कीधोरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ रावण घर शीता रही । तो रामचंद्रें घर आणीरे । शीतानुं कलंक उतारीयुं । में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडवा । वली चालणीयें काढ्युं नीरोरे । सतीय सुभद्रा जश थयो । में तस कीधी भीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांडियो । राणी अभयायें दूषण दाख्योरे । शूली सिंहासन में कीधो । में शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शी० ॥ ६ ॥ शील सनाह मंत्रीसरें । आवतां अरिदल थंभ्योरे । तिहां पण सानिधमें करी । वली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पहिरण चीर प्रगट किया । में अष्ठोत्तरशो वारोरे । पांडव नारी द्रौपदी । में राखी माम

उदारो रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदन बालिका । वली शीलवती दमदंती रे । चेमानी साते सुता । राजिमती सुंदरी कुंती रे ॥ शी० ॥ ए ॥ इत्यादिक में उद्धस्या । नर नारीनां वृंदोरे । समयसुंदर प्रभु वीरजी । पहिले मुफ आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तप बोल्युं उटकी करी, दाननें तुं अवहील ॥ पण मुफ आगल तुं किस्युं । सांभल रे तुं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या । न गमे मीठा नाद । देह तणी शोभा तजी । तुफमां किस्यो सवाद ॥२॥ नारीथकी मरतो रहे । कायर किश्युं वखाण । कूम कपट बहु केलवी । जिम तिम राखे प्राण ॥३॥ को विरलो तुफ आदरे । ठेमी सहु संसार । आप एक तुं भांजतो । बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा । भांजुं भव भय भीम । अरिहंत मुफनें आदरे । वरश उमाशी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरें । मुफ लब्धें मुनि जाय । चैत्य जुहारे शाश्वता । आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोयण लाखना । लघु कुंथु आकार । हय गय रथ पायक तणां । रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुफ कर फरसे उपशमे । कुष्टा दिकना रोग । लब्धि अठावीश ऊपजे । उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में तास्या ते कहुं । सुणजो मन उल्लास । चमत्कार चित्त पामशो । देशो मुफ शाबास ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दृढप्रहार अति पापीयो । हत्या कीधी चार हो । सुंदर । ते पण तिण भव उद्धस्यो । मूंक्यो मुक्तिमफार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखुं जगको नही । तप करे कर्मनुं सूमहो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दोहिलुं । तपमां नहीको कूम हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ २॥ सात माणस नित मारतो । करतो पाप अघोर हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमालीमें उद्धस्यो । ठेद्यां कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥३॥ नंदीषेणनें में कियो । स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो ॥ सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेउरी । सुख भोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर॥ तप० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो वर्णो । हरिकेशी चंडाल हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोमी सेवा करे । ते में कीधी च्याल हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ४ ॥

विष्णुकुमर लब्धें कियुं । लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणें । ए मुऊ शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या । वांद्या जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रतिबूऊव्या तेणें मुऊ अधिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सहस अणगारमां । श्री धन्नो अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो । ए पण मुऊ अधिकार हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै । डुक्कर कार कहाय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो । मुऊ महिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ए ॥ नंदीषेण वोहोरण गयो । गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन तणी । मैं तसु पूरी आश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलभद्र प्रमुख वऊ । तास्या तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी । पहिलो मुऊ प्रस्तावहो ॥सुंदर तप०॥१

॥ ※ ॥ ढाल चोथी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भाव कहे तप तुं किशुं । ऊब्युं करे कषाय । पूर्व कोमी जो तप तपे । क्षणमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते । तें वाल्यो सवि देश । अशुभ नियाणुं तुं करे । क्षमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वीपाय न ऋषि दूहव्या । सांव प्रद्युम्न सनाह । ते तव क्रोध करी तिहां । कीधो द्वारिका दाह ॥३॥ दान शीयल तप सांभलो । मकरो कूठ गुमान । लोक सऊको साखदे । धर्मं भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो त्रणे । दो व्याकरण ते साख । काम सरे नहि कोइनुं । भाव भणे मैं पाख ॥५॥ रस विण कनक न नीपजे । जल विण तरुअर वृद्धि । रसवति रस न हि लवण विण । तिम मुऊ विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी । देव धर्म गुरु सेव । भाव विना ते सवि वृथा । भाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शील तप जे तुमें । निज निज कह्या दृष्टंत । तिहां जो भावन ऊंत तो । कोइ सिद्धी नवि ऊंत ॥८॥ भाव कहे मैं एकले । तास्या वऊ नर नार । सावधान थइ सांभलो । नाम कऊं निरधार ॥ ए ॥

॥ ※ ॥ ढाल चोथी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कानन मांहे काउसग्ग रह्योरे । प्रसन्नचंद ऋषिराय । ते मैं कीधो केवलीरे । ततक्षण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर । भाव वमो

संसार । ए तो बीजो मुऊ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलोरे । पोहोंचाडुं न्नवपार ॥ सो०॥ २ ॥ (ए आंकणी) वंश उपर चढी खेलतो रे एलापुत्र अपार । केवल ज्ञानीमें कियोरे । प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ न्नूख तृषा खमें अति घणीरे । करतो कूर आहार । केवल महिमा सुर करेरे । कूरगडू अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लान्नथी लोन्न वाधे घणोरे । आएयो मन वैराग । कपिल थयो मुनि केवलीरे । ते मुऊनें सोन्नाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अर्णिका सुत गन्नो धणीरे । क्षीणजंघा बलि जाण । कीधो अंतगम केवलीरे । गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरशें तापस न्नणीरे । दीधी गौतमें दिक्ख । ततक्षण कीधा केवलीरे । जा मुऊ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीलियारे । खंधक सूरिना शिष्य । जनम मरणथी बेमव्यारे । आपे मुऊ आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंम रुद्रने चालतांरे । दीधो दंमप्रहार । नव दीक्षित थयो केवलीरे । ते गुरु पण तेणी वार ॥ सो० ॥ ९ ॥ धन रथ कारक साधुनेंरे । पडिलान्यो उल्लास । मृगलो न्नावना न्नावतोरे । पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध खमावतांरे । मुंक्यो मनथी मान । मृगावतीने में दियुंरे । निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे । देखी पुत्रनी ऋद्ध । मुऊनें मनमांहे धस्योरे । ततक्षण पामी सिद्ध ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगेंरे । चांप्यो चपल तुरंग । दर्डुरनामें देवतारे । तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रन्नुपाय पूजन नीसरीरे । डुर्गला नामें नार । काल धर्म्म विचमां करीरे । पोहोती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोन्ना कारिमीरे । रूप किसुं अन्निमान । न्नरत आरीशा न्नुवनमांरे । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढन्नूति कलानिलोरे । प्रगट्यो न्नरत सरूप नाटक करतां पामियोरे । केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिक्षा दिन काउसग्ग रह्योरे । गजसुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे । सिद्धि गयो शुन्न जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे । सांन्नली पृथिवी चंद । पोतें केवल पामियोरे । सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेकमें उद्धस्यारे । मूंक्या शिवपुर वास । समयसुंदर प्रन्नु वीरजीरे । मुऊने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वीर कहे तुमे सांजलो । दान शीयल तप जाव । निंदा ठे अति पापिणी । धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां । पापे पिंम जराय । वेढ राढ वाधे घणी । डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापियो । जूंमो कोई न दिठ । वलि चंमाल समो कह्यो । निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी । करतो इंद नरिंद । लघुता पामे लोकमां । नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे । निंदा ने अहंकार । आप आपणे ठामें रहो । सज्ञको जलो संसार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको जाव ठे । एकाकी समरत्थ । दान शीयल तप त्रणे जलां । पण जाव विना अयकत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां । अधिको आणी रेख । रजमांही तज काढतां । अधिको जाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण जणी । चारे समान गणंत । चार करी मुख आपणां । चज्ञविध धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल पांचमी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वीर जिणेसर एम जणे रे । वेठी परखदा वार । धर्म करो तुमे प्राणियारे । जिम पामो जव पाररे । धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे । जवियण सांजलो । धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥ (ए आंकणी) । धर्मथकी धन संपजे रे । धर्मथकी सुख होय । धर्मथकी आरति टलेरे । धर्म समो नहिं कोय रे ॥ धर्म०॥ २ ॥ डुर्गति पडतां प्राणीया रे । राखे श्री जिनधर्म । कुटुंब सज्ञको कारिमुंरे । मत जूलो जवि जर्म रे ॥ धर्म०॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हूआरे । वली होशे ठे जेह । ते जिनवरना धर्मथी रे । मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलसें ठासठ समें रे । सांगानेर मफार ॥ पद्मप्रज्ञ सुपसाउलेरे । एह जणयो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे । खरतर गह कुलचंद । युगप्रधान जग परगमो रे । श्री जिनचंद सूरीस रे ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे । विनय वंत जशवंत । आचारिज चढती कला रे । जिन सिंह सूरिमहंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यना रे । सकलचंद तस शिष्य । समयसुंदर

वाचक नणेँ रे। संघ सदा सुजगीस रे॥ धर्म०॥ ८॥ दान शील तप नावना रे। सरस रच्यो संवाद। नणतां गुणतां नावशुं रे। ऋद्धि समृद्धि सुप्रशादो रे॥ धर्म०॥ ए॥ ※॥ इति॥ ॥ ※॥

॥ ※॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥※॥

॥ ※॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा। शत्रुंजय मंमण ऋषन जिणंदा॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी॥ दूशरी आरती मरुदेवी नंदा। जुगला धरम निवार करंदा॥ जय०॥ १॥ तीशरी आरती त्रिनुवन मोहे। रत्न सिंवासन मारा प्रनुजीनें सोहे॥ जय०॥ चोथी आरति नित्य नवी पूजा। देव ऋषन देव अवर न दूजा॥ जय०॥ १॥ पांचमि आरति प्रनुजीनें नावे। प्रनुजीना गुण सेवक इम गावे॥ ज०॥ १॥ ※॥ आरती कीजें प्रनु शांति जिणंदकी। मृगलंछनकी में जाउं वलिहारी। जय जय आरती शांति तुमारी। विश्वसेन अचिराजीको नंदा। शांति जिणंद मुख पूनमचंदा॥ जय०॥ ४॥ आरति कीजें प्रनु नेम जिणंदकी। शंख लंछनकी में जाउं वलिहारी॥ आ०॥ समुद्रविजय शिवा देवीको नंदा। नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ०॥ ५॥ आरति कीजै प्रनु पाश जिणंदकी। फणिंदलंछनकी में जाउं वलि हारी॥ आ०॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा। पाश जिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ०॥ ६॥ आरति कीजै महावीर जिणंदकी। सिंह लंछनकी में जाउं वलिहारी॥ आ०॥ सिद्धारथ त्रिशलाको नंदा। वीरजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ०॥ ७॥ आरति कीजें प्रनु चोवीश जिणंदकी। चोवीश जिणंदकी में जाउं वलिहारी। चरणकमल नित सेवत इंदा। चोवीशे जिणंद मुख पूनम चंदा॥ आ०॥ ८॥ कर जोमी सेवक इम बोले। नहि कोइ महारा प्रनुजीनें तोले॥ आ०॥ ए॥ ॥ ※॥ ॥ ※॥

॥ ※॥ चक्रेश्वरी देवी आरती॥ ※॥

॥ ※॥ जय जय आरति देवी तुमारी। नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी जय०॥ १॥ श्री सिद्धाचलगिरि रखवाली। नाम चक्केसरी जग सौख्याली॥ जय०॥ २॥ सुविहित गछनी शासन देवी। सकल श्री संघने सुःख करेवी॥ जय०॥ ३॥ निलवट टीलडी रत्न बिराजे। काने कुंमल

दोय रवि शशि गजे ॥ जय० ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे। नीलवर्ण स ऋ जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खलके । पाये घूघरमा घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ वाहन गरुम चड्या बऊ प्रेमें । तुऊ गुण पार न पामुं केमें ॥ जय०॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति दीपे । नवसरा हारे जग सऊ जीवें ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे। रोग सोग न्नय दूर निवारे ॥ जय० ॥ ९ ॥ तस घर पुत्र पुत्रादिक गजे । मन वंछित सुख संपद राजे ॥ जय० ॥ १० ॥ देवचंद्र मुनि आरति गावे । जय जय मंगल नित्य वधावे ॥ जय० ॥ ११ ॥

॥ ॐ ॥ बीकानेर, श्री कुंथुजिनचैत्यप्रतिष्ठा स्त०॥ ॐ ॥

॥ ※ ॥ दादा चिरंजीवो० ॥ (इस चालमें) ॥ ※ ॥ आज हर्ष न्नयो त्रिन्नुवन नायक कुंथु जिनेसर न्नेटिया ॥ (आ०) प्रन्नु मस्तक मुगट विराजैछै । रविजिम कुंमलयुग गजै छै । गुणसगला अंग समाजै छै ॥ (आ०) ॥ १ ॥ प्रन्नु चौतीश अतिशय धारक छै । वांणीना गुण विस्तारक छै । सऊ देवेंद्र जिणना पायक छै ॥ (आ०) ॥ २ ॥ प्रन्नु सिंहासण पर सोहैछै । जसु छत्रचामर शिर होवै छै । न्नवियणना मनकुं मोहै छै (आ०)॥ ३ ॥ प्रन्नु ध्यांनें जे होय रंग राता । ते पामें नवनिधि सुखशाता । अवसानें मुक्तिपुरी पाता (आ०) ॥ ४ ॥ प्रन्नु कुगुरु कुदेवकुं में ध्यायो । जब काल अनादी डुखपायो । अबतो तुम शरणें ऊं आयो (आ० ॥ ५ ॥ प्रन्नु विरुध तुह्मारा चित धरनें । न्नव न्नय टालो सुनिजर करनें । जिम जगमें सऊ जश तुम वरनें (आ०) ॥ ६ ॥ संवत् उगणीसै इकतीशै । जेठ उज्वल दशमी मन हीसै । करी चैत्य प्रतिष्टा शुन्न दीसै । (आ०) ॥ ७ ॥ प्रन्नु आज सफल न्नयो दिन मेरो । रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो । सऊ आनंदकारक संघ तेरो (आ०) ॥ ८ ॥ जिन हंस सूरीश्वर महाराजा । थाप्या अतिशय धर जिनराजा । गुरु लक्ष्मीप्रधान सेवणकाजा (आ०) ॥ ९ ॥ ※ ॥

इति विक्रमपुर मध्ये श्री कुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्टा स्तवनम् ॥ ※ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ॐ ॥

॥ ※ ॥ (श्रीशंखेसर पाशजिनेसर) ॥ (इस चालमें) ॥ ※ ॥

श्रीशीतल जिनचंद अनंत गुणाकरू । महा गोप महामाहण जगपति सुख करू । जगगुरु जगदाधार शरण तो रै सदा । रहतां स्वपनमें दुक्ख पांमु नहीं कुं कदा ॥१॥ तूंही चिदानंद देव तूंही मुझ गुरु अछै । तूंही तात तुंही मात तूं ही बंधवअछै । कांम धेनुं चिंतामणि सुरतरु तुं सही । अक्षय सुख दातार तुं ही पायो मही ॥ २ ॥ तुमनांमें अडसिद्ध नवेनिध पाइयै । दिन२ वढतो तेज कीरति जगन्नाइयै । इंद नरिंद सहू बस होय तुम सेव तां । उछव आनंद होय सहूगुण कैवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम भार कहू नही बणसकै ॥ बहुल कर्मकै जोर चित्त नहिं रहसकै । जो आतम गुण ग्यांन प्रगट होय माहरो । तो पांमुं सहु भेद छिनकमें ताहरो । ब्रह्मा बिष्णु महेश जाणुं मुझ सारषा । बीतरागतुं देव करीमें पारखा । दीनदया ल दया निधि शिवसुख दीजियै । मोहन निजगुण पाय एही जश लीजियै इति जगन्मंमण श्रीशीतलजिन स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (श्रीसंखेसर पाश०) (और) नदी जमुनाकै तीर उडै दो य पंखिया । (ह्मांरा लाल उ०) इस चालमें ॥ ※ दशरथ नंदानंद पूरण अतिशय धरू । वदन कमलको तेज देखी छिपै दिन करू । अंग उ पांग लक्षण दीसै सहु दीपता । रूपे सुर नर इंद सहूकुं जीपता ॥ १ ॥ मुगट कुंमल गलहार बाजूबंध सोहता । वक्षस्थल श्रीवछ तिलक मनमो हता । छत्र चामर भामंमल गुण सहु फरसता । अणियाला दोय नेत्र अ मीरस वरसता ॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्य बण्यो बहु भावसें । देखी प्र फुल्लित होय सहू गुण दावसें । अनुपम महमा देखि चित्त अति मोहि यो । आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव्यो बहुकालमें । मोह मिथ्यातकै जोर पड्यो बहुजालमें । पूरण पु न्य हिव जोग प्रभु दरशण मिल्यो । भवभय संकट दुक्ख सहू निश्चै ट ल्यो ॥ ४ ॥ तारण भवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो । तुम गुण अपरंपार हिया में पिछांणियो । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान सेवक वह्नी भणी । मोहन प्रभु सुख कंद मिलै शीतल धणी ॥ ५ ॥ ※ ॥

इति कलकत्तामंमण श्री शीतलनाथजी स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ताल ठुमरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वीरप्रभु तेरी दोस्तीमें । मेरी सुमता सखी मेहरवान भईरे ॥ (वी०) आप नहीं आवे बोधा पठावे । तेरी सुरत कुरवान भईरे ॥ (वी०) ॥१॥ शासन नायक एही अरज है । दीजै दरश बमी वेर भईरे (वी०) आश दाशकी पूरन कीजै । चरण शरण लपटाइ रहीरे (वी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन जीसें मोरी० (इस चालमें) ॥ सदा सहाई शांति जिनेसर भवडुख दूर गमाय (भलांजी भला भव०)। विश्वशेनके कुलमें सुरतरु । अचिराके नंद कहाय (भ०)। जनम भूमि हथणा पुर जाके । मृग लंबन सुख दाय (भ० ॥ १ ॥ स०) ॥ तीश अधिक दश धनुष प्रमाणें । काया कंचन सोभाय (भ०) कुरुवंश कुल लाख वरश स्थित । केवल ग्यांन वरदाय (भ०) ॥ २ ॥ स०) गर्भ थकां प्रभु शांति करी जव । शांतिनाथ पद पाय (भ०) भव भव भमतां शरणें आयो । अवतो करियै सहाय (भ० ॥ ३ ॥ स०) ज्युं परेवा ऊपर तुमनें । करुणा अधिक कराय (भ०) परतिख प्रभुपुर कलि कत्तामें । सब जन बांछित दाय (भ० ॥ ४ ॥ स०) मुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक । संकट दूर पुलाय (भ०॥ ५ ॥ स०) इति कलिकत्ता मंमन श्री शांतिनाथजी स्तवनम् ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभुजीकी महमा अजव वनीजी मारो मनमो लियोरे लोभाय (भलां जी प्रभु मनडोलियोरे लोभाय जी)। विश्वशेन अचराजीके नंदा । शांतिनाथ मन भाय (भ० प्र०) मस्तक मुगट काने युग कुंमल । उर अंगियां रही छाय(भलां० प्र०) ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सोहनी सूरत सब जनकूं सुखदाय । नाम ग्रहण करतां जिनजीको । सुरगण पमै सब पाय (भलां० प्र०) ॥ २ ॥ ईत उपद्रव डुख सब टालै । नित प्रति मंगल थाय (भ०) मुक्तिकमल कहै सुरतरु सरिखा । मनवंछित फल दाय (भलां० प्र० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ काती महोछव बधाई लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रथ चढ जाउ नंदन आवत है । (इस चालमें) ॥ ※ ॥

आज नगरमें हरख वधाई । समवसरण प्रज्नु आवतहै । (आ०) धरम जिनेशर जग परमेशर । शांति सूरत मनज्ञावतहै (आ०) ॥ १ ॥ अनुपम रयण जमी जर अंगियां । मुगट कुंडल चित्त चावत है (आ०) ॥ २ ॥ छत्र चामर ज्ञामंडल दीपत । नवसर हार सुहावत है (आ०) ॥ ३ ॥ सरदशशि मुख कमल विराजत । रविजिम तेज फैलाव है (आ०) ॥४॥ नर नारी सङ्ग अंग आज्नूषण । लुल लुल शीश नमावत हैं (आ०) ॥ ५ ॥ मणि मुगता फल अक्षत श्रीफल । ज्नर ज्नर थाल वधावत है (आ०) ॥ ६ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी गुण गावत है ॥ ७ ॥ सङ्गपुर इंद्र धजा अति दीपत । विविध वाजित्र सुहावत है ॥८॥ इत्यादिक आडंबर बङ्गविध । कहतां पार न आवत है ॥ ए ॥ (आ०) कार्त्तिक सुद पूनम दिन उछव । देख सहू सुख पावत है (आ०) ॥१०॥ धन्यज्नाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन प्रज्नु गुण गावत हैं । (आ०)॥ ११॥ इति कलकत्ता कार्त्तिक महोछव वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी वधाई सं०॥

॥ ※ ॥ अथ शासन नायक बधाई ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (केशरियानें काजको लोक० इस चालमें ॥ ※ ॥

हमारै आज आनंद वधाई। प्रज्नु वीरचरण सुखदाई । (हमारै आज आनंद बधाई) । सिद्धारथ नंदन जगवंदन । त्रिशला मात कहाई । क्षत्री कुंडमें जन्म लियो है । सुर नर आवै धाई (ह० आ०) ॥ १ ॥ कंचन वरण अधिक तन सौज्नित । लंछन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रज्नु कहियै । ज्नवियणकुं सुखदाई (ह० आ०) ॥ २ ॥ केवल पाय सवी सुरसंगै । पावा पुरमें आई । समवसरण विच देशनादेतां । परखदा बार बनाई (ह० आ०) ॥ ३ ॥ ज्नूमंमल विच बङ्गत जीवकुं । ज्नवजल पार लंघाई । चरम चौमाशि पावा पुरि करकै । शिवपुर पंथ सिधाई (ह० आ० ॥ ४ ॥ चौराशी लख जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगै प्रज्नु तुम ज्नेट्या । पातिक दूर पुलाई (ह० आ०) ॥ ५ ॥ तारण तरण ज्नगतिजन वछल । सिवरमणी बरदाई । लक्ष्मी प्रधान सेवै कर जोमी । मोहन

कहे सुखपाई (ह०) ॥ इति वधाई संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रावक तूं ऊठे परन्नात । च्यारघमी ले पिछलीरात । मनमें समरे श्री नवकार । जिम लाभै न्नवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म । कवण हमारे छै कुलकर्म । कवण हमारे छै व्यवसाय । एहवो चिंतवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामायक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हियमै वुद्धि । पमिकमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३॥ काया सगति करे पच्चखाण । सूधी पाले जिनवर आंण । न्नण जे गुण जे तवन सिझाय । जिण ऊंती निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चऊदै नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत न्नावित कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोशाले गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय निरदूषन सूऊतो आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी वच्छल करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । डुखिया हीणा दीना देख । करि जे तास दया सु विसेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटासूं मकरे अन्निमान । गुरुनें मुख लेजे आखमी । धरम न मेल्हे एका घडी ॥ ८ ॥ वारूशुद्ध करे व्यापार । छंग अधिकानों परिहार । मन्नरे केहनी कूमी साप । कूमासोंस कथन मत न्नाप ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहियै बत्तीस अन्नक्ष वावीसें विसवा वीश । ते न्नक्षण न करी जै किमैं । काचा कवला फल मत जिमैं ॥ १० ॥ रात्री न्नोजननो वहु दोष । जाणीनैं करिजे संतोष । साजी साबू लोहनें गुली । मधु धाहडी मवेचे वली ॥ ११ ॥ वलि मकरावे रंगण पास । दोषण घणा कह्या छै तास । पाणी गल जे वे वे वार । अणगल पीवां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन्न । पातक छोडी करिजे पुन्न । छाणां इंधण चूल्है जोय । वावर जे जिम पाप न होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधोए चीर । वारै व्रत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरै करमा दान । पाप तणी पर हरि जे खान । शीश मलेजे अनरथ दंम । मिथ्या मैल मन्नरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीयमैं राख जे । वोल विचारीनें न्नाख जे । उत्तम ठामें खरचे वित्त । परउपगार करे शुन्नचित्त

॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधनैं दही । ऊघामा मतमेले सही । पांचे तिथ मकरे आरंभ । पाले शील तजे मनदंभ ॥ १७ ॥ दिवश्चरम कीजे च उविहार । च्यारे आहार तणौ परिहार । दिवश तणा आलोए पाप । जि म भाजै सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक साचवे । जिनवर च रण शरण भव भवे । च्यारे शरणां दृढ करि रए । सागारी अणशण ले सुए ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा । जाऊं तीर्थे शेत्रुंजै जेहवा । समे त शिखर आबू गिरनार । भेटीस कवऊं धन अवतार ॥ २० ॥ श्राव ककी करनी छै एह । एहथी थाये भवनो छेह । आठे करम पमै पात ला । पापतणा छूटै आमला ॥ २१ ॥ वारू लहीये अमर विमान । अ नुक्रम पावै शिवपुर थान । कहै जिन हर्ष घणें ससनेह । करणी डुख हरणी छै एह ॥ २२ ॥ इति श्रावककै अहनिशि कर्त्तव्य संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुण अर दाशा सुगुण निवाशा । अमचीपूरो प्रभु आशा रा ज (सु०) देख उदाशा अपणा दाशा । दीजै कबुक दिलाशा राज ॥ १ ॥ (सु०) ॥ चाम्री चटकी भव मांहे भटकी । नाच्यौ में विध न टकी राज (सु०) हिव मन हटकी आपसुं अटकी । लागुं प्रभुपाय लटकी राज ॥ २ ॥ (सु०) ॥ ते हम टाली सुगति संभाली । प्रीत अमे हीज पाली राज (सु०) एक हथाली वाजै ताली । वात अचंभा वाली राज ॥ ३ ॥ (सु०) ॥ ते उपगारी पाश तुह्मारी । सेवामें विध सारी राज (सु०) ॥ तत्व विचारी मन सुध धारी । श्रीधमशी सुख कारी राज ॥ ४ ॥ (सु०) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चौपड़ खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग सोरठी) ॥ ※ ॥ अरे माहरा प्राणीया (चतुर नर) चौ पड़ इणविध खेलरे । अशुभ करम मल झारकै (च०) । जाजम कर वैं राग रें । वम्रीय विछायत वैसजो (च०) । जहां नहीं कुमतिको लागरे (अरे०) ॥ १ ॥ दान शील तप भावना (च०) । चोपड एह पसाररे । आठ दाव एक बोल में (च०) आठुंई करम निवाररे ॥ २ ॥ (अरे०) देव गुरु धर्म तीनुं भला (च०) । पाशा एही जाणरे । अवशर कर दा

थे लीया (च०)। नजल लेश्या आणरे ॥ ३ ॥ दरशण ग्यांन चारित्र भला (च०) तीनुंई गुपती विचाररे। नव तत्व सात हिरदे धरो (च०)। एसव शोला साररे ॥ ४ ॥ (अ०) पड्या अठारै रहणदे (च०) पोबारा व्रत धाररे। दस लक्षण दस धरमहै (च०)। हितकर हीयै विचाररे ॥ ५ ॥ (अ०) षट्काया छकमीपमी (च०) हिरदै दया विचाररे। पुन्य नदै पंजडी पमी (च०) पंच महा व्रत धाररे ॥ ६ ॥ (अ०) च्यार तीन काणा पड्या (च०)। सातुंई विसन निवाररे। जे डरगति दायक सही (च०)। बांधे अनंत संसाररे ॥ ७ ॥ (अ०) चिऊं गति बाजी लग रही (च०) डुक्ख सह्या भरपूररे। करमकटै सुख ऊपजै (च०) रतनसागर कहै सूररे ॥ ८ ॥ (अ०) ॥ ※ ॥

इति श्रीचौपड खेलन हित उपदेश सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सेत्रुंज खेल खिलारी। सब समझ देख सेत्रुंजकी घात। लख दोनुं दल अपनैं परायै की जात। काझ विध कर मोह बादस्याहकौं मात। जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार (हे से०)॥१॥ आठुं कर्म पियादे आगै झूकतेही आवै। काम क्रोध गज चलत थंभत नहीं थंभै। लोभ ऊंठ चारुं खूंटकी मरोभ चल ध्यावै। मान मायाके तुरंग चालचपल देखावै। मिथ्या मत सो वजीर वीरबाके ढंग ठाम्हो। बाकै मारबैकौं दल अपनो संभार (हेसे०)॥२॥ तेरो ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठाम्हो। आठौं अंग समकितके पियादे हलकारो। त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को मारो। सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो। क्षमा शील दोय फील राखो दलकै अगामी। परदल कर मारो छिन में संहार (हे से०)। जप तप सत व्रत याकै घेरै चिऊं ओर जब वाकै चलनें की काइ रहै नई ठोर। जब तेरी होगी जीत दूजो हारैगो खेलारी। जब सुजश को तेरै शिर बंधैगो मोड। छाम्हे इंद्र धरणिंद्र तोरै ढोलैंगे चवर। तेरो भजन भजैगो गुण अगाह (हे से०) ॥ ३ ॥

इति सज्जनपुरपांके सेत्रुंज खेलन विचार संपूर्णम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (डंढा) ॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण। अतिशय पूरणगात्र।

मुनि जे ज्ञानी संयमी । ते कहीयै उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमोदना । करतो जीरणसेठ । श्रावक अच्चुय गति लहै । नव ग्रैवेका हेठ ॥ २॥ दश चउमाशा वीर जी । विचरत संयम वास । वेशालापुर आवीया । इग्यारमी चौमाश ॥ ३ ॥ ढाल । एकघर घोमा हाथीया जी (एहनी) ॥ चौमाशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर । वेशालापुर वाहिरै जी। आव्या श्री महावीर ॥ १ ॥ (जगत्गुरु त्रिशला नन्दनजी)। उलैमें उक्या श्री जिनराय । सखीरी चौक पूरावो आय । मेरै भाग अनोपम थाय (ज०) ॥ २ ॥ बलदेवनो छै देहरोजी । तिहां प्रभु कावसग्ग लीध । पच्चक्खाण चउमाशनो जी । स्वामी ए तप कीध (जग०) ॥ ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां रहैजी । पालै श्रावक धर्म । आकारै तिण उलख्या जी । जांणै श्री जिन मर्म ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ आज अछै उपवासीया जी । स्वामी श्री व्रधमान । काल्हि सही प्रभु जीमस्यै जी । सैं हथ देस्युं दान ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवै जी । होसी सफल मुझ आस । पक्ष माश गिणतां थकां जी । पूरी थई चउमाश ॥ (ज०) ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी । जीरण कीध तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । वैठो घरनैं वार ॥ (ज०) ॥ ७ ॥ घरि आवै छै प्राहुणा जी । निहुत्या एकणवार । प्रभुजी काल पधारसी जी । मैं निहुत्या वारंवार ॥ (ज०) ॥ ८ ॥ पीछै करिस्युं पारणो जी । हुं प्रभुनैं पडिलाभ । होय मनोरथ एहवो जी । तो विन वरसै आभ ॥ (ज०) ॥ ९ ॥ अवसर ऊठ्या गोचरी जी । श्रीसिद्धारथ पूत । वेशालापुर आवतां जी । पूरण घरेय पहुत्त ॥ (ज०) ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जांणै नही जी । जंगम तीरथ एह । चेडीनैं कहै एहवो जी । कांइक भिक्षा देह ॥ (ज०) ॥ ११ ॥ चाटूभरनैं बाकुला जी । प्रभुनैं आणी दीध । नीरागी तेहीलीया जी । तिहांप्रभु पारणो कीध ॥ (ज०)॥१२॥ देव वजावै डुंडुभी जी । जय बोलै करजोडि । हेम वृष्टि हुई तिहां जी । साढी वारह कोडि ॥ (ज०) ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुह्मेस्युं दीयो जी । कीयो पारणो वीर । लोकां प्रतें इम कहै जी । मैं वैराई खीर ॥ (ज० ॥ ॥ १४ ॥ राजादिक सहु ए कहै जी । धन धन पूरण सेठ । ऊंची करणी तैं करी जी । अवर सहू तुझ हेठ ॥ (ज०) ॥ १५ ॥ जीरण सेठ सुणै

तवैजी। वाजित्र डुंडुभी नाद। अनन्त कीयो किहां पारणोजी। मनमें थयो विखवाद॥ (ज०)॥ १६॥ डं जगमें अभागीयो जी। मेरै नाया सांम। कल्पवृक्ष किम पामीयै जी। मारू मंमल ठाम॥ (ज०)॥१७॥ जेता मनोरथ में कीया जी। तेता रह्या मनमांहि। निरधन जिम जिम चिंतवैजी। तिम तिम निरफल थाहि॥ (ज०)॥ १८॥ स्वामी तिहां कीयो पारणोजी। कीयो अनेथ विहार। आया पाश संतानीया जी। तिहां मुनि केवल धार॥ (ज०) वेशालापुर राजीया जी। लोकांसुं आणंद। राय प्रश्न पूछै तिहांजी। सुगुरु चरण अरविंद॥ (ज०)॥ २०॥ मेरै नगरमें को अछै जी। जीवपुन्य जशवंत। कहै केवली आजतो जी। जीरण सेठ महंत॥ (ज०)॥ २१॥ राय कहै किण कारणैंजी। जीरण सेठ महंत। दान दीयो जिनवीरनेंजी। पूरण ते जसवंत॥ (ज०)॥ २२॥ रायप्रतें कहै केवलीजी। पूरण दीनो दान। हेमवृष्टि फल तेहनें जी। अवरन कोई प्रमाण (ज०)॥ २३॥ देवलोक तिण वारमैंजी। जीरण बाद्ध्योबंध। विना दान दीना लह्यो जी। उत्तम फल संबंध॥ (ज०)॥ २४॥ घमी एक सुर डुंडुभी जी॥ जो न सुणं तो कान। लहि तो जीरण तो सहीजी॥ केवल अविचल ठाण॥ (ज०)॥ २५॥ राजा जीरणनें दीयोजी। अधिक मान सन्मान। मुख्य नगरमें थापीयोजी। जोवो पुन्यप्रमाण॥ (ज०)॥ २६॥ दान दीयो सुपात्रनें जी। ते निष्फल नवि जाय। पात्रदान अनुमोदतांजी। जीरण जिम फल थाय॥ (ज०)॥ २७॥ इम जाणी अनुदनाजी। दान सुपात्र रसाल। दान देवै सुपात्रनें जी। तेहनें नमें मुनिमाल॥ (ज०)॥ २८॥ इति श्री महावीर स्वामीको पारणो संपूर्णम्॥

॥卐॥ अथ सव पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥卐॥

॥卐॥ वेकरजोमी वीनवूंजी। सुणि स्वामी सुविदीत। कूम कपट मूंकी करीजी। वात कहुं आपवीत॥ १॥ (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार) तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी। मुझनें डुत्तर तार॥ (कृ०)॥ २॥ भवसायर भमतां थकां जी। दीठा दुःख अनन्त। भाग संयोगै भेटीयोजी। भय भंजण भगवंत॥ (कृ०)॥ ३॥ जे डुःख भांजै आपणोंजी। तेहनें कहीयै डुःख। परडुःख भंजण तूं सुण्यो जी। सेवकनें द्यो सुक्ख॥ (कृ०)

आलायण लीधां पखैजी । जीव रुलै संसार । रूपी लक्ष्मणा महासतीजी। एह सुणो अधिकार ॥ (क०) ॥ ५ ॥ दूषम कालै दोहिलोजी । सूधो गुरु संयोग । परमारथ पीछै नहीं जी। गम्मर प्रवाही लोग ॥ (क०)॥६॥ तिण तुझ आगलि आपणाजी । पाप आलोऊं आज । माय बाप आगलि वोलतां जी। वालक केही लाज ॥ (क०)॥ ७ ॥ जिन धम २ सहू कहै जी । थापै अपणी वात । सामाचारी जूई जूई जी । संसय पमुं मिथ्यात ॥ (क०) ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणैं करी जी । वोल्या उत्सुत्र वोल । रतने काग उमावतां जी । हास्यो जनम निटोल ॥ (क०) ॥ ए॥ जगवंत जाण्यो ते किहां जी। किहां मुझ करणी एह। गजपाखर खर किम सहै जी । सवल विमासण तेह ॥ (क०) ॥ १० ॥ आप परूपुं आकरो जी। जांणैं लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो जी । मासाहस दृष्टांत ॥ (क०) ॥ ११ ॥ काल अनंतै मैं लह्या जी। तीन रतन श्रीकार । पिण परमादै पाम्मिया जी । किहां जई करुं पुकार ॥ (क०) ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टी करुंजी। उद्यत करुंअ विहार । धीरज जीव धरै नहीं जी। पोतै वऊ संसार ॥ (क०)॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी । नगमें रूमीवात। परनंद्या करतां थकां जी । जायै दिननें रात ॥ (क०) ॥१४॥ किरिया करतां दोहिली जी। आलस आणैं जीव। धरम पखै धंधै पड्योजी। नरगै करस्यै रीव ॥ (क०) ॥१५॥ अण छंता गुणको कहै जी। तो हरखुं निशि दीश । कोहितसीख जली कहै जी। तो मन आणुं रीश ॥ (क०)॥१६॥ वाद जणी विद्याजणी जी। पर रंजण उपदेश । मन संवेग धस्यो नहीं जी । किम संसार तरेश ॥ (क)॥१७॥ सुत्र सिद्धांत वखांणतांजी। सुणतां करम विपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजै जी। मुझ मरकट वैराग ॥(क०)॥१८॥ त्रिविध २ करि ऊचरूं जी । जगवंत तुह्म हजूर । वारवार जांजुं वलीजी। छूटकवारो दूर ॥(क०) ॥१ए॥ आपकाज सुख राचितां जी । कीधा आरंज कोम । जयणा न करी जीवनीजी। देव दयापर छोम ॥ (क०)॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी। दाख्या अनरथ दंम। कूड कपट वऊ केलवी जी। व्रत कीधा शत खंड ॥ (क०) ॥ २१ ॥ अण दीधो लीजै त्रिणो जी। तोही अदत्तादान।

ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावै ग्यान ॥ २२ ॥ (कृ०) चंचल जीव रहै नहीं जी । राचै रमणी रूप । काम विटंवण सीकक्षं जी । ते तूं जाणें सरूप ॥ २३ ॥ (कृ०) माया ममता मैं पड्योजी । कीधो अधिको लोभ । परग्रह मेल्यो कारमो जी । न चढी संयम सोभ ॥२४॥ (कृ०) लागा मुझनैं लालचै जी । रात्री भोजन दोष । मैं मनमूंक्यो माहरो जी । न धर्यो धरम संतोष ॥ २५ ॥ (कृ०) इण भव पर भव दूहव्याजी । जीव चौराशी लाख । ते मुझ मिछामि डुक्कडंजी। भगवंत तोरी साख॥२६॥ (कृ०) करमा दांन पनरै कह्याजी । प्रगट अढारै पाप । जेमैं कीधा ते सहूजी । वगशा२ माई बाप ॥ २७ ॥ (कृ०) मुझ आधारछै एतलोजी । सरदहिणाछै सुद्ध । जिन धर्म मीठो जगतमैंजी । जिम साकरनैं दूध ॥ ॥ २८ ॥ (कृ०) रिषभदेव तुं राजीयोजी । सेत्रुंजगिरि सिणगार । पाप आलोया आपणाजी । करप्रभु मोरी सार ॥ २९ ॥ (कृ०) मर्म एह जिन धर्मनोजी । पाप आलोयां जाय । मनसुं मिछामि डुक्कडंजी । देतां दूर पुलाय ॥ ३० ॥ (कृ०) तुं गति तुं मति तूं धणीजी । तुं साहिब तुं देव । आणधरुं शिरताहरी जी । भव२ ताहरी सेव ॥ ३१ ॥ (कलशः) ॥ इम चढीय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभि नंदन जिनतणा । करजोडि आदि जिणंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजश घणें । गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणे ॥ ३२ ॥ ※ इति आलोयणागर्भित स्तवनं ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः पद्मावती आलोयण सिझाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवै राणी पदमावती । जीवराशिखमावै । जाणपणुं जगदोहिलो । इणवेला आवै ॥१॥ (तेमुझ मिछामि डुक्कडं) । अरिहंतनी साख । जेमें जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ २ ॥ (ते०) सात लाख प्रथवीतणा । साते अप्पकाय । सातलाख तेऊकायना । सातेवली वाय ॥३॥ (ते०) दस प्रत्येकवनस्पती । चउदह साधारण । विति चउरिंद्री जीवना । वेवेलाख विचार ॥ ४ ॥ (ते०) ॥ देवता तिरयंच नारकी । च्यार२ प्रकासी । चउदह लाख मनुष्यना । एलाखचउरासी ॥ ५ ॥ (ते०) इण भव परभव सेविया । जे पाप अढार । त्रिविध२ करि परिहरुं । दुरगति

दातार ॥ ६ ॥ (ते०) हिंसा कीधी जीवनी । बोल्या मिरखावाद । दोष अदत्तादानना । मैथुन उनमाद ॥ ७ ॥ (ते०) परिग्रह मेल्यो कारिमो । कीधो क्रोध विसेष । मांन माया लोभमें कीया । वलि रागनें द्वेष ॥ ८ ॥ (ते०) कलहकरी जीव दूहव्या । दीना कूडा कलंक । निन्दा कीधी पार की । रति अरति निस्संक ॥ ए ॥ (ते०) ॥ चाडी खाधी चौंतरै । की धो थांपण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । भलो आएयो भरोसो ॥ १०) (ते०) ॥ षाटकीनें भवमें किया । जीवना वधघात । चिमीमार भव चि डकला । मास्या दिनराति ॥ ११ ॥ (ते०) माछीगरभव माछला । फाल्या जलवास । धीवर भील कोलीभवे । मृग मास्या पास ॥ १२ ॥ (ते०) ॥ काजी मुल्लानें भवै । पढी मंत्र कठोर । जीव अनेक जवै किया । कीधा पा प अघोर ॥ १३ ॥ (ते०) ॥ कोटवालनें भवमें किया । अकराकर दं म । बंदीवांन मराविया । कोरमा छमी फंम ॥ १४ ॥ (ते०) ॥ परमाधर मीनई भवै । दीधा नारकी डुःख । छेदन भेदन वेदना । तामणा अति ति क्ख ॥ १५ ॥ (ते०) ॥ कुंभारनें भवमें कीया । निम्माह पचाव्या । तेली भव तिल पीलीया । पापी पेट भराय ॥ १६ ॥ (ते०) हालीनें भव ह ल खड्या । फाम्या पृथवी पेट । सूम निदान घणा किया । दीधा बलध चपेट ॥ १७ ॥ (ते०) मालीनें भव रोपिया । नानाविध वृक्ष । मूल प त्र फल फूलना । लागा पापना लक्ष ॥ १८ ॥ (ते०) ॥ अधोवाई आंगमी । भस्या अधिकाभार । पोठी कंठ कीमा पमया । दया नावीलि गार ॥ (ते०) १ए ॥ छीपानें भव छेतस्यो । कीधा रंगणि पास । अग नि आरंभ कीया घणा । धातुर्वाद अभ्यास ॥ (ते०) ॥ २० ॥ सूरपणें रण फूफतां । मास्या मांणस वृंद । मदिरा मांश भक्षा घणा । खाधा मूल नें कंद ॥ (ते०) ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी । पाणी फलंच्या । आ रंभ कीधा अति घणा । पोतै पापज संच्या ॥ (ते०) ॥ २२ ॥ अंगार कर्म कीया वली । धरमे दव दीधा । सुंसलेई वीतरागना । कूमा कोशज पीधा ॥ (ते०) ॥ २३ ॥ विल्ली भव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढग मार तणें भवै । में जूं लीख मारी ॥ (ते०) ॥ २४ ॥ भामभूंजातणें भवै ए कैंद्री जीव । ज्वारी चिणा गऊं सेकिया । पामंता रीव ॥ (ते०) ॥ २५ ॥ खांमण

पीसण गारना । आरंभ अनेक । रांधण इंधण आगिना । कीया पाप उद्देग ॥(ते०) ॥२६॥ विकथा च्यार कीधी वली। सेव्या पंच प्रमाद । इष्ट वियोग प ड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ (ते०) ॥ २७ ॥ साधु अनें श्रावक तणा। व्रत लेईभागा । मूल अनें उत्तर तणा । दूषण मुझ लागा ॥ (ते०) ॥२८॥ साप विछु सिंह चीतरा । शिकरानें शमली । हिंसक जीव तणें भवै । हिं सा किधी सवली ॥ (ते०) ॥ २९ ॥ सूआवमै दूषण घणा। वलि गरभ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणा । सीलव्रत भंजाव्या ॥ (ते०) ॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां । कीया कुटंब संबंध । त्रिविध२ करि वोसरुं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ (ते०) ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परै । कीधा पाप अखत्र । त्रिविध२ करि वोसरूं । करुं जनम पवित्र ॥ (ते०) ३२॥ राग वैराग्नी जे सुणें । एत्रीजी ढाल । समय सुंदर कहै पापथी । छूटै ततकाल (ते०) ॥ ३३ ॥ ※ ॥ इति श्री आलोयण सिझाय संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुन्य प्रकाश आलोयण वृद्धस्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा । चौवीशे जिनराय । सद्गुरु सामिनी सरसती । प्रेमें प्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशलातणो । नंदन गुणगंभीर । शासन नायक जगजयो । वर्द्धमान वमवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीरजिणंदनें । चरणें करी परिणाम । भविकजीवना हित भणी । पुछै गौ तमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगतिमारग आराधिइं । कहो किणिपरि अरिहंत । सु धासरस तव वचनरस । भाषे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार १ आलोइए । व्रतधरीइं गुरुशाखि । जीव खमावो सयलजे । योनि चोरासी लाख ३ ॥५॥ विधिसुं वलिवोसरावीइं । पापस्थानक अढार ४ च्यारशरण नित अनुसरै ५ । निंदोडरितआचार६ ॥६॥ शुभकरणी अनुमोदिइं ७ । भाव भलो मन आंणि ८ । अणशण अवशार आदरी ९ । नवपद जपो सुजाण १०॥ शुभ गति आराधन तणा । एहै दश अधिकार । चित्तआणीनें आदरो । जिम पामोभवपार ॥ ८॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल १) एहिंडी किहां राखी । इस चालमें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज । ए पांचे आचार ।

एहतणा इहभव परभवना । आलोइयें अतीचाररे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखांणी । वीरवदें इमवांणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुउलवीयें नही गुरु विनयें । कालै धरी बहुमांन । सुत्र अर्थ तदुभय करी सूधा । भणीइं वही उपधांन ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी । ठव णी नोकरवाली । एहतणी कीधी आशातना । ज्ञान भक्ति नसंभालीरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । ज्ञान विराध्युंजेह । आभव पर भव वलिय भवो भव । मिछादुक्कम्ह तेहरे ॥ प्रा०॥४॥ (समकितल्यो शुद्ध जांणी) ॥ जिनवचनें शंका नविकीजें । नवि परमत अभिलाष । साधुत णी निंदा परिहरजो । फल संदेह मराखिरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ स० ॥ मूढपणुं छंडो परशंसा । गुणवंतनें आदरीइं । साहमीनें धर्में करी थिरता । भगति प्र भावना करीयेंरे० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्राशाद तणोजे । अवर्ण वाद मनलेख्यो । द्रव्य देवको जे विणसाड्यो । विणसंतां उवेख्योरे ॥ प्रा०॥ ७ ॥ स०॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । समकित खंड्युं जेह । आभव०॥ प्रा०॥ ८ ॥ (चारित्रल्यौ चितआंणी) पांचसुमति त्रिणगुपति विराधी । आ ठे प्रवचनमाय । साधुतणें धरमें प्रमादें । अशुद्ध वचन मन कायरे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ चा० ॥ श्रावकनें धर्में सामायक । पोसहमां मनवाली । जे जयणा पूर्वक जे आठे । प्रवचन मायनपालीरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्या दिक विपरीतपणाथी । चारित्रमहोल्पुंजेह । आभव० ॥ मिछामि०॥११॥ चा०॥ बारें भेदें तप नवि कीधो । छतें योगें निजशक्तें । धर्में मन वच का या वीरज । नविफोरविउं भगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज आचारें इणपरें । विविध विराध्याजेह । आभव० ॥ मिछामि० ॥ प्रा० ॥ ॥ १३ ॥ चा०॥ वलीय विशेषें चारित्रकेरा । अतीचार आलोइयें । वीरजि णेसर वयणसुंणीनें । पापमयल सविधोइयेंरे ॥ प्रा०॥ १४ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ ढाल२॥ पृथवी पाणी तेउ । वाउ वनस्पती । ए पांचे थावरकह्या ए । करीकरसण आरंभ । खेत्रजेखेडीयां । कूवा तलाव खणावीयाए ॥ १ ॥ घर आरंभअनेक । टांकां भोइरां । मेडी माल चिणावियाए । लिंपण गुंपण का ज । एणिपरै परपरें । पृथवी काय विरावीयाए॥२॥ धोयण नाहण पाणी । झीलण अप्पकाय । छोति धोति करि दूहव्याए । भाठीगर कुंभार । लोह

सोवनगरा । भाम्भुंजा लिहालागराए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजें । वस्त्र निखारण । रंगण रांधण रसवतीए । इणिपरेंकर्मादान । परिपरेंकेलवी । तेऊ वाऊ विराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी वन आरांम । वावी वनस्पती । पान फूल फल चूंटीयाए । पौंहक पापड शाक । सेक्यां सूकव्या । छे द्यां छुंद्यां आथीयांए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंम । घाणी घालीनें । घणा तिलादिक पीलीयाए । घाली कोलु मांहिं । पीलीशेलमी । कंद मूल फलवेचीयाए ॥६॥ इम एकेंद्री जीव । हण्या हणावीया । हणतांजे अनुमोदीयाए । आभव परभवजेह । वलीय० ॥ तेमुऊ० ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीडा । गाम्मर गंमोला । इअल पूरा अलशीआए । वाला जलो चूम्मेल । विचलित रसतणा । वली अथां णां प्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमवेंइंद्रीजीव । जेमें दूहव्या । ते मुऊ० ॥ उद्देही जूंलीख । मांकड मंकोडा । चांचड कीडी कंथुआए ॥ ए ॥ गद्दहीया घी मेल । कांनखजूरमा । गींमोला धनेरीयांए । इमतेइंद्री जीव। जेमें दूहव्यां तेमुऊमि० ॥ १० ॥ माखी मच्छर मांस । मसा पतंगीया । कंशारी कोलि यावम्माए । ढींकण वींछू तीम । भमरा भमरीय । कौंता वग पम्म मांकडीए ॥ ११ ॥ इमचौरिंद्री जीव । जेमेंदू०॥ तेमुऊ०॥ जलमांनांखी जाल । जल चर दूहव्या । वनमां मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव । पाडी पासमां । पोपट घाल्या पांजरेंए ॥ इम पंचेंद्री जीव। जेमेंदू०॥ तेमुऊ०१३

॥ ※ ॥ ढाल३ ॥ प्राणी वाणी हितकरीजी ॥ एचाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ क्रोध लोभ भय हासथी जी । वोल्या वचन असत्य । कूडकरी धनपारकाजी । लीधांजेह अदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजी मिछा मि डुक्कड आज । तुह्मसाखें महाराजरे । जिनजी । देई सारूं काजरे ॥ जि० ॥ मि० ॥ (आंकणी०)॥ देव मनुज तिर्यचनाजी । मैथुन सेव्याजेह । विपयारस लंपटपणेंजी । घणुं विटंव्यो देहरे ॥ २ ॥ जि०॥ परि ग्रहनी ममता करीजी । भव२ मेली आथि । जेहजीहां ते तिहां रहीजी । कोईन आवे साथिरे ॥ ३ ॥ जि०॥ रयणी भोजन जे कस्याजी । कीधा भक्ष अभक्ष । रसना रसनी लालचेंजी । पापकस्या परतक्षरे ॥ ४ ॥ जि०॥ व्रत लेई वीसारीयाजी । वली भांग्यां पच्चखांण । कपटहेतु किरियाकरीजी । कीधा आप वखांणरे ॥ ५ ॥ जि०॥ त्रिणढाले आठे दूहेजी । आलोया अ

तीचार । शिवगति आराधन तणोजी । एपहिलो अधिकाररे ॥ ६ ॥ जि०॥

॥ ※ ॥ ढाल ४ ॥ साहेलडीनी देशीः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंचमहाव्रत आदरो ॥ साहेलडीरे० ॥ अथवा ल्पो व्रत बार तो सा०॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरती चारतो । व्रतलीधा संन्नारीये ॥ सा० ॥ हीयमै धरीय विचारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा०॥ ए बीजो अधिकारतो । जीवसवे खमावीइं॥ सा०॥ योनि चौराशीलाखतो । मनशुद्धें करो खांमणां ॥ सा० ॥ कोईशुं रोष नराखि तो । सर्वमित्र करी चिंतवो ॥ सा०॥ कोइ न जाणो शत्रुतो । रागद्वेष इम परीहरो ॥ सा० कीजै जन्म पवित्र तो । साहमी संघ खमाविये॥ सा० जेनपनी अप्रतीत तो । सज्जन कुटुंव करी खांमणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीतितो ॥ २ ॥ खमीयें अनें खमावीयें ॥ सा०॥ एहीज धर्मनो सारतो । शिवगति आराधन तणो ॥सा०॥ एत्रीजो अधिकारतो । मृखावाद हिंसाचोरी ॥सा०॥ धनमूर्छा मेथुनतो । क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा०॥ प्रेमद्वेष पैशून्यतो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीइं ॥ सा०॥ कूडा न दीजे आलतो । रति अरती मिथ्यातजो ॥ सा०॥ माया मोस जंजालतो ॥८॥ त्रिविध २ वोशराविये ॥ सा०॥ पापस्थान अठारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एचोथो अधिकारतो ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल पांचमी ॥ हवैनिसुणो इहां आवीयाए ॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जनमजरा मरणें करीए ए । संसार असारतो । कस्याकर्म सहु अनुन्नवेंए । कोइन राखण हारतो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुंए । शरणसिद्ध न्नगवंत तो । शरणधर्म श्री जैननोए । साधुशरण गुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोह सवि परिहरीए । चार शरण चित्तधारतो । शिवगति आराधनतणोए । ए पांचमो अधिकारतो ॥ ३ ॥ आन्नव परन्नव जे कस्याए पापकर्म केई लाखतो । आतमशाखें निंदीयेए । पडिक्कमीयें गुरु शाखितो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविआए । जे न्नाख्या उत्सूत्रतो । कुमति कदाग्रहनेंवसेंए ॥ वलि उत्थाप्या सुत्रतो । घड्या घडाव्या जे घणाए घरटी हल हथियार तो । न्नव २ मेली मुंकीआए । करतां जीव संहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनें पोषीआए । जनम२ परिवारतो । जनमांतर पुहतापछीए

कोइन कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आन्नव परन्नव जे कस्याए । इम अधिकरण अनेकतो । त्रिविध २ वोसरावीइए । आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम करीए । पापकस्या परिहारतो । शिवगति आराधन तणोए । ए ठ्ठो अधिकारतो ॥ ए ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ढाल ठ्ठी ॥ आदितुं जोइनें आपणी ॥ ए चाल ॥ ✻ ॥

धनं२ते दिन माहरो । जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी । टाल्या दुष्कर्म ॥१॥ ध०॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी । जे कीधी यात्र । युगतें जिनवर पूजीया । वलीपोप्या पात्र ॥२॥ ध० ॥ पुस्तक ज्ञांन लिखावीया । जिणहर जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या । ए सातेखेत्र ॥३॥ ध०॥पडिक्कमणां सुपरें कस्या । अनुकंपादान । साधू सूरि उवझायनें । दीधा वहुमान॥४॥ध०॥धर्मकारज अनुमोदिये । इम वारोवारि । शिवगति आराधन तणो । सातमो अधिकार ॥ ५ ॥ ध० ॥ न्नाव न्नलो मन आणीये । चित्त आणी ठामि । समतान्नावे न्नावीयें । ए आतमराम ॥ ६ ॥ ध०॥ सुख दुःख कारण जीवनें । कोई अवर न होइ । कर्म आपजे आचस्या । न्नोगवीयें सोय ॥ ७ ॥ ध०॥ समता विणजे अनुसरे । प्राणी पुन्यकाम । ठारि ऊपरिते लीपणुं । ऊांखर चित्राम॥८॥ ध० ॥ न्नाव न्नली परें न्नावीइ । ए धर्मनोसार। शिवगति आराधन तणो ॥ आठमों अधिकार ॥ ए ॥ ध० ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ढाल सातमी रैवत गिरि ऊपरे (एचाल) ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ हवेअवसर जांणी करीय संलेखण सार । अणशण आदरीयें पचखी चारआहार । ललुता सवीमुंकी ठंडी ममताअंग । एआतम खेलें समता ज्ञांनतरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आहार अनंत निःशंक । पण तृपतिनपाम्यो जीव लालचीउ रंक । दुलहो ए वलीवली । अणशणनो परिणाम । एहथी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिन्नद्र खंधो मेघकुमार ॥ अणशण आराधी पाम्यां न्नवनोपार । शिवमंदिर जास्यें करी एकअवतार । आराधन केरो ए नौमो अधिकार ॥३॥ दशमें अधिकारें महामंत्र नवकार । मनथी नवीमूंको शिव सुख फलसहकार । एजपतां जांयें दुर्गति दोपविकार। सुपरें ए समरो चउद पूरवनोसार ॥४॥ जन्मांतरें जातां जो पामें नवकार । तोपातिक गाली पामें

सुरअवतार । एनवपद सरिखो मंत्र न कोईसार । इहभवनें परभवै सुखसंपति दातार ।।५।। जुउभील भीलणी राजा राणीथाय । नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय । राणीरतनवती बेउं पाम्यांछे सुरभोग । इकभवथीलेस्यें सिद्धवधूसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनें एवली मंत्रफल्यो ततकाल । फणिधर फीटीनें प्रगटथई फूलमाल । शिवकुमरें योगी सोवन पुरसो कीध । इम एणेंमंत्रें काज घणांनां सिद्ध । एदश अधिकारें वीरजिणेसर भाख्यो । आराधनकेरो । विधिजिणें चित्तमाराख्यो । तिणेंपापपखाली भवभय दूरेंनाख्यो । जिनविनय करंतां सुमति अमृत रसचाख्यो ।। ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नमोभविभावशुंए ॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सिद्धारथराय कुलतिलोए। त्रिशला मात मल्हारतो । अवनीतलै तुह्ले अवतस्याए । करवा अह्मउपगार ॥ १ ॥ (जयो जिन वीरजीए) टेक ॥ मैं अपराध कस्याघणाए। कहतांनलउं पारतो । तुह्मचरणे आव्याभणीए। जोतारैतो तारि ।। २ ॥ ज० ॥ आशाकरीनें आवीउए । तुमचरणें महाराजतो । आव्यानें उवेखशोए । तोकिमरहस्यें लाज ॥३॥ज० करम अलूजण आकराए । जनममरण जंजालतो । हुंछुंएहथी ऊभग्योए। छोडविदेवदयाल ॥ ४ ॥ज०॥ आजमनोरथ मुझफल्याए। नाठाडुःखदंदोलतो । तूठो जिनचोवीशमोए । प्रगट्या पुन्यकल्लोल ॥५॥ ज० ॥ भव२ विनय तुह्मारमोए। भावभगति तुह्मपाय तो । देवदया करी दीजीयेंए । बोधबीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कलश:॥ इयतरणतारण सुगतिकारण डुःखनिवारण जगजयो । श्री वीरजिणवर चरणथुणतां अधिकमन उह्लटथयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव सूरिंदपटधर । तीरथजंगम इणजगें । तपगछपति श्रीविजयप्रभसूरि सूरितेजें झगमगें॥२॥श्रीहीरविजय सूरी शिष्यवाचक । कीर्त्तिविजय सुरगुरुसमो । तस शिष्यवाचक विनय विजयें ।थुण्योजिन चौवीशमों । सइसत्तर संवत उगणत्रीसें रही रानेर चौमाशए। विजयदशमी विजयकारण किउ गुण अभ्यासए । नरभवआराधन सिद्धिसाधन । सुकृतलील विलासए। निर्जराहेतें स्तवनरचियुं । नामें पुण्यप्रकाशए ॥५॥ इति श्रीवीरजिन पुन्यप्रकाश आराधना स्तवनं स०

॥ ※ ॥ अथ ज्ञरहेसरनी सझाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ज्ञरहेसर वाङबली । अज्ञय कुमारोअ ढंढण कुमारो । सिरिओ अणियाउत्तो । अयमंत्तो नागदत्तोअ ॥१॥ मेअज्ज थूलिज्ञद्दो । वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंमरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिज्ञद्दोअ । ज्ञद्दोअ दसन्नज्ञद्दो । पसन्नचंदोअ जसज्ञद्दो ॥३॥ जंबू पज्ज वंकचूलो । गयसुकमालो अवंति सुकुमालो । धन्नो इलाइ पुत्तो । चिलाईपुत्तोअ वाङमुणी ॥४॥ अज्जगिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहथ्थी उदायगो मणगो । कालयसूरिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पन्नवो विन्हुकुमारो । अद्दकुमारो दढप्पहारीअ । सिज्जंस कूरगडुअ । सिज्जंन्नव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन वाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती । नमया सुंदरी सीया । नंदा ज्ञद्दा सुज्ञद्दाय ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता । पउमावई अंजणा सिरी देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पन्नावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ बंज्ञी सुंदरी रुप्पिणी । रेवई कुंती सिवा जयंतीय । देवीई दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी । गंधारी लख्मणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चज्ञामा । रुप्पिणी कन्हठ महिसीओ ॥ ॥ ११ ॥ जक्खाय जख्खदिन्ना । ज्ञूआ तह चेव ज्ञूअदिन्नाय । सेणा वेणा रेणा । ज्ञइणीओ थूलिज्ञद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाइं महासईओ । जयंति अकलंक सील कलिआओ । अज्जवि वज्जई जासिं । जस पडहो तिङअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीओनी सिझाय ॥ १४ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिच्छं परिहरह धर सम्मत्तं । छव्विह आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं । दाणं शीलं तवोअ ज्ञावोअ । सझाय नमुक्कारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरूथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं । ववहारस्सय सुद्धी । रहयत्ता तिथ्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशम विवेक संवर । ज्ञासा समिई छज्जीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो

॥ ४ ॥ संघोवरि वज्झमाणो । पुथ्थय लिहणं पन्नावणा तित्थे । सड्ढाण किच्च मेअं । निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामें मंगल कोम । पहेलें स्वर्गें लाख बत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्या । त्रीजे बारलाख सर्दह्या । चोथे स्वर्गे अम लख धार । पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ छठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश सहस प्रासाद । आठमें स्वर्गें ७ हज्जार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणशे सार । नवग्रैवेयकें त्रणशे अढार । पांच अनुत्तर सर्वे मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार ॥ जिनवर भुवन तणो अधिकार । लांबा शो जोजन विस्तार । पचास ऊंचा बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिमाण । सभासहित एक चैत्यें जाण । शो कोड बावन कोम संभाल । लाख चोराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातशें ऊपर साठ विशाल । सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल । सात कोमनें बोहोत्तर लाख । भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोम निव्याशी कोम साठ लाख वंदूं करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशेंनें ओगणसाठ । तिर्छलोकमां चइत्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखभ चंद्रानन वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥१०॥ समेत सिखर वंदूं जिनवीश । अष्टापद वंदूं चौवीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आबूऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंभण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह । जिनवर चैत्य नमूं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन वीश । सिद्ध अनंत नमुं निशिदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार । अढार सहस शीलांगना धार । पंच महाव्रत सुमती सार । पाले पलावे पंचाचार ॥१४ बाह्य अभ्यिंतर तप उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं । जीव कहे भव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ❋ ॥

॥ ※ ॥ अथ सकलार्हत् स्तोत्र ॥ ※ ॥

॥※॥ सकलार्ह त्प्रतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः। भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान । मार्हंत्यं प्रणिदध्महे ॥१॥ नामाकृति द्रव्यभावैः । पुनत स्त्रिजगज्जनं । क्षेत्रे कालेच सर्वस्मिं । न्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनाथंच । ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥ अर्हंत मजितं विश्व । कमलाकर भास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥४॥ विश्वं भव्य जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः । देशना समये वाचः । श्रीसंभव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांभोधि । समुल्लासन चंद्रमाः । दद्या दमंद मानंदं । भगवान भिनंदनः ॥६॥ युसत्किरीट शाणाग्रो । त्तेजि तां घ्रि नखावलिः । भगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वभिमता निवः ॥ ७ ॥ पद्म प्रभ प्रभोर्देह । भासः पुष्णंतु वः श्रियं । अंतरंगारि मथने । कोपाटो पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय । महेंद्र महितांघ्रये । नमश्चतु र्वर्ण संघ । गगनाभोग भास्वते ॥ ९॥ चंद्रप्रभ प्रभोश्चंद्र । मरीचि नि चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽस्तुवः ॥१०॥ कराम ल कवद्विश्वं । कलयन् केवलश्रिया । अचिंत्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्बो धयेऽस्तुवः ॥११॥ सत्वानां परमानंद । कंदो भेदनवांवुदः । स्याद्वादामृत निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः॥१२॥भवरोगार्त्त जंतूना । मगदंकार दर्शनः निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः॥१३॥ विश्वोपकारकी भूत । तीर्थ कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥१४॥ विम ल स्वामिनो वाचः । कृतकक्षोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै र्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभू रमणस्पर्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत जिदनंतांवः । प्रयच्छतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण । मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां । चतुर्द्धा धर्म्मदेष्टारं । धर्म्मनाथं मुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर वाग्ज्योत्स्ना । निर्म्मली कृत दिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै । शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो भगवान् । सनाथो तिशयर्द्धिभिः । सुरा सुर नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु भगवां । श्च तुर्थारनभोरविः चतुर्थ पुरुपार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु र नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्म्मद्रून्मूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मभिष्टु

मः ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा। प्रत्यूषसमयोपमं । मुनि सुव्रत नाथस्य देशना वचनं स्तुमः ॥२२॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निर्मली कार कारिणं । वारि प्लवा इवनमेः पांतु पादनखांशवः ॥२३॥ यड वंश समुद्रेंडः । कर्म्म कक्ष हुताशनः । अरिष्टनेमि र्भगवान् । भूयाद्वोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर णेंद्रेच। स्वोचितं कर्म कुर्व्वति । प्रभुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्श्व नाथः श्रियेऽ स्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुत श्रिया । महानंद सरोरा ज । मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः । ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः। सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । त्रिभुवन चूडामणि र्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व्व सुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपो । वीरे श्री धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरभद्रं दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां दिव्य वैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर भुवना नां भावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ शांतिकर स्तोत्र ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि भत्त पालग । निव्वाणी गरूडकय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विप्पोसहि प त्ताणं । संतिसामिपायाणं । झ्रौं स्वाहा मंतेणं । सव्वाशिव डुरिअ हरणाणं ॥२॥ ॐ संति नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सौं ह्रीं नमो स व्वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरिं ॥३॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिरि देवी जक्खराय गणि पिडगा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रख्खंतु जिणभत्ते ॥४॥ रख्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जसिंखला सया । वज्जंकुसि चक्केसरी नरदत्ता कालि महाकाली ॥५॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ रुट्टा । अछुत्ता माणसिआ । महामाणसिआओ देवीओ ॥६॥ जख्खा गोमुह महजख्खा । तिमुह जख्खेसु तुंबरू कुसुमो । मायंग विजय अजिओ । बंभो माणुओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पायाल किन्नर । गरुलो गंधव्व तहय जख्खिंदो । कुबेर वरुणो भिउडी । गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ

चक्केसरी। अजिआ दुरिआरी कालि महा काली। अचुअ संता जाला। सुतारया सोअ सिरिवञ्जा॥ ए॥ चंमा विजयंकुसि पन्नइत्ति। निव्वाणि अच्चुआ धरणी। वईरुट्ट छुत्त गंधारी। अंब पउमावई सिद्धा॥ १०॥ इअ तित्थ रख्खण रया। अन्नेवि सुरा सुरी चउहावि। व्यंतर जोइणि पमुहा। कुणंतु रक्खं सया अह्मं॥ ११॥ एवं सुदिठि सुरगण। सहिओ संघस्स संति जिण चंदो। मज्झवि करेऊ रख्खं। मुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा॥ १२॥ इअ संतिनाह सम्मद्दिठी। रख्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दव रहिओ। स लहइ सुह संपयं परमं॥ १३॥ तव गच्छ गयण दिणयर। जुगवर सिरि सोम सुंदर गुरूणं। सुपसाय लद्ध गणहर। विज्जा सिद्धिं भणइ सीसो॥ १४॥

॥ ※ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सीमंधर परमातमा। शिव सुखना दाता। पुख्खल वई विजये जयो। सर्व जीवना त्राता॥ १॥ पूर्व विदेह पुंम्हरीगिणी। नयरीयें शोहे। श्री श्रेयांस राजा तिहां। भविअणनां मन मोहे॥ २॥ चउद सुपन निर्मल लही। सत्यकी राणी मात। कुंथु अर जिन अंतरें। श्री सीमंधर जात॥३॥ अनुक्रमें प्रभु जनमीया। वली यौवन पावे। मात पिता हरखें करी। रुकमिणी परणावे॥ ४॥ भोगवी सुख संसारनां। संजम मन लावे। मुनिसुव्रत नमी अंतरें। दिक्षा प्रभु पावे॥ ५॥ घाती कर्मनो क्षय करी। पाम्या केवल नाण। वृखभ लंछनें शोभता। सर्व भावना जाण॥ ॥ ६॥ चौराशी जस गणधरा। मुनिवर एक शो कोड। त्रण भुवनमां जोअतां। नहिं कोइ एहनी जोड॥ ७॥ दस लाख कह्या केवली। प्रभुजीनो परिवार। एक समय त्रण्य कालना। जाणे सर्व विचार॥ ८॥ उदय पेढाल जिनांतरे ए। थाशे जिनवर सिद्ध। जश विजय गुरू प्रणमतां। शुभ वंछित फल लीध॥ ए॥ इति चैत्य वंदन॥ ※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सीमंधर जग धणी। आभरतें आवो। करुणावंत करुणा करी। अमने वंदावो॥ १॥ सकल भक्त तुमे धणी ए। जो होवे अम नाथ। भवो भव हुं छूं ताहरो। नहीं मेलुं हवे साथ॥ २॥ सयल संग छंमी करी ए। चारित्र लेइशुं। पाय तुमारा सेविनें। शिवरमणी वरिशुं॥३॥

ए अलजो मुजने घणो ए। पूरो सीमंधर देव। इहां थकी ऊं वीनवुं। अ वधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला। कलित त्रिभुवन हितकरं। सुर राज संस्तुत चरणपंकज। नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण प्रवर गुण गण भूधरं। सुर असुर किन्नर कोमि सेवित नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं। निर्जरावली नमें अहनिश ॥ नमो० ॥३॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी। कोमि पण मुनि मन हरं। श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर। कोमिनंत ए गिरिवरं। मुक्ति रमणी वरया रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही। विमल गिरिवर तो परं। नहि अधिक तीरथ तीर्थ पति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंमण। डुःख विहंडण ध्याइ यें। निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं परम ज्योतिनें पाइए ॥७॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा। परम पद स्थिति जयकरं। गिरिराज सेवा करण तत्पर। पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

॥ ※ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध खेत्र। दीठे डुर्गति वारे। भाव धरीनें जे चढे। तेनें भवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम। सकल तीरथ नोराय। पूर्व नवाणुं रिखभदेव। ज्यां ठवीआ प्रभुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहा मणो। कवम जक्ष अभिराम। नाभिरायां कुलमंमणो। जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीयं चैत्य० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ परमेसर परमातमा। पावन परमिठ। जय जगगुरु देवाधिदेव। नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार। करुणा रससिंधु। जगती जन आधार एक। निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभुता हरा ए। किम ही कल्यान जाय। राम प्रभु जिन ध्यानथी। चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासें जावजो । मुऊ वीनतमी प्रेम धरीनें इण परें तुमे संन्नलावजो । (ए आंकणी) जे त्रणय त्रुवननो नायकछे । जस चौशठ ईंद्र पायकछे । नाण दरसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी कायाछे । जस धोरी लंठन पायाछे । पुंडरीगणी नगरीनो रायाछे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ वार पर्षदा मांहि विराजे छे । जस चौत्रीश अतिशय छाजैछे । गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ त्नविजननें ते पमी बोहेछे । तु म अधिक शीतल गुण शोहेछे । रूप देखी त्नविजन मोहेछे ॥ सुणो० ॥ ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ हुं । पण त्नरतमां दूरें वसीओ हुं । महा मोह राय कर फसीओ हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिव चित्तमां धरीयोछे तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयोछे । तव कांइक मुऊथी डरीयोछे ॥सुणो०॥ ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वा धे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आंखडीयें रे में आज । शेत्रुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो दहाडोरे । लागे मुनें मीठोरे (ए आंकणी) सफल थयो मारा मननो ऊ माहो ॥ वाला मारा ॥ त्नवनो संशय त्नाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर नि वारी । चरणे प्रत्नुजीनें लाग्योरे ॥ शेत्रुं० ॥ १ ॥ मानव त्नवनो लाहो लीधो वा०॥ देहमी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे वधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा दीधीरे ॥ शेत्रुं० ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आ दीश्वर पूज्यारे । श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी ध्रूज्यारे॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे । त्रण त्नुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहेरे । कायानी तो कासल टाले । सूरज कुंममां नाहेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उद्धार अनंता कीधारे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नात्निराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस

वूठयारे । उदयरतन कहे आज मारे पोतें । श्री आदीश्वर तूठयारे॥ शेत्रुं०

॥ ※ ॥ पुनःसिद्धगिरी स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए धर्मनो । शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृह मंमली । ति हां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥ २ ॥ कोइ अनेरूं जग नहीं । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगलै श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ कस्यां । जात्रा फल लहीयें । तेहथी ए गिरि भेटतां । शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे । तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नाभिराजंगजं वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतं स्थंभने । श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प भुवने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदराद्रि वसतो स्तीर्थंकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुंडले । येचान्येपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमा ऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥ श्री महावीरजिनास्य पद्म ऋदतो निर्गस्यते गौतम । गंगा वर्तन मेत्य या प्रविभवे मिथ्यात्व वैताढ्यकं । उत्पत्ति स्थिति संहृति त्रिपथगा ज्ञानां वुधा वृद्धिगा । सामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्चंद्र रवि ग्रहा श्च धरण ब्रह्मेंद्र शांत्यंबिका । दिगपालाः सकपर्द्दिगो मुखगण श्चक्रेश्वरी भारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री संघस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु भद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेमराजुल सिझाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊडे दोय पंखीया (ए देशी) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी छातीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कब मिले । नीर विछोह्यां मीनके ।

तेजुं टलवलै ॥१॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नविगमे। जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारूं मन नमे। जो होवे सज्जन दूर तोहि पासें वसे। किहां सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजो को सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नहीं । माणसनो विजोग म होजो केहनें । सालेर साल समान हुइआमां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीम जोवन वय अतिदहे । जेनो पियु परदेश ते माणस डुःख सहे। कुरी कुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी। हजुअ न आव्योनेम मली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टलै चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसें मलै। आंबा केरो स्वाद निंबू ते न वि करे। जे नाह्या गंगा नीर ते छिल्लर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल धतूरे केम रमें। जेहनें घीयशुं प्रेम ते तेलै केम जमें। जेहनें चतुरशुं नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोवन तजी नेम वैरागीथै फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ वांद्या प्रनु नेम संजम ले ई एकमनें। पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रनुनेम नेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आऊखा सिझायः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आऊखो तूटानें सांधो को नहीरे। तिण कारण मकरो जीव प्रमादरे। जरा आव्यानें शरणुं को नहीरे। हिंसा ठोमीनें दया पालरे॥ आऊ० ॥ १ ॥ कुटुंव कवीला नारी कारणेंरे। मूरख संच्यां वज्जला पाप रे। चोर तणी परें ठंडी कूरशेरे। सहीश इहलोक परलोक संतापरे ॥ आ० ॥ २ ॥ ऊंचा चणाव्या मंदिर मालियारे। दे दे धरतीमें ऊंडी नींवरे एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवुंरे। सुख डुःख सहेशो आपणो जीवरे आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति हरिवल राणो केशवोरे। जो जो वली इंद्र सुरांनो नाथरे। ऊगी ऊगीनें ओल्ही आथम्यारे। जो जो कोइ अचरज वाली वातरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसस्यारे। करता मुनि नवला विहाररे। नारंम पंखीनी दीधी उपमारे। न धरे ममता नेह लगाररे ॥ आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पालै रूमी रीतशुंरे। देवे मुनि अपनो उपदेशरे। तीको मुनिवर सिधासी मोक्षनेंरे। जश लेई इह लोक परलोकरे ॥ आ० ॥

॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो मुनि भणयानुं अभिमानरे । ऋषि चोथमल सुत्र देखिनेंरे । जोम्ड कीधी जालोर मझाररे ॥ आऊ० ॥ ७ ॥

॥ ※ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरूं तारूं नाम । ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी । त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव । नेम नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आबू रिखभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं । भरतें भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वमुं । ज्यां वीशे जिन पाय । वैभारकगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांम्डवगढनो राजियो । नामें देव सुपाश । रिखभ कहै जिन समरतां । पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ※ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ डुविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अभिनंदन । बीजें जन्म्या ते प्रभु । भवडुःख निकंदन ॥ १ ॥ डुविध ध्यान तुह्मे परिहरो । आदरो दोयध्यान । एम प्रकाश्युं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन । ॥२॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनें भवि तजियें । मुझ परें शीतल जिन कहे । बीज दिन शिव भजियें ॥३॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चौवीशीयें । एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पामीया । प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत कल्याण । जिन उत्तम पद पद्मनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य बंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ त्रिगम्डे बेठा वीरजिन । भाखे भविजन आगें । त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन । निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो भवि भावसें । पांचम अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा । जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लह्युं । शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही । काश कुसुम उप

मान । लोका लोक प्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें । करे कर्मनो खेह । पूर्व कोमी वरसां लगे । अज्ञानिकरे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधक ज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घणो । अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी । पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुजदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए । कानसग्ग लोगस्स केरो । ऊजमणुं करो जावशुं । टाले जव फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी जाव अपार । वरदत्त गुण मंजरी परें । रंग विजय लहोसार ॥ ८ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण शुदि आठमें । संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या ऋषज जिणंद । दीक्षा पण ए दिन लही । हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म कस्या दूर । अजिनंदन चोथा प्रजु । पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जन्म्या सुमति जिणंद । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठवदि आठमें । मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आषाढ शुदि आठमें । पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें । नमि जन्म्या जगजाण । तिम श्रावण शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठम दिनें । चविया स्वामी सुपास । जिन उत्तम पदपद्मनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ※ ॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शाशन नायक वीरजी । प्रजुकेवल पायो । संघ चतुर्विध थापवा । महसेन वन आयो ॥ १ । माधव सित एकादशी । सोमल द्विजयज्ञ इंद्रजूति आदें मल्या । एकादश विप्र ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेहनो परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण विलाशी ॥ ऋषज अजित सुमति नमी । मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिववास पास । जवजवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । ऋद्धि सगली जो

डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां । दैढशें कल्याण । वरस अग्यार ए कादशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश पाठा । पूंजणी ठवणी विंटणी । मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अगीयार अ व्रत गंमवा ए । वहो पमिमा अगियार । खिमाविजय जिन शासनें । सफ ल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी । नाव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर नाखित वाणी । जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ए थुई चार वखत पण कहेवायछे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर जिन अंतर जनम्या तिहुअण जश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदी क्षा शिक्षा जगत निरासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव वहू पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अम अम मली मध्यम कालें वीश जिनेश्वर दिठा जी ॥ दो चउ चार जघन्य दशजंबू धायई पुक्खर मझारें जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगें प्रवचन सार उद्धारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा मी जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु णत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया जी । अपज्जवसिय जिनागम वंदो अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ णा रंगी समकित संगी विविध नंग व्रतधारी जी । चउविह संघ ती रथ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी देती तस जश ऋद्धीजी । श्री शुनवीर कहे शिव साधन । कार्य शकलमां सिद्धीजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्र णमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । हुं बीज तणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अन्निनंदन चंदन शीतल शीतल

नाथ । अरनाथ सुमतिः जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण । ॐ वीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ २ ॥ पर काश्यो वीजें डुविध धर्म भगवंत । जेम विमला कमला विउल नयन विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । वीजें सवि कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोम ल चीर । चक्केसरी केसरी सरस सुगंध शरीर । कर जोमी वीजें ॐ प्रणमुं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ※ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए । जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम वरण तन शोभतो ए । मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रभु आउखो ए । ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता मुक्ति मकार तो । वासुपूज्य चंपापुरी ए । नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां व ली ए । श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत शिखर वीश सिद्ध हुआ ए । शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए । भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलमी ए । कीजै तास जतन्न तो । मृपा न वोलो मा नवी ए । चोरी चित्त निवार तो । अनंत तीर्थंकर इम कहे ए । परहरियें परनार तो ॥३॥ गोमेद नामें जक्ष भलो ए । देवीश्री अंबिका नाम तो । शा सन सान्निध्य जे करे ए । करै वलि धर्मनां काम तो । तपगच्छ नायक गुण नि लो ए । श्री विजय सैन सूरिराय तो । रिखभदास पाय सेवतां ए । सफ ल करै । अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मंगल आठ करी जस आगल भाव धरी सुरराजाजी । आ ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग ल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरें व लीयाजी । आठमें आठ सुरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ ष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनूं तप करतां अम घर निरय निरय वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ वि

राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम जाखी । जवि मन संशय जांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी । आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीनें मानव जव फल लीजेंजी । सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी अ ष्टमहासिद्धि दीजेंजी । आठमनुं तप करतां लीजें निर्मल केवल ज्ञान जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ※ ॥

॥※॥ एकादशी अति रूअमी । गोविंद पूछे नेम । कोण कारण ए प र्व मोहोटुं । कहो मुऊशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ गिआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहै ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक सेवो । वन गजा जिमरेव । चौवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अगीआर अंग लखावियें । अगीयार पाठांसार । अगीआर कवली विंटणां ठवणी पूंजणी सार । चावखी चंगी विविध रंगी शास्त्रतणें अनुसार । एकादशी एम उजमो । जेम पामियें ज वपार ॥३॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । जुजदंम चंम अखंम जेहनें समरतां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि हर्ष पंमित शीश । शासन देवी विघन निवारो संघ तणां निश दीश ॥४॥

॥ ※ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुलि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विजोः शैशवे । रूपा लोकन विस्मया हृत रस ज्रांत्या ज्रमच्चक्षुषा । उन्मृष्टं नयन प्रजा धवलि तं क्षीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ ॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मरेणु कपिश क्षीरार्णवां जो जृतैः । कुंजै रप्सरसां प योधर जर प्रस्पर्धिजिः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माजिषे कः कृतः । सर्वैः सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥२ ॥ अर्हद्व क्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं वन्हर्थ युक्तं मुनिगण वृष जैर्धारितं बुद्धिमद्भिः । मोक्षाग्रद्वारजूतं व्रत चरण फलं ज्ञेय जाव प्रदीपं । जक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक

व्योमनील द्युतिमल सदृशं बालचंद्राभ दंष्ट्रं । मत्तं घंटारवेण प्रसृत मदज लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी । यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ ॥ इति

॥ ॥ अथ कल्लाण कंदं, सर्वदिन स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं । संतिं तओ नेमजिणं मुणिंदं । पासं पयासं सुगणिक्क ठाणं । भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं । पत्ता सिवंदिंतु सुइक्कसारं । सव्वे जिणंदा सुरविंद वंदा । कल्लाण वल्लीण विशाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाण मग्गे वर जाणकप्पं । पणासिया शेश कुवाइ दप्पं । मयं जिणाणं शरणं बुहाणं । नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींदु गोख्खीर तुसार वन्ना । सरोज हथ्था कमले निसन्ना । वाएसिरी पुथ्थय वग्गहथ्था । सुहाय सा अह्म सया पसथ्था ॥४॥ इति

॥ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठाकुरराम अपार । मंत्र मांहे नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र वखाणुं । जलधर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहे जिम ऋषभनो वंश । नाभि तणो जे अंश । क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशूरा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा । सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा । पद्म प्रभ सुख कंदा । श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धी । वासुपूज्य मति सुद्धी विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मल्लि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चौवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्धगिरि आव्या ईश ॥२॥ भरतराय जिन साथें बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । ऋषभ कहे सुणो भरतराय । छहरो पालंता जे नरजाय । पातिक भूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । भव त्रीजे ते सिद्धज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो । ते में आगम दिलमांहे आण्या । सुणतां सुख उरआण्यो ॥३॥ संघ पति भरत नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । नाभिराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी बहेन विख्याता । मूर्त्ति नवाणुं भ्राता

गोमुखनें चक्केसरी देवी। शेत्रुंजय सार करे नित्य मेवी। तपगच्छ ऊपर हेवी श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया। श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया। ऋषभ दास गुणगाया॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ※ ॥

॥ ※ ॥ महाविदेहखेत्रें सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी। रूपानां कोशीशा बिराजे रत्नना दीवा दीपेजी। कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोती ना अक्षत सारजी। त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥ केशर चंदन भरी रे कचोली। कस्तूरी बरासजी। पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगम ते परभातजी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचिंदिअ संवरणो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंचेंदिअ संवरणो। तह नवविह बंभचर गुत्ति धरो। चउवि ह कसाय मुक्को। इह अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो। पंच विहायार पालण समथ्थो। पंचसमिई तिगुत्तो। छत्तीस गुणेहिं गुरू मझ्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सामायिअ वयजुत्तो। जाव मणे होइ नियम संजुत्तो। छिन्नइ अ सुहं कम्मं। सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए। समणो इव सावओ हवइ जह्मा। एएण कारणेणं। बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधुं। विधें पारीउं। विधि करतां जे कोई अवि धि हुओ होय। ते सविहुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना। दश वचनना। बारै कायाना (एवं) बत्तीस दूषणा मांहे। जे कोई दूषण लागो होय। ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिछामिडुक्कडं ॥ १० ॥

॥ ※ ॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सागरचंदो कामो। चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो। जेसिं पौसह पडिमा। अखंडिआ जीविअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा। सुलसा आणंद कामदेवाय। जेसिं पसंसइ भयवं। दढव्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पो सह विधें लीधूं। विधें पारीऊं। विधि करतां जे कोई अविधि हुओ होइ।

तेसविऊं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥७०॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इछा कारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ॥ इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह । जग गुरु जगरख्खण । जग बंधव जग सथ्थवाह । जग भाव विअख्खण । अठावय संठविअरूव । कम्मठ विणासण । चउवी संपि जिणवर जयंतु । अप्पमिहय सासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभू मिहिं । पढम संघयणि । उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणवराण विहरंत लप्नई । नवकोमिहिं केवलिण । कोडि सहस्स नवसाहु गम्मई । संपइ जिणवर वीस मुणि । बिहु कोमिहिं वरनाण । समणह कोडी सहस दोअ । थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामी जयउसामी । रिसह सत्तुंजि उक्किंत पहू नेमि जिण । जयउ वीर सच्चउरिमंमण । भरुअछहि मुणि सुव्वय । महुरिपास डुह डुरिअ खंमण । अवर विदेहिं तिथ्थयरा । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअं । वंडु जिण सव्वेवी ॥ ३ ॥ स त्ताणवइ सहस्सा । लख्खा छप्पन्न अठ कोमीओ । बत्तीसय बासीआंइ । ति अ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नरस कोडि सयाइं । कोमी बायाल लख्ख अ डवन्ना । छत्तीस सहस असिआइं । सासय बिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति॥

॥ ※ ॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥ ※ ॥

॥※॥ नाणंमि दंसणंमिअ । चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आयारो । इअएसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे । उव हाणे तहय निन्हवणे । वंजण अथ्थ तडुभए । अठ विहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ । निव्वितिगिछा अमूढ दिठीअ । उववूह थि रीकरणे । वच्छल पभावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो । पंचहिं स मईहिं तिहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे । अप्भिंतर बाहिरे कुशल दिठे । अगिलाइ अणाजीवी नायव्वो सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्ती संखेवणं रस च्चाओ । काय किलेसो संलीणयाय । बझो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायछित्तं विणओ । वेयावच्चं तहेव सझाओ । झाणं उस्सग्गोविय । अप्भिंतरओ त वो होइ ॥ ७ ॥ अण गूहिअ बल विरिओ । परिक्कमइ जो जहुत्त माऊ

त्तो । जुंजइ अजहाथामं । नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्य दंतांशु केशरं । प्रात वीरजिनें द्र स्य । मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषा मभिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्षभ्र रात् सुखं सुरेंद्राः । तृणमपि गणयंति नैव नाकं । प्रातः संतु शिवायते जिनें द्राः ॥ २ ॥ कलंक निर्मुक्तममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयं । अपूर्व चंद्रं जिनचंद्र भाषितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥३९

॥ ※ ॥ अथ सुत्रदेवतानी स्तुति ॥ ※ ॥

॥※॥ सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं० । सुअ देवया भगवई । नाणा वरणीअ कम्म संघायं । तेसिं खवेउ सययं । जेसिं सुअ सायरे भत्ती ॥१॥

॥ ※ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जीसे खित्ते साहू । दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं । साहंति मुख्ख मग्गं । सादेवी हरउ डुरिआंइ ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनें । श्रावक, श्राविका, कटा सणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर वेशी, मुहपत्ती माबा हाथमां मुख पासें राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मु ख राखी। एक नवकार गणी (पंचिंदिअ)कही । इच्छामि खमासमण देई । इरि या वहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं । कहै । एक लोगस्सनो(अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै । खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ इच्छं ॥ इमकही । मुहपत्ती, तथा,अंगनी पडिलेहणना पंचाश बोल कही । मुहपत्ती पडिलेहीएं । पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायक संदिस्साउं ॥ इच्छं ॥ वली खमासमण देई । इच्छा०॥ सामायक ठाउं ॥ इ च्छं ॥ एम कही । वे हाथ जोडी। एक नवकार गणी । इच्छाकार भगवन् पसाय करी सामायक दंडक उच्चरावोजी । पछी गुरू प्रमुख वडेल करेमि भंते कहे । पछी खमासमण देई । इच्छा० वैसणो संदिस्साउं ॥ खमा०

इच्छा० ॥ वैसणो ठाउं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सिझाय संदिसाउं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सझाय करुं । इच्छं । एम कही । त्रण नवकार गणवा । पछी वे घमी सझाय धर्म ध्यान करवुं । इतिं सामायक लेवानी विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥※॥

॥※॥ खमासमण देई । इरिया वही पडिक्कमाथी (यावत्) लोगस्स सुधी कही ॥ खमा०॥ इच्छा०॥ मुहपत्ती पमिलेहुं (एम कही) मुहपत्ती पमिलेही । खमासमण देई॥ इच्छा०॥ सामायिक पारुं । यथाशक्ति। वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं तहत्ति कही । पछी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाइय वयजुत्तो०) कहिए ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणीओं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ देवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पछी पाणी वावर्युं होय (तो) मुहपत्ती पडि लेहवी । अनें आहार वावर्यो होय (तो) वांदणां वेदेवा । तिहां वीजा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पछी यथा शक्ति पच्चख्खाण करवुं । पछी खमासमण देई । इच्छा० कही । वमेरायें (अथवा) पोतें । चैत्यवंदन कहेवुं । पछी जंकिंचि०। नमोथ्थुणं०कही । ऊनाथईने । अरिहंतचेइयाणं कही । एक नवकारनों काऊस्सग्ग करी । नमोऽर्हत्०। कहीनें । प्रथम थुई कहेवी॥ पछी । लोगस्स०सवलोए अरिहंत चेइयाणं कही। एक नवकारनो काऊसग्ग पारीनें । वीजी थुई कहेवी ॥ पछी पुख्खरवरदी० कही । सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदण०। कही । एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी। त्रीजी थुई कहेवी । पछीसिध्धाणं बुध्धाणं कही। वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थू० । कही । एक नवकारनो काऊसग्ग पारी। नमोऽर्हत्०। कही। चोथी थुई कहेवी ॥ पछी वेशीनें नमोथ्थुणं कहेवुं (पछी) चार खमासमण देवापूर्वक । भगवान्,आचार्य,उपाध्याय, सर्व साधुभ्यः । प्रतें थोभ वंदन करीयें । पछी इच्छाकारेण०॥ (देवसिक प्रतिक्रमण ठाउं) एम कही । जमणो हाथ,चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ०॥ कहेवुं ॥ पछी ऊभा थई । करेमि भंते । इच्छामिठामि

काउसग्गं । जोमे देवसिओ०॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो। आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ॥ ते काउस्सग्ग पारीनें लोगस्स कहवो। पछी वेसीनें। त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा वे देवां ॥ पछी उन्ना थईनें। इच्छाकारे० ॥ देवसिअं आलोउं ॥ इच्छं आलोएमि जोमे देवसिओ० ॥ कहीने सात लाख कहेवा। पछी अढार पापस्थानक आलोइनें । सव्वस्सवि देवसिअ। कहीने बेसवुं । वेसीनें एक नवकार गणी। करेमिन्नंते। इच्छामि पमिक्कमिउं कहीने॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पछी वांदणां वे देवा। पछी । अब्भुठ्ठिओहं। अभ्निंतर देवसिअं खामीनें। वांदणां वे देवा । पछी ऊन्ना थई। आयरिय उवज्झाए, कहीने । करेमि न्नंते० ॥ इच्छामि ठामि० जोमे देवसिओ० ॥ तस्स उत्तरी०॥ कही । वे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो । ते पारीनें लोगस्स कही । सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं। वंदण०कही। एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीनें । पुख्खरवरदी०॥ सुअस्स न्नगवओ करेमि० ॥ वंदण० कहीनें। एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें । सिद्धाणं बुद्धाणं० कही। सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काउसग्ग करवो। ते पारी । नमोऽर्हत्० कही। (पुरुषें) सुय देवयानी पहेली थुई कहेवी (अने) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पछी खेत्र देवयाए करेमि काउसग्गं० ॥ एक नवकारनो काउसग्ग पारी । नमोऽर्हत्० कही। क्षेत्र देवतानी बीजी थुई। स्त्रीयें (तथा) पुरूषें वन्नेनें कहेवी । पछी एक नवकार प्रगट गुणी (वेसीने) छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेहीने। वे वांदणां दीजें (पछी) सामायक, चउवीसथ्थो, वंदनक, पमिक्कमणुं, काउसग्ग, अनें पच्चख्खाण, करंतुंजी। एम ए छ आवश्यक संन्नारवा । पछी इच्छामो अणुसट्ठिं । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत्० कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्द्धमानाय। कहे। अनें स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण कहे । पछी नमोथ्थुणं कही स्तवन कहेवुं (पछी) वरकनक कही न्नगवान् आदे वांदवा। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अड्ढाइज्जेसु कहेवुं। पछी देवसिअ पायच्छित्तनो काउसग्ग, चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो क

वो। ते काउसग्ग पारी। प्रगट लोगस्स कही। वेसीने। खमासमण देइ। इ
च्छा०। सिज्झाय संदिसाउं। बीजुं खमासमण देई। इच्छा० सिज्झाय नणुं। एम
सिज्झायनो आदेश मागी। एक नवकार गणी। सिज्झाय कहवी। पछी एक
नवकार गणी। खमासमण देई दुःखक्खओ कम्मक्खओ नो काउसग्ग।
चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो। ते एक वमेरे
(अथवा) पोतें पारीने। नमों ऽर्हत कही। लघुशांति कहीनें। प्रगट
लोगस्स कहे (पछी) इरिया वही०॥ तस्स उत्तरी० कही॥ एक
लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करी। प्रगट लोगस्स
कहेवो। पछी चउक्कसाय०॥ नमुथ्थुणं० कही॥ जावंति, वे। क
हीने। उवसग्ग हरं०॥ जयवीयराय० कही। मुहपत्ती पडिलेहवी। पछी
इच्छामि०। इच्छा० सामायिक पारुं॥ यथाशक्ति। इच्छामि०। इच्छा क्रा०॥
सामायिक पार्युं, तहत्ति कही। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी। ए
क नवकार गणीने। सामाइअ वयजुत्तो० कहेवुं। पछी थापेली स्थापना
होय तो एक नवकार गणी ऊठे। ए देवसी प्रतिक्रमण विधि कह्यो। वा
की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो। इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ॥

॥ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं। पछी। इच्छा०। इच्छा०। कही
कुसुमिण दुसमिणनो काउसग्ग चार लोगस्सनो (अथवा) शोल नव
कारनो करी। पारी। प्रगट लोगस्स कहेवो। पछी खमासमण देई।
जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन, जय वीयराय सुधी कहेवुं। पछी चार खमा
सण पूर्वक। भगवान्। आचार्य। उपाध्याय। अनें सर्व साधु। प्रत्येकें
वांदवा। पछी खमासमण वे देइ। सज्झायनो आदेश मांगी। एक नवकार
गणीनें। भरहे सरनी सज्झाय कहीने (फरी) एक नवकार गणवो। पछी इच्छ
कार सुहराईनो पाठ कहेवो। पछी इच्छाका०। राई प्रतिक्रमणे ठाऊं। क
हीने। जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने। पछी। इच्छं सव्वस्सवि राइय दु
च्चिंतिय०॥ कही। नमोथ्थुणं (तथा) करेमि भंते कही। इच्छामि ठामि काउ
स्सग्गं०॥ तस्सउत्तरी० कही॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो का
उस्सग्ग। पारीनें। प्रगट लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत०। कही। एक

लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करवो । पछी । पुख्खर वरदी०॥ सुअस्स०॥ वंदण०॥ कही । अतीचारनी आठ गाथानो (अथवा) न आवमे तो । आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं कही नें । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । (तिहांथी लेनें) अब्भुठिओ खामि । वांदणां वे दीजें (तिहां सुधी) देवसीनी रीतें जाणवुं । पण (जे) ठेकाणे देवसिअं आवे (ते) ठेकाणे राइयं कहेवुं । पछी आयरिअ उवझ्झाए० ॥ करेमि भंते० ॥ इच्छामि ठामि० ॥ तस्स उत्तरी०कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवमे तो । चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो । ते पारी प्रगट लोगस्स कही । छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । (पछी) सकल तीर्थ वंदन करीनें । यथाशक्तियें पच्चख्खाण करवुं । पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सामायिक, चउवीसत्थो, वंदनक, पमिक्कमण, काउसग्ग, पच्चख्खाण, करचुं छे जी । एम छ आवश्यक संभारवा । पछी पच्चख्खाण करचुं होय तो करचुं छे जी (अने) धारचुं होय तो धारचुं छेजी । एम कहेवुं । पछी इच्छामो अणुसठिं० । नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्०। कहीने । विशाल लोचन० ॥ नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही । एक नवकारनो काउसग्ग पारी । नमोऽर्हत् कही । कल्याणकंदनी प्रथम थोय कहेवी पछी लोगस्स० । पुख्खरवरदी० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार थोयो कहीए छीए (तिहां सुधी) सर्व कहेवुं । पछी नमुथ्थुणं० कही । भगवान् आदि चारने । चार खमासमणेंवांदवा । पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अढ्ढाइज्जेसु कहेवुं । (पछी) सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय०॥ काउसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये । तिहां सुधी करवुं ॥ पछी खमासमण पूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग० ॥ अने थोय कहीयें छियें । तिहां सुधी करवुं । पछी सामायक पारवाना विधि नीरीते सामायक पारवुं ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पख्खि प्रतिक्रमण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें (तिहां सुधी) सर्व कहेवूं । पण चैत्यवंदन, सकलाऽर्हतनुं, कहेवूं । अनें थोयो, स्नातस्यानी

कहेवी । पछी खमासमण देईने । इच्छाकारेण संदिसह भगवान् । देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता । इच्छाकारेण०॥ पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं । एम कही मुहपत्ती पडिलेहियें । पछी वांदणां वे दीजें । पछी इच्छाकारे०॥ संबुद्धा खामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अब्भिंतर । पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं० कही । इच्छाकारेण सं०॥ पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि । जो मे पक्खिओ अईआरोकओ कही । इच्छाकारेण सं०॥ पक्खी अतीचार आलोउं (एम कही) वृद्ध अतीचार कहियें । पछी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल वारव्रत । एकशो चोवीश अतीचार मांहे । जे कोई अतीचार । पक्ष दिवस मांहे । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां लाग्यो होय । तेसवे हुं मने वचने कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ सव्वस्सवि पक्खिअ । दुच्चिंतिअ । दुब्भासिय । दुच्चिठ्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इच्छाकारि भगवन् पसाओ करि पक्खि तप प्रसाद करोजी । एम उच्चार करीने आवी रीतें कहिए ॥ चउथ्थेणं एक उपवास । वे आंबिल । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ वे आसणा वे हजार सज्झाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कर्यो होय (तो) पइठ्ठी कहीए । करवो होय (तो) तहत्ति कहीयें । न करवो होय (तो) अण वोल्या रहीयें । पछी वांदणा (वे) दीजे । पछी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अब्भिंतर । पक्खिअं खामेउं । इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं०॥ पछी वांदणा (वे) दीजें । पछी देवसिअं आलोईअ पडिक्कंता । इच्छाका०॥ भगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं । सम पडिक्कमामि ॥ इच्छं ॥ एम कही । करेमिभंते सामाइयं० कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं । जोमे पक्खिओ० कहेवो । पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण संदि०॥ पक्खिसुत्तपढुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो त्रण नवकार गणीनें । श्रावक वंदित्तु कहे । (पछी) सुअ देवयानी थुई कहेवी ॥ पछी हेठा वेसी । जमणो ढिंचण ऊभो राखी । एक नवकार गणी । करेमि भंते०॥ इच्छामि पडि०कही ॥ वंदित्तु कहेवुं० ॥ पछी करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी०॥ अन्नथ्थ० ॥ कहीने वार १२ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो (ते लोगस्स) चंदेसु निम्मलयरा, सूधी

कहेवा ॥ (अथवा) अमृतालीश नवकारनो । काऊसग्ग करी पारवो ॥ पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । मुहपत्ति पडिलेहिनें । वांदणां वे दीजें । पछी इच्छाका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अब्भुठ्ठिओहं अभिंतर० ॥ पक्खिअं खामेऊ । इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइयाणं । जिंकिंचि अपत्तिअं० कही । पछी खमासमण देईनें । इच्छाका० ॥ कही । पख्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पछी देवसी प्रतिक्रमणामां वंदित्तु कह्या पछी । वे वांदणां देईनें (तिहांथी) ते सामायक पारीयें । तिहां सर्व सूची देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिनु कहेवुं । सज्झायने ठेकाणे उवसग्गहरं (तथा) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥ अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ※ ॥ इति पख्खि प्रति०॥

॥ ※ ॥ अथ चउमाशी प्रतिक्रमण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ये ऊपर कह्या मुजब पख्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) एटलुं विशेष । जे वार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे (वीश) लोगस्सनो काउसग्ग करवो (अनें) पख्खिना आगारनें ठेकाणे । चउमःशीना केहवा । यथा । तपने ठेकाणे । छेठणं वे उपवास । चार आंबिल । छ निवी । आठ एकाशणा । शोल वे आसणा । चार हजार सज्झाय । ए रीतें कहीए ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एपणऊपर लख्या मुजब । पख्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) वार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे । चालीश लोगस्स (अथवा) एकशोनें शाठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो (अने) तपनें ठेकाणे । अठम भत्तं (एटले)त्रण उपवास । छ आंबिल । नवनीवि । वार एकासणां । चोवीस वेआसणां। अने छ हजार सज्झाय (ए रीते कहेवुं) अने पख्खिना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार केहवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवकार पंचिंदिअ कही । इरियावही पडिक्कमवी । थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवुं । पछी तस्सउत्तरी कही । एक लोगस्स (अथ

वा) चार नवकारनो काउसग्ग करी । प्रगट लोगस्स कही । ऊने पगें बेसी मुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदिनो पडिलेहण करवुं । पछी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख ऊभो रही । इरिया वही पडिक्कमें । पछी । काजो परठववा जग्या शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सग्गो कही । काजो परठवे । पछी त्रण वार, वोसिरे, कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ पच्चख्खाण पारवानो विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें (पछी) जगचिंतामणिनुं चइत्यवंदन । जयवीयराय सुधी करवुं (पछी) मन्हजिणाणंनी सझाय कही मुहपत्ति पडिलेही । इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ पच्चख्खाण पारूं । यथाशक्ति इच्छामि०॥इच्छाका०॥पच्चख्खाण पार्युं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां (अथवा) चरवला ऊपर थापी । एक नवकार गणी । पच्चख्खाण कर्युं होय ते कहेवुं । ते लखीयें छीयें ॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं । पोरिसिं साढपोरसिं । गंठिसहियं । मुठिसहिअं । पच्चख्खाण कर्युं । चउविहार । आंबिल, नीवि, एकासणुं, बे आसणुं, कर्युं तिविहार । पच्चख्खाण फासि अं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्टिअं । आराहिअं । जंच न आराहिअं । तस्स मिच्छामि डुक्कडं । एमकही । एक नवकार गणवो॥ इति ॥※॥

॥※॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥※॥

॥ ※ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोधनें मनथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषथी दूर थाओ उछाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म पामी वृथा कां गमोछो । जैन मार्ग छंडी भुलाकां भमोछो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी नीरागी तजोछो । सलोभी समानी सरागी भजोछो । हरि हरादि अन्यथी शुं रमोछो । नदी गंग मूकी गलीमां पडोछो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंड माला । केइ देव उत्संगें राखे छे वामा । केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेई जपमाला । केइ मांसभक्षी महाविकराला । केइ योगिणी भोगिणी भोग रागें । केइ रुद्रणी छागनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश

राखे । तदा मुक्तिनां सुःखनें केम चाखे । जदा लोजना थोकनो पार ना व्यो । तदा मधनो बिंडुश्रो मनजाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ श राखे । तेह पिंमनें मलशुं लेश्र चाखे । दीन हीननी जीम ते केम जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ जाता जजो मोक्ष दाता । अलोजी प्रजूने जजो विश्वख्याता । रत्न चिंता म णि सारिखो एह साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि जेह प्राणी कहेछे । सवि धर्म एकत्व जूलो जमेछे । कीहां सर्पवानें कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखंडं । कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं । कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां ठागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की हां कूडवाणी । कीहां रंकनारी कीहां रायराणी । कीहां नारकीनें कीहां देवजोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी । नमो वीर स्वामी जजोअन्य वारी । जिसी सेजमां स्व मथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं सारमां मन्न माचै । जना मूढमां श्रेष्टशुं इष्ट ठाजे । तजो मोह माया ह रो दंजरोशी । सजो पुण्य पोशी जजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं सार अपार पामी । आव्या आश धारी प्रजू पाय स्वामी । तुंही तुंही तु हीं प्रजु पर्म रागी । जव फेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर जी अर्जछे एक मोरी । दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी । पुण्य उदय हुश्रो गुरु आज मेरो । विवेकें लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ नवकारनो छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें । श्री जिन शासन सार । निश्चै श्रीनवकार नित्य । जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल । नव पद नवे निधान । वीतराग श्रीमुख वदे । पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त । समस्यां संपत्ति थाय । संचित सागर सा तनां । पातक दूर पुलाय ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि । सद्गुरु जाषि त सार । सो जवियां मन शुद्धशुं । नित्य जपीयें नवकार ॥४॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिव

नाम कुमरनें सोवन पुरिसो सिद्ध। नवलाख जपंता नरक निवारे पामें भ
वनो पार। सो भवियां भत्तें चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ वां
धी वडशाखा छींकें वेसी हेठल कुंम्न कृताश । तस्करनें मंत्र समर्प्यो
श्रावकें उड्यो ते आकाश । विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले ढाले
अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर डुष्ट
विरोध । जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध। नवलाख जपं
तां थाये जिनवर इस्योछे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शील्यो मु
निवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परभव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो
परिगल रिद्ध। ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोंतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥
॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले । दीठो श्रीपास कु
मारें पन्नग अधबलतो ते टाले । संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र
भुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी पामी प्रि
य संयोग । इण ध्यानें कुष्ट टल्युं ऊंबरनुं रगत पित्तनो रोग । नि
श्चेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि
कृष्ण भुजंगम घाल्यो । घरणी करवा घात । परमेष्ठि प्रभावें हार फूलनो
वसुधा मांहि विख्यात । कमलावतीनें पिंगल कीधो पाप तणो परिहार
॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी बाण प्रहार । पद
पंच सुणंतां पांडुपति घर ते थइ कुंतानार। ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर
भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां शकट
पांचशें माल । दीधे नवकारें गया देवलोकें विलसे अमर विमान । ए मं
त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसें जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥
आगें चोवीशी हुइ अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद
न जाणे एम भाखें अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समरयांसंप
त्तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क
ठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनें एकमोर । सद्गुरु सन्मुख
विधियें समरंतां सफल जनम संसार सो० ॥ १५ ॥ सूलीकारोपण तस्कर
कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध।
शेठनें घर आवी विघ्न निवार्यो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्ठि

ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिझाय महा व्रत पंचङ्ग पंच सुमति समकित । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ ॥ १६ ॥ कलश (छप्पय) नित्य जपीयें नवकार सार संपत्ति सुखदाय क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध शुद्ध आचार्य भणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव कार सार संसारछे कुशल लाभवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि ऋद्धि वंछित लहे ॥ १७ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः नवकार छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुख कारण भवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम चउदे पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै करजोड । भु इ मंगल विचरै तारै भवियण कोड । सुरछंदे विलसै अतिसय जास अनंत । पहिलै पद नमियै अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरै भेदे सिद्ध थया भगवंत । पंचति गति पुहता अष्ट करम करिहंत । फल अफल सरूपी पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं वीजैपद वलि एह ॥ ३ ॥ गछ भार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणछत्तीसे थोम । श्रुत जाण शिरोमणि सागर जेम गंभीर । तीजै पद नमियै आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सुत्र भणावैसार । तप विध संयोगे भाषै अर थ विचार । मुनिवर गुण युत्ता ते कहियै उवझाय । चौथै पद नमियै अह निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी वारी विषय विकार । तस थावर पीहर लोक मांहै जे साध । त्रिविधै ते प्रणमुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण डायण भूत वेताल । सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल । इण समर्यां संकट दूरटलै त त्काल । जंपै जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ※ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षाः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं । सारं नव पदात्मकं । आत्मरक्षा करं व ज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सि स्थितं । ॐ नमो सव्व सिद्धाणं । मुखे मुख पटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरि

याणं । अंगरख्या तिशायिनी । ॐ नमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दढं । ॐनमोलोए सवसाहूणं । मोचके पादयो शुन्ने । एसो पंच नमुंकारो । शिला वज्रमईतले । सव पाव पणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स व्वेसिं । खादि रंगार धातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं । वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रन्नावा रक्षेयं । क्षुद्रो पद्रव नाशनी परमेष्टि पदोद्भुता । कथिता पूर्व सूरिन्निः । यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टी पदै सदा । तस्यनस्या न्नयं व्याधी । राधिश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ※ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुद्धे । नमो नाथ निश्चै करी एक बुद्धे । देवी देवलां अन्यनें शुं नमो छो । अहो न्नव्यलोको न्नुला कां न्नमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो छो । पड्या पाशमां न्नूतने कां न्नजो छो । सुरधेनु छंमी अजा शुं अजो छो । महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटे । ग्रहे कोण रासन्नने हस्ति साटे । सुरद्रुम उपाड कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रन्नु पाश सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रन्नावती प्राणनाथं । सहू जीवने जे करे छे सनाथं । महा तत्व जाणी सदा जेह ध्यावे । तेनां उःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा नुषोने वृथा कां गमो छो । कुशीलें करी देहनें कां दमो छो । नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं । न्नजो न्नगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न न्नाखे स दा हेत आणी । दयान्नाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे मेह वूठा । प्रन्नु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वीर जिणेसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विलशें नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि रिवर चढे । मनवंछित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें सर्व संजोग ॥२॥ जे वैरी विरुआ वंकमा । तस नामें नावे ढूकमा । न्नूत प्रेत नविमंन्ने प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल

काय । गौतम नामें वाधे आय । गौतम जिनशाशन शणगार । गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घ्रत गोल । मनवंछित कापड तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल ज्ञाण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोड वारू विलशै वंछित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना पाय ॥७॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम नामें निर्मल ज्ञान । गौतम नामें वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहु । गुरु गौतमना गुण छे बहु । कहे लावण्य समय कर जोम । गौतम तूठे संपत्ति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए । प्रभातें ऊठी मंगलिक कामें । शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी बेहेनमी ए । घट घट व्यापक अक्षर रूपें । शोल सतीमांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतीय शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषभ सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहे । जेह अनोपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी । शीयलवती शुद्ध श्राविका ए । अमदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम वल्लभा ए । जोवन वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव डुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांमव नारी । द्रुपद तनया वखाणीयें ए । एक शो आठे चीर पूराणां शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौशल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सलूणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए । तस घर घरणी मृगावती सती । सुरभुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची । राची नहीं विषयारसें ए । मुखडुं जोतां पाप बुलाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । जनकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ

यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी। कूवाथकी जल काढीयुं ए। कलंक उतारवा सतीय सुन्नद्रा। चंपा वार उघाडीयुं ए ॥ ॥११॥ सुरनर वंदित शीयल अखंम्मित। शिवा शिवपद गामिनी ए। जेह ने नामें निर्मल थइयें। वलिहारी तस नामनी ए ॥१२॥ हस्तिनागपुरे पां मुरायनी। कुंतानामें कामिनी ए। पांम्मव माता दशे दशारनी। वहेन पति व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी। त्रिविधें तेहनें वंदीयें ए। नाम जपंतां पातिक जाए। दरिशण डुरित निकंदियें ए ॥१४॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी। दमदंती तस गेहिनी ए। संकट पडतां शीयलज राख्युं। त्रिनुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग जन पूजिता। पुप्फचूला नें प्रन्नावती ए। विश्व विख्याता कामितदाता। शो लमीसती पदमावती ए ॥१६॥ वीरें न्नाखी शास्त्रें साखी। उदयरतन न्नाखे मु दा ए। वाहाणुं वातां जे नर न्नणशे। ते लेशे सुख संपदा ए ॥१७॥ इति॥

॥ ※ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शेत्रुंजय ऋषन्न समोसख्या। न्नला गुण न्नख्यारे। सीधा साधु अनंत। तीरथ ते नमुंरे। तीन कल्याणक तिहां थया। मुगतें गयारे। ने मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो। गिरि सेहरोरे। न्नरतें न्नराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिन्नलो। त्रिनुवन तिलोरे। विम ल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो। रलीयामणोरे। सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती०॥ नयरी चंपा निरखीये। हीये हरखीयेंरे। सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी। ऋद्धें न्नरीरे। मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें। डुःख वारीयेंरे। अरिहंत बिंब अ नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें। चिरनंदीयेंरे। अरिहंत देहरा आ ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो। पंचासरोरे। फलोधी थंन्नणपाश ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो। अमीझरोरे। जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो। जात्रा करोरे। राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ श्रीनाम्मोलाई जादवो। गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० नंदीश्वरनां देहरा। बावन न्नलारे। रुचक कुंडले चार चार ॥ ती० ॥७॥ शाश्वती अशाश्वती। प्रतिमा ठतीरे। स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ती०॥ तीरथ जात्रा

फल तिहां । होजो मुज इहां रे । समयसुंदर कहे एम ॥ती०॥इति॥※॥

॥ ※ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ※॥

॥ ※ ॥ श्रीराणपुरो रलीयामणुंरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मो ह्युंरे । उत्तंग तोरण देहरुंरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च उवीश मंमप चिहुं दिशेंरे ला०॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुव नदीपक देहरैंरे ला० ॥ समोवमु नही संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहास्या भोंयरांरे ला० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुंरे ला० ॥ मोटो देश मेवामु ॥ म० ॥ लख्ख नवाणुं लगावीयारे ला० ॥ धन धन्नो पोरवामु ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख रतर वसई खांतशुंरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद वी जा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री०॥ ५ ॥ आज कृता रथ हुं थयोरे ला० ॥ आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं डुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल ब्यिंतरैरे ला० ॥ मागशिर माश मकार ॥ म० ॥ राण पुरें यात्रा करीरे ला० ॥ समयसुंदर सुखकार ॥ म०॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ※॥ ईमर आंबा आंबलीरे॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुक्खलवइ विजयें जयो रे । नयरी पुंमरीगणी सार । श्री सीमंधर साहिबा रे । राय श्रेयांस कुमार । (जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह) ॥ १ ॥ (आंकणी) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरो रे । गिरुआ नवि दाखंत । शशि दरिशण सायर वधैरे । कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ गाम कुगाम न लेखवैरे । जग वरसंत जलधार । करदोय कुसुमें वासियेंरे । बया सवि आधार ॥ जि० ॥३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें श शि सूर । गंगाजल ते विहुं तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥४॥ सरिखा सज्जने तारवा रे । तिम तुमे गे महाराज । मुजशुं अंतर किम क रो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे । ते न

वि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे । नंदन रुकमणी कंत । वाचक जश इम वीनवे रे । भयभंजन भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिकं प्रारंभ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालरुवानां गीत । सोना रूपानें वली रत्नें जडिउं पालणुं । रेशम दोरी घूघरी वागे घुम घुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदनें ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्व प्रभुथी वरस अढीशें अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण । केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली । साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण । हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रीके जिनराज । वीता बारे चक्री नहि हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रभुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कूखें आव्या तारण तरण जिहाज । मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन शिर ताज । मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज । हुंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुझनें डोहलो उपन्यो जे वेसुं गज अंबाडीयें । सिंहासन पर वेसुं चामर छत्र धराय । ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहरा तेजनां । तेदिन संभारुंने आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारनें आठ छे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें लंछन सिंह विराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमे । नंदन भोजाइयोना देवरछो सुकुमाल हसशे भोजाइयो कही देवर माहरा लाडका । हसशे रमशेनें वली चुंटी खणशे गाल । हसशे रमशे नें वली हुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमा राजाना भाणेज छो । नंदन नवला पांचशें मामीना भाणेज छो । नंदन मामलिआना भाणेजा सुकुमाल । हसशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा । आंख्यो आंजी ने वली टबकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां । रतने जडीआ झालर मोती कशबी कोर । नीला पीलानें वली राता सरवे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन

मामा मामी सूखमली सऊ लावशे । नंदन गजुवे न्नरशे लाडू मोती चूर । नंदन मुखमां जोइने लेशे मामी न्नामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो सुख न्नरपूर ॥ हा० ॥ ए ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती । मारी न्नत्रीजीने वेन तमारी नंद । ते पण गुंजे न्नरवा लाखणसाई लावशे । तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो । वली शूमा मेनां पोपट ने गजराज । सारस हंस कोयल तीत्तरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ । नंदन तमने अमनें केलीवरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंमलें । बऊ चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥१२ ॥ तमने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाञ्न कमाय । मुखडा ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा । वली तनपर वारुं ग्रह गणनो समुदाय ॥ हा० ॥१३॥ नंदन नवला न्नणवा नीशालें पण मूकशुं । गजपर अंबाडी बेसामी मोहोटे साज। पसली न्नरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं। सूखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं । वहूवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार । सरखा वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं । वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा०॥ ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेऊ पक्ष नंदन ऊजला । माहरी कुखें आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वूठा अमृत दूधे मेऊला । माहरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज । बलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ निंदावारक सज्झाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे । निंदानां बोल्या महा पापरे वयर विरोध वाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय बापरे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुह्मेरे । पगमां बलती देखो सऊ कोयरे । परना मैला में धोयां लूगमां रे । कहो केम ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सं

भाखो सहुको आपणोरे । निंदानी मूंको परी टेवरे । थोडे घणे अवगुणे सहु भस्यारे । केहनां नलिया चुए केहेनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकीरे । तप जप कीधुं सहु जायरे। निंदा करो तो करजो आपणीरे । जेम छूटकवारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणोरे । जेहमां देखो एक विचाररे । कृष्णपरें सुख पामशो रे । समयसुंदर सुखकाररे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री आनंदघनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ऋषभजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे । उर न चाहुंरे कंत । रीज्यो साहेब संग न परिहरेरे । भांगे सादि अनंत ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाईरे जगमां सहु करेरे । प्रीत सगाई न कोय । प्रीत सगाईरे निरुपाधिक कहीरे । सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करेरे । मिलसुं कंतने धाय । ए मेलो नवि कहिये संभवेरे । मेलो गम न गम ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति घणो तप करेरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धस्युंरे । रंजन धातु मिलाप ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीलारे अलख अलख तणीरे । लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि घटेरे । लीला दोष विलास ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नेरे पूजन फल कह्युंरे । पूज अखंमित एह। कपट रहित थई आतम अरपणारे। आनंद घन पद रेह ॥ ऋष०॥६॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मारुं मन मोह्युंरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥

॥❋॥ पंथडो निहालुं वीजा जिनतणोरे । अजित२ गुण धाम । जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्युं मुऊ नाम ॥ पंथ०॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतोरे। भूलो सयल संसार। जेणे नयणे करी मारगजोइयेरे । नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथ ॥२॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतांरे । अंधो अंध पुलाय । वस्तु विचारेरे जो आगमें करीरे । तोचरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥३॥ तर्क विचारेरे वाद परंपरारे । पार न पहोचे कोय । अभिमतें वस्तु वस्तुगतें कहेरे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारेरे दिव्य

नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वा सित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लब्धि लहो पंथ निहालसुंरे । ए आस्या अविलंब । ए जन जीवैरे जिनजी जाणजोरे । आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री संभवजिन स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रातडी रमिनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ संभवदेव ते धुर सेवो सवेरे । लहि प्रभु सेवन भेद । सेवन कारण पहेली भूमिकारे । अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥ भयचंचलताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक भाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां थाकीयें रे । दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो चरम करण तथा रे । भव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले भलीरे प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव० ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधसूं रे । अकुशल अपचय चेत । ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे । परिशीलन नय हेत ॥ संभव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजेरे । एमां कोइ न वाद । पण कारण विण कारज साधीयैंरे । ए जिन मत उनमाद ॥ संभव० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे । सेवन अगम अनूप । देजो कदाचित सेवक याचनारे । आनंदघन रस रूप ॥ संभव० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥※॥ अभिनंदन जिन दरिशण तरसीये । दरशण दुर्लभदेव । मत मत भेदेंरे जो जई पूछीयें । सहु थापे अह मेव ॥ अभि०॥१॥ सामान्ये करी दरशण दोहलूं । निरणय सकल विशेष । मदमें घेर्योरे अंधो किम करे । रवि शशि रूप विलेख । अभि०॥२॥ हेतु विवादें हो चित्त धरि जोइयें । अति दुरगम नय वाद । आगमवादेंहो गुरुगमको नहीं । ए शवलो विषवाद ॥ अभि०॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा । तुझ दरिशण जगनाथ । धीठाई करी मारग संचरूं । सेंगू कोई न साथ ॥ अभि०॥ ४ ॥ दरिशण२ रटतो जो फरूं तो रण रोझ समान । जेहने पीपासा हो अमृत पाननी । किम भाजे विष पान ॥ अभि० ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो । सीजे जो

दरिशण काज। दरिशण डुर्लभ सुलभ कृपा थकी। आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते॥ॐ॥

॥ॐ॥ राग वसंत (तथा) केदारो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा। दरपण जिम अविकार। सुग्यानी ॥ मति तरपण वहु सम्मत जाणियें। परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा। वहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो। परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुद्धें हो कायादिक ग्रह्यो। वहिरातम अघरूप। सुग्यानी। कायादिकनो हो साखी धर रह्यो। अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥३॥ ज्ञानानंदहो पूरण पावनो। वरजित सकल उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू। इय परमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥४॥ वहिरातम तज अंतर आतमा। रूप थई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमातमनुं हो आतम भाववूं। आतम अरपण दाव सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां। भरमटले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे। आनंदघन रस पोष सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी। विविध भंगी मन मोहेरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता। उदाशीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी करुणा। कर्म विदारण तीक्ष्णारे ॥ हाना दाना रहित परणामी। उदाशीनता विक्षणारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण पर दुख रीझेरे। उदासीनता उभय विलक्षण। एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मलक्षय करुणा। तीक्षणता गुण भावेरे। प्रेरण विणु कृत उदाशीनता। इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ॥४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता। निर्ग्रंथता संयोगेरे। योगी भोगी व

का मौनी। अनुपयोगि उपयोगेंरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी। चमतकार चित्त देतीरे। अचरिजकारी चित्र विचित्रा। आनंदघन पद लेतीरे ॥ ※ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम जतन करीनें राखुं। तिम तिम अलगुं भाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती ऊजरु। गयण पायालें जाय। साप खायने मुखडुं थोथुं। एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलाषी तपीया। ज्ञानने ध्यान अभ्यासें। वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते। नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें। नावे किणविध आंकूं। किहां कणे जो हठकरी हटकूं। तो व्याल तणी परें वांकूं हो ॥कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं। साहुकार पण नाही। सर्व मांहेनें सहुथी अलगुं। ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं०॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे। आपमतें रहे कालो ॥ सुर नर पंडित जन समजावे। समजे न माहरो सालो हो ॥ कुं० ॥६॥ मैं जाण्युं ए लिंग नपुंसक। सकल मरदनें ठेलै। बीजी वातें समरथ छे नर। एहनें कोइन झेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सगलुं साध्युं। एह वात नही खोटी। एम कहे साध्युं ते नवी मानुं। ए कहिवतछे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य ते वस आणुं। ते आगमथी मतिआणुं। आनंदघन प्रभु माहरुं आणो। तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ए ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांमीनें (यावत्) लोगस्स कही। पछी उत्तरासण करी। चैत्यवंदन। नमुत्थुणं कही, अडधुं जयवीअराय। आभव मखंमा सूधी हाथ जोडी कहे। (वली) चैत्यवंदन, कहीने। नमुत्थुणं। कही, (यावत्) चार थोयो कहीये छीयें तिहां सूधी वधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं कही। (वली) चार थोयो कहीयें त्यां सुधी वधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं, (तथा) बे जावंती कही। स्तवन कही। अरधुं जयवीअराय आभवमखं

मा सूधी कही । पछी चैत्यवंदन कही । नमुत्थुणं कही ।(आखो) जय वीय राय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवा । (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सज्झाय कहेवी । अने मध्यान्हे (तथा) सांझे देव वांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ज्ञान विमलजी कृत, चउमाशी देववंदन विधिः ॥※॥

॥※॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी । लोगस्स० कही एक खमासमण देई । इच्छाका० श्री ऋषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं । एम कही चैत्यवं० करें ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥※॥

॥※॥ प्रथम जिनेसर ऋषभ देव । सवठथी चविया । वदि चउथें आषाढनी । शक्रें संस्तविया । अठमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रभुजा या । दिक्षा पण तिणहीज दिने । चउ नाणी थाया । फागण वदि इग्या रसी ए । ज्ञान लहे शुभ ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद निधान ॥ १ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ इहां नमुत्थुणं० । अरिहंत चेइयाणं० । वंदण वत्तिया कही । एक नवकारनो काउसग्ग पारी । ४ थुई क्रमसें कहियें । ते लिखियै छीयें ॥

॥※॥ अथ थोय जोडो प्रारंभः ॥※॥

॥※॥ ऋषभ जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का या मंगला जासजाया । वृषभ लंछन पाया देवनर नारी गाया । पण सय धनु काया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी श उदार । एक नेम विना सवि समवसर्या निरधार । गिरि कमणें आ वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गम सुत्र मझार । सिद्धा चढें सीधा बोल्या वङ अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन भेटे थावे। सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेश्वरी शासननी रखवाल । ए ती रथ केरी सांनिध करे संभाल । गिरुओ जस महिमा संप्रति कालें जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ इहां । नमुत्थुणं, जावंती (वे) कही नमोर्हत् ० कही स्तवन कहेवुं॥

॥ ※ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ललनानी देशी) आदि करन अरिहंतजी। ऊलगमी अवधार ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें । वंछित फल दातार ॥ ललना. ॥ १ ॥ आदिकरण अरिहंतजी (ए आंकणी) उपगारी अवनी तले । गुण अनंत ज्गवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ललना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतु निरधार ॥ ललना ॥ आ०॥३॥ वंश इक्षाग छे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ ज्ररतादिक थया केवली । अनुज्नव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाज्निराय कुल मंमणो मरु देवी सर हंस ॥ ललना ॥ रुषज्नदेव नित वंदियें । ज्ञान विमल अवतंस ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्री रुषज्न जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पछी जय वीयराय अर्धों कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें मुनि थया । पोषी इग्यारस । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय रुपारस । वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको कावसग्ग करके । थुईकी गाथा कहै (इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो) ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । ज्नविकजन नगीनो जेहथी मोहलीनो । ऊं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय ते दीनो । ताहरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री संज्नवनाथ चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी । चविया श्री संज्नव । फागुण शुदि आ

ठम दिनें । शुदि चउदसी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासें जनमीया । त
णी पूनम संजम । कार्त्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंच
मी चैत्रनी ऊजली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रभु प्रणम
तां । सीझे सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन संभवसारु । लंछनें अश्वधारु । भवजलनिधि तारु । काम
गद तीव्र दारु । सुरतरु परिवारू । दूसमाकाल मारू । शिवसुख करता
रु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥※॥ जयंत विमान थकी चव्या । अभिनंदन राया । वैशाख शुदि चौथें
माघ सुदि बीजे जाया । माहाशुदि बारशें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चउदस ।
केवल शुदि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चउथा जिनवरनें नमी ए ॥
चउगति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पार ॥

॥ ※ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अभिनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । घ
र्पिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंछनें वानरिंदो । जस आगल
मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय
क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं
जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारश ऊज
ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस
सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोडि कापे । सुमति सुजन
व्यापे । बोधिनुं बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें ।
कुमति कदली नावें । जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन ०५॥

॥ ※ ॥ अथ श्री पद्म प्रभ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या । माहावदि ७० दिवसें । कातीवदि बारसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रभ स्वामी चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ※ ॥

॥ ※ ॥ पद्मप्रभु सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । मुगति वधु मनावे । रक्त तनु कांति फावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ※ ॥ ६ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । भादरवा वदि आठमे । अवतरिया खास । जेठ शुक्ल बारसी जण्या । तस तेरसे संजम । फागुण वदि छठे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए । साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि नितु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सातमा श्री सुपासें । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय भवि गुणरास जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ※ ॥ ७ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री चंद्र प्रभजिन चैत्य वंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा । चंद्रप्रभ सम देह । अवतरीया विजयंतथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेरसें साध फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । भाद्रव सातम शिव लह्या ए । पूरी पूरण ध्यान । अठ महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अभिधान ॥१॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ नरगति पामी उद्यमें धर्म्मधामी । जिन नमो शिरनामी चंद्र प्रभ नाम स्वामी । मुक्त अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति वरगामी सेवना पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम । बीजुं पुष्फ दंत । फागुण वदि नव में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जण्या । तस छठ्ठ दिक्षा । काती शुदि त्रीजें केवली । दिये वक्र परें शिक्षा । शुदि नवमी ज्ञा द्रवा तणी ए । अजर अमर पद होय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्ये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुविधि जिन भदंत । नाम वली पुष्फ दंत । सुमति तरुणि कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मडंत । लब्धि लीला वरंत । भव ज लधि तरंत । तेनमीजे महंत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ※ ॥ ए ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि वैशा खी छठ्ठे । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि बारस जनम दिख्या । तस बारसें लीध । वदि पोष चवदश दिने । केवली परसिद्ध । वदि बीजे वै शाखनी ए । मोक्ष गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजथी । सीझे स घला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुण शीतल देवा वालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा । तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमते नित्यमेवा । सुख सुगति लहे वा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ※ ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि वस छठें । करत वक्र आनंद । फागुण वदि बारसें जनम । दीक्षा तस ते रस । केवली माह अमावसि । देसन चंदन रस । वदि श्रावण त्रीजे ल ह्या ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यत्ते ॥ ॥

॥ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्वाग वंश । विजित मदन कंस शुद्ध चारित्रहंस । कृत नय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषभ ककुद अंश । ते नमुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ॥

॥ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फागुण चौदशी । अमावसी संजम । माह शुदि बीजे केवली । चौदशि आषाढी । शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट । सवि दूरे काढी । वासुपूज्य जिन बारमाए । विद्रुम रंगे काय । श्री नयविमल कहे इस्युं । जिन नमतां सुख थाय ॥

॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥

॥ ॥ वसुदेव नृप तात । श्री जयादेवी मात । अरुण कमलगात । महिष लंछन विख्यात । जसगुण अवदात । शीत जाणे निवात । होय नित सुखशात । ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥१२॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या । माधव शुदि बारस । शुदि महात्रीजें जण्या । तस चोथे व्रत रस । शुदि पोष छठ्ठे लह्या । वर निर्मल केवल । वदि सातमि आषाढनी । पाम्या पद अविचल । विमल जिणेसर वंदिएं ए । ज्ञान विमल करी चित्त । तेरसमो जिन नितु दिये । पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥

॥ ॥ विमल विमल भावे वंदतां दुःख जावे । नव निधि घर आवै विश्वमां मान पावे । सुयर लंछन कावे भोमिभर स्वेद थावे । मनु विनति जणावे । स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति ॥

॥ ॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ प्राणत थकी चविया इहां । श्रावणवदि सातम । वैशाखवदि तेरसी । जनम्या चउदसें व्रत । वदि वैशाखे चउदसि । केवल पुण्य पाम्या । चैत्रशुदि पंचमीदिने । शिववनिता काम्या । अनंतजिनेश्वर चउदमा

ए । कीधा डुष्मन अंत । ज्ञानविमल कहेनामथी । तेज प्रताप अनंत॥१४॥

॥ ※ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनी कोट ठीजें । शिव सुख फल लीजें सिद्धि लीला वरीजें । बोधि बीज मोह दीजें एटलुं काज कीजें । मुऊ मन अति रीऊे स्वामिनुं कार्य सीऊे ॥ १ ॥ ※ ॥ १४ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मासनी । शुदि त्रीजें जनम । तेरस माहिं ऊजली । लीये संजम न्नार । पोषि पूनमे केवली । गुणना न्नंडार । जेठी पांचमी ऊजलि ए । शिवपद पाम्या जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहे न्नीनो । वररमण शचीनो । जेहने वर्ण लीनो । त्रिन्नुवन सुख कीनो लंछने वज्र दीनो । नवि होय ते दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ※ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ न्नाद्रवा वदि सातमें । दिने सवठथी चविया । वदि तेरस जेठें जएया । डुःख दोहग समीया । जेठि चनदस वदि दीने । लीये संजमवेम । केवल उज्ज्वल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोलमा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥१६॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिन्नुवन सुखकारी सप्त न्नय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चनद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी मोदे हरित मृगारी ॥ १ ॥ शुन्न केशर घोली मांहे कपूर चोली । पेहरी सीत पटोली वासियें गंधधूली । न्नरी पुष्पपटोली टालीयें डुःख होली । सवि जिनवर टोली पूजीयें न्नाव लोली ॥ २ ॥ शुन्न अंग इग्यार तेम उपांग बार । वलि मूल सुत्र चार नंदी अनुयोगद्वार । दशपयन्न उदार ठेदखट वृत्ति सार । प्रवचन विस्तार न्नाष्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन

दृष्टी सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखदंदा । ज्ञानविमल सूरिंदा साम्य माकंद कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य नंदा ॥ ४ ॥ इति ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥※॥

॥ ※ ॥ (मोतीमानी देशी) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति करण श्री शांति जिणंदा । साहिबा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ (ए आंकणी) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मात्र न रहुं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । छंड्यो पण तुह्मे नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुह्मे कोइशुं नेह न लावो । वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे । पण गेरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्तिखांची मन मांहे आण्यो । सहज स्वभावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसेवा अंकें जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कबजे आव्याती छूटीजें । जेह मुह मांगे तेह्ज दीजें ॥ सा० ॥ अभेद पणें जो मनमां मलशो । कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अरखय भाव निधी तुम पास । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रभुताई । दीधी साहेब एह वडाई॥सा०॥

॥ ※ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सर्वठथी चविया । वदि चउदश वैशाखनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम भार । शुदि त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पाम्या अविचल ठाण । छठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन कुंथु दयाला छाग लंछन सुहाला । जस गुण शुभ माला कंठे पेहरो विशाला । नमति भवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुवन तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सरवारथथी आविया फागुण शुदि बीजें । मृगशिर शुदि द

शमी जएया अरदेव नमीजे । मृगशिर शुदि एकादशी संजम आदरीयो । काती उज्जल वारसें । केवल गुण वरीओ । शुदि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीनें नमुं नय कहे जोमी हाथ ॥ १७॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ अरजिन ए जुहारूं कर्मनो क्लेश वारूं । अहनिश संभारूं ताह रूं नाम धारूं । कत जय जय कारूं भाप्त संसार सारूं । नविहोय ते सारूं आपणो आप तारूं ॥ १७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चउथें । मृगशिर शुदि इग्यारसें जनम्या निग्रंथे । ज्ञान लह्या एकणदिनें कल्याणक तीन । फागु ए सुदि वारसें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीलमाए । उगणी शमा जिनराज । अणपरण्या अणनूप पद । नवजल तरण जहाज ॥१९॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन मल्ली महिला वानछे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री तणें नाम पीला । उशमन सवि पील्या स्वामि जोछे वसीला । अविचल सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ अंधारमी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि वारसें व्रत वदि वारसें ज्ञान फागुणनी तेम जेठ नवमी । कृष्णें निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्जला । ति क्रयण करे भकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास॥२०॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी ऊं नमुं शीश नामी । मुऊ अंतर जामी का मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया श्रावण वदि आ

ठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगार । मृगशिर शुदि इग्यारसें वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए अखय अनंता सुख्ख । नय कहें श्री जिननामथी नासे दोहग डुक्ख ॥ २१॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नहीं विश्वगानो । सुत वप्रा मानो पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंभ ठे जे कृपानो । सविभुवन प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि बारस । श्रावण शुदि पंचमी जण्या । यादव अवतंस । श्रावण सुदि छठे संजमी । आसौज अमावस नाण । शुदि आषाढनी आठमे । शिवसुख लहे प्रमाण । अरिठ नेमि अणपरणीया ए । राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लोकोत्तर व्रतंत ॥ २२ ॥ इति ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गया शस्त्रागारें शंख निज हाथ धारें । कियो शब्द प्रचारें विश्व कंप्यो तिवारें । हरि संशय धारे एहनी कोइ सारे । जयो नेम कुमारे । बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपें विचरंता जिन देव । अम्धातकी खंभे सुरनर सारे सेव । अड पुष्कर अरधें इणिपरें वीस जिनेश । संप्रतिए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम भवजल निधिने तारे । कोहादिक मोटा मच्छतणा भय वारें । जिहां जीवदया रस सरस सुधारस दाख्यो । भवि भाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशासन सान्निध्य कारी विघन विभारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे शेत्रुंज गिरि सेवो जिम पामो भवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ※ ॥

॥※॥ रहो रहोरे यादव दो घमीयां । दोघमीयां दोचार घडीयां । रहो रहोरे यादव०॥ (ए आंकणी) । भोज महिराण शिवादेवी जाया । तुमें ठो

आधार अमवडीयां ॥१॥ रहो०॥ नाद विवाद चाद करीआए । क्युं जावत फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुयं पोकार सुणीय किय करुणा । गोमीदीए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो०॥ २ ॥ गोद विठाउं में वली जाउं । करुं वीनति चरणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पीयुविण दीहाते वरिस समोवड । न गमें स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन । वांमी वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टन्नवांतर नेह निवाहत । नवमे न्नवेते वीठडीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि चडीयां ॥ रहो०॥ पीयुकरे निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां॥ रहो०॥५॥ जादववंश विन्नूषण नेमजी । राजुल मीठी वेलडीयां ॥रहो०॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंखमीयां॥ रहो०॥६॥

॥ ※ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी जनम त्रिन्नुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण नूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख न्नरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारन्न्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे विघननें जे विमारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडिं वारे । मुक्त प्राणाधारे मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुन्नव लयलावे केवल ज्ञान पावे । पटजे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सविजिन वर न्नाण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार । दश सत्य प्रकार पच्चख्खाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेन्नया जिहां उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला जे महा लोग पाला । सुरनर महिमाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल विशाला ज्ञान लच्छी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥४॥

॥ ※ ॥ अथ स्तवन प्रारंन्नः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ थारे माथे पचरंगी पाघ सोनेरो छेगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ ॥ प्रभुपासजिणेसर भुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिबजी ॥ ली ला अलवेसर धीरम मंदर भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनु छवि निरमल जलधरो । सा० ॥ १ ॥ तुं अकृय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुमगुण भोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी निजमतें ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ षट दर्शन भासे युक्ति निरासें शासनें ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा लें सहज समाजे भावनें ॥ सा० ॥ तुं ज्ञाननें ज्ञानें आतम ध्यानें आत मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी भेद अभेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेकें देखियें ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अ कामी लेखियें ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी छो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥ अपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि यत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विना शी तुं जित काशी कविभणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी लायक नाथ छे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ छे ॥ सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिभुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकां ति एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुदगल भो गें तें दह्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु समीयो सुरवर नमियो सहूकहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुणलहे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इम तुम गुण थुणीयें कर्मनें हणीये पलक मां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणिये सेवक गणीयें ललकमां ॥ सा० ॥ वामा चे नंदा त्रिभुवन इंदा संथुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय वंदा गुण भणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें प्राणतथी चवीया । तेरस चैत्रह शुदि दिने त्रिशलायें जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिनें आपे संजम आराधे शुदि दशमी वैशाखनी वर केवल साधे । काती कृष्ण अमावसीए शिव

गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ※ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ लह्यो भवजल तीर धर्म कोटीर हीर । डरति रज समीर मोह मूसार सीर । डरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर चरण कल्पद्रु-कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग जंतु दयाला धर्मनी शाख शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला सुरनर महिपाला वंदता छे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी रचाणी । सुगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि सुखनी निशाणी । डुह पीलण घाणी सांभलोभाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुण वाला देव देवी कृपाला । करो मंगल माला टालीने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजें विशाला॥४॥

॥ ※ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज गईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ※ ॥

॥※॥ वंदो वीर जिणेसर राया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंछन कंचन वनकाया । मुझ मन मंदिर आयाजी ॥ वंदोवीर० ॥१॥ डुषम समये शासन जे हुना । शीतल चंदन छायाजी । जे सेवंतां भविजन मधुकर । दिन दिन होत सवायाजी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी॥वंदो०॥३॥ कर्म कठिन भेदन वलवनर । वीर विरुद जिन पायाजी । ए कल मल अतुली वल अरिहा । डुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो० ॥४ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान वजायाजी ॥ वंदो०॥ ५ ॥ गुण अनंत भगवंत विराजे । वर्धमान जिनराया । जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥वंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीयराय कहेवो ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥※॥

॥ ※ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयठाण । स्याद्वाद साधन पद एही अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (संहीए नमो जिणाणं)॥ २ ॥ ए

(आंकणी)॥ विङ्क तेरलख्ख सग्ग कोमि नवणवई। सासय जिणहरमाणं। तेरशें नव्याशी कोमी। सग्गसठि विंवह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही०॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन। यमक कुंमद्रह जाणुं। एकत्रीश ओगणयासी जिनवर। मानवलोकें वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख इक्यासी सहस चारसो व्याशी अधिक विंव जाणुं। रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें। सुंदर अशी चेईयाणुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अमशत सय सहसा चालीसा। विंवतणुं परिमाणं। सखाले बत्रीशसें गुण सठी। तिर्यक् लोकें चेईयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं। चउसय तेवीस परिमाणं। साठ चौवारा अवर त्रिवारा। रुचक कुंड नंदीठाणं ॥ स० ॥ वार देवलोकें नवग्रैवेयकें। अनुत्तर पंच विमाणं। लाख चोराशी सहस सत्ताणुं। त्रेवीश चेई जाणुं ॥ ७ ॥ स०॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं। सहस चुमालीस आणुं। सातशें साठ ऊपर उर्द्ध लोकें। जिन पमिमा मन आणुं ॥ ए ॥ ॥ स०॥ त्रिभुवन मांहे सासय जिनहर। सगवन्न लख्ख वसें व्याशी। आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या। सुणजो समकित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्नरशें कोडी बेंतालीश कोमी। तेम अठावन्न लख्खा। छत्रीश सहस अशी वलि साधिक। सासय विंवनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिवारें प्रतिमा। चोमुखें शत चौवीश। पांच सन्ना तिहां साठ वधारो। एकशत अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ ऋषन्न चंद्राननने वर्ध्धमान। वारिखेण चउनामें। व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या। जिन घर पडिमा मानें ॥ १३ ॥ स० ॥ सकल सुरासुर नावना नावे। समकित गुण दीपावे। परित्त संसार करी शिव जावे। कुमति तेम न नावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनें तिर्यक लोकें। पणसय धणु परिमाण। कप्पें सग्गकर पणसय धणु माणुं। सासय असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु। शेत्रुंजादिक बहुला। ते सविहूने त्रिविधें नमतां। पातक जाये सगला ॥ १६ ॥ स० ॥ ज्ञानविमल प्रनुनाम जपंता। लहीये कोडि कल्याण। मनह मनोरथ सगला सीझे। जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ नयहर नगवंताणं जयतुर। नमो जिणाणं सहीए। नमो अविचल आदि गराणं। सहीए नमो अरिहंताणं ॥ १८ ॥ सही०॥ इति श्री सर्वजिन नमस्कारः ॥

(इहां) एक लोगस्सनो काउस्सग्ग "चंदेसु निम्मलयरा" सुधी एक जण करे ते काउस्सग्ग पारी। पछी चार थोयो कहेवी (ते लखीये छीयें.)॥ ॥९॥

॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥

॥ ॥ शान्तदेव नमुं गुण निर्मला। दूध मांहे जिम भेली सीतोपला। विमल शील तणा सिणगारसे। भवभव मुक्तनें चित्ते रुचें ॥१॥ जेह अनंत थया जिनकेवली। जेह हवे विचरंता जयवली। जेह असासय सासय त्रिहु जगें। जिन पडिमा प्रणमुं नित झगमगे ॥२॥ सरस आगम क्षीर महोदधी त्रिपदी गंग तरंग करी वधी। भविक देह सदा पावन करे। दुरित ताप रजो मल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन भासन कारिका। सुर सुरी जिन आणा धारिका। ज्ञान विमल प्रभुतायें दीपता। दुरित दुष्ट तणा भय जीपता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन स्तुति ॥ २५ ॥ ॥

॥ ॥ अथ विधिः ॥ ॥

॥ ॥ इहां एकजण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउस्सगमां सांभले। पछी सर्वे जण काउसग्ग पारीने। प्रगट एक लोग्गस्स पूरो कहे। पछी बेसीनें, एकवीश नवकार, प्रगटपणे सर्व जण गणे (पछी) सर्वजण, मुख भक्ती आगी रीतें कहे:—श्रीशत्रुंजायनमः ॥ १ ॥ श्रीपुंडरीकाय नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्ध क्षेत्राय नमः ॥ ३ ॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥ श्री सुरगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥ ७ ॥ श्रीपदाय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः ॥ ए ॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्रीशाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्रीदृढशक्तये नमः ॥ १२ ॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्रीपुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥ श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सुभद्र गिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमूलाय नमः ॥ १ए ॥ श्री अकर्मकाय नमः ॥ २० ॥ श्री सर्वकामदाय नमः ॥२१॥ ॥ ए सिद्धगिरीना (२१) नाम नवीने मुखें प्रगट कहीने (पछी) पांच भेगा थोय स्तवन कहेवा ते लखीयें छीयें ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ साहेलडीयानी ए देशी ॥ ॥

॥ ॥ नीलडी रायण तरूतले । साहेलडीयां । पीलम्या प्रभुजीना पाय गुण मंजरीयां । ऊजले ध्यानें ध्याइयें ॥ सा० ॥ अेहीज मुगति उपाय । गुण० ॥ १ ॥ शीतडी छायायें वैसीयें ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ नाही धोई निर्मल थई ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥ ॥ २ ॥ पूजीयें सोवन फूलम्ये ॥ सा० ॥ नेह धरीनें अेह ॥ गु० ॥ ते त्री जे भवे शिवलहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्र दक्षिणा ॥ सा० ॥ दीजे अेहनें जे सार ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होअे जेहने ॥ सा० ॥ भवभव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थम्ने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अछे ॥ सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें ॥ सा० ॥ सेवो एहने उछाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु भाखियो ॥ सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गुण० ॥ इति श्री शेत्रुंजा स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री गिरनार तीर्थस्तवन ॥ ॥

॥ ॥ देखी कामनी दोयके कामें व्यापीयो हो०के का०॥ ए चाल ॥

॥॥ नेमनिरंजन देवके सेव सदा करूं हो लालके ॥ से० ॥ अहनिश ताहरूं ध्यानके दिल माहे धरूं हो लाल ॥ दिल०॥ शंख लंछन गुणखाणके अंजन वानछे हो० के ॥ अं०॥ राजिमतीना कंतके परण्या विणु अछे हो० ॥ पर०॥१॥ तुंहीज जीवन प्राणके आतमरामछेहो०के॥ आत०॥ माहरे परमा धारके ताहरू नामछे हो०के ॥ ता०॥ समुद्र विजयना नंदन नितुनित वंदतां हो०के॥ नित०॥ कीजीयें करुणा अंतके कर्म निकंदना हो०के ॥ कर्म०॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढऊपरै हो० के ॥ रही०॥ पहरी शील स न्नाह ऊदास ऐसी धरै हो० ॥ ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्मे अ धिकूं करचुंहो०॥ तुह्मे० ॥ कुमरपणें धरी धीर महाव्रत ऊचस्या हो० के ॥ महा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेहजे तेह ऊवेखीनें होला०॥ तेह०॥ करु णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के॥ पशु०॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारनेंहो०॥ वली०॥ आपी संजम भार पोहोंचामी पारनें हो०॥ पो० ॥ ४ ॥

जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन वणाहो०॥ करे०॥ निरवाहे धरी नेहके ते विरला सुण्या हो०॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे, कविजना हो०॥ वखा ॥ तुझेतो दीधो छेहके तेहना थिरमनां हो० के ॥ तेहना०॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ करो मुजने सदाहो०॥ करो०॥ दिओ मुज शिर हाथ होवे जेम संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवानें मन नही हो० ॥ दीवा०॥ नाणें मन असवार, घोडो दोमें सहीहो० ॥ घोडो०॥६॥ सबला साथे प्रीत, निबलनें नवि कही हो०॥ निबल०॥ पण लागीजे थोभी, किहां जाओ वही हो०॥किहां०॥ जे सज्जनशुं होय ते भीम न भंजीयेहो०के॥ भीम० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होओ तो, कर्मनें मंजीयेहो०के ॥कर्म०॥७॥ तो दुशमन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो०॥ कोणे०॥ प्राणाधार पवित्रके, द रशन दीजीयेहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीयें हो० म०॥ ८ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री आबूतीर्थ स्तवन० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें (ए चाल) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवर नी भक्ति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व सहीना प्रथम जिणेसर । मुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर । कंठे टोभर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । दुःख दोहग सवि गमी यें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेसर । रैवत नेम समरी यें । ओ दो वसिनी यात्रा करता । विहुं तीरथ चित्त धरीयें ॥ आवो०॥ ३ ॥ मंडप मंडप विविध कोरणी । निरखी हियडें ठरियें । श्री जिन वरना बिं ब निहाली । नरभव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी । अशुभ करम सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जब नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम वाधे । जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि हरीयें ॥ आवो० ॥६॥ ओकण ध्यानें प्रभुने ध्यातां । मनमांहि नवि डरीयें ज्ञान विमल कहे प्रभु सुपसायें । सकल संघ सुख करियें ॥ आवो०॥ ७ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्फक नामें विमानें वेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल । समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरभव सफलो कीजें । हीयमे हरखी लाल । समता संग करीजें । (आंकणी) चउमुख चउगति हरण प्रसादें । चउवीसे जिनवैठा । चउदिशि सिंहासन समनासा । पूरवदिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥२॥ संभव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा । धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचउवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वैग सिंह तणें आकारै । जिन हर भरते कीधा । रयण विंव मूरति थापीनें । जगजश वाद प्रसिद्धा ॥४॥ करे मंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत वजावे । मादल वीणा ताल तंबूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्ति भावें एम नाटक करतां । तूटी तंती विचालें । सांधी आप नसा निज करनी । लघु कलाशुं ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी । तो अक्षय पद साध्युं समकित सुरतरु फल पामीनें । तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगें । बहुपरें भावना भावे । ज्ञान विमल गुण तेहना अह निश । सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ समेत शिखर गिरि भेटीयेंरे । मेटवा भवना पास । आतम सुख वरवा भणीरे । ए तीरथ गुण निवासरे ॥ १ ॥ भवियां सेवो तीरथ अेह । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ भवि० ॥ से० ॥ (ए आंकणी)॥ समेत शिखर कलपें कह्योरे । वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थंकर शिव वस्यारे । बहु मुनिनें परिवाररे ॥ भ० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध खेत्र मांहे वस्यारे । भाखे नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमांरे । दोय नय प्रभुजीना सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतांरे । अति दुर्गमनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयेंरे । ते आगम स्यादवादरे ॥ भ० ॥४॥ से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परेंरे । जात्रा करो मनरंग । भव दुःखने देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत जात्रा करैरे । तो शिव हेतु थाय । भव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण

प्रगटायरे ॥ भ० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें होय नाण । ज्ञान विमल गुरु भाखीयोरे । आवश्यक भाष्यनी वाणरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोत्सव कीजेंजी । ढोल द मामा भेरी नफेरी झल्लरिनाद सुणीजेंजी । वीरजिन आगल भावना भावी मानवभव फल लीजेंजी । परव पजूसण पूरव पुण्यें आव्या इम जाणी जेंजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम डुवालस चत्तारी अठ कीजे जी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजेंजी । वडा कल्पनो छठ्ठकरीनें वीरवखाण सुणीजेंजी । पडवानें दिन जन्म महोत्सव धवल मं गल वरतीजेंजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमनुं तप कीजे जी । नागकेतुनी परें केवल लहियें जो सुभभावें रहियेंजी । तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक गणधर वाद वदीजेंजी । पास नेमीसर अंतर त्रीजे ऋषभ च रित्र सुणीजेंजी ॥ ३ ॥ बारशें सुत्रनें सामाचारी संवत्सरी पडिक्कमियेंजी । चैत्यप्रवाडी विधिसुंकीजें सकल जंतुनें खामीजेंजी । पारणानें दिन सामीव त्सल कीजे अधिक वडाईजी । मान विजय कहे सकल मनोरथ पूरो देवी सिद्धाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री नेम राजीमती बारमाशो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सीवाले साटू भलीरे लाल (ए चाल) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीठुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प दमणी हो लाल । वीनवें राजुलनार ॥१॥ (हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर दास) । सहीयांसुं राजुल कहे हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण दिनमाहरो हो लाल । धीरज न धरें जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ वीयो हो लाल । आयो मोहुत देण । तो सूरतनें सांवलाहो लाल । देखण तरसेंनेंण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीयरंहो लाल । प्रीउसंग पोढे नारि प्रीतम विणहुं एकली हो लाल । केमरहुं निरधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली खेलें हेतसुंरे लाल । फागुणमें नरनारि । हुं किणसुं खेलुं हिवे हो लाल । पास नही भरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीनें चांदणीरे लाल । संजोगण सुख

दैण । विरहणनें वालम विनारे लाल । रोवत जावै रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन हरीया वैसाखमें रे लाल । मांजररही महकाय । अरजसुणी अवला तणी हो लाल । तपत मिटावो आई ॥ ७ हो० ॥ जेठ तपै लू आकरो हो लाल । दाझै कोमल गात । ससनेही साहिव विनारे लाल । कुण पूछै मुझवात ॥८॥ हो०॥ आसाढै काली घटा हो लाल । उनमि आयो मेह । कंत मिल्या निज नारसुंरे लाल । धरती मिलीया मेह ॥ ए ॥ हो० ॥ श्रावण चमकै दामनी हो लाल । वनवरसै झडलाइ । इण रुत सूतां एकली हो लाल । क्युं करि रेण विहाइ ॥ १० ॥ हो०॥ काली कालाहण मिली हो लाल । भाद्र वडै वरखंत । अरज सुणीनें साहिवा हो लाल । पूरो मोमन खंत ॥ ११ ॥ हो० ॥ आशोजै आंसूझरै हो लाल । नाह विना निसि दीस । सारन पूछी साहिवे हो लाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ काती द्रिढ मती करीरे लाल । जाइ मिली गिरनार । देखी मुख निज नाहनो हो लाल । सफल गिणें अवतार ॥ १३ ॥ हो०॥ संयमले पीउ सें हथै होलाल । पांमै भवनो पार । इणपर पालै प्रीतडीहो लाल । धनधन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे कीधी पसुऊपरे हो लाल । मों परिकरिज्यो देव । चंदभणी द्योकरि दयाहो लाल । प्रभुचरणारी सेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ※ ॥ ॥※॥

इति श्री नेमिराजुल वारै मासो संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अजीमगंजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥※॥

॥ ※ ॥ केशरियानें झयाजको० (इस चालमें) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज सखि प्रभु दरशण में पायो । मेरो रोम रोम उलसायो आ०॥ अनंत काल भव जल मांह भमतां । मिथ्या मत भरमायो । कुमति नारसंग इत उत मोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥१॥ पुन्य संयोगै नरभवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यतें मोह पकरकै । विषय कषाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रभुगुण महमा । श्रवण सुणी हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुभायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र विजै सिवादेवी के नंदन । सहु सुर नर दिल भायो । इंद्र इंद्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य घडी धन्यभाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण वाल ब्रह्मचारी

नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरव देश अजीमगंजमें । श्री संघ चित्त उमायो । स्थापन चैत्य विंब की करनें । जिनधर्म जगदीपायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद मुनि जायो । श्री जिनचंद सुरिंदके श्री वर । हितप्रिय मोहन गायो॥ आ०॥७॥ १९४३, वै। सु। ७ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्टा स्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नवपद स्तवन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे ॥ जी० ॥१॥ करम निकाचित दूर करणकों । सुंदर सुद्ध उपायरे ॥ जी०॥२॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनआण अगामी होयगे । नवपद संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम क्षमा शिव रमणी वरके । शमर शमर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ इतिपदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सद्भक्तया देवलोके रवि शशि भुवने व्यंतराणां निकाये । नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण पटले: तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्फुटिक मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थं कराणां प्रति दिवस महं तत्र चैत्यांनिवंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंमले हस्तिदंते । वक्षारे कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥२॥ श्री०॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पावके वा । सम्मेते तारकेवा कुलगिरि शिखरे ष्टापदे स्वर्ण शैले । सह्याद्रौ चोज्जयंते विपुल गिरवरे गुर्ज्जरे रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री०॥ आघाटे मेदपाटे क्षित तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विट घन तटे देवकूटे विराटे । कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकूटेच भौटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्री माले मालवेवा मलय ति निखले मेखले पिच्छलेवा । नेपाले नाहलेवा कुवलय तिलके सिंघले मेरवलेवा । माहले कोशलेवा विगलित सलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगत जनपदे सुप्रियागे तिलंगे । गौडे चौडे मुरंडे वर तर द्रविडे उद्रीयाणे पुंड्रे । आद्रे माद्रे पुरिंद्रे द्रविपल कुवले कर्नि कुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां । कौशांव्यां कौशला यां कनक पुरवरे देवगिर्यां सकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे भद्दले तांमलिप्त्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्यंत रक्षे गिरि शिखर ह्रदे स्वर्नदी नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने भूरुहाणां निकुंजे । ग्रामे र एये वनेवा स्थल जल विषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा भक्तिभाजां प्रसिद्धात् । प्रोद्यत्कल्याण हेतुः कलि मलि हरणे ये पठंते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति मतुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धि स्तवोच्चै प्रभवति सततां चित्त मा नंद कारी ॥ ए ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अपछरा करती आरती जिन आगे । हांरे जिन आगेरे जिन आगै । हांरे एतो अविचल सुखमा मांगे । हांरे नाभीनंदन पाश ॥ अप छरा० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके । हांरे दोयचरणे झांझर झमकै । हांरे सोवन घूघरी घमके । हांरे लेती फूदमी वाल ॥ अप० ॥ २ ॥ तालमृदंगनें वांशली मफवीणा । हांरे रूडा गावंती स्वरझीणा । हांरे मधुर सुरा सुर नयणां । हांरे जोती मुखमुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभुजाया । हांरे तोरी कंचन वरणी काया । हांरे मेंतो पूरवपुन्यें पाया । हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभुप्यारो । हांरे प्रभु सेवक ऊं हुं तारो । हांरे भवो भवना डुख डा वारो । हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त धरजो । हांरे मोरी आपदा सगली हरजो । हांरे मुनि माणक सुखीउ क रजो । हांरे जाणी पोतानुं वाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री नेमि राजीमती सिझाय ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ देशी झमादे भटियाणीरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पहिली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा । लागुं गुरांरै पाय । प्रभु गुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिन तणा । सुभमत आपेमोरी माय ॥ १ ॥ सोरी पुरभ्रंती हो नेमीसरसाहिब थेचढ्या । जानकरी यादुराय । हसतीतो सिणगारयाहो नेमीसर साहिब थेभला । घोमलांरी गिणती नकाय

वाजातो अथकाहो नेमीसरसाहिब वाजता ॥ आया तोरणवार । महिल चढी नेंहो राजुल जोवें हरखसुं । मनमांहें हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूकैं हो सहेली मांरी जीमणी । फिरताई दीसैंछे भरतार । वामो तो भरीयोहो नेमीसर साहिब जीवनो । पसुवानी सुणीरे पुकार ॥ ४ ॥ ऊभो तो रथनेंहो नेमीसर साहिब राखीयो ॥ अेपशुवांध्यांछे किणकाज । गोरो तो होसीहो नेमीसर साहिब तुमतणो ॥ सारथी कहैछे महाराज ॥ ५ ॥ थोडां तो सुखनेंहो इण राजुल नारीरे कारणें । होसीहो जीवांनोसंहार । जीव वंध्यानेहो नेमीसर साहिब छोडिया । जीवसवतिणवार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुलहो नेमीसरसाहिब छोमनें । जायचढ्या गिरनार । आठेतो करमांसुंहो नेमीसरसाहिब जीतवा । लीधो संयम भार ॥७॥ राजुल तो फूरेहो नेमीसरसाहिब एकली । जलविनमछली जेम । नवभवारोहो नेमीसरसाहिब छोमनें । नेमविन जीवुंकेम ॥ ८ ॥ सहीयां तो समझावेंहो राजुल दुःख मत करो । एतो कालोछे भरतार पाछेतो राजुल भाषैहो सहेलीमारी थेसुणो । इणभव ए भरतार ॥ ए ॥ राजुलतो चालीहो नेमीसरसाहिब वांदवा । साथे तो घणुंरे परवार । गिरनारें चढतांहो सब आगें पाछे नीकल्या । एकली रहीछे राजुलनार ॥१०॥ मेहातोवरस्याहो नेमीसरसाहिब अतिघणा । भीज्याछे सब सिणगार । गुफातो देखीहो राजुलनारी अतिभली । चीरनिचोवें राजुलनार ॥११॥ गहणा तो वाज्यां हो राजुल नारीरें अंगना । घूवरना झणकार । झणकातो सुणियाहो रह नेम वैठे ध्यानमें । खोलीछे पलक तिणवार ॥१२॥ रूपें तो मोह्यो हो रहनेमि वैठो ध्यानमें । कहे सुंदर करो मोसुं प्यार । वोलीतो सुणकरहो राजुल अंगढांकीयो । मांनें छोमीछे नेमभरतार ॥ १३ ॥ भोजनतो जीम्योहो रहनेमि खीरखांमनो । उलटी करी नाखै तेम । वेंनेतो माणसहो रहनेम पाछो नही भखै । भखसी कागकुत्ताजेम ॥१४॥ ऊं तो माताहो रहनेम थांरे सारखी । ऊंवमा भाईनी नार । पापतो धरस्योहो रहनेम मांरे ऊपरा । तो पमस्यो थेनरक मझार ॥१५॥ एहवा वचनें हो रहनेम राजुल पाए नम्यो । पापख मावे वारंवार । कपमा तो पहर्या हो राजुल नारी आपणा । पुहतीछे प्रभु दरवार ॥१६॥ राजुलतोदरखेहो नेमीसर साहिब वांदीयां । वांदीनें लीधो संयम भार । केवलतो पालीहो नेमीसर साहिब निरमलो । पुहतीछे मुगति

मझार ॥ १७ ॥ केवल पालीहो नेमीसरसाहिव आगलै । मिलीयाहै मुगति मझार । माणक्य रंगैहो नेमीसरसाहिव गाईयो । ह्मारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति श्रीनेमि राजीमती सिझाय संपूर्ण ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री शालिभद्रको शिलोको लि० ॥ ※ ॥

॥※॥सरसत सांमण समरूं सुखदाई । व्रधमांनस्वामी प्रणमूं वरदाई । कुंवर शालिभद्ररो कहुं सिलोको । एक मनांथे सांभलज्यो लोको ॥ १ ॥ राजगृही नगरी जिनध्रम राजा । श्रेणक नांमें मोटो महाराजा । राणी चेलणा चोखी पटरांणी । शील संतोषै साची वखांणी ॥ २ ॥ मंत्रीसरकहियै अभैकुमारो । सगली सभामें ते हीज सिरदारो । सेठ गोभद्र नगरीमें सोहै । भद्रा सेठांणी ते मन मोहै ॥ ३ ॥ सुख सेती रहता कितरे के दिवसे । सुत साल भद्र जन्म्यो शुभ दिवसै । वहिन सुभद्रा वीरो रमावै । मनभारे कोडै माता हुलरावै ॥ ४ ॥ इण विध वधतां हुवो जुवांनो । पिता परणावै मोटी कर जांनो । वत्रीस गोखांरो वाल्लम कहीजै । सातमी भूमें सुखसेती रहीजै ॥ ५ ॥ विहार करंता वन मांहै स्वांमी । आय ऊतरीया अंतर जांमी । गोभद्र शेठ वांदणनें वैठो । समकित धारी श्रावकसेठो ॥ ६ ॥ महावीर स्वामी देशना दीधी । समझ्यो श्रावकते दीख्याजीलीधी । व्रत लेईनें विधसुं त्रिचारै । अंतकाल आयां अणशण उचारै ॥ ७ ॥ वैमानिकवासी देवता वदीतो । साधु गोभद्र हुवो सुवदीतो । अविध्य प्रयुंजी जाणें विरतं तो । भोगी सालभद्रनूं देखै छुकांतो ॥८॥ भवपूरवरी वात संभालै । नयणे आपरो वेटो निहालै । मन मांहे देवता इसमो विमासै । आई निसरुं आगे जी पाशै ॥ ९ ॥ आगै तो लक्ष्मी इधकेरी हुंती । देवतानी दीधी हूई अनंती । पेई तेत्रीसे देवता पुहचावै । सोनै में ग्रहणा जमीया शह आवै ॥१०॥ तेत्रीसमी पेटी तिणमांहै नीकलै । सूरज चंदा ज्यूं तेजैं झलहलै । मांणकनै हीरा सोनांमै जडीया । घाट सुघाटै देवतारां घडीया ॥ ११ ॥ सेहरो साहूनें साल भद्र जोगो । लाखां कोडांरा आंके त्रैलोको । शागं घडीयांरी अंतै शगलाई । नाखे आभूषण निरमायल खाई ॥ १२ ॥ दिन २ पेई देवता ते ल्यावै । शोनईया हीरा मांणक लावै । उत्तरीया ग्रहणा निरमायल थावै । वलती पेयांरी शार नकरावै ॥ १३ ॥ राजा चक्रवर्त्ति

शुहणे न देखे । एहवा आभूषण पहरनें नाखै । केशर कस्तुरी मलया गिर वासै । चोवानें चंदन फुलवाद वाशै ॥ १४ ॥ आठ पोहरनें, बत्रीशे घडिया । पात्रांतो नाचे मुह आगे खमीयां । अपछरा शरिखी उपमा पावै । भांमनि बत्रीशे ते मन भावै ॥१५॥ सुकलीणी सुंदर बत्रीशे राणी । पुन्य जोगे शेती एक दिन आणी । दिन २ वध ते हेतशुं निरखै । नारी पत भगती हितशुंजी परखै ॥ १६ ॥ एक दिन व्यापारी परदेशी आया । वशत अमोलक विध २ री ल्यांया । व्यापारी चोहटे वशतां देखालै । नगरीरा लोक आवीनेंहालै ॥ १७ ॥ रतन मैं कांवल शोलै निरखीनें । वांणी या देखै विधशुंपरखीनें । वांणीया पूछै मोलबता वो । सवा लाख शोनइय नगद दीरावो ॥१८॥ मोल शुणीनें शाहाजी शलकै । कर२ नें वातां माहो मांमुलकै । वलता वांणीया नेमानहीं आवै । कूमी शुण गल्लां कुशले घर जावै ॥ १९ ॥ इण विध व्यापारी नगरीमे भमीया । जाये राजाकै चर्णजी नमीया । व्यापारी बोलै शुणो महाराजा । शोलैई कांवल शहूछै ताजा ॥ ॥ २० ॥ इण कांवल में गुणछै एक मोटो । आपरे आगे न बोलुं खोटो । आगमै धोयां मेलज छूटै । मोल कांवलनो इधको तिणमांटै ॥२१॥ गुण शुणीनें राजा गह गहीयो । कांवल एक लेवा घणु कमहीयो । नगद शोनईया नहीं भंमारो । महीनारीमोलतकरो उधारो ॥ २२ ॥ वलता व्योपारी बोलै इमवांणी । रावलीवांणी शाचीमें जांणी । शुणो महाराजा एक अरदाशो । पइशाखरचीरा नहीं अह्म पाशो ॥ २३ ॥ खरची दिवरावो कांवल रखवावो दूर देशांतर अह्मनेंछै जावो । परदेशी किम कर आपै ऊधार । नगद सोनइया कांवलल्योसार ॥ २४ ॥ इम कहि व्यापारी फेरैंजी आया । आए फेरैनें घणुं पिछताया । माहोमां मिलनें मिश्रांणो कीधो । आंपणो एको कारिज नसीधो ॥ २५ ॥ अवै अठासुं आघेरा चालो । सहिर सखरोसो नयणे निहालो । किरीयांणो वेची कारज सारीजै । सुंवारी मासी इण परि मारीजै ॥२६॥ मुखसूं इम कहिता परदेशी आवै । मनमें इधकेरो उचाट थावै । वांणी सुण इसमी भद्रावोलावै । वहता व्यापारी कभारखावै ॥ २७ ॥ सूरा व्यापारी दीसोछो वीरा । वोलोछो इम किम वोल अधीरा । वसतां देखावो मोल वतावो । आखता ऊयनें परामतजावो ॥ २८ ॥ व्यापा

री कहै वली विणयांणी । सही या लेसी वस्त अल्हांणी । फोकटणीवातां कहि २ नें फेरै । एवमोटी मोल कगसुं अेरै ॥ २९ ॥ भाई कहीने भद्रा समझावै । इण घर कदीरो अंतन आवै । भोलै भूलागे किणरा भिम काया । दीसोगे ठोलातणा दडकाया ॥ ३० ॥ भद्रा तुंसांभल भोली विण यांणी । लीधी नही कांवल राजारीराणी । फूटरा घणुं फूंदालासाहो । पै ढीयां वैठा दीसे पतिसाहो ॥ ३१ ॥ कांवल देखीनें कमाहो कीधो । मो लसुणीनें विलखो मुह कीधो । सवालाख सोनइया एकणरा लागै । इस मी नविजायै लीधी तुझ आगै ॥ ३२ ॥ वलती सेठाणी वाणी इम भाषै । वीरा व्यापारी इम किम दाखै । कांवलसोलेने कामण वत्रीसो । सरचावुं किम कर वझअर वत्रीसो ॥ ३३ ॥ वैत विचारी टूकाकरावो । ठीक कहीनें मोल ठह रावो । व्यापारी वोलै सुणो सेठाणी । लाख वीशरी आंणो हिमाणी ॥ ॥ ३४ ॥ भंडारी तेडीनें भद्रा इम भाषै । रती एकरो अंतर मतराखै । व्यापारी एहै बोलरासूरा । दामगिणीनें देज्यो थे पूरा ॥ ३५ ॥ खोलै भंडारी मोटो भखारो । तीजो गिणवाने साथे ऊवो त्यारो । व्यापारी मोटो इक ला रैजी लेवै । दांम गिणीनें जिणनें सझ देवै ॥ ३६ ॥ पुखतो व्यापारी को ठार जोवै । अहिनांणे इंद्रपुर एहीज होवै । मोती परवाला मांणक मन मोहै । हीरासोनइया सखरा ते सोहै ॥ ३७ ॥ पांचरत्नांरो पारन पेखै । रोकरु पइया दह दिश देखै । विधिश्रो नांणो व्यापारी निरखै । पुखतो व्यापारी ले लेनें परखे ॥ ३८ ॥ चितमें व्यापारी एहवोज चिंतै । रहीझं देखुं सुहणो सुभरीतै । चकचूंदी आख्यां आवीनै चमकै । ठीकसेती चालै पगल्यारैं ठ मकै ॥ ३९ ॥ अम्बवमतो पडतो आखडतो अरकै । षम हडतो खिसतो खूणांसुं खरकै । तितरै भंडारी तडकनें बोलै । ल्यो बेगोनांणो घालां थां खोलै ॥ ४० ॥ मालहमालांमाथे दिरावै । व्यापारीपाठा फेरै ते आवै । तिण वेला श्रेणक राजातेडावै । व्यापारी प्रतें आदर दिवरावै ॥ ४१ ॥ राजाजी कहै सुणो परदेश्यां । कांवल तुह्मांरी एक ह्म लेश्यां । मोटी महाराणी हठनमूकै । कांवल लेदीधां सझ धंध चूकै ॥ ४२ ॥ जिम तिम करीने जिनसां ह्म देवां । लाखसवारो लेखो भरदेवां । मांनो व्यापारी कांवल ले आवो । नहिं अवथे माहरो वचन फिरावो ॥ ४३ ॥ व्यापारी मुखसुंएहवो प्रकासै । सोले ईज

कांवल झूंता अह्मपासै । सेठांणी न्नद्रा ते सङ्ग लीया । दाम गिणीने अह्म नें तिण दीया ।। ४४ ।। अचरज पांमीनें राजा इम दाखै । सोदागर इसडो कूमो काई न्नाखै । एहवो कुणछै नगरीमें आज । लाखांवीशांरो काढैते काज ।। ४५ ।। सोदागर जंपै सुणो महाराजा । सोवनमें घर नें रतनांरा छाजा । माल अलेखै तिणरे ह्मे दीठो । सालन्नद्र नांमें मोटोछै सेठो ।। ४६ ।। ऊगो आथमीयो तेनवी जांणै । मांनवरी देह सुर सुख मांणैं । दरसण तो तेहनो दी ठां जाणीजे । महाराजा मनमें सांसो नांणीजै ।। ४७ ।। सोदागिर मुखसुंवात सुणीनें । दिवरावै सीखसिरपाव देनें । ततखिण तिण वेला राजा तेडावै । अन्नै कुमार हजूर आवै ।।४८।। कुंवरजी आवे मुजरोजी कीधो । महाराजा मोटो सन मांनदीधो । न्नापै इमराजा सांन्नल कुमार । वेगाजिहां जावो न्नद्राघरवार।।४९।। न्नद्रानो वेटो सालन्नद्रसाह । अह्मनें देखणरो इधको ऊच्छाह । तुरत कुंवरनें तेडीनें ल्यावो । वैगाऊइ जावो वारमल्यावो ।। ५० ।। कांवल एकलावो मोलकरीनें । सेठाणी प्रतै शनमांनदेनें । आया कुंवरजी शेठाणी आगै । वि धि शेती कांवल एकजमांगै: ।। ५१ ।। वोलै इम कूंवर सुणौ शेठांणी । ह ठि करनें वैठी मोटी महाराणी । महाराजा कांवल एक मंगावै । परवारो मोल पूरो दिरावै ।। ५२ ।। इण वातै तिलन्नर कूडम जांणो । ऊठो घरमै शुं कांवल एक आंणो । शालि कूंवरनै मेलो मो शाथ । वोलावै वेगो श्रेणक नर नाथ ।।५३।। अन्नै कुमाररा मुखशुं ए वात । शुणी शेठांणी जंपै इम वात । आया थेन्नलै कुमरजी आप । दरशण तो दीठां सङ्गपुलीयाजी पाप।।५४।। तुह्म शरिखा पुन्यवंत घरांगण आयां । डुख दोहग टलिया शङ्ग शुख पाया । अरज अह्मारी एक अवधारो । सेवक मनरा सङ्ग कारंज सारो ।। ५५ शोलैमें कांवल शगलाईलीया । तिके वधारी वत्तीशकीया । कांव ल एकेको वङ्गअरनै दीधो ।, ऊपर नविरहियो कांवल कोई वीयो ।। ५६ ।। देवता दीधा आन्नूषण आवै । तिके पहिरंता तनसुख पावै । वङ्गअर किम ठेढै कांवल ते करमा । खरखरा लागै अंगै ते खरडा ।। ५७ ।। मेंलेई मुक्या ऊत्तम जांणेनें । ऊंतन्नो दीयो वङ्गअर आंणेनें । शाशुजी एशु महिमांनी कीधी । एहवी अलविध शुं आंणीनै दीधी ।। ५८ ।। ऊवटणो करनें वहूवां पगलूहै । नाख्या ते परहा निरमायल कूवै । कहोनें निरमायल किमकर

दिखावै। निरमायल देकं तो दूषण मुझथावै ॥ ५९ ॥ मोलायक वीजो का रिज फुरमावै। महाराजा कुमर स्यांनै तेम्हावै। नांन्हडीयो माहरो लीलानो लाम्हो। गहन्नरीयो शोन्नै गणकेरो गाम्हो॥६०॥सातमी न्नूमें शुखशेती पोढै। नाटकीया नाचै अहिनिशि गोढै। काया मांनवरी कुमर ते दीशै। सोन्नां सुरशयां इधको ते दीसे॥६१॥दरसण तो कोई देखण न पावै। लखगांनै लोक आवै न जावै। चालो ऊंचालुं महाराजापासै। न्नद्रा इम न्नाखै मनरंगउल्हासै ॥६२॥ दरबार आवै न्नद्रा मन न्नोली। शाथे शोगानें सही यारी टोली। वे कर जोडी न्नद्रा इमवोलै। प्रथवीपति राजा शमकुण तोलै ॥ ६३ ॥ अरज अमारी एक अवधारो। महाराजा आंगण ह्माहरै पधारो। सेवकरै ऊपर सुनिजर कीजै। शाल कुमरनें दरशण दीजै॥६४॥ वयणशुणीनें वोलै महा राज।तुठा तुऊ उपर आवां घर आज। जायै आगैनें जुक्त करावो। शा ल कुमरनें सन्मुख ल्यावो॥६५॥ अशवारी करनें राजाजी आया। मिल २ नै सुहव मोतीयां वधाया। सिंघासण आशण सोवनरा देवै। आरतीयां कर२ उवारणा लेवै॥६६॥ राजारै आगै न्नद्रा ते आवै। न्नोजनरी न्नक्ती मुऊनें फु रमावै। राजाजी कहै युक्त करावो। महल तुमारा अमनें देखावो॥६७॥ आलश गोडीनें न्नद्रा ते आवे। ऊकमति होदा जल ऊनो दिवरावै। पीठी उ गटणा प्रथम करावै। शाथी शगलांनै शिनांन करावै ॥६८॥ क्रीडा पांणीरी करता तिण वेला। मंत्री महाराजा सगला शमेला। उत्तम अंगूठी राजाजी पारी। विलखाऊय जोवै शगली गोवारी ॥ ६९ ॥ राजाजी श्रेणक मनमें विचारै। शगली रिद्धरो शारथो मारै। चिंता करीनै मनमांहे शोचै। पछ तावै पमीयां ऊन्नाआलोचै ॥७०॥ सेठाणी न्नद्रा तुरतज शमधी। वाणीयां होवै आगल वुद्धी। जल कल उघाडी ऊन्नी जोवावै। पाणी वीछरीयां अगूठी पावै॥७१॥ मुंद्रमली लेई घरमांहे आवै। केई अंगुठी अवर निकलावै। त्यां न्नेली करनें न्नद्रा ते ल्यावै। उलखनें राजा मनमें उमावै ॥ ७२ ॥ स्नान करीनै शऊकोई शाथ। शालकुवरनी देखे सऊ आथ। पुन्यरो पूरो ए दीशै अं कूरो। शाहां शिरशोहै परलख्यशूरो ॥७३॥ शोनाराथाल रूपारी चोकी। मुख मलरी गादी दीधी ए कोकी। रतनारा ऊारा पाणीरा न्नरया। खाशा गंगोदक षसबोवे करिया ॥ ७४ ॥ सेवांनै साकर सेलम्हील्यावै। खारक खजुरां पासै

पुरशावै । खोपरा खासा खुरमाणी आवै । दाखांनें निमजा दाममन्नावै॥ ७५॥ अखरोट आंबा केला नारंगी । पिसता सदाफल जंवेरी चंगी । रायण वीजो रा खरबूजा खासा । ककडी साकरीयां भेला पतासा ॥७६॥ सरदा अंजीर अंगूर सखरा । वोर विदाम पुरसै ले सखरा । इण विघरामेवानें आणीनें पुरसै सगला आरोगै मनरै ते हरसै ॥७७॥ सीरा साबूनी सखरीसुहाली । लाडू वि धश्रा ल्यावै भरथाली । लाडू सेवीया खासा गुलावी । सिंवकेशरीया ल्यावै सतावी ॥ ७८ ॥ वाजणा लाडू गाजणा ल्यावै । फीटीरालाडू केशरिया आवै । भाजणालाडू मिरचाला भावै । लाजणालाडू वाजणाभावै॥ ७९॥ मगदरालाडू दालीया मुगता । लाडू कस्तूरिया ल्यावै ते गलता । मोतीजीचूर मिश्रीरालाडू । दीसैते मोटा देहरारा गाडू ॥ ८० ॥ ऊगरीया लाडू गुंदीयां झांखे । सङ्कोपुरसंता जीजी मुख भाखै । पुरश्की मुरकी गुप चुप आवै । गूंदवमा घेवर जलेवी ल्यावै ॥ ८१ ॥ पूरी कचोरी पेमा हेसमीयां । खुरमा नें दोठा षाजा मनगमीया । दरभिस्त फीणा इंदरसारूडा । आठी अकव री दहीथरा पूरा ॥ ८२ ॥ सकर पारानें लापशी आवै । सगला तिनसेती धोकरनें थावै । तरकारयां आवै ततखिणताजी । वालोर वथवो चिणारी भा जी ॥ ८३ ॥ सोवानें मेथी सरशु सांगरिया । कैर कारेला पापर मोगरियां कचनार कलीयां केवलानैं फोग । आरोग्यां जाये तिणशुं सङ्करोग ॥८४॥ वरीयांनै मोमी नीलावरी वेर । करूंदा कोठ करपटा जोर । चवलानी फलि यां घेघराकाचा । आलन पेठा अद्रक साचा ॥ ८५ ॥ अरवी वावलीयां खासी काचरीयां । मिरचानें शुंठ मुखसुं आचरीया । हलदीनें लूंण हीगसुं भा जी । तोरू लुंगनें टींडसी ताजी ॥८६॥ आंवलीया आंबा नीबू आचार । रा इरै भेला राईता त्यार । खाटो मिरचांरो खासोपलेव । होसो पुरसावै हितकर नें हेव ॥८७॥ वासमतीचावल मुंगांरी दाल । सुरहाघी ऊपर पुरसे रसाल । सि खरणनेयुक्त वूरो सिरावै । पाणी परवलसुं चलुआं करावै॥८८॥ वीमापानारा लुंग सुपारी । तिलक करे देसूहव नारी । आभूपण वागा पंचमाआवै । सिर दार देखी सङ्कनें पहरावै ॥ ८९ ॥ राजा श्रेणक इणविध फुरमावै । इणघर रो स्वामी निजर न आवै । असीयां ऊभी ऊकम हलावै । हां घरआयां मु जरो क्युं नावै ॥९०॥ आवीनें भद्रा एम पयंपै । एकवार देखो घररी सङ्कस

पै । महल महिपति शूं ऊपर जोवो । आरम्भ करनें शाइतइक शोवो ॥९१॥ पहलीज भूंम प्रथवी पति चढीया । पूरा पुरषोत्तम शास्त्रे जे पढीया । मंमांण घररो मनशुं आलोचै । रचीयो जाणे कर शास्त्रनें शोचै ॥ ९२ ॥ ऊपरली वी जी भूंमते आवै । ज्योतिझिगामिग निजरे देखावै । भद्रा कहै सुणीयें मोटा भू पालो । ताजी देखावुं तीजी है मालो ॥ ९३ ॥ तीशरी पोल चढीया तिण वेला । रतनारी जोत दीपै अतिकेला । आंख्यारै आगै अंधाली आवै । मन मांहे जांणै भद्रा भरमावै ॥ ९४ ॥ चौवारै चोथै चढीया तिण शेती । हाथे कर झालै भद्रा हित शेती । निजर करीनें निरखै ते भूम । धड२ आ वै धक्का करधूम ॥ ९५ ॥ श्रेणक राजा एम विचारै । फशीया फंदमाहे आ वीइयांरै । कुशलै घर जावां किणही प्रकार । दिन ऊगै करशी कवण दरवार ॥ ९६ ॥ आवीनें भद्रा एम पयंपै । प्रथवीपति मोटा क्युंमन कंपै । सुख से ती कीजै इहां विशरांम । तेमीऊ ल्यावुं ताहरो गुलाम ॥ ९७ ॥ शाल कु मरनें सुखमै वतलायो । घर आंगण वेठो श्रेणक आयो । वखतावर मोटा लेख विया राजा । आप चढीनें आयो महाराजा ॥९८॥ऊठो सिज्यासुं आलश छोमो राजा मिलनेंरो रावै अतिकोमो । पूतपधारो राजारै पावै । तसलीम करनें तु रत तुंआवै ॥ ९९ ॥ मातारा मुख सुं वांणी शुणवोलै । किरीयांणो श्रेणक नां खो ले खोलै । माताजी पूछे काशूं इण मोलै । भार भलायो घररो शक्रु तोनें ॥१००॥ इतरा दिन थेई कांम चलायो । मन मान्यो माता ऊकम हलायो अम्हकांणा काम रहोने अवै । भंमारभरीया मणिमांणक सवै ॥१०१॥ नाणा रीतोट ह्वारे घरनाही । मुंहमांग्यो देई नाखो घरमांही । किरियांणो कोई पा छो मत फेरो । कहोने कासुंथे पूछो एरो ॥१०२॥ सतवंती भद्रा वाणी इम वोलै । सुण२हो वेटा भू लोमतभोलै । पृथवीपति राजा श्रेणक सलहीजै । आ पणरोस्वामी एह कहीजे ॥ १०३ ॥ रूठोए राजा विषरूप जांणो । तूठोए राजा सुरतरु सुपीयाणो । इणरी सुनजरसुं अपनीरिद्धआपै । करै निरधनीया कहीये जो कोपै ॥ १०४ ॥ आशइणांरी वेटा वऊ कीजै । पिण आसंगो पूरो नविकीजे । राजा वेसनर सरिखा जाणीजे । इण वातें कोई शांसो नां णीजें ॥१०५॥ मातारा ऊकम माने तेसेठो । पावै लागै नआवै फिरऊठो । श्रेणक राजारो सन्मावकूठो । खिणमांहे रूठो खिणमाहे तूठो ॥ १०६ ॥ जा

गेरो विलंब वेटा नकीजे । जाए राजारो दरशण कीजे । तो सूरत दीगं राजाजी रीझै । अण चिंत्या कारज इण वातै सीझै ॥ १०७ ॥ मातारा वचन मीठा सुणकानें । विषधर वकु कोपै जुं पयपानें । मनमांहे कुंवर वैराग आणें । भवसागर माया काची सकु जाणें ॥ १०८ ॥ पूर्वले भवमें ऊंचो पुन्य कीधो । साधांनें फाशु अशन नवि दीधो । वीतराग वचनें शंशोमें धरीयो । दरशण देवांरो में नवि करियो ॥ १०९ ॥ सामायक पोशो अवसर नवि कीधो । साधांरै मुखसें शमकित नविलीधो । ऊंचो पुण्य कारण इण भव अवतरीयो । नारी शिषरमणी मुझने नवि वरियो ॥ ११० ॥ परवश शेती पर शेवा करणी । मातारी शीख मन मांहे धरणी । एहवो विचारी आयो मन भंगे । नरपति ले वैठो आपण उमंगे ॥ ॥१११॥ शाल कुमररी शोभा सराहैं । मुखडो देखीनें राजा उमाहैं । सुरगांरो वाशी सुरपति जुं ओपे । काया कुंवररी अधकीज उपैं ॥ ११२ ॥ मोटो महीपत मनमें विचारै । ए दीशै पुन्य एणसंसारै । माया घर मुंकी महला मतवंती । काया कंचण जुं उत्तम दीपंती ॥११३॥ मांखणसम काया कोमलछे इणरी । राग राखी नें राजा कर फेरी । कुमररी काया परसेवो व लीयो । कर फरसे ततखिण भील पर घलीयो ॥११४॥ भद्रा तिण वेला राजा प्रति भावै । सीख कुमरनें द्यो शकुशावै । जांये जनमंतर इण २ काया । परसेवा करनें फरिस्यानकु पाया ॥ ११५ ॥ स्वछंदाचारी सुख मांहे रहीयो आगम राजरो आजम कहीयो । ऊठे सिघ्यासुं भोलो भावडियो । अवसर राजरो इण भव लहीयो ॥ ११६ ॥ राजी होय राजा सीख समापी । रिधी अविचल सालनें आपी । कठ पंजर वंधन सुं सुक छूटे । पलतो फिर भावै वेगो तिण खूंटे ॥ ११७ ॥ उतरी कांचलीये अहिरुं जिमत्रासे । पाछो नवि जोवे परहो ते नासे । कुंवरजी चितरे उचाट वेगा । आवीने पोढ णरीखाट जे सेंगा ॥ ११८ ॥ सकु भीया आवी शनमुख ऊभी । मुख सेती उत्तर नवि दीयें मोभी । माहो मांहि पूछे महिला मन भोली । रीसांणो साहब ना रंगरोली ॥ ११९ ॥ दोय चार घमीयां परखीनें होगे । नाहरे चित सुं नेहभखो नीगे । सासू सुं बोलें सरम खोलीनें । मुलकंती अंचल मुल ऊपर देनें ॥ १२० ॥ रावलो जावो राजी नही आज । मन खांचीयो ही

गुण अवगुण गुनो सै सहीय आज । आए कुमरनें समझावो आप । पूत पनोती पारकी जाई । विन अवगुण कां ना करावो माफ ॥ १२१ ॥ पूत पनोती पारकी जाई । तिणसेती कीजे कांइ चित खो धसकाई । नेहडलै भीनी गुणवंती गोरी । सुभ्र करमी होइनें सम चोरी ॥ १२२ ॥ माता इतरा दिन ऊं नवि समधो । गोरी ए दीसै ऊरग कित सही लध्यो । कायानें माया काची सऊ जांणी । सदगुरु पस त सहिनांणी ॥ १२३ ॥ माताजी मोनें अनुमति आपो । शाश्वत भर नसैं वाम्हे दिक्षा समापो । रहि २ रे वेटा एहवो कांई दाखै । वैत विचारी ल्हारै तो पाखै ॥ १२४ ॥ सुंहणेंही वेटा इसभो मति सोचे । आपणा घररो कांई कंडो आलोचे । भरमाये किणरै वेटा नवि भमीयै । वाई सुभद्रा तणें इक नवि गमीयै ॥ १२५ ॥ सऊ वाते पूत तूंहै सधीरो । कुटंबरी सार वेटा कुणकर वीरो । नांन्हमीया तो विण ल्हारै नवि सरसी । मनमें कुमररै ते नवि र सी ॥ १२६ ॥ कितराई वचन मोभीनें कहीया । मायारा जाल मूंक्या सुभ्र कर्मे ॥ हीया । भीनो रंग चोल भगवंत धर्मे । तपस्या चारित्र नऊवै तो पाखै ॥ १२७ ॥ हठकर माता हठ करी राखै । सही ऊं जासुं भव सागर तरिनें हल फलीयो हिवणां वालक बुध करिनें । ऊं जातुं ताहरी सगली ॥ १२८ ॥ पंडित ऊइनें वेटा सुणि वात । सुणरे वेटातूं वातरी वात ॥ अंगधात । तो सेती चारित्र न पलै तिलमात । दिन दस आभा जिम ति ॥ १२९ ॥ माता ए जांणयो ऊकम करि राखुं । ललचांणो कांमणि लोभी मऊं नांखुं । इतरामें इणरी बुधी फिरजासी । कांमणि एकेकी दिन येथासी ॥१३०॥ पोतारी काया पहिली वसि कीजे । करि२ तपस्यानें काया वसि प्रति भेमीजै । वसि करि इंद्री घर वांस वसीजे । कांमणि एकेकी दिन कीजै ॥ १३१ ॥ सूची सुण वात हियफामें धोरे । चितसेती वेगो चारित्र रस प्रतिवारै । निरलोभी ऊइनें लूखो मन राखे । धन्नोजी धर्मी आवै एकेला । चाखै ॥ १३२ ॥ सातमें दिन संझ्यारी वेला । ऊंमो तूंसोच इवडो कांई राखै ॥ १३३ ॥ सालानें सीख देनें इम भाखै । आंपे मिल थिर मन करिनें चालोथे आगै । पूठ पूरव सुं ऊं मन रागै । ॥ १३४ ॥ दोऊं करणी आदरस्यां । वेगा भव सायर पार उतरस्यां । सांभल स्वा एक मन दोनुं होइ नीसरीया । सिंह पाखरीया जांणे केशरिया ।

मोरी देशना सूंधी । समजा मन मांहि तुरत सुबुद्धी ॥ १३५ ॥ आयाघर पू
ठा आग्या ते मांगै । लुलि २ मातानें पाए ते लागै । बंधन संकट सुं माता
मुंकावो । कल्यांण माहरो कोई जो चावो ॥१३६॥ कुडो कथन अव कीजै
नवि माता । महावीर वचनें अह्रो रंग राता । चारत्रिया होसां चित्तमाहे
चोंका । धर्म करणी करनें ठेमां भव धोका ॥१३७॥ आजूणा वचन भद्रा
ते आखै । संजम लेसी ए सहू साखै । आमी अंतराय ऊंस्यानें होऊ । व
हिनोई सालो भतलो थे दोऊं ॥ १३८ ॥ सामग्री मेलै सऊ साथे आ
वै । गीत गुणवंती गुण वऊ गावै । ढोल नगारा ढमके वजावै ।
प्रह ऊठी दरशण इण विधि पावै ॥ १३९ ॥ इरियावहि पडिकम पाप
आलोवै । मेल करमरा लागा सवधोवै । महावीर स्वांमी माथे कर दीधा
साल धन्नारा कारज सऊ सीधा ॥ १४० ॥ भोलामण देई भद्रा घरि
आवै । सुभ मति देनें गोखां समजावै । तिन दिन सेती तपश्या ते साधे ।
मास खमणादिक करे मन वाधे ॥ १४१ ॥ करमांरी गोठ काटे वेभाई ।
किरीयारी कमणा राखे नही काई । अणसण करीनें आऊखो पावै । सर्वा
रथ सिद्धे थासो सुख पावे ॥ १४२ ॥ महाविदेह मांनव भव लहिसी ।
करणी कर आठे करम ते दहसी । सुपसा ए दांन सऊ कारज सरसी । सालो
वहिनोई दोनुं शिव वरसी ॥ १४३ ॥ सालभद्र धन्नो साधु कहाया । प्रहसम
ऊठे प्रणमुं ते पाया । गुण तिणांरा भवि जन गाया । मन सुध समस्यां मुक्ति
दे माया ॥ १४४ ॥ मुंहता महाजन मोटा मति धारी । देवी घर दीपे गांव
गुण कारी । मोटी महमाइ थांन विराजै । ठाया तिणरी इधकी ते ठाजै ॥
॥ १४५ ॥ संवत सतरै इक्यासी वरसै । चौमासौ कीधो चितचूंप हरखै । खे
मकीरतरी साख सवाई । तिणरा संतानिक वाचक वरदाई ॥ १४६ ॥ सो
म हरखनामें श्रमण कहीजै । लक्ष्मी समुद्र पाटे स लहीजै । गणी कनक
प्रिय गुरु सुपसाया । गुण तिणरा में सिंहा मुनि गाया ॥ १५७ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री शांतिजिन वृहस्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सारद मात नमुं शिरनामी । ऊंगाउं त्रिभुवनके स्वामी । शांतिज
शांति जपै सवकोई । त्यां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपीनें
कीजै कामा । सोही काम ऊवै अभिरामा । शांति जपी परदेश सिधावै । ते

कुशले कमला लेई आवै ॥ २ ॥ गरज्ञ थकी प्रज्ञु मार निवारी । शांतिज नाम दियो महतारी । जेनर शांतितणा गुण गावै । रिद्धि अचिंती जेनर पावे ॥३॥ ज्यांनरकों प्रज्ञुशांति सहाई । त्यां नरकों काई आरत नाई । जो कछु वंछे सोई पूरै । दालिद्र डुष्ट मिथ्या मति चूरै ॥ ४ ॥ अलख निरंजन जोत प्रकाशी । घट घट ज्ञीतरके प्रज्ञु वासी । स्वामि स्वरूप कह्यो नहिं जावै । कहतां मोमन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मारदिये सवही हथियारा । जीता मोहतणा दलसारा । नारतजी शिवसुं रंगराचे । राजतजी पिण सा॰ हिब साचे ॥ ६ ॥ महावल वंतज कहिये देवा । कायर कुंथुन एक हणेवा । ऋद्धिसयल प्रज्ञु पाश कहीजे । ज्ञिक्षा आहारी नाम ज्ञणीजै ॥ ७ ॥ निं दक पूजक है समज्ञायक । पिण सेवकही कों है सुखदायक । तज्यो परिग्र हतें जगनायक । नाम अतीत सवे विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित्त ज्ञणीजै । नामदेव अरिहंत ज्ञणीजे । सयलजीव हितवंत कहीजें । सेवक जाण महापद दीजे ॥ ए ॥ सायर जैसा होय गंज्ञीरा । दोष नही इक मां ह सरीरा । मेरुअचल जिम अंतर जामी । पिण न रहै प्रज्ञु एकण ठामी ॥ १ ० ॥ लोक कहै जिनजी सङ्ग देखे । पिण सुपनो कवङ्ग नविपेखें । री सविना बावीश परीसह । सेन्याजीती ते जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनायो । माया विना सवसुं लय लाई । लोज्ञ विना गुण राशि ग्रहीजै । ज्ञिक्षु ज्ञए त्रिगमो सेवीजै । निग्रंथपणें शिर छत्र धरावै । नाम जती पिण चवर ढोलावै । अज्ञयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र च लै अरिदारण ॥ १२ ॥ श्री जिनराज दयाल ज्ञणीजै । करम सबे कोही मूलखणीजै । चोवीह संघज तीरथ थापै । लङ्घणी देखै प्रज्ञु आपै ॥१४॥ विनयवंत ज्ञगवंत कहावै ॥ नांकाऊकों शीश नमावै । अकिंचनको विरुध धरावै । सोपद पंकज आतम गावै ॥ १५ ॥ तजतरुणी निज गुणकों ध्या वै । शिवरमणीकों साथ चलावै । रागनही पिण सेवककों तारै । द्वेष नहीं नि गुणा संगवारे ॥ १६ ॥ तेरी महमा अद ज्ञुत कहियै । तेरा गुणको पार न लहियै । तुं प्रज्ञु समरथ साहिब मेरा । ङ मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूंरे त्रिलोक तणो प्रतिपाला । ङंरे अनाथ अबुरे दयाला । तूं सरणांगत रा खण धीरा । तूंवलि तारक है वडवीरा ॥ १८ ॥ तूंही जिसो वम्ह ज्ञागज

पायो । तो मेरो कामचड्योरे सवायो । करजोडी प्रभु वीनवुं तो सुं । करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारण वारो । भवसायरथी पारउतारो । सारंग ह्यणा पुर मंमण सोहै । तिहां श्री शांति सदा मनमोहै ॥ २० ॥ पदम सागर गुरु पाय पसाया । श्री गुण सागर के मन भाया । जे नरनारी इक चित्तगावै । ते मनं वंछित शिवसुख पावै ॥ २१ ॥ ※ ॥
इति श्री शांतिजिन स्तवनं शांतिकरणार्थ ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री दादाजी पूजा स्तवन संग्रह ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सकल गुणगरिष्टान् सत्तपोभि वंरिष्टान् । शम. दमय मनुष्टांश्चा रुचारित्र निष्टान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुश लसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आह्वानं ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशलसूरि अत्र तिष्ट ठः ठः स्वाहा ॥ ※ ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ ※ ॥
इति सन्निधी कारणं ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक भरपूर । कल शभरी गुरु चरणपर । ढालै तस दुखदूर ॥ १ ॥ ※ ॥ (ढाल) देशी सूर ती महीनांनी ॥ ※ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खीर दधि घरदधि ज्यौं उज्जल जल भरपूर । तेह उदकथलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढालै टालै दुकृतदूर ॥ १ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिन कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

॥ ※ ॥ चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बावना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु चरणनें । पांमें जै जैकार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ मलयागर तिम अगर चं दन वलिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधे पूरी घस घनसार । कुशल सूरि गुरुचरणे चरचै चढते भाव । सकल रोग तन सोग हरै वलि जमता भाव

॥ २ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुष्पं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजै जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदै ऊवै । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ चंपक केतकि मरुवो दमन सेवंती फूल । जाई जूई मोगरो मालती तेम उडूल । कमल गुलाब चंबेली बेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवै होवे जस ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अक्षतं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण । खंडित नहीं विशाल । अक्षत गुरुचरणे ठवै । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ सरल सुगंधित तंडुल उज्जल जल उतूपन्न । ज्यूंवर मोती आभा ऊंती उज्जलवन्न । जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य । स्वस्तिक कुशल बधावै पावै मंगल भव्य ॥२॥ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ※ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दीपं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूत धर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न । दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी सस नूरी मौली वाती जोय । दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ※ ॥ इति दीपपूजा ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धूपं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बावन्ना चंदन अगर । सेल्लारस घनसार । धूपै जे गुरु धूपथी तस घर रिध बिसतार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ अगर चंदन सेल्लारस गरु गमीलो मेल । कपूर काचरी वलि घनसारै मृगमद भेल । धूप अडंग करी

गुरु धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामैं नव नव नित्त ॥ २ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ※ ॥ इति धूपपूजा ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नैवेद्यं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ साल दाल पकवान घन । व्यंजन नव नव भांत । नेवज गुरु आगल ठवै । क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ पेंमा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर । खाजा ताजा लापसी दोगनें घृतपूर । पिस्ता दाख विदाम छुहारा पिंडखजूर । गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥२॥ ॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ※ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ फलं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय । ढोवै जे गुरु चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ ※ ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम दाख । खरबूजा तरबूज जंभेरी पाकी साख । करुणा कमला केला नीबू फनस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामैं श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः । फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ※ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अर्घं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अथ कलश) दूहा ॥ ※ ॥ इम जिन कुशल सुरिंदनें । पूजै अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजै । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछै । श्रीजिन लाभसुरिंद । रत्नराजमुनि भमरपर । सेवै पद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद । श्रीसदगुरु पूजा रची । सोधोकविजन वृंद ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्ट प्रकारी पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया । सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि गुरोश्चरणांयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं

श्री श्रीजिन कुशल सूरिः । चरण कमलेभ्यो जलं० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाड्यरुजा तप हारिणा । सकल०॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं०

॥ ※ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट् पद वृंदकै ॥ सकल० ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यया०॥३॥

॥ ※ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सरल तंडुल कैरित निर्म्मलै । प्रवर मोक्तिक पुंजवडुज्वलैः । सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । अक्षतं यया महे स्वाहाः ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वज्र विधै श्चरुभि र्वटकेय कैः । प्रवर मोदक पुंज सु खर्जकैः । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० नैवेद्यं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अति सुदीप्त मयै खलु दीपकै । विमल कंचन भाजन संस्थिते । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । दीपं यया महे स्वाहा ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिक्षु सुधुम्रकैः । सकल मंगल०॥ ॐ ह्रीं श्रीं०। धूपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ फल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटै । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्भटै । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । फलं यया महे स्वाहाः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै । श्चरु प्रदीपक धूप फलादिभिः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० श्रीजिन कुशल सूरि० । अर्घं० स्वाहा ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ सद्गुरूणां आरती लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै । डुखदोहग सब दूर हरीजै । (जैजै सद्गुरु आरती कीजै)। श्रीजिन कुशल सूरि समरीजै । (जै जै०)

॥ १ ॥ बीजी बीज पमंती धारा । भयवारण तूंही सुखकारा (जै०) ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब डुर्मति मेरी (जै०) ॥ ३ ॥ चौथी मुगलपूत जिय दायक । सुरवर हुकम धरै ज्युं पायक ॥ (जै०) ॥ ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संघ सकलनो संकट वारी ॥ (जै०) ॥ ५ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी । विद्या पोथी परगट कारी ॥ (जै०) ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी । सूरमंत्र सुरनैं आराधी ॥ (जै०) ॥ ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै । मनवंछित संपति फल लीजै ॥ (जै०) ॥ ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥ (जै०) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रीदादाजीको स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विलशे ऋध्दि समृध्दि मिली । शुभयोगै पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरु अतुल वली । मनवंछित आपै दादो रङ्गरली ॥ १ ॥ मङ्गल लील समैं विपुला । नव नवय महोछव राजयला । सुपसायै गुरु चढतीकला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सवला । सद वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक वज्जला । किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ बीजै चमर निसाण घुरै । नरवै दरवार खमा पुहरै । जय जय करजोडी उचरै । सांनिध्द गुरू सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । डुखरोग डुकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माद्दल नाद घुमैं । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमैं । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं । सबला अरियण ते आय नमैं ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तनैं । पहिरै वेलाउल होय रनैं । ध्यावो कुसल गुरु एक मनैं । जूंनक सुरमंदिर भरै धनैं ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आवै । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसीयां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिमरै । बूमंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं तरै ॥ ९ ॥ खम खम खग्ग प्रहार वहै । सोदामनि जिम सम सेल सहै । कुशल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचापूरै । श्री नागपुरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भय टालै दूरै ॥ ११ ॥

वीरमपुर वाने सुधरै । खंन्नाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटै पवरे। जसु कीरति महिमंडल पसरै ॥ ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगै । उत्तर गुरु दीपै सौन्नागै । दह दिशि जन सेवा मांगै । श्रीखरतर गह्ननी म हिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामै । गाईजै कुशल नयर गामै । पूजै जे नर हितकामैं । ते चक्रवर्त्ति पदवीपांमै ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि साखै । सेवकजननैं सुखिया राखै । समस्यां गुरुदरसण दाखै । श्रीसाधु कीर त पाठक न्नाखै ॥ बिल० ॥ १५ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि०॥※॥

॥ ※ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरि । वंदिसु खर तर गछरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । बत्तीसै जसु जम्म । वाछिग मंत्रि पिता जणणी । वाहम्मि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि छठि दिन । पइ प्रणमैं सुरथाट ॥ ३ ॥ अंबम्म सावइ करलिहिय । सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जगपयम्मियोए । सिरि सोहै पम्मि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइण माइण विज्जुलिय । पुहविह नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ साविय लक्ख इग । पम्मि वोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि डुष्टदल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमैं नर राय ॥ ७ ॥ संबत बार इग्यारसमैं । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारसि आसा ढ सुदि । सगपत्तन सुह जांण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन दत्त मुणिंद । विघ्नहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ए ॥ ※ ॥ इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रिसह जिणेसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पय कमल । जगसङ्क पूरै आस ॥ १ ॥ ※ ॥ (चौपई) ॥※॥ चंदकुलं वर पूनिम चंद । वंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम नि वास । जो समरै तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम । धण कण कंचण अति अन्निराम । जिहां वसै जिल्हागर मंत्र । जैतसिरी तसु धरणी

कलत्र ॥ ३ ॥ जस तेरैसै तीसैं जम्म । सैंताले सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरैं जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ नूमंम्मल सरगै पायाल । अचिराचिरजुग इण कलिकाल । प्रज्ञु प्रताप नविमांनै सोय । मैं नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन धन्न सुवन्न । पुन्नहीण पामैं वंछ पुन्न । असुखी पामैं सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यांन ॥ ६ ॥ प्रज्ञु समरण आपद सङ्क टलै । सयल सांति सुखसंपति मिलै । आधि व्याधी चिंता संताप । ते छंमी नवि मंम्है व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां । प्रज्ञु दरसण उत्कंठा जिहां । सेवतां सुरतरुनी छांहि । निश्चै दालिद्र मेटै वांहि ॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रज्ञु नांमैं जे नकरै पीम । जांजै जावठ जव जय जीड ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंमित थाय । प्रज्ञुपसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछै जव सायर पोत । सो सदगुरु मैं जेव्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल) आज घर अंगण सुरतरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलियौ । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमैं धन्ने गिणियौ । जुगपवरागम जोमैं थुणियौ । चंद्रगछ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवीपतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवत जणीजै । श्रीजिन कुशलसूरि समरीजै । सरै काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसैं । मुलक वाहणपुरमैं मन हरसैं । अजिय जिणेसर वरजवणैं ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन हरण सङ्क पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम ष्ट सेवै सुर नर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अजिनंदै । ऋध्दि समृध्दि सो चिरनंदे । मन वंछित फलमुफ ऊवो ए ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उतत्ति विचारगर्जित स्तो० ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरिजीको छंद लि० ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ समरुं माता सरसती । कुमारी करजोड । कवि माता कवियण तणा । पूरैं वंछित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु । दायक वंछित

देव । अहनिसि तो ओलग करैं । सुर नर सारैं सेव ॥ २ ॥ पुर पट्टण गांमें प्रगट । जग सगलै जस वास । पुरावदी तौ पालियै । वसैसु दादो वास ॥ ३ ॥ (छंद मोतीदांम) ॥ दादो वासदियै दौलत्त । वधै छत्र गया सेवक वित्त । वधारैं मांम दिसो दिसवान । धरैं इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥ ॥ ४ ॥ पूनम पूनम पूजै पाय । नवा नवा नैवज वार निपाय । चंपावलि केतकि फूल चरच्च । अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर लछि अछेह । सरूंती सोल वधंती नेह । लहै घर नारी लोयण वांण । लहै घरपूत सपूत सुजांण ॥ ६ ॥ लहै भलगांम सुठांम भूवाल । लहै ढिग मीत भला ढीचाल । लहै घर मंदिर घोडा जोमि । लहै भट सेव करैं कर जोडि ॥ ७ ॥ लहै घर मैंगल मद्द मसत्त । लहै घर चीर अनोपम सत्त । लहै घर साजण हल्ल किलोल । लहै नितलीला छाका छोल ॥ ८ ॥ लहै घरकुरला कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहै मनवंछित भोग विशाल । लहै घर साल कचोला थाल ॥ ९ ॥ घुरैं नित गीत तणा गह गट्ट भणे नित जय २ चारण भट्ट । फलै पूत सपूतां वांझि फलंति । विछोहा वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरुद्द अपार । दीछे इक काल्हां तूं दातार । जीहां सहस्स हुवै जो मुक्ख । कहुं इक जीहां केई रुक्ख ॥ ११ ॥ वमा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवैं जात । गुणें कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा) रीस न करज्यो कवियणां । मैं माहरी मतिसार । कहीयो जगमें कुसल गुरु खरतर गछ सिणगार ॥ १३ ॥ (छंद नाराच) सिणगार हार सोहए । सुकांमधेनु दोहए । धरंत ध्यांन जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो देराउरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंभ जागतो । सुदिठ संघ सावतो ॥ ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हैरं फतै पुरै । गुरू सदा उदो करैं ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत चित्त ओलगो । वीकांण वांन वाधतो । सुथांन थांन सावतो ॥ १७ ॥ प्रभावना रिणीपुरै । नीसाण वाजता घुरै । नागोर नांम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेम्हतै सही । अपार लच्छी जां लही ॥ १९ ॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुक्ख चूरतो । कला अनेक आगरै । छत्तीस

नकूलरे ॥ २० ॥ दादारी करंत सेव । हिंडुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा नेर। जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरशरै अनेक । राखतो जु ठेमै टेक मालपुरैं मझिमान । खान खान सेवै थांन ॥ २२ ॥ ब्राहणपुरै राजरीत । जे तारणें जगत्रजीत । सोझित सुख सद्दयं । वेनातटैं विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खे जमलै खरो सदा । वांद्दम मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा । जुमंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अमरी । जालोर जैत सिंधरी । खंभायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें। सूरत सुक्ख सांघणें । अनन्त तेज अद्दम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर भु ऊ सासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । उदैपुरैं जु इम्मरै । सेत्रावे कोटले गुरै ॥२७॥ गुरू सदा उदो करै । एकांत ध्यांन जो धरै । नमंत न्नांण जेतली । कीरत्त कोम्म तेतली ॥२८॥ (दूहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समरयां होय हजूर । अलगी टाले आपदा । जिम अंधारैं सूर ॥ २९ ॥ (कलश) सूर तेज जिम नूर । दूर आपद भय टालै । मावीतां ज्युं मयाकरी । सेवक नित प्रतिपालैं । मनवंछित मा वाप । कुशल गुरु कामित दाता । पूनिम पूजै पा य । रहै जे ध्यानैं राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अभय सोम मंगल करी । प्रगटियो थुंभ पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ※ ॥

॥※॥ सदगुरुजी थे सांभलो । श्रीजिन दत्त सुरीसहो । सेवकने सांनिध क रे । पूरो मनहजगीसहो ॥१॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो)। दौलतदो गुरु माहरा । थांहरा विरुद अनेकहो । तोसेव्यां संकट टलै । एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥२॥ दौ०॥जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया बावन वीरहो । सिंध मांहे तें साधीया । पंचनदी पंच पीरहो॥३॥ दौ०॥ पडिकमणां मांहे वीजली। वलीय वली छत्र कायहो । थे मंत्री राखी तिका । तूठी वरदेजायहो ॥ ४ ॥ दौ०॥ उच्छव करतां उत्तम । मूंओ मुगलरो पूतहो । जापकरी जीवामीयो । संघ मांहै राख्यो दादे सूतहो ॥ ५ ॥ दौ०॥ वम्भ नगररे ब्राह्मणें । देहरै च री मृत्यु गायहो । पंच परमेष्टि विद्यावलें । पिसुण लगाया दादै पायहो ॥६॥ दौ०॥ विक्रम पुर व्यापी मरी । तैं दूरकीया सहु दुखःहो । परवार पिण पोतैं कीयो । सहुनें दीधौ दादैं सुःखहो ॥ ७ ॥ दौ०॥ अंबड हाथे अक्खरैं । थे

प्रगट्या तत खेवहो । जुग प्रधान जग तुं जयो । आखै अंबिका देवहो ॥ ॥ ८ ॥ दो० ॥ थांनो वज्र विदारनें । पोथी परगट कीधहो । विद्या सोवन अक्षरें । उज्जेणी मांहे लीधहो ॥ ए ॥ दो० ॥ इम विरुद घणाछै ताहरा कहितां नावै पारहो । भाग संजोगै दादौ भेटीयो । अरूवमीयां आधारहो ॥ ॥ १० ॥ दौ०॥ जंबु सेवक ताहरौ । थे आपो धनरिद्धहो । भुवन कीरति सुप सावलै । लाभ उदै सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दो०॥ इति श्री दादाजी गीतं॥

॥ ॥ (पुनः) राग जैतस्री ॥ ॥

॥ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरू ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यौं । खरतर गछवरू (स०) वावनो चंदन मृगमद मेली । पूजो प्रेमभरू ॥ (स०) ॥ १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विम्मारण । दालिद्र दूर हरू ॥ (स०) ॥ २ ॥ दिन दिन साहिव चढिते वानें । ध्यावो ग्यान धरू (स०) वाजै जेहना जशना वाजा । गवी गांमै जरू ॥ (स०) ॥ ३ ॥ संवत् अढार समैं अमसठै । मिगसर मास थिरू (स०) संघ सहित श्री सदगुरु भेटे । श्रीजिन हर्ष सरू ॥ (स०) ॥ ४ ॥ गांव गडालै चरण नमंता । तूठो कल्पतरु (स०) पाठक श्रीविद्याहेम गणीनैं । उदय रतन करू ॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (पुनः) देशीकी चालमें ॥ ॥

॥ ॥ (दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो । दादौ दीनदयाल सदा दाता । दादो समस्यां आपै सुखसाता । दादौ जगनायक जगगुरु त्राता (दा०) ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरै । दादौ सेवकना संकट चूरै । दादौ डुरित हरै सज्जनी दूरै ॥ (दा०) ॥ २ ॥ दादा अलगांथी जात्री आवै । दादौ देखीनें ते सुख पावै । ह्यांरा दादाजीनी जोडै कोई नावै (दा०) ॥ ३ ॥ दादौ राज नगर मांहे राजै । जिहां सुजश नगारा नितवाजै । दादौ ठेगालां सेहर ठजै॥४॥ (दा०) दादा घस केशर सूकम घोली । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीनें मिल २ टोली (दा०) ॥ ५ ॥ दादौ आरतियां आरति टालै । दादौ सेवगजननें प्रतिपालै । दादौ जिनशासन नित उजवालै ॥ ६ ॥ (दा०) दादौ महिमावंत महाराजा । दादौ राजै खरतर गछराजा । दादौ समस्यां सफल करै काजा

(दा०) ॥ ७ ॥ दादौ कुसल सुरिंद बहुगुण धारी। दादौ परतिख सुर तरु अवतारी। जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी ॥ ८ ॥ (दा०) दादौ श्री जिन चंद सुरिंद पाटै। दादौ गाजै गुणियण गहगाटै। जसु थान सोहै जगथिर थाटै (दा०) ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ परिकरियै। दादा आरतिपीमा दुख हरियै। दादा जिम जग जय कमलावरियै (दा०) ॥ १० ॥ दादा सेवगनें सांनिध करज्यो। दादा दुसमणनें दूरै हरज्यो। जिणचंदना मन वंछित फलज्यो (दा०) ॥ ११ ॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (आषाढै भैरु आवै इस चालमें) । गाजै जिन कुशल गमालै। सेवकनां संकट टालैहो गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै। सेवकनी चिंता चूरै हो (गा०) ॥ २ ॥ छतरी नितरी छविछाजै। विचमें थिर थुंन्न विराजै हो (गा०) ॥ ३ ॥ फुलरे यात्री मिल आवै। दादौ जी दीठां सुखपावै हो (गा०) ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली। मांहें वलि मृगमद घोली हो (गा०) ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली। गावो गुण गीत रसाली हो (गा०) ॥ ६ ॥ दादौजी दुखियां सुख देवै। निरधनियां नित धन देवै हो (गा०) ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला। गुरु नांमें पामें कमला हो (गा०) ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी। पामें परिकर सुखकारी हो (गा०) ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै। गुरु पूज्यां वंछित पावै हो (गा०) ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी। तिणवेला जलधर आणी हो (गा०) ॥ ११) ग्रहगोचर जोर जंजालै। पीमा दुवै आलै मालै हो (गा०) ॥ १२ ॥ वाजै जगजशना वाजा। राजै खरतरगच्छ राजा हो (गा०) ॥ १३ ॥ जसु जैत सिरी वरमाता। जिलहागर मंत्रि विख्याता हो (गा०) ॥ १४ ॥ संवत सतरैसै इक्यासी। काती पूनिम परकासी हो (गा०) ॥ १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै। अधिके हर देत उल्हासै हो (गा०) ॥ १६ ॥ इम यात्र करी आणंदै। जिन भक्ति जती सर वंदै हो (गा०) ॥ १७ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः (राग धन्यासरी) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आयो आयो जी समरंता दादो जी आया। संकट देख सेव

क कुं सदगुरु। देरावरतें ध्यायो जी समरंतां (दा०) दादा वरसै मेहनें रात अंधेरी । वायपिण सवलौ वायौ । पंच नदी हम वैठे बेमी । दरीयै हो दादा दरीयै चित्त फरायो जी ॥ (स० दा०) ॥ २ ॥ दादा ऊब न्नणी पोहचावण आयो । खरतर संघ सवायो । समय सुंदर कहै कुशल १ गुरु । परमानन्द सुख पायो जी । समरंतां दादोजी आया ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ (राग लऊरी) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ न्नाया न्नक्तिसुं पूर रहोरे । डरजन सब दूरहोरे (न्ना०) मेरे मनमें न्नक्ति वैरागी । चित्त परणित लगनसुं लागी । मोरी न्नाग्यदसा अब जागी ॥ (जीया हो) ॥ (न्ना०) ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो । गुरु चरणे चोक पुरावो । वलि अक्षत धवल वधावो (जीया हो) ॥ (न्ना०) ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई । गुरु नाम सदा सुखदाई । गुरु सेव्यां पाप पुलाई (जीया हो) ॥ (न्ना०) ॥ ३ ॥ घस केशर न्नरकै कचोली । मांहै मृगमद कुंकम घोली । गुरु पूज रचो न्नरझोली (जीया हो) ॥ (न्ना०) ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष सूरी सर राजा । वाजै जग जशाना वाजा । सत्य रतन करै सुन्न काजा (जीया हो) ॥ (न्ना०) ॥ ५ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ ※ ॥ (राग केरवो) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो न्नवि हितसुं (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजा । न्नाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ (कु०) ॥ १ ॥ मोगरा लालगुलाब मालती । मनसुध माल करै न्नवि रुचिसुं (कु०) ॥ २ ॥ अशरण शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यांन धरो आतम रुचिसुं ॥ (कु०) ॥ ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगत् गुरु । आसापुरै गुरु घणु दत्तसुं ॥ (कु०) ॥ ४ ॥ ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै चित हित मतसुं ॥ (कु०) ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी । परतिख परचापूरै सतसुं ॥ (कु०) ॥ ६ ॥ श्री जिनहर्ष सदा सुविलासी । सत्यरतन सुख एही व्रतसुं ॥ (कु०) ॥ ७ ॥

॥ ※ ॥ (राग देवश्री चलत) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आज करोरे उछाह । श्री जिनकुशल सूरिंद आगै । (आ०) आ आठी वेलानें ठ आछे दाव । इण आठी वेला क्यूं करो लाज ॥ (आ०)

॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (आ०) धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल वारीनो नही जिहां पार ॥ (आ०) ॥२॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह । पुत्र कलत्र पांमैं संपदा तेह ॥ (आ०)॥३॥ सुर नर नारी ऊना करै जोड । कौण करै म्हांरा दादाजीनी होड ॥(आ०) ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गच्छपति सिरदार । राजा राणा सेवै इकतार ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंद गुरु गरीब निवाज (आ०) ॥ ६ ॥ श्री जिन हर्ख करै उछरंग । सत्य रतन मन ग्यान उमंग ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (राग वंगालो घाटो) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मैं निरख्या गुरु महाराज । छतीयां हर्षभरी (मैं०) अमल अनंत गुण आगरूरे । समता रसनो धाम । परम परम परमातमारे । वंछित दायक स्वाम ॥ (छ० मैं०) ॥ १ ॥ करुणा निध गुरु दोलतीरे । सेवक जन प्रतिपाल । भविजन भक्ते भावसुंरे । ल्यावै भर भर थाल ॥ (छ० मैं०) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमारे । भरीय कचोली हाथ । पदमण आवै मलपतीरे । पूजै सहीयर साथ ॥ (छ०मैं०) ॥ ३ ॥ कुशल सुरीसर साहिबारे । श्रीजिनचंद सूरि पाट । वलिहारी जिन कुशलनीरे । गाजै घणुं गहिगाट ॥ (छ० मैं०) ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करैरे । सुखसंपूरण सार । श्री जिन हर्ष सूरी सरूरे । सत्यरतन सुखकार ॥ (छ० मैं०) ॥ ५ ॥ ※ ॥ इति स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (राग प्रभाती) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं गुरु राय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु । सफल भयो सेवा चरणकी ॥ (वा) ॥ १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा । अशुभ करम सब हरणकी ॥ (वा०) ॥२॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी ॥ (वा०) ॥ ३ ॥ मोह नही परवाह अनेरी । शरनग्रही इन चरणकी ॥ (वा०) ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष तुम चरणां को दासा । आशापूरो सुख करणकी ॥ (वा०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥※॥ कुशलगुरु अब मोहि दरशण दीजे । (अ०) ऐसी भांति करो मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जै (कु०) ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृत रस । श्रवण अंजलि भर पीजे । सुरतरु सम दरशण विन देख्यां । कहो नयण किमरीझै (कु०) ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज सुणीजै । परम भगत जिनराज तुमारो । अपनो कर.जाणीजै (कु०) ॥३॥ इति स्तवनम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण । समस्यां होय हजूर (कु०) ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण । असुभ हरण भये दूर । संघ उदोकर सदगुरु मेरा । वीनवै श्रीजिन चंदसूर (कु०)॥२॥

॥ ※ ॥ (देशीकी चालमें) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय (स०) । श्रीफल भेट चढावस्यां । म्हेतो चरणांरी पूज रचास्यां हे माय (स०) ॥ १ ॥ मारूदेशमैं सोभता । नगर वीकांणै राजै हेमाय । गांम गम्मालै दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा गाजै हे माय (`स०) ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे माय । सुखदायक श्रीसंघनें । खरतर गछ अधिकारी हे माय (स०) ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा। हिल मिल यात्री आवै हे माय । लुल २ सीस नमावता । संत सुजस मिल गावै हे माय (स०) ॥ ४ ॥ सझ सिणगार मनोहरू । छम २ पाय छमकावै हे माय (स०) । तन मन प्रांण लोभावती । गौरी मंगल गावै हे माय (स०) ॥ ५) विछुड्यां साजन मेलवै । अनमी पाय नमावै हे माय । मनरा मनोरथ पूरवै । पर घल लखमी ल्यावै हे माय (स०) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाटमैं । समस्यां सांनिध आवै हे माय । भूखां भोजन मेलवै । तिसियां नीर मिलावै हे माय (७) यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगाट हे माय (स०) ॥ ८ ॥ कुशल सूरिंद गुरु आगलै । त्रिमिल भावना भावै हे. माय । चंदफतै मुनि

नित नमैं। परमानंद सुख पावै हे माय (स०) ॥ ए ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आयो सङ्घ श्रीसंघ आसधरे । गुरु मौन गह्यां कहो केम सरे दरशण वहिलो सदगुरु दाखो । निज सेवक जांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमी वेला आयवणी । केहवी करीयै तुझ अरज घणी । अलगाठो तो वेगा आवो । हिव ढील घमी न्नर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर गच्छ साचो । कोई न जांणैं तुमनें काचो । इण संकटमें आलस न करो । दादा डुशमणनैं दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पमी सदगुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरि खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चै पोतानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सङ्घ मिलकर अगं लगे । पाठा किम जावां इणं पगे । इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी । हिव सवकां मेलो करीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जगचावो । अपणायतकर वेगा आवो । अगला विरुद ते अजुवालो । परधल निज ठेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गम्मालै एगायो । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजी ऊय सगला रंगरली । जिनचंद्रनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ताल ठुमरी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु रायजी (सदा०) खाई न खूटै खरची न तूटै । दिनर वधै सवाय जी (स०) ॥ १ ॥ सकजा सुत ऊर सुंदर नारी । सुन्न परिकर सुख दायजी (स०) । मित्र समागम सुजशवधारण । नित प्रति हरष उछाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा परजा पायनमें सहू । गुरु समरण सुपसाय जी (स०) दोखी डुशमण नृप न्नय पमियां । सदगुरु करय सहाय जी (स०) ॥ ३ ॥ विषमी विरियां संकट पडियां । समस्यां आवै धायजी (स०) न्नूखां न्नोजन तिशियां पाणी। निरधनियां धनदाय जी (स०) ॥ ४ ॥ संघ सकलनैं द्यो सुख शाता । जिम कीरत जग थाय जी (स०) । थानक थिरता पर घल न्नोजन । पग पग कुशल सहाय जी (स०) ॥ ५ ॥ अन्नय महा सुखदाई सदगुरु । नवनिधि वंछित थाय जी (स०) । सुमति सवाई नितवर संपद । दान विशाल लहायजी (स०) ॥ ६ ॥ इतिं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुन ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिन कुशल सुरिंद गुरु सदा नमो (जि०) ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांई नमो ॥ जि०॥ १ ॥ वाट घाट अरु विषमी विरयां । विघन बुराई दूर गमो (जि०) ॥ २ ॥ अह निशि नांम मंत्र उरधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो (जि०)॥ ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥ ४ ॥ अन्नय महा सुख संपति पावो । सुथिर थानक थिति जमो जमो । (जि०) ॥ ५ ॥ इति

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ छत्रपती थांरै पायनमें जी । सुर नर सारे सेव । ज्योति थांरी जग जागती जी । दुनियामें परतिख देव ॥ १ ॥ ऊं तो मोहि रह्यो जी ह्रांरा राज । दादैरे दरवार (ऊं०) केशर अंवर केवड़ो जी । करतूरी करपूर । चांपो चंदन राय चंवेली । भक्ति करूं भरपूर (ऊं०) ॥ २ ॥ पांगुलियांनें पाव समापै । आंधलीयांनें आंख । रूपहीणानें रूप देवै दादो । पंख हीणानें पांख (ऊं०) ॥ ३ ॥ चंदपाटोधर साहिबो जी । श्री जिनकुशल सूरिंद । आठ पोहर थाने उलगै जी । रंग घणें राजिंद (ऊं०) ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदगुरु जी सुणों मोरी अरजी (स०) पहिली काम कीये बहु तेरे । अपणा विरुद विचारी । पल पल चूक परी सदगुरु जी । में मुत लवका गरजी ॥ (स०) ॥ १ ॥ ध्यांन तुमारो कबहु न ध्यायो । पूजा करी नही तेरी । तोई सेवक वंछित पूरया । आही थांरी मरजी ॥ (स०) ॥२॥ निश्चै सेती तुम गुण गावै । तुरत कटत दुख वेमी । भक्त उधार कहावत जगमें । ताहै करत ऊं अरजी (स०) ॥ ३ ॥ और देव कुं में नही ध्याउं शरण ग्रहीमें तेरी । दूर थकीमें भेटण आयो । विपत दिशा सब तरजी ॥ (स०) ॥ ४ ॥ कुशल गुरुका में हूं सेवक । लोक जांणें सब कोई । क्षमा रतनकी वीनती सुणकै । दरशण दीयो सदगुरु जी ॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति

॥ ※ ॥ होरीकी चालमें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय २ (इस चालमें) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदगुरुके चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरु करोरे सहाय । (सद०) बावन वीर अनैं वलि चौसठ । जोगणि वसकीनी हर्ष लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांभो वज्र विभार पाय (सद०) ॥ ॥ १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल । पंच नदी साधी चित्तलाय । इत्यादिक बहु परचा पूरक । गुरु समर्यां सब दुक्ख जाय (सद०) ॥ २ ॥ गुरुके नामसैं अमसिद्धि नव निधि । गुरु गुण गावो सबही धाय । श्रीजिन शौभाग्य सूरि सुगुरु पर । महिर करो गुरु सुःख दाय (सद०) ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ नेम श्यामसैं कहियौ मोरी (इस चा०)

॥※॥ गुरु पूज रचोरे सुग्यानी । भली हीयै भक्ति भरानी (गुरु०) श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब । खरतर गच्छ राजानी । देश देश मैं थानक गुरुका । सोभा जग पहिचानी । सदा रवि तेज समांनी (गु०) ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली । चरणांरी पूजरचांनी । धूप दीप वलि आगल होवी । बहुविध पुष्प चढानी । भला फल भेट धरांनी । (गुरु०) ॥२॥ वाट घाटमैं परचा पूरक । हाजर होत सदानी । श्री जिन शौभाग्य सूरिके साहिब । वंछित काज करांनी । सदा गुरु महिर लखानी (गुरु०) ॥३॥ इति पदम् ॥

॥ ※ ॥ राग प्रभाती ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी । (कैसे०) मोकु सबल भरोसा तेरा । चंदसूरि पटधारी । (कै०) ॥ १ ॥ तुम विन और न कोई मेरे । या जगमें हित कारी । मेरा जीवन हाथ तुमारै । देखो आप विचारी । (कै०) ॥ २ ॥ आगै तो केई बेर हमारी । चिंता दूर निवारी । अबकी विरियां भूल मती जावो । सदगुरु परउपगारी (कै०) ॥ ३ ॥ अबकै आप लाज गूजरकी । रखीयै गुरु जशधारी । मेरैं कुशल सूरिंद गुरु तेरा । बमा भरोसा भारी (कै०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग प्रभाती ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब । तुमहो पर उपगारी (श्री जि०) । खरतर गच्छ नायक गुणलायक । जिनचंदसूरि पटधारी (श्री०)

॥ १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण । भीड भंजन अति भारी । नाम तु मारो कुशल करण जग । वारी जाउं वार हजारी (श्री०) ॥ २ ॥ जगव ल्लभ तुमही हो जगत्गुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरेहो सदगुरु । हमहै शरण तुमारी (श्री०) ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ श्री गणधर गुरु कुशलसूरिंद कै । चरण कमल परिवारी । (श्री०) केशर चंदन अक्षत कुंकुम । जलभर कंचन भारी । देवक आगै मंगल दीपक । फूल धरुं फूल वारी । (श्री०) ॥ १ ॥ ऐसी भांति करुं विध पूजा । आनकै चित्त इकतारी । राज कहत मेरे परम गुरुकी । वेर वेर बलिहारी (श्री० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ रेखता ॥ ॥

॥ ॥ कुशल गुरु देखकैं दरसन । मेरा दिल होत है परसन । जग तमें या समो कोई । न देखा नयनभर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंमलै गाजै । फरसतां पाप सब भाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घरआवै ॥ २ ॥ इकै मुख गुण कहुं केता । मुझै विज्ञान नही एता । लालचंदकी अरज सुन लीजै । चरण की सरणं मोहि दीजै ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ (राग कहरवो) ॥ ॥

॥ ॥ कुशल गुरु दरशण दीजै हो (कु०) खरतर गछपति कुशल सूरिंद गुरु । मुझपर महिर धरीजै हो (कु०) ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो । इतनी अरज सुणीजै हो (कु०) ॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दो खी दुशमण । ए सब दूर हरीजै हो (कु०) ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कुं निस दिन । सदगुरु सानिध कीजै हो (कु०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ वंशी हमारी दीजै (इस चालमें) पूजो भजोरे भाई । गुरु म हिमा योत सवाई (पू०) । मृगमद केशर चंदन अरचो । सुंदर पुष्प च ढाई (पू०) ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गावे । वाकै सदगुरु हो त सहाई । (पू०) ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे । निशि दिन

हर्ष वधाई (पू०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (ढाल) ॥ मालण ल्यावै फूलमा (ए चाल.) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हुं तो अरज करुं करजोमनैं जी । ह्मांरी अरज सुणो महारा
ज । (सदगुरु) विरुद घणाहै राजराजी । सूरि सकल सिरताज (स०)
(सुनिजर जोय जो साहिबा) । थांरे रावल राणा राजवीजी । थांरा पूनिम
पूजैं पाय (स०) ॥ १ ॥ केशर अगरज कुंकुमांजी । कांई मृगमद रही म
हिकाय (स०) (सुनिजर जोय जो साहिबा) ॥ २ ॥ थांरै घुमलांरै आ
गल घूवराजी । ढुलत चमर गजढाल (स०) कारण सेवै कामनी जी ।
कांई निरख करै जी निहाल (स०) (सुनिजर०) ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोमै
थापना जी । कांई उदयापुर आंबेर (स०) महिमा भली गुरु मेमतै जी
कांई सालूमै वाली सांगानेर ॥ (सदगु० सु०) ॥ ४ ॥ थांरी ज्योति वणी
गुरु झिगमिगै जी । कांई वधती गढ वीकाण (स०) आशा पूरण आव
ज्यो । थेतो देरावररा दीवांण । (स० सु०) ॥ ५ ॥ ह्मांरी वीनतमी भलै
मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल (स०) कुशल सदा कविराजरै ।
कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ (स० सु०) ॥ ६ ॥ इति पदम ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (लावणीकी चालमें) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सदगुरुजी ह्मांरा सरणैं आयां की लज्या राखज्यो (स०)
पतित उधारण विरुद सुणीनें । आयो तुमरै पास । अब मनवंछित पूरो माह
रा । ए हीज दिलकी आश जी ॥ (स०) ॥ १ काम क्रोध मद लोभ तजी
नें । तज दियो सब संसार । नवपदनो इक ध्यान धरीनें । पाया सब गुण
पार जी ॥ (स०) ॥ २ ॥ देश देशमें थुंभ विराजै । परचा जग विख्यात ।
इण कलु मांहे सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या साख्यात जी ॥ (स०) ॥ ३ ॥
चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तुंहीज देव । आण धर्म शिर ताहरी
(शिरे) करूं तुमारी सेवजी ॥ (स०) ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें ।
हितकारी गुरुराय । राजा राणा सब जग मांहे । सेवै तुमरा पाय जी ॥
(स०) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण पसायें । सीधा वंछित काज । लक्ष्मी
प्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका राजजी ॥ (स०) ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ॥ वधाई (राग कहरवो) ॥ ॥

॥ ॥ आजकी घडी ह्मांरै हरष वधाई । गुरु दरशण पायो सुखदाई (आ०) ॥ १ ॥ गुरु जग नायक वंछित दायक । गुण गण लंकृत सज्ज मन भाई ॥ (आ०) ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीनें । जैनी कुलकी रीत देखाई ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ गुरु परतक्ष सज्ज संघ सुखदायक । देश देशमें प्रगट रहाई ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण । सज्ज भवि मात पिता वरदाई ॥ (आ०) ॥ ६ ॥ कलिकत्तापुर मंडन साहिब । कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥ ॥

॥ ॥ वीरजीदीयेछै देशनारे । त्रिभुवन जन हितकाज । परपद बारनै आगलेरे । जगजीवन हितकाज ॥ वी० १ ॥ प्रभू मुख पद्म मनोहरूरे । जिहां वांणी मकरंद । भव्यमधुरतो भावथीरे । पांनकरै आनंद ॥ वी० २०२ ॥ अजर पणुं जगसंपजैरे । अमृतध्यान पसाय । प्रभू वचनामृत पांनथीरे । अजर अमर पद थाय ॥ वी० २०३ ॥ मधुर पणे मनमोहनीरे । अनुपम वांणि उदार । सांभले भव्यलहै सहीरे । जिन परभाव विचार ॥ वी० २०४ ॥ जिहां षट्द्रव्य विचारणारे । नय निक्षेप अभंग । चोविह धर्म प्ररूपणारे । सतभंगी अतिचंग ॥ वी० २२५ ॥ शासननायक जिन वरूरे । अनुपम अमृत धार । जलधर नी पर वरशतारे । भविचातिक हितकार ॥ वी० २०६ ॥ श्रीजिन लाभ पसायथीरे । जिन आतम हितजाण । वाचक अमृत धर्मनोरे । शीश भणें कल्याण ॥ वी २०७ ॥ इति देशना ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः देशना लि० ॥ ॥

॥ ॥ गुणनिधि श्री जिनचंद मुणिंदा । मुखसोहै पूनमचंदा । मोह्या सब सुरनरवृंदा ॥ १ ॥ सुगुरु ह्मांरा देशना हिवदीजै । थांरी देशना सुण मनरीझै । सु० ॥ दिनकर परकास सवायो । भूमंडल ऊपर छायो । कमलादि सकल मन भायो ॥ २ ॥ सु० ॥ वेलाउल देव गंधार । वलि भैरव राग मल्हार । गायन गावै सुखकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पंचसबद गहिर ध्वनि गाजै । जिनवर घर

झालर वाजै। सज्ज सज्ज थया धर्म काजै ॥ सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो । श्री संघना कारज सारो । मधुरै स्वर वचन उचारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण वीनती वचन विशेष । गुरु आपे धर्म उपदेश । टालो भविकोंमि कलेश ॥ सु० ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी । उपदेश सुणों भविप्राणी । सुणतां मन अतिहि सुहाणी ॥सु०॥ ७॥ गुरुप्रतपो ज्युं शशि सूर । दिन २ प्रति वधते नूर । हरो संघ सकल डुखदूर ॥ सु० ८॥ गोरीमिल मंगल गावै । भर मोत्यांथाल वधावै । या लावण्य कमल सुख पावै ॥ सु० ॥ ए ॥ ※ ॥

इति देशना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वधावो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मृगापुत्र गोखै रतन जडावहो (ए चाल) ॥ ※ ॥

॥※॥श्रीजिनचंद सूरीसरू । सुगुरु ह्मांरा । श्री खरतर गछ रायहो । श्री जिनलाभ पाटो धरू । सुगुरुह्मांरा । दिन२ सोभ सवायहो॥१॥ह्मांरा सहिजसोभागी । ह्मांरा सुभ गुणरागी । ह्मांराहितधरू । सुगुरु ह्मांरा देशनाद्यो मनरंगहो। संघ सज्ज उछक थयो ॥ सु०॥ सुणवा अमृत वांणहो । वहिला वंछित पूरहो ॥ सुगु०॥ थेंगे अवसर जांणहो॥२॥ह्मांरा०॥ सूर किरण धर संचस्या सु०॥ विकस्या कमल कलापहो । राग विभास प्रमुख तणा ॥ सुगु० ॥ होय रह्या आलापहो ॥ ३ ॥ ह्मांरा० ॥ पंच सवद झालरतणा ॥ सु० ॥ मंगलनाद उचारहो । इम वज्ज विध भू मंमलै ॥ सु० ॥ वरत्या जय २ कारहो ॥ ह्मांरा ॥४ ॥ संघसकल भगतैं करी ॥ सु०॥ जौवे थांरी वाटहो । नीचेपधारो गछ पति ॥ सु०॥ यो दरसण गहगाटहो ॥ ह्मां० ॥ ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें ॥सु०॥ पांव धरै उलसंतहो । जलधरज्युं गहरैस्वरै ।सु० वाचै सुत्र सिद्धांतहो ॥ ह्मां० ॥ ६ ॥ वज्जभवियण प्रति बूझवै ॥ सु० वयणसुधारस योग हो । उत्तम धरम प्रकाशता ॥सु०॥ टालै भव डुख भोगहो ॥ ह्मां०॥ ७॥ तेज तरुणी जिम दिन मण ॥ सु० ॥ गुण छत्तीस निवाशहो । मोहन मुद्रा तुम तणी ॥ सु०॥ निरख्यांमन उल्लासहो ॥ह्मां०॥ ८ ॥ थेचिर जीवो गछ पति ॥ सु० ॥ राज करो इक आंणहो । इम बोलै मुनि सुखसदा ॥ सु० ॥ वांणी क्षमा कल्याणहो ॥ ह्मां० ॥ ए ॥ ॥ ※ ॥

इति देशना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुनः देशना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जात्रा निवाणू करीये ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एहवा सदगुरु वांदीयै । भविकजन (एहवा०) आपतरै अवरनकुं तारै । शरण तिहांरी गहीये ॥ १ ॥ भवि०.॥ जिमसारथ पति साथीजनकुं । वंछित देशे वहीये ॥ २ ॥ भवि० ॥ तिम सदगुरु अमृत उपदेशे । लहै भविक सुख कहीये ॥ ३ ॥ भविक० ॥ गोपसमा गुरु गुण नित धारै । राखै गोजन महीये ॥ भवि०॥ ४ ॥ वलिनिर्यामक उपमधारै । जिमनाविक नौ तरीयै ॥ ५ ॥ भ०॥ एक असंजम दोयविधि वंधन । त्रिविधि दंम परिहरीयै ॥ भवि० ॥ ६ ॥ च्यार कषाय निवारक तारक । पंच महाव्रत धरीयै ॥ भ० ॥ ७ ॥ षट्काय रक्षक महा भय जीपक । अशरण शरण कहीजियै ॥ भ०॥ ८ ॥ एहवा सदगुरु नी वलिहारी । शरण गृही निसतरीयै ॥ भवि०॥ ए॥ गौतमस्वामि समा मुनि उत्तम । सर्व जीव सम धरियै । भवि० ॥ १० ॥ रिदयकमल नितप्रति राखीजै । आनंद शिवपद लहीयै ॥ भवि० ए० ॥ ११ ॥ इति देशना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वधावो लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भवि तुह्ले वंदोरे शीतल जिन पतीरे ए चाल ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थं कररूरे । वरधमान जिनराज । दरशण जेहनोरे दरपण ज्युं दीपैरे । शोभत तेज समाज । (भवि जन वंदोरे भावै गछ पतीरे) ॥ १ ॥ तसु पट राजैरे सुधरम गण धररूरे । ज्ञाता द्वादश अंग जंबू स्वामीरे शिष्य सोहामणोरे । चवद पूरब धरचंग ॥ २ ॥ भवि० ॥ प्रभव सज्यंभव जगमें परगमारे । श्री जशोभद्र मुणिंद । श्री संभूतविजय भद्रबाहुजीरे । श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ ३॥ भवि०॥ एम अनुक्रम दश पूरव धररूरे । ज्ञवा वयर मुणीस । श्री जिनमत दीपायो भूतलेरे । सुर नर नामत सीस ॥ ४ ॥ भवि० ॥ तास परंपर चंद्रकुले भलारे । श्री कोटिक गण धार । श्री उद्योतन सूरि सुहामणारे । वयरीसाख मझार ॥ ५ ॥ भवि० ॥ वरधमान परमुख सिख्य जेहनारे । चार अशी परमांण । गछ चौराशी प्रगट्या त्यांथकीरे । जांणे चतुर सुजांण ॥ ६ ॥ भवि० ॥ ताससीस जिनेश्वर सूरिजीरे । दुर्लभ राय समक्ष । खरतर विरुद लह्यो ते रूवमेरे । म

उपति जीतभंतक ॥ ७ ॥ ज्ञवि० ॥ नवअंगी वृत्ति कारक दीपतारे । श्री अजय देव सूरि राय । श्री जिनवल्लभ जिनदत्त गछपतीरे । श्री जिन कुशल अमाय ॥ ८ ॥ ज्ञवि०॥ परम प्रज्ञावक इण गछमें थयारे । आचारिज गुणवंत । शुद्ध समाचारी जगतेहनीरे । सुणि हरखित होय संत ॥ ९ ॥ ज्ञवि० ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमेंरे । श्री जिनलाज सूरीश । तास पटोधर जगमां परगमारे । श्री जिनचंद मुणीश ॥ १० ॥ ज्ञवि० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणीरे । सोम्यपणें दिजपत्ति । गंजीर गुण सागरने जीतियोरे । सुर सेवै दिन रत्ति ॥ ११ ॥ ज्ञवि० ॥ स्याद्वाद जिन धर्म वखाणतारे । नय निक्षेप विचार । ज्ञगपदारथ अति विस्तारसेंरे । ज्ञापे ज्ञवि हितकार ॥ १२ ॥ ज्ञवि० ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधै ज्ञलीरे । जिन वाणी अनुसार । एहनें सेवोरे क्युंज्ञूला ज्रमोरे । थाय सफल अवतार ॥ १३ ॥ ज्ञवि० ॥ सुरतरु गंमी वांवल आदरैरे । कोइ नर मूढ गिमार । ए ठेखाणो साचो मत करोरे । लहि एहवो गणधार॥१४॥ ज्ञवि० ॥ नामधारक आचारज्ठे घणारे । पंचम काल मकार । पिण इण सरिखो जगमा को नहीरे । स्व पर तारण हार ॥ १५ ॥ ज्ञवि० ॥ वाचक लावण्य कमल पसायथीरे । कमल सुंदरनी एवांण । जे मांनसी ते सुख नित पांमसीरे । पातिकनी करि हांण ॥ १६ ॥ ज्ञवि० ॥ इति वधावो ॥※॥

॥ ※ ॥ पुनः वधावो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्रावण पावस कलश्यो (ए चाल) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मोतियमे मेहवरसीयो सखि । आजज्ञवो आणंद । पूजपधास्या विहरता । नामें शौज्ञाग्य सूरिंदरे । जिनहर्ष सूरिंदनो नंदरे । सदगुरु सुरतरुनो कंदरे । मुखसोहै पूनमचंदरे ॥ सखि मोतीडे मेह० ॥ १ ॥ क्षांति गुणें करी सोज्ञता । सखि पंच महाव्रत धार । वर छत्तीस गुणें सदा । विचरै जे निरतीचाररे । रशीया जे पर उपगाररे । उपशम रसना ज्ञंमाररे । पालै पंचाचाररे ॥ सखी मोती०॥२॥ मेंघतणी परं गाजता । सखिमीठी जेहनी वांण । आपतरें परतारता । गुण गण रतनारी खाणरे । सब आगमना जे जाणरे । प्रतपे जिम ज्ञग्रहल ज्ञांणरे । जेहनो अतिशय विन्नाणरे ॥ सखिमो०॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारसा । सखि इण पंचम काल । साथै जेहनें शोज्ञता । मु

नवर जिम मोतीमालरे । केई थिवरनें केई वालरे । वंदीजै तेह त्रिकालरे । सखि मोती० ॥ ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो । सखि खरतर गछ सिणगार । जैन धरम दीपावता । महिमा जेहनी अणपाररे । सङ्घ संघतणा सिरदाररे। सखीसुमतितणा भरताररे । जेहनें प्रणमें नरनाररे ॥ सखि०॥ ५ ॥ सुत्र अरथ विसतारता । सखि देता धर्मो पदेश । दान शीयल तप भावना । वारै भाव न सुविशेषरे । द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे । गुण अरु पर्याय प्रदेशरे ॥ सखि०॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना । सखि अमृत वचन विलास । क्षणमे कर्म समूहनो । सखि निश्चै होवै नाशरे । थायै निजग्यान प्रकाशरे । कहै वाल सुगुरु सहवासरे । करतां निजरूप सुभासरे ॥ सखिमो०॥ ७ ॥ इति वधावो ॥ ✱॥

॥ ✱ ॥ अथ गुंहली लि० ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ नणदल विंदलीदे (ए चाल) ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ जिनसाशन जयकारी । जगगुरु गोतम गणधारीरे । सहीयांगुहली करो । गुहली करो गुरुसंगे । श्रुत भगति तणै उछरंगेरे ॥ सही०॥ विचरंतां मुनिराया । राजग्रही नगरी आयारे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी नवविध ब्रह्मव्रत धारीरे ॥सही०॥ च्यार कषाय कुं टाले । पंचमहाव्रत सूधा पालैरे ॥ सही० ॥ २ ॥ सेवै पंचाचार । धरै पंचसुमति मनुहाररे ॥ सही०॥ त्रिणगुती वलि छजै । इम छत्रीश गुणें गुरुराजैरे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी। शुद्धातम अनुभव रंगीरे ॥सही०॥ उतसर्गने अपवादी । वङ्क नयगम भंग प्रवादीरे ॥ सही० ॥ ४ ॥ मोक्ष मारग उपदेशी । धरे धरम ध्यांन शुभलेसीरे ॥ सही० ॥ ५ ॥ रत्नत्रय अभ्यासी । भविजन चितकमल विकाशीरे॥ सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै । गणधर वंदन शुभ भावेहे ॥ स० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूर । मोहतिमर भरमनें चूरैरे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरु मुख वांणी । समकित निरमल करै शाणीरे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा जेकरस्ये । तेकीर्त्तिसागर पद वरस्यैरे ॥ सही० ॥ इति ॥

॥ ✱ ॥ अथ खरतर गच्छ शुद्ध समाचारी ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो (तो) प्रतिपदा १ का, पच्चखाण व्रत । पिछली अमावश्या (३०) तिथकों करै । ८ अष्टमी कम

हो (तो) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७ कों करै । और (जो) १४ चौदस कम हो (तो) १४ का उपवास । अमावस (वा) पूनिम.को करै (इस का कारण) यह दोनुं तिथी समान है । (जेसें) चौदस वडी तिथ है। (तेसें) अमावस पूनमनी चिरंतन पक्षीका दिन है । इसी सें यह दो दिन वडे है । यह दो दिन में उत्तम भव्यजीव यथाशक्ति पोशह पडिक्कमणा दि धर्मकृत्य करै । पारणें उत्तर पारणें धर्मका उद्योत करै । (इहां विशेष कहते है) इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं । मिथ्यात्वी के पत्रो सें देखकै सव तिथी गिणनेंमें आती है। (और) इस पत्रेका कुछ प्रमाण नहीं । हर कोई तिथ कम हो जाती है । इसीसें (जो) चौदश कम हो (तो) उपवाश (तथा) पक्खी पडिक्कमण (निस्संदेह) पूनम १५ (तथा) अमा वसके दिन करै (परंतु) तेरश चौदश के वितरथैकों न करै । और जो वेला करैं । तथा हरी छोडै (तो) यह दोनुं दिनमानें ॥※॥ (अव) कोई वेर संवछरी की ४ चोथ कम हो(तो)पंचमी५ के दिन, संवछरी पडिक्कमण करै ।(परंतु)ती ज ३के दिन कदापि काले न करै (और) जो चौथ ४ दो होय (तो) पहली चौथ संवछरी करै । औरभी कोई तिथ दो होय (तो) पहली तिथ मान्यनी कहै । दूसरी लूंन तिथी रही । (दूशरो यह प्रमाण है) साठ६० घडी की अखंड तिथी छोडकै । घडी अध घडीकी (दूसरी) तिथी कोण मानें (इ हां कोई कहै) अपणें उदय तिथी मानें हैं । सूर्य उगै इहां तक कोई तिथी हो (तोभी) उस दिन उसी तिथ कों मानें है (इसीसें) जोदूशरी तिथ अध घडीभी हो (तो) मानणें में क्या दोप है।(इसका उत्तर) हे भव्य जो पहलै दिन तीज मानी है (और) तीज३कै दिन चौथ वहुत घडी भुगतैगा । पिण उस दिन तीज मानीजैगा । (इसी तरै) चौथकै दिन सूर्य उगै (इहां त क) घडी अध घडी भी चौथ होगा (तो) चौथ ४ मानीजे गा। (पर) जो तिथी दो होय । उसमें तो पहली तिथ सूर्य उदय अस्त दोनुंमें रही (इसीसें) पहली तिथ छोडकै, दूशरी तिथ करणा युक्त नहीं । (और) कार्त्तिक माश वढै (तो) पहले कार्त्तिक चौमाशो करैं ॥ फाल्गुण वढै (तो) दूसरें फाल्गु ण चौमाशो करैं । आशाढ वढै (तो) दूशरे आशाढ चौमाशो करैं । आशा ढ चौमाशें की १४ चौदशसें । पचासे दिने चौथकों संवछरी पर्व्व करैं ।

चौथ कम हो (तो) ५ पांचमके दिन संवछरी करै। श्रावण। भाद्रवो। आसोज। वढै (तो) पंचमाशी चौमाशो करै (जो) श्रावण माश वढै (तो) दूशरै, श्रावण शुद ४ कों संवछरी करै (पर) चौमाशै की चौदशसें पंचास दिन उल्लंघकै, संवछरी पर्व कदापि कालै न हो,,, यह कल्पसुत्र जीकै पट ली समाचारीमें प्रसिद्ध पाठ है,,, (और) चौमाशै में, श्रावण। भाद्रवो। आशोज। यह तीन माश वढै तो पंचमाशी चौमाशो करै। (और)जो माश दोहोय (उसमें) पहला माशका कृष्णपक्ष। (दूशरै माशका शुल्क पक्ष। (ऐसें) एक माश में जो कल्याणक तिथी हो। उसीका व्रत पच्चक्खाण करै। वीचका ३० दिन लुप्त जाणना। यह तीश दिनमें कल्याणकादि क के व्रत पच्चक्खाण न हो शकै (इसीसें) विवेकी जीव सब तिथीका वि चार समजकै व्रत पच्चक्खाण करै (तो) व्रत भंग कभी नहो॥ ※॥ यह तिथोंका परमाण श्रीहरिभद्र सूरजी महाराजकै किया हुवा। तत्व तरंगणी ग्रंथमें प्रशिद्धहै (सो) इहां किंचित् लिखते हें॥ ※॥

॥ ※॥ तिहि पडणे पुव्व तिही। कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेय। चाउद्दसी विलोवे। पुन्नमिय पक्खि पडिक्कमणं॥ १॥ तत्थेव पोसह विही। कायव्वा सव्वगेहि सुह हेऊ। नहु तेरसीइ कीरइ। जह्मा नाणाइणो दोसा॥ २॥ सूरोदय पडियावि। तेरसी हुंति न पक्खियं कुज्जा। चाउम्मासिय करणे। एसविही देसिउ समणा॥३॥ तिहि वुड्ढीए पुव्वा। गहिया पडि पुन्न भोग सं जुत्ता। इयरावि माणणिज्जा। परं थोवत्ति तत्तुल्ला॥ ४॥ ※॥

॥ ※॥ (तथा) ज्योतिषकरंड पाइन्नके इदं कथितमस्ती॥ ※॥ छठि सहिया न अठमी। तेरसि सहिया न पक्खिया होइ। पडिवै सहिया न कयावि। इइ भणिया वीयरागेण॥ १॥ अठमि दिनंमि पायं। कायव्वा अठ मीय पाएण। कइयावि सत्तमंमि। नवमी छट्ठी न कायव्वा॥ २॥ पनरस म्मिय दिवसे। कायव्वं पक्खियं तु पाएण। चाउद्दसेवि कइया। नहु तेरसि सोलसमे कहवि॥ ३॥ ※॥ ॥ ※॥ ॥ ※॥

॥ ※॥ (तथा) श्रावक सामायक करै (तब) प्रथम सामायक दंड ३ वेर उचरके (पीछे) इरियावही पडिकमें (क्युंकि) आत्मार्थी आचा र्यों के किये हुए कितनेही ग्रंथमें प्रसिद्ध पाठ हे (और)सामायका धिकारे

प्रथम इरियावही पडिक्कमके (पीछे) करेमि भंते कहणा । ऐसा पाठ खुलासा कोई ठिकाणें देखनें में न आताहै ॥ ※ ॥ तथा श्री महावीर स्वामी का ६ कल्याणक मान्य करणा चहिये (क्युंकि) कल्पसुत्रादि अनेक ग्रंथोमें शाखहै (और) वडे वडे, संवेगी गीतार्थ, खरतर गच्छ, तप गच्छादिक के, आचार्योंनें ग्रंथोमें प्रगट पणें ६ कल्याणक वर्णं न कियेहै (जो) आश्चर्य कारी संबंध जाणके छठा कल्याणक नमानते हैं (उनोंकों) दिगंबरवत् मल्लिनाथ स्वामीकोंभी स्त्री पणें मानणा न चाहिये (क्युंकि) आश्चर्यकारी संबंध समानत्व है (दूशरो) न मानणें में अपनें ही गुरुवादिककी आग्या लोपन होती है ॥ ※ ॥ (तथा) सर्व पोषध, अष्टमी, चतुर्दशी, कल्याणकादि, पर्व तिथीकों करै (परंतु) सदैव करनेका कथन नही ॥ ※ ॥ (तथा) कल्पसुत्र वाचनामें । नववाचनाकों वंधाणनहिं । अधकीभी वाचना करै ॥ ※ ॥ (तथा) आंविल मांहे एक अन्नद्रव्य (दूशरो) उष्ण जल द्रव्य, यह दोद्रव्य ग्रहण करनेका कथन है (इससें) रसनाका लोलुपी पणासें अधिक द्रव्य ग्रहण न करणा चाहिये ॥※॥ (तथा) तरुणीस्त्रीकुं मूल नायकजीकी पूजा करनी प्रमाणीक आचार्योंनें निषेध करीहै (क्युंकी) इस कालमें प्रायें स्त्रीयोंमें अविवेकत्व पणा (तथा)अकस्मात स्त्रीधर्म प्रगटोना दीख रहाहै॥※॥ (तथा)श्रावकांनें, पाणस्स लेवाका पाठ कहणा युक्त नही । यह साधुका पाठहै॥※॥(तथा)दिनप्रति एक उपवास पचक्खावै । जो अधिकतपकीइच्छाहोय तो अपनें दिलमें धारना रक्के । परंतु पच्चक्खाण नित्यसूर्योदये करणा चाहिये॥※॥(तथा) जिसधान्यकी दोफाडहोय सो सर्व विदलकी गिणतीमेंहै॥ इस विदलधान्यकों गोरस दध्यादिकके साथ भक्षण नंकरना चाहिये ॥ ※ ॥ (तथा) मुंवे जायेरा सूतक मानणा चाहिये । जिसके घरमें सूतक होय । उसी घरको आहार पाणी साधुवर्जन करै (परंतु) संपूर्ण कुलगोत्रको सूतक नगिणें ॥※॥(इत्यादि) इहां नाममात्र खरतर गच्छकी समाचारी लिखनेमें आई है (यद्यपि) समाचारी ग्रंथ अनेकहै(तथापि) श्रीसमयसुंदरजी महाराजकै वनाया हुवा । समाचारी शतक ग्रंथ है(जिसमें) पंचांगी सुत्रोंका आलावा प्रमाणयुक्त । समाचारीका निर्णय किया है (जो) अनेकांती विशेषज्ञ होय सो आत्मार्थी गुरूसें निश्चैकरै ॥ और जे कोई

मूगांमें कोरडू जैसा एकांती, दृष्टिरागी, अभिमानी, अपनें गछका पूंछडा पकडके । धर्मसागर निन्हवकी तेरै। खरतर गछकों मतपक्षमें कहतेहै(और) १२०४ शालमें हुवा लिखते है (सो) साफ अपनी अग्याता (तथा) द्वेष सूचन करते हैं ॥ ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पणें सावित होताहै (कि) कोटिक गछ, चंद्र कुल, वयरी शाखा वाले, श्री जिनेश्वर सूरजी महाराजे, अणहल पुर पट्टणमें । सं१०८०, चैत्यवासियों कों, शास्त्र विवादसें जीते (इससें) पाट णके दुर्लभ राजानें, खरतर विरुद दिया । तबसें खरतर गछ प्रशिद्ध हुवा (तथा) यही, श्री जिनेश्वर सूरजीके दो शिष्य हुए। श्रीमालगोत्र थापक, श्रीजिनचंद्र सूरि (तथा) नवांगीवृत्तिकारक श्री अभयदेवसूरिजी हुए (तथा) इनोंके शिष्य पट्टधारी जिन वल्लभ सूरजी हुए । (तत्पदे) युगप्रधान सवालाख श्रावक प्रतिबोधक, श्री जिनदत्त सूरिजी हुए। इस माफक बहुत ग्रंथोकी प्रशस्तियोंमें अधिकार है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (इससेती) अहो भव्यो मूलतत्व इसकालमें इतनाही है जो तत्व नसमझो (तो) अपनी अपनी समाचारी करते जावो (परंतु) एकेक गछकी निंदा मतकरो । एक धर्ममे द्वेष मत रक्खो, मत करो । श्री नवकार, जिन प्रतिमा पूजक, सर्व जैनी भाई आपसमें एक्यता करके धर्मवृद्धी (तथा) उत्कृष्टसें ग्यानवृद्धी करते रहो। जिससेती अपनें धर्मकी (तथा) अपनें जैनी भाइयोंकी दिन२ वृद्धी होय सदा आनंद होय ॥ ※ ॥ ॥ ※ किंबहुना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो भवियण तुम सुणो । गुरु गछ कोटिक चंद्रकुल अरु वयरि शाखा चितभणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुर्जर बिरुद पायो गुणकरी । सोजयउ खरतर गछ मोहण प्रगट स हु भवि हित धरी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गुरु गछ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिनहंस सूरीसर तणे पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक मोहन मन उल्लास ए । बहु रत्नसंग्रह कलिकत्ता पुर किया मुंबइ भासए ॥ २ ॥

॥※॥ कलकत्ता ॥※॥ श्री जैनपाठशाला ॥※॥ मुंबई ॥※॥

॥ ※ ॥ (जाहरखबर) ॥ ※ ॥

॥※॥ सर्व जैनी सज्जन पुरषांकों मालुम रहे। जगत्रमें वांछित सुखदायक, तत्वभूत, संपूर्ण प्राणियोंके (ज्ञान) उत्तम पदार्थ है (क्युंकि) सद्ज्ञानसेती, जीवकों। दर्शन, चारित्रादिक, मोटा गुणकी प्राप्ती होती है(और) यही, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुध्दगुण पानेसें। थोमे कालमें जीवकों, अवश्य मोक्षका, अक्षय सुख मिलता है (तो) जिस ज्ञानके प्रशाद, अनादि भव भ्रमण दुःख दूर होके। अंतमें मोक्षफल मिलै(ऐसा)उत्तम ग्यान पदार्थकों। मूर्ख, मिथ्यात्वी, अज्ञानी टाल (कोई) विवेकी, उत्तम पुरष, अनादर न करेगा (अपितु) बुध्दिवान, धर्मज्ञ जीवतो। अपनी शक्ति मुजब। तन, मन, धनसें, ज्ञानवृध्दि, विद्यादान, करेगा, करावेगा, अनुमोदेगा (इसीकारणसें) अंतरंगप्रीतिसें अपनेंको (तथा) अपना शिष्यादिक (संपूर्ण) पाठक गणकों। विद्या दान मिलनें निमत्त। कलकत्ता। मुंबईमें,, जैन शाला,, स्थापन करीहे (और)पाठशालाके उत्तेजन अर्थ, सर्वोपयोगी(यह)रत्नसागर पुस्तक, भाग प्रवर्त्तन किया है। (और) पढनें वालोंके पास (कुछभी) माशा खरच, लेनेंमें न आता है। दोनुं पाठशालायोंके खरचका निभाव (तथा) उत्तेजन होना परोपगारी। गुणग्राही। संघके हाथ है (जो) धर्मरागी संघ। तन, मन, धनसें, मदत देते रहेंगे (तो) यह दोनुं पाठशाला स्थाई भूत रहेगा (और) क्रमसें विद्या वृध्दी होनेंका, बहुतसा प्रयत्न करनेंमें आवेगा ॥※॥

॥※॥ रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) दूसरा भाग ॥※॥

॥ ※ ॥ सर्वोपयोगी, बारमासी, धर्मकृत्य पुस्तक, लेनेकी इच्छा होय (तो) लिख्यै मुजब ठिकाणें (नामदारोंके पास) रोकडी निछरावल देके लेजावे (वा) देशावरोंसें मंगावे (तथा) देशावरोंसें मंगानेंवाला (जो कोई) प्रथम निछरावल न भेजैगा (और) रत्नसागर आदि पुस्तक मंगावेगा (उसकों) डाक मारफत, पुस्तक भेजणेंमें आवैगा। डाक मारफत, रुपियादेके पुस्तक लेशकेगा। नाटपेट पत्र लेनेंमें न आवेगा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (तथा) इसी नकलका। मोटा, छोटा, अक्षरोंमें (जो कोई) पुस्तक छपानें निमत्त भेजैगा (तो) जलदी छपाकर भेजा देनेंमें आवैगा ॥※॥

॥ ※ ॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥ ※ ॥

॥ १ ॥ मु । बीकानेर । ठि । बड़े उपासरे पासे (जैन लक्ष्मीशाला) पूज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी गणिः पं । रावत मल्ल मुनिः पासे ॥※॥

॥ २ ॥ मु । कलकत्ता । ठि । अफीमचौरस्ते । ६२ नं । जैन विद्या शाला, अध्यक्ष पंडित मोहन लाल जयचंद मुनिः पासे ॥ ॥ ※ ॥

॥ ३ ॥ मु । मुंबई । ठि । पांयधोणी । जैन पाठ शाला अध्यक्ष ॥※॥
॥ ※ ॥ पंडित श्री मुक्ति कमल मुनिः कल्याणचंद पासे ॥ ※ ॥

॥ ४ ॥ (तथा) मुंबई, पांयधोणीके । पांचांमंदरोंके महता पासे । खबर भेजणेसें पुस्तक मिलैगा ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ पुस्तक नाम ॥※॥	रु०	आ०	ट०
॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग	५	०	६
॥ २ ॥ प्रथम भाग बढ़ियागत्ता	६	४	०
॥ ३ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग	२	८	६
॥ ४ ॥ खरतरगच्छ पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	०	२
॥ ५ ॥ तपगच्छ पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	४	२
॥ ६ ॥ राई, देवसी, प्रतिक्रमण विधिः	०	४	॥
॥ ७ ॥ प्राचीन स्तवन माला	०	८	॥
॥ ८ ॥ आनंद घन चिदानंद बहुत्तरी	०	८	॥
॥ ९ ॥ संगीत कमलोदय	०	६	॥
॥ १० ॥ स्तवन माला गुजराती	०	२॥	॥
॥ ११ ॥ योग रत्नाकर वैद्यकसार	०	६	॥

॥ ※ ॥ इसपुस्तकां सवाय । चारे खंडका अर्थ सहित, श्रीपालराजा (आदि) बहुत तरहकेरासा (तथा) भक्तामर, कल्याण मंदर, जीवविचार, नवतत्व, दंडक, पांचु पडिकमणा, बारसाशी वखाण, (आदि) अर्थ सहित बहुत पुस्तक (पाठशालासे) तैयार मिलैगा ॥ चाहियै सो लेजावै (वा) मंगावै ॥※॥ (तथा) रत्नसागर, दोनुभागका (१०) पुस्तक । जो एकठी लेवैगा (उसकों) ग्यानके मदतखाते एक पुस्तक ज्यादा मिलैगा । सही ॥※॥